

खेड़ै-रपट

(क्षेत्रीय पुरावृत्त)~

लेखक

सा० महो० नानूराम सस्कर्ता

सम्पादक

शिवराज सस्कर्ता

एम०ए० एल०एल०बी०



प्रकाशक

लोक साहित्य प्रतिष्ठान

कालू, बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक

सोक साहित्य प्रतिष्ठान, कासू
रीवानेर (राज०)

© सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन है।

प्रथम संस्करण

26 जनवरी, 1984

पृष्ठ संख्या 592

मूल्य सौ रुपये

प्रूफ संशोधन

सा० महो० नानूराम सक्ता

मुद्रक

लाईट प्रेस 15 ए हाथीखाना, आजाद मार्केट, दिल्ली 110006

KHEDAI-RAPAT

(AREA HISTORY)

By

NANU RAM SANSKARTA
SAHAITYAMAHOADHAYA

Edited by

SHIV RAJ SANSKARTA
M A L L B

Published by

Lok Sahaitya Prtisthan
KALU (Bikaner)
RAJASTHAN

Published by :

LOK SAHAITYA PRATISTHAN
Kalu (Bikaner) Rajasthan

First Edition

26 January 1984

Total Pages : 592

Price 100/ (One hundred)

Proofs reading by

S M NANURAM SANSKARTA

Printed by :

LIGHT PRESS
Hathi Khana, Azad Market Delhi 110006



सत्यमेव जयते

11A पण्डित पन्त मार्ग,
नई दिल्ली

दिनांक 15 11 1983

श्री मरुताजी या मरस्वती के बरद पुत्र हैं इनका सम्पूर्ण जीवन साहित्य और जन सेवा में लगा है। श्री मरुताजी जो की 'बेड रपट' (अदृष्टी) पुस्तक रचने को मिनो।

श्री मरुताजी ने अपनी साम्प्रतिक मनस्विता एवं लगन पूरा कमठता से इस ग्रंथ को तैयार किया है।

ग्रंथ का सामाजिक प्रबंध ऐतिहासिक होने हुए भी पढ़ने में उपयाम जसा लगता है।

कालू का अत्यधिक विवरण लेखक की जम भूमि होने के कारण स्वाभाविक था।

इस विविध विषयक सम्प्रथम की रचना के लिए मरुताजी लोक साधुवाद के पात्र हैं।

—कुम्भाराम शाय



सत्यमेव जयते

सन्देश

उप मंत्री
निर्माण और आवास,
भारत
Deputy Minister of
Works and Housing,
India
नई दिल्ली

दिसम्बर 16 1983

अपने दौरे के मुताबिक दिनांक 21 नून 1983 का मौजा कालू में हाजिर हुआ। वहा के लोग मेहमान की खिदमत के शीकीन मुय से मिलने आये। उनमे राजस्थानी जुबान के मराठूर गायर श्री नानूराम मरुताजी भी मुपसे मिले। मने उनकी बरीब छ सौ सफा (पेज) की एग खूबसूरत व ताजा हाथ से लिखी 'बेड रपट' देखी। जिनको पूरे पढ़ने का तो अवसर नहीं मिल सका लेकिन इस बात पर बडा आश्चर्य हुआ कि गावो में ऐसे 'गुदडी के लाल' भी रहने हैं जो इ मानियत के प्रतीक हैं और इस जमाने में भी ईमानदारी से पेश आते हैं। गावों की ओबरू बनाये रखने में ऐसे कबिल आदमिया की जरूरत होती है। मुनाकात से भी बहुत प्रसन हुआ। मालिक मरुताजी की तदुस्सन एवं खुश गमे। समाज और साहित्य की सेवा के लिए नीच आयु कर।

मोहम्मद उसमान शारिफ

Dr L. M. SINGHVI
Senior Advocate
Supreme Court of India,
28, South Extension Part II,
New Delhi 110049

श्री नानू राम सस्कर्ता राजस्थानी रा पुराणा कवि निखार है दशानी
कलायण ग्हायी अर राजस्थानी लोक साहित्य जटी अनकू न्रतिया
है । गाव गिगरम अर खेड रपट इया नूवी पोथ्या छपाइ है जके वास्त
म्हारी घणा मानसू बधाई है । रचनावा नोनू सुहणी अर मन भावणी है ।

डॉ० लक्ष्मी मल्ल सिधवी

11-10-83



नई दिल्ली

15-12-83

Indian Services Civil
& Administrative Parliament

एल० एन० गुप्ता

प्रिय श्री मस्वता जी

मुने प्रसन्नता है कि आप 'खेड रपट' के माध्यम से राजस्थान के
वीकानर जनवरनसर क्षेत्र का वृत्तांत एक अनूठे ढंग से प्रस्तुत कर रहे
हैं। आपका अथ कृतिया के साथ यह एक नई कड़ा होगा। मुझे विश्वास
है कि पाठक इस पुस्तक का न केवल पसंद करेंगे, वह यह भी अनुमान
लगा पायेंगे कि इसकी पृष्ठभूमि में कितनी लगन, कितना परिश्रम एवं
कितना त्याग है। कितनी कठिन परिस्थितिया में आपन साहित्य की सेवा
की है, का मुझे थोड़ा पान है। अंतःकरण से आपको बधाई एवं
शुभ कामनाएँ।

नवदीप

श्री नानू राम सस्कर्ता

एल० एन० गुप्ता

वक्तव्य

खंडे रपट" कस्बे कालू का इतिवृत्त्यात्मक रिपाताज ग्रंथ है। यह आचलिक संस्कृति तथा पुरातन वंशांत के साथ वर्तमान चेतना का प्रगतिशील कदम कहा जा सकता है। क्योंकि आवश्यक और यथेष्ट जानकारी देने वाले ग्रंथों का अभी यहाँ अभाव चलता है। प्राचीनता से दबी सामग्री को प्रकाश में लाने का सही काय और सत्यावलाकन कडे श्रम तथा विघ्ना का जजाल जानकर ऐसे ग्रंथों का सजन मुश्किल होता है। श्री नानूराम संस्कृती का मात्र एक स्थानीय अभिरुचि सकलन अपन परिश्रम में इस अभावपूर्ति का अद्वितीय उदाहरण हैं। इसमें आपन, साहित्यिक चर्चा, राजनीतिक प्रश्न, सामाजिक उत्पन्न, पुरातात्विक विवेचन आदि क्षेत्रीय विषया पर अपन मौलिक मत खास तौर से लिखे हैं जिन पर लोक मानस की अनुरक्ति बनती है।

खंडे रपट" कालू (बीकानेर) का सांस्कृतिक व महिमावान ग्रंथ है। लेकिन क्षेत्रीय खोज तो उनकी बड़ी यत्नस्वर जान पड़ती है। लेखक ने पर्याप्त लगन एवं अपने अनुपम श्रम का व्यय किया है जो किसी शोधार्थी तथा साहित्यकार का मांग दर्शन होगा। संस्कृती के इस काय पर बीकानेर मंडल को गव है।

ग्रंथ में कालू, तहसील लूनकरनसर और जिला बीकानेर के मध्यकालीन इतिहास प्राचीन संस्कृति राज्य व्यवस्था, वाणिज्य, व्यवसाय धर्मों और वर्तमान राजस्थान के संगठन तक का इतिहास का उल्लेख है। इसके अलावा लोक साहित्य एवं सांस्कृतिक प्रचलन का भी प्रकट किया गया है। लोक धर्म, लोक विश्वास, समाज एवं रीति रिवाज आर्थिक कायकलाप, कला-कारीगरी तथा जानकारी और क्षेत्रीय संस्वाभा का विषय संबद्ध वर्णन भी स्थान स्थान पर दिये गये हैं। लेखक ने तत्कालीन और अंग्रेज बाद की भी सामग्री शोधन में सम्पूर्ण काय करने का ध्यान रखा है। प्राचीन एवं अर्वाचीन, धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक माय प्रयासों की साथ विश्वासी व्याख्या ऐतिहासिक संदर्भ में वर्णित की है। अतः पुरातन पद टिप्पणियाँ के उपयोग से इसका महत्व बढ़ गया है।

श्री संस्कृती का यह श्रम साध्य काय वस्तुतः श्लाघनीय है। मुझे अभिप्रेति है कि विद्वद्भर इस ग्रंथ का समुचित आदर करेंगे।

नरोत्तमदास स्वामी

(ज माप्टमी 2036)
बीकानेर

(नरोत्तमदास स्वामी)

दो शब्द

पिछले वर्ष दमका से क्षेत्रीय इतिहास और संस्कृति विषयक ग्रंथ लिखन और प्रकाशित करने की एक नई परम्परा प्रारम्भ हुई है जो उचित ही नहीं अत्यधिक वाछनीय भी है। इसी प्रकार प्रदेशों के इतिहासों में पाये जाने वाले बड़े बड़े अंतरालों को दूर कर उनका परिपूर्ण विवरण प्रस्तुत किया जा सकेगा। ब्रह्म के श्री गणेश अग्रवाल द्वारा 'ब्रह्म भण्डन का गोधपूज इतिहास' एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उसी क्रम में इधर राजस्थान के मुक्तानु जिले पर भी ऐसा ही एक ग्रंथ लिखा जा रहा है। भूतपूर्व जयपुर राज्य की तोरावाणी आदि विभिन्न इकाइयों पर भी यह कार्य चले गये हैं।

यह प्रसन्नता की बात है कि बीकानेर जिले की एक तहसील लून करनसर के कालू ग्राम निवासी श्री नानूराम सक्कना अपने वेद क्षेत्र के पुरातत्व, इतिहास व संस्कृति आदि पर अपनी 'वेद रपट' तैयार कर रहे हैं। प्राचीन लिखित व विभिन्न प्रकार की अन्य आधार सामग्रियों का उपयोग कर प्राचीन से लेकर अर्वाचीन तक की उस क्षेत्र की गतिविधियों के साथ ही उस क्षेत्र विशेष के धार्मिक सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन का भी विवरण इस 'रपट' में प्रस्तुत किया जा रहा है। पिछले पांच वर्षों से लिखी जा रही यह 'वेद रपट' अपने आप में एक विशिष्ट कृति है जो भावी जायावियों के लिए उपयोगी और लाभप्रद होगी।

आशा करता हूँ कि जय गोध कर्ता भी अपने अपने क्षेत्रों का ऐसा ही विवरण प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे।

24 6 1982

डा० रघुबीरसिंह
एम०ए०, डी० लिट०
सीतामऊ (मालवा),

Dr. Hiralal Maheshwari
 MA LL B D Phil D Litt
 ASSOCIATE PROFESSOR
 Department of Hindi,
 UNIVERSITY OF RAJASTHAN
 JAIPUR-302 004

Phone 64 125
 B 174A, Rajendra Marg,
 Bapunagar, Jaipur 302015
 Date 27 12 83

प्राक्कथन

खेडे-रपट

खेडे रपट गांव कालू के वयोवद्ध सुप्रसिद्ध कवि लखक श्री नानूराम सस्कता की कृति है जो बड़ी खोज और परिश्रमपूर्वक लिखी गई है। 'खेडा' शब्द संस्कृत के 'खेट' (खेड, खेडा) शब्द से निष्पन्न है जिसका तात्पर्य है—गांव, किसानों का निवास-स्थान या छोटा कस्बा आदि। इसके अतिरिक्त राजस्थानी में बोलचाल में गांव के निवासे के खेत को भी 'खेडा' कहते हैं। 'रपट' अंग्रेजी के 'रिपोर्ट' का प्रचलित रूप है जिसका मतलब है—वृत्तांत, विवरण, प्रतिवेदन आदि।

प्रस्तुत पुस्तक में गांव कालू (तहसील लूनकरनसर जिला बीकानेर राजस्थान) और उसके आसपास के क्षेत्र का अनेकविध भौगोलिक सामाजिक धार्मिक साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टियां से—परिचय दिया गया है। साथ ही दो पक्षक अध्यायों में पास के लूनकरनसर क्षेत्र का भी सम्यक दिग्दर्शन कराया गया है। यह सब व्यक्तिगत जानकारी, खोज, प्रचलित परम्पराओं की छानबीन और पुराने कागज पत्रों के आधार पर किया गया है। इस मद्दभ में कतिपय ताम्रपत्रों और गिलालेखों का भी परिचय देते हुए, उनका आधार ग्रहण किया है। इस प्रकार, यह पुस्तक अत्यंत प्रामाणिक है। एक प्रकार से इसका कालू लूनकरनसर अंचल का एक छोटा मोटा गजेटियर कह सकते हैं। इसमें लोक संस्कृति, साहित्य, समाज और इतिहास विषयक अनेक नई बातों का पता चलता है। गांव कालू "वासिनाजी का खेडा" कहलाता है और यह ग्रंथ इस गांव का ना दर्पण ही है।

राजस्थान एक विस्तृत भूभाग है। इसका सफाई खंडों में न जान कितनी और किम प्रकार की महत्वपूर्ण सामग्री बिखरी पड़ी है। उस विरासत और बभ्रव का उजागर करना और सजाना नितांत आवश्यक है। इस दृष्टि से यह 'खेड रपट' एक अत्यंत सराहनीय और अनुकरणीय प्रयास है और जिसके लिए लेखक बधाई का पात्र है।

दिनांक 27 12 83

होरालाल माहेश्वरी
 (एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
 राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर)



प्रो बी डी कल्ला,
राज्य मंत्री
पर्यटन कला एवं संस्कृति
पुरातत्व व उच्च शिक्षा

जयपुर
राजस्थान

अ०शा०व० संख्या 1953/SMT/83

दिनांक 9 12 83

श्री नानूराम जी

मुझे यह जानकारी प्रमनना हुई कि आप द्वारा खेडें ग्राम नामक ग्राम के रूप में क्षेत्रीय इतिहास प्रकाशित किया गया है। मुझे विश्वास है कि इस ग्राम में सामाजिक आर्थिक, साहित्य एवं मध्यमरीय क्षेत्र के इतिहास का सूक्ष्म परिचय प्राप्त होगा।

आप एक अच्छे प्रबुद्ध साहित्यकार हैं जिन्होंने अपने जीवन के लघु समय से राजस्थानी भाषा साहित्य के विकास के लिए निरन्तर सज्जन कार्यों में समर्पित भावना में काम किया है तथा अपने इन कार्यों में सफल हैं।

यह 'खेडें रपट' की सफलता की सफल कामना करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि आप द्वारा सज्जित साहित्य पाठकों को खिंचे होगा।

—सधयवाह

सद्भावी,
बी० डी० कल्ला

लोक संस्कृति शोध संस्थान

7 अगस्त, 1982

नगरधी चूर

श्रीमत् नानूरामजी संस्कृता कालू (बीकानेर)

आपने चिन्तितका की कड़ी भनाही के बाद भा एक मोटा ग्रंथ तयार कर लिया सा यही अच्छी बात है। आपकी पुस्तक लोकप्रियता प्राप्त करे यही कामना है।

भवदीय

गोबिंद श्रमवाल
नगरधी चूर

राजस्थान सरकार

जन सम्पर्क कार्यालय ग्रीकानर

क्रमांक 1092

जन सम्पर्क अधिकारी

बीकानेर

दिनांक 22 12 80

प्रिय श्री नानूरामजी,

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आप भौगोलिक ऐतिहासिक सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा औद्योगिक तथ्यों को समाहित करते हुए 'खेडे रपट' का प्रकाशन कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि आपकी इस अमूल्य दृष्टि से जनमानस निश्चय ही लाभान्वित होगा।

इस कार्य में आपकी सफलता की कामना करता हूँ।

मनोहर चावला



श्रीमती कमला
शिक्षा एवं ऊर्जा मंत्री

ज.पु.
राजस्थान

दिनांक 19 नवम्बर 1983

मने राजस्थानी भाषा के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री नानूराम सक्कर्ना द्वारा दिये भाषा में लिखित एक गाँव पर आधारित 'खेडे रपट' नामक पुस्तक पाई। इसमें चार पाठ राजस्थानी भाषा के, बी हिन्दी के हैं। ये प्रकरण बड़े राजक एवं मारपूर्ण हैं। उनकी दुबलावस्था में भी यह साहित्य सेवा ज्ञान तथा समन्वय है। इस प्रकाशन के लिए मैं अपनी शुभ कामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

श्री नानूराम सक्कर्ना
पी० बालू सहसील लूनकरनसर
जिला बीकानेर

फ० श्रीमती कमला
शिक्षा एवं ऊर्जा मंत्री

श्री नानूराम सक्कर्ना लिखित पुस्तक 'खेडे रपट' के लोक स्वीकृत और लोक प्रिय होने के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

नये माल की छपाई के लिए सध-यवाद।

वय नव हय नव
छवि उत्कष नव

4 जनवरी 1984

डॉ० हरवशराय बल्लन
'मोपान' भवन
8 बी, गुल मोहर पार्क
नई दिल्ली

भाबरमल्ल शर्मा
इतिहासानुसंधानगृह
ई 6, फातिचन्द्र रोड
बनीपाक जयपुर 6

दूरभाष 73488
दिनांक

अभिमत

मुझे यह जानकर अतिशय प्रसन्नता हुई है कि बालू (बीकानर) व निवासी श्री नानूरामजी सस्कर्ता न, जो राजस्थानी साहित्य की अनेक विधाओं के रचयिता प्राप्त विद्वान हैं, अपन क्षेत्र के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पक्ष का उल्लेख करने के उद्देश्य से 'खेड रपट' नामक एक जनपदीय सर्वेक्षण ग्रन्थ तैयार किया है। इस प्रकार के उच्च स्तरीय अनुसन्धानात्मक और सुव्यवस्थित कार्य के लिए मेरी अनेक शुभ कामनाएँ।

भाबरमल्ल शर्मा

दिनांक 9 6 82

(पद्मभूषण प० भाबरमल्ल शर्मा)

कार्यालय प्रधानाध्यापक
रा० उ० मा० विद्यालय
बालू (बीकानर)
राजस्थान

दिनांक 22 12 83

श्री नानूराम सस्कर्ता सेवानिवृत्त अध्यापक हैं। रा० उ० मा० विद्यालय बालू में वे द्वितीय श्रेणी अध्यापक रहे। उच्च कक्षाओं को पढ़ाना, बोर्ड की कठिनाईयाँ ज्ञान और साथ में सतत साहित्य सृजन भी चलाते रहना। इनकी गद्य तथा पद्य एवं शोध में अनेक पुस्तकें हैं। नवीन ग्रन्थ 'खेड रपट' क्षेत्रीय इतिहास है, जो पढ़ने में रुचिकर एवं मनोहारी है। ऐसे विद्वान व शोधकर्ताओं के लिए श्री सस्कर्ता साधुवाद के पात्र हैं। उनकी बढ़ावस्था में भी यह साहित्य सेवा अत्यन्त ही सराहनीय है। मेरी बधाई स्वीकारें।

जयनारायण पारीक

रूचि सम्पर्क-सकलन

राजस्थान में बीकानेर का बली क्षेत्र प्राचीन काल से ऐतिहासिक एवं महिमान्वित रहता आया है। इसमें प्रातिहासिक सस्मृतियों के प्रमाण भी पाये जाते हैं। यहाँ की इतिहासवालीन सामग्री अमूल्य श्रेष्ठ एवं विस्तृत है। इस अपार समृद्ध का दूसरा किनारा देखना तो महा दुर्लभ है, किन्तु जिते के एक छाटे से गांव रूपी तनया की तरफ लेना भी हमारे लिए सोहे के चने चबाने के समान रहा है। मेरे पञ्चम पूज्य पिताजी अवस्थानुसार इस काम में काफी अस्वस्थ हो गये हैं। वे इस छ साल के समय में कोई मौलिक सज्जन भी नहीं समान सकें।

मनुष्य विभिन्न क्षतियों का ही नहीं अनन्त शक्तियों का स्रोत है। मैं इतिहास का छात्र होने के नाते बृद्धि की भाषा से प्रोत्साहित होकर उनके सहयोग हेतु पाण्डु लिपिकार बन गया। उनके पास 'जागती जोत' के लिए लिखा गया 'मेड-रपट' नाम का कालु ग्राम का एक राजस्थानी निबंध (रिपोर्टिंग मैगैज़ीन), जो ऐतिहासिक आलोक सहित बिल्ले पत्रों में जुगनू रूप मिलमिला रहा था। गांव की सस्थाओं के सचलाइट जैसे सेवा कार्य उनके किये-कराये सुने सुनाये सामने थे, सो वे उनकी शोषण जुटान लगे। 'लोक साहित्य प्रतिष्ठान' (कालु) की भाषा, साहित्य, शोध व सम्मति आदि की प्रभा प्रवर्तिका भी पूरा सहारा दे रही थी। किन्तु गांव की अल्प साधन सामग्री एवं क्षतिग्रस्त अथवा अभावों का पश्चात्ताप तो हमारे मन की अब तक जलाता रहा है।

महाह्वय क्षतिग्रस्त अवस्था में ही, जो वृत्त वर्णन के लिए बड़ी उपयोगी बन जाया करती है। कालु की प्राचीन स्मृतियों में श्रेष्ठ जना के जीवन चरित्र और प्राचीन ऐतिहासिक महत्त्व की सम्मानों समीचीन जानकारी तो पिताजी का स्मरण थी, परन्तु समय की प्रामाणिकता की प्रवृत्ति करने के लिए पुराने पट्टे परवाने बहियाँ, ताम्रपत्र, सिक्के एवं लेख प्राप्त करने आवश्यक जानकर क्षेत्रीय सस्थाओं, घरों के भी अनेक व्यवहार लगाने पड़ गये। कुछ महानुभावों से उनके वंशजों की जन्म तिथियाँ तथा चित्र प्राप्त करने बावत निरंतर दाव लग गये। कुछ मजदूरों ने हमारे इस कार्य का स्वागत भी किया और कालु से संबंधित सामग्री उपलब्ध कराने में सामर्थ्यानुसार सहयोग दिया। बीरग मंडल के महंत श्री विष्णुदास से दा ताम्रपत्र (वि० सं० 1852 और 1900) राजस्व तहसील से गांवों का मानचित्र (मैपिंग) सरकारी स्कूल का पुराना हाजिरी रजिस्टर (सन 1908 से 1912) और ठिकाना छत्रगढ़ से कालु अधीनस्थ गांवों का नक्शा (मई 1946) एवं चित्र आदि सामग्री मिली हैं। गांव के पुस्तकालय के अनिरिक्त 'जा-कीय क्षेत्रीय पुस्तकालय बीकानेर से, गांव महाजन में और झुगरगढ़ पुस्तकालय से भी अनेक उपयोगी सामग्री मिली। 'नालम' के अनूप सस्मृत पुस्तकालय और अभिलेखा-गार बीकानेर से भी अनेक सामग्री मिली हैं। इसमें अधिक 'मेड रपट' (कालु क्षेत्र) की सामग्री कहाँ मिलती? इस सवालन समय में चित्र, नक्शे, मात्र मजदूर आदि हेतु मात्रा बावत आर्थिक सहायता की बहद आवश्यकता महसूस करते हुए यहाँ के कुछ समय नागरिकों का पुस्तक परिचय करवाया गया। बहुत से लोगों ने बाह्याचरण से घटनाएँ सुनी अपने नाम देकर और प्रोत्साहन देने के नाम पर वे धर्मवाद भी नहीं

दे सके । फवत समय अपव्यय म कहावत मिली—

विद्या न बर नार, सम्पत अन सरीर सुख ।

माग्या मिल न च्यार, पूरब दत प्रयासिया ॥

नाम क नता तथा पिताजी के सुहृदवर था जबरोमल नाहटा न जीर उनक पुरान स्टुडे ट थी नदलाल राठी ने प्रथम अवश्य कुछ पत्र पुष्पम सहयोग देकर उत्साह बढ़न किया । श्री नाहटाजी के घर से हम कालू के नाहटा का वक्षत्रम भी प्राप्त हुआ है ।

गाव के शासन वर्तमानों का इतिहास विशेषकर, पिताजी के श्रुति स्मरण तथा बीकानेर राज्य के इतिहास से संबंधित करने लिखा गया है । तहसील के गावा ना घातावरण और भोगोलिक स्थिति ज्ञात करने में मास्टर श्री तीधराज सत्कर्ता (एम० ए०) तथा राजस्व विभाग के पटवारिया का पर्याप्त सहयोग मिला है । तहसील के फौजी वणन में ले० बनस तथा जगमालसिंह को दी गई जानकारी से काफी सहयोग मिला है । श्री हसराम आय के पत्रांतर एवं श्री रतनसिंह गठोड द्वारा चित्र सहायता यथा समय प्राप्त हुई । इस तरह क्षेत्र के अथ अनक लागे से उक्त समय में हमारा सम्पन्न बना रहा है । कालू के चोतरके स्थानी म खारडा करणीसर मोहलागिया गजनर, बीकानेर अनुपमड़, विजयनगर पल्लू अटसीसर तारानगर, सरदारशहर चूरू श्री बृगदगठ पूनरासर प्रभृति गाँवा—शहरा के नाम भी हम प्रसन्न वशात् श्रुत कृत करन पने हैं । बीकानेर के श्री अगर्षदजी नाहटा, चूरू के श्री गाविंदजी अग्रवाल के साथ हमारा आत्मविश्वास फलित हुआ है । इतिहास के मुक्ति विद्वान श्री नरोत्तमदासजी स्वामी तथा डा० श्री मनाहर शर्मा का मार्ग-दर्शन भी हम समय समय पर मिला है । महाजन के श्री शंकरलाल यादव ने कुछ प्राचीन साहित्य भिजवाकर हमारा मन मुदित किया है । शेष बाहर के अनक सज्जना एवं साहित्यकारों का सहभावनाने लेने का हमारा अथक प्रयास रहा । क्षेत्र के राजनतिक लागे में श्री चन्द्रनाथ योगी, गोपालचंद डूडाणी, हरिराम विष्णोई और कामरठ दुर्गाराम से भी कुछ जानकारीयाँ मिली हैं । गाव के बृद्धजनों में श्री मूलारामजी पारीक गणेशारामजी आषा और मगतमलजी कोठारी ने पुरानी बातें बताकर कुछ काम सुलभ करवाया है । उनका बिना यथा कामना के प्राचीन घातावरण का कथा कुशलता के साथ परिचय देना हमारे लिए ह्य का विषय है । गाव के शेष महानुभावों की श्रुति उदासान हा रहा ।

अब पात हुआ कि कालू जैसे एक स्थान विशेष का विस्तृत वणन करने में प्राचीन एवं ऐतिहासिक सामग्री का अभाव था नहीं पर मात्रा में कमी पड़ती है । किंतु पिताजी तो अपनी जान हथेली पर लेकर इस खेड रपट ग्रथ में चार वर्षों तक सीम रहे । वे आस पास के अनक गावों की यात्रा करत भी फिरत रहे । लूनकरनसर तहसाल में 210 गाव मान जात हैं । मगर वर्तमान समय में राजस्व तहसील के आकड़े—141 गाव आघाद और 30 गाव उजड़े हुए बताते हैं । इसलिए वे (पिताजी) पुराने पटवारियों से और तहसील के कुछ अथ बुजुर्गों से मिले एवं 39 गाँवों के नामों का सही पता लगाया, जिनकी नामावली सुप्त होती जा रही थी ।

उजड़े हुए खेडों व खडहरो को पिताजी ने लकड़ी के सहारे जा जाकर दखा और जिस स्थान को उ हाने देखन को कहा, मुझे उहे वही लेकर जाना पडा । घर जलाकर तीथ दखन वाली कहावत की तरह घर के काम घधा को भी एक बार तिलाजलि देकर

इस काय में जूट जाना पड़ा। हाथ में पेन मुंह में गोली और गले में पट्टा लगाकर वे पेशन कम्प्यूटेशन के पैसे लेकर विगत की खोज में डम काय में ध्वंस करने लगे।

तूनकरनसर क्षेत्र और काल में जो सावजनिक काय हुए हैं, उनका विवरण जैसे मंदिर, कुए, नुड (छोटी बावड़ी), तासाव, घाट धमशासा, चिकित्साश्रम, विद्यालय, छात्रावास प्राचीन छत्रियाँ, देवलियाँ तथा राजकीय कार्यालया आदि के परापकारी कार्यों के विस्तृत वणन और राजा महाराजा, धर्मात्मा महत, समाजसर्वी पंडित डाक्टर, अध्यापक, व्यापारी, उद्योगपति, कवि, सनिक व स्वतंत्रता आंदोलन में किमी भी रूप में भाग लेने वाले एव कायकर्त्ताओं के परिचय भी उन्होंने एकत्रित किया है।

वे लिखते पीछा से कराहत रहते, लेकिन व्यसनवगात लिखना नहीं छाड़ते। हमारे परम हितधी डॉक्टर, अध्यापक सब सबधी एव बाधु बाधव उनके साहित्य सजन की मना करते रहे, पर वे नहीं मान। उनकी सुमति स्मृति की सुधा ज्योत्सना सबधित जन पात्र हित निशावर रूप निरंतर प्रसरित होती रहती। उनका लिखना इतना नसगिक बन जाता कि वे एक कम यागी की तरह सन-बदन कष्ट तक की परवाह नहीं करते और अपने इस सैलन सत्यम का सतभाव सहज सर्वाद्धित कर देते।

गाय बछटे की चाम चाटकर दूध देती है, मयूर अपनी मस्ती में जन मन को नृत्य मग्न करता है और भवत जन भी सहजभाव से ईश्वरापासना करते हैं। भरे पिता जी का जीवन भी रपट लिखते रहने से ही विद्यमान है। पुरस्कार सम्मान की ओर उनका ध्यान नहीं। हम घर वाला ने उनके कष्ट बढने के समय लिखने के साधन जब भी छोड़ें तब वे इस 'खेड रपट' के चिंतन में बिलरत नजर आये हैं। कार्याधिक्य कारण से असम्य रात्रियाँ उनके लिए अनिद्रारूप रही हैं। ऐसे अवसरों पर हमने मदद माँगा करके उनकी गदन वाली धमनियाँ में हल्कापन तथा रक्तगति ओज संचालन उपजान का यत्न बल उपयोग किया है। विशेष दवा, फल, दूध और मौसम के अनुसार पेय पिला पिलाकर ययासमय परिचर्या द्वारा उन्हें जाराम पहुँचाने के सेवा काय हुए हैं। चन्द्र कुमार जन (कलकत्ता) ने ठीक लिखा है—'खून खटा पाणी करे सा पठ हण माय।' -

मेरा रजिस्ट्रेशन (बाग कौंसिल जोधपुर स एडवाकेट का) हुआ पडा रहा एव प्रतियोगी परीक्षाओं के काय की भी प्रमुखता न देकर पाण्डुलिपि लिखने और फिर लिखन तथा यात्रा में साथ जान के लिए सदैव इनके पास रहना पडा है। इस अर्थ में अनेक बार पी बी एम हास्पिटल बीकानेर तथा स्थानीय चिकित्सालय में इन्हें दिखाना तथा मर्ती भी करवाना पडा। अभी हर दूसरे महान इनकी ई सा जी (इलेक्ट्रिक काडियो-ग्राफी) करवाना पडती है। पी बी एम हास्पिटल बीकानेर के फिजिशियन डॉ० श्री हमचन्द्र सक्सेना तथा रा० प्रा० चि० केन्द्र कालू के प्रभारी डा० श्री जगदीशसिंह गाँवला एव डॉ० निजमलाल बोधरा का चिकित्सा निदान भी पिताजी के स्वास्थ्य सुधार में सदैव तत्पर रहा ह।

पिताजी के मित्रा एव शिष्या न बहुत से स्थाना के मदभ ग्रथ उपलब्ध करवाय। उनके स्वयं के प्रकाशित शोधग्रथ के अलावा कालू में लिखे गये अथ पाद्यग्रथ भी प्राप्त हुए, जिनमें डॉ० किरण नाहटा का प्रकाशित ग्रथ तथा डॉ० चंद्रोन्नारायण रमन और श्यामसुंदर स्वामी के लघुशोध निबन्धा की टंकित प्रतियाँ भी 'खेड रपट' के क्षेत्र सबध से देखनी पनी हैं। भू० पू० गरपच श्री मोहनलाल मारम्बन ने अपने पिता प० गणेशराम

जी व मग्रह से अनेक कागजात दिये । श्री नरपतसिंह साखला न खेड रपट के मुख पृष्ठ का चित्र बनाकर दिया । तहमील मुन्सालख लूनकरनमर के काननगा श्री माहनराम गोदारा श्री शिवराज विनोद (बी० ए०) और भवराज पवार (पटनागी) ने क्षेत्रीय नक्शा और गावा के नाम दिये तथा भू० पू० महा० कुमार श्री अमरसिंहजी और गापालचंद झुडाणी न अपन बनाव दिये । इसलिये सभी सहायक दानावा के प्रति हम कृतज्ञ हैं ।

हमारी सस्था स्वयं दुबन परिस्थिति में हमारी बया महायता कर पाती । उसका पाम न कुशल कमचारी और न ही आधुनिक साधन । टाइपराइटर, टेपरिकार्ड, कमरा आदि का अभाव तो बना ही रहा । इनके अभाव प्रकाशन के भी तो सब मात्र स्वप्न ही थे । मगर हमन लग्न एव समय का बरबाद करने में किसी प्रकार की बर्बादी नहीं रहने दी ।

‘आना गुणग्राह्यविचारणीया’ के अनुसार पूज्य पिताजी के दक्ष प्रतिज्ञ स्वभाव व कागज इस अत्यवसायिक दुष्कर काय में मुझे भी चलकर अपने सहपाठियों से सविस्तर म, परीक्षाओं में तथा ब्यासत की प्रविष्टि करने में बहुत ही पीछे रह जाना पड़ा, जिसका अपमोक्ष मुझे सदैव व लिए रहगा । यद्यपि हमारा घर सयुक्त परिवार में है और मम द्वय ज्येष्ठ भ्राता उमका व्यय उपाजित करने में समय भी हैं तथापि—

घर वन श्यामगजेन्द्रसविन दुमालय पत्रफनाम्नुमदनम् ।

तपोषु क्षय्या शतजीव वस्वन न वचुमध्य धनहीन जीवनम् ॥

मैं तो इस ग्रन्थ के आसन बराबर पिताजी के आदेश की संपूर्ति करना रहा हूँ । पर कारणवश एक बार मुझे भी सविस्तर की गोषणा हेतु द्वय भ्राताजी की भाति अल्पकाल के लिए अ य स्थान पर चला जाना पड़ा । तब वे एक दिन हमारी क्षुण्णस्थिति में क्षुण्णग्रन्थ प्रकाशनाय यात्रा पर बाहर चले गये ज्ञात होने पर घर में खलबली मच गई । उनके राग की स्थिति को स्मरण करके सब उदास हो गये एव सकुल लौट आने की प्रार्थना करने लगे । अनुमानिक स्थानों पर पत्र और तार भी दिये । किन्तु वे तो अब आठ बार निली गये आये हैं और ‘खेड रपट’ भी प्रकाशन रास्त हो गया है । अतएव हम अब मान-बडाई को भूलकर विशेष गौरव का अनुभव हो रहा है कि कालू जसे माधन हीन नम्बे की सत्य रिपीट बिस्तृत रूप में प्रकाशित करवा रहे हैं, जो एक क्षेत्र के लिए है एवं अन्यत्र अभी वही ऐसा काय देखने में नहीं आया है । इसके पृष्ठ 552 और प्रानवचन अवलोकन अभिमत, विषय सूची 30 तथा ग्राम चित्र पट के 2 और अन्य ग्राम 584 हैं । पाठक इसके सोलह प्रकरण एवं अनेक परिशिष्टों में अभि-यवित के नय-नय रंग और चेतना के विभिन्न स्तर पायेंगे । अपन पूवजों का दिल पहचान सकेंगे । फिर भी यह पुरावन में ज्यादा सामाजिक तथा साहित्य वद्वयतमकता का अनुसंधान ग्रन्थ है । मैं तो कालू लूनकरनमर क्षेत्र के नागरिकों का ही नहीं, समस्त बोनानर मंडल के निवासियों से भी उचित मुजब यह ‘खेड रपट’ ग्रन्थ पूरा पढ लेन का अनुरोध करता हूँ । कालू के कुछ नागरिक प्रकाशन व विलम्ब पर मुह बनाते हैं । परन्तु उन्हें जानना है कि पहले कविराजा श्री श्यामलदानजी ने उन्त्यपुर राज्य की ओर में ‘बीर विनोद’ नामक इतिहास ग्रन्थ लिखने में एक युग का सम्मान समय और साखरपया का व्यय किया था । डा० गौरीनगर ओया न भी ‘मेवाड राज्य का’ के इतिहास पर दस वर्ष लगाये थे । इन ही समय में श्री नाथरामजी खन्गावन न आजादी

का इतिहास लिखकर राजस्थान सरकार को सौंपा था। श्री आवरमलजी गोमा तो "राजस्थान और नहरू परिवार" के छपवाने में बृद्ध नौ हो गये। जब कि उन महानुभावों का सब राजकीय साधन सुलभ थे। साधन बिहीन होकर हमने स्वात सुखाम मात्र एक गांव पर पूरा श्रवणणात्मक श्रय तयार किया है। इसके प्राचीन महत्त्व की पूरी छान बीन करके जो तथ्य प्रस्तुत किये हैं उनके सुदृढ मूलभूत आकड़े एवं प्रमाण दृष्टव्य हैं। अपने निवास के पुरातन महत्त्व का ज्ञान के इच्छु नागरिक बाधु एवं प्रवासी सज्जन तथा साहित्य-अस्मृति के प्रेमी "यकिन लेड रपट" ग्रंथ को सहज अपनायेंगे, यही आश्वस्ति है।

अकर सकारित स० २०४०
कालू—बीकानेर
राजस्थान

शिवराज सनतर्ता
एम० ए०, एल एल० बी०
मंत्री
साक-साहित्य प्रतिष्ठान का
बीकानेर (राजस्थान)

सत्य सकल्प

मैं सेवानिवृत्त शिक्षक, पसठ का बूढ़ पहले की सोची हुई सारी बातें विस्मरण कर गया। चाहता था—पसठ प्रारम्भ हो जाने के पश्चात्, सुख शांति से घर बैठकर हिंदी राजस्थानी और मस्कून में बड़ी बर्तान घाड़ा बहुत लिख लिया करता। किंतु कतिपय स्थानीय नवयुवकों ने इस उद्यम की स्मारिकाओं के सदृश में अपना अवोध आरोप मेरे पर मँड दिया कि—‘गुरुजी आप राजस्थानी भाषा में कालू की एक स्मारिका लिखिय।’ उद्यम में ‘जागती जोन’ के बने छ माही सम्पादक ने लिखा कि—‘आप अपने कसब का पूरा ‘रपट नामा’ लिख भेजिए, हम रिपोर्ताज अब निकाल रहे हैं।’ सब नहीं पढ़ा पढ़ाया वाक्य—‘इतिहास जहाँ की महान निधि होनी है’ मस्तिष्क में प्रवेश पा गया और मैं जन साधारण के जीवन की जानकारी रखता हुआ तथा अपने क्षेत्र में उत्सव, मेले धूम-ध्वास, अकाल नटाइया और महामात्रियों जैसी सुख दुख की अनेक घटनाओं को निकट में देखने वाला व्यक्ति इस भयंकर मघन बन इतिवत् के रास्ते—‘खेड़ रपट’ घर चल पड़ा। ‘कुब नेबेह कर्माणि, जिजी विषेच्छनम ममा’ ॥ वेद ॥ (मनुष्य मत्कर्मों को करना हुआ तो वष पर्यंत जीने की इच्छा रखे)

जा अवित लिखने के लोभ लोभ में सुविधाओं से दूर पड़ा, क्रुद्धता भुनता है उनकी दशा पल कटे पड़ी की भांति होती है। पर अपना दंड स्वभाव आब देखता है म तब निज निणय के अंतर्गत में भारी मानसिक पीड़ा भोगता है। गाव में जहाँ पूरी स्थान सामग्री सहायता तथा यहाँ जहाँ गिलालेख व प्राचीन रचात बात? पर मैं तो ‘साठा पर पाठा’ बीते जमाने का मृत इतिहास स्थानीय ग्रामीण ज्ञान गुमान के आधार पर लिखने बैठ गया। मदिश का मूर्तिया उत्कीर्ण चरण पादुकाएँ ताम्रपत्र और निकट स्तरीय गावों के सीमावर्तीवन एवं वनचपन में बड़े बूढ़ा म सुनी कालू की बातें वारदातें बहावने जो अपनी यादगारण जुटाने के लोभ मोह में अथक रत्न से जुट गया। कालू चास व्युत्पत्ति विषयक पुरानी यहिया थेही के सस्थान चिह्न गादी ढोलिया व कबे जोड़ कोड़ और बूढ़ी औरतों के सम्ब लाकगीत किंवदंतिया इत्यादि के मग्न-श्रवण में निगिवासर एकाग्रचित्त, चित्तक विचारक बन गया। भाषा व्यवहार साधना चिंतन और आचरण की यथाथ दृष्टि से जिनना मैं औरा के लिए चिंतन हुआ, उससे कही अधिक स्वयं के लिए अति तकीय हो गया। गदन दुखती रही मोजन आ गई और पीड़ा से गरीब जकड़ गया। पर गले के पट्टा लगाय अतमग्न हाकर लिखता रहा। फलत जल्दी के साथ परमात्मा के घर का जमानती नाटिस आ गया। हृद्राग प्रवाह में बह चला। दिल का दौरा पड़ गया, काय अधूरा रह गया। फिर पाण्डुरोग। मोत के मह पड़े मेरे मन में बही बात घर किय रही—‘कालू एक अद्भुत कोटि का ग्राम है।’

पी बी एम हास्पिटल बीकानेर में दो बार भर्ती रहा वापिस घर आकर खाट में पड़ गया। पर लिखने का रोग साथ चिपके चला। खाट पर उठ बैठना और घर वाली

की नजर बचाकर कुछ न कुछ रपट हालान लिखना । पुन पड़ रहना । चार नादनें लिखी, दस और पीछा पाच पविनया पढी, बगलट बुझार । मप्ताह विवशता आगम करना पड़ता । दबा, पय और फन पूरे करने रह । डॉक्टरा मित्रों, मध्विषया तथा पारिवारिक लोग ने भानि भानि से मुने बहुत बार ममयाया— मालिक गवनमॅट का वारंट गिरफ्तारी आने वाला है, आगम बग ! जीवन ही सब कुछ है अच्छा हा दा चार बय और जीते रह लो ।' किंतु बहावन तस्य—“लाली रें तो या ही हवाली ।” मेर मन तो वही बातें बोलनी रही—“कालू एक पुगधूतीय कम्पा है ।’

है जान के साथ काम, इ सान के लिए ।

जननी नहीं है जिन्दगी, बेचाम के लिए ॥

मन् 1937 की बात—श्री मेवा सदन सरस्वती पुस्तकालय कालू म किसी सज्जन द्वारा कलकत्ता मे भेजा हुआ टांड का राजस्थान ग्रंथ आया था । मैंने उसे पढ़ा और अपने राज्य काम आदि क्षेत्र के भू भाग का विषयगत अवलोकन किया था । ऐसे तवारीख ग्रंथ मिलते, शीख मे पड़ लता । फिर शसणिक योग्यता बढ़ाने हेतु अपने शोध प्रब ध (राजस्थानी लोक साहित्य) के लिए भी ऐसे अनेक ग्रंथ पढ़ने पड़े थे । “बीकानेर राज्य का इतिहास (दोनों भाग)” तो अब मिला है । लेकिन मैं ना पुस्तकालय म बहुत पहले से ही जाना रहा हूँ । जब कभी किसी नगर मे जान का मयोग बनता, पहले पुस्तकालय घूम का नियम पालता । अनूप सरस्वत साईंवेरी बीकानेर म मुझे कई बार बैठकर अध्ययन करने का सुझाव मिला हुआ है । उक्त सस्था म मुहणोत नणसी, कविगजा बाकीदास, दयालदास सिढायच, रामकरण आसोपा, विश्वेश्वरनाथ रेऊ, मूयमल मिथण, कविगजा श्यामलदान जगदीशसिंह गहलोत मू० देवीप्रसाद र हैयाजुषेव आदि के एतिहासिक ग्रंथ तथा न्यातें और विशेषकर राजपूताने के इतिहास की छुट जिल्दें मैंने भग्मरी तौर देखी पड़ी थी ।

अब आइये अवधरी (अधुल फजल), राजस्थानी रनिवास (राहुल माङ्गयायन) तवारीख राजस्थी बीकानेर (मू० सोहनलाल) ऐतिहासिक निबध राजस्थान (डॉ० गोपीनाथ), पाणिनीकालीन भारतवष (डॉ० वामुदेव णरण), मेरी विश्व यात्रा के मस्मरण (पी टाटिया) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास (ताराचंद) राजस्थान का सक्षिप्त इतिहास (डॉ० सुगवीरसिंह) चूरू महल का सो० पू० इतिहास (श्री गोविंद अग्रवाल), चूरू दशन (श्री वनराज) राजस्थान की जातिया (बजरगलाल) रजिष्टर देहात रियाम्न बीकानेर (चांदमल षडक) गिवनाथ भास्कर 1 भाग (गिवनाथसिंह सेंगर) बीकानेर राज्य की न्यात उद्गू मे (मेघमिह) कवरभी सायलो (स० डा० मनोहर शर्मा) चाम्मोजी विष्णई मम्प्रदाय और साहित्य 2 (डा० हीरालाल माहेश्वरी) बौद्ध सम्प्रति (श्री राहुन) आगम और त्रिपिटक एक अनुगीतन खण्ड 2 भाषा और साहित्य लेखन मुनि श्री नगराजजी (डी० लिट०) बीकानेर जन लेख संग्रह (श्री नाहटा) तगप थ का इतिहास (मुनि बुद्धमल) मत काव्य (परगुराम चतुर्वेदी) अलखिया मम्प्रदाय (श्री चन्द्रान) ऊमर काव्य व राम स्नेहिया की स्नलिखित पुस्तकें मिद्ध चरित (श्री मूयणकर) गारखनाथ और उनका युग (रागेय राधक), श्री गुदभक्ति प्रकाश (स्वामी चरणदास) कर्नी चरित्र (ठा किशोर मिह) राजस्थान (यादवेन्द्र शर्मा) बीकानेर नगर (मेजर के एम पनिकर) बीकानेर राज्य का सक्षिप्त इतिहास

(दीनानाथ खन्ना), बीकानेर के राज घगने का केन्द्रीय सत्ता स सम्बन्ध (डा करणी सिंह सन 1465 से 1949), मरुधरा के भागीरथ (गिरधारी दान) बापू कथा 1920 1948 (श्री हरि भक्त उपाध्याय) राजस्थान और नरह परिवार (श्री नावरमल शर्मा) आदि के सुविध ग्रन्थ इसके लिए मैं पढ़े है। मनुस्मृति (भाषा टीका समेत) एवं वैद्य सजीवनी टीका सहित, भाव प्रकाश (भाव मिश्र)—टीकाकार शालिग्राम (सबन 1963), बह्मिद्र जाल (श्री वृष्ण लाल) स 1952 तथा रसराज महोदधि (भगत भगवान दास) मूय सिद्धा त (मध्यमाधिकार), अथर्ववेद आदि (चारो) भाषा भाष्य सम्पूर्ण (दयानन्द सस्थान नई दिल्ली 5) नियमित रूप से खोजकर पढ़े और साथ में हिन्दी राजस्थानी के गद्यकाव्य, हिन्दी साहित्य का बहुत इतिहास, साहित्य कोण कहावत कोश राजस्थानी भाषा और साहित्य (1 डा मोतीलाल मेनारिया, 2 डा० हारालाल माहुरवरी), हिन्दी भाषा और लिपि (डॉ धीरेन्द्र), कला सद्म और प्रकृति (सम्पादक—प्रेमचन्द गोस्वामी), राजस्थानी कहावतें एवं अध्ययन (डॉ कल्याणलाल सहल) तथा कल्याण के पुरान अंक (गोरखपुर) राजस्थानी (पत्रिका), राजस्थान भारती, परम्परा, वरदा, विश्वम्भरा, शोध पत्रिका मरुजागल, मरुभारती, वीणा मरुथी मरुवाणी राजस्थान बीकानेर बुलेटिन, शिविरा पत्रिका प्रभृति अनावलोकन स भा मैं आवश्यकतानुसार सामग्री का चयन किया है। अ ततोयत्वा—विद्वाना की सारगर्भित बातों के अध्ययन से रग छा गया और मे स्वास्थ्य से बिल्कुल बपग्वाह होकर गाव का खेड रपट ग्रन्थ लिखता रहा। कालू ऐतिहासिक ग्राम दूर दूर तक प्रख्यात—इसके गीत बात एवं नामो कामो की पुरानी कहावतें भी प्रचलित है।

1 'कालू बड़ी द्वारका मला दीनानाथ। प्राधानकाल भ यही एक मला नाम का उदार दानवीर एवं भक्त चौधरी था। उसकी आदशता विषयक उक्त कहावत है—

रिद्धि गांधा ताऊ बिलत सवा की शिवनाथ।

कालू बड़ी द्वारिका मला दीनानाथ ॥

2 कालू आड़ी कालिका, वासी जाड़ी बाट।

आशय—गाव कालू की सरक्षक देवी कानिका है, पर नु पास वाल गाव 'वासा' की रक्षक केवल काटा की बाड है।

3 'कालू की गणगौर —एक युवक बटाहा गण गीरोत्सव पर कालू होता हुआ 'कळकळिया' (भठान का एक गाव) समुराल अपनी नवविवाहिता पत्नी को सिवान जा रहा था। रास्ते में किसी न बताया— समुराल कळकळिया का क्या देखेगा ? कालू का गणगौर मेला तो देख ले।" बटाऊ मान गया। पर वह कालू का गणगौरा मेला देखकर समुराल को बिल्कुल विस्मरण कर बठा और वापिस अपने गाव चला गया तभी से यहाँ उक्त कहावत चलती है— क देख कळकळिया मासरा दलना कालू की गणगौर।

दूसरी—इसी प्रसंग पर कविता— गौर कालू रो करत्य नी।

1 (A) कालू गाव ऊकारात है जो ऐसे गाव जति प्राचीनता की निगानी हान है। जैसे—जावू झुझनू विसाऊ, हरपाळ, बापेऊ फरसनऊ कऊ टेऊ अगणैऊ, जऊऊ राजेऊ धनेऊ चौमू कऊ कूदसू कुल्लू जम्मू वम्मू पलू चूरू आदि।

(B) इस तरह स आन गव्द क गावा म पाटाद सातला" दुडलाद जोर ऊण (उदय) श द म बाह द। गोपूदा इत्यादि गाव वस है।

4 कालू मेड का माय । ताल का धिगणी ।" देवी कालिका के लिए यह स्थानीय कहावत प्रचलित काय के शीघ्रता में बोली जाती है ।

5 कालू का मा ज्यानी"—कालू में जाणिया या एव वाम (मोहला) है । सदियों पहले उमड़े जाणी जाट अपने खान पान, जान उपान एवं जवान बहादुरी में बड़े प्रसिद्ध थे । एक बार रात के समय ओड़ी बेतने हुए कालू के कुछ जवान 32 मील उत्तरीय गांव सूई पहुँच गये । प्रातः वहाँ पूछा—'गांव ?' उत्तर मिला—'सूई ।' 'तुम्हारा गांव ?'—'कालू ।' तब सूईवाला ने इन बहादुर खिलाड़ियों को गोठ दी । ये कालू के जाणी जाट थे । इसलिए उनकी यह कहावत—'कालू का मा ज्यानी ।' चल पड़ी ।

6 'कालू का गि मिथुन है'—श्रेष्ठ कायों में मिथिदायक । कहकर हर किसी का प्रभावित कर लेते हैं ।

7 'कालू का कलम में दानो बूहड़ दोय' । कालू में बूहड़गोदारा और कलम के बामा में अथ कहकर । दो विशेष व्यक्ति हुए हैं ।

8 "कालू का वग विलाव"—कुछ आत्मीयता के निवार करने में (एक-दूसरे को मात देने में) उत्साह एवं तब विजयी हैं ।

9 'कालू गांव का धारा टाट रुद्धा प्याग ।' कालू की प्यागी परम्परा है कि प्रायः प्रोढ़ावस्था के लोग गांव के चौहटे घूमते-मस्त मिलते हैं ।

10 "कालू गांव बड़ा धर पुरो मिनसा में चनगई ।

आधमाण आर अपनावे, आया मू लुलनाइ ॥"

कालू के लोग बड़े कलाकार एवं चतुर हैं । वे अपने गांव में आये मेहमान का दिनभर मान से सम्मान करते हैं ।

11 "सुख देवाळ घणो मन भाव, दूर न जावा जी अकुलाव ।
हर हित भिमना हेन रिझालू क्यू सल्लि कयो ? ना मलि कालू ।"

एक नायिका अपने पति का वचन वर रही थी कि वह भवा सुखा का देने वाला और मेरा मन बहुत रजित करने वाला है । मैं उससे छोड़ी अलग हो जाऊँ तो मन नहीं लगता । दूसरी मर्चि ने कहा— अपने प्रियतम का बान बना रही हो ? नायिका ने चतुर्गई से बात छिपाते हुए तत्काल उत्तर दिया—'नहीं । मैं साहबजी की बात नहीं करती, अपन गांव कालू का बताता बता रही हूँ । (सत्य बात का निषेध करके असत्य बात बना देने से क्या मुक्ति एव छेकापहनति' जलवार बन गया है ।) (मम स्वयं द्वारा) ।

12 'बीरा गावा मेह वरम कालू चाले आधी ।

भोटियार बापडा के कर ? लुगाया कमर बाघी ॥"

यहाँ की नारी का अपना एक निराला व्यक्तित्व है जो मातृ ममता, गालीन-ममता, महिला मनावति रहन-सहन नियम आचार चाल चरगत सज्जा लज्जा, ठठ-बठ गीत राग एवं कला कारीगरी में अभिव्यक्त होता है । पूजा-अर्चा व्रत उपवास तथा पूष दीपकीय नपम्दा में गांव की भव महिलाएँ बड़ी तत्पर हैं । धार्मिक संस्कृति उनके हृदय में पर किय रहती है । भौतिक सुख सुविधाओं की प्रगति के लिए पुरुष राज-नीतिज्ञ हैं किंतु नारियाँ धर्मनिष्ठ हैं । नारियाँ ही यह विशेषता नई संस्कृति में पुरुष

कमजारी का स्वयं परिचायक है। पुरुष का मदीना मग्रहणीय स्वभाव और नारी के घामिक कार्यों में अधिक व्यय देखकर ही किसी न उक्त भाव व्यक्त किया है—जीरा गांवा मेह वरस, कालू चाल आधी।

13 'सर का साठ, कालू का आठ' पहले इस राज्य में भटिण्डा रल साइन विस्तार (वि स 1968, सन् 1911 स) था। तत्कालीन सरदारशहर आदि कस्बा के व्यापारी, बगल आसाम जाने हेतु लूनकरणसर आकर गाड़ी चढ़त थे। लूनकरणसर को जन साधारण सर' नाम से ही संबोधित किया करते। यात्रियों के लिए सर गारे पानी वाला मडचूस मन व्यक्तियों का गांव था, किंतु उसके पड़ोसी गांव कालू के निवासी पौरुषवान एक हर तरह से दिनदार थे। इन विशेष व्यक्तियों के लिए बटाऊवों के मुह लूनकरणसर की तुलना में कालू की कहावत बोली जाने लगी—“सर का साठ, कालू का आठ।”

14 'काळू खारडो भाई भाई, रिटी बिगो, मद लुगई'—पहले दस गांवों के नाम एक साथ बताकर परिचय करवाया जाता था। उनमें कई पुरुष और स्त्रीवाचक नाम के दो गांव एक साथ मिचकर बोल जाते और कई पुरुष पुरुष के साथ। जस रिणी-गजगढ रिडी बिगो नोहर भादरा, खेजडा फोगा, गोडू बज्जू चोडियो राजासर, कालू-खारडो। इसी पर इन गांवों के किसी दो निवासी सबधियों ने अपने अपने गांवों की तुलना की— कालू-खारडो भाई भाई, रिटी बिगो मद लुगई।

15 'रग काळू रो काळका रग खेड रो माप।
भगत कटार ले खडा अमल करावो दाप ॥
काना कुवर सुसच्छणा गिरधारी गोपाल।
दुरगाइत सा वेदिया, रग कालू खोपाल ॥”
(राजस्थान का लोक साहित्य पृ० 128)

लोक कथा के वाच जमीन की घटना जाने पर मनुहार के समय रग के दोहे बोल जाते हैं। कालू में कालिका के श्रद्धापूर्ण दोहों के साथ कुछ सभ्य नागरिकों के मौलिक रग बड़दाव भी प्रचलित हैं सो समयानुसार नाम बदलत चलते हैं।

16 'काळू काळ रो वासी' यहाँ अकाल बहुत पड़त है तभी तो किसी ने 'पग पूगळ घड कोटड' वाल दोहे की परोडी बना डाली है—

'का काळू का खारडो का जणिय रा वास।

इत्ती जागा नी लाधू ता लूनकरणसर आम पास ॥'

17 'काळू फुरणियो ग्राम —बात का कच्चा कहलाता है।

18 'काळू फुदकणियो ग्राम'—इसके वास, बार बार जगह बदलकर बसने वाल प्रसिद्ध ग्राम रहे हैं।

19 'काळू ने जुवाँया अर भाणजा भेळ दिया —गादारी के जा दू भाणज और जादुवो ने जाणी जाणियो के भादू। इनके बाद तो प्रत्येक जाति में पर्याप्त भाणजे और जेवाई यहा आकर बस गये हैं।

20 'काळू आयाडा न फळाप।'—नया आकर बसता है, कालू में उस आदमी की एक बार बड़ी समृद्धि होती है।

21 'काळू तेरी घर धुरी, पाणी राही, ब्रह्मपुरी'—कालू में मुख्य सुख पानी,

रोही (जगल) और ब्रह्मभोजो की बहुतायत के हैं। (अब सिवाय पानी के सब विपरीत हैं।)

22 'काळू भोषत वाळो' ^१—गाव काळू में भेसा के बाद उसी गोदारा वश में एक भाषत नाम का चौधरी भी प्रसिद्ध हुआ था। उस समय से काळू का परिचय भाषत के साथ होने लग गया।^२

23 'काळू का आगा शेर का सा'—काळू के लग किसी भी सावजनिक कार्य को पहले पहले बड़े बल व साथ धुरु करते हैं। फिर ठंडे पड़ जाते हैं, तभी यह कहावत चली है—काळू को आगो (उत्साह) शेर को सा पीछो सियार को सो।^३

24 'काळू कलास'—सब सुला के लिए।

25 'काळू रिझाळू'—गौकीनाई के अनुकरण हेतु।

26 'काळू मुह काळू, हरपाळू'—सन् 1950-52 से राजस्थान के गावा में अधिष्ठा विद्यालय खुलने लगे और शिक्षा विभागाधिकारी सहरी शालाओ के शिक्षको का गावों के विद्यालयों में भेजन लग गये। तत्समय शिक्षकों ने काळू और हरपाळू (राजगड क्षेत्र का एक कस्बा) दोनों का असुविधाजनक गाव विख्यात कर दिये। कई बाहरी लोग तो यातायात कमी के कारण काळू को काला पानी तक कह दिया करते थे। किंतु अब व बातें नहीं रही। इसी वर्ष (1980) में यहां 30 कर्मचारियों ने अपने क्वाटर्स साफो की लागत से तैयार करवाये हैं।

27 'गरळाळें पड गोद म भाता करदे म'र।

काळू सू तू काड दे मळे न आसी भेर ॥'

जुलाई सन 1941 में गांव काळू का स्कूल एंग्लोवनाक्यूलर (पदोन्नत) हुआ। तब हैडमास्टर पद पर रामपुरिया हाईस्कूल बीकानेर से शिक्षित श्री भरुदान आठा (सिपल) काळू आय। बीकानेर में विद्यार्थी जीवन बितान वाले श्री आठा ने काळू से अपना तबादला करवाने के लिए तीन वर्ष प्रयत्न किये और इसीलिए उ होंने कालिकाजी की स्तुति हेतु अनक दोहे बनाये थे—गरळाळें पड गोद म भाता करदे मर ॥'

28 'काळू गाव कुलसणा होग्यो औरत जात अफडो।

व्याह सावा म हुक्म चलाव पुरस पणवळी ठडा।'

सन् 1932 की बात—स्थानीय श्री काळराम करनाणो की लडकी की बारात पेडीवाल जात सूरतगड में काळू आई थी। वह स्वरो की धमनाला में तीन दिन रही और गाव का पहले पहल भूख निनमा भी दिलाया था। गारे साहब, साइकल और कारा के चित्र, पट पर देखकर लोगों को बड़ा विस्मय हुआ। पर बारात का एक ब्राह्मण नेगवार रीति से अक्क कर गाव काळू की माछी ठाक बता गया—'काळू गाव कुलसणा होग्यो'।

29 'स जीया लग्न काळू दिस टुरियो।

मुण वर चूटया तो पाछो रो मुडियो ॥'

(सिद्ध जसनाथजी रा सिरलावा पृ० 177)

1 किसी के प्रवास में गाव काळू बताने पर बतमान में अपरिचित साहित्य प्रेमा लोग पूछ लेते हैं—'नानूराम सरवर्ता मासों के ?'

2 पूत वपूत दासी बात—

भावन र लामू मुत जाग्यो, घाटे घाल गिटाया।

धर गी गार्यो किरी दारनर डगर जू अरहाया ॥

मवत् 1530 के पास श्री बाना लानमदेसर गाव का जियोजी ब्राह्मण एक बवाहिक गाय के बाबन काट आ ग्या था । उमने रास्ते के गाव कतरियासर मे जमनाथजी के दशन किय और काल जान का कारण भी बता दिया । श्री जसनाथजी ने जियोजी के काय मे शोधपूर्ण पत्राण का मचने किया । उमने अनुमात्र कालू पहुँचने पर ब्राह्मण को तुरत वापिस लौटना पडा ।

30 यह आज्ञादो बरबादी का काटू मे एक अक्काडा है"—सन 1952 मे पचायत चुनाव हुए । तब यहाँ कुछ उम्मीदवार लोग चुपचाप अफसरों से मित्रर पत्र सरपच बन गये । गाव की जनता के साथ वे खूब मन माने काय करने लग । उनक विरोध मे गाव के नवयुवक ने समाचार पत्रो मे कविता प्रकाशित करवाकर जयपुर तक बातें पहुँचाई उसका अंतिम पद—

पर काटू की पचायत है, अयाय का कटा नगाडा है ।

यन् आज्ञादी बरबादी का, काटू मे एक अक्काडा है ॥

31 जूत छत्रगठ बाटा काटू मे ही पड ।' पुरान समय मे छत्रगठ ठिकाने का शासन प्रबध अकला था । चार बढमाण मय खाते थे । बढ लाग दूमरे की घमकाते तब कहत— 'आ गाव काटू है—जूत छत्रगठ बाटा अठ ही पड । यह कहावत कठार प्रशामन हेतु दूर दूर तक प्रसिद्ध थी ।

32 "काटू मे कीडी न कण जर मँगल न मण मिल ।" गाव काटू प्राणिया की उदर पूति के लिए उपयुक्त स्थान है । वे कहते हैं—अगले ज मे मे गूकर कूकर भी करें तो नाथ । काटू मे करें ।

33 'गाव काटू रो यो विगमाव, मान भगना रो इधक उच्छाव ।'

(मार सस्मरण परिच्छेद मे)

34 'काटू लूणकरणभर तहमील का मुनिया गाव"—तहसील के दो सौ दस गावो मे काटू बडा समृद्ध गाव रहा है ।

35 'काळ बाळा इन सभाळो'—एक समाचार पत्र मे सरस्वती पुस्तकालय काटू के लिए छपी मुद्र कविता— पाथी खाना पाठ प्लाळो काटू बाळो इन सभाळो ।'

36 'काटू रा० उ० मा० माळा है यह ग्यान कळा—गुण माळा है । '(प्रेरणा) विद्यालय पत्रिका मे प्रकाशित कविता । (सन् 1964 65) काटू के अपने गीत भी अनेक हैं । एक आधुनिक लोक गीत सिपाइडो देखें ।

37 मैं तन बुझू रे सिपाइडा, सडक पर बँगलो कुण चिणायो जा ?
अज शहर मे अमरसिंहजी पधारया काटू मे बँगसो बाँ चिणायोजी ॥ 1 ॥
मैं तन बुझू रे सिपाइडा, सडक पर मोटर कुण चलाई जा ?
म्हार शहर मे लालजी आबसिया, काळ मे माटर बाँ चलाई जी ॥ 2 ॥
मैं तन बुझू रे सिपाइडा, सडक पर अस्पताल कुण खुला रे ?
म्हार शहर मे शेरमलजी बठा काटू मे अस्पताल बाँ खुलाई जी ॥ 3 ॥
मैं तन बुझू रे सिपाइडा सडक पर टकी कुण चिणाई रे ?
म्हारे शहर मे गोपालजी सरपच, काळ मे टकी उवा वणवाईजी ॥ 4 ॥

आगे सब सस्याआ के नाम ले लेकर गतीजगे (गति जागरण) में गातरणे उक्त गीत का बढावा देती हैं।¹

38 काळू के छोटे कथ विषयक गीत तो दूर-दूर तक प्रसिद्ध हैं। एक—
काळूगढ रा बालमा कोई साधूसर री नार, छोटी बालमा।

39, 'काळू भोमी हृद कण कण कविता मद।' प्राचीन समय से लेकर आज तक गाव काळू में और उसके कविद्वयीवादी गावा की भूमि में अनक कवि एवं गुणीजन उत्पन्न होत आये हैं। इन पवित्रियों के लेखक को स्थानीय कवि श्री पुरस्कारराम और कृष्ण राम सारस्वत की बहुत रोचक कविताएँ सुनने को मिली हैं। वर्तमान समय में ५० श्री दुर्गादत्त शास्त्री की हिंदी, राजस्थानी में अनेक गभीर कविताएँ पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। लेखक की दृष्टि में भर काव्य पुस्तकें तथा इतनी अथ प्रकाशित हुई हैं। इस तरह अनक स्थानीय कवि लेखक काळू की प्राचीन काव्य परम्परा में प्रयत्नशील हैं। तभी तो किसी ने कहा है— काळू भोमी हृद कण कण कविता मद।²

एक उन्नतिशाल गाव का इतिहास गीता गाथाओं तथा कथा कहानियों से सुमजिजत कुछेक व्यक्तियों के हृदय मध्य स्वभाव अनुभाव अवस्थित है। मैं तो गत सात वर्षों से सागी पीढाएँ भूलकर इसके प्रत्येक चरण का पल पल पर विचारशील बन रहा हूँ। स्वप्न ही या जागृत इसी का ध्यान चलता है। मृदु स्वभावता, आत्मिक कामलता जल्पच्छता महज सतुष्टि, उदारता विज्ञान हृदयता, विश्वास पक्वता, ईमानदारी और निमल बुद्धि से मैंने गाव में इस नये पुराने अतिश्लिष्ट चारित्र्य का प्रकाश्य रूप दिया है। यह अपनत्व की दृष्टि है, जिसके चिन्तन तनाव से मैंने शारीरिक कष्ट सह्य है। फिर भी गाव के नागरिकों में मेरे इस काम के प्रति कभी रुचि हागी तो मुझे कहीं न कहीं अवश्य सात्वना मिलेगी। क्षेत्र के विलुप्त प्राचीन महत्व को पुनः प्रकाशित करना तभी सम्भव होता है जब सारे लोग परस्पर सहयोग और सहिष्णुता का काम में लागत हैं। मैं तो केवल इतना ही लोभ सवरण कर पाया हूँ कि इस साहित्यिक पुरस्कार के युग में एक ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखने में सफल एवं सफल हो गया हूँ। मैं सदा का घर धुसिया मास्टर, एक बार श्री ए० एस० दवे (शाला इन्स्पेक्टर) से ग्रेड बाबत जाकर मिला। उन्होंने कहा—“काळू में आपका क्या उपयोग है? हम भेजें आपका जयपुर तथा जोधपुर।” मैं ठहा होकर लौट जाया। अगले वर्ष शिक्षा निदेशक राज० न सहृदयता से एक सक्रिय ग्रेड काळू विद्यालय में जावटित करके मुझे घर जमा दिया। पर 'खेड रपट' के प्रकाशन हित व्यसन सालभर

1 आदरणीया भू० पू० महिला पंच, वालीबाई द्वारा पूरा गीत संकलित किया गया।

2 राजस्थान साहित्य अकादमी के तीन पुरस्कार (भीरा स्मृति पुरस्कार नौ हजार पृथ्वीराज राठी स्मृति पुरस्कार सात हजार भाष स्मृति पुरस्कार तीन हजार रुपये का) राजस्थानी भाषा साहित्य सस्कृति सगम के मध्य पथ में दो दो हजार रुपये के दो पुरस्कार विष्णु हरिदालमिया पुरस्कार दिलो, चम्बई के दो हजारी दो पुरस्कार, केद्राय सा अ तथा कलकत्ता के पांच हजारी आदि पुरस्कारों में सम्मिलित हान के लिए मेरे पास हर वर्ष सूचना पत्र जात रहे हैं। मगर नवीनतम कृति कहा? मैं तो केवल काळू का ही दास कवि गुरु एवं समाज सेवी हूँ गाव की पुरानी गुण गथा को छोड़कर और क्या लिखू?

की भयंकर शरदी एव गरमी में बिना दाता तद्दूर के टिकसड़ निगलता हुआ भी सुरक्षित बच जाया हूँ। यह ईश्वरीय पुरस्कार (जीवन दान) ही मानता हूँ। दिल्ली तो दिलवालो की है मेरे दिल कौन ? दिल का ता दौरा पड़ गया। अस्सी वर्ष ले लेता अब मत्तर ही मुक्ति से ले पाऊँगा। दिल्ली में 10 वर्ष की उम्र घट गट और इसके लिए क्षीणावस्था में बची विपनावस्थाएँ भोगना पनी है।

हमारे तहसील क्षेत्र में ऐसे ग्रथ का अभाव या जिनमें लाख सञ्चय विषयक विभिन्न प्रकार की प्राचीन सामग्रियों का भण्डारण हुआ है। परन्तु विषय में सब पुराने अच्छे होते हैं और न सब नये हैं। जहाँ न तो क्षेत्र की ऐतिहासिकता का प्रश्न है उन तथ्यों की आरंभिकता करना मीने उपयोग माना है एव यहाँ की विकसित नवीनताओं से भी प्रभावित हुआ हूँ। मुझे अपने मंडन से बाहर के मस्त्रन हिंदी, गुजराती राजस्थानी के अनेक नये पुराने ग्रथ शोधने पड़े हैं। मुद्रित के अनिरिक्त क्षेत्र की हस्तलिखित प्रतियाँ और प्रतिमाओं के उत्कीर्ण लेख भी देखे हैं। इसलिए इस लेखन में मैंने सामाजिक आशाओं एव आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए दोनों प्रकार की गवेषणा से सामग्री सङ्कलन करके विचार पूर्ण तथ्य प्रस्तुत किए हैं। इसके माध्यम से मैंने काल के लघु से लघु गुणों तक का अभिनंदन किया है। यह जिले और तहसील क्षेत्र के उजागर अस्तित्व को यथोपयुक्त पुनर्गोष्ठित करने का सत्य प्रयास है। इसे मेरे कवि हृदय की भले ही कोई महानता न माने परन्तु मैं बड़ लेखक अपनी इस आधारभूत मातृ घरा के अणु अणु का गुणगान करना अपना पूर्ण कर्तव्य समझता हूँ।

‘खेड रपट’—कालू अपने क्षेत्र में कालिका माता का खेडा कहता है। इस लिए ग्रथ के नाम में पहले मैंने खेडा शब्द लिया है। खेडा छोटा गाँव या नजदीकी क्षेत्र को कहते हैं। दूसरा शब्द देनी रपट, जिसका सम्बन्ध रिपोट से है। ऐसा फ़ामीला भाषा का रिपोर्टिज शब्द भी हिंदी में चलता है।

खेडा पाणिनीयालीन खेट शब्द है। उनकी निखतानुसार कुत्सित नगर को खेट कहा गया है। राष्ट्रकूट का इतिहास के पृ० 72 पर प्राचीन ‘माय खेट’ का उल्लेख है और ‘जन महापुराण’ में महापुरुषदत्त न ‘माय खेट’ के लूटे जाने का हाल लिखा है। यह दक्षिण पूर्व में स्थित मलखेड माना गया है। खेट से खेड बना है। जैसे कल्याण तीर्थार्थक म—खेड ब्रह्मा (425) खेड (क्षीरपुर 292) और ‘खेडवा’ रामधाम तीर्थ मान है।

राठौड़ राज्य की बड़ी मददी खेड थी।¹ उसने बाद खेडा नाम नगर के लिए प्रयुक्त होने लगा है। जैसे—राजखेडा (जिला घोलपुर) सादुल खेडा (चित्तौड़गढ़) जस्सा खेडा (उदयपुर) खेडा बोरटा (भीनमाल) कलरखेडा रत्ताखेडा (श्री भगानगर), डगर खेडा (पंजाब), सक्ताखेडा (जिला सिरसा) बीरम खेडा भवानी खेडा (हरियाणा) तेंदु खेडा आदि अनेक वस्त्र खेडा नाम से प्रख्यात हुए हैं।² यहाँ खेड की जय बोलते हैं तथा

1 पान शब्द कोश—मुकुंदी लाल श्रीवास्तव

2 पाणिनीयालीन भारतवर्ष पृ० 78 (6/2/126) ना०प्र० पत्रिका वर्ष 56 से।

3 मन्त्रागल पृ 73

4 चौताला राठ के पाम आका खेडा, तेजा खेडा आदि नामों के कुछ नये खेडे भी वस हैं।

राजा महाराजाओं एवं बड़े आदमियों को औलाद का खेड़ा बसा' कहकर सम्मान-सूचक आशीर्वाद दिया जाता है। राजस्थानी में खेड़ा के लिए कहावत है—

“उजड़ मेड़ा मुड़ बर्म, निरधनिया घन होय।

गया न जोवन बावड़े भुवा न आव सोय ॥”

‘रपट’ नाम मैंने अपने ससारिक लाभों से ऊँचे उठकर निरपेक्ष भाव में जागरूक रहकर घटनाओं में निहित स्वार्थों तथा पानों की मानसिक गतिविधियों का सही विश्लेषण किया है। इसका घटना प्रधान उल्लेख, जो सत्य, शिव, सुन्दरम स्वरूप वाचक बंद को वविध्य भाति से हृषित करेगा, वह ऐतिहासिक वर्णन साहित्यिक चित्रण के साथ कहानी और निबंध के लगाव से उज्ज्वल ध्येय की काल्पनिक पृष्ठभूमि का वस्तुगत विमुक्त आश्वासनावाहक होगा। क्षेत्र की घटित घटनाओं की लिखन में उत्तरदायित्व-पूर्ण पद गरिमा के अनुसार ही शब्द भाव व्यवहार किये हैं। इसके लिखत समय भुव अस्वस्थ का मानसिक मनुलन अक्षुण्ण रहूँ और भवेदनशीलता के साथ तमाम घटनाओं का पूरा अध्ययन करके ‘रेड रपट’ का सृजन सवारा है। विभिन्न घटनाओं के समन्वय से बध्य रोचकता का अपना आंतरिक सार मक्षिप्त ढंग से निरला है।

इस रपट के घटना घयन में मैंने अपने खेड़ और क्षेत्र के सामान्य पाठकों की आवश्यक वाछा का पूरा ध्यान रखा है। इसको उनक लिए सुख प्रद, लक्षिक तथा उपयोगी बना देने के परम प्रयत्न किए हैं। इसी से लिखन वकत में अस्वस्थ रहा हूँ और समय तथा व्यय बढ़ि हुई है। व्यय और विपाद तो इसके बावत अनक तरह के सहे हैं पर एक गांव के लिए इस प्रकार की सामाग्री का ग्रथ रूप में मजो देना और आकार प्रकार की विस्तृत रूप रेखा बना कर काय पार करना भुव बृद्ध की अमाद्यान्त बात है।

प्रस्तुत ग्रथ जो राजस्थानी और हिंदी दो भाषाओं में है। इसमें केवल कालू ही नहीं लूनकरनसर सहस्राल क्षेत्र के प्राय दो सौ दस गांवों का शोधपूर्ण वर्णन (जो प्रकरणा में) विवघन ढंग से किया है। बीकानेर महल से संबंधित प्रकरण भी इसमें रले हैं। विशेषकर कालू के प्राचीन एवं अर्वाचीन (भौगोलिक ऐतिहासिक, सामाजिक सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनैतिक, आर्थिक और औद्योगिक आदि) विषयों का इस गांव में लोक साहित्य से गुणित कर पद्धत प्रकरण और अनक परिशिष्टों में समाहित किये हैं। पर तु कायादशी का एक प्रकरण (विगन के स्वरूप वनमान परिस्थितियों तथा भावी भावनाओं सहित) प्रामाणिक आधारों के सद्भम में उन्नत सलगन “राजस्थान और कालू” का साथ लिखा गया है। इन सभी के लिए भेरी अभिलाषा रही है कि नागरिकों को गांव का नया पुराना गौरव जात रहे।

फिर भी पुस्तक में अनेकदा खामिया रह गई होगी। इसलिए क्षमायाचनायाँ हैं। अभाव का भाडागात्र यह रपटनामा, भुव अनेने में गाँव की बहुत सी विधुतियों का वर्णन परिचय नहीं द सकेगा। वतिपय तथ्य प्रकाश में आने में वचित रह हैं तो मैं अस्वस्थता वशान् विवग न। छाती ने जार काय किया है वकन का भूल्य समझा, उमने मुने बचाया है।

- 1 प्राचीन काल में भेड़े की तरह नागल और यादों गहन भी गाँवों के रूप में प्रयुक्त हात में। गाँवों के घना की थोड़ी का गिरदार बड़े थे जिसकी राजधानी डाणी गान में सम्बधित की जाया करती थी। हरिदाणा की तरफ आज भी गाँवों के समूह की थोड़ी तथा नागन नाम में पुकारत है।

कुछ धनीमानी एवं राजनीतिज्ञ व्यक्ति जिनका गांव व प्रति इर्ष्यातिरिक्त स्नेह सहायग नही है—उन लोगों का उल्लेख इस रपट में नहीं मिलेगा, चाहे वे कितने ही बड़े एवं नता क्यों न हों। खेड रपट में तो वे ही व्यक्ति प्रतिष्ठित एवं अभिमाननीय माने गये हैं जिनके गोम राम में जन हित का प्रेम प्रवाहित है। गान पीत उठते बैठते एवं चलते फिरते हर समय क्षेत्र विकास की बातें सोचते रहते हैं चाहे वे धन सम्पत्ति तथा शिक्षा दोषा में अत्यंत दुबल स्थिति ही क्यों न हों। गांव व गौरवावित मनो कुनपति कहलायें हैं।

खेड रपट के लिखन में बुजुर्गों से ली हुई मेरी पुरानी जानकारी है जिसमें मेरा अनुभव और दाघ सम्मिलित है। शासकी और महान व्यक्तियों के नाम जहां तक पता लगा पुस्तक में लिए हैं। मेला, भाषत, फूसाराम शबर, गणेशाराम पंडित जस उदार व्यक्तियों के आचरण में प्रत्यक्ष अनुभव गान से लिखे हैं। छत्रगढाघोशी की जानकारी मेरा स्वयं की तथा बीकानेर राज्य के इतिहास से सम्बद्ध है। फिर भी कालू की कुछ बातें पुस्तक में नहीं ले सका हूंगा, इसका दोष, मात्र मेरे पर न माना जाय। बीमार एवं मुक्त बुजुर्ग का प्रश्न भाव (जन्म तिथियां चित्रा का माँग और पारिवारिक परिचय सेवा भाव) नागरिका द्वारा अवश्य पूरा कर देना चाहिए था।

इस पुस्तक प्रणयन में मरणा पड़ता मैं जिम किसी से सहायता बटार लाया उन महानुभावों का अत्यन्त भारी हैं। तत्काल सहयोग करने वालों में परम आदरणीय प० श्री नरसिंहदास जा स्वामी विद्यामहादधि और डा० श्री रघुवीर सिंह जी सीतामऊ (मालवा) ने रपट के कुछ ही प्रकरणों से जगमग करत य और दो शब्द लिखकर दिये हैं तथा मर हम प्रयत्न का प्राप्ताहित किया है। पदम भूषण प० श्री बाबू मदन जी गर्मा अपनी 96 वर्ष की दुबलायु में मरणा के सम्पादक श्री रावत जी सारस्वत के साथ मुझे देखकर खाट से उठकर मिल और मोहाद्रव इस पुस्तक के एक दो प्रकरण देखे पड़े पूछे तथा बड़ी उत्सुकता से अपना अभिमत लिखवा दिया। मन्तर वर्ष के विद्वान डा० श्री हरवशाराम बच्चन ने खेड रपट पर गद गद हाकर गुम कामनाएँ प्रकट की हैं। माननीय (आ० मेजर) श्री राम प्रसाद जी पाटार जी० ए० न मम पत्र देखते ही प्रकाशन सहयोग भिजवाया है। श्री जवरामल नाहटा ने रपट मध्या हरक व दोषस्त के लिए हादिक हा दे देकर मेरा मन प्रफुल्लित बनाया है। फिर तो कालू के कलकत्ता प्रवासी सज्जनों ने भी ग्रन्थ प्रकाशन के लिए सहयोग पहुँचाया। जिसमें दिल्ली रहने का मेरा साहस बढ़ा। वहाँ श्री जे० क० नाहटा और एस० क० अहोबा न पूरा थड़ा भाव बनाये रखा, तब जाकर यह प्रकाशन काय पार पड़ा है। उक्त महानुभावों के लिए मैं हृदय की असाम थड़ा यक्त करता हूँ।

मैं आदरणीय डा० हारालाल माहेश्वरा एम ए, एस एस बा पी एच डा पी लिट आचार्य हिन्दी विभाग राजस्थान विश्व विद्यालय जयपुर के प्रति अपना हादिक आभार प्रदर्शित करता हूँ, जिन्होंने अपने अस्वस्थ एवं व्यस्त वातावरण में समय निकाल कर इस ग्रन्थ का प्राक्कयन लिखा है।

वैसे मुझे अनेक पुण्य मति विद्वानों से भाति भाति की सहायता, सम्मति-सुझाव और विचार विमर्श आदि उपलब्ध हुए हैं जिनके लिए मैं अंतरमा से कृतज्ञ हूँ। कृपि बक मनजर, माननीय लुर्शीद अहमद खन० न गांव घोरदान की दरगाह का लिखने के लिए

मुझे लालायित किया कि कुछ तथ्य भी लाकर दिए हैं। राज० उच्च० माध्य० विद्यालय बालू के श्री विजय कुमार अग्रवाल श्री रामचन्द्र सोलंकी, श्री सुशील प्रकाश गोयल श्री चिरञ्जी लाल मानी प्रमति वगैरह अध्यापक महानुभावों के सत्परा मर्गों में मेरे इस यात्र की जीवन्तता तथा मन्त्रता बनती रही। अतः मैं मुदिन मन उनके सुखी जीवन की कामना करता हूँ। श्री जयनागायणजी पारीर (प्रधानाचार्य) न ही मर गये मैं महयोग ब्रह्मा है, अतः धन्यवाद देना हूँ।

ग्रन्थ की प्रेम काँपी के लिए प्रवर्ण एव विजय, यथा स्थान सजा देन के लिए आत्मजा श्रीभाग्यवती राजवर्णिनी और पौत्र इन्द्रचन्द्र तम० ए० न मुझे कुछ विनाश दिया वे द्वय स्नेह तथा शुभकामनाओं के अधिकारी हैं। वमने क्या ११वीं के विद्यार्थी कमल नाहटा ने भी ग्रन्थ की प्रेम काँपी के पेजादि लगवाने में काय करवाया है। मेरी शुभाशीं ह। विशाखर नृत्त महानुभावों ने मेरी ऐतिहासिक विभिन्न चाहनाओं का बड़ी सहृदयता के साथ समाधान किया है उन्हें मैं बड़ी नफी भूल सकता।

- (1) भदरलाल जी नागा, जगमोहन मनिव स्पीट, बनवतः न उत्कीर्ण त्रैय पठन म
- (2) श्री गिरिजा शरण शर्मा राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर ने अक्षरा भिन्नवान में।
- (3) डा० मदनारायण स्वामी (रा० रा० अभि०) ने ग्रन्थ उपलब्ध कराये।
- (4) श्री क्षमा शर्मा पुरालेखाधिकारी ने बीकानेर क्षेत्र के तापमान आकर भेजे।

अपने आत्मज द्वय जगगज सम्बन्ध एव शिवराज सस्कर्ता एम ए, एल एल बी से मैं इसका काफी लेखन काय करवाया है। अपना लड्डा मास्टर तीथराज सस्कर्ता एम ए (इतिहास) दूर रह कर भी रात्रि व प्रेरणा में काय मैं सम्मिलित गाना रहा है। वह प्रेरणा ही नहीं, बल्कि बार बार प्राचीन सामग्री खोज लाकर मैं मौन देता—तब तो सम्भवतः यह सम्बन्ध अपूर्ण ही रहता। उसके सन सहयोग में हमारा काय सफल हुआ है अतः उसका भी नामाल्लव करता हूँ। अतः मैं उन सभी के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे सैद्ध सपट व अवेषण में यतकिञ्चन महयोग दिया है।

उदयास्तं जागतं यथावत् भूति कमलु
भविष्यतीत्यथ मनः कृत्वा सततमप्यथ

अर्थात्—'उठो, जागो और ब्रह्माण्वारी कार्यों में लगे। धबराओ मत, मन में निरंतर यह चारणा रखो कि यह काय तो होमा ही।'

मत्स्य सम्बन्ध का यह वास्तविक स्वरूप है। (महर्षि व्यास)

—महाभारत—

नव वयः प्रथम जनवरी (सन् 1984)

सा० महो० नानूराम सस्कर्ता

विद्यमान प्रकाश

बन्ना मार्केट तीस जगती कचहरी के पीछे

(बालू बीकानेर)

दिन्मो 110006

विषयानुक्रम

क्र०स०

पृष्ठ

- 1 खेड रपट (राजस्थानी रूपान्तर) 1
पत्तो पडतग काळू अर रिपोर्ताज
- 2 दूजो पडतग—गस्मरण अर मूझ 17
- 3 तोजो पडतग—रेखाचित्र 33
[ज्होटा अर सरोवर पाळ अर धारा रुख पूजा, खेता रा नाव, ओखद अर अ य
अठै रा विदवा अलोकी अस काळू रा वरतमान वास, देवरो, नवरात्र, जागरण
अर भोपा, काळू मे रामस्नही सम्प्रदाय री जगरी काळू म सत कवि भानानाथ
री समाधि काळू म जन मिंदर अर साय उपासरो काळू म जना रा दूडिया
अर वाईस टोळा सम्प्रदाय स्थानर वासी अर तेरापथ काळू रा बीक्षारधिया
री टिप्पण, तेरापथी अर गाव]
- 4 चौथो पडतग— 56
काळू रा रयात नावो [गावरी मूळ क्या माम वलत चौकीदारी जटायत रो
मध्यवर्ती वास काळू मरुस्थल री पुण्य भोम काळू, काळू रो जूनापो अर जाण
महाराजा सूरत सिधजी, बीकानर महाराजा रो काळू कम्प, काळू बीकानेर
राज्य र खानस काळू काळवाजी रो यान मकान, काळू सू उठ'र गयोडा जाट]
- 5 धरतार रो धम—[भेड, बकरी] 71
हिंदी विभाग
- 1 प्रथम प्रकरण 73
छडा भावास और जनजीवन—
देवी शक्ति के नाम ग्राम स्थापना गाव का पुरातन महत्व भारतीय गावो की
नाम परम्परा म काळू, ऐतिहासिक एव भौगोलिक कालू, परम्परित सीमा
क्षेत्र कालू गाव और उसकी सामाए कालू का निवास क्षेत्र और रक्बा, कालू
की जमीन कालू की गोचर भूमि कालू के टीबे या धार, कालू के ताल
तालाब कालू के खान-खदेडे कालू और नहर कालू के निकट झील, कालू का
जलवायु कालू मे कूए, भूमि और पदावार, कालू और राशिफल, कालू और
वास (माहला), कालू के पुराने बडे करतब, मकान तथा भवन, हास्पिटल
भवन, सटके कालू के वृक्ष कालू के पेडो के फल कालू के कुदरती पोषे, यहाँ के
जंगल मे आयुर्वेदिक औषधिया कालू म धास पालतू पशु और उनका जान
वन क पशु जहरील जीव एव शत्रुन स्थानीय पक्षी जनमरया एक जनगणना
का द्यौरा कालू की जनगणना 1981 घम जातियाँ मुख्य धंधे कालू की
लोक सङ्गति, कालू के रीति रिवाज एव विश्वास कालू के बुजुर्गों की पुण्य
प्रवृत्ति और परम्परा, ईश्वर प्राधना और माला भगवान के 108 नामो की
माला, धरती घोव आपसी अभिवादन कालू का अपना एक रोग, वैद्यमूया
और आभूषण खान पान मेहमान फल और सब्जिया ।

2 द्वितीय प्रकरण

लोक रजण एव लोक मगल—

106

भाषा साहित्य और संस्थाएँ कालू में घर गृहस्थी के विशेषण और साधारण शब्द कालू क्षेत्र के जन जीवन में प्रचलित लाकाकितियाँ राजस्थानी साहित्य कालू में राजस्थानी साहित्य के हिंदी शायद ही, कालू में संस्कृत साहित्य लिपि विकास और कालू, कालू में शिक्षा प्रेम क्षेत्र में सजन सृजनकार और कालू, साहित्य-कार परिचय कालू में दस्तकारी, व्यापार कालू में त्योहार मेले मगरियाँ कालू में खेल-कूद धूर्त की हथौड़ी-हाथ चितम एव मनोरंजन, खेल एव सरस्वती नाट्य परिपक्व कालू नाटक खेलन का राजकीय आदेश (12 सितम्बर 1942), कालू की भजन मठली, कालू में शिक्षा प्रचलन, हाई स्कूल के पहले प्रयत्न, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कालू (बीकानेर), कालू में शिक्षा की डिग्रियाँ प्राप्त करने वाले उपाधि पदक और सम्मान सूचक पुरस्कार, धिक्किमा भवन, डाकखाना का इतिहास टेलीफोन और कालू, बिजली आगमन, कालू में चक्क, कालू में पुलिस चौकी, ग्राम पंचायत कालू की चुनाव परम्परा, बीकानेर राज्य का बधानिक प्रथम चुनाव तृतीय चुनाव ई० सन् 1955 ("राज० पंचायत अधिनियम 1953" के लागू होने के बाद) ग्राम पंचायत कालू के चुनाव स्थान, पंचायत भवन तथा निर्माण, दुधा कालोनी, "यायत पंचायत, कालू के क्षेत्रीय विधायक, पुस्तकालय और सरस्वती पुस्तकालय का इतिवृत्त, लोक साहित्य प्रतिष्ठान कालू, कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लिमिटेड कालू दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति ।

3 तृतीय प्रकरण

ग्राम सेवा सच कालू और धर्म संस्थाएँ—

177

ग्राम सेवा सच कालू का कार्य विवरण, ग्राम सेवा सच के कतिपय सेवा साधकों का परिचय, सनातन धर्म समा ग्राम विकास परिषद् कालू अक्षड रामचरित-मानस पाठ—कायकारी मण्डल ।

4 चतुर्थ प्रकरण (विविधाभास प्रकाश)—

191

प्राचीनकाल की सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति । तीजा मुख नार निवासा, कूजा के नाम अग प्रत्यग एव काम आन वाली वस्तुएँ जानवर गावा में पशु चरान की बारी, जमीन बोहरा और व्याज व्यवसाय (लोक व्यवहार एवं सहभागिता माल एवं यात्राएँ सान आदि के प्राचीन तोल एवं बट्टे, बेटे का जन्म कालू में पुरातन काल के नूतन विवाह, सामयिक मृत्यु प्रयाण एवं भोज, विरादरी पंचायत और उनके स्थान, कालू की महिलाएँ और काय, कस्ब की कलात्मक रूप रक्षा कालू में पितर पूजा एक गुण धर्म) ।

5 पंचम प्रकरण (भत्री मिलन की मनोवृत्ति)।—

217

दिन बहलाव और भाघन, स्वाभाविक गुण, गुड्डी या पतंग, कस्ब ऐतिहासिकता और कालू, नयनाभिराम पर्वीय कुश्ती पत्रकार, संपादक और पत्र पत्रिकाएँ, स्थानीय प्राचीन प्रकाशन ।

- 6 पष्ठम प्रकरण (कुछ मजे तपे पावन पण्ड) — 236
 कालू मे स्वर्गोत्पन्न सच्च बाव चौधरी एव नेता कुछ सभ्य एव सरल नागरिक प्राचीन समय के स्वामी मक्क भात्र मुनीम अयिर सान (वापिक वेतन) एव निजु कारबारा, वतमान समय म यहा के बाग्य कारबारी है, कालू का व्यापार बाजार और दुकानें, कालू म पनोर मित्स, कालू मे मोटर बस कट्टर और ड्राइवर अध्यापक प्रगतिवान तथा पटवारी अपनी रुचि से दुवारा कालू आने वाले कमचारी उत्पादक अन दूध और उन घी और ऊन के पुराने व्यापारी कालू के जागरूक बानपट्ट एव हास्य प्रधान व्यक्ति, कालू के विग्रह रूप गमिक पुरुष, कालू म सुमस्तुन सयानी और घम परायण महिसाण एक ममतामयी महिला कालू मे मिह सतान एव दत्त ।
- 7 सप्तम प्रकरण (कालू का जूना बातावरण) — 267
 प्राचीन दुर्भिक्ष और कालू राग दोष व्यापे खेडे और औपधि उपाय कालू मे बीमारी गाति के लिए मन जानरा कुत्तर और टाने उपाय महामारी बीका नर के पास कालू क पुरान नाक स्वभाव पत्र वस्तु भाव भाव मन 1979 निमन्वर कालू गाव और पुरान नाक निबाम की रातें ।
- 8 अष्टम प्रकरण (बीकानेर मडल का ऐतिहासिक भ्रम) — 289
 जाट ठिकान और कालू बीकानेर राज्य साक कथन जागरदार बीकानेर राज्य और कालू राजवी मरदार (डयोडो वाले राजवी) इस पटटे का प्राचीन कालू छतरगढ इस्टेट क एक मकिल कालू के देहान 18 गावा का विवरण कालू मकिल के गावा की आपसी लूरी छतरगढ ठिकाने का विलीनीकरण हवेली वाले राजवी काज और पटटे का आपसी मक्क छतरगढाधीसा के बिर स्थायी नाम गाव मन्त्र एव मन्त्र प्रनिमाए और छत्रिया परिगिष्ट छत्रगढ ठिकाना कालू क्षेत्र मे विशेष और करना ।
- 9 नवम प्रकरण 344
 ऐतिहासिक परिपाख राजस्थान और कालू इतिहास का स्वरूप, इतिहास की व्याख्या खालसा की स्वम गीति राज समाज और कालू उन्नात भावनाओं म आया कालू (सात्र पत्र) गाव कालू और बीकानेर राज्य के नासक अग्नेजी राज्य की सुदृढता मन 1905 14 म राजनतिक जन जागति प्रथम विश्व युद्ध म कालू मे भी भनिक गये हिंदू मुस्लिम संगठन और अलगाव जन क्रांति का शुभा रम किसान आन्दोलन और कालू के व्यक्ति जनता को उत्तरदायी गायन देने का गियास्ती जिक्र उत्तरदायी सरकार बनाने के लिए आन्दोलन, कांग्रेस प्रतिष्ठान और राज्य परिवर्तन, कालू की पुरानी दगा परिवर्तित एक जनहित मधपकता कालू म मुसलमान जातिया के आपसी सम्बन्ध राजस्थान की बंगार प्रया स्वास्थ्य तथा इलाज श्रेणीय नापा, विद्या प्रसार, क्षेत्रीय साहित्य मेरे कला मगीनकला एव नृत्यकला नाट्यकला आधिक परिम्बनि यात्रायान सह कारिता और उद्योग याय याय और धामन, जन मरक्षण पचायन एन स्वायय शासन, फौज, राजपूतान के आय यय के साधन राजस्थान का वन जाना स्वतंत्र राजस्थान प्रिवीपस स्वतंत्र जनता न अपन राज्य अधिकार

मभाले सन 1972 का चुनाव और मन्त्रीमंडल स्वतंत्रता के पश्चात् राजस्थान राजस्थान के गांव लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण, याय पचायत पचायत समिति, औद्योगिक प्रगति, खनिज उत्पादन क्षिप्ता के मनोरम मौके, चिकित्सा सुविधाएं उन्नति और समाज सुधार, आमोद प्रमोदमय जीवन राजस्थान की प्रगति में गतिशील कालू कालू का वर्तमान वरदीय वर्ष 2035 जनता भाग्य विद्युत उपलब्धि टेलीफोन की उमंग दुग्ध उत्पादक सम्बन्धी समिति का भवत मेडिकल बाडिंग धार्मिक लहर, अद्भुत जुलूस असत्य तथ्य एवं अफवाह उपलब्धिया उपसहार अगता वर्ष वि० सं० 2036 ।

10 दशम प्रकरण (कालू का जिला एवं तहसील)

419

जिला, चार तहसीलें, लूनकरणसर तहसील शिक्षा क्षेत्र का एक राज्य उच्च माध्यमिक विद्यालय, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा राजकीय चिकित्सालय राज० आयुर्वेदिक औषधालय पशु चिकित्सा प्रसार केंद्र, एक वग तहसील लूनकरणसर, जल प्रदाय विभाग, विजली विभाग विश्राम गृह आर०सी०पी० रेस्ट हाउस, लिफ्ट केनाल लून०, लिफ्ट पंपिंग स्टेशन तहसील के सिंचित गांव में केनाल के गांव, लून० लिफ्ट केनाल कानोनी के गांव राज्य कृषि अनुसंधान फार्म, पचायत क्षेत्र, ग्राम सवक मेटर, उपनिवेगन में गिरदावर सक्ल मुंसफ काट लून० बाररूम (Bar Room), तह० लून० क्षेत्र में पक्की सड़कें महावीर ऑटो ऑयल छात्रावास, सवपोस्ट ऑफिस, टेलीफोन एक्सचेंज रत्न स्टेशन त्रय विक्रय सहकारी समिति लि० लून० कृषि उपज मंडी पुलिस थान और चौकियाँ चित्तिंग सेंटर (उत्सूल डेयरी) जिम्सम कार्यालय पाठाश रिसर्च स्थान लाकेस्ट (टिड्डी) महकमा क्षेत्रीय वन विभाग कार्या० साब जनिक बावडी, औद्योगिक संस्थान नाटकीय मंच विभिन्न मिलें पक्षी पीजरे क्षेत्र के ऐतिहासिक देव स्थान (बजरंग भवन) श्री महावीर शुभचिंतक पुस्तकालय तहसील के राजनतिक नेता, त० क्षेत्र के गांव व जनमस्या कालू और क्षेत्र के प्राचीन प्रतिष्ठित गांव, कस्बा कालू एक श्रेष्ठतम स्थान महाजन करणीसर उर्फ राजासर गांवदशर भक्त किशनसिंह की लाक वार्ताएं कुबिया खारडा, सहजरासर खारी, मुरनाणा खियरा ऊँचाइडा, केला बहेरण सूई जतपुर कुम्भाना सक्षिप्त जीवन चरित्र (मजर पूणसिंह) क्षेत्र विशेष और इम क्षेत्र के अन्य प्राचीन गांव तहसील क्षेत्र के गांवों की नामावली, तहसील के कुछ मिले मिले गांव, राजस्थान केनाल प्रादेशिक समानता ।

11 एकादश प्रकरण (खाराजल-गुण्यस्थल)

457

मंडाण एवं कठस के बास मरस्वती नदी या सारस्वत प्रदेश लूनकरणसर गांव का नामकरण लूनकरणसर के पास बसत अन्य बास सावजनिक स्थान, तालाब, पुराना गांव जीवन अन्य जातिधा, व्यापारीजन कूडिया के सारस्वत ब्राह्मण पारीज खडेलवाल पुष्करणा श्रीमाली, दायमे जोतकी, अचारज, गुरडा ब्राह्मण वेश के सेवग नायो (चौधरी राजा महत्ता एवं याजक) वति, जगानाथ गुसाई स्वणकार खातो कुम्हार लाहार दर्नी राईका, मावी बावरी धारी या नावक चमार सामा भगी दादी हिजडे पूर्वकाल में शिक्षा

प्रसार, नडाण या फल मरस मतीग पन्नु पग्चिय वत, खोजी भेडा की विविधता क्षेत्रीय केंद्र स्टेट उन मिल बीकानर उन उद्यान बहुतायत का कारण डेयरी प्रोडक्ट्स खजूर की खोज क्षेत्र का ऐतिहासिक परिनिष्ट चौदहवीं शताब्दी की बात, यह लूनकरनसर है परिनिष्ट (पूर्व प्ररण) तहमील वं कुछ उपेक्षित ग्राम व मम्थाए तहमील व उपेक्षित एन ममाधन ग्राम एव मम्थाजा के मन्वध म प्रयास लून० क्षेत्र व मत और सम्प्रदाय—जसनाथी सम्प्रदाय और हंसरा नाथूसर का जाम्ना धारा वगग मन्व और महत कालू म सेवानायजी, शेष फरीद और दरगाह क्षेत्रीय प्राचीन कला और शिल्प मन्व कालू का परिनिष्ट धत्तात्—महानता के अस्तित्व देव स्थान एव मावजनिक सस्थान बनान वाले महान हृदय वनमान प्रायता भवन ओसवान श्रीसध पचायत गुराजी का उपासरा श्री नन श्वेताम्बर तरापथी सभा हरिरामजी का मंदिर इस्लामी धम स्थान प्राधान छत्रियाँ, सारस्वता की मावडियाजी का स्थान पानीध वुड एव प्याळ जल की धचोइया जल स्टैण्ड गाव मे खुम्गे के लिए पक्षी पीजर गाव नाथूसर और कूजा कालू मे यात्री विश्रामालय, जकात थाना परिवर्तित पटवार खाना पुण्य सम्मरण धामिक यवितत्व, सुख पूर्णा देवी चक्र, मन्वन परिवार नाग्या बाठारी अतिथि मत्कारी समाज सेवी पुरुष सेवा प्रवर्ति और ग्राम अगुवे प्रबुद्ध युवक बौद्धिक जन, विलक्षण प्रतिभावान जन बाकपटुमानम श्रद्धा वचन अक्रुद्र के कुहास म, लेखककीय वगन्नम और साकेतिर परिचय, चित्रो की अनुक्रमणिका ।

खेड़ै-रपट

(राजस्थानी रूपान)

पैलो पडतग

बाळू अर रिपोताज—

बाळी माई री वार मझ खबूँस लट लपती मेडो बाळू जक पातर ऋणिय रा बारा दास, लगडिय बाब रा पूनराप्पर दास अर संवडू मांवना मोनळिया घोरा मू आगे पार उनाळ सियाळ बरोबर टम मू आवती जावती म्हारी खोटी पटारी बाळका मेळ सी नवर R J F 2851 सीधा वम बीकानर मू रोजाना रात री हम वज्या कळजुग री व्याण सी टाड जडीक आ-खडी हव । ह्यागिय जावर जायोडा ना मोनी यानी मेह भगिया मुरमाया मुयाफिर ग्यार वज्या ताणी आप आपर ग्रिम्ही-गुवाडा उड अर घग्गाळाम बीकाण वकुष्ठ की चतळ लाग्मा ललोळ । मोटर स्टडिया लोह ही मोड वग च्यारा कानी मू आवती जावती मोटरा रेगी पोडी चावड मार अर मटाक ह्याई छीड वर र जा सोव ।

घट्टो ग्राम मक्ति पीठ धाम मेठा गेठा भाठा बावो हेंठ नी पड । ताई दनक पह्या खाड म गाय अर गोबर र सिवाय रात री मफा मूनात् ररती । का-गोई बासावू कुनियो भुम गिया फरती । हमी रात्यू चळ पल, रग राग अर जागरण रातीजगा गीत झिलारीज वाकर । बस वड भेज रम गाण भिजाव पड । पण देवी र गाता ही जस-जोत जातरी अर मातरा भाव वखाणीज । जुवा म बळिगान ममा भ्रम परागम री क्या अर भवन मोभा छिव भाखीज । गीत गाडज जके अनूठी अर अचरज भरी अतिहासिक परम्पराया सुण्या ही वण—

बाळी बडडा बीजळ चमक, मेहला वग्स ताल छत्रीज डेंटर हरप मोर झिलार घातक मुरगा बोल कोयल कुलक अर भवानी र जातीडा रो जीवडा हुलम ।^१ इसी लाग जाण अठ जावणिया वटाझू जगदम्बा रा जातरी हव । उव दिनु ग सग दरमणा जामर जी जजमाव ।

इय गाव रा नाव बाळिका जी री रयात आम्हा आप । टाबरा र जलम रा नावां हो बाळिया काटती, देवुडो देवली अर दुरगिया दुरगली राखीज । पाळणा-रुखालना री मा यता माम् अठ देवी री अनोखी दन क्यावा चाले—‘धरती फाडर अरडात करती दवळी अपुडी । चरती गाया चिमकर भाजी । गुवाळिये हियो ।^२ हियो । र हेल घेना ठमाई । झूची वधती देवळी ही जठ ही ठरगी ।’

काळू री जीवणी मीर उगल भार गा-देगर जगामार रागामार, वापरमर,
ननादेस नाथुमर चादमर कुमिदा रावामर अर हेरवा मा र्वा ग्याम गावा उडमर ।



श्री सभा मंदिर श्री भुगळीधर जी

पण प दर कीरोमोटर सू फो- जळगो नी बस । गावदेसर म दसनीय मंदिर, जीर्म
रदी भुगळीधर मूरत मुख मुविया मुख मवाभर सोना भुगळता । जुवो हेम, ठाकरा
रग नित हमेस द्विज जणा न दिवणा दिया जावतो । जेकरम ठुकराण्या जी' विटळा
लिया—ठाकरा न क्या— या मानो पीठा घणा सोणो है म्ह इय री नथ घडावत्या ।
या जेकर हून मोन री दलणा दग देवा मा । ठाकरा वणा मा या पण मानो जुन
दिन सू ही बार आणा बद । ओजू मुखह अड यो पड यो लूम लटक । आया गया
जातरी वडी तीखी निजर झाव निरग ।

देत दुजा वा दिव्यणा मुवणमर् हमेस ।

मिल मवाभर मूरत मुख बनक एव किसनम ॥ (किमन प्रकाश)

गावदमर रा ठाकर विमनमिधजी री परमा भगता विम असनू चमत्कारी
वाण्या मि । मती री माख ही घणी वाता वि । वाड वागटी, डूढाणी, वाहती
मुनार, लुहार मग ठठ सू जायर जठ वम्या है । पण इय रपण मार गावा री घटनावा
क्या समायू ? नारी है ।

काळू री पीठ छार दिवणादा गाव मानीपुरा जाडमगिया लहादेग अर बीचा

सर । म्हाराज डूंगरसिंघजी र पार सू बठ अंक पूच्याड फकीर खाखी वाव रा जीवत ममाध पूजीज । मगासिंघजी जुणा रो औतार मानीजता ।

काळू र आधूण डाव हाथ पाम चिपती सूनी वागी, जका म कदै तीन सो घाणा तल्या रा चालता । हमें इयें दिस री जरीब जेवटी, वगती लण लटी-खारडो सजरासर कुजटी मुरनाणी जर भोपाळाराम री ढाणी जिमा गाव खारें मोठ पाणी र भेळ, माण भेळ, रम वस । लोक मणा मोसा वधार—

गाव ता कुजटपरो और सब ढाणी ।

ज न रा जकार कानी खागे चर पाणी ॥

लूणकरणमर न लेयर उत्तरादी भडाणरी भाम पाणी वारा खारा इलाको है । ठाकरिया घरारी लाटी माटी र जजण पाणी वेगा टाढी लमूटी वगती । इय वास्तै—
रियासती हकूमत मे लूणकरणमर जर अनूपगड दानू चालो पाणी वाजता । सन् 1938-39 म रघुवरदयाल गायल न लूणकरणसर अर हनुमानसिंघ दूधवा-वारा न अनूपगड, मगासिंघजी काळ पाणी री सजा दी । जद ही तो लोक विमराईजणी कवता कहीज—

“राखेवा, विरमेवा सबग, भळे जागिया भाट ।

ज सरिय (लूणकरणसर) मे गुण हव तो कय वस नी कोई जाट ॥’

(भडाण री जाई मधी गादारी सू)

दा दा तीन तीन कास री छेती भेती सू—मुक्छेरा, हसेरा, दुलमरा धीररा, झीयरा मणेरा, कळरळिया, सावेरा भाडेरा जुचाईडो, जुदेसिया, गाटा, राक्षा, फूलदेसर अर जेसा जिमा अंक जोडरा छाटा छाटा राही र बन लागता घणखरा गाव हमें न री नाळा लाळा आया हल हया है । नी ता लाटा म खोटी बीचती—

म्हू ता हेंसेरागी हूं, मेरा वार खिटाया कयू ।

ब ता चुगद बू गा बू नी तो आवलिय न धू ॥’

पण पाणी खातर सर’ सू छव कास ओठा, सदीन कुळ सरगळ जळ कोठो विदवो कस्वा काळू है । अक् र सनमुख उत्तरादा चिपता गाव काळवासियो नाथवाणा, नाथाली ढाणी किसनासर, राजपुत्रियो करणीसर अर सती माताळो र जामर घेह राजें ।

म्है साल डेड साल ताई राज र मदरस गया । च्यार पांच्या पड या, पाववी अधूरी रगी । जक दिना किसी जाच ही ? पली पढता ही गुरुजी दूसरी पोयी मगा दिया करता । पण उव सम अठ सठ, जोगवाळर मेसरी हाटाहोडी खाली अंक साल वेगी आप-आपरा घर मरु ल जाया । मिरवाळ मास्टर नै ठाला बठा दखर पट्टाला आपरो पाछा वला लियो । टावरा बिना राज र माथ म किसी खाज जाव ही जका पदर बीस रा मूको जूता अर दडीड खा बाकर । म्हार ता पढण री त्ववाळमी जागी ।

स्याम्याळा पावटो देखर सीधी गढ गई है। अं पहिया मडया पढ या देखत्यो सू घल्यो। तेल री सातरी सौरम आवं। 'दब्या म्हे गढ कानी, आग भीडसा सारा आदमी भाज्या वगा। मगरियो मडरयो। मिनखारा झूलार ल्हेर, मकडू पावडा अळगा खड या मटर देखा। "गढ अर मटर दाल्डा डर। कन काई नी जाव— के भरोसा? मटर माणमा र मायन आपड अर खतरो पुगा देव।' अणुरो दरपणियो लिगड अर विलकणी आल्या जागल पास खडा जका मिनख चाखीतरा जोवा। माटो रूपो कोटवाळ गढ म गिडतो मज सू देखली। स्टाट हुयो, मटर मुडर चाली। लोमा री हड काट धार सू हरड दणीस हेठ ढळ्या। कळा री देवी काईठा मटर मारणी हव अर हुगडकी कर भीछार गाय दाद माय आय पड। मार नाख। पण अुवा ता परला कानी सू सररर दणा सरकर सर (लूनकरणसर) हाळ गेल जा लागी। चाडी ताळ न वाढाया—जुमाया लाग पाछा मटर देखण घोर चडिया तो अळगल ताल सू कडती रा माडा सा झवकांग पट या। दखणिया जचभो करया— अख फुर इती ताल मे कठ गइ है। सिध्या रा लोग खेता सू जाया जर मटर नी दख सक्या बडो घोखो करया।

ठिकाण रा गढ, छाकाटा। गिरदावळ पटवारी हुवालदार चौधरी सिकाई चौकीदार काटवाळ घाडी वछेरा जुट टोरटा दयाद जमला अुव वखत अठ र गढ रवता। धणी री सावालिमी ना इय खगड ईस्टेट री सरवरा साल श्री जीसाव भादर ठा० हरिसिधजा सत्तासर वाळा न निग दास्ती नजर सुपरवाडजर जमा राह्या। अुवा नीच—दा कामदार नौ दस गिरदावळ, सैकडू पटवारी हुवालदार सिकाई सारा सासण जावत अूटा घाटा सू आप रा गाव गढ कोट सभाळ। चौधरी म्मचारी जच ज्यू जाच जाच आपणे अलायदो 'याव तपास रुड जरवानो कर। राड झगड तसीलदार थाणदार इया र गावा सू पाघरा ही टपता जाव। धणी जूनियर म्हाराज कु वार साव जका रा बाप रो ताप, धूँवा अूपड थरका पड। पट्ट रा आठ मरकल 84 गाव अुवा म सिर नाव काळू सामो कुण शाक सक। पूव सू घास वळ नाव सू हिरण खांडा हव गाव रा धडो चाल। गगनर र चद (करज) बगी लगायाडा नाजम एस० जार० ग्याम आया पण अुवारी कडाई लार गावाळा भेळा हायर चट्टा अुचळो द दीहा। छेकड नाजम साव सळासळी नरमाई ठगा परगायर उदार नाव छावड वर्या जर चौकी अुघाई पल्ल पाडी। अुव दिन सू काळू वत्ता नामनदार हुया। लांगा आपरा फूटेडा डमडेर ढगळा मा बूरेडा चूकलिया चाडिया सू मल्कार पचम जार्ज र चर सिक दीपता चादी हाळा मोकळा रिपड वाढ काडर उणा आम जाल्या गिणदी। धनवता बचको चदो दियो, गरीब गुरव रो कण ही नाव नी लियो। पण आज अुवा अुदार हवा कठ ? टोमरी सोध चू खा अुडग्या मिठोरा जोकड अड वायरा वाज।

गगासिधजी नतिक बुवारी नरपत, धम रा पूरा जाणीवार अुवा रो मुखानद सासण, पूर्णिमा रो च्यानणी ज्यू पन्यो फळाप्यो। अुवा— म्हारी प्यारी प्रजा' र सर्वोधन नै कदी जीभ सू नीच नी अुतार्या। दोन दुवळा अर जवळावा रा सामीडा

सायक, रयत री राम रूप पाळणा स्थाळना राखता । उणा र राज्य म अंयामी नण अर विलासी वण, हर्मज नी पनपता । म्हाराजा साव आपर लाडेमर बेट न ही अक गुनो नी वल्लस्यो । अुवा री घाक सू काळू गाव रा घणी जूनियर म्हाराज कु वार साव विजसिघजी वि० स० 1988 माघ सुदी 5 (ई० सन् 1932 ता० 11 फरवरी) सध्या म खुदाखुद पिस्ताल रा घोडा दावर खतम हुग्या । गाव नै घणो दुख हुया के—'घणी अडीकता सावालिग हुआ अर आठा अलाक पधार गया । काळू किस्मतरी चालती चकरी म पाछा नावालिगी र नाव आय्यो । पण म्हाराजा साव आपर मोटे दुख न मायरो माय पीयर, पीत्र अमरसिघजी न विजसिघजी री गोदी र दस्तूर छत्रगढ ईस्टेट री गादी माथ फौरन जासीन कर दिया । उव मावालिग हुआ अत्त नै प्रजातन रा माकळा वादल मटरा अठया । ठा मो वग्ग्या, न वरग्या, काळू ता बीजळी विना ओजू काळो मगसा ही है ।

अया ता इय गाव र वारकर ही काळामर काळवाण अर काळवासिय, जडा अडा माकळा नाव गाव है पण काळू आणदपुर काळू केवीन अर कुल्लू इत्याद अळगला गाव तो गजब री रामनी पळाका पळक । म्हारा ता अघेर विडरणा कामज-पत्र ही चमक-चू घर अुवा व्यानणिया डाकखाना मळत चल्या जाव । इय वास्त वाचणिया डाकपाल पाठक छत्ता न रपोट है के म्हारा काळू तो बीकानेर जिल मे सडक सुविधा सू आषा अुलातर घट लोरी बसा र रास्त माथ अक कूण म रस बस । या बीकानेर नगर सू अस्ती कीलोमीटर अगू णा, सरदारसर सू इत्ता हा आयूणो; श्री डूगरगढ सू चाळीस कीलोमीटर जुनराहो अर लूणकरणसर सू बीस कीलोमीटर दिखणादा बीच सटर सुगणो सजग स्याव । ओजू ताई तार टेलीफून अेव बीजळा सू जावक क्कार पड । रेल रा तो जिक्र ही कठ ? पण अुजाड गला गरुर टूक मट्टूडा जहर बीकानेर, डूगरगढ सरदारसर जाद नगरा सरा न जोड टकराव । रेल ठेसण, थाणो तसील इय र लूण करणसर लाग ।

पला दो दो साला जठ समचो नेता दाणा नी दीख्या काळू काळ रो वासा वाजया । काळ पर काळ लाक कंया रा कोकड जाळ । काळ आपरो पत्तो बुडबुडो देंवतो कव—

“वा काळू वा खारड वा मणिय रा वास ।

देखा लोक काळ री स्वारथी लाला । पण हर्मी उवा वात नही । आज रो काळू बडा वापारा, छाती ठोक खुमहाल कस्वा है । हाल नी घडी जन गणना री अडीक जन-सरया जाठ हजार र अेड ढूक । घर मकाना ही पंदर सौ घूवा इधको बघना, पाडीसी गावा मे सत पीढिया नाडूखा अर हार नामून नगर है ।

धरा घाक । अठ आवा जाग । सता मूरा अर भगता री पुगणी अलौकी घटनावा माथ घणी लोक काय कइ था लाघ—

मारबदेसर गाव म सब वाता रा मुख ।

अूठ सवार दखिये, मुरलीघर रा मुख ॥

परापरी सू बाय कहीजता माना सुणा । तरवी मनी म नागवनी क्षत्रिया सू
दान पुरस्कार म मिली घरा नी कावड वधी कता काळू नी काळकार मड बनकर



श्री कालिकाजी र मंदिर भक्तजन

बिना धान कढता मरसजी भूराज री माही टोड इय तळटी म ही टूटी । भाफी पुकार
माथ माता मोन चांदी रा मेला लीला सू पाछी माघी । जब रमा री रमाक्यात
साख साठ र खेड जायत पडता ही मिली । अडी चमत्कारी वाता मू ही काळू जाटी
काळकार र वासी आडी वाड वाज ।

भगवती र भो गाव ग लोक सा काल ताई आपर कच्चा घर मुकामा
रवता । पुराण मड री जगा दाठीक देवरा चिणाया पछ हा हल धौभीता चून सकाया
सिल । कूवा-भूवा जिमा खतर रा कार सरु करता मिनख पलपात काळकार न मिवर—
'तालहाळा । खेड री धिराणी जागमाया । डोकरी माझू । तेरो ही सरणो है । बाजे
वाज हळ मरी गाव बार कर काच दूध री अखड धार, गाज वान मू माथड कार
ओजू कडाइज । मह वेगी राम हव । इय खेड, जगदम्बा सतजुधी माय है—कल पाटवा
र जगड जूनी गाइज ।

भवानी रो भय भवन जनाण सरावर री पाळ तळ डाग पुटराप फत्र रळ ।
भमाण नड खडा वडा भेजडा री सोणी जाडन लोक-लाड केरल कोचान री रुखा
हरियाळी साभा तोलीज मालीज । धरती रा भाग जाग दोवा नवरात्रावा मेळा
लाग । जानर ताई सू जायर जातरया जमघट जुड । भण्या गुण्या जुवाना रा अछव
जायाजण वण । जाणू या ज्वाळा माई रा पळगोड खेडो कळकत्त ताई री होडगाई
काळी माई री घोव पूज पळ ।

म्ह वादा आग्या सूनूवा नजरिया तबू, लाग्ग मुण्या गुण्या मा चिनगम
 चेा वत् । वदर् पिचतरै पगा जूटा म् जठ नानर् जायो । च्या मी घर अर पदरमी
 मिनखा मू यो खेटा 'गिणी राजगट दाद' बाळू-मार्गडै र नाव दागडी जोळवाण
 घापाट मुधान वाम वमता । जो गाव रो जे वस जदाजन दो मी मान (म० 1834)
 र जडै गट पन्था वनर उतराद पाम येहु म वम हो । उव ग मंदरदवरा जहोडा
 कूवा अर जिगण मुगाण डये चिपनी दिवणादी (हणै र गाव रो जगा) डरटी म ही
 हाणी मग हुता । म्हागजा गजमिध जी र सपूत मूर्गमिध जी रै गजयराळ म डय नै
 विय धहू मू काठिका जी री म्भूमू मिला मूर्गन मां अठ गयर वमाया । मि० म०
 1900 र नड ह्य गाव न सिरदारमिध जी राग्यो । पछ घामाद मर्गमिध जी री
 धिणाप म या गाव केई साला ग्यो । जुगा राज र बालम चायो । जावग म्हागजा
 गमामिधजी आपरो मौजूना म्हागणी र वीरवनाळ जूनियर ला कूबार मिरी
 विजमिधजा र ठिकाण छत्रगट र गावा भेठा छाटर आपरो भूजळा नह वधारया ।

म्है आठनी धरमा र पामाळ पटण हूक्या । मन्म मू जावता जावता
 भणनिया स्थाणा टागग र मून्— ल्हाम म पकड ले पाण रो बाळा म बाळ पाणी
 बुतारण रो अर जिद बोदग जठोनिया, पागण्या रो गगणी वाता मुण्या करतो ।
 श्री रामजीलाल गर्मा मू सपादिन इडियन प्रेम लिमिटेड प्रयाग मन 1925 र तीसर
 चौथे भाग म पलडी लडा री पुग्गारा म्भग हो पटण वाता— मिफानी खुदादास्ता
 लमनायक लालमिध को विक्टोरिया नाम री तमगा मिग । इत्यान् । अग्रेजा र
 क्हाळो—पचम गारज चमर लेण चचिल जर बडा वग लाट मारा री वनाया गाव री
 ह्याया नुवती रती । गमामिधजी म्हागज री आपर गज्य रै मोग आग— पोळो
 साव, रिडरण मात्र लेजवा माव जानपरी मन् री यो० ए० इमिल म्भ० वुन्ध र०
 टोप्स जिसा जनर अग्रेज रावता । उवा रो लेण लगाव ता हागिज गजन इविन
 इत्यान् लार्डी मू घणा ग्या ।

हमै म्ह पाठा जपुगात्रिय प्रमा माव मरव जावू अर मन 1927 28 री
 विगत वागता कट्टे वे— अकर्म श्रीजीसाय र हकम विजभवन मू ठिकाण ग
 वामदार क्षा इजीनियर अग्रेजा न गेय कूवा ठळ जळ जाव म्भूम माग् बळ विद्यापण
 वेणी रालन कार मू बाळू पीध्या । जायण रो अंका मुहाळनी हड छुट्टी लागी । म्हा
 घरा जावता छात्रा न कूटवाळी गळी म गडो गोया विगणी चम्मा चाल्या वे—
 'जाज गाव म मटग जा ह । अवा म्हाज बोली— म्है ताठियामर भग्गवाव रो
 पात गट वठ मटग ग्यो अवा मानी ह । मिना ऊ वळग र नेल मू चा । जवाग

- 1 गत ग्राम ये प्रग्यात हुआ
 लक्षित नव ग्राम के निरुद जनी
 जमी जाध मोर उतर की आ
 हैं चिह्न जनों व निरुद वनी ।

घरोडिया गुरु बडा मिनवाळा बाळवा मयाय दूजोडा न पठार विसा घाल करा । इय वास्तं म्हारी नेम री भणई हुई जिसी हुई । आग जायर परिस्थित्या बदलगी । जोविका शोध घाल दियो । पोसाळ र नातें तो म्हार गुराजी रो अपामरो, रामस्नेहाळी जगेरी अर जगात पाणदार वकी ह्वाई, मोटा बालेज बणग्या । गीता भागवत हाथ रा लिखेडा ससृष्टत रा पोया अर राघेस्याम रामायण रा भजना ही विद्या बिगसाव करयो । मदाना घूमणे, टोपडिया चराण अर तलाव हाणें, खेता जावणें जित्ता घया ही हाथ लाग्या । गाणा बजाणा, गस रमता अर नाटक चेटका मे भाग लेवणो तो म्हारो जल्म उछाव रया है ।

वाळू, लूनकरणमर तहमील र दो सौ नम गावा म वडो न्हीय र जगी गाव ! यो जटायती गरिमाळ इतिहास म् जडियोडो आपरी अवकल अमीरो अजे अगवा राज । जातंग मुसाफरी म गया ठालाग चौबिठ म जाणीज । जठ वठ ही आग म्हा लोगा न गाव वाळू बत्ताया वठंग नागरिक बाग तार्क पूछता अर पूछ— 'वाळू किमा ?

म्हे बतावता— 'वाळू व्याख्या ।'

नागरिक— 'वाळू भाषत वाळा ?'

म्ह ववा— हा ।

पछ आगलो दूजी घात भला ही छेणे ।

सौ वरस परया यो गाव 'वाळू भोपतवाळो' नाम सून घणो प्ररयात हो । इय मे आद जुगाडी चौधरया रा गोदारान, जाणियान, जादुवान अर भादुवान बाट च्यार वास वसता । च्यारा ग वूवा जहाडा, मित्र थाम, रेख रक्तीना कारू कळाकार अर दादा आप आपरा यारा याग । आपत भूपतियो गोदारा जाट अगूण शानती ऊपरनी गवाडी बावळ लूठी येडी मिक्कूप मठो धाळो धाकड धाया माज्यो साथ सेंवार माळा माथ ऊंचा वठा सियाळ तावचो वगतो । पाणी न आवती जावती लुगाया रा लसकर हजार बाग वण पर ही आगवर नी वडता । गळी र नाना दिनारा आदर माण झूलरा भूम जावता । डाकरो उवा न देवर घर मे जावता वगतो— वेडा मन ये तावडो नी करण देवो ।

म्हे नानर लाडेमर भापत री भूनी मेची ठमडेग (भग्न) माइना टाबरा भेल्लो घणी लुकमीचणी खेसयोडा हूँ । म्हार नानरो घर गागरा र वाम, अर गोदारा र दाद पडदाद घणी विभूत्या जस वाज चस । गाव म गोदारा र वूव मिंदर वन अके मोटी छतरी मेख गोदार री ममाध माये वण्योडी ही , वा सवत 1990 री झडी म्हारी देखणी द पडी । पण भगत मेख रा सुवाज वाळू नाव र साथ माथ जनाना सोमफूल रें कु दण जडाव ज्यू जगा जगा जुडियोडा जुगानजुगा आपता रती । गजस्थान भर म कोई उतारता री झूची वात चेत करता हा— 'वाळू वडी द्वागवा मेखा दीनानाथ' री दूहा कडी तुरत बोलाज जाव । मेखा रा भगती भावना अर मवा री अनकू वाता म सून अके अचू की घटना आज र ठेठ नता ताणी वाळू ग जूना ठाट बतावण वेगी ठरव-

मू उधरीज— सावचा सावो, भानरी जाना अरण्य हाती परणीजण पाण गाव काळू पाँच रयी ।” घर अूपर बेंठा अेक कुवागे अेवड रो गुवाळियो पूछता रया—

“जान कठे जाय ?”

“काळू ।”

“जान किम गाव जामी ?”

“काळू ।”

“जान किम गाव परणीजमी ?”

“काळू ।”

“जान कठ वळमी ?”

“काळू ।” “काळू ।” “काळू ।” “काळू ।”

(घापर) जान किम गिडमी ?”

“काळू ।”

वाग्भ्यान् काळू ही काळू जान परणीजण रो उयलो मुणर उव रो मतो वणग्यो । आपरो अेवडिया दूसर गुवाळिय न मू प दिया अर भक् र गाव जायन बीन वणग्या । काळू र गुवाच जेंचेनी जाना भेलो वळत र वळ रळ बटा । मग वगता आप आपर सगा र बुलावा लाग्न भेला हूण गेह , पण गुवाळियो बीन लार अेवलो ही अुवर र बठो रया । चौधरी भेख वन या लवर गट मो वान्यो— भडा हुई । बापडा कोई आसग बीन वणर आग्या हुती ? बटा ग काई पट हूख मर जाय जाट र बेट न ही रणी है । काई जाड रो छागनी टावा कर “यावा अर च्यान् आग्या दे देवा । नही ता गाव रो हुळकी रमी । गेगा नायन् उव बीन न पाणा पला पूछया उवा ही वात निवळी । के— बाग् बाग् काळू रो नाव मुणर म्है ही परणीजण आग्या । चौधरी भेख जात गात पूठायर कडूय मू एक म्याणी मी डावडी बलाड अर आपर घरा चेंवरी माडर परगानी । माकलो घन मन अर हायजो उव बीन न दीनो । अडी अनकू उदार क्यावा अठ भगत भेख रो चाग् । म्है नमून रूप अेकूव कवत माडू ।

ग्धि गादी तभू बिन्त, मवा की सिवनाथ

काळ वरी डारवा मखा दीनानाथ

जाखा घाक भिल अवम, मन जाणद चिन्ता मिट ।

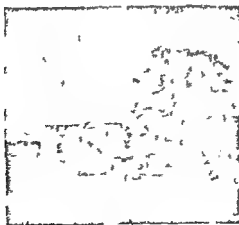
माग्या जाघ काळू नखन, मखावन नाही नट ॥

विरामणा म सारमुता अर पारीका रा वचा घडा है । इया पछ अठ खडेलवाळा रो लम्बर है । वेद धग्या गुजगौडा रा वम । पण पिडताइ म पारीका अर सारमुता म सदीना होड चालनी जाई है । बाजकळ अगवा प० दुर्गादत्तजी गाम्त्री सारम्भना म सम्युत ग टाळवा वता अर विद्वान २ ।

वराग्या अर सूइवाळा, दा वाम म्हार साय म ही आयर वस्या । वरागी गारवदसर पू जर पारीक गाव सूइ सू जाया । वराग्या र महत सेवादसजी आपरं वास म अठ ठाकुरजी रा पक्का म्दिर कूवा अर कुट वणा लिया । ठिवाण नूई मडता न जमीन म्दिर लार डाजी रक्कम डाज भात्र मग उत्र सम माफ करया ।

कूवा माठा पाणी गाव र जार च्यारूमंग माठा ताल जना म भारळा तळाव ज्हाडा, तीन दावनी जमीन खुल्ली सळा घन न पाछ अर माटी चरणोई । जवा वास्त लाग बाळ कूमम अठ मजरां वरण जामा पाछा नही गया । जातर ताई रा लाग सुजा रलवाया जर वस बठा । मनार-मूधार चूनगर चेजारा डावदर बम्पाउदर हैड मास्टर, पडित-पूजारी अर पटवारी तबाता पट्टा लेली हा । दा घर नी मुमलमाना रा सी घर हुया ।

वाळ म नावगिया वाम गाव री नूइ कागनी बाजै । इय म नवा-पुराणा अनक मस्थान दलबा जेच । जाखा रा जागावू उ नति रस्ताव । सन् 1956 सू रा० उ० मा० विद्यालय मन 1964 सू रा० प्रा० स्वा० वि० केन्द्र परिवार कल्याण केन्द्र प्राथमिक गाठा भवन काळिकाजा (मल्लन कल्याणीजी) री म्दिर रामदवरो हरिरामजी रा माठा जर जातरा आरामदह नुवा भवन पचायन भवन (सल्लन न्याम पचायत) पुलिम चौकी (पशु चिकित्सालय) मेल री मदान गुराजी री साळा पक्का तळाव जनाणा भमाणा जर खमळा वामी री थेह करणीजी अर सती माता रा मठ रामस्नहियाळी रमणीक जगरी इत्याद इयै वास ओपे । पारीका र वास म उवा रा घरमसाला सोभ । हरिजना र वास उवा रा म्दिर सडक मारली सुहाणी घनरी, मुस्लिम माहल्ल मस्जिद स्टेट बक जामवाळा रा घरमसाळा रा० उ० प्रा० व या पाठशाळा, ठाकुरजी री म्दिर जन म्दिर अर उपासरा, सत्यनारायणजी र म्दिर म शिष दीतला अर हटमान बाब री मूरत पूजीजै । गादारा रा म्दिर ही पुनारा न सरण देव ।



गीतळा माता

मन् 1963 म प्य गाव मण्ड गावर गम प्जा लाम्वा । सन 1935 म् पत्या रो सम्बन्धी पुस्तकालय, न् बाबा भानीनाथ गी जगा-समाध भळे गिअर अर वजरग भवन् । मारस्वा रो भावड या गे मदिग् ठिनाणै ग गड (वतमान छात्रागम) वभूत सिद्ध गी मदिग् अर पचायनी भवन गी मदिग् । जलावा प्या रै म्वाळा जहाण ही गुमाइजा रा घात भवान, भूजी भोमिया अर मेनप्याळा ग चौकिया गाव र प्या - मेग् यथाभगनी मानीज । बाव चौवट पाणी गी वगे टवी अर माग माहण म पाइप लेण गे पूगे प्रवध है । आट गे बावया अर वग्पाळी ववमा ता गाव म जानी त्रोन वपगव ।

आजकळ गाव न जुवाया अर भाणजा वमग् भेळ नाण्या है । काग्रेम, कम्पुनिस्ट जनता आर० एम० एम० र बाद मण्ठी पारटिमी गी मुग्ध नता वा भाणजा अर वा गाव रा जुवाई । जाण ह्वो न्नाई मूनार, ग्याती ह्वा बाह नाई , सग माहित्री मलामी रै वराड वडा जमान गी वगानी प्गमाथ । महारागी राज्य अर इव म् गावा गाटा अर ऊँ वट्ठा र नाव वूडा ववाड, टाड भूना म्मनी मार । पत्तालिया बिमाण हळपळा हरिजण अर भाट्टी गाटाळा गी डाण टाट है । वूड घमग् री पटी पिमियोडा दादा धाळा वुगला वरमा बाळाधारी घनी, बाछी र्कध बोपागी, अक्कडवाज अय वग गिता भराम पल्ग घमगिया भणेडा गुणी, मत्तलव री घाम बाइना अ तवान्गोर नक्कट्ट नमा, बाळू र पुगार्ण नाथ न डोव अर आपर मनमोव भाग न नाव पाव । लार पोग री उधमी बाता न आज री आळमी विसयत्या मे भिगयग् वाड बिम्मत कीरन मवार ठा नी ? पण इय वेग् गी अक्कयो मूवग्वा टाडा इना र्भवत है वे वूड घ- कळाप मनी दिनग आधण दो गग्वा बाण्णा हा पग् ।

राळू कळकर्ण रो अेक टुवटा सौ-सौ बोमा मीठ जाण अूच अूजटाप भाण रग भळव । मारा समाज तन मन घन वडा वाज वधार । माग्ग्वरया रा आजू मी घर पूरा नही पण आज म् वरीर अम्मा माल पत्या म्ब० फूसागमजी ववर अूचा जाया अर मग्ग्जनीना मुग् उपाव वग्माया । गाव र गीचाळ म् गाजगे गग् जुटायग् आधूण घाग् टुवाया अर अूव गी जगा जमीन, सगी नाल भोन वडी धरमसाळा वणाई । जवा 50 वग्म वरीर गाव वूड मदग्म गी मिक्षा माग् वाम आई है । साय उव जनी माय मयनागधण जी रा मदिग् अर वूड भळे घिणा दिया । सुद्द गोवर माटी रै कक्कै घर म वग्मा पण वि० म० 1964 म गूणग्ग्णसग् र अघविचाळ रास्त जनता रो वुग् फीने मटण सम री खूवी खमग् गूठी प्याथू वणागिया । जनान भगेवर न पक्को करावण रा काम पत्या फूसागमनी पायो । पुण्य गी वाड सदा हगी हग् । घन वध्या अर ग्राम कवि पुरमागम कध्यो — फूमा भागी रे तर न्ग् धरम रो गगी । उव मग् आछा वाज करावण साग् फूसागमजी गी सलावार सजागी दिल् दरियाव सेठ भरुदानजी कोठागी र्पुनायनाम जी राठा अर दयाल् पन्ति गणेशागम जी सारम्बा हा । फूसागमजी गी लीव माय वतमान सम म मेरमलजी दूढाणी गाव म जन हिताय अेक वग् अस्पताळ भवन वणार न्थो है । उवा ब्रह्माणीजी रो मदिग् वभूतमिद्ध री साळ अर स्कूल रा कमरा इत्याद काम अठ पूरा कराया है ।

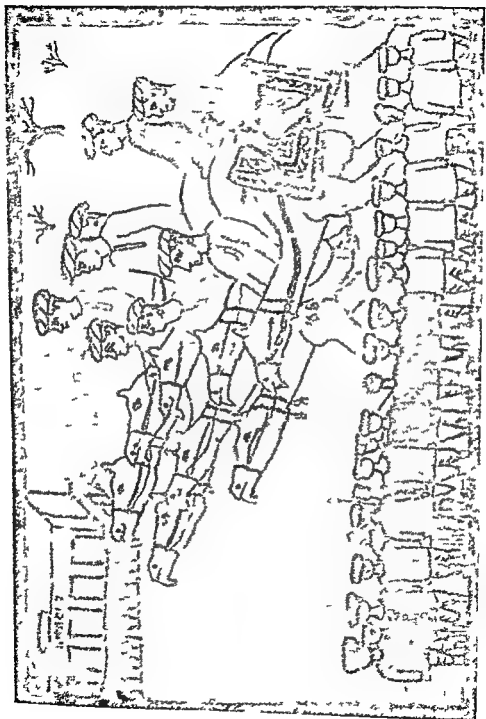
एक सेठ र धरा ह्याई मारा र होक चिलम खातर हर हप्ता तम्बाखू रा घरट पीसीजतो । व्याह साव री ओक यनोरा म दस मण पक्का मुड वाटाजतो । ओसवाळा रा डाई मी घर । पर उवा म सेठ मुगनमल नाहटो वाज्या । पमठ साल पन्था ही आज र बगला न मात करणी टाडाळा हली युका मेला । नाव मां चोनी ठाण ऊट पटाजू टाढा आवता जर च्यार साग जर चारा राटी गादी पात्र पावता । सठ सठाणी मित्र पारा र रूप छेकट अउरी मृगी लूमी लाणी रसाई जीमर मनुस्ट रवता । उणा र जुजास नाहटा रा वास दान विघा वाज्या ह ।

मनोहर सस्कृति सां काळू पिडता वासा काज्या कावा कंबळाठा वासमोर अर सौदागनिया दलाला र कानपुर रा काज मान । इय री जवरी मोनियाण नखलजू नवाबी तथा काठका माता री सदा भावना मुमई माता रा ठाट दिवाळ । अठरा माठा मतींग दोहदाळयान कावु मवारी हूम बिसराव । गावावू सस्कृति म गजटा भगेडी तथा माऊ र सवगा री टाळिया कातण भजना जुव या री जूला अर रीगला री रीला चलाव । माधा रा हरजस भानानाय रा राण्या पुरख-ऊम री सारया सुण्या ही जाण्या । दूहा-मूवा बभून रा टाल, कसर कवर रा छिया देम्या मन टुल । जठ र छोट कथ गीत री दस प्रसिद्धि है— 'काळू गतरा जालमो काई गधुमर री नाग छोटा बालमा ।' घुमर घिदड भावा रमता जागीडा सारगी जजम जी जनता । म्हामानखा अपजावणी या वेडा डरी सदा सू सरी सुखा राता माता जर लूमी झूमी रवती आइ है । इय भोम रा माणस हर काम म अगवा जर दूर दूर— काळू रा सा जाणी बाज ।

काळू वण लठो धींगड गाव, बाजू बाजू वासा मिर मोड कहीज । कवत म— सर (लूनकरनसर) रा साठ अर काळू रा आठ तीखी साकत बरोबर मानीज । गाव री ममा च्यार कूवा, मुवा सू अडर लामा पीटो मुवाड । कां ठाणी डाढा टाढो दरमावता । दस साल पल्या गणगौरया र त्यूहार माथ ऊटा री दखण जाग दीड घुडदीड हुया वरती । पल्लू रा ढोल मूडव जर चुटाल री पणघट तथा काळ रा गोर इय कारण वागड वाजीनी ही । के दख कजळिया मासरा दख नी काळू री गणगौर ।



गण-गौर



गणगोरोत्सव पर बाळू म ऊटो की दोड़

इसो नावड या जव क्याग कूवा रा मार्ग ही निलास करा ना-या । ईसर गौर मात्तीणा कूवा आव, पण अूठा री दीड बिना अूण्णा ही विला जाव । घुडदौड री तगा मिनखा री पौड बाज । इय दिन गळी म अेव जयाडो पहलवाना री पाटो छाज । काट्ठा हम्म काळू राजक लाज ।

रम्ब काळू री वाद वषाण ? अवा रा कन्याणी जावम हे काळू । ती तो अठ वोई कर्णोपति-अखपति अ नी सुत मू पगटा वरतो ठिय मू ठरवाय खावणिया ठोठ कुमाणम । देवी बोली दाळ गेरी मे- गज मज री मुजरान चा- ।

धरती री निद्रावळ अर माती रा टीका म्हार माथ जी मूणा । राजस्थान अर राजस्थानी री दोना वक्ता आरती उवाग माला फेग । जगदम्बा री जै जकार काळू रा खातो खि- । वा-रु-वा-रा माग- या मू-रा रा री डानी मनवाग उड ।

काळू री घाम इता सज्जीवण बे, गाव रा भाणजा अर जुवा- मग ह्य र अभमान मे अकौड भक्ती- ज्यू जाग टु-ड टुया फिर । तेलक न गुणा लाघ । हवा क्यातणी अँधेरा-तावडो वणराय वग्याळा मास मवरा वग गिगण मूरज चौद मग घत्ती उदारता वखेर । पण आज री गुण बिगवर वागी वागदी राजनाति प्रवर्तनी रा जूना मुग खीस लिजाव । साहिता मास्वृति समानी अर घग्मी भावना र भूपर चढ । दयै वाम्त जी मागे नी रव । मग्म्वती पुस्तकालय र सेवा विवाम कामा म भाग लेणो चावा पण हण री घडी इय री पुस्तक तथा पत्र -यवम्भा प्रमाणिकता अर एड सग बढ, मन 1951 ताणी 25) रु० मासिक मू गट मित्राणी फाडला रा अजडमी । उवा री पाछी पूरणी वामा कीर माग लागी ? चौधर तो अठ उवा री चाला अर चालती जवा घणगिणत बडूव र घम- निरमुण गाळा विणज करना फिर । सा सम्भावी न सजाग कामा मू पूरी करी पण हम्म कुण जाण ? मन रा तूवा लागू सेवा री भूख घगा मित्र ? पण जाणनिया जाऊ जाण ।

ह काळू म मिनस जीर मिनखा रा जाया करता आया काम मिनस पण सदा पगया वुरा कामडा विर, मिनस मत मार्ग चाल घग्म नीत वावाग, करम गुण मुगणा झाल सेवा नीत बुवाग र पण जन जन वारज मार्गा दूवळा न दाव दगवण प्रभु चरणा वित्त धारता

दूजो पडतग

संस्मरण अर सूक्ष्म—

गाव र उत्तराद नाक काळू र दूसर वाम री पुराणी घेह म सगळिया टीगरा माथ टोपडिया चरावता घरा री भीता-वीळा, राख घोळी रा दडवा कुड कुडो, कुव री नेळ्या रा सनाणा जूनी जाळ पाडवया, घटी रा फूटेडा पाट पुडिया, भाठा दगडा भेड, गळ्या री गेड घूम फिरंग ताम्बाला वादसाही बडोडा टक्का, गोटिया पइसा अर नारळी-ग बूडी विलिया कचकोळया रा टुकडा टाम घणी विरिया म्है हाथ फेर्या है। हम्मै यो घेत लेही रूप है।

गाव र जाखून चराड चमती वामा गाव रा घेह भळे वणवया। वामी म करीय चीस पच्छाम घर वसता मन खेत है। वनमान म वासी जग काळू आपमरी म अण मिल्या कता वाम जिमा नी दीख। वामी रा केर घर वठीन मू अठर अठीन आ वस्या जग दानू गावा री काकड अकामेक हुगा। खतलाह जहाटा वामी रो है अर अनाणा काळू रा, पण हण दानुवा माघ काळू रा पमुघन जग गड म नजर पाय। मानाजा री का र बनार चिपन गाव वामी र घेह री ग्यान वनमान सम म गाव वामी अर काळू दा ना है। वामा री सुमाण भोमकाळी जगता काळू म जांघाटा टावर माटा हायर यारा मरक वस्या। पल्या काळू री तीन बारता राही ही, हम्मै हहार चिपनी वासा अर भानीपर री राही भळ माय रखी। वासी सफा मूनी (उजड) होगी। बया ता सुणा कही वामी भोन बडो गाव हो, इय म ही तीन नौ घाणा नौ तेल्या रा वसता। वामा र पुराण कूब रा लेखी मोठा अंद कोम जाखून जाघा सामाण घोर री जडा म वृगीज्योडा मर्या है। पण केर घर मारी देखणी मे काळू नडा वसता। काळू र कूब पीवता तथा जादुवा र कूब म खरच लगाव रो माचो राखता। लेखा पढ़ी रो कागज हो चार आना खरच रा पातीवाळ हा। ओसर मोसर ग्याह साव अक दूज र जीमता। एक जगा सू दूसरी जाग्या हला मार्यो सुणीजती। सबत् 1976 म वासी र माट लेघ लार काळू अर वामी र वामणा न लूठी बिगमपुरी हुई। उव मम गाव काळू र गोदाग अर जाणरा री दो बेंटी रेघा म परणायोडी हो, जिकी वग आपरे घण्या न लेय पीहर आ वमी। रेघा जाटा रा मात आठ घर, घेडू अर अंधुन त्राटा रा घर, चारणा रा घर मगवाळा नामका रा मोकळा घर अर अक जसूता नाई तथा मिवाता विरामण ही वामी म वसता। हम्मै वामी म जेक खड्य करणीजी र मरुदर काळू रा लाग आज दरमवा जाव। मती माता रा थान दह पडयो। वामी र भापर बीवानेर रो मठा वम, पण हम्मै इय री यह म लोग खेत जोत। वन चिपन माघाळ धार (जगरा) शीवीन लाग बाज वाजे गोठा तथा घुमाइ कर।

वासी चारणा न ही। ठाकर प्रदीदान री काटडी गराड सजड कन धार रै ऊचाव आछी आपना। दूजा पातीवाळ राजस्थान र प्रसिद्ध रयात लेखक दयालदासजी¹ रा पडपाता गाव कुविय रा ठाकर जावडदान हा। त्या आपरा गाव यारो वसान खानर इयर वास खिलेर र जहाड माय सवते 2000 म नूवा कूवा खुदायो। कूव रा पाणा मीठो दूध जिंसा निकळ या जिवो अडय मडय अवेड वाळा र आजू काम आव। पण वामी रा मारा वासि दा काळू म जा वस्या। सन 2011 मे या गाव सफा उजड'र थह हुगयो।

कस्ब काळू रो बाजार गाव र बीचाळ। दुकाना कपड रा गल्ल री मणियारी अर मिठाई री माकळी है। चाय रा हाटल सब्जी री दुकाना, मोच्या, सुनारा वा खाती-मुधाग अर सस्त अनाज रो दुकान काळू ग्राम सहकारी समिति री कानी सू चालै।

अठ रा घणा लोग खती खडिया है। खेती र साथ पसु पाळण घास पूस दूध धी अर उन विनी, बोपार नौकरी, मजदूरी तथा केई पुराणा पसा ही पेट चलाव। पुरख अूटा सू खेत बीज अर गाटा ही वाव। नारया उवा री मदत कर। प दर सान वन्या लुमाया रा घणवरा जावण पाणी डावण म बीततो। इय बात पर पलपान मन 1960 म श्री गिरधारीलाल जी खबर ध्यान दिया अर गाव न सार गल घाल्या। उवा पाइप लगाया अर ब्यार कूबा बोरिंग करवाई। तळ री मसीन सू कूआ चनायन पाणी री बहुतायत उपजाई। कुआ र कारण काळू म रात री गैतक चौखी रंगीन वण। आयात निर्यात यातायात रा टक, आर्थिक लाभ लेवण काळ र टाड जाव जाव। कुदरती उपज भाटा चूना पण उद्योग व कळ कारखाना भटा अर आन रा चाकया ही है। दूध री सहाकारी समिति अर फार जिस एक रा हरिजन री बुनाई डेयरी व्यवसाय अर कुटीर उद्योग रा कारज कर। पण बड व्यवसाय र अभाव म डू गरराम जडा मिस्त्री, माटा बोपारी अर माकळा मजूर ठाला सा बाला बाला डोलता दरम। का बार जायर माण मोयाव पाव। गिरधारीलालजी खबर री गाव हितचिंतनी आत्मा अठ कठ ही है इय कमा वगी कास कुडण करती हवली।

मळे ही पण इणा जभावा मे खेड री माटी अठ जगमग जात मोटी आत्मावा उपजाव। हठ थोडा पुराणा अर न वा नावा जतावू।

काळू र पारीक ग्राहणा म स्व० सगप० सगगमजी जगन्नाथजी प० चैतराम जी पारीक वसत रा पडित अर माटा मिनख मानीज्या। सारस्वता म प० गोधूरामजी भूराराम जी अर श्रीरामजी जोड रा पडित हुया। प० गणेशागमजी वद पुराण व्याकरण, मातित्य, ज्योतिष अर आयुर्वेद रा प्रकाण्ड विद्वान हा। सन 1939 40 र कन पारीका म लघूराम पारीक अर गमाकात त्रिपाठी आयुर्वेद री भणाई भणर आया। इय साल ही स्व० सूरजागम पारीक हाई स्कूल पास वगी अर वक री नौकरी चाली। सांगवना म श्री दुगादत्त सारस्वत अर लघुगम पुजारी अनक उपाया

- विभूषित होकर शिक्षा ज्ञान, कम काट इत्यादि अर्थात् कामा में आगीवाळ पड़ित बंध्या ।
 ५० दुगादत्तजी तो अंग्रेजी अंग बंधन साहित्य से ग्यान ही लिखण बोलण में चान्दा बणा
 गियो है । ५० चेताराम जी पारीक रो डावडा म्व० जनारायण पारीक सन् 1940 र
 ममें डूगर कल्लिज र वेलड स्नातकी बच म इटर पाम करी । उवें मम् बांड गी परीक्षा
 ही अजमेर जायर देवणी पडती । पञ्च माऊ श्री गिरधारीलाल चवर इती पनाई छाडर
 आया पण जयनारायण मम पन्डो काग्रेजी टावर भळे आया । गाव म मनुविनोद,
 मुधार, रचना अर राजनीत रा कागज पूरा होवण भग्या ।

१. इया मू पल्या माहसवरिया म जाहू नागरिक वडीदास जी राठी फूमाराम जी
 चवर जीवणरामजी इहानी इत्यादि गाव रा जाह्या कामा चढ्या । पडम गी लुठाई र
 बाळापत माह बीजराम जी माहटा अर भन्दा नजी कोठारी आग बढ्या । माहसवरिया
 जुग धम प्रवा-मथ गांव सैरसारणी अर विरमपुर्या माव जाग लगायो । आमवाळा
 बधका ह्याव-सावा रै आवा-चावा तामून कमायो । उव वसत एक 'जाट अमराराम
 मारण ही बागिया समत सार गाव न खाड र सीर अर चिणा चावळा गी सगमारणी
 री जीमणवार करी । मूळचदजी चवर आपर चाप बीजरामजी र नाव माथ बीसाणो
 ज़ोडो बणा दिया । मूळचदजी न खेता री कु ड बावडी अर तळाई सोदणन जावता कीई
 वतळा लेवो उत्तर गी देवता । उवा स सग हरता । रै आपरो सामीहो सहारो देवता
 मन्दा दाणी री ठाव माटा बधावण री झाक लगाया जावता । काई अनाथ सनाथ री
 णाथ जावता अर कमी-ममी माह आपरो मच्छाडा पूरा काठ दिगवता । म्हारा
 मामोजी माहूरामजी पिचतर गी मग मू लगायर मरया जठ ताई काथ जावता जावता
 जुडग्या । वनमान मम म हरमचदजी, राणी श्रय गण पाव चालर आपरो नावा
 बुधाडग्या । आमवाळा म मोठाचदजी कोठरी (माटोडा) काथ काज म जाग रचना ।
 अजकळ भन्दा न माट इय काम पण पग पाळा मी माट । अ भाईजी राठ, नाफण
 अर ममसाणा रा मावजनीन सख्या बणाणी चाव ।

अठ गाव विकास मू पन्मा चिक्मिमा चलण मर गगजी अर गणेशलालजी
 जति आपर माटें मिस्य श्री विसनलाल नै आयुर्वेद गी परी पनाई करवा दोनी ।
 श्री विसनलालजी वि० म० 1975 म ही वल बणर काळू आग्या । उवा न तो लाग
 देवता—वि० म० 1985 86 नैड श्री डूगरगट, सरदारसह्य इत्यादि बग कस्बा मू
 नेवण पुगावण न काग आया जाया करती । उवा आपर माइना म मूवा ममोरअण
 करावण मोटर ही नही चूडीवाजा पेटीवाजो दडा (फुटवाल) अर गोठ गफाटा री
 तजवीजा ही शीमिया मर पात करणी पळाई । उवा रा गुर मणेशलालजी हत आया
 हर साल गुह्नी उडाय करता । उव र पूछ मे छोटी लालटण जळापर अर्ची चडा
 देवता । आस पाम र गावा ताई दीखनी । गुराजी रा दूसरा छोटा चेला गोविंदगमजी
 ही आयुर्वेद मे चोमा चतर हाग्या अर उपासर र औषधालय म घणा बरसा ताई
 जनता गी आधी सेवा चानरी समाठना रया । इया दोनुवा गुरू भाया रा भरसा
 अर जस अळा नाई जमग्यो । लोग इया न आवा नाव मू सवाधण करता ।
 श्री विसनलालजी न लेवण खातर दर दर मू धनदान सेठा री मोटरा आया बरती अर
 व जावर झट रात्री न स्वस्थ कर र मुख लाभ पावता । मम री करामात गुर अर
 भाई ज्ञान गिया । हर्मि बग्मा मू या औषधालय बढ हा । लावा री नगदी अळेवण

अर उपासरा जन समाज र जिम्म करता यका श्री किमनलालजी ही सन् 1977 अप्रैल मास माय स्वर्ग सिधार गया । उव आपर उपासर मे सस्कृत, प्राकृत अर हिन्दी साहित्य र पुराणा हस्तलिखित दुरन्ध्र ग्रंथ ही सावत छोटग्या । व कवना— 'म्हारै वन अक पनो अर पुस्तराज ही घण मोला है ।'

महत् श्री सेवादासजी रा चेला श्री मेघदासजी स्वामी ही आपर आसण बठा आद्या बद्य हा । व षडू-चिरायतो, चूरणफाकी, अर गाळी गुटको हाय रै उत्तर बरतावू बगचडी बांध गमता । उवा रो सम्पक सेठ श्री रामगोपालजी मोहता बीकानर मू हा । माहताजी इणा र होय दवाई बगरह सायता, हरिजना अर गरीबा न अठ बटावता । पण मादगी र सम स्वामीजी हरेक र हीड हाजर रवता । राज म पग हा पट्टाला ऑफिसर इया न चावता । ज प्राय बीकानर जावता जावता । उवै बलत गाव मे दूजी ठोड चग अर घीदड खुल्ल मी हा, पण स्वामीजी बाळ भिवरान, हाळी रा जडा सौख सालीणा पूरा हावता । वि० स० 1994 र उत्तरत फागण मे पूरण बराय मना श्री मेघदासजी रा पट्टा इटलाव मू सजड ढकीजग्या । खेल तमासा, जागण हरजसा गाव म अकर ढकवाळ आई अर उवा सता री वकुठी जवान सेवका रै काधा गाव गारबदेसर पौचाई । उव सम महैताई री गादी आठ बरस रै इया र चेलै श्री विष्णुदास महत् वणर सभाळी । श्री विष्णुदास सत ग्यावी ग्यानी भजनीक अर आदर्श कथावाचक हैं । हमै अ ही बोला बडीड अर जाट दाता बारा जोजर-जीवन बढ है ।

सेठ सुगनम नाहटा र आपरा हवली र अक कमर म पजावी पामाकधारी बद्य वूटारामजी सभ्य जामसमाजी वारमासी (वि० म० 1980-97) रवता । फूसारामजा मवर रा बटा री हवली अमारो बमारी र मीके बीकानरमू प० भगवदतजी आसापा आया जाया करता । आपरा घर औपधाल्य खाल चूर रा श्री ईश्वरी प्रसादजी सारस्वत(इया ता माय मास्टरी करी—सन 1933 34) अर रतन नगर र अजु नलालजी महर्षिया (मन 1939 42) तथा यूनानी हकीम (सन 1931) आद अठ रया ।

घणा बरता मू अठ रा बद्य श्री लाधूगम तामगढ तथा श्री ग्याकात बाकानर मू पडर आया अर आप-आपरा तम मू दवा-बाना (श्री भवानीशकर औपधाल्य अर श्री बालिका औपधाल्य) खोल्या जका वि० स० 1996 (सन 1940 41) म बाला चाल्या । श्री काळूगम जी वर्मा आपर अनुभवाधार माय वी० श्रेणी रा विदका बद्य हा । उवा स० 1987 88 म पडित गाधूरामजी मू पसारी री सारी दुकान माल न ही अर सन् 1954 55 म उव न० 3152 म रजिस्टड हाग्या । इण आळिया र सलक ही घोड ऑफ इडियन मडिमन राजम्यान रजि० व० श्रेणी वी० न० 3898 है । पण लिखण र खालच मे जायुर्वेद न अमोपी सो दगल्या है । ग० गमसिध री चौधरी विनिक आजकळ जहर सेवा मलग्न ह ।

ईमै काळू र भोजूदा लाक जावण सती पढाई बढाई, घम अर ग्यान बुद्धि र वधेप सार जके सस्थाया चालू बाज है, उवा रो घोडो बग विवरण भादू—साधा सता अर गुरुवा री पढाई ता काळू म आल जुगाद मू चालती आई है । पण राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय काळू री विकास माकळ सन 1933 मू ही अटूट है । पल्या र अक

पुराणा रजिस्टर (सन 1908 9 से) म्हार हाथ लाग्या है, (रजिस्टर हाजरी वगरी विद्यार्थियान पाठशाला काळू राज श्री बीकानर वावत माठ नवम्बर मन् 1909 ई०) जक म गाव रा बूढा सू बूढा भिखा रा छात्रा र रूप म हाजिरी समेत नावा मटियाडा है। उव छात्रा रा बटा पोता है पण खुद जीवता मे ता काई मिण्या मिण्या अक-आध मसा लाध। बाकी रा री जिनडी कदेगे बुझी गद। हैडमास्टर र खान आग नाथूलाल ता० 1 2 सन् 1909 ई० ह। इय रजि० म बलियत ज- चौमियत रा घणो दमान राखीज्योडा मिल अर छाटा नावा रो चलण घणा दीन। जया सेतिया मपला, चुनिया रत्तला। हैडमास्टर गो जगा मन 1910 म अर अध्यापक (T Singh) हैडमास्टर र खान भूपर अंग्रेजी रा दस्तखत करया है। आग शिवबक्स व नानकचंद रा ही दस्तखत हुयोडा है। हैडमास्टर रा दस्तखत एव जगा उदू म ही जाव। मन 1911 म अंग्रेजी मे Babu Ram ता० 30 4 11 ई० हैडमास्टर रा दस्तखत है। पण काई हैडमास्टर रनता अर किमा दूसरा मास्टर ना अक हा अ आपक लवाव।

आग जायन रतनगढ रा निवासो आदर जाग जाचाय श्री गुरुदत्तजी पदित मवरा र बुलाव सू टावर भणावण काळू आया। ज लालावती र हिमाबा रा जाणी कार अर सम्बृत रा विद्वान हा। प० श्री गणेशाराम जा रा पठ सू सठ अठ लयाया। गणेशारामजी रा रतनगढ पूगे जाव जाव हा अर व जठ बगी पदित, पूजारी वद्य रर हकीम वठ सू ही लयाया करता। श्री गुरुदत्तजी मन 1914 15 नई रयर पाछा रतनगढ भुठ गया। उव मम हया रा आधूता चेला गुळसीगम एवर लालचद राठी हा।

सन् 1928 म महाराजा गंगासिंह जी बीकानर राज म अनिवाय प्राथमिक शिक्षा लागू कर दी। उव बरमही अठे पट्टी री तफ सू गजरो मदरसो खुल्यो। पण म्हे सन् 1928 29 ताई उव मे पठियो हूँ। म्हाग गुरुजी श्री आसारामजी शमा रखाडी रा निवासी हा। टावर माथ चोखी आकम राखता। बदमासी करना जाकर्ता ता रास म गाला ठोकता अर डडा धरकावता।

गुरुजी ठिकाण र गढ म रवता। दस बज्या गढ र धार दरज सू ठळता म्हे दलता, डूढ माल लेवता। व बूढ रामायण पाठी हा राजीना जावी छुट्टी मे दाहा चौपाई री राग सू रामायण बाँवता। सिर सिरवा र सम दुवार्द दवण टाक्षरा र घरा पौच जीवता। टाक्षर सग जमावन पु यू रे परब पूग र्माई पुगावता। बटी क्लासा म कहेयालाल डूडाणी जेठम मोहता रामश्वरलाल पारीक, रामरित्त पारीक दैसरचद गोलछा पनालाल वाघरा कासीगम लिछमीनारायण राठी, गुमानदास बरामा अर काठाराम सारस्वत जिंसा वग म्माय पडता। उव वकन हूँजी श्रेणी म मधाराम राधाणी मधाराम मारम्बन मधराज मठिया काठारी अर मधराज श्वर आद मधा, नलत्रा छान पन्ता। पाचवो मधदाम बगमी मदरस भणन जाया जाया करता। म्हे छाटा बाळव कठई एर ज० ब० म वठना। चौथी री परीक्षा बीकानर गणनी। म्हे भोडा बडा हुया अर गुरुजी गया। उवा पछ यू०पी०ग० श्री भगवानदासजी हैडमास्टर आया। छेकड सन् 1930 म था परमानदजा र जमान राज आपरा मदरमो मफा उठा दियो। जामवान अर माहुरसिया रा धमशाळावा म आप-आपरा प्राइवेट मदरमा पाछा चाल्या। सन 1930 31 म श्री गुरुदत्तजी न एवरा भळ बुला

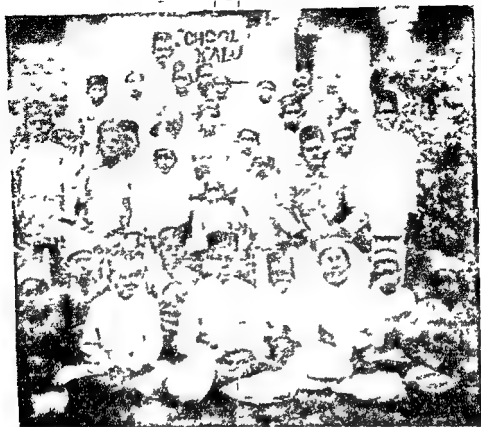
लिया अर श्री सुगन्मल नागा र घरा श्री शिवप्रताप जी पुष्करणा बीकानर मू तथा ताराच अर चाणक्यप्रसाद भठे त्याग गया । हमक सुन्दनजी र खास मिस्य श्री दुगादत्त, रामकिशन गीधाराम अर गमू उद्दी रया । म्हे ही छवा वन गीता, शिव मन्मि तथा लखु मिढा न कौमुनी र श्लोक मूत्र कठम्य किया करतो । शिवप्रतापजी र मुखिया चेग भीखमचद राजमल, जवरीलाल नाहटा गामाचद दूगड मगतमल विन्धीचन गोलछा गधूगम भवरगल वागड हा । दानवा मन्त्रमा मे कदे ही लडाई र वानावरण ही वण आवता ।

अठ गाव म प्राक्टिक् स्कूल किता क दिन चाल हा ? मन 1933 तार् दानवा मन्त्रसा रा मफाया दिवा निया । विजमिध जा र पट्टु री तरफ मू काळू म पाछी राज री स्कूल खुम्पी । भाग जाग मू जादण अध्यापक श्री मूरजमलनी पालीवा मकमा तालीम मू भिजवाया गया अर मन 1937 म अठ बाळा टार्ग्वट र बी० ए० इल्लिम न चुग लयाया । साउ अेक अध्यापक (श्री मगळराम) न भठे मया अर मायता सत्प स्कूल नी मा यता वकसाई । मन 1940 म जेक तीजा अ पापक (नागयणदत्त नास्त्री) ओजू वधाया । मरकागी अेड दवण र माग पट्टा स्कूल काळू मकमा नागीम र हठ आया । लरचा पट्ट अर मैकम मू यगवर भेठा लागता ।

मन 1941 जून मास पट्ट र मीजूदा सुपग्वार्डजर श्री जमवतसिध (बीकानर राज्य रा मिनिस्टर आफ पब्लिक वकम डिपार्टमट) वर ठाट मू काळू पधारया । स्कूल न अंग्ला वनावयूलर प्रार्मरी री वचन परमाया । उवा र हुकम आगली जुगर् म डाईरक्टर श्री जुगलसिध सिची एम० ए०, वार अेट ना स्कूल देखण आया अर अपरला बचना न माचा करया । मास्टर पद नीन मू चढर क्यार हुया जिंका म डणा लाइणा र लेखक नानूराम सस्कता री स्पाई नियुक्ति हुई । राज्य री सेवा मास्टरी सान् मस्कता रा काळू मे ही नहा आवा तमील म पलो नावो ह । बाडा सो चेत आई—महाजा गाव र श्री लालचद खबर उव वखत भाऊ राजकीय विद्यालय स्कूल म वाणिक्का मास्ट वणया हा । बाकी जगनाथ (जतपुर) भगराम (लूनकरनगर) वध लाधराम (काळू) आइ मग पछ लाग्याटा है ।

मन 1941 म पगी वन्म म घनराज डागा रिद्धररण पूगलिया बणीलाल नाहटा शिवनागमण डूणाणी सुगनागम मारम्बत जेठमल नाई लूणकरण भीखमचद विरमचा हरिगम स्वामी कानगम वगयो आदि लटका पढता हा । दूजी कलाम म गोपाचद ब्रूडाणा, जेठमल राठी मगलचद भादानी माणकचद साड गिरधारी लाल नाहटा भवरलान, साड गावघन गजरगौड फूगाराम खाडल भवरलाल किमनाराम बडेलवाल गिरधारी भल, बुधमन् वाधरा गभेश्वरलाल तावणिया लूनकरन खबर, मोहनलाल, सोननगान (द्वय) पागेक मालचद मेवग मोहनलाल दर्जी आदि नडका पडिया करता ।

मन 1947 र अप्रैल मू या स्कूल स्टेट, पट्ट मू कान्तर आपर आधीन ले लियो । पाचवो कक्षा खालर स्कूल सोअर मिडल वणा नियो अर माय अेक चपरासी री जगा



सन 1936 में प्राइमरी स्कूल की अध्यापक, अणनिया टावर पर जय जय ।

1 जोरमल राठी

- स्वयं स्तू दाय (1) भीष्मचन्द सठिया, पन्नालाल मवम जवरीमल नाहटा गणेशमल माट अस्थामी अध्यापक एन० जार० ईशरचन्द साह माणकचन्द नागा गाधुगम खवर गढ़ का चपरामी
- (2) जनुनराम पारीक, बुद्धमल गालछा, लाधुदास बराही बुद्धाराम पाराक क हैमालाल सुनार निहालचन्द छुडाणी कुर्ती पर श्री मंगलदास (अध्यापक) भवराज वेद (B) हनुमानमल छुडाणी माणकचन्द गालछा श्री सुरजमलजी पालीवाल (प्र० ज०) मेघराज साह (B)
- (3) नीच पक्ति में बडे हुए
भीष्मचन्द बारड, मल चन्द बोधरा, रामेश्वरलाल खवर,
बालागम साहिल बट्टीनारायण खवर, माणिकल (T) माहनलाल खवर, मानमल लोडा, मदनचन्द टूटाणी ।

दे दी। सन 1951 में कक्षा छ जेर 52 में सान सू सरु कर'र पूरी मिडिल कर दी।
उवें में मास्टर नी अर रजिस्टर में छात्रा री सरया 225 लिग्योडी ही। सन् 1953 में
आठवी रै पर बच में हसगन ड्य (जोगी सिधा) धमचद विरमेचा मालीराम खंडिल
गारधन (प्रिदामर) ग्यालीराम मानी (गणेशगढ) जिवराजसिंह रघावा (बीकानर)
इत्याद छात्र हा। उवें समय थ, जुगलकिशोर भागद्वा, रामचंद्र सालकी, रामप्रसाद
मुदरिया, कुदनमल शमा, नानूगम मस्वता अवतारसिंह अर दाऊदहमन आदि मोटा
मास्टर मानीजता एका बड़ी मन्तन सू पढाई करावता। हे मास्टर थी जयनारायण
रया।



रा० मि० स्कूल काँरा अध्यापक (सन 1954 में) बाये से दाये—मधु श्री
रामचंद्र मोलवी श्री नानूगम मस्वता श्री कुदनमल शमा श्री धीरबल
रामा (च. धे०) श्री अवतारसिंह श्री नानूनाथ योगी, श्री जयनारायणजी
भागवत (प्र० अ०) श्री जुगल किशोर भागद्वाज श्री शमसुधेन
श्री रामप्रसाद मुदरिया।

सन 1955 की छात्र सरया

कक्षा	8	7	6	5	4	3	2	1
छात्र	12	18	18	16	20	26	33	75

सन 1954 में छात्रावास वगी थी अमरसिंह जी काळ में बण्योडी आपरो सुहणो
अर रमणीक गढ सगळ मामान समन सू प दिया। लालगढ र शाइल निवास महल में
बटुआ काळ र गण र सांग कमरा री बाब्या म्हा लांगा न खलाय दीनी।¹

1 इयें गढीरा छात्रावास र नाव एक काळ मन र मास्टर आपर परिवार समेत
मात्र मान लाभ लिया जे गाव वाला न भोळायर राज री मस्था नी वणण दियो।

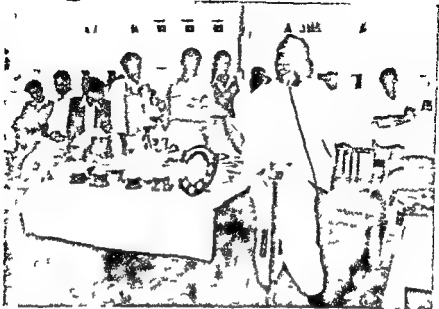
उर्दू मम मिडिल स्कूल रा अनुगामन आछा हा अर प्रशानाध्यापक श्री जनागमण भागवत हा । सुशील बाळक उवा रो आग्या पूरव मदद करता । अठ मन् 1944 सू बालचय शिक्षा म बाळक भाग लेंवता । ड्रिल बागेबाल फुटबाल अर देमी खेल नी करवाया जावता । पुरस्कार प्रतियोगिता अर पाडासी गाथा मू मैच लिया जावता । मन् 1954 र सत्र म अठ तसोल रा टूर्नामट घण उद्याव सू पूग हाया । उव माग स्कूल म बेन० सी० सा० नी पळोट गई । बार मू बावणिया छाना न अठ गाव मू वजीपा दिपो जावतो ।



टूर्नामट र सत्र छात्र भाच पास्ट करता हुवा (दिमम्बर मन् 1954)
श्री दुर्गाराम श्री जुगराज, भी मालचंद माड श्री हनुमानभर, श्री डालचंद
श्री भवगलाल आदि ।

1 जुलाई सन् 1956 म स्कूल हायर सेकेंडरी हुवा । डाकूराम डूडाणी, दुर्गाराम जोतकी बगीलाल बिरमेचा जुगराज नहिटा अर हनुमानभर गठी पाच लडका सू नवी कक्षा मर गई । पल्या बाणिज्य अर कठा रा बिषय राखीया । पछ बाणिज्य नी जगा (ई० मन् 1966 म) विग्यान रा कक्षावा खुनी ।

मन् 1955 ताई स्कूल मवर घमगांग भवन म ही लागती रही । स्कूल रा आपरा भवन अधूरा पचियो हो जका नी नोव श्री अमरमिष माहव मन् 1946 मे आपर नजगण रा दम हजार रुपया देयर ग्यवाट । गाव रा घनी मानी लोग रुपिया हजार पच्छीम आपरा अर दस हजार साल ल बाटर फड रा जोडर भवन न सन 1954 म पूरो करवाजो । पाछ तो उदात्त नागरिका नी ओर सू इय म बेई कमरा वणाया गया । बाज र टम भवन—19 कमरा मू ओप । चारें खेल रो पूरो भदान उव नी पक्को पटो न कार न भवन सू पता यका आवदन पत्र र साथ जोड लिया जको 75 000 गज जमान रा है ।



सन 1954 म श्री विमनलालजी जनी खेल ग पुरस्कार बांटता हूया

अठ खेलीं रा अनाछा चाव है। जाछा खेल नम नू टय बछ्या खेलीज। मग जेला रा प्रतियोगिता र सातर अभ्यास थाल। बाद बिबाद, गेकगीत लेख मुसेव्य विविध वेदाभूपा, नाटक इत्याद श्रेणीवार बरोबरी री जांच रा आयोजन ही हुव। बाल मभा पुस्तकालय जर छात्र मसद जिसे मुविधावा नू बाळका न पूरा लाम दिगया जाव। छात्रा री परीक्षापत्र हर साल चोखा र बे। सन 1978-79 मू यो स्कूल माध्यमिक शिक्षा बाड राजस्थान री परीक्षावा रो केन्द्र ही बणग्या है। आखी तहसील र गावावू बिद्यालय ग पढेमगी अठ परीक्षा देवण न जाव।

राजकीय उच्च प्राथमिक ब्राह्मिका बिद्यालय बाळू रो भवन सो जन सन 1975 मे जावर बण्यो है पण बाळिकाया ता बाळका साथ सन 1941 मू ही नमानम पटती न्यी है। उव सम म श्री भद्र दान जी जाण ज० बी० पट्टा स्कूल बाळू म हेड मास्टर आया। उवा रै आपरो अेक जणची नाव रा भाणजा भणाणी जल्मरी ही। उवा गाव म बाळिकावा न स्कूल भेजण वास्तै आनोलन चंग दिया। बात री वान हाथू हाथ कराव 30 लक्या रा नावा स्कूल रजिस्टर म गिरीजग्या जर महशिला री परम्परा बणगा। तामश्वरी झवर मरुस्वती गर्मा मरुस्वती माहेश्वरा परमस्वनी जाली वागनी माहना कमला राठी हीरा दुगा डहाणी, बुडमति जठी पुगलिया, शान्ति भवनी करनाणा, किरण भाणी पाठारी, मिरकवर, गीता गालडा भागादेवी सठिया दयाद कयावा सम गी बडी बक्षावा ताइ पढी। इय मू पत्या गावाठा पचायती मिदर ग पुजारा रामरतन जी जोगी न या होला भुटा राख्यो। षणी मुक्कला र, बाद सन 1948 री जनवरी म उदयपाल यब्राल नाव रा अेक हेमामास्टर जाया। उवा अेक पढा लिखी बहन

ने बुज्जवाय आसवाला गी धमनाला मे मोखवा सो लखवा ग जनमा भनाय उवा
री स्कूला यारी खुलवा दी अर अध्यापिकावा भेजण वेगी शिक्षा विभाग म कागज बग
दिया । अध्यापिकावा आवती गयी पण जा नया स्कूल नद जामवाला री धमनाला
क माहेश्वरिया गी धमनाला म घेग घांती वगी । जान वगन आया छुट्टी करणी
पडती । अकरम सन 1973 म पचायती ग रुपिया प्र म जमा देख उपमरपच
था माहनलाल मारस्वत उच्च प्राथमिक क या विद्यालय रा भवन वणा दिया । मुतत्रता
री हवा म आज री कयावा ही तो प लिखर काल री घांती ही भी, निस्व री
लाक निछमी वणला ।

बरमा गी बात मन उनीम भी उणसठ साठ ईह ग्राम सेवा मघ काळू रै
निमाण काज कया विद्या भवन वगी वगाल विहार अमाम जग नपाठ मू दस
हजार नड द्रव्य मघ कर रयाया । वट स्कूल अर अस्पताळ भवन वन नाहटा री
अेक माहरो लैयर तीन कमरा प्रणाया । पण लडकी लडका र आण जाण रा राग्ना
अेक ही होखण माय यो भवन कया विद्यालय खातर नी राग्यो गया । समय री बात
इय म पचायत राज्य मू मचारिण उडवा गे अेन राजकीय प्राथमिक विद्यालय ध्यान-
प्रसार हतु सचेस्ट घणा वरसा मू बा । बार सौ वसा छात्र भण अर भवन ही रा०
च० भा० विद्यालय मू होड लेव । हर्म वड हॉल ममेत कमरा नय दम अर पाणी पड्या
री प्रबध है । प्राईमरी स्कूल खान ग या भवन जि म पंगे है ।

अठ छोटकिया मुनी मुना र ममूच विकाम वास्त उधु गन कम व्यवस्था
थी रामरिख बाल वनची बाल । पण माटमरी पमा सचालित बाल मदिन री पाखा
आलो उधाडो ह । इय कमी न पूरण ग उपाव स्व० गिरधारी ग वव गध रै धीच
टाह डाग वणा रारया । भावान री मरजी, उवा मनमा उवा र मन म ही गई ।
गव राजनीत्यागळो वणयो, नूनन निमा-मस्ति आजू सूना मपदग नाच । गाय
भम्या गी चराई लेण मू बीस अर नाँम, पण फूल सी कवळी मग काठवा री कारा-
मिमुवा री भणार् रा नी चार रुपया ही गारा दीस अर रामरिख वन आन्या अदीठ
कै । आज रा अगवा घनवता न ग्यान वावठा कया जावै का अलगरजी ? पण व
साव मन सोच तो अठ अजळ कारज री गोपो रोपण म साल पूगे नी लगाव । गव म
टेट मू म्हाप्रबळ जान गी वासो है पण चेनावणिये अगव रा मामो पडयो ।

काळू र विलकु मम मगान अनना मे ग्यान विग्यान फलावण खातर सरस्वती
पुस्तकालय गी भवन ह । या सठ माहनलाल दूगड र दान द्रव्य मू सन् 1959 60 म
वणना ह । पुस्तकालय री अवरुति स्थापना वि० स० 1992 (ई० सन 1935) म गव
नू पाथी अर पर्सा भेग कर करजी । या अमर बेल थोमान् मूरजमल पालीवाड
(नगरीन हैडमास्टर स्कूल काळू) र गठ साहित्य प्रेम मू सीचीजती वधी-सधी आई
है । य रा नावा पलपोत मेवामदन सरस्वती पुस्तकालय रया । धमनाळा री आल्मारी
म सी पुस्तका भेरीजी । तुरत प० गणेशराम जी इय नै सेठ मूरजमल नामरमल ग
व नी मू 150 पोण्या रो पुरा मट गाता प्रेस गोरखपुर मू भिजवायो । पडित जी पुराणा
अर नला, उवा आपरी सलाह ही साथ भेजी के— राज विरोधी पोण्या अर छापा

कनई मत मगाया, मारया जावागा। इय कामाळा मावळा लाग वरसा मू त्रिम्ण मंदिर र पालणा होटा खाव।

उव मम मूळचद जो राठी रा जुंवाई श्री सुगनलाल जी वागडी राजगड वाळा कळकत्ते मू अक पोधी अर तीन चाद री फायला (फांसी अक बलिदान अक मारवाडी अक अर पजाव हत्या काट) भिजवाई। या सार्त्तिय उव मम जेवन होवण र कारण म्हा लोग घरा कच्चा काठलिया मे लुकाया राखता। पर हर सातव राज पुलिस रो इ क्वायरी आया करती अर हर महीण पुस्तकालय रो पत्र पत्रिकावा तथा पाठ्या रो माहवारी विवरण टाळर थाण मे भेजणो पटता। वि० म० 1996 म या पुस्तकालय शिक्षा विभाग मू प्रमाणित हुयो अर कामु टा री कूड कास मिटी।

श्री फूसाराम रामनारायण खवर श्री सुगनलाल काधूराम नाहटा श्री मानलाल कर्नाणी, मेघराज गाळटा काशीराम राठी माहनलाल वागडी चम्पालाल नाहटा विरधीचद कदा, प० दुर्गादत्त मारस्वत, जयनारायण पारीक नानूराम सम्कता, प० श्रीराम खाडल, जयचदलाल विरमेचा, बालचद सठिया लालचद लोढा इत्याद मज्जना आपर दान अर परिश्रम मू गाव र वाळका न इय सस्था मे ग्यान वक्षेप आग वधाया। इम पुस्तकालय रो भवन दख्न जी मे खुसी ग मार नाच जाव पण पोधी अर पत्र पत्रिकावा सरकागी एड एव पुशणा रिवाड गुम तथा पोध्या र पगा न जायन पाछा कास म कळप अठ। इय रा कारण अधिक कठनाई नही, गाव री चमडालू गजनात है।

पाडोसी कस्ब श्री डूंगरगड रो सावजनिक पुस्तकालय मात्र काळू र पुस्तकालय मू घणा ऊची तरक्की पर है। उव न दसा जद वि० स० 1995 96 रा अक घटना चेत आव। श्री तोलाचद काठारी री बेटी अर पदमचद नाहटा री बेटी (दानवा) रा जाना श्री डूंगरगड मू आई। उवा म बठ रा डा० जेठमल जी भसाळी ग वटा भाई हीरालाल जी भसाळी आया। मान भावा बलाया, पुस्तकालय म आया। पण मीरा नाव री पत्रिका मे सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय काळू री ममा खबर वाचर रीस मू रात रीग आग्या अर बीच म ही अठ भीर हुया। खबर या ही के—‘डूंगरगड दसनोक मोमासर भूरतगड न सगम वाली बात है के आजू लाईब्रेरी नही’। गाव काळू र किय-कर्त्तावा रो प्रयास सराहनीय है।’ क बोल्या—‘अपण आप बडाया छपा लेणी अर आया गया न देखावणी भळे।’ म्हे कया—‘मारा र सपादक श्री जगदीश प्रसाद जी मायुर हाफेही लिखी है। म्हे कद नी भेजी। खर! चौथ दिन जान बढी अर पुस्तकालय र चदरी रात फटी। बात रो वतगड वणयो।’

श्री डूंगरगड लक्षपत्या सेठा रो कस्बा पाच-चार करोडपत्त ही लाभ। श्री क हैयालाल शर्मा (आसोपा) र प्रयास साथ श्री हीरालाल जी र पल हन् ही मीटिंग आ जुडी। स० 1997 म पुस्तकालय रो स्थापना हुगी। आज हजारो पाठ्या मय बजारा मकान, राज री एड ही पंचाम रुपिया मोणा मिठ। श्री डूंगरगड रो पुस्तकालय आपर क्षेत्रीय कस्बा र पुस्तकालया रो हाड बराबरी खासो बिगस खिल।

आजादी र चाळ, वाट रीग आयो जातवाद जुडया अर काळू न निसाणा वणायो। गाव र ओसवाटा अर माहेस्वरिया, मदरमा दाई पोधी खाना ही यारा कर लिया। भुख अंगटी पोधी जगरी म ही नी छाटा। लाधी जठ ही खोज लुकायर जुडा

ल्याया। गुराजी न ही छाबड कर'र खाडी कबाड लीनी जर बुठावू हाटडया ज्यू आप-
आपरा याग पुस्तकालय माड वठा। अँकरसँ बया पलडा माणस, पंडितजी इत्याद भ्ते
ही गाव र कारज बीकानर गयोडा हा। विजय भवन सू श्री सरस्वती पुस्तकालय बेगी
गाडो भर हि दी जग्गेजी अर गुजगती की पाध्या त्याया। दिरावर्ण मे ठावुर श्री
निहार्त्सिध जी रा लामा हाय हा।

काळू रा कारजसीळ लोग सदा मूज णावाळ, जमान री हवा मुजव आयूणी
चिकित्सा री जहरत जाणर अँलोपेयी अस्पताळ खुलवाण सातर सट रच मचाया
अर सन् 1953 54 म डिस्पेसरी खुलवाण ने हुकम करा त्याया। गाव रा उदार
मनवाळा नाहटा आपरी मोटी दुपान अस्पताळ न दे दीनी। सामण वाळी आपरी,
जकें सू थोडी जमीन राठी परिवार मू प दिही जक मू अस्पताळ रा रुप उघडया।

श्री के० महता पी० एम० जो० बीकानर र हाया मू डिस्पेसरी रा उद्घाटण
हुया अर चपरासी समत एक अनुभवी कम्पाज्डर श्री रामप्रताप मेहरा न कार भार
झलाया। दिनां 23 9 54 न श्री पी० एम० आ० माहन रँ साथ श्री एच० शर्मा डी०
आई० जी० पी० बीकानर ही पघार्या। सन् 1955 मे उवा रा मेल्योडा गावटर बी०
डी० गग (एम० बी० बी० एस०) अठे जायर चाज लियो अर बडी अस्पताळ बेगी
कागज चलाया।



सन् 1953 म काळू रा डिस्पेसरी रा पला डाक्टर श्री वासुदेव जी गग,
श्री रामप्रताप जी मेहरा (कम्पाज्डर) अ' श्री हीरालालजी (सी० आई० डी०)
तथा गाव रा मानीता सज्जन।

- 1 ईस्वी सन 1956-57 58 म पुस्तकालय रा काम जक कायकारिणी (बणीविगडी
सरमा लमणादि री पारटी) चाल्यो उव कमटी इय सस्था ने काळजा काड लियो।
पुराणा रिवाड, कायला अर मागे साहित्य पार करग्या।

जब दिना आबूण पाकिस्तान म पाट ग आछा काम चाटना । श्री शेरमल जी डूढाणी गो मन बन्धो अर मन 1960 मे अस्पताल भवन बनावण गो आपतो काम पछायो । करीब डेन गाय री लागत मू (सरब मनानर) भवान साल भर मे बणायर (वि० सं० 2018 म) जन हिनारख खटा कर दीहो । पण राज्य सरकार दो माल ताई नी सा स्टाफ बघाया अर नी प्रा० स्वा० चि० केन्द्र स्वीकार कर्यो । कारण लूणवरणनर बाळा ग बवणा ह।— प्राइमरी हैथ सेंटर अर हायर सेक्णरी स्कूल जिमी मस्था तसील मुख्यालय माथ हाणी चाय । जवा मू लाख लाख घणा हुव । जवे सग मस्थाना मू, कोगे भवन मकान गो ममा दिवायर काळू बाळा आपरी सूवी-खीचनाण क्यू सफळ हुव ।" अडी उल्लेखोनी अनकू वाता गाव रा भारी थो गिरघारीला पवन सदान मुळभाबता रता । व गाव री म्यान अर गाव र मान न अऊचा राखता । जत ही चौधरी गिरघारीराम जाणी जसा बूना माणन उवा न विजसिध जी अर कई लाग रामजी बनेवगर मान लिया करता । अस्पताल री अनियाडी आटी माथ भाईजी आग आया अर तमीत्र री पचायन समिति र प्रधान था रघुवीरसिंह (महाजन राजा) मू मिल्या । प्रधानजी भाईजी रो पूगे सम्मान करता । उवा भाईजी र बवण मुजब सन 1963 64 समिति री माहवारी मोटिंग काळू राखणे रा जादेम बना दीहा । बदावस्त सारा भरपूर मरपच काळू आटथी । आवा गंगा न रयावण —पुगावण उम र इतजाम कर्या अर राजकीय प्राइमरा हेल्थ सटर काळू खानावण र प्रस्ताव पाम करवायर जपर भिजवाय दिया । आज इय राजकीय प्राथमरी स्वास्थ्य केन्द्र काळू म तीन डॉक्टर दो गाढया, अनेकू कम्पाऊनर नमी, मिन्वाइफा लिपिक अर इस्पेक्टर मन्तरिया तथा परिवार कल्याण नियोजन अधिकारी आनि पचासू कमचारी जन मेवा काज मू लदुया-उतावटा बग है ।

काळू री पुस्तकालय पताठाम मात्र पुराणा है, जब र भवन म हजारु ज्ञान री किताबा पटा है । पुस्तकालय म अनकू पत्र पत्रिकावा ही मम बधी आब । यो पुस्तकालय गाव मे मरम्बनी गो माटी घाम ह । गाव र बीचाठ मोटा भवन काळू र लोगा री शिक्षा अर मय्यता री सान है । पण पुस्तकालय री पुरातन व्यवस्था नै ही देखर इय म मगाधन र जावश्यकता जररा ममचा जाव । काळू र लाग गाव र मुखिया मू या आसा राय के पुस्तकालय म नूवा सुधार होवणी चाहज । इय र भवन री अर पुस्तका री आटी भनी खबभाळ करणी जरगी ह । पुस्तकालय न सजाणो गाव रा घण माणेता आगीवाळा रो किस्तय ह । किरतब्य रा जाज जुग है । इण खातर हमने नूवा नूवा तरीका म पुस्तकालय री मळे मोटी भलाद पछाणी चाय । छारा-खाटा, बगदा मू इय न दूर राग्या जासी तो पुस्तकालय री बीरत गाव री बडाई अर सुख-सुविधा, सदा सार या मस्था चिरम्यायी वणी रसी ।

पोधीवाना पाळ खवाळा, काळू वाटो दन सभाळा ।

काळू गाव बडाप भोमी, बगला, हेली, महला बाळो

इय भवन न भूलो भतना, जो सगळा र गुर कुवाव

म्यान बिग्याना मूर चमकतो रात अधेरी करण उजाळो ।

इण री सीख रास्टर री गरिमा, इण 'री बळा सूय ह साची
इण री कोसळ लोक वाङ्मय जात अनोखी, इण री बुद्ध सत्स्वित्या री पूरी तरक्की
इण री जडता पाख अघेर रो गोटाळो, इण री भव गति, प्रगति मे अवनति त्याणी
इण री नीवत राज्य रीत री परतख, पूजा इण र बंधणा समया सागी भीत बलाणी
जमडो ही द जाव इण मू अंकर टाळी, काळू बाळा इन समाळो 2

इण र बीच सुरग लोक रा भाव सळूणा, इण री भीतर उद्यम री सेती हरिमाव
इण मू जुग री हार करारी मिट वेकारी, इण मू पाठ सोनळियो समी सुण सुणाव
इण री अवहेला ही त्याव फूट ईरसा, इण री इज्जत नूवा नगर बसाव ब्हालो 3
जिण म विमल विनोद विगसता मोद बघार, जिण मू लाभ उठाव नूतन दुनियादारी
इण रा मिटणा जे ज्ञाणा ता वुरी वात है इण री उठणो आदसता री पाठ अड्डो
मन मत राखा इण मू काळो, काळू बाळा इन समाळो 4

वेढा पाता, भ्रात भतीजा स हा इणरा, पण घाया टिड्डील सा वादळ गरजणिया
पाप पैठ ले अदर जावण काड अमड, तो वार रजाणा चाखो ताकत तणिया
निज निव हिडद खालो ताळा, काळू बाळा इन समाळो 5

काळू गाव पाडया मू लोकरजण, पुण्य स्थली, समाण, धाक पूज, मू पळता
आया है। अठ री सग सस्यावा रा जस राज अूचा है। इये परापरी रो सस्वती
पुस्तकालय खातर ही गाव र उताधा न पूरा रयाल गलणो पड।

अठ रा भणर आयाडा जुवाना री काठ कासिसा मू 26 मार्च सन 1950 ई०
न 'ग्राम सेवा सघ बाळू' री स्थापना हुई। गाव रा अंकलिया दुवळा, निरधना,
पिछ्छ्मोडा अर राज समाज मू काठ-दवाब सवणिया लोगा री मदत साह सन् 1960
तक या सस्था चालता रयी। इण मस्था माकळा कामा म विगसाव री कर बघारी।

सघ प्रौढा मातर कई केन्द्र चलाया तथा स्कूल भवन अधूरा पडयो जक बेगी
माकळो मिनिगा बलाम् अर कमी पूरी करवाई। 'विक्रम' नाव री हस्तलिखित पत्रिका
निकाळा। दवाया र वाजिव दामा साह अंक दवाखाना खाल्या। मन् 1953 म आस-
पास र गावा म मलेरिया फल जाणमाथ पैलोडान, मपाकवीन, कामाकवीन इत्याद पाच
हजार गोळया महायता खातर बाटी। डाक राजाना री करावण, इ स्वारेंस लगावण,
सेविस अेकाऊंट खुलाण सेती सघ अेवा कायज चलाया। मन् 1953 मे शाहूल बलफेयर
एण्ट पब्लिक प्री वाटर ग्लाई फड मू गाव र तळावा री खुदाई खातर मघ आठ
हजार रिविया रयायर लगाया। सघी जुवाना तावड तपर विना भजूरी काम कर्या।
स्व० हुकमचंद बीषरा, गमाविसन वागडी जिता घणो फुर्ती दिखाली। जी० सी० डूदाणी
जडा बबळाठा रा पटपटा री सारी चामडी टूवा मू बळर अळगी उठगी। डूदाणी
मस्ट्राळ वणाण पमट करवाण जिता सग काज आळी ईमानदारी मू पार आया। सघ
दा बिरिया भिवाणी मू डाक्टर बलायर गाव म आग्या र अलाज रा कप लगाया।
लूला लगडा अर पटपटाली जीरता न मरणाग मायता दिगई। सन 1953 मे मारवाडा
रिलीफ सोसायटी रा कामू कळवन मू अकाळ फोडिता री नवा मारू आयर बीकानेर
म आपरा करण लगाया। ग्राम सेवा सघ उदा मू आपरा मरा सम्परक बणायर पचासई
गावा न समाळया। मजदूरा न आपरी परधी मू सघ पमट बिरया। जगा जगा

ગીસાઢાવા મુલાઈ । માઢા ન ગુઢાર દેઘણ રા વામ પઢાયા । રત્નરામ મામાદટી ંર મારવાઢી રિઢીફ સોસાઢટી મૂ મધ ઢાઢા પાઢઢર દૂધ લેયર ગરીઢ મઝદૂરા ર ટાઢરા, ઢૂઢા ંર પટમૂઢૂં લુગાયા ન હાયા ઢજાઢા ડઢાઢ ંર ટાઢૂં પાયા । ઢ્રામ મેઢા સધ ઘણ ગાઢા પાળી ર ંઢાઢ રિપિયા ત્રિરઢાયા । ઢઢરત્ત મૂ ડાયાઢા ડ્રી રામશઢરલાલ ડી ટાટિયા ડ્રી માસાત્તોન ડી મેતાન ંર ડ્રી ઢટ્રોપ્રમાદ ડી મોઢાળી મધ રી ઢાય પ્રણાત્રી રી ઘણી ઘણા મગાહ્ણા કરી । દય મમ્મ્યા મ ંઢેઢ માયા વિમોર મધ રી મેઢ મનોરઢણ માદ હા ષાત્રત્રી । હિંદ ઢલ્લ ડિમા મઢા મનોરઢણ હા । ડાયા ગયા ડાઢા માઢા ંપસર ંર મઢ્રા પલા મધઢાઢા મૂ માઢ ગમઢાર ષાઢતા ।

- 1 ંઢમર, રાઢામર ંર ગાઢઢદેઢર ંઢ પાઢીસી ગાઢા મ હી દય વામા માધ ઢ્રામ મઢા સધ ઢાઢૂ ર ઢાય ઢર્તોઢા રા પ્રઢધ ષાલતા । તરમમય ંઢમર ંર નાધૂમર મ ડ્રી ઢાઢૂરામ ડી ઢમા ડઢા ઢઢ ડ્યાર્ઢન સુપરઢાઢર હા ।

तीजो पडतग

रेखा चित्र—

गाव रो नाव काळ, काळो माना रे नाव माथ भग्नाग्नि है । इय रा लावपाठ लाग, पिरखी रा दूजा सपूता शर्द घण्णी नै भायड र माण जाण वमाण अर घाव-ध्यावना कर । भोमी साचेनी माऊ है जर रे धीरज री साधना मू गुणी गीगला रा विगसाव र प्यार पोवणा इव । गांव भाम रो या उत्तार्द रयी है म अड थाग नीर अर चाथा-सीत्वा वेता रा सीर ही अठ र गाव मानख वर्द परालम्भ मानीज । कुदरत र दम मजळ, मजीव गाव नी भोमी माथे गीमर ही ता विणी कवि वाळू न घडी डारका बतायो है । इय री रेल रणना अर वेन तीरथ है ।

पाघर पावण घरळ मदान, मघर घारा मज अर मोटी माटी केला पीपळ जाळा चोरटया नी जाड लीप्या पाट्या दूडा पडवा धोळी गल रा माडणा, कीठी कीठा तथा भाडा मज्जा छाजा बाग भीता घरकाटा छियाघार कुदरती सोभा मरूप वधकी विशागरी, मताय धाप र घन मनोविग्यानी मना ग्याना रुडो रतनागर, झीकानर राय र घडी म्हाभाग आपनी तमीर रो काळजो मनोहर, मुखिया गाव वाळू वहीज । इये रा या रेखाचित्र माडूक, बर चित्राम, म्हार दचना देवता मूपा टेता देगा उवा नी जाग्या उगला छाम बैठया ।

इय गाव म कोई करोडीघज अर अरवपन नी है, पण मनाभावा कागजा म अरवपत्या मू भागकर वाड । भलाई विता ही वडो विनिस्तर विद्वान घनवान अर आफिमर महमान गाव म आवा, काळू री छाप तस्वीर, आप र हिडद माथ रिया ही जामी । जे कदाम विणी कारण मू आतिथ्य समान तथा आघमाण रा अभाव ही रे ज्याव तो हो गाव कानी मू नो उव वसा ही विचार भाव लिया जाव । मातडी या है के काळू रा कुसळ करामात जागमाया नी अलौकी औनात है । रेल न कोई दडी सडक, पण काळू जावणिया ग जात तवियन उठ फडक ।

या बात ही अठ नी है के काळू नी कच कच कोई नी कर । मुख्य बाजार चौवट बीच पेडा री दूकान पाच सात उली दया री भेंट-वारता म गजीन रबोड रख । गाव-गरिमा न गळता गुडवावता विदसा री सुणी-मुणार्ई नूची चरचा वधारता अर मन री हसी-हमता वान सदीव सुणा । अमरीका, रूस अर विस्व मू इत भर हो अळगा ना सरक । काळू न विस्व र मात मसा सू ताल जाख । कव—' के है काळू ? वतमान में विस्व अक्ता रो भाव हाणा बाय । अमेरिका र छोटस एक सुविधाळ गाव माथ सक्डू काळू खवार्वा जा सक । '

नूद अर घर राजनामि सू प्रभातिट दूया लोग क्या ही समथो काळू रा महत गुणगान तो गावता ही रख । नाच माच इय गाव री घरा मजीव है । या शर

विभाग जर सजोर दिमाग देवणी आन भवानी री बाण है। काई आ वत्ताई नही ? के इण मरुधरा रा वेठा पोता रा मन माथा, हजारो खनागी रा भरपूर भाव बाट ।

बीकानेर राज्य र मध्य भाग बसतो या काळू ग्राम देवी रो देस धुरी घाम है। बीच मदान होण र कारण बाग बारला गावा सरा सू सज अूचा है। या कुदरती वत्ताई काळू रा जन मना न एक सुभाविक ऊचापण अर गौरवता सू इय रा ऊची भावना म साचोट है अर उवा सहिदयता तथा उत्तारना बरमाव । प्रकरनी मिनख न कोरी सली अर सेली छिब सू ही नी छिबाव उवा मिनखाप र फाड तोड अर आण दामाव मे निजू नीबत सू साग रल । भूक भुयछा धीरजूबाध असल आस्वासना हँस रोव । काळू री भोम दयाल अर मिनख मेळू डाढी है। बेभाता आपरी पनळी आगळया मे तीखी पसलडी झालर मिही नोकडी सू सारी गाव काकड रो झीणो फूट-रापो कोर कस अर सरप निखार । अठ रा बिदामी टीला माडणा माड । सिम्पाळ मूरज रो सिद्धरियो अनुराग, खेजडा रो जाड सू कडता हिरणा रो हरलीलो बाग , दिन री चवल लू रात री भोळी चादणी अर पग्भात री मधुर परमळ री झोली काळू न कुदरती लूठी देण है । जिक म भाठ रो ऊजळी खाण अर सुरखी रा लाल खदेडा ही रग उपजाव ।

ज्होडा अर सरावर—धूँधळियाँ गाळारी खाळ बसत इय गाँव र लोगा री सूझ बूझ बोलगत, वाद विचारा पडछावा तथा हाजर जबाबी तखमीना रा उपजणी ताकत क अर छ दोना आखरा सू भिळी मिसमी मिल । भाम बिभव अर सुख साधण बलाण हव, वठ ही इय वास न सजीवन दीठ जात जोण्या जाव । गाँव मिरमोड जीवण ज्होड, सरोवरा म अनाणा घरा र अडर बडो पक्को जळ ठाव है । घन पसु अर खेता र पीछ खातर सूरजाणो ही डाढी झट झाल । गाँव नड गरी गिणत दूजा ही घणा तळाव है, पण गणगीरा रा डोकळा अर आखातोबा रा खीचडळा सीजण ताई जळ देवाळ अनाणो धनाणो अर सूरजाणा ही सठा लठा दाठीक दरियाव हा । पण गाँव म पाइप लण खिच जाण पछ पाणी रा बालगत सू इया र ताला री देल रेख ही सफा मारी-जगी । मील मुरजादा गई लारली गळी धनाण र मूक ताल बीचाळकर लानी सडक काडदी अर धोळव माटी खातर खदेडा ही खदेडा खोल नास्या । सुणा लोगा ने पट्टा ही बीहा है । बरमाळ ताल रा पाणा परिया ही पढयो खुस सूक, बवत री बा ज्होड मे जळ ही जा सक नही । कदेई ताला म पसुवा न नी ठरण देता ।

‘खतळाई बाभी रो नाव राख काळू रा आवूणी सीव रस्ताळ खिलेरो’ नवो खुदियोडो आपरो कूओ सभाल अर ‘तजाणो’ तीन कोस अळगो, पाळा¹ र प्याजू रा काज साने । वरजाण² चूनो बीशान भेंस्या वाडण रो चूनो, वाघाणिया उदाणियो, आसाणियो टोडाणियो अर लेंटडी काळू रे दिखणाद पाख गाव र गुवाळियाँ तथा

1 ऊँफाला—पंदल । 2 चौ० मेख आपरी बेटी बरजी न बरजाणो गाव, दायज दियो । बरजी बेट साथ सती हुई । वश क्रम (1) मेखो (2) टीकू (3) भोपत (4) लाभू ।

पमुवा रा पीछ, पाणी पाव । अगूणी वाकडवाळी ज्होडी माथे वि० सं० 2011 म गाव नाथूसर आयर नवो वस्यो है । 'भीखराणा' करमा री भायप जेकलियो भूमे हाळ्या री जळ ताम सनोव । डावले जडा अगूणिया खेता रा मनडा मोव । जोग्याळी ज्होडी अर नाथवाळो ज्हाडो गारवदेसर अर काळू री वाकड रेखा रो माण वधार । हिराणो अर बाजरवाळी, टापीडिया पाडिया चरावणिया र कोटडी कूडिया धीसण रो टटो भेट अर ज्होड विहूणी अलूणी उतरादी दिम बाता जाता पमुवा न निरमळ नीर छकाव । जादुआली ज्याडी अर खणा आयूणोत्तर खेताळा रा वगसाळे, नड नीर भरण रा मुक्त काज सार । सजरणा, वूडाणो जिसा देई नाडी नाडा अर दिखणादी चोमदया काकड सू वार पड । तिलोकाण अर तोलाण रा मुख गया, नडा घर अर खेत आ खस्या वस्या । ताला री तार मारी गई ।

पाळ अर घोरा—का० २ खेता री पाळा रा नाव लोका मदियां सू आपरे अनाण मनाणा गव राख्या है । जया गमी मोटी वळाळी पाल, धोळ डावाळी पाळ इरणाळी पाळ अर पासुआळी पाळ इत्यादि लोकभाळ भली सधी है । भळे गांव री कामी गेही मे मोटा भाखर तो घणा नी पण टिरता (टीला) तथा घोरा मोकळा खोला वर्या सामन म्यान सज गात्र री व्याक बूटा चौकीदारी कर । टोकी माथे प्यणी, डूधिया तथा मुणिया मूना मन्तर नीद लेव जरा लोय मत भली जाण ।

उतराद पाम झडी घारा वळाळा गोणाणी घारो, सुरनेतियो घोरो अगूण परल तार गारवदेसर री काकड तवटिया घोरा है । गाव र नजीक अडर सुखीआळो लाको, हाळा घारा मुम्मानियो धोरा दिखणाद डाकीडो घोरो जाडमर मारगाळो घोरा दिखणाद भानीपर री काकड सडियाळो घोरो, डेल्वार मारग चिडीवाटी घारो, आयूण खारड र मारग मोटी सोमाणो धोरो (सामाणो होया पार, देखो बीबाण रा द्वार) मामायळी घारो, वेडीआली टोकी, रेल घारो, जम्पो घोरो, इकपळी आळो घोरो गाव कतार साघाळो घागे, डेडाळो घोरो अर गडाळो घोरो है । अ सारा काळू रा घोरा भौगोलिक धरातळ री सुभावी वडाई अर गांव री अकात्मकता र साथ निर्माण री पन्थ प्रेरणा लेयर ओप ।

रख पूजा—म्हारी मात भाम धणी सरस अर सलूणी है । अक ही मेहू सू रुखा महक अर पछया चहक उछळ उठ । शिव भगवान री तरा आख लोक सिर आडर दातार तथा तूठमान है या घरणी । सूका ठूढी लकडा न रहेला देव वूडा मन न हरिया राख । कीकर कर, वावळिया आक खेजडी अर सगळा जाळ बोरडी सदीव रग रमील छिब छिब । कासा सू दीखवाळी अठ री हूमाळीकेल देखणियो माणस जाण सक के काळू भोमी री वूख दिसत मे सूकी, कोझी अर सूसवळी, पण माय नै सू अटूट रमवळ वळी, जस जोस नामा कामा भोत निराळ तेज तन गिगण पौच है । बाजार र

1 सूरज अर तोळ (भाया) री राड सूरज री वहू सती हई ।

2 हमें गाव सारखा घोगा माय लोका घर बना लेना है ।

बीच गले खड़ी खबरक दालडी बन्ना, गाव र रुड गौरव न पीढया सून पाळ उजाल ।
 आया गया गाढाला र ऊटा न, पवटयाळी हगिन हादया न मिखा अर पसुवा न
 आपरी छिया सरण, सुख रिछपाळ पौचाव । म्है म्हार वचण सून दया र मोट डाळ
 लाव सून मडियोडा हीडा री ऊँची उछाला गाव र लागा न जुगा हरव हीडगा जोया है ।
 ऊमळी मचावता जर लेंवग ल्यावता याद वग पाथी इय जमा सून सरुजात रा रपटवात
 लिखणी पळाई है ।^१ भळे ही घणा गावसणा अर राहीरुग रुख खेजडा टाला नामूनदार
 है । थोरा रा नावा माडदयू तां वं हगज है ?

काळू री जमता आपर सुभाविक् घम सून लोक दवतावा अर पीरा रा रुख
 पूज । नारेण वधार, घजा चडाव । भरुजी वाली गळी म गल्ल खेजडो भूमली गाळ
 वालो घाघलियो खेजडो बूवाळो खेजडा वधूतसिद्ध भामियाजी भरुजा गागाजी
 केसरजी कँवर वणापीरजी, अळायभरु रो, रिगनिय भरु रा बायाजी जर गुसाईंजी
 इत्याद देवतावा रा अठ तल सिद्धर, सरगल नधा पूजा खेजडा रुखा रा नाव पड ।
 देवळया चौकिया, भगता री वणाई भीता समेत खेजडा दिप दरस । कबत घाल—
 'गाव गाव गूगो खेजडी हव । इया सून जूध भो ठाग फासा हाळ खेजड, किरियाळ
 खेजड, भूत भूतणयाळ जर चूडावणवाळ खेजडा सून टळर अळगकर कड । वापडा कया रा
 कोरा नावटा ही आव । काटिया खेजडा खावर खेजडा जाटळी खेजडी हाथी हाळा
 खेजडो, मवरतियो खेजडा हिरणियो केलिया आमालडिया केलियो जर च्यार केलिया
 जिमा केलिया अठ नावा—जनाणा आळसीज ।

काळू री मा बनावार रुखराय पेड पीथा री पूजा ध्यावना भोत राख । घाडा
 नाव बतावू—जाती म नुठसी परणाव वमाया म पीपळ सीच अर जेठ री अमावस्या
 न बड पूजा (बडसापत) कर । इय वाम्न जेठ रा बड पापळ अर जाळा रा ही नाव
 बोलीज । इया रुखा सून रात विरात जणजाणा न अेदो मुदा अर मारग बताया जाव ।
 जया, अनाणाळो बड पीपळ मूरजाणाळा पीपळ निराणनासवाळो पीपळ बरीदास
 वालो पीपळ सारसुताळो पीपळ उपासराळो पीपळ, सीतळामाताळा पीपळ पचायता
 मंदिर रो पीपळ डेनाळ धागळा पीपळ (हम्म गुटग्या) गढहाळो पीपळ इत्याद पीपळा
 रा बात बात म नावा लेइजर वामचाल । कया वामा बायाजी री वारडया ही
 मानीज । केई जाला र, नामा रा नावा हा घणा विरिया जाभ चड । जया गोपीहाळी
 जाल नाथजी हाळी जाल, प्रमळियाळी जाल म्यामीजी हाळा नीम अर ससू पली लेखक
 र घरा लाग्या मफेदो (मुकिलिष्टम) रो रुख याव रा नामजातीक रुप है ।

खेता रा नाव—काळू रा च्यारु मर र बीसिया तीसिया खेता री जाड सनाणा
 मारु सास भाव आप आपरा यारा यारा नावा वाज जका राज र रवेयु रुवाड

१ हम्मे केला कट चुकी हैं ।

२ काळू म बीशराज खबर पीपळ खेजडी (वधूताजावाळी) रो विवाह करवाया
 अर बठ ब्रह्मभोज कियो ।

अर व'दावन्न र बागजा तबत लिखाज । गाव रा लामो राही हाण सू याडा याडा
मेनर खाण मरानी टुकडा रा अ भ'दाजमुग्या रसी रखावा रा नावा घणा है । अठ
कबत धाल—पली गी बामू अर रम्म लुगाया मुधिया बग बाम र लोभ भाता (छाक)
लेपर अकेली भता दव जाया करता । मिट्या पूठा जावनी दूग्या न बतावती—'तू
बळ (घार) ही जन् हूँ बाग (पागा) ही त बाग ही जद हूँ बाट (वाटा) ही' मुतळन
इती आग चालना । खाम-नाम गतरिया नाव माडू जवा मदीना बीलीज अर अया
घाण ।

उतराद पाम राजपरिय अर राजामर र माग्य नडा चिडी डाडावाळा गडिया
बळ हठ पागा अर रिडिया (मत वाया रिडिया धान हुया अंक घडिया), टावा, बाडिया
मोयन मिडाणा, ऊचा बाट रासर, रूपादबळा, राजपरा, डर नाळा डहरी पायवाण
र गल रिरताणा भूतिया, किमनामर र गले ऊंचा ग्यातीहाळा, कुड वन कागरी,
चिडापडा दावटिया आमलिया बाडिया, काज्रिया बायूणा रिडिया अर लीलावाळा
नाळिया गिदराणी रिगणा काळवाम र गल वन गाव र चिपती धट बायूण
मुगनाण र माग्य मडागा (बठ जाणिया र गुनावा रा मठ है), मजरासर र मारग
भाद्यवाणा, राट्टिवाळा गाव, मू दिखणाद मानिपर आडसरळा, अगूण नायूसराळा,
बायला जसायन, नाळना, मिगाळनी अर नदंडाळा खेडा बग । फागट गीग्वे धान अर
फळा फमला लाटीज । आजबळ लाग गालगन मन ही सेत खड ।

उतराणा भता रा रागजठ सरम मनीरा माऊप म अठ ही नही, जठ-कठ ही
नाव, मव अर मिमरी न मात कर । बावडिया बाचर, बार फळा अर टीडमी नानी
फळ तथा माग हव १२ बाजरा माठ गुवार, तिल मूग बौबळा इत्याद नीपज । जायुर्वेद
वर्णित अन्न औषध गी काळ रा राही जाछी उपज है जबै सग हँमी रा बागज सार ।
श्रीरव सर धय

अरणा या अरणी—अरणा रा पानटा गाळ थोडा मुकाला, कवळा, फूल धाळा
गुच्छाळा पानका, मध आब माग्या भिणभिण अर बाळया नीची लुळी रव ।

अरड—कवत ह—'कुळगाव म इरडिया हा रुख ।' पानडा कगुरिया मोड

-
- १ रळ मिल रटता बाळिया खापर मावर जाय ।
घड घड धूम मचावना पावर म पड उयाय ॥
(कळायण प० ३० द्वितीय संस्करण)
 - २ तिल बावडा टीमा माठ बाचर मतीग ।
धा मुठ सखर मवाद न मिमरी क मीरा ॥
मुघड पण बहु मव चूप मू सिट्टा चाव ।
मुगम सिर घर सार सकल परिजन मुख पाव ॥
धारड वस धुनिघार धुर, फिर फिरत खाव फली ।
तिण कहे हम करतार न फिर मू फिर वजयो थली ॥

आकार कपाम र पानना मिरस्यो । घोळालाल फळ बीजा घाळा गोता, जका म तेल
कढ अर काजळ वण । टावर कोड वरता गाटा ल्याव अर मलेटा घस ।

घाकडा—आवडा जगल अर गाव, दोनवा जगा लाग्न । करीव पाच छ फुट
अचो हव । फूल फळा लदयाडा, पाना अर दूध बड री बगोवरी करे । फळ मृशण पर
म्हई अर बीज बड ।

रोहिडो—रोहिड रा फूल अनार रा फूल सा लाल हुव । वण मोरम विहणा ।
कपूता कवत चो—'रूप बड । गुणवायरा, रोहिड रा फूल ।'

घतूरो—घतूरो गाव गळया, गुवाडा, खेना-खोडा खडो हाल । पानडा पान सा
फूल घोळा घटी र रूप फळगोळ काटीला घणा बीजा हुव । जरीला गुण जक खातर
साहित्य मे कनक नाव जाणीज ।

कनक कनकते सौगुनी—मादकता अधिकाय ।

बो खाये वीराय नर—यो पाय बीराय ॥ (विहारी)

भीम—अठ भीम रा रूख मोटा फल्याडा है । पानडा कागणी अणी अर घूमणी
नोक रा हव । घोळा फूल चमेली री सो सीरम भरिया, फळ निम्बोळी बाज । निम्बाळी
पावया मीठी मायन गाटा अर उवा म तेल हुव । या सान्व, सावण मास फळ फूल ।

जावासो या घमासो—जवासो अठे ताला म हव । काटा मोटा पानवा घणा
छोटा वरमती वरमा म हा बळ जळ आव । हाण भर मोटा खुप (पीघा) । म्हार गाव
ताला है कवाय काडा म काम आव ।

तुलसी—तुलसी र पीघे न लाग घर ग्रिहस्थी री पूजा बेगी ग्गाव । पानडा
लामा कवळा सुगंधित चरपरा, कडवा नया हितकारक । डाळ डाळ मजगी महक ।
ताव तप काम आव जड काय वणायर पाव ।

मरबो—मरबा वाडया म घणा लाग । सीरम आवणा पान तुळमी जडा । वात
पित्त, कफ रा दोस मिटे । बिच्छूरो जर मिटाव ।

सख पुस्पी—सखपुस्पी दस्तावर, मघा, बळ वीरज वघाणी मना रोग नासणी र
कसली हुव । काति'र तेज रा देवाळ । कोड भूत आद रा दोस उतार पानडा मे दूध
कढ, म्हार अठ रा खेता म घणी अंग । एक जात दूधेली कव ।

ताल मखाणा—ताल मखाणा रा खुप जळ कराड ताला अंग । अक तर रा जळ
मोय हुव । ताल मखाणा घनाण भीखराण, निराण अर खणा मे खूब अपड ।

नागरमोयो—नागरमोयो ऊंडी डर्या री पीळी माटी म मोटा घाडा मोय हुव ।
उवा री सुगंधित जडा म गाठ गठेन उळवा लाग । लाग खोद र वाड ल्याव । सुगंधित
पदारथा मेळा काम आव । कपूर काचरी छडछडील चण्ण र बूर साध देवा र जिग
म होमीज । पाणीकरा अर नमुनिय र नुकमा काडा कूट भळा रीट । हाका पीवणहार
तम्बाख र ममाला गळाव । डाढी सुगंध आव ।

बूर—बूर गो बूजो इलायची रो सी तज खुशबू देव, जक सू दबाया वण, पेट रो वेमारया कट । खेता-खोडा पसुवन चर । काळू मे पत्या राज बघ बूटारामजी बूर सू पेट रो दवा वणावता ।

भागरो—भागरो तीख तिजारें जहोडा बनार हुव । पाणी मूक्या घन्नाणें रो चोव म घणा ही अण । चरपरा, रुखा हव, पोळिय म अर आव आद र रोगा मे काम आव ।

दूब—दूब र रस न मूषण स नकसी (नाक का खून) रुक ।

उटगण—उटगण (भगरी या मिनीपजिया) ऊट साव । बळ बीरज वघाप काम आव । गंगी इया र गोटा न दूध म नाखर पीय । गोटा फूलर दूध न गाटो करदय । खेता बूटा ऊग-अड ।

कुरड—कुरड रो नाव अठ चामघस बाज । चेपदार फळया सू छाटा बीज कड । लाग ताकत छातर पीस पीस र पीय । केई लोग इण र महीण काळा बीजा न असाळियो ही कव ।

रतनजोत—रतनजोत न अठ रा लाग साटा कव । चौमासे माव-गुवाडा हरियो-भरिया मन मोव । रतनजोत आख रो दवाई म भागी काम आव ।

फूबी या खूबी—आयुर्वेद म फूबी न हृदय रोग बगी तात्त्विक दवा बताव । केई लाग खूवा रा साग भी वणाव ।

गोखरू—गोखरू अघात भाखडा । काळा उकाळी म काम आव । अठ र खेता घणो हुव । गावळ न ऊंट चर ।

कटेरी—कटेरी (रीगजी) रो काटाळा बल हव । पीळा फल लाग । गुलाबी फूला माम्या तितल्या मडगाव ।

चिडपणियो—चिड्डीखेतियो बाज । सिर सिरवा अर आरी माता म उकाळी र काम आव ।

सोखरू—लालरू दूखणिमा माथ रगड घाटर लगाव ।

गिवलगी—गिवलगी अर अक्कोड रो बल फोगा माथ चढ, सगती बाळा छोटा फळ लाग, इय न ऊट साव ।

इद्रायण—इद्रायण (तूम्बा) सू पेट रो दवा वण । इय रा फूल कपूरी अर फळ मोसमी रो भांत हुव । बघ लाग जगा-जगा काम लेव । अठ ऊटा पसुवा रे अजीण-आफर अर नी चरण र कारण तूबा उवाळर लूण साथ देव ।

भफोड—भफोड वसत र साथ रुखा रो जडा माथे कील ज्यू ऊपड । टावरा रो ओरी माता मे सूकी फूली उकाळर पाव । जाना जपाना मे भी मजाकिया साग वणाया जाव ।

पीप—पीप बरसाळ म फागा म वघ । पीप रो साग वण ।

छाछ—छाछ गाय भस्याळ जाल भाट म गी म पाहा पाणी गळ र मागी र विलावण म मधर उणाइज । या मिनग री भूय वधाव भाजन पचाव । पट र मारा राग मट र मन निरपत वर । इय म नूजी हीग जीग नूण, राग मिग र पाण मू पेट र जाला राग वट र आरवळ वध । छाछ पीवणिया बादमा मी धम जी सव । छाछ सू अजीण वळज, दस्त खुजला चौडयो ताव जळीघर रस्तचाप रमा, गठियो अर्धागिद्याव घरभास्य रा राग जकिन जिमा रागा म घणी गहन मिल । अजवाण मिलाय पीवण मू दस्त र्व उयाव । छाछ पीवणिय मिनग न राग नामणा तावत मिल ।

तिससकरिया साडू—तिला न छाट पटर भिजोय रगड अर मक्कर तथा गुड रळा र लाडू वणाव, उवा न मिल् मकरिया वव । अ लाडू खाया वाय वाणी जाव ताजापण आव अर घण पेमाव वरण रा राग मिट । या आवन मीयाळ री मीगात, बार बन-वेदया न ही भेज्या जाव । बालू रा यो घाय रगड र वणायाडा बाळो धोळो पाव मिठान है । खामकर र मनी वाय र भाग चलाया जाव अर मर मरानि रो प्रसाद वज ।

भोजन—भोजन ता गाय म साधारण दाल राटी रा ही चाल, पण बार यूनारा चावळ, लापसी अर मीरा ही घुटा लिया जाव । मोगरी खीर, तीजा रा मग मातू गौरा रा ढोकळा सढळ रा दळिया अर आत्मातीज रा आमली रम खीचड रा अठ मुख्य भोजन वण । बालिवाजी रा ऊजळा भोजन वण अर पुत्र हाण री आम पत्र घेवर गधरी दाटाज । व्याहा मावा अर ममाण आवा माथ हनुव तार्क हाथ घाला । गाय रा धी अर भस्या रा दही देवण जोग इमस्त अठ राध माध ।

चाय पीवण खातर म्हा काळवासी भेता नाद आगीवाळ हा । जेट र मीण बूजा जिंसा करडा काज करता ही नी बूवा । खाड नी ना गुड री वणायर ही दाफारा दो-तीन बार पावता नी बूवा । जद ही ना का-या वाय वण—

रोग्या र खातर वणी, जका चायटी ठीक
बुढळा बुढळी पीवता वा ही ना वेठीक
वा ही ना वेठीक नीर पार वम पीता
पाणीवाळी प्याम जीत जुन अवकल जीता
म्हारोड सिद्धा न पीया हा काळवाळा ।
कर आतर सुत्कार माण आगत सभाळा ॥

मतीर र बीजा री खीराद पदारथ—अठ मनीरा रा बीज बोरा वध दूव । इया रा भात्र वदे-वदे मोठ वाजरी मू बूचा चल्या जाव । मुणा इया रा तल मसीना मे लाग । म्हार अठ बीजा रा तेल गाया भस्या जर ऊंठा रा माछर भासा तथा चीचड भजावण र कामे जाव । बीज पमागी लाग ठ्याड म रळाव । बीजा री राती वडा मुवादीली वण । घाय-मुकाय मूज कूट लाणर दया र खाट न दूज जाट र भेळ

फ्लोयण सू रुडी रोटी पोइजे । बीज सेवर छाछ साथ लूण लगायर टावर खातर चरको चवीणो ही घणाया जाव । बीजा र आटे न पाणी मे ओलेर वपड छाण करे बीर ब्रणाय । मोन सा माछाया मिनख गोटा रा माल जीम । काजू कतरया र मेछ बीजा रा गोटा पण घणा चाले । तुम्बा र बीजा न भीठा करार 'बरटव' बाटी बणाई जाव ।

भुरट रो रोटी—भुरट रा काटा सेना-खोडा सू हूजर (चडवायर) ल्याया जाव । पछ खाट खडवर दाणा काड अर पीम लेव तथा गोटी ब्रणाय । यो दाणो भुरट बाज । भुरट रो खोडी रो अंकावमी र व्रत म सगार करीज । इन अठे अन नी मान, फ्लाहार भमस ।

राबडी—राबडी छाछ अर बाजरी र तथा मिस्र या ज्वार रे आटे सू चणयीडी अेव खट मीठी पदारथ हुव । कबत चाले—“मृाने आछी लग रावटी जाम दाँत फाग न जावडी ।’ आजकल म्हार अठ 'वाळू दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति' र हो जाण सू सरर गाव रो दूध बिकरी मे चरयो जावे जद छाछ दही अर राबडी रा पुराणा सुपणा जाव ।’

अठ घन पमुवा आहार, भुरट रो घाम, सेवण रो घास, डचावडी मडूमी, गठालियो अर लापडी रा घास घास है । नीरा पाला, फोगा रे फोगलो, ल्हासू घिटाळ खेजडा र सागरी करा र केरिया ही घणा हुव । फली, फोफलिया खेन्गी, मिफळती वाचरी, गोदकिया रा मिनखान साग हुव ।

पमुवा म सिन्धौड घन, अठ गाय भाय रो है । गाय रा बाग बूधर । पण भस्या रो छिब ही ज्हाण र पाणी पाण तिरती देखवा जोग है । अ-सावण म रिडकती घरा आव जद काळू म सावलो गगटु माच । दूध दही रा नद्या बुवाव । अठ र भस्या र दूध रो साग अर दही जिनडा म अेक्बर तो खाने जाग पदारथ है । मीयाळ छाछ रो अर उ नाळ डोव रो राबडी रा ही अठ आछी आहार है । कूटेडी राबडी रा तो स्वाद ही यारा है । छाछ रो पुराणी कबत है—“सीयाळ रो पूता न बीमास रो भूता नै ।” पण वतमान मे “दूध दही रा पावणा, छाछल्लो जणखावणा” है । लूणकरणसर तसील रो अेक वनी दूध सहकारी समिति काळू ही कहोज । दोना टेमा नरी पूरी टक्या, टुकडा पेडा लगाव डोव । ऊटा रा गुवाळा रवारी अठ वस । उव तीना जिला (वीवानेर, बूरू गगानगर) ताई रा साडटोडिया चरावणा साल । गाय म टोळी नरया राख । एक दो महियो ही टाळ मे रव । कदेई जेँटा न अठ रा मिनख जाना जपाना, मेळा डोळा जात जुवाया चोपी सजाया-भजाया जे जावता । हम्म धूड डोवणा काडा म बापडा अवाला रो रात काट ।

रेवडघन अठ ज्होडा अर खोडा र कारण लूठो है । यो घन अठ पाच हजार रो गिणती म अेक्लो ही आव । अून अर चघेप आछी चड मोडी है । मालका रा गुवाडा

1 ऊट, जब सू कोई काम मी लियो जाव । उवो नसल सुधार खातर खुल्ले (स्वतंत्र) चर ।

ठाकाटा ठका दरया ह। बया तो अंबड रा गुवाळा दुनिया म सदा म भोळा बाज। रोही रा रोड जगळी अर इकळसोरिया बागदा भिनवा म गिण्या जाव। अंबड रा, माळ अर टरडीवाळ र नाव जोळवाज। कउत है—‘फलाणा मुखडा मेरी के लरटी चरायोडी है के?’ पण काळू म अंबडवाळा गुवाळिया रा छटवी वाता छोमो है। लाक कव—‘भेडा री अर देडा री जेची है जाट अर टाट जाळा घर ममक है।’ नूई वाता अर नेतागिरी म चोपा चात्ता रा कान कतर। ठगाणो नो अळगो रया, आपर कुदरती अर अलबेल विग्यान सू गिलगिच गफा वर। क्यू नी चतर वण? चाळीस पुरस थूड कवा काळू ग पाणी पीम।

ग्रंथ ११ विदवा धलोकी अस्त—काळू रा मोखीन अर स्याणा लोगा री तरियां अठे रा मोनी साजणिया, आत्मग्या या री गिणती मे जाव। लारलें सिईक सू कोई इसो जुग खाला गयो नी सुण्यो-गुण्यो, जका मे कोई लाल जठ आमर आपरी वसाई नी प्रगटाई हव। छप्पन बारकरला वरसा पल्या चतरा बीसो, पेसो आसू खेना, पत्तो सिरीराम अर भोमा अठ जाम्या अर आपरी अूडी स्याणप रा जम-बीरत नाव नामून काडया। बीजरास नी छाट वणत पम रो पडणा, आसू रो पाणी डोवणो अर खेत रा वज जावणो मन ही चन आव। येन नी फूटरी छाटी वाता तो जठ घणी अुधळीज। खेत ग हलो खेत मे भाता खन री हाजरी, खेत रो वागो अर नेत र पटुड खुसाण तथा भुजिया खाण वगरा री मोवळी घटणावा घट्याडी चाल। खेत र घर खन एक खगो ही मूव अम्बेल माग ग माटपार हुयो। वतमान म बालूराम नी नेतागिरी मोम ग सेवा-पूजा, सिचियालाल री दुकानदारी अर जुग-भवर री कामू व्रती तथा मूळिय री गाव प्रसिद्धि चौडे है। मूळिय न कुण वाली जाण?’ विद्वकरण री मरळ अर सनभावी रिगला सू काळू रा ही नी जाया गया अळगला लाम हो सठा रोम भीज। रिघूवाळ ब्रमचारी हाथा धानी नी बाघ जाण पण चालत काम हृदम गुल्वा ग गुण गाव अर भजन सुनरण वर। भाळा ब्रह्मग्यानी आपरी जाली अनुविधावा रा टाबरा न हँकारा दिराव व—‘गाव विगडग्या, मन गाव रा टीगर मारै। पण काड आछा माडी वाता री उव न काइ उट्टा माख देव तो वो कत्तई नी मान। कव—‘जा रे। म्ही तर जिमी कई पाट्टी पडी दखी है।

सुनिया नित्य माताजी री टीवी रयाव अर बाट

काळू बीराण भाम म भवाना रा जात ग पठाकी है। पळ्ळाक सू ही वधका अर अलबेला भिनव उपन आव। माया घ्या या मूगा रा जिता गुण गरिमाळा आत्म दिल दिमाग इम गाव म पाया जाव, उत्ता और वठ ही नये। अठ अमा सीजा, पाग सोना अर मूली, जिसे नपवती महिगावा माया-बाया रा स्वर व्यञा ही लठी वद्धा अ ओपरी आम्हा म्हासू भूल्या नी जाव।

काळू रा ग गा, देवाद्रिक द्रुष्ट उगमादी हव। उव देवगिर धर्मित स्यात माळ सतास राय। आपर अजळाप फूटरा मन भावणा साचा वचन बोल, चेनणा मू चाल तेजपारी तथा अचचळ लायणा त्रक वरदान स्व अर गुल्वा री सेवा माज। वारी

बूडा रा दरसन मळा री मातरी जात लाभ ।

देवरो, नवरात्र, जागरण अर भोषा—वाळू म हरक मोण री च्यानणी आठयू माताजी री माटी तिथ मानोज । आठयू न अठे रा साग घरा म दूध दही अर खीर रा थअू राखोज । पूजणी कर अर व्रत अकूमणाळा लाग धान जाव । अजळ पख ही गाव म जागरण लाग । माताजी रा भुग्य भोषा, मेवका र घरा जागरण देय र भेंट लेव । नवरात्रा म अठ आछी चळ पळ वण । धूप अर अगरबनी रा गाट अूपड ।

देवी रो भवन—पुण्यताल भोम सून अपण आप जवतर्योडी (अूपड मोडी) सदीनी-जुनी दिव्य, जाकपक देवी री देवळी माथ भव्य भवन अर उव साथ बरोबरी र जाड अंव जागण, मां ब्रह्माणी रो मंदिर है । दोनवा रा सभा मंडप छत्र वस्त्र सौभाग्यमान है । दोनवा भवना र बराडा आम लाभ चौड चौभौत धिरियो विसाळ चौक, जक म संगीत चौकी हवन वदी अर च्यानणी मंडप बाघण रा जाखा हक मौका मिलायाडा लाभ । छात र जळ बगी मोटी कुड, जळ प्रदाय विभाग रा पाइप अर चौफेर मोवळा मकान तथा सातरी पटया रोपर घुल्ला जागा घेर्याटी है । खास प्रोळ दरवाज र बराबर दोना कानी जातरी ठरण सातर फसनदार आलीसान जाळी झराखाळा स्यात सात कमरा वणयोडा है । भौतरी नाहर र छाटकिया पौषा री द्विपा मोर डेलडा जिंसा पछी बडा कलाठ कर । रमाईघर, स्नानघर दूटी अर टकी तथा माय बार मोटी चौकी है । ऊपर मुकटी माथ लाल घजा कराव । सामण चौवट चिडी कमेड या अर कबूतरा जडा पछी, पारया री पाळणा बगी कुम्मी नागण न लाहलकडी रा बोखो पीजरो है । असवाड पसवाड देवा दवतावा रा धान अर राव रा शिक्षा स्वास्थ्य सस्यान है तथा कळी रामज्जरण, राज रा क्वाटर राज । मंदिर र पाठ पाठ पचायत भवन अर टाव पाम जनाण री पाळ है ।

नवरात्र—वाळू म चैत अर असाज सुदा १ (स्थापना) सून सुदी ९ ताई हर साल माताजा रा नभ नवरात्रा अठ जनक जायाजण आलर जाव । भवन कळी रंग अर बारणीस सून सजाइज । माइक लाग दळ्ळा वण फररया टग अर कया खावका र आराम मंडप लाभ लग्न र विद्यामता विद्याइज । दिन म देवी भागवत रातरी माहारा तथा अखंड जात घा अर सुगंधित पदारथा रा होम चम चाल । रामलाला नाटक अर सिनेमा बलाव तथा केई विरिया कवि मम्मेलण ही नरावण रा कंवठा विचार श्राव राव । आसाज र नवरात्रा म झाकी काई रावण जळाव अर कद वदे जगदेव ककाळी रा रुयाल ही करा देव । पण भागवत वाचण्या पढित अर रयान रा खिलपारा हमस बार सून बलाया जाव जकी जगदेवा समिति र लोमा री वत्ता लखगताई लीला है ।

समिति री केई साखावा—स्वय सेवक ळ चदा उधावू पार्टी हिमाव परीशक जुम अर मासटनिक आयाजणा रा प्रवचक तथा अयदा अर महामंत्री इत्यान् कायकारी महानुभाव महीण अर पल्या ही आपरी मीठी नोद उडा लेव । मिनमा मेला मंड अर उत्साही भगतवर अगुवा रव । गाव र बारकर काक दूध री अखंड कार गिण भेदा सामूहिक जकार समेत वदी धूमधाम सून दिरवाई जाव ।

जागरण—आठवूरी रात रा जगदवा भवन मे भारी भीड़ समेत जागरण जुड़। भोपा तथा गवया वार स ही जाव बलाया जाव। इया मे तीन तरा रा गायक हव। माताजी रा स्थानीय छिद गावणिया भापा नूई चिल्लत री सगुण राग गगणी रा भजनी अर वाणा गावणिया निरगुणी सत्सगा, अ सम बागी वारी मू मिलर भाइक माथ आप आपरा साज-झाजा मू भेला बोल। गाव सू चौतरफ जाठ आठ किलामीटर ताई ऊँची उषाजा चीसा काढ नाख। गाव र वाना भविन रम पड जाखीरात मोकळो मानखो खड भड। रयानामृत धुळ, टावरा टोगरा तकात राखू रावता जुळबळ। आज र विद्यार्नी जुग म बकार बरबादी वाली अ पचासा साठा माला लारली रयाल तथा रावण घाटण जडी बाता नास्तिक लोगा न जावक नी सुबाव।

बीकानेर राज्य र सम नवरात्रा री सुदी ६ री रात रा गट म जागरण लागता। पछ गाव म आख बानण पछ जागण बालता। जागरण म देवी रा सुणा छद, ढोल अर छिया आवणी अठ री सदा मू प्रसिद्ध है। कई लाग आपर अचभ सारु भाग मू लाल कराय भापा मू साँकळ हो मू ताव। छिया ता हर विणन ही जा जाव अर बी आपर सिर मे साँकळा रा गडीड खावना परचो देव। छिया म बाळडा नाव रो कारुणिक कथा छिद देवी र हरक जागण री भाग है।

भोपा—अया तो वागा, त्रिमूल अर डरू (डमरू) माताजी र भोपा रा खास बाना है, पण काळू म बाळिकाजी र भवन, देवी री आरती पूजा परम्परा मू अठ रो अंक भादू जाट परिवार बड चाव मू कर। दानू टम सना मंदिर खोल, बुहार काढ ढोल बजाव धूप दीप कर अर घण हरल कोड धूप म धूपिया सजाय लूम मूम-लपट-ली आरता लुळ। बीकानेर राज्य र सम दोनू नवरात्रा म भोपा न पक्का पेटिया अर देवी र धूप दीप घजा नारेळ सग्वार मू माह्वारी मिलना। गाव मू ही ब्याह साव आसर मोसर जीमण रा पक्का बघाण हा। हम्म नवरात्र विसर्जन र बाद, केवल गाव मू ही उगाही करण रो इधकार है। भापा वागा पर घजा त्रिमूल हाथ लेख अर सागडव लाग ढोल डरू, बाळी बजावता गाव र घरा दवा रा जुहारा देवण जाव तथा हरेक घर मू अंक जेव रिपियो खुधाव। कोई मानीतो मिनस भाप रा किरतब दखण रो न दव तो उण र घरा मैग बठ। भोपो गोळा गिटर निकाळ, त्रिसूळ गाल मू पार काढ तथा बाळी न डक मू ऊँची उद्यालकर उव मू ही चिब, इत्याद चमत्कारी करतब दिखाल। लोक घण विस्वास मू हाथ जोडता अचभानिभस्कार कर अर की उपज कराव। बाकी गाव री तन्म मू भाप रा कोई बघाण नही।

इय भापा तुटुम्ब-केड री अल म हम्म देवीलाल अर अजु नलाल भादू, भाई भाई माताजी रा भोपा है। इया रो बाप राधाकिसन स० 2036 म गुजरयो। राधाकिसन रो बाप मधाराम भादू ही तीसा वरसा पला तेज तराट राना भोपो हा। गाव र लोगा न आजू चेत आव। उव सम जेव भाई भापो भादू जीम रो देवी खड करयाडो जटा बघाया अस्पष्ट संवद बोलतो मंदिर री सेवा पूजा करतो। राधाकिसन ने दादो काळू पडदादो जतो अर लडदादो लाखो भादू आद नामा भापा हुया है। कथा रा वणायोडा छिं ही भाइज।

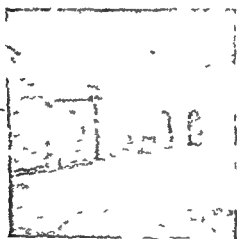
काळू राजस्थान री जुळ देवी बाळिकाजी रा माटो घाम इय वेपो बाळी मया री रसती बिरपा जठ इय वस्ती माथ उल्लखी सामी दीख। कुदरत र फवत मुरधिर्ये

पूठराप म अध्यातम अनीकी छिव स्वय प्रमणा लाध । इय गाव र मुर्णा प्राण, आप-
 चिन्व नी आरम गौरव तत्व प्रत्य पांगरतो पठन । बाढू र मुर्णी बीमठ अर वडा-
 राषणा र पाठ मधुर्व गजस्थान रो रूप-माया पाँव छान । राटू म नी वल्लजुग
 दुर्लभ, उदार मेळू मना क्यावण री जान पट विरमि । यो गाव उव मातरी पाळ
 निरणा मू ही आया गदा रगा मदीना भीटा पाणी अर माण मत्वार गाज-अरप ।
 राढू लाव माण मन्वारा मारु पान पडोमी गावा न मिनसाव री ऊँची मुग्जाता र
 घोल भळे यताव । सा या आपरा चांग परिपानी मू निरपन्न भाव भाँरता वती
 मौविया मुला र आधार कहान । गाव र मायड नाम मू वडो ममा म मन दूजो
 प्यारो वाई सबद ना दीम । एण रो भाँन भँतीला रग रगीलो मरम रूप नी इय री
 अनुपमता रो मजीप ममूना है । अर्था ता र्य नाव रा मायडा गाव काढू आपरी ममा
 मिमता मू अजब उजागर है । पण या काढू ना खुद नगरवाट री ज्वाळा धोठागढ री
 धिराणी रा वाम रैवामो ह । मा ह्म अँक मिदर मया अर पर द्वाज ममान आपरी घत्ती
 तावत तीरथमान स्थान मानीज । जठ रो हरव मरद माटी आपर नामा नामा दधन
 दोठ, पाळी माता र लार राग्या नाँवटा चरिनाथ कर । पण बाढी दुगा भगवती
 मरस्वती तथा देवी र नावा ही अठ री मा-धनावा आपरी चतराई वडा पावण कीरत
 मूणा पाळ उजाळ । इणा आता नन्-नारया र पुण्य परताप या काढू मोम आद मवानी
 र ओज तज अर तथा नीया धान मुकाम ह ।

फालू मे रामस्नेही सम्प्रदाय री जगेरी—जगेरी गमस्नेहिया री जूनी साध मस्या
 है । र्य म पाच सान वडा भाष अर शे चार चेला ह्म हमेश रवता । या जागा
 चौमराभजी, रामनारायणजी, भगवानदामबा जिमा प्रमिद वध गाँव मिपळ, बीनानर
 वाळा महता र रामद्वारा हठ उवा री भारता मरुप गानी रयी है । या आपर री
 अँकली जँडी जागा ह जव मदा मू देगणिया लोगा र मनडा मोया है । या माघा रो
 आत्म पाळू र आयुण ना बगड रान हनी रेत वळ ऊँच घोर मान भान रमणीव
 आरुप अँव देलवाजाग सान महामाग घाम है । इय री स्थापना वनमान घाम नाढू
 गाव र वधैव मर्म रान रा माठम हव । जठ रवणिया साध आपर अयव उचाग
 छन्ल लगन तथा माची निन्डा मू पावड टोकी घागी म मारळा महता वडादार चित्र
 सार मजा रुखराय, वग वड थाराम मंदिर पगलिया सुमरण गुफा मोने परवाटा
 अर भुक्कयान पगनिया र मा जालम साधन स्थापित कर सता जाग अरुप भगळ
 उगा दया । वाजे वाजे माध-ध्यान मू भाठो आपर माना माव छो दोयर मरय मनरजण
 भडो पक्की आत्म आपाया जवा आज याग पया ही नाळ वाग्या न संगीत
 सम्मेलण हास्य विनोद तथा पत्र-पूतारा र वन भाजय वगी थोव छलाव । इय आत्म
 रा सूना पड या ममान डमडेर घणग्या पण उवा गमस्नेही साधा र पुण्य परताप काढू
 री ममा म या स्थान जीवना जागतो गौरव प्रतीक है । जगेरी वासी र बिपती उतराद
 नाके, गड घरकोट र बाचाळ, गूदी टाजी, जाली अर कूमण र झुम्मुन म हरपनाराम

- 1 जया—राजस्थान व मालव मे वालिका वगाल म सुन्दरी, असम म कामारया
 नेपाल में गुहेस्वरा बैरल म कुमारी वाची म कामाक्षी, गुजगन म अम्बा, प्रयाग
 मे ललिता, विन्ध्याचल म अस्टभुजा काँगडा म ज्वालामुखा, वाराणसी मे
 विसालाक्षी गया म मंगलाचडी नावा मानीज ।

देवणी जीवट री जगा है। या गांव काळू री काँवड रखा मे जर्भा इपे बास्न पाळू सू ही साधा री थोळी पनवाडा जर परसाद जगरा पूगतो। गाव रें अंती-मेडा भाथ नगरकीना, चडावा अर धान (भानन) रा चाळ पतिया पुगाइज्ना। साधा रें धार शाळी री ठडी राग्या रा नटाव नरुपा रवना। भूषा तिया गुवानिया तथा आया गया सता नें कूटर अ राटया दी जावती। साधा री नाळी (भाचरा) म दूध देही, माग ज-कडी राबही जिमी मावळी तेव जावतो। साध पोमाळा हावता। अ न्या रा ब्याह सावा अर आसग मानग वगवता। धुरिया आमागी रा साच पाळना। कया रा गुरू ही वणता अ बाळ बाधमाण पूताजता। नित हमेस भजन कारण भ्यान चरवा वगी मादयाग गुवाया री सगत जूनी अर टावरा री पोमाळ गगतो। माल म दो बार (मिंगम) अर वत रें महीण भें) माया रा वडा भडारा हावता। इय न बरमा कवता। मालपुवा (अपूप) अर जळवी वन्ता। ठाई ठाई चा नूता लागता। बार सू ही मावळा राममहा जर वारा माग गुरू काळू री नगरी घागता। साधा रा तक्डा सम्मेलण मजना। नीत दिन नाई बधका वमाण भजन, सुमरण तथा सुवाज्जवाव चालना रना। हिमात्र निर्गदाम्नी हावती। गायन भजन लाग साधा र भाथ पूग भाग खेवता।



जगेरी का श्रीराम मंदिर

काळू री ममू पुगणी मस्या या साधा री जगेरी है। इय म पीड्या सू शिक्षा ग्यान धमभाव अर मिलण बाजार पटना वमरता जाया है। काळ म धरमसाळ जिसी मानळी मावजनाना सम्पादा वणावणिया जूता राना मठ फूसाराम खवर साधा री जगेरी मस्या गुवा अर वाम गणिया उवाग ज्येय मतात्म जमीरवाद सू पल्पात परलेम (वगाल) गया। धन कमायग पादा जाया अर आदा काम तथा नाम कर्दया। भळे आज र वग्नार जस्पताळ जिमा माटा सावजनिक स्वास्थ्य मस्या भवा खालावणिवा सेठ सेरमल इत्याणी वाली जगेरी जायग पत्तिघाना है। दया रा गुरू नरोत्तमदासजी राममन्ने हा। अ मत जाडा हुसमुख, माठा बाजना अर ठिणक बावाग पाळना। साहुबाग म जाण जाण राखना अर पटना पलावता रना। भीड या नें खेती करावता,

धान चून तोलावता तथा हळ बीज रं माधान साजता । म्हारी देखणी म भक्तिरामजी रं सम अठ मोक्ळा साध चैला रवता । उव सम गोपाळदासजी अंर वग्न भजनीक गळावग्न अर भण्या गुण्या अमीर साध हा । गाव रो लाग उवा मू चोवो प्रभावित हो । मीताराम पोथी पानडो भागता । दुर्गादिनजी सागम्बत भीखमचद नाट्टा अर म्है कर् बिरिया साधा र घोरे जावता अर उवा साध समस्या पूतिया वग्नता । म्हा मे मू दुर्गादत्तजी आपरी वाल मुल्म ववितावा मू उवा ने खुमकर देवता । खाडिया साध (गुमानीरामजी) सुयट गाव मू झाळी फेर र लावता । उवा रा दूध दही र घर बघ्योडा होता । हुक्मवास नाव रा छोटा मा फूटरो चेलिया उवा साध दूध रो नूमटया लिया वगतो । भगतीरामजी जागा रा मेहत होता । ऊपर रा मत मेहत वग्नमी (वापिकी) र ववत लाया जाया वरता ।

अंकरग म्है (लेखक) सन 1952-53 म श्री गगनगर जिल री स्कूला मे म्हारी पळायण, बटोही अर समय चायरो नाव री पोथ्या वेचतो यको ग्रामोत्थान विद्यापीठ नगरिय जा पूच्यो । बठ परम मानेन, साहित्यविद स्वामी श्री केशवानदजी आपर मस्या पुस्तकालय म उक्त पोथ्या दिगवता यका म्हन घण लाड चाव मू राग्यो । साहित्य विम चर्चा नमीहन दो अर रात र सम विस्तर आपर कन लगायो । स्वामीजी गाव काळू री काण आपरो पुराणो जीवण चितन बतावणो पळायो के— म्है अंकरम छोटी ऊमर म गांव घोळिय अर डेलवा हतो काळू जा दूक्या । उव सम छोटा गावा म गोरव गळगळ सुणा घाम झग्यो झभो रवतो । गले गुण्या मिनय र चालणो भाग पडतो । रात र सम भेडिया गावा म आ जाया वग्नता अर चारी नाव बाडा कूग बाछडिया मार मोस ल जावता । काळू बडो लठा गाव सामण दीख म्है डरतो सा साधा री जगेरी दानी रातवास रियो । छेष्टवा ह्या सुधिया सुगनाराम पागाव र घर मू म्हार सातर आइडा (भाजन) पनवाडो आया । वो रातवामा ओजू वगाई चेत आ जाव, जद मन म्हारो पाछला पग्नि भग्पूर प्रमण कर वव ।”

म्है इण मस्या रा पडकाटा घरकाट बाड रा जगा डोळी री घड रा डिम्सा ठर्यो ठिक् । बीजा वस्ता ही गई गुनरी हालत माडी है । कोई अडा उगार आदमी हव जको प्यारा रियिया र जुगाड मू इय री मरम्मत कग्वायर इय भ पाखम री जावती सोभा नै पाछी बाडा बाडर अमिट आदर ओपाव उपाव ।

कालू मे सत ववि भानीनाथजी री समाधि—महापुग्मा न मय योग आप रा भान अर उवा रं वम म वडण हाचक । गीवानर म मन जनपदीय मय और उनका वाणी” नाव री पोथी भेंट म मिली । उव रं पृष्ठ चौइसा भाय श्री ओपा जापरी सुणा सुणाई जाणकारी मू भानीनाथजी री समाधि अमग्मर कूव (पडिक् पाक बीकानेर) वन वतावण रा चेस्टा करी है । पण नाथ सम्प्रदाय रा गहन ग्यान पायर राजस्थान र लोक भाणस तई आपरी रचना वाणी पाँचावणिया मत ववि भानीनाथजी री जाणा अर नमाधि तो गाव काळू मे है । उवा र परपरित चेल धूनीनाथ, सेवानाथ अर मोळानाथ इत्याद अठ ह्या है । सत गुग्गवनाथजी जहा गुग्वा री क्रिया अर हठयोग री साधणा मू भानीनाथजी री जीवण अगम-अलौकी तथा प्रवासमान घाम ताणी काळू री समाधि मू पोच्यो है ।

वि० सं० 1994-95 में काळू री इणी नाथा री जागा म गाव पूनरासर सू खारी वाला सेवानाथजी ने ल्याया गया। पारीका र बास रा भजनीक लोग उणा नै अठ बैठाया अर धर्मे हरख कोह चढो चिटो कर परा'ग जगा र बासरा री मरम्मत करवाई। ~~बाणी-गयक भक्त रमजान खाँ मिस्त्री~~ भानीनाथजी वाली गुफा न सुघारी अर दिवजा रो मंदिर बणायो। वि० सं० 2032 मे सेवानाथजी रो ही सरीर आगीनै गयो।

प्रामाणिक जाणकारी र अभाव म पुठलाया ता किणी न क्या जावै ? पण पचामा बरसा पैत्या बाणी गावणिया बूना नाथ भक्ता र मुखड़ा मू भाकी सुणी जमत्कारी क्यावा र आधार भाय लिखणो पड। श्री भानीनाथजी 19वीं शताब्दी र समै गाव काळू में मौजूद हुँता। व आखँ राजस्थान म रम्याडा हा। हमै उणा री बाण्या आषड सता-भाषा र गठ जमै रमै। बीकानेर जमळमे' जायपुर जपुर अर अलवर सकात उणारी चरणाई बाज।

गाव काळू र आयुर्ण कराह अनार्ण तळाव री पाळ मार जागा म इणा री समाध चौकी हँ। इय र सां'इ दूजी चौकी मठे है जकी भानीनाथजी री चम-मारी बाना मू बक्षित-आकसिन होयर अेक बगते वटाऊ गी जीवत समाध लिमोडी जागा माय है। इया दोनवा साथ ओजू भानानाथजी रा पगलिया पूजीज। समाध रै कर्न मकराणँ रा सदीना बूजळा मिब नादी सिबलिंग गगनाळी, मठे चरण बित्र इत्याद नाथ सम्प्रदाय री प्रतीक वस्तुवा अठ ममाधान दरसणा बिद्यमान है। ममाध चौकी रै नजदीक नाथजी र तप जाग मोटी गुफा ह। भानीनाथजी बराग पय पाम वारै बरम अठे बैठर भीन साधणा करी। साधणा फळी मख बाज्या अर मुर मे त्रिमनाद, त्रिमगाण बघ्यो—
‘दिग्ध आवाज हुब घट भीन’ मख पचामण बाज।”

नाथ गुप्तव भित्या गुरू पूरा मस्तक धरिया हाथ।

धुरै नपाग जीत का गाव, भानीनाथ॥

इणी अलौकी जीत र आधार सान् ठा लाग अर मठ भानीनाथजी री बाण्या रा अनकू प्रेरणादायी संदेश गाव काळू र नद-तँडै दो सी साला मू राजस्थानी भासा राच्या चौला चाल्या पमर्या पाया जाव। उव समै सता री कठिनाई भायै राजा-धरारकावा अण इणा रा परतत पचा गाव काळू मू सीधा हुयोडा है। जमत्कार नै नमस्कार कवत र अनुसार कालँ ताई इण भानीनाथजी री जगा लार बीकानेर राज्य रा तामा-पत्र, डाळी अर धोक-मूत्र सामगरी नेमानम बेंधी चालती। पण कीर पूजारी काननाथ र कवत सवत 1965-70 रै सम राज्य री भग माधता अठे र गिरदावर पटवारी रा सिफारिस पर जन्त करवादजगी।

भानीनाथजी री ममाध जगा म देखणजाग गुफा चौथा-चौथा र खराय, जानरी मता र ठरण बंगो आसराम पाणी रो कुड मोटी धूणो बीमटो, मिबजी रो मंदिर मूळाराम पारीक री चेस्टा मू वणायोडो पक्को चौमीतो-चौक द्वार है। नाथद्वार री भीत भेठा हडमान बावै रो मनाहर मंदिर अर आय पक्षेरुवा र चुम्प पाणी खातर लो-लवकट रो पीजरा है। चिपतो ही माताजी जावण रो मारग, वन बेसरै जी कव री पान अर जार हरिरामजी रो नव्य बणियों भग्य भवन।

कालू मे जन मिंदर घर साथ उपासरो—राठोडा र राज्य म जन मिंदर उपासरा भर दादादाडी जित्ती अनेक जन मस्यावा जठ घणी सजी ॥ धरी वणी । जन गुह्वा, भट्टाग्वा, जत्या मु या रा प्रभाव राज्य तथा प्रजा दोनुवा साथ मोक्कलो ग्यो । बीकानेर नरेश सुजानसिधजी (वि० म० 1757 92) श्री जिनचंद्र मूरिजी र पामी फामावाळा जिनसुख सरीजी सू वटी नया भक्ति गलता । म्हााराजा आपरा मूरिजी न लिखियाडा दा कागज, श्री जगरचंदजा नाहटा बीकानेर र मद्रहालय म है ।¹ बाचनं सू ठा लाग के महाराजा साथ उणा ग कितो डाढो सम्माण करता ।

श्री जिनसुख मूरिजी रा पाटवी श्री जिनभक्ति मूरिजी श्री टूगरगढ तसील र गाव इंदपाळमर रा हा सुजानसिध जा इया रो ही घणा जदन कायदी पाळता । “श्री जिनकुशल सूरी स्तवन” म मूरिजी री त्रिपा मारफत म्हााराजा री वरया सू ररया हलाळा करण रा ही वक्षान मिल । सुजानसिध जी म्हााराजा रा उतराधिकारी श्री जारावरसिध ही श्री जिनभक्ति सूरी जा रा पूरा भक्त हुता । बन्त वरनार मुजब काळू कनल जेरिय री जनता ही जन घरम न आपरो पूरा जोगदान करती । छुणकरण सर भर काळू रा पुराणा जन मिंदर तथा उपासरा इय बात ग साचेला साखा है ।

काळू म खरनरगच्छ रा लूठा उपासरो जाठव तीरवकर री मंदिर भर उव म अनेक तीर्थकर ग धातु मूरत्या है । इय मस्या रा निमाण सम तो पूरा भ्रम मे है, पण इत्ता जहर क्या जा सक के—वि० स० 1550 र नैड जन मिंदर भर उपासरा दानू वण चुक्या । मिंदर म मुख्य नायक मरूप देव श्री चंदप्रभू स्वामीजी रा सक्दे भर भगत रजण भव्य मकराणी मूरन है । जका माय लिग्या सबत् मिति पूरा ना अूधड । दूजी धातु प्रतिमावा माय जिम्ब प्रतिष्ठावा माय लिखियोडा लेल है, जका रा सबत मिति इत्याद पढण म जाव ।

सुण्याटा दतकथावा र अनुसार काळू रा जन मंदिर जेक हरिया नावरी विराणा आपर खुलल दिल टकरा सरच र वणाया । हरिया जन धम न मानती जर नया भाव समत राजीना मिंदर जावती । उपासर र सार (सारके त्तिना ताई जठ गुराजा गुणेशलालजी आपरी भस्वा राखता) उव रो घर हो । मरता वकी वा ही उपासर न देयणी । सम सम माय इय मिंदर ही मरम्मत भर देखभाळ काळू गाव री जोसवाळ पचायनी सू हुई जर साथ उपासर री निमगस्ता रवता आई है । उपासर रा गुराजी अठ सग घणा समय हुया है । जिनजित मूरिजा भर जिनदत्त मूरिजी र स्वगाराहण अथवा म० 1866 र पछ जमान ग प्रवल् प्रधान त्रिति श्री ओपाळजा रा चेला जेसराज जी (दिखा 1880) उवा रा चेला गुणेशलालजी अर गुणेशलालजी रा किसनलालजी गोविंदगमजी हुया है । सगळा आपर मुहवा रा पगलिया जहर घटवाया-जडवाया है ।

1 नाहटानी इया कागजा ग वदे रा बाकानर जन संग्रह म छपवा दिवा ।

2 (क) परमिल परचा पावियो, श्री बीकानेर नरेश ।

(ख) मुजानसिध भर राज न जरि भव लिया उवार ॥

(गुरु गुण रत्नावला पृ० 72)

3 गणेशो नान उदय ।

उपासरे म वचकी वागीररी ग काम गुराजी गणेशलालजी वि० म० 1980 मू 84 ताई पूरा करवायो । उवा आपर जुवान चेल ब्रथ थी किमनलाल बगी अक बाली-म्यान कमरो, सुदवाई रै काम गी मुख्य गेट, दूजो माळियो अर मानरी नूई-न ड चीजा वपगई, जका मू किमनलालजी न आपरो आयुर्वेदो औपचार्य चलावप म नाई दुवधा ना रयी । उपासरे मे पुराणी पोथ्या ते ही सय्ये ज्ञा जकी म्हें (नेवक) जनि थी किमनलालजी र मयै देन्यो ह । इया पोथ्या म विपाक मून (पत्र मस्या 81 लिपिकाल 1798 पान विजय) भगवद्गीता (पत्र मस्या 27 लिपिकाल 1856-श्रीपात्र) हेमी नाममात्रा (लिपिकात्र 1876-मत्यनन्द मुनि) बाग चिन्तामणि (पत्र मस्या 144, लिपिकात्र 1878 मुक्ति घोर) मिहान चन्द्रिका (पत्र मस्या 145, लिपिकात्र 1879 रिद्धि विलास मुनि) नागचंद (पत्र मस्या 23 लिपिकाल 1885 उद्योतिप) प्रियमल्ल (पत्र मस्या 10 लिपिकाल 1895—वनवधम) इत्याद पोथ्या खाम ह । इया र अलावा दूजो हाथ मू लिप्योन्नी पोथ्या म उपम्या पत्र विधि, कल्पमून बालावबोध गुरु गीता स्तोत्र चौमाम गे वल्लण जम्बूद्वीप गणित, दिवाळी कथा घनेरी चौपी पाप्वा री चौपी मौन एकादशी, गेहिणी कथा रामविनाय चछन ग्रथ, वदितु सूत्र बहन शांति, मिहूर प्रकर, चर्ती पूनम कथा पत्र जाव विचार, मन्त्रयादशा बालिकाचाय कथा कालान जिररस भाव उपदेश माला, मल्ल-मरण च्युस्तवन टीका, भुवन द्वीप, नमिठणा, कम ग्रथ मनान विधि चन्द्रराजा चौपी मन्त्रयादशी चेरराज बच्छराज, चौपा मिन्माय सुखेण वधक इत्याद घणमाणी पोथ्या है । एन्द्रजाळी, उद्योतिप अर आयुर्वेद रा अनोगा पात्रा हा । हाथ रा लिपियोडा पत्र सूत्र बताया करता । जका वाम्त थी अगारवदजी नाट्य बीजानर मूची बणायर बणाण खातर मन कई विरिया बागज बीहा । पण किमनलालजी र कटनाट पोथ्या ती मयै लिखावण बगी अठमा मळमा बनाता रया ।

जनाण तलाव री पात्र माथ उपासगळा ती वगची रूप दा उधाधी मात्रा बजी ह । उना म श्री आपालजी अर जेसराजजी ग पगलिया रोध्याडा हूता । श्री किमनलालजी मू यात्र र भो उजाड बी पगलिया बठ मू भगाय जन मिदर म स्थापित करवा दिया ।

गुराजी गे उपासरा मानी मान श्रीपाळना घमशाम्भ व्याकरण, काव्य अर मगीत मू डाडो मौख राखता । चेला जेसराजजी बडा इन्द्रजाळी गुणा । उणा आपरी बगमान मू गिगणवगनी घान रा राम उपासरे म्यास भाय उत्तरायली अर नाव गारवदेसर र बागडा परवार म हुई अक मती माता न मयर ले आया । उव मयै जत्र-मत्र तया रा पमा हूता । 1835 नहे चारण कवि वर्णादान (काठिवा) जत्या री पावड लीला खातर जती रासो" लिख्या—

‘जत्र मत्र महजादवा, म- बीर अजमद्य ।

तथा गेका खरतरा, बीजा जती बहद ॥’

बालू म ही अत्र तात्रिक चिमत्कारा रा घणा काय-मुमरण लोगा री जवान माथ चाल । जेसराजजी ग चेला थी गणेशलालजी पसुवा रा टूणा दसमण जत्र मत्र

1 मन्वाणी—वर्म 1 अक 12 म०—रावत सारस्वत ।

2 आज का लुच्चा लगवाडा 'शत्रु' लुचित केश व नागा नाटक" दो शब्दा से उस समय का बना पान हुआ है । श्री सारस्वत ने बताया ।

अरु शाडा झपटा कर्या करता । ह्या गुराजी र दोनवा सिस्या ही जत्र मत्र विद्या न नी भुलाई, पण जति श्री किसनलालजी री प्रसिद्धि अँव जसकर चढ र रूप म वधी । जतिजी आपरी कुसळता मू अनेक असाध्य रोग्या न जीवण दान वकसाया । किसनलालजी र गुरु भाई गोविरामजी आयुर्वेद र अनुभवाधार माथ गाव काळ म वडा उपकार कर्या । ह्या री जति दीक्षा स० 1993 र अठ म हई अर म्वगवाम म० 2032 मे हुयो । हम्म उपासर अर मिदर अँव द्रुष्ट चाल ।

श्रीपाळजी रा सिस्स गणेशलालजी जलम मू माहस्वरी जात रा बाणिया हा । उवा रा मोटा चेला किसनलालजी गाव खिर्येरा रा बोयरा ओसवाळ हुता । अ छ मीणा री ऊमर म ही अठ र उपासर चढा दिया गया । छोटा चेला गोविंदरामजी मालाणी रा विरामण हा जका री जती दिरया अठ म० 1983 आसाठ सुदी 15 न हई । बनोरा जीमोण्या अर ब्याह रा सा उछव हुया । उव मोक बीकानेर मू 'श्री पूज्य (वडा आचार्य) चरित्र सूरिजी समेत जत्या री मोटी पाळटी आई । झवरा रा घमशाळा अर ओसवाळा र नाहर म ठरा । दूज दिन दीक्षा देण र मव श्री पूज्य न उपासर वाड्या, पण चरण घरण नी घरण दिया । दोवटी रा पाट विछावता चका वठ ताई जति लोग लेंग्या । गोविंदरामजी रा साथी-साथीना म्हा लाग्या देल्या—मलमल रो मोळियो, सीत रा टड्डा इत्याद गणा गाभा उतरवा लिया अर घाटा वमतर परायर ओघा पातरा दे दिया । गाविंदरामजी री मा, अठ वामणी नाव मू रवती जकी बट ग दिरया देखर गळगळी सी वणगी ।

जत्या न अठ ओसवाळ पल्या वितिया राज गाचरा (भोजन) बरावता । अँदा मडा ह्या न पुरम्या विना जीमण रा पातिया नी पडना । पण जमाने र अनुसार दलता दलता ह्या री सग रीत मनुवारा टूटगी । आखिर अ जमार रायजादा जति उपासरो अर लाळा री माया मता ओसवाळ मभाज खातर छाडर मर खूटया । हाल म मंदिर रा सवा सीताराम सबग कर ।

लूणकरणसर र जन मिदर उपासर रा गुराजी रा ममचदजी अर मगनारामजी हुता । सेमचदजी रा चेला प नालालजा जका आपर अधीम्व मूरतगढ र उपासर न सभाळता वठ रता । मगनारामजी रा चला भूरामलजा एम० एम० बीकानेर पुरातत्व विभाग मे सवारत है । उपासर न ओसवाळ समाज सध लूणकरणसर समाज खातर आतिथ्य घर वणा लिया अर जन मिदर सेवगा द्वारा पूजीज ।

वाळू र असवाळ पसवाळ नाच लिम्व अनुसार उत्र समे जन मिदर हुता—
1 मरदार शहर म पाश्वनाथजी रा 2 मिदर 2 दादा वाटी । 2 पाछ श्री दूग रगढ म श्री पाश्वनाथजी रो 1 मिदर । 3 विम्व म शातिनाथजी रो मिदर । 4 राजल देसर म आदिनाथजी रा मिदर । 5 लूणकरणसर म सुपाश्वनाथजी रा मिदर अर उपाश्रय । 6 महाजन अर पूनरासर म ही जन मिदर हा ।

कालू मे जना रा दूडिया अर बाईस टोला सम्प्रदाय—वाळू म दिगम्बरी ता बया नी हा पण परणीजर आवण वाळी बहुवा 'दूडिया' सम्प्रदाय री वधती साखा 'बाईस टाळा' पथ मानण वाळी बाया तो बीकानेर कानी मू वेई जाई । ह्य सम्प्रदाय रा म्यानकवासी आचार्य श्रीलालजी, ज्वाहरलालजी इत्याद सता रो माय र आम पास

विचरण हुता रयो, पण काळू आवण रा जाग नी बठा । इया मु'या र स्थानका म वणे र कारण ही स्थानकवासी नावा ठर्या । सवत् 1984 म जवाहरलालजी रा पोसातो सरदारशहर अर 1985 म वूर ह्या ।

स्थानकवासी अर तेरापथ —स्थानकवासी सम्प्रदाय मू ही म० 1817 म तेरापथ उजास द्याडा है । पथ नी पली किरण रा आचाय श्री भीखणजी यो पथ चलाया । या री गुरू पीटी लोतार भारमलजी रायचंदजी (स० 1887 र नड) जयाचायजी (स० 1908 आचाय पद) ममवागणीजा भाणकमणीजी (म० 1953 म मधवा मुजस न्या), डासचंदजी अर जष्टम आचाय श्री कालूगणीजी (11 बरमा री ऊमर म स० 1944 म दीप्ता ली ही अर म० 1966 म आचाय पद सभाळया) ह्या । इया तेरापथ र सस्कृत र अध्ययन अर साहित्य निमाण र काम वत्ता जोगदान दिमा । उवा री सासन वरण-सम वाज । काळूगणीजा न आपर जीवण मे सर्म सारु काळू गाव मू डाडी मोह-मिमता रयो । इम गाव री जिक आवता ही व फरमावता— या भाई म्हारा नाव रासियो गाव है ।”

म्हारी दगणी म आचाय श्री काळूरामजी स० 1979 म काळू पधार्या । मुडील सरार माथ लामी गरदण अर लामी भुजावा सार वखाण दवता जद हजारार सकवा न आपरी कानी खीच लेंवता । हुसगी वार व वि० स० 1988 म ओजू काळू पधार्या । गाव रा जुवाना गातिका गाई— छायाजी के नदा परम सुख कदा । शीतल कदा र गाना हर लानी काम का । प्यारी लीजी मूर्तिया मारे धाम की ॥”

उवा रा महाप्रयाण गापुर मिटी म ह्या ।

श्री काळूगणी जडा जंत वि'यात धरम नना र अनुमासण म तेरा पथ री बडी बटायो बडी । हमें तेरा पथ रा नवम आचाय श्री तु'गागणीजी हैं । आपरा जम नगर लाणू म म० 1971 कानी सुदी 2 नै ह्या । 11 बरमा री ओसध्या म साधपणा धार्यो । न० 1993 र भादव 22 बरमा री ऊमर पावर आचाय रूप मे तेरा पथ मासण रा भार माभ्या । आपरा गुरू श्री काळूगणी सरगा लोप होणे मू पला साची सून वून मू एक पाना श्री तु'सा र नाव रा गादी नीच छाड्या । तद—“कमा सुरगो रण छाय रयो गगापुर म” गइया ।

आप मू तेरापथ न माकला धरम ताकत मिली है अर जन सम्पक मोट रूप म पसर्यो है । भान्तवप रा माटा माटा धान मुकामा ताई आप देम भर री पद बिहार करयो है जिणा म चार बार काळू रा ही नम्बर आया है । जद कमा जाव के काळू म जन धरम न घणी बार मायना मिली ह । अठ रा भाई बना र दोक्षा साधपण री बाता मू नो काळू री या मायना जीम भी बडी लखाव ।

काळू रा दीक्षारथिया री टाण्ण—

1 वि० स० 1890 म वदा र घर री जेक ओग्त पन्थान काळू म दोक्षा ल्येन साधपणा पाळ्या ।

2 वि० स० 1956 म था जमनाजा अर पाचाजी नावरी दा महिलावा तेर पथ र छटा-मानवा आचाय रा निमगणा म जेक माथ अठ (माताजी र मंदिर म) दोक्षा

ली हो। श्री जमनाजी समाज पाव लूणकरणसर र विग्मेचा री बेटो हा अर तोलाचद जी नाहटा री बडिया।

3 पञ्च इया तोलाचदजी जवरमल नाट्या ढाळ र वडूम्ब सू मरदारमलजी नाहटारी मसारी मायघण शिछमाजी (देसणोव र भूरा री बेटो) तेग पथ म साधणी बणी। इया र साथ भाई रामचंदर भूरा ही साधपण म दीक्षित हुया।

4 स० 1973 म स तामचदजी जर मूखदजी (पला) वरू र वडूम्ब सू होगलालजी नाव रो उणा रो एव भाई काळूगणी र हाया सरनारमहर म माघु वण्यो।

5 स० 1994 मे ज्ञानी री बाठमू न बीकानेर नगर म 31 नीक्षाया र साथ काळू र बीपराज पूगलिया रा बहिन शिछमाजी साधपणी लीहा।

6 स० 2000 म श्री राजमल नाहटा (काळू) री बहिन तथा समाज पव मुखलालजी कोठारा र बेट री बहू (श्री जानीदेवा) री दीक्षा गगासहर म जानाजी नाव सू हुई। इणारी आग्या ही स० 1999 र बिहार भौके माघ काळू म आचाय श्री तुलसी र श्रीमुख ही परमाइजी हा।

7 स० 2006 उणी तोलाचदजी नाहटा र भाई टीकचद नाहटा र सपूत कछलात री दीक्षा जयपुर म हुई।

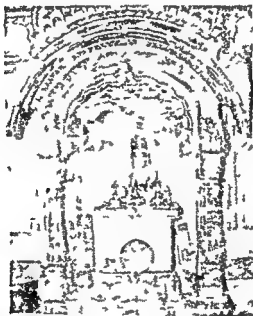
8 स० 2026 ज्ञानी मे बीपराज पूगलिया (काळू) री बेटो (वरनू) विजयमाला री दीक्षा बगलोर मे हुई। इस तरा सू काळू रा माणजा भाणजा मावळा दीक्षित हुया है। इण मग पुण्यात्मावा सू गाव काळू घणा गौरवमाणी वण्यो है।

तुलभीगणी 16 घरसा री उझ माय गाव काळू स० 1967 म गुरु माराज काळूगणी र साथ पली बार पधारया। जद जापर गुरु री मिमता भरी वाणी— या भई भूरा गाव रामियो गाव काळू म्हन डाढो जाछो लायें लखारें। अनारी मूस वूष बाळी गुरु री या निराळी बारम्बार री भायला वाणी थी तुळमा र म मायन खनगी। इम्में तो उव आवकारी अज विन माय मदीव फग्माण लागाव काळू तो म्हार गुरु र नाव रो गाव है।

तरा पथी अर गाव—इय परम्परा किरपा र तारण राजदम घीदासर मूमासर चाडवास पडिहाग रतननगर रतनगढ तारानगर जडा वम्बा री तरा गाव काळू ही तरा पथ री गतिविधिया रा केंद्र कुहाण लागा है। जठ इया आचार्याबा न घणी बिग्या हाळा बीमाता अर माछ्य हुया है। श्री तुलसी (स० 1987-1999-2009 तथा 2035) का वार इय घोराळ वास आपरा पदापण किया है के काळू म्हार गुरु र नाववाळो गाव है। श्री तुलसी माच माच सम्बन्ध है। इणा र यायसारी सासन सू तेरापथ नै बटी व्यवस्था तथा आनरी ताबत मिली है के उव काळू तजान गावा नवा रा गुण चेतें राख।

कण सका के म्हार इय काळू लूणकरणसर र क्षेत्र सू तेग पथ मघ न साथ साधवी भावा सार अनेक दीक्षारथी सौप देइया है जका र पावण कारजा समेत सघ रे माण विस्तार म लठी उज्जलापो वण्यो-उघढयो है। अहे-ग्यान घरम काज स्हार गा-बदेशर, पूनरासर अर महाजन जेडा गाव ही लार नी रया है। इय जागु अगोड री धारणा मुजब म्हार इलाक र आवका ही जन घरम र वडाव म आपगे पूरो स जोग

कह्यो है। अठ गावा म मावळा घनी मानी सदावाण सावक हा हाया—अर है। काळू रा सरवथ्री सुगनचंदजी नाहटा तथा लूणकरणसर रा श्री जेठमलजी बोधरा वगैर रा नाव ऊच भाव, जाय लाइज। काळू म श्री तालाचंदजी साड हजारा र गरम मू अनेक बार गाव रा असंग्य लोग न गिजव भाटर बसा मू दिल्ली बम्बई जडा घणसरा दूर-दूर रा सहरा ताई लेजायग पूर इ नजाम (प्रवध पातिय) म आचायथा रा दरसन सुलभ करवाया। उवा रा भाई भर दान साट रा नाव हा महीण महीण री मोकळी बार निराहार तपस्या पय मू गिणण जाग हे। पण इय पय सावका म सावित्रावा आग जाण चाव। अठरी महिनावा घरम काज म मिनता मू ऊची आस्था निष्ठा राख अर उवा री गिणत डाढी गिणत दिस चाक। बा महिलावा रा सपूत ही साचा सावक वण अर तेरा पय घरम रो माण बनवा बघार।



जन मदिग मर मृति

चौथो पडतग

कालू रो ख्यात नावो—

गांव री मूळ कथा—जकी घरणा र मो मो कोसा ताई चौफेर गाव री मुख सोभा तथा गौरव गाथा मूज गरणाव, उव गाव री रामराज्याणद वडो विचित्र बर विलालो है। गांव घणा पुराणा अर प्रख्यात आस पाम केई जगा अनाण मनाण भिळी पडी येडी निजर चढ। काई अेक रो नावा विदामर ही बोल। पण पुराण मम म अठ केई वास वसता जिवा रा याग-न्याग नावा हुता। काळू र कुआं म पाणी मीठा अर मोकळो होवण मू सग वासा राम राजी हा। सम री वात घणा काळ अर ह्या वासा र लोणा म फोडा पड्या। घाडवी, लूटेरा तथा कटक ही घणा आमा-अधाया करता। ब रिपिया पइसा हा नही, लोणा रा वरतण वासण अर गाभा चीरडा तकात सारी अळेवण खासर ले दवता। कटक जावती नद पोरायती नगारो वाजतो। गांव रा लोग अेक ठोड भेळा हा जावता। ब-दूक छोडता अर सग मद मोटियार मिलर उवा न गाव मू पादता। लुगाया लुग जावती टावर गुधा उठता तथा पली ठा लाया वरतण भाडा, कासी असद रा कडी पटिया अर पावडा कुवाडा जडा जहरी खाजा हो घूड म अूडी बूर दिया करता। वरतार वधकी अ मग वस्तुवा रात री रोजीना लोग न जमीदीट करर सावणो सांपजतो। भाटी रा कुन्डिया मू पाणी पीवता अर पन्नागिया परातिया मू जीमता जूठना। काळा कटका र दुता मू दाड्योडा सग वाम उजडग्या। अेकलो काळू ही कूआ जहाडा, मंदिर अर गढ माताजी रो मड तथा राजा सुघड र विबुधव्रत वण्याडा मीठ पाणी र ख्यार कवा ताण आस पीटा जूझता आपनी जाग्या धिर रह्या।

भोम वसत चाकीदारी—वतमान सम म काळू गाव धारा मडळ मस अेक महानी भाग म कव्वे री रगत रस वस। इय मू नडो जूचा अुतरादो पाणो अेक वास रा उजड पुराणो येह है। येह मू भळे घोडी उतरादो लागती 'घाळ ढाव' नाव री भाटी पाळ है। इय पाल र विपतो ही अगावू गिगण रूपतो 'वडी धोरो' नाव री अेक वडा लाको है। इय री टोकी अूपर कटक ढाकुवा री गिगदास्ती सारु, कदेई येह वमर्त वास और दूज वासा तथा काळू गाव येनी तत्कालीन राज्य रो व-दोवस्त चालतो। ऊची टोकी माथ अेक भाटा मचाण, उवा चाटी राज र शड अर नगार वध गाव समेत गाव कोट सोभती। मचाण पौज र मोरच री भात वणायोडो हुतो। गावावू जान माल री दखाळी खातर इय चौकी याण म रात दिन जटळ पोरवारी रवती। जदे-कदे पोरायतिमा लोग न कटक जावता लखावता अर वें मचाण मू मोरचो ले लेंवता अर भडाभड ब-दूका छोडता थका गडागड नगारा निसाण वजा देंवता। गाव रा वामि-दा माणस यो खडको भडको मुणर कटक रो आवणो जाण जाया करता अर

आपरी चीज बसता साधा गहन कर'र' सोटा, भाला बरछा मू सगळा माघ सानणो करण मच जाया करता। इस तरा कटक रै धाव कावै, काळ गाव रो बचाव उपाव वणतो गयो। 'पाळ ढाव' री पाळ अर वही घार' री टोका येह री जूनी राख रसापन ओजू बठ अही अही च्यै वान री माख भर।

जटायत रो मध्यवर्ती वास कालू—काळू वास्त या बात कवणी दोरी है वे यो गाव फलाण साल मे ही बस्यो। जाणा यो तो चार जुगा मू म्यायी है। मतजुग री देवी माता काळिकाजी र नाव माघ इय रो नावकरण सम्कार हुयो है जको यो पळी मस्तबास फालू माता काळिकाजी रो सदीनो सुखदायी अमर निवास है।

काळू नाव बाबानर डिवीजन रो पळी प्रदेश जटायत वाम मू जाणीज पण उव मू पल्या राजस्थान म बीकानेर राज्य भोम रो पुराणो नाव जागल देग बाज्यो। 'महाभारत र पोर जागळ देस कुरुराज्य' र हिन्दुगत स्थान पायो हो। कुरु राज्य पछ अठ किणा रो राज्य इधवार रयो। पण मध्यकाल मे नागवशी क्षत्रिया री राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर) हुती। जक बरतार गाव काळू र ताल म बगती मरसजी महाराज री माही टोट काळिकाजी र मठ बन टूटी। इग्यारव सईक रै मम-सार अठ जोइया चवाणा साबला, भाटिया अर अनेकू जाटा र। राज्य इधवार जम्पोडा हा। इय जागळदेम रै रेतीला टीला बाळ धरण प्रदेश माघ 'हानकिया ठिकाणा-पाणा, आज रा चौकी याणा सा जाटा रा खुल्ला राज्य इधवार चालता। आपरै बचाव खातर जाट जवन्दस्त अर साधनपाण नाजरूतिया हुता।

पळी रो यो प्रदण जाटा री मोक्ली जात्या म बढ्योडो रबतो। इय पोर गाव काळू र ताण गोदारा जाट चोखल चतर मुजाण राजता। जया—लाघडिय सेलसर रो मालक पाण्डू गोदारा बगव माही तीन मी गाव भोगतो। कुमारपाळ कसबो ही इणा र बरोबर गावधारया लूठी घाक पाळनो। रायसलण रो रायसल वेणीवाळ मईकडू गावा रो घणी हो। बल्लूही रै काह पूनिय कनै ही सईकडू गाव हुता। सूई गाव रो चोखो सिहाग ही डेन मी नडा गावा रो घणी हो। इया बाता रो पूरो पत्तो जाटा र भाटा री बहिया तथा गावा मे जनी बपियोडी देवळिया मू मिलै। पण अ सारा जाटा रजवाडा आपर ही कळगार मुभाव मू आखर हठा बैसग्या।

अनै डाढी र दान री हाठ न लेयर पूळ अर पाण्डू री तक्की लडाई हुई। पूळसारण रो लुगाई मळकी पाण्डू गोदारे रै घरा जाती बगी। मर्म रीत मळकी र नावै मळकी-मर अर पाण्डू पुत्र नवाग्य र नाव मू नकोदेमर, दो गाव काळू नैडा नूधा बस्या।

अठ गडै जाइया रै मघ राज्य मू लठ र वीरमदेव जी आपरा गाव बरेरण 'गोहर वेई जुग काळू र वन बागामर अर केवळामर कडूई समेत टिक'र रया। पढीमी गण राज्य नवसेस मर्म जाट सघ राज्य बीकानेर री थापना र वल्लन पचायती राज्य भानिया र राज्य मू मिलतो। अ राठीडा मू पल्या जागसदेस मे हिसार ताणी फैन्पोडा हा। विलोचा बयाम खानिया रा गाव अर इयै साघ भोम माघ छोटा-मोटा वेई

1 गाइया धन घरती म रसी वा कोई कटक सघारे। (जसनाथजी र सबदा म)

सिद्ध चरित्र, पृ० 3 ले०—मूयशकर पारीन

2 बीकानेर राज्य रो इतिहास, भाग पहलो पृ०—69 थी ओझा।

जागता नीगता आप आपरा खेडा नावा इधरार जमाया बठा । जागळू र सासक माणकराय री सपून नापो साखली मुसळमाना र टर भू राव जोधा र वने जायर उणा र कुंवर री मनसा मुजब वि० स० 1522 म उणी कुवर बीवाजी न अठ चढा त्याया । बीकाजी आपरी याव नीत तथा भांरा जान सू इय जाख देस न सासण जावत ढाव लिया । आपसरा रा बरा नाटिया, जाट, जाइया खीधीडा, पठाण, बाघोड बलूचिया भुटा इत्याद सगळा न भिटता ही हरायर बीकाजी आपरी लूठी हिम्मत, जुद्ध चातरी अर भरपूर भादरा री घाव वानकी दिखाल दा । पाण्डू अर पूळ री लढाई म राव बीकाजी पाण्डू रा पख जिया । पूछो हारयो हा, सा वो ही बीकाजी रा सरण म जाय बट यो । जाटा री साकन पुझगी । पछ मग जाट, भोम लगान देंवना थका बीकाजी री रयत वणर रवा लग्या ।

महसल री पुण्य भाम काळू—काळू इय पुराण 'जागळ देस' तथा वतमान बीकानर डिवीजन र थली प्रदेश म उव सम रा जूनो जुगीन अर आपरा जागा बळबूत असबाळो करामाती छातीघर मोहारो गाव है । इय री पवित्र धरण र चौकैर परम पूज्य सगत पुरखा देवा सती देव्या अर रिभी भु या रा सतजुगी पग जयमग रयाता मढया मिल ।

गावा गावा सती मातावा वायल वायाजा अर दमाण करणीजी इत्याद रा लोक पूज्य थान है । तोळियासर, लखासर, कोडमदेसर अर अळाय आद थाना काळिकाजी रा अनुचर श्री भूटा विराज । काळू र नटा पूतगसर हडमानजी अर खियरा रामदेवजी ग मेळा लूठा लाग ।

थी कोलायनजा र काठ, वने कपिल मुनीस्वर साख जाग दरसन रा उपदस दान्या । यागवत्कय, च्यवन तथा दत्तात्रेयजी जडा गुरवा आपरी तप साधणा अठ ही बट्टर साथी । जागरा नाव ग तळाव, चिमनगुफा अर दियातरा गाव इ याव ठोड ठाव इयै वारता रा सग साखी है । इय पाम भठे कनरियासर जमनाथजी अर मुकामा जाम्भजी रा जाम्भधाम है । पल्लू माताजी रा दूजो स्थान है । काळू स जगूणा नाहर र नडो महाभाग स्वाम पाडिय गे धारा, उनराग पीळीयगा वन पुराणा सभ्यता री सोध सार लाखा धारा तथा दिवणाद द्राणपुर रा जागा हडमान बाब री सालासर अर स्वामजी री सादू इत्याद देस मेडा है । आबूण करणीजा रा देमनाक तथा कोलायत जा जिसडा तीर्थस्थान सौम । गागाजी पाबूजी तजाजी अर आज र जुग रा हरिरामजी जडा लोक देवतावा री इय भाम, गाव काळू र बारवर घणा मट या मिल । फागा (फोग पतन) मे श्रु गी रिसी री धूणी बाज । दसाण र वासा म भरथरी मुगडवास नाव रा वास अर उणा म सुवदेवजा री निवास वताइज ।

थली र गावा म ओजू मढी दीसनी सता मातावा री दवळया म पुराणी वि० स० 1013 री देवळी, घनेरू गाव मे, वि० स० 1560 री देवळी रीढी गाव मे अर वि० स० 1798 चेत बंदी 11 बार अणेतवार री लिखियोडी देवळा काळू गाव मे, पुरातात्वी सोध वारया र जीवन जोष है । घनेरू अर रीढी गाव री दोन देवळया अँक्स ज्हेर री कोरियोडी धोळ सपाट पाथर माथ घण ओज आम ओभी साफ भूधडें । गाव काळू म काळिकाजी री स्वयभू शिला देवळ सतजुगी है । या सौ-संघ साला, आदजुगादी, सखू

जुनी लोन जाय क्या भावीज गात्र ।

कालू रो जूनापो घर जाण—वाळिकाजी रो जान मक्काड र पाण पुज्जना में गाव काळू रो नाव घणी जामा लिनियाडा लाध । वि० न० 1539-60 सम 71 दा बाटा 'सिद्ध चरित्र' (या मृगशक पार्श्व) रो पृ० 49 अर 82 म मात्ताडा मित्र । (1) तेर बार गाव बाहेर रो हरिगम ब्राह्मण श्री वाळिकाजी रो जान गाव काळू जा रपो । मारण म उव न वाळिकाजी रो विरपा मू माचो पचो हुवा । पच म बतायो गया के—'ब्राह्मण तुम्हार घर वच्चा जमा है किंतु उमकी माँ मर जायगी । दिव रहता, घराना मन । तुम्हारी यात्रा सफल होगी । बालक, कतरियासर के हमान्त्री को मौप देना ।' (2) अंक बार जियोजी ब्राह्मण आपर गात्र लालमदेमर मू अंक जनमान र बवाहिज काज वगी काळ जा रयो हो । रास्त म गात्र कतरियासर आपा । जसनाथजी मू प्रभावित होय ब्राह्मण पाणी पीवण हुन उवा रो बाणी विमूणी ली । जसनाथजी उव न टोकयो—'लग्न ठीक देख लिया है क्या ?' उव पाछो हा प्रेर काळू रो माग्न लिया । जियोजी गाव मू पल्या जगल र गुवाळिया न ममचार ही पूछ्या । तो उवा बो ही गहको आज र दिन सनम हुवा बतायो ।

अही कविना कथावा चीजा देवळया अर येह रो सामग्री र आधार मू ठा लाग के गाव काळू माता वाळिकाजी रो जान जुगादि बास है ।

काळा रो काय, मनकाळी स्थात, वि० न० 1843 देस म अवाळ रो काळी छाया छाई । गाव म गो पजाव कानी मू घान रा कतार स्थावण लाग्या । मरस कानलो गेलो संधा कर्यो अर काळू न काळ मू उधारण रो उपाव दयायो । अंतरन कतार मू आवत गाव र मुखिय मेख गोदार मारण र अर गाव म होव पाणी वेगी अंक घ र मारणाने आपरी कनाग ठामी अर घर म मू होक रो बास स्थावण यडयो । घर नी लुगाया काम करनी निजर बनी । पण नीची नजर बूल्लै मू क्षिप्रमिया लिया मेख बठ अंक रोबनी अवग ठथा जोई, शठ मेख उव रो सिंग बुचरार दियो । पूछण मू वेरो पडियो के— या गोत्रारा रा वेनी है, अर रा अंक आवडा रो काक घडा रो आवडिया सावे आवनी बाखा तीज रो ध्या होमा । उवा रो भावा रा पीगळा मोकळ पीमाळा पण द्य गात्रानी र पीर म भाव भरण वाडो कोई कुम्भी नी ह । उटमवार सग दराण्या जेठाण्या द्य न मांमा मणा पार, जक वास्त या रात्र नय । मेख उव रावनी जवला ने वचन दिया क—'है गाव का रो गादारा जाट है, तेरी आवडा र व्याह म भाव भरण रमपण आवले ।'

कतार चालदी, मवा वड माणस, मस्मा गात्र र ऊग न नावड्यो । आपण घान रो छाटया लिया आपर घरा पुग्यो । पण घर अर गाव घरा म भातवाळी बात सफा भूग्यो । तेई दिना पण अचाणकर हा मित्रा र फड सुण्या—'आज आखा बीज र दिन अब माग्नो भरण 71 को वचन है वा सा मगर चाया तो पीका ।' घरा म म रो रकम अधायाडा पण । आमागात्र न क रकम राज्य पीतदार बागार न मर र रमी स्वेणी । पण बेत्या अर याळया भाव भरण वगी मरीज चाकी ।

1 गोव माग्निय म अंक प्रसिद्ध दन क्या ।

दूज राज डोकरो मोट हलमाण सू भाई भतीजा अर बटा पोता समेत भातवी वणर ब्याळ घरा जा पूच्यो। पण वठ कुण जाण ? दूजोडा सगा— परसग्या न मोवळ माण अदव ले जाव, टिकाव अर मनवारा कर, पण इया री कानी वाई आस नी उठाव। छेकड वठ अंक जातीय पंच आखतो हायर मेख न पूछयो— ये कुणजी ? विणरी अडीक लिया ताळ म् ओज अमाहा ?” डोकरो उव न बताव .. “यार इय ब्याळघर मे म्हा गोदारा री अंक छारीटी है। अकरम कतार सू बढता, उव न म्हें इय मोक भात भरण रा बचन दिया, जने पूरण आयो हूं।” वण ही पडूत्तर नी दियो।

इया गोदारा न ठरण वेगी अंक वादा सूनो डमडेर घर बता दिया। माहेर री वेळा जेठाणी अर देराणी र पीराळा परसग्या न तैटा बलावा दिया पण वठला इया न कूड मन ही कवणो भूलग्या। जद मेख रा जाया ठीक वसतसर मैडाळ घर आया। आप वत्ताई, आपरी भण तथा उण र सासराला न अर भाणजी न इतो गणो गामांर रिपियो दियो के दूजोडा दोनू सबधी मिलर ही इणा सू आधो नी दे सक्या। इया कानी सू गाव भर नै लूठी जीमणवार अर कारुवा न काकर दाई रिप्पड बाटीज्या। दूजोडा सगा सरमीजता भाठ बाघली अर इया री हेठी कगवणी चायी। इणा र डेर मागणिघार जाचका न मेल्या तथा वेवखत (माळा फेरण र सम) दान अर बिना रुत रा फळ (मतीरा) माग्न भाडी करण खातर सिखाया। पण भवत मेख सू सारा जाचका मूड मागी चीजा दान दिखणा र रुप मे पाई अर भाडी री जगा आछी कीरत री कवितावा घणाई। व कवितावा गोदारा जाटा र भाटा अर डाढया र मडा ओजू रयात रूप बोलीज। कई कड या मोक मोक लोक मुख ही भणीज—

- 1 मेखा वास वसू पातळ रा, धीर बघावण धीरा
काइन बससो कडा गोखर काइन बससो चीरा
मन देखो बार हाथ रो खेसळा बाधू मोठ मतीरा
- 2 भज जगत भगवान, सुय किम मिट उजासा
सकट तज न इयान वेद त्रिमा घर वासा
हूगर भर न डिग्न मील सायर किम मुक्क
चदण तज न वास, नीर दरियाव न चुक्क
माग्या धोक मिल अवस, मन आणद चित्ता मिट।
माग्या जोध काळू तखत, मेखावत नाही नट ॥¹

मेख भात रो काम पूरयो अर दळबळ सू घरा पूच्यो, जव मू पैत्या ही कोई नरसी रो सावरो मेखो वणर राज्य री रकम खजान मे जमा करवा आयो। रसीद मिली अर मेख र जी री कळी खिली। भक्त जे भरोसो भगवान माथ लूठी जमग्यो। वढ मेख घर रा घषा सू किनारो करत उवाणा पया गळ्वी चरावण रो काम शाल लियो। अंक रोज वन सू आवत उव गऊ भक्त बूड गुवाळ न साप लडग्यो। उवा काया मारग मे ही दे पडी। ठा—लग्या काळू अर आस पास रा गावा सू लोग आया अर मेख री ल्हास नै गाव त्यायर गोदारां र कूब कन दाह सस्कार करयो। तीज दिन भस्मीर फूल तीरया गलें भिजवायर उव चित्ता माथ अंक मोटी छतडी बणाण रो काम पुळायो। सामण भगवान रो मिंदर अर लारें कूब नै सुवारण रो काम पूरयो।

सम वय वहाण वय लाग न ठा ना लाग । करीव सईकडू साल पल्या आसै-पास रा केई वास गाव काळू म आ मित्या । ख्यात बाचनिया माणस जाण के उवं वखत दस मे छाटा गावा वेगी सुख आति जावक नी ही । जागळ देस वासी मध्यकाल माफक साचो गेलो छोट चुक्या । लूट खोस अर अपहरण री घटनावा सू प्रजा भारी पीडित रती । मिनस साल र अंक पस हे मुख सू सोरो सास नी ले सकता । जाणा के बीकाजी आयर वरीडा न काबू कर्या, पण लोक हिडदा सू मो नी माग्यो । कारण— वरया न बीकाजी तो लूट्या पण उणा मे छेय पीडित प्रजा न सुख सू वसावण वेगी लूटणिया डकत न रगड नाखण रो हो । सो बीकानेर रो राज्य ही पूरी तरा जमण-जवण म सौ-वेड-सौ साल वितातो वया । बटक रे बट्टेस, आबरू अर धिगाणी धिगा-परी बटाई र दुखा गावडिया लोय जेन्नाळो घालता यका आपरा पुरिया पटकता ही रवता । इय स्थान सीमा आण सू काळू गाव हो वासःक वधेप वधतो रयो । जाटा रो राज्य गया जकी बान वित्तारी अर देस रो नवो राज्य जमतो छमतो जयो ।

महाराजा सूरतसिंह—लोका री आस्था भगवान भरोस वधा । जमान री नूवी-नूवी बाता सुणती यकी जनता रा सतोल देवी-देवतावा कानी तण्या । भगत मेस री जमत्कारी घटनावा चेत करना काळू र मिनसा री भावना उजळगी । उवा री मायता ठेरी— 'भगवान सनातन सग ताकत देवाळ, सब व्यापक अवे सरबग्य है ।' इय सोचना साल गाव रा लाग परम पिता परमात्मा तथा महामाता काळिकाजी रे मि-दर-मड सार फळ्या-फुल्या । जक दिना अंक दो बार गांव-वास अवलोकण वेगी महाराजा बीकानेर थी सूरतसिंघजी (वि० स० 1822 स० 1885 तथा सन् 1765 स० 1827) अठ पधारिया । काळू गाव र वधाप अर फूटराप वेगी अठ मुखिया लोका न महाराजा सवि भणी सावासी दी अर आप राज्य रो वडो गड घलाण री इग्या प्रगटाई । माताजी (देवी) री बोक् पूजा रो सालोणा बघाण बाण्या, जकी वि० स० 2004-05 ताई राज्य सू सवामद मिलता रयो ।

मुसलमानी राज्य मे हि दवाणा गरब-गुमान अर उद्याव रो हाण-मुकसाण हवयो । आपरी वीरता सू निरास हुयोडा लोका कन दीन बंधु तथा देई-देवतावा रे बळ-बूत अर दया भाव रे सरण जावण र सिवाय दूजो कोई गलो ही नी रयो ।

सूरतसिंघजी आझा राजा हा । देवी-देवतावा माय उवा री पूरी आस्था वणी हुती । कई बिरिमी, बीकानेर राज्य रा सिरदार महाराजा सू समत नी रया, पण उणा आपर आत्मविश्वासी सुभाव मू सग काज अपण आप सुधारया, जकी अंक दो बात मांडू ।

पण्या राव उमरावा र दरबार म बीकानेर राजा रो राजतिलक केवल सेलसर रो चौधरी, गोदारा जाटा रो मुखियो ही करतो । पछ महाराजा सूरतसिंघजी री गादी नसीनी र वखत (वि० स० 1844) सिरदारा मे मत भेद हुग्यो । महाजन अर नादरा र सिवाय उणा रो राजतिलक करण म दूजा सिरदार हगिज राजी नी हुया । ब बीकानेर बड या तक नही । पण सूरतसिंघजी रो राजतिलक गोदार जाट र पाछ महाजन अर भादरा र ठाकरा कर्यो तथा उवा आपरी आकात सू सूरतसिंघजी न राजा वसावण रो जिम्मो आप माय अवस ओढ़ लोहो ।

1. मारवाड रो इतिहास पृ०—182 ले० थी रेऊ

2 राजाजी सू रीसा वळता सिग्दारा जगा जगा उपद्रव बगावणा चालू करा दिया । कठ ही कर बगतीरी रो कारण दाग्या, कठ ही गळन नीया री घाग्या वताई अर जनता न सांगीडी व कायर लूट खाम मद्य करवाग दीनी । केई माचा केई कूडा, पण चारण बध्या अर सूरतसिधजी काफी हाफीज्या । चूरू गो ठिकाणा इय विरोधी काम म सदीव आगीवाळ रयो । केई मोर्ता भादगळो ही भेळो वा रळया । चूरू रो ठा० स्योजीसिध ता इय वड राज्य रो ऱ्हाई सारू मवन 1871 (ई० म० 1815) म ही काम आयो । उव न जापरी सरवजाण जनता री तन मन घन मू पूरा स्य रवती । छेकड चूरू अर भादरा, दोन ठिकाणा खाऊस हुया । इय घन लडाई ग्यात महाराजा सूरतसिधजी न अग्नेजी राज्य स पूगी मदत वेषी पडी । वधन विद्रोह चारण राजनीत ध्यारी सू धिरिया सूरतसिधजी न घणी वार राज्य म मध्यस्थ गाव पाडू म कम्प राखणो पड यो अर सुद आपन रवणो पड यो ।

उव सम काळू र वन वसता गावा म ही मोरळा गुणी कळाकार अर काजबीज मिनता मिलता ।

भासोजी रा वशज आसावत चारण, शिवदानसिध वारठ, गाव नाथुमर म मारफत महाजन र राजा अमरसिधजी न पक्ष मे राखीज्यो । इय कारण शिवदानसिधजी न गाव मोकळेरा अर माळी राठ शिवपुरे बलमाया । अडी वलत काठपील र मोके गाव रावासर मे वसता गुसाई, (जका हम्म झूमियाळी घर्मे) नाथूसर म म्यामी अर काळू रा मुखिया लोग रुपियो पीसो भेळो करण खातर घणी वार राज्य र काम आडा आवता । शिवदानजी रा हुकमसिध उवा रा करणीदान पछे रामदान अर रामदान रा बटा बग्देवमान रा मोकळरा माथ काले ताई इधकार चालता ।

उव सम काळू सू चार कोस र फामले गाव कुविय म वि० म० 1855 म नर सिढायच चारण दयालदास जी वडा जोग अर विद्वान महानुभाव हुया । अग्नेज मरफा सू सधि होया पछ राजपूतान र राजावा न आप आपर राग्या रा इतिहास लिखावण री गरज पडी । जद सूरतसिधजी अर रतनसिधजी दोनवा र भगेन सारू दयालदासजी न यो काम सूप्यो गयो । दयालदासजी पुराणी वमावटिया, बहिषा, साहीफमान जुना कागज पतरा, पट्टा परवाणा इ याद मू समळा मसालो भेळो कर र वटी गन म बीकानेर राज्य मे पुरो इतिहास लिह्यो । वा प्रमाणिक इतिहास ओजू दयालदासजी री म्यात वाज । त्यान र मिवाय "मे दपण" आद अनेक पोथ्या दयालदासजी लिह्यो । ब मव्य करमा सू ऊपर होयर चल्या । सूरतसिधजी रतनसिधजी मरफासिधजी अर हुगरसिधजी महाराजा ताई ब राज रा मरजीदाना म हा । बीकानेर राज्य री तफ मू उवा रा पडपोता आवडदान न गाव कुवियो खापरगर अर वामी रा भोगता देत्या हे ।

चूरू र ठिकाण साथ सकडा उरग लडाई चाली । महाराजा न वेई विरिया दिनमान दिखालणा पड या । अेकवार हरद्वार र नड कयल गाव र अेक पडिन महाराजा न चूरू पत्तह कर लेण मे आसावाद दिया । वो उचन माचो हुया पछ काळू र वन वसतो

गाव राबासर उब पडित न इनायन किया, जको एमीकरण ताणी उब गाव न पडित ब्राह्मण रा वम भांगती ।

बीकानेर महाराजा रो कालू कम्प—बीकानेर राज्य मे भगठा रे उत्पाता रा हो भो वण्या रवता । उब जर कानी सू जावता जर बूह जिल मे बडर लूट खसोट करता । बीकानेर महाराजा सूरतमिधजी वि० स० 1850 मे कालू पधारिया । कालू सू उवा दक्षिण्या र धाव न दाटण बेगी साह डा सरदार ठा० ईसरीसिधजी न अक परवाणो भेज्यो । २५ भावना री लण-लुडी स ही महाराजा साव श्री सूरतमिधजी आपर नाव माथ सूरतगढ सुधार वमायो, पण कालू न उवा कदी हिवड सू हेठ नी उतार्या । इय गाव र गल हो आप तीरथा पधारया अर सवन 1868 मे सपरवार श्री काळिकाजी र दरसणा आया ।

सवन जठारह सौ अडसठ मे

नीतिज्ञ नृप का ध्यान हुआ ।

दवी दसन परिवार महित,

फिर कालू को प्रस्थान हुआ ॥

वि० स० 1885 (मन 1827) मे महाराजा सूरतमिधजी रा देहावसान हुयो । उवा र लार महाराजा श्री रतनसिधजी अग्रेजा र चौबे स जाग राज्य सभालयो । इणा रे नाव गढ समेन रतनगढ बस्या, मोकळा जाछा काम हुया जर पछ महाराजा श्रीसुन्दारसिधजी गादी बिगोपा । मन् 1854 मे सती प्रथा, जीवत समाध जाद माथ राक लागी । वि० स० 1912 (मन् 1955) मे महाराजा श्री सरदारमिधजी सागी गाव कालू र गल हरद्वार जातरा पधार्या । गाव र टाड केला हूठ तम्बू तण्या जर रात वास बिगजण सू जठ ग मुखिया चौधरया द्वारा जोग फरियादी लाग मिलिया । निसहाय अवलावा तवात सामण अमर जरज कर सकी । महाराजा साव मोकळी दाद फरियादा चुणी । इय जुग गढी री परम्परा सरदारसहर अर श्री डूगरगढ बसिया । हमी गाव कालू लूठा गावा री गिणती मे जावण लाग्या अर इय न भाधूना छुटभाई धुप-बारण पि पडया । सुणा गाव सलाया राठाकर, महाराजा बीकानेर र नड नातेला मांग सरदार हा । उवा र लार सैनान नी हो । राज्य रीत सारु उवा रा गाव लालस मे मिलावण बगा राजाजी कई जिना वास्त कालू उवा बाकासा र नाव फर दियो । ब ठाकर बट कालू र गढ जा जम्या ।

गाव मझ गढ, बीच लाभ लामू, च्यारा बूटा बुरज अर चौभीतो साधू । तिरबारा-गुभारा, अचा मेडी माळिया सारा अमीना-हुवाळदारा साह बड्ड खुल्ल जामरा गाव सूरत-सरप जाया । नाच राज रा जाया गया अफसर सिपाही उतरता जर ऊपर ठाकर साव आपरा दपतर राखता । गढ सू अगूण वसतो अक बाणिया रा घर बठ सू पाधरा दीसतो । ठाकर साव बाणन दिनूग अपर टैलणा घूमणा करता । पण सवेर सदा उब घर सू अक लुमाई धूलर सामण उपाची निजर चढती । अक दिन ठाकुर

साथ उवै घर घणी न बुलायर हुक्म दियो के वा आपर घर रा बाग्या दूजी दिस फोर लेव । बाणिय हा भरली अर घरा आग्यो । जद घर वाली भोली, आग मानी नी । बोली—“म्हे म्हारे घर मे बठया क्यू वारणो फोग ? कीर उजाड कग ?” या बात ठाकरा कन पूगगी के बाणिय र घर रा बाग्यो फुर नी । दूज दिन मुधिया वा लुगाइ हायर घर म जावण लागी, ठाकर तां पाध र पडद दणो ब दूज चलाय दी । लुगाइ रा दो डोल हुग्या अर बास म खून रा हावा माचग्यो । पण जोर गड चाग । हुक्म अडूली हुगी । गाव सू ठाकर री मिवायत बीकानेर म्हाराजा मामे वेग हई । म्हाराजा साथ ठाकरा न ओळमा दिया, ठाकर हुक्म अडूली रा रागण जनायो । काळू न चलाय सू उतार र बालस कर लियो ।

कासू बीकानेर राज्यर बालस—गाव बालस हुया अर गठ म मिर्गावर पटवारी तथा हुवालदार सिफाद अठ रवण लाग्या । गाव र नूई भोम आ वसण र बाग उतराई वास री हालत सुख सतोखमयी लगभग लगी ग्यो । अग्नेजा रो राज्य देस म पूरी तरा फैल जाण सात् चोर डाकुवाली चित्ता मफा मिटगी अर कूवा उहोडा र कन आ वसण र पाण पाणी ढावण वाली दूरी री दुधवा कटगी ।

राज्य याव नेम री बत्ताई सू मारा लोग सामण री अक डोर प्रेमाणद रो अनुभव करण लाग्या । नूवो गाव, नूई शिक्षा नूव सईक नूई भावना रो नूवा विगस्ताव हुयो । रेल, डाक तार, डाकघर इत्याद देस मे चालती बघती बाना सू अठ रै लोगा री समस्त, धन अर सेवा-मुधार कानी चालगी । गाव रा ग्यान गौरव अगावू मग सरक लाग्यो । मिदर देवरा, तीरय व्रत, उहोडा कूवा पाप पुण्य ओमर भाबर अर अँडा मेडा आद बघकी मुरजादावा भाष लाग रा मन बघवा लाग्या । जनता जाणगी के काळू बडो गाव है, राजा म्हाराजा तकात अठ मोटा माणस आव । बाणिया बकाल बस अर कीरत काज बसै, तो आपा मग वासि-दगाना न ही हर काम चाव चतराई रै चौखस चलण चालणी चाय । कोड करम जोन जयो, लोकी सूव पास लगी । म्है इय मम न काळू रो पुनरजागरण भानू ।

काळा री काठ माठ, बसत बळी री बलिहारी के उपरोधली काग रा केई झटका लाग्या । सतवाली रा मपीटी दम न सूत नाह्यो । अणचकिय छप्पन अर बोहतर जिता अलेखू दुरभल घमोडा सू धरणी घूब पडी । जनता किरा उठी के—“र ! अणचकिया काळ भळे मत आद म्हारे देस मे ।” भूख र बिल मिनखा गाव र सेजडा न लूग अर छाडा (छाल) बिना कर दिया । पसुवा टीटण गुरबाणिया तकात जीव जत खा लिया । भागी माणमा भग्गर बेवरडे अर तूम्बा र बीजा सू आपरो जीवण निरवा चलायो । पीस अर टक्क (दापइसा) री मजूरी सू भेळा करियोडा रिपिया लोगा री कडया र बाध्योडा रग्या तथा घान घास रा मित्रगत विना मोक्का मिनख घन पसवा समेन भूखा मरता लामा हुग्या । रोटी र आट सट्ट अठ वालक बेचीजग्या । मरता क्या नी करता ?—जाम्पाडा र बटका बोड लिया । मारवाडाळा मऊ मरुत गया अर अठला लोग मिध, पजाव नडा लिया । सतवाई र

राजपूतान रा घणा ही मिनस्र बाळा गुलाम वनायर विदमा भेज्या गया। पण गाव काळू रा माणस बठ ही काळिकाजी री पुरी विरपा सू वदेई नो फॅम्या, अडी बाता बूढा वडेरा मुख मोकळी विरिया म्हा सुणी-सुणाई है।

काळू री भोम पुराणे जमान सू अनेव कामा री जाड जुगत जान, समस्थली रयी है। इय री रत्नगर्भा ममा अनेकू भाणसा ने गांव पाळ, जस रम जीयाळया है। स्याणा तथा भय्या गुण्या, सम्य घीरा अर अपकारी आदमी अठ घणा है। नौकरी दुकानदारी, खेती धीण, बळा कारीगरी तथा विरमाणीप कार, सौवा म अंक हव जडा छटवा लाग है। अ लोग रहोस अर जरडू दोलडा गुणा दीरघजीवी है। ठाकर रा ठाकर अर चाकर रा चाकर। अडे मेड प'र, आठर निकळ जद देखनिया घुपकारी नाखै। जाना अपाना, मेळा डोळा मे काळू रा आपता पातळिया पुरख सदा सू नामून-दार है। परदेस रा वणिग्या महांजन लाग ही अठ रा सग दीदारव चर रा हंस मुख माटयार है। देस आव, ग्राम सेवा ह्याई माज तथा पइसा पावण पाछा कल्या जाव। की सू ही राड झगडो या घर विरोध री बात नी कर। गाव रा बाळा, लामा-लडछ दूधिया जवान मुळकत मूड काळू री स्याम है। ग्यानी, भजनीक अर धर्मा-मा पुरख ही अठ घणा लाधै। काळू बडो अनोखो गाव बिलायत रो बाना, कळकत रो अंक कूणो है। इय रा आखा ठाट निराळा है। अया तो सारा थळी इलाका ही आपरी वत्ताई री आण बाण मे विचित्र है। पण गाव काळू री ममा सुबद अर अलबेनी वितेसता री वर्धेवी वतळ वाननी ता गोवण जोखण तथा धारण करण जोग है।

जको गाव सदिया सू खुसहाल बस, मुख वधाणी बुदरत धार मदीव हरल सागर हीड, घ्यारी धिरिया घबडाव नी, घाडेता भाव र माक ही बिना धूज जूझ। वो खुसहाल गाव खाली आप खातर ही नी रस बस, उणा बनला पाडीसी गावा न ही सुखानद चरसाव जका वापडा रूप अक्कल मन मनोरंजन जावक साधण हीण हव। काई अठ गाव न विबुध उदार, सुर साकार अर व्यवहारादी निवास नी क सका? सुधान वास ॥ माण री उपाधि उव न नी आढा-परा सका? उव र सुहणा मेवा भाबी कामा रा वत्ताई काळ-दुकाळा ही वदे नी घटी, जद के उव माथ भाणसा रो ही नी माकळ जीव जितावरी अमल रो जीवन भार मोटपण रा मार अंक साथ ही अनेक वार आय'र लादीज्या है। जड लडू अर सवा भारकठ गाव बेगी काळू रा लोग अवस क सक क उव रो रचना बास माता काळिका रा खाम, त्रिपा चास वास है जका इय खेतर री सेवा-स्या, खातरी चातरी, खातर ही हुयोडा है, नही ता काळू जडो अंक गाव इसी अलोकी अर उदान भावना हरगज नी वरते सक।

कबाजाणो, केई गावा रा लाग कोरा गरीव होण री हालत म ही सांगोडा सेवाघारा होव। अडा गावडिया माणम हर दम भस्त मन मुस्कराता दीखता रव। इसो लाग जाण अ माटा दूसरा गावा न खुसहाल वणाण री लगन मे है। काळू गाव र आदम्या सू मिलनिया-जुलनिया मिनखा र मन मे काळू बाळा चौखी सीम्य स्याणप अर, भव्य भावनावा रा व्हाळा सा ब्रुव नाख। काळू रा लोग उदात्त माण बोवारी आस

हरेक मिनख माथ वरमावना वग । लोगो ने भरोमो है के भगवान आपण सातर ही आपन मनल अपजयो है । या खुमहाली रा खेस आपरी ओलाद जाणर ईमरानाय आपा नै ही बुहायो है । पूरण बिम रा पून मिनख ही सदानगी नी बणें तो दूजो कोई जीव, आपन रो आसा ही क्यू गम्ब ?

काळू काळिकाजी रा चान मनान । दूर्य गाव बामिया माथ हरदम माता री दया मया बणी रव तथा बूजळा मना मोद छळक । गाव र मिनखा न अवस देवी वरदान मोकळा मिलै । मान, ग्यान, विगमाव अर भगती पूजा इत्याद अनकू अमोल लाभ माता री करमान बुद्धती डग सू गाव काळू म लाध ।

काळू मे मुखिया प्रधा बडी जुम्मेवारी सेती नामी जमी आव ह । जा प्रधा पल्या चौधरी, पक्ष या मुखिया नाव मू फळनी । गाव रा निमखा दुरवठा तथा साधारण जनां न बिसाई आसर गरी छिया गोजी मदत मिलती । गाव र की निमध मामूली मिनख माथ आपता बिपता आ पडनी अ उव रें घरा भेळा होयर आयोडी आपता न आपर माथ ओड लिया करता । गरीब री चिन्ता मिट जावती । आज र बरतार ही बिपता आया दइयाडो मिनम गाव रा मुखिया री मोटी मदत पाव । माटी बत्ताइ या है के काळू रा मुखिया लोग मेवा अर विकास रें कामा जिन् अर म जीवट बाज । वि० स० 2009 अर 2011 म जिल्लो ही नी जैपर अर कळकत्त ताई काळू रो नामून गयोडो है । जकाळा मे जन जीवा री पम्बरिस इत्याद काम ठाई दमक मदीना बराबर चान । काळू रा मुखिया मिनख गाव र चाना कामा म पूरो जोस दिखाठ । बड अफसरा सू मिलणा, मन्था न गाव बलाणा, मडक, बिजली अर शिक्षा बिगसाव सातर लूठी कोसीमा बाता करणी जाण । सग्वब तथा दूजो गाव रो जुम्मेवार आदमी तो गम्ब रो काम बणावण वगी मरकारी कळ मारू बची रकम देवण री इमल आपरी ही अटूट हिम्मत माथ अर आव । दिली बिमवास मू सग कारज सारै । भण्या-गुण्या नौजवान ही बडी उदारता अर सुलभी भावना राखै । आपर मजम आचार सू गावरी साख बघाव । इया री लोहै बरगी ताकत सू गाव र विकास री बेल सुलझ कूँ फळाप । काळू रा मिनख गाव महना-ममा न हमेसा चेत राख । गाव रो सगठण बणाणें सग तानना अक डोर पोइतर गाव र सुख-ग्यान अन कम्ब अर गिबिया पीसा री काठ कमी न मिटाण री चेष्टा राख । अक मू गाव म सुग्ग रा मा सुन साधण अर मग्गता, ब्यापक बघाव पूरण होव । गाव रा चारजमीळ मुखिया चाखा कामो लाग गया है । उव आसा लोग, आख गाव में सजम, सदाचार अक मील मुरजादावा रा ही ठीक पाळण कर करावै । व नागरिका री गळ्या भूला न चटपटी भावनावा सू जावन मिटावण रा पूरा उपाव जावना सोचै-राख । गाव री शिक्षा अर स्वास्थ्य मन्थावा तथा उवा र चारजमीळ सज्जन न भलो सनेग, जमोल मार्ग दरसन देव । उवा र उच्छव मौवा माथ मुखिया रो उपदस भी चालता रव तथा गाव रा लोग ही मदीव या चेत राख के भ्दारी सस्थावा म उच्छव मनाया जा रया है । आपसरी ग मन मुटाव अर धम्ब बाता न सस्थावा रें द्वार कदे नीं

ल्याव । जद हा गाव सचालकी री दीठ जात जळती मसाज्य चिलवती चसे, सग नाज अजळा वण अर सेवाणद जाव । मुखिया, पचा तगा सस्थावा र भाग आख गाव रा लोग झुका चाल । हाय पीड अर अनुशासन म वग । आपरा अगुवा माथ हर काम गूदडा घातया राख । अजळा समाण वरत । वाळू री जनता या माचती धकी के गाव री वडाई हव, आपरा किरतव पाळ ।

हय गाव री या पुराणी रीत है के नूव वसणिय मिनस रा वाळू म पूरी प्रीत पख पाळीजे अर गाव पसर । आसरो टापरा घास फूस अर वामण घाम तकात देहज घामीज । आयाड ने हेत मिमता स वमावण र वसती धम सारू अठ रा लाग साख-पाल, उघार पुधार तथा वटमी लास सदीना सजोग पूर । वगत वटावू र पसुवा न खुल्लो पीछ उव न भारग अर घर ग पत्तो, छाछ जाट रो लाभ लगायर हर तर रो सावण जाग बठाणा अठ रो जाद जुगादी कम है ।

डाई दसक पल्या ताई ता वाळू मे आयोडा अफसरा र हा भाजन रो आछो इतजाम गाव म बयोडो चालना । छव प्रवध न मळवो क्या करता । मळवा गाव रा लगान अदा कियो जावता जद उव री रक्म हा चाखा चान्वा घरा सू छाट र पाती आमी उघा ली जावती । पण अठ जेक सिपाही मू लेयर जिलाधीस तथा मिनिस्टर म्हाराजा ही कोई आमी, उव र खाण पीण रो पक्का इतजाम गाव कानी सू होया करतो । घणी बिरिया आख गाव सू उघाइजतो अर रिपिय री रक्म लार मळव रो आनी तथा टक्को बत्तो लागतो । मोटा मिनला र आण, पधारण माव मोटी मोटी मोठा ही गाव मू होया करती । जावत मळव री जेला पढी इण नीत होवती अर सालीणो एक दूबानदार न ठेको देहजता ।

1 सिपाही, चौकीदार न आधा सर आटा (कणक रा) टक भर (जाध आमी) धी अर दाळ लूण मिरच सधता ।

2 पटवारी मिरदावर मास्टर बल्क इत्याद बलमी लाग न आने भर (छटाक) छाड आध पाव धी दाळ अर बडी रा दा साग आधा सर आटो, लूण मिरच अर वेसुवार ।

3 धाणदार तसीलदार, इ स्पेक्टर, कामदार इत्याद बडा अफसरा न आध पाव (दो छटाक) छाड, आध पाव धी बडी पापड रा साग लूण मिरच रा वेसुवार तथा पावणा रा आधा सर दूध रो ही जावतो होवतो । इया न तोलियो दिया जावतो । दूजा न मूज रा माचा मिलना । धी खरो, माया रो आटो पापड बडी, लूण मिरच घाणा इत्याद हाय रा पीस्थोडा वणायोडा हावता । जून सन 1941 म कवर श्री जसवंतसिंघजी मिनिस्टर ऑफ पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट तत्कालीन ईस्टेट अंतरगड रा सुपरवाइजर वाळू पधारया । बडावा भर भर मणा बंध छीर अर सीरा रघ्या । भास पास रा मोटा 2 ठावर उवा र साय वातचीत वा खाण पीण खातर बुलाया गया । गारबदेशर रा ठाकर कर्तिसिंघजी ही उव मीक उवा साथ रया । रगाईसर खेजडा फोगा गिडगचिय, गुसाईनर, ल्हाटेरा अर सेरपुर रा चौधरी तथा मुखिया

मुजर आया। छनरगढ, लालगढ, विजनगर अर कल्याण सू ही गिरदावर, पटवारी, हवलदार बागज लेयर हाजर होया। पुलिम थानेदान एव सिफाई जावत पोण्या। तसीलदार था दलपतसिंघ उवा रा अनुज लूणकरणमर र रेल्वे स्टेशन माथ ताई रो इ तजाम सभाळया। आसी (फस्ट क्लास रेल्व डिब्बो) बटयो। श्री जेठमलजी बोधर आसी सू उमरताई साने रा डोरो पराया। उवां री माटर सू ही जसवतसिंघ जी काळू पघारया। सठा रो ड्राइवर सरदार सार्लसिंह मय खलासी जठ ही रया। सारा लोगा आछा घूपटा उढाया। पण बबर साहब ता साग फुलका स मारया। सिध्या माम पात्र री कचेडी जम्बर जुडी।

उवा र सम्माण मे लूणकरणसर ताई गल् रा फोग पाडका कटाइया। पाण-पीण मानळा फळ अर रम आया। मेवादि री डाल्या देइजी। साथ दो कामदार श्रीकिसनजी हण अर अमरनाथजी आया। श्री दुर्गादत्त शास्त्रा अर ग्राम बाबा किसनलाल जति र बारै होवण सू लेखक री कसम पैल पोत गाव री तरफ सू मान पत्र लिखर भेंट करयो। गाव मुखिया री अज माथ स्कूल न एग्लो वर्नाक्यूलर बणाण अर अग्रेजी रा मास्टर बघाण रो हुकम बट्यो। भळे ही घणी छूट मेल बकसाई।

31 मार्च सन 1946 म म्हाराज कुमार सा० श्री अमरसिंघजी बहादुर काळू पघार्या। उणा र साम सुपरवाइजर श्री शिवदानसिंघजी (आडसर) ठाकर निहाल सिंघजी सैगर (सज्जरी), अणदसिंहजी (अ० टी० सी०) सुब्रह्मण अक्वार्टेट पुलिस स्टाफ बगरह हा। बना रास्ता साफ हुया सटवा वर्णी गाव री लुगाया वेढला बनावण गीत गावती आइ। गाव म बड्या, तोप री ओप बटूका र घडाका सलामी देइजी। आखा गावा रा लोग नम्रमण करण आया। इयार मोटा दरवाजा बण्या। दमामण्यी गावणी वेगी बलाहजा। श्रीडूगरगढ सू कराम अर मंगतू डोली नै सेठ मुननमलजी गावण न बलाया। सरकारी बटवाजो (सनिक् बड) आया। तम्बू ही साणीज्या। उव दा दिन रया। स्थानीय मणेश ढाढी जापरा कत्यक नाच रक्या। जनता रा सुख दुख सुण्या। अठै र लागा न ओदा छडी अर कडा मित्या। राज पत्र म पढया अर छूट मेल रा नावा छया। नजराणो हुयो अर श्री दुर्गादत्तजी मान पत्र पढिया। लेखक कळायण नाव री आपरी पोथी भेंट करी। जबा माथ मनद अर हजार रुपिया इनाम रा मित्या। चौ० रामरतन नाडू सजाई समेत टोडियो नजराण करयो। उव न सोन रा कडा बलस्या। भाई श्रीगिरधारीलालजी अर गुमानमलजी बोधरा जिसा जवान सरबरा जावत साक उपस्थित हा। नजराण रा दस हजार रुपिया आया। व अमर मिडिल स्कूल र भवन वास्त गाव काळू र मदरस वेगी पाछा प्रदान कर दीहा। दो दिन विराज्या। मोटो मेळो मडयो। गाव रा चौधर्या सठ साहूकारा मिलर चोखो इ तजाम करया। मरस्वती पुस्तकालय म पघार्या अर आपर हाथ भू चोखी सम्पाति लिखायी।

मालब गाव म परापरा सू रोटी है अर उव सारु भाव री इब्जत है। व दूक रो घमोड सी काम सुणीज ता ताव रो लढीड हजार कोम सू कम नी रवे। आयोडां न ठहरण वेगी बगला, जीमण जिनय सारसा भात तथा जठ रा मन मेळू लोगा री सघा भावी सात सात मनुवारा सू मेहमाना र मना न जीत लिया जाव। अठ कोई साधारण

मेहमान अथवा बटाऊ ही आ गाव तो काळू रा लोग रात वास वगी कदेद नी नट । माचो मकान, होको चिलम चाय पाणी अर जीमण मनवार री मनभाई वनगाई गाव री अक्षय अर बघी परम्परा है । राटी बाळ न गोटी, रावडी बाळ न रावडी अर हल बाळ न हलवो तथा योग तुरसाई-त्यागी मित्र । मन्व इणी तगा गाव लोगा री आव भगत आयोडा वेगी वणा रया है । गाव रा भाणकिया भाग कती नी द्विपला । वंग ही मारग वगत बटाळ गाव काळू र रातवाम रीवर मली भणा है—

‘गाव बाळ रा या विगमाव ।

मान भगता रा इषक उम्माव ॥

गाव गोरवा चौडी सडका,

मिन्दरा घडा मय घमसाळा

घन खोजण मे निकळ रडका ।

कूचा मीठ पाणी हाळा ।

मीठा बघी वतावण लाग

दवी दरम करण मय हरल,

लाघ मागी ठाव

॥१॥

आग्या कुल उमाव

॥२॥

मिनखापो अजळता आव

आवा बोई आधी मोप ।

आधमाण आतिथ्य बटावू,

र व न सूखो साव ॥३॥

काळी माता तथा उणी भाव काळू गाव दोनू पूजण जोग देव अर देव धाम है । इय गाव रा लोग भावधानी समेत मचेत भीट साधणा राख । विमसाव र राज, कुणाव र राज अर लूठी नेताई र नाज, आपसगी रा अठ विरोध आवक ना वध । प्रकरती, पाणी, घर बेता, घीणा पापा रा मुख तो अठळा न मित्र, जका वासीदा न सदीव मिल घोररती । पण इया र मार्ग साहित्य, सांस्कृतिक मनोरञ्जन आधुनिक वाग कवाड री आवत रा मुख साधण मग चीज वस्ता री सूचाई अर उवा री उपरन्धि उपभोग ही गाव व्यवस्था साख बाव्य हाथ र खेल बरोबर मुन्म होवण लाग्या है । काळू गाव नगर बाट री ज्वाला रो सुमचीतणा जीतणो धाम है । अठ र मिनखा गो जत-मत दूजा रै पड गत अड्डा पय वपाव । इय कारण काळू रा लोग सोच विचार र जेक मत वेगी म हो आपरो फायदो अर अज्ञापो समय ।

कालू स उठर गयोडा जाट—काळू म जाटा रा गुवाडा कदेद गागडा मन्का म मागीडा छाकोटा नावजाणक हा । ञ्णिया घाती री कोठा सी कोर काटयाडा चौरावा छोडर जाटा रा याग याग ग्योर वास वसता । पण होळ होळ, हाळ जुग वरतार, घणवरा जाट ऊंचाळो घातर पजाव कानी जावता रया । मळोट मटी बगल फाजलक अर मारै पजाव मे आप आपरी सुविधा साख छीदा पनळा जा वमर पमरग्या । जातरा-मुनाकिरो म मिलता ऊंच नाई रा अडा लोग कदे वदे म्त्रार मूड सू काळू गाव रो नाव सुणर चौकता हो जाव अर उताव के ‘म्हे ही काळू रा हा ।’ मोकळ हरल कोड मुळवता वरै—‘म्हारा बाप दादा घन जादा वणण खानर अठीन आ वड या अर काळका री किरपा मू वण ही गया ।’ पजाव र वडा वग नवगरारा मे म्हेस्त वन् कुप री कदर

जोग "काळू रा सा जाणी" बंदत चाल । बठली वई चोखी-तकडी पारट्या रा रहोस घणी विरिया जीवा-नारा सू काळिकाजी री घोव-पूज आपरी बापोती काळू आवे अर गळ वटळी पिस्तोळा, ओपरी-आपरी आदता अठे रे वडूम्बाळा रोही रे रवाम्या आदम्या सू मिल जुल । फळत अ पजाबी पंराणवाळा आपरे नांव काळू अर नूब वास पजाव दोना जगा रे इतिहास री मोटी वडया वण्या आव जाव ।

वरतारै रो धन

भेड—घणा मिनळा मे विसेस मिनल री वदर नी हवें जद भेडा भेडी भेड वहीज । भेड, ऊन री लाग साल म तीन लाग (वत्तर) देव अर बाजे-बाजे दो बार ग्या जावें तथा एक ही नही, दा दा, तीन तीन वच्चा साग जाम । भेड रे वधेप सू गावा रा वई लाग याल हो रया है । भेडा री ऊन अलग ताई रा मुक्का म ऊच दामा सू बिक । मीला चाळ, ऊनी गाभा बणीजे । भेड री दूध ग्रिस्ट पदारथ बडो कीमिया हव । टूटेडी हाडी, साजण घाळी पीड अर लाही जम्योड स्थान माघ आदमी मसळ मागता फिरै । छोटी बाली म द्या न छरटिया कव । भेडा चाल नामजादीक ह । एक भेड भ्या कर ता लार सगळी भेडा ही भ्या भ्या कर । एक भेड कुएँ म पड, लार सारी पड ज्याव, आ भेडा चाल बाज । भेड इसो सूघो जिनावर के भलाई कोई मार नाखो मासद्वयो, पण चू तक नी करै, सिसकारो ही कानी नाख । निरडाल हूज्यावें अर दुसमण पर आरया काढ बाकर । "हार ही नहीं द्ये न लूकडी गदडो ही फोग लार ले बैठ अर रोकर मार लेव । पण गरळार गुवाळिये ताई ठा नी धाले ।

लाग भेड र जाम्योडा न उरणिवा, उरणती कव । उरणिवा बडा होयर मीडा बाज । मीडा न बोपारी खोस खाव अर ऊँवो मोल देयर ले जाव । मीठा विकें जद अँवड (रेवड) वाळा मालदार वण ज्याव । भेड री सिर सफा मूनी पण केई मीठा रे सीग ऊग आव । मीठा री बिकरी माल भर चालती रेव है क्यूके भेड एक साल मे सात-सात ताई वच्चा दे दव अर अँवड री वेगी वधेपा हवें । पण इय "हान धन न चरावणा-पाळणा डाडा दोरा गिणाज । पुराण जमाने म भेड चरावण री अमीणी लागती—'मेरी किसी भेडा चरायाडी थोडी है ।' 'भळे क मन भेडा ल द्यो ।'

गायाळा गिलग कर, नस्याळा माणी माणी

अँवड र गुवाळिय र, नळा-नळी म पाणी

म्हार अठ घोळी काळी, वगडकावरी, लामा कानाळी, लापड, कानाळी अर नरम ऊन वाळा, पीळी ऊन वाळी मावळी भेडा मिल । इयाँ रा तोल 25 किला सू 35 किलो ताई हव । मगरा नस्ल वाळी भेडा ही अठ पाळीज । इण री ऊन सोहणी अर आष्टी मानीज । नाली नस्ल री भेडा री ऊन घणी चोक्णी पीळी हल्दी री भात हव । मोटा रसा नीवळ जवा स्यू चोखी चाखी चीजा वण । इय वरतार मे भेडा राखणिवा रा घर बडा नामूनदार वण रया है । आजकल भेडाँ री बमेघा पंद्रा है । इया री रखाळी रा दपतर सुल रया है । भेडाँ रे ताण किमाण सरव सुख भोग । भेड, हर बखत भ्या भ्या बोलती रव । जद टावर गळी बगता प्रश्न कर वावर—भेड घणी र के लाग ? भेड बाल—'मा ।'

बकरी—बकरी भेड री साधेली महेली ह । भेड अर बकरिया माव रव उछर
पण वदेही आपमरी म लठ भिड नही । बडे प्रेम मू एव दूजी री कतार म मभाव स्पू
चाल । इया दोनवा र समूह बाग न ही अठ अवेड नाव मू पुकारे ।

अवेड वधे अपार भेड बकर्या मिल भागी
व्याज्जाव दो बार घरम म आया बारी
भेडा उतर ऊन बणावा गाभा मारा
दोवड लोवडियाह, वामळा और लुकांग
भाखळ कामळ भळे पटुडा घरा घणी टूट तणी
बकर्या बाळा वण वारा अण घनसू पदा घणी

पुराण जमान म राजा री आछी नकडी व्यवस्था माथ सेर उकरी एव घाट
पाणी पीवण री घाता चालती ।

भेड न लरडी वव जिया ही बकरी न लाय छयाळी वव । छयाळी खटीक
मू ही घोज । 'छयाळी बाली भम बुढाळी ।' मतलब जवान बकरी री दूध घणा
सुवादीलो अर भी मिलयोडा हव, बया ही बूनी भस रो दूध ताकतघर बाज । पण
महात्मा गांधी बकरी रो दूध पीवता । एव साधू आपरी छोटी ऊमर म अवेड बरायाडो
हुतो । एव दिन उव गेलै बगन न एव घर म वगनिया बोलता मुणीज्या । जन् माधु बकरी
रो दूध पीवण री जी मे करी । उव अवेड घाल घर जायर दूध माग्यो । घर धिराणी
बोली—'म्हार धोणो कोनी (गाय भस नही है) दूध ब्यारो घाला ? माथ उव री
कौणी समझकर बोल्हो—'माई अदर मिणमिण, मिणमिण क्या करता ह ।' धिराणी
कियो 'बकरी, बकरिया है । साधू बोल्हो—'बकरी का दूध ही पिता दे ।' जद उव
लुगाई माधु न बोडो दूध घालर आघडो करयो ।

बकरी दूरदूर रा मुल्ता ताई मिले । बकरी न कई लाग टाट भी वव ।
टाट दूध देव ही पण मीगणी ग्लायर देव ।' दुयै वास्त बेसहूर आदमी न अठ टाट
वैव । भेडा री सतान उरनिया उरणता हव जर बकरी रा बकरिया बगडी कहीज ।
मीडा री तराई बकरिया रा ही कोड हव । कसाई लोग चार मीणा र उकरिया न ही
हाथ घाल लैव । जद बरत चाल— बकर री मा कित्ता पावर टाट । याने छेकड
तो उवै न कटणी ही पड । इय कारण मुसलमाना ग परव हा उकरीद कहीज ।
कई घरमात्मा लोग बरग र वाना म बाळी (छन्ना) घाटर अमर (माड) कर वैव ।
जद उवा न कई चौड नी मार सक । अडा अमर जर बोवी बकरा बजारा म दाणी
करता फिर । इया न कोई घेरण नी आव अर लुगाई टावर म्यू तो हट ही नही ।
गुलथण बघाया केई बा वो करता फिर अर खुरला घर । पुराण समय म सरदारसहर
रा भसाळी सठ दो मोटा बकरा री आपर छोटा टाबरा खातर बग्धी बणाया राखता ।
सुब माम उवा रा हाळी बाळदी इय उकरा री बग्धी म टाबरा न बढायर बाजार मे
धूमावण ले जाया करता । सर ग लोग बकरा मू मजायोडी बग्धी न डागळा चडर
देखता ।

खेड़े-रपट

प्रथम प्रकरण

(हिन्दी विभाग)

खेड़ा आवास और जन जीवन

देवी शक्ति के नाम ग्राम स्थापना- भारतवर्ष में आदि अनादि महामहिम मातेश्वरी जगदम्बा की महिमा का वर्णन प्राचीनकाल से प्रचलित है। पृथ्वी पर मानव मात्र इस वदिव परम्परा का आतन्त्रि एव अकात्म्य विश्वास के साथ पाठ पूजन कर अनन्तमग्न होता बना आया है। यन्त्री की जनता शक्ति के प्रति विशेष सजग तथा निष्ठावान रही है। अतः इस म्बान की कालिका का क्षेत्र मानकर ही कालू गाँव का सदीना घरोपा है। शक्ति एव शक्तितवान अभिन्न हैं। वह ब्रह्मा की महासरस्वती और विष्णु की महा लक्ष्मी तथा शिव की शक्ति मन्त्राली है, जो तम से लोक रचना, पालना एव सहार में नाथ रहती है।

भारतीय विद्वानों ने शक्तितमान की नानाविध शक्तियाँ का ध्यान अनुमधान कर के उनके सरल एव असावह अनेक रूपों की व्याख्या की है। वे शक्तियाँ के रूप, नाम आयुध, वाहन और आभूषण आदि विशेष अभिप्रायो सहित निर्धारित हैं। अतः शक्ति सम्बन्धी सब पौराणिक कथाएँ भी बड़ी मनोहारी हैं और उनमें मूढ़ तथा भी दर्शनीय हैं ? जिन्हें देख मुक्तकर यहाँ के लोग प्रभावित हुए हैं।

हमारा राजस्थान बीरा का प्रदेश है। कूर बीर तो शक्ति के आश्रय ही पलन है। इसलिए यहाँ (कालू) की प्रजा देवी-पूजा के लिए बीकानेर राज्य में देशनोकादि से प्रथम, अद्वितीय है। देवी को यहाँ माता बाद से संबोधित किया जाता है। लोग अपने घर पर त्रिशूल या सिद्धर से त्रिशूल का चित्र बनाकर शक्ति शस्त्र की पूजा करते हैं। दीपक जलाते हैं और अगाध पर धी हासकर जोन करवाते हैं। शुक्ल पक्ष की अष्टमी नवमी को भोग के लिए लपसी और तथा हलुवा बनाकर चढ़ाते हैं। इस तरह प्राचीन परम्परानुसार यहाँ दोनों नवरात्रों के समय प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में मानुषिकता का उमाह अपार हिमारे लेता रहता है जो कालिका के नाम पर प्राचीन ग्राम स्थापना का पक्का प्रमाण है।

गाव का पुरातन महत्व—कालू पौराणिक गाव, महाभारत काल से इसका गौरवपूर्ण सम्बन्ध है। समय के साथ साथ जिस तरह से क्रियाएँ और परिवर्तन होत गये, उसी प्रकार प्रत्येक राजशाही के समय में कालू ने भी अपने सठने चढ़ने के महत्व

1. बीरवा-पाण्डुवा जुद्ध रचायो, अधविच कालू की काली ।
ज्वालामाई ओ, अधविच कालू की काली ।
(देवी भागवत सबद्ध—लोक प्रचलित छंद)

को नहीं छोया। पुरान इतिहास लेखकों ने राजा बादशाहा, उद्भट यादवा और दाही-श्रीमती गामती के सहारा नगरों को अपन ग्रामों में स्थान दिए। जन गामाण्य के त्याग बलिदान और नीति चतुरार्द्र व आदर्श गुणों का गांव का व कदापि नहीं अपना सके। जमाना बदला, गांवों में रहने वाले साधारण नामों की भा रहानियों निरा जाने लगा। कि तु वास्तव में गांव का गामोनिगमन न मिना विस्मयजनक बात है। यह वभी ढाणी वभी ग्राम, वभी गांव व नाम अपनी धरती पर बारम्बार बूझा व इधर-उधर बसता रहा है। गांव धूमकरा एक जीवटगर इसका नामा गामा की जनक विव दितियों मिलती हैं। लगभग दो सौ वर्ष पूर्व कुछ गवितगाला गांवों ने वनगा गांव व गाम में गाम वाली बेह उत्तरादी गांवों मुदत एक विस्मृत गांव यहाँ ला बसाया। नव से यह गांव अपनी तरहटी में उत्तरादि तरबकी मृद विवमिन हाता रहा है। इसलिए गारा प्रमाणिक यन्त्रात आगे लिखा है।

भारतीय गांवों की नाम परम्परा में बालू—नगरों और गांवों का नामन-गात्मक वलेवर विभिन्न विषयों में मयद हाना है। इसलिए ग्राम नाम की परम्परा का जान लेना चाहिए। यह नामकरण परिपाटी वस्तुतः प्राकृतिक गुणों उपकारों अनुप्य ग्रंथों दक्षताओं आदि नाम तथ्य के कारण प्राचीनकाल में चमकी आई है जो अपनी नाम विशिष्टता व निम्न मय्य एक जमा पाई जाती है। गांव निवास की नीति परम्परा के माय यह नाम नीति, एक प्रकार से अपना नाम रखकर गांव बसा लेने में बड़ा सामर्थ्य-वान होती है। इसी मुर सामर्थ्य में बालू कालिका देवी व गाम पर बसा (स्थापित) हुआ घट्ट पुराता गांव है।¹ गिवपुरी गणेगढ हनुमानगढ रामगढ सम्मगढ गोमा-सर, काडमदशर, कालिकाग प्रभृति की तरह भारतीय गांवों का दवगाम परम्पराका म

1. बालू गांव स्थापित हान के सन तथा सबत् नहीं, प्राचीन उल्लेख मिलत हैं।

इसकी प्राचीनता के समस्त यहाँ के अय वस्व अर्वाचीन हैं। जैसे—

प्रथम—बीकानेर गवत् 1545 में एक पुरानी बस्ती के स्थान पर बीका जी ने अपने नाम से बसाया था।

द्वितीय—चूल् सवत् 1620 में बूहड चीधरी ने अपने नाम पर बसाया।

तृतीय—राजगढ जबत् 1821 में महाराजा गजमिह ने अपने पुत्र राजसिंह के नाम बसाया।

चतुर्थ—मूरतगढ जबत् 1856 में महा० मूरतसिंह ने गढल नाम के गांव का अपने नाम बसाया।

पंचम—तनगढ सन् 1887 ई० में अपने पुत्र के नाम महा० मूरतसिंह ने बसाया।

षष्ठम—सरदारगढ सवत् 1888 में भोजा अलवाना का नाम सरदारगढ रखा गया।

सप्तम—सरदारगढ सवत् 1896 में राजदेवर ढाणी के स्थान पर महा० सरदारसिंह के नाम बसा।

अष्टम—श्री डूंगरगढ सवत् 1938 में महाराजा डूंगरसिंह ने बास रूपालमर और मास्का बास के मध्य बसाया।

यातू एक प्रसिद्ध कस्बा है। देवनाया के निवास और नाम बाने ग्राम यहाँ बहुत बड़ी सम्पदा में उपलब्ध रहत है। ऐसे अन्य विषयों पर भी ग्राम और नगर निवासित हैं जिन के नाम नीचे लिखे जा रहे हैं—

प्राकृतिक धोर पशुआ सम्बन्धी ग्राम नाम—माणकसर पवतसर गडगचियो, सेजरा, फागा गहिडावाली ममदसर हस्तिनापुर, सिंहस्थल नाहरसर टीटियासर फतरियामर आदि नाम हैं।

मनुष्यों के नामों पर भी बहुत से नगर ग्राम समेत हैं जम—जयपुर, उदयपुर, अजुनसर, बीकानर, सुरतगढ रतनगढ सरदारगहर ग्गगट, गजमिहपुर, छत्रगढ, शेखसर और शेखपुरा आदि हैं।

गावों के नामों में खटरस—चारी लूणकरणसर, गारडो मिठटियो।

गावा के नामों में रग—रानूमर घोळिया नीरगदसर, घोलपुर देगरदेगर, हरियासर, कालासर लालमेशर सालगढ आदि।

महिलाओं के नामों पर गाव—येतडी रिडी खानडी गिणी।

गोश्र या जाति वाले ग्राम नाम—रावतसर बाभूवाली डाणी, बामनवाली, पडिनावाली, थोरियाली बस्ती नायाली डाणी बास जोगियान भादवाला चव, जावडा चानी आदि।

धातुओं के नाम ग्राम—चानी रूपालसर साहो, मोनियासर, कचनपुर।

कीर्ति नाम ग्राम—कीतासर जेतासर और विजय नगर।

तोल नाप के नाम—चिगा नापासर तोलियासर आदि।

सख्या वाले नाम ग्राम—टाणी पाचेरी, छगसर, सातसेरा, जी० बी० मात, नूबो।

साथ बोले जाने वाले समुक्त दो गांव नाम—बुगिया बलाचियो। गमडो-जोधार। सूरजडो अणेणऊ। राजेरी छानरी (धो कालावत)। बानी बरमिहसर। शोनाणा भायना। कूपणियो बरासर। मारियो मूजासर (नोया)।

समुक्त बोले जाने वाले तीन गांव नाम—नाऊ मडाऊ सिदटा (चाराडी)। मारा लियी कानामर।

अग्निवाचक ग्राम नाम—उवालापुर तजरासर आदि।

यहाँ गावा के एक नाम के आस पास बसने अनेक वाम होते हैं। जैसे रुपिये के सिमरना हमरा, राजरा आदि बारह वाम हैं। भडाण में, कदम के वाम हैं और खूर जिन में दूदपाटा व कुदपाटा के कई वाम हैं। उदगसर मेजरा और भादामर के दान वाम हैं।

प्राचीन समय में बालू गाव के आस पास बसते चार पाच वामों में से यह भी एक छोटा सा गांव बास था। येर वाला बालू यहाँ आकर मिला, तब से यह विस्तृत गांव बालू बना आन पड़ता है।

ऐतिहासिक एवं भौगोलिक बालू—बालू—'लूनवरनार सहमील का मुनिया,' 'मुनि मायता का भायार'—ऐसे अनेक विशेषणों से इसे देखा-सुना जाता है। तथ्य यह है कि इसका बालू नाम पदार्थ की सनाटा से पहले ही बालिका पूजकों की जुबान पर सिंहादिला गया था। यह गाव हाल की घिराणी (स्वामिनी) जादम्या

कालिका माता के इसी ताल स्थित मंदिर के इद गिद अपनी सदिया में बसता रहा यही क्या ? सारे देश में देवी की मायता बड़ी प्राचीन है ।¹

इस गांव पर शासक भी कई रह हैं। गांव के चतुर एव निर्भीक व्यक्तियों के कारण ही गांव की तरह भोगते (ठाकुर) भी बदलत रह हैं। इस गांव के वासिद लोग अ माय को कभी भी सहन करने वाले नहीं थे। पुरान समय में सावजनिक सविधान का उल्लंघन यानि बुरे कार्यों का दंड देना युगधर्म माना जाता था। वे किसी ठाकुर के अवगुणों को जब कभी देखते तो दल बल सहित उस पर हमला कर देते थे तथा गांव खाली कर निकलते (ग्राम त्यागन) के आत्मविश्वास पर बीकानेर महाराजाध्याय स इस ठिकान को दूसरों के नाम चढ़वा लेते। इस तरह गांव सम्य-असम्य जागीरदारा के नाम चढ़ता उतरता रहा है। इसी बात का कालू वासियों को अपनी चेनना एव जागति का आज तक पूरा गव है, जो मायता के लिए उचित प्रमाण है।

यह घोरो और तालों वाला ग्राम है। घरो-बाड़ों से लगन दूर दूर तक के घोर और पास पड़ोस के ताल सरोवर, कालू की प्राकृतिक कला दिखाते दिखाई देते हैं। शेष स्थान समतल, पाल, खान खदेड़े और सड़क खभा (विद्युत व फोन) सुशीभित हैं। घास के मैदान, खेत और झाड़ों में सवध वनस्पति वभव बिलसित तथा तीना मौसम स्वास्थ्य-प्रद। जंगल में विभिन्न जानवर एव पक्षरू पाये जाते हैं। गर्मियों में टोली के उड़ चलने वाले रैताले प्रवाह से यहाँ पर प्रतिवध घरा का भरा पूरा नवीनीकरण हो जाता है, जिससे फसल की उपज एव वृद्धि में आनंद की लहर दौड़ आती है। कालू के मोठ, मूंग तिल और ग्वार के घान जयपुर जाधपुर ही नहीं बसकता बम्बई तक जान हैं। यह रम्य, सजीव एव सुंदर ग्राम है।

परम्परित सीमा क्षेत्र—ब्रिगट का प्रकाश आगत को सतत उज्ज्वलता प्रदान करता हुआ, प्राचीन अनुभूतियाँ व सुदृढ तथ्या से भविष्य का महल बनाता चलता है। उसी परम्परा लाक में हमारा गांव अपने विशिष्ट प्रदेश राजस्थान की मान मर्यादा तथा ललित काय कलापी को आश्रय प्रथम देन वाला विमल विर्यात "कालिका का खेडा" काल रहा है। प्राचीन सस्कृति एव सभ्यता का जड़निम स्वरूप को यहाँ वर्तमान में भी भली भाँति देखा जा सकता है। राजस्थान का मानव कीर्ति परम्परा की रक्षा कालू ने हर समय तन मन धन से की है।

कालू बीकानेर राज्य की लूनकरनसर तहसील का महिमार्जित गांव है। यह 28°—24 अक्षांश तथा 73°—56 देशांतर की स्थिति संयुक्त स्थित है। गर्मी में तापमान 113° से 87 फ़ारनहीट तथा सर्दी में 77 से 41° फ़ारनहीट रहता है। गर्मी-सर्दी में वर्षा नहीं के बराबर तथा बरसात में 0° से 2 तक हा जाती है जो कभी कभी पूरे वर्ष में 7° से 8 तक पहुँच जाती है।²

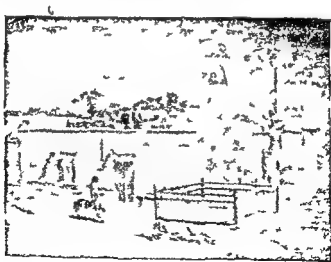
उत्तर रेलवे की बीकानेर भटिण्डा लाइन के मध्य लूनकरनसर स्टेशन से बीस

- 1 सिंह बाहिनी चार भुजा एव अष्ट भुजावाली काली, दुर्गा का वणन महा भारत में भी मिलता है। दृष्टव्य—विराट अ० 6
- 2 निदेशालय राजस्थान राज्य अनिलेखागार बीकानेर के पत्र मय्या गांव राज—अभि/81/165 दिनांक 16 1 82 के संज्ञय से।

किलामाटर दूर देवी के इस धाम वानू का अब सडक जाती है। यहाँ पर श्री कालिकाजी की स्वयम्भू प्रतिमा और दशनीय मंदिर है। बीकानेर महाराजाजी न सदैव इस मंदिर का अपन राज्यकाय से व्यवस्थित बनाये रखा। यहाँ चन्द्र प्रभु के मंदिर में कई प्राचीन जन प्रतिमाएँ हैं। य धातुमयी प्रतिमाएँ वि० स० 1155, 1495 (वर्ष फात्सुन बदा 9), स० 1513 (वर्ष बगाप, सुदी 10 बुधवार) स० 1563 (वर्ष माह सुदी 15) और स० 1820 (वर्ष भाष सुदी 4 अक चारे) की हैं। वि० स० 1565 वसाल वदी 7 और उसके बाद के दादा गुरु आदि के तीन चार चरण हैं। लादा साहब के चरण (वि० स० 1865) वाले लेख पर इस गाव की "कालपुरे" लिखा है। महा वि० स० 1853 का एक सिवचक्र है। उस पर लिखा है— स० 1853 वर्ष बगाप मासे शुक्ल पक्षे तिथी 6 श्री सिवचक्र यन प्रतिष्ठित ।"

भानीनाथ जी की जगह, वासी के करणीमंदिर और रामस्नहिया की जगरी में भी पुरानी प्रतिमाएँ एवं चरण मिलते हैं जिन पर अपने अपने उल्लेख उत्कीर्ण हैं। कुछ प्रतिमाएँ और पुरातन हस्तलिखित ग्रंथ अब प्राप्त नहीं हैं।

कालू के पास गाव गारबदेशर में भी प्राचीन देवधाम है जहाँ 16वीं शताब्दी में मुरलीधर के मंदिर की चमत्कारिक मूर्ति का विनाश वगण प्रचलित है।¹ कल्याण के भवताक में उसकी बहुत सी चमत्कारिक बातें प्रकाशित हुई हैं। यहाँ ग्यारहवाँ एवं बारहवीं शताब्दी की केवल दो दशनीय सती देवलिमाँ भी है। महत हरिराम जी के नख खुदे पगलिए उनकी साल (भकान) में प्रतिष्ठित हैं। कालू के ऐसे काकड़ सीमाड़ी गावों में "कुविमा", वासी तथा लूनकरनसर आदि ऐतिहासिक स्थान हैं जहाँ अब भी कई मंदिर हैं और यात्री लोग दशनाथ पहुँचते हैं। गारबदेशर के भक्त कवि ठाकुर



श्री मुरलीधर जी का मंदिर

1 गारबदेशर में श्री मुरलीधर जी के मंदिर की स्थापना वि० स० 1484 गुरुपतिवार की है।

विश्वामित्रजी वहाँ से वाग्भट्टार की आपत्तियाँ म श्री मुरलीधर का नाम ले लेकर आध्यात्मिक प्राण पान में वेजोड विरपात हो गये हैं। गाव गारवदेश और करणीसर की मनी माताओं की भी इस काल क्षेत्र में बड़ी मायनाएँ रही हैं। यद्यपि सती माताओं के साथ और उनकी देवलियाँ अथ म्याना पर ले जाई जा चुकी हैं तथापि गारवदेश के उपाध्य की जन भूतियाँ कालू उपाध्य में बतमान हैं। एक वधा दृढ़ भूति वही मुरलीधर के मंदिर में अभी पूजित है।

कालू गाव और उसकी सीमाएँ—कालू के उत्तर में तीन गाव—नाथवाणा विमनामर, राजपुरिया, उत्तर पूर्व में दो गाव—गजासर करणीसर उत्तर पश्चिम में लूनकरनसर कालवाम, पश्चिम में जाटमर, दक्षिण पूर्व में राखासर दक्षिण पश्चिम में बीमासर पूर्व में गारवदेश कुविया और नायूसर है। पश्चिम में लारंग व सह जरासर की सीमाएँ मिलती हैं। नाथा की ढाणी उत्तर में और भोनालाराम की ढाणी पश्चिमात्तर में हैं। यह क्षेत्र 'मटाण' के दक्षिण में लगता है। इसलिए चार तहसीला (गीकानर, लूनकरनसर सरदारशहर और श्रीहरगढ) की सीमाओं के घेर में घिरी कालू की मध्य स्थित हदबन्दी है।

कालू का निवास क्षेत्र और रकबा—कालू का वर्तमान निवास क्षेत्र हजार बीघा जमीन के लगभग मगर मदान में है। अर्थात् राजस्व विभाग के कागजी तथा सत्य आकटा में कालू का आबादी क्षेत्र 962 बीघे 2 बिस्वा (तीनों मामूठ बीघे दो बिस्वा) में अंकित है। यह भूमि मध्य समतल तथा चारा बार डमके टीरों हैं। इसमें कूबो जाहडा और आबादी लायक विस्तृत भूमि हान के कारण निवासियों का बहुत से सुख उपलब्ध है। वर्तमान समय में कालू का कुल रकबा 52656 बीघे 8 बिस्वा है। गांव के विस्तृत समीप पहले घामी और भानीपुरा दो गाव बसते थे, जब वे उजड़ गए वह पटे हैं। बासी की जमीन का कुल रकबा 7697 बीघा 11 बिस्वा है और भानीपुरा का जमीन का कुल रकबा 5741 बीघा 9 बिस्वा है। ये दोनों रकब अपने अपने स्थानों पर अलग हैं पर कालू की सीमा पर बिद्यमान हैं। अतः दोनों रकबा का भाग कालू के निवासियों ही जीतने जीतने तथा पशु चरान के काम में लेते हैं। उन गावों की जमीनों का अधिगारी व्यवस्था को असाद हुई है और पटवारी काल के आधारोंन सम्मिलित रूप में इस गांव के उपयोग में आती हैं।

कालू की जमीन—कालू गाव व खेती की यह कुल जमीन 52656(1)3 पक्क बीघा में विभक्त रह है। नब्बे बीघों में यह जमान पट्टा 83921) अर्थात् कृषाजनों के रूप में कालू की तीन बावनी गेरी (जमीन) बहलाती था। बागा और भानीपुरा गांवों की जमीन मितवर जब 13439) बीघा पक्की जमीन है गा कालू व साथ मितर 66095) पक्के बीघे आठ बिस्वा में गाव का काम आती हैं। इस गाव के भेतों का यह जमीन 'घनी' की जमीन कहलाती है। पूरा यह विस्तृत जमीन प्रायः पशुओं व चारागाह हेतु उपयोगी एवं लाभदायक था, वर्तमान में इसका अधिकांश भाग जात व काम जान लगा है। इसका उपजाऊ रूप में भी अधिक मूल्य है। यह दूर एवं समीपना के निवास में

गांव और गहर दाना की शुष्क सुविधाओं से भरपूर है। अब नहर आन की निवृत्तता से मभावना से कालू की मेती वाला जमीन बहुत कीमती हो गई है। पंजाब की तरफ से मुम्तय्या गिराव व अन्य जाति व लोग यहाँ आकर खेता की बहुत सी जमीन खरीद रहे हैं तथा कालू व किसान अपने खेत प्रचुर विपणन से छुटकारा पा रहे हैं। य खेत गहर व लोग नहर का जान का सम्मान में कालू के किसानों में खरीद कर रखते हैं और खेत वाला का खेत के लिए मौज देते हैं। पहले गांव से दो किमीटर दूर तक हा खेत पर मरत थे। इससे जान वाले खेत खेता में खेत खेत नहीं दिया जात। आज खेत व जान पर खेत वालों का जुमाना देना पड़ता था। मगर अब तो गांव दान के ऊँचे पता तक खेत पर जान है, क्योंकि बहुत से मन खेत खुद है।

कालू की गोबर भूमि—गाँव में प्रायः गाँव की भूमि हुआ करती है। राजधानी में तो गाँव ही नहीं मगरा तब में बागगाह छोटे हुए हैं। चूने बीजानर मरगाह रतनगढ़ और श्री डूंगरगढ़ महाजन आदि नगरा एवं बस्ती में गाँव के चरन हनु बड़े उँचे जंगल भीमा नियत हैं। नीचे में नायूसर तक बड़े बड़े चरन के लिए चार खेत ही मही नियत है। किंतु कालू में नहीं। विक्रम संवत् 2018 में कालू की पिछला पमाइश हुई थी। बड़े दुख की बात है कि उस पमाइश में कालू व गाँव चरन के अधिकार सदा के लिए छीन लिए गये। वर्षों से नियत किए गये गाँव व बागगाह का लाभवाता व निपय सुविधा में महाजन लाया के खेता में परिवर्तित करना दिया। यह गाँव की भूमि की जमीन गाँव से उत्तर की ओर हजारों बीघा की लादा में, जो बल में पहले (गाँव और बले के मध्य) नायवाणे के गस्ते में खर राजपुर करणीसर और ठासर आदि गाँव व रास्ते पर एक सीध पकितबद्ध प्रतिनियुक्त थी। अब वहाँ चौभाते वाला के लातगारी खेत हैं और गाँव मारी मारी फिरती हुई भूली प्यासी पाटक में ली जाती है।

कालू के ढीबे या घोरे—कालू गाँव बीजानेर राज्य में रतनगढ़ हान के कारण यहाँ का क्षेत्र रेतीला है। दूरदूर तक रत व ढीब दिखाई देते हैं। ये 20 फुट में लेकर अस्सी गेज फुट तक ऊँचे होते हैं। गर्मी के दिनों में तेज आँधी चलने पर ये गस्ती स्थान से हटकर दूसरे स्थान पर चल जाते हैं। इन रेतीले भाग में दिन में गर्मी और रात में ठंड अधिक हो जाती है। गर्मी में यहाँ बहुत धुपक सर्दी पड़ती है। य ढीबे बसा श्रुतु को भास से हरे भर बन जाते हैं। कालू में बहुत से दोबा के अपन नाम हैं जिनके नाम में गाँव लिखे हैं जो कि यहाँ के लोक गीता में गाये जाते हैं।

कालू के ताल तालाब—बस तो कालू गाँव के चारा आर अनक ताल और तालाब है। मगर पुराने जमान से जाटा के चार बासा के अपने अपने तालाब नियत हैं—जस ज गणा सूजगणा व नाणा खतलाई बीजानो, बाघाणियो, आसाणियो आदि अनक तालाब हैं। इन में ज गणा तालाब बड़ा पक्का और गाँव के समीप है। इसका ताल भी बहुत लम्बा और चौड़ा है। हल्की सी वर्षा से तालाब में बहुत जल इकट्ठा हो जाता है। इसलिए ज गणा तालाब का कालू में बड़ा महत्व है। प्राचीन भेदभाव के कारण नीचे से यह वित्तुल कच्चा रखा गया है। सन् 1972 में गाँव वाला ने इसे पक्का बनाया। तब पूर्व व घाट का पट्टिया सवर्णा के लिए और उतरादा घाट पशुओं और हरिजना के लिए बच्चा रखा। पश्चिम में दीवार बनाकर छोड़ दी। आज

जानर वि० म० 1977 में उनराद घाट का पत्थर जड़ान पक्का बनवा दिया और एक महामोज का आयोजन रखा। वि० म० 1995 में खेजडा पोसा मालमर, भाजरासर आदि सरदारशहर तहसील के बहुत स गावा के साथ अकान री बजह से प्रवास पर घन पशु लेकर कालू आय। यहाँ घास और खेत अच्छे थे। मगर कालू घाला न उनस अनाज तालाब पर पानी पीन की पी (शु क) उगाह (बमूल कर) ली। यह बाय गर के गिरदावर की खेमचद द्वारा हुआ। गिरगावर न उम रकम से तत्काल पश्चिमी घाट य नाल के रगवाल की एक साल भी बना दी। पहले ताल तालाबा की आयना (मयादा) हुआ कर्गी थी पर अब वे नहीं रही। घंटे ता समय समय पर ये तालाब खुदने रह हैं पर नु मुर्जाणो अनाणा, खतलाद की वि० स० 1936 के फाल्गुन (सन् 1980 माघ) के अकाल राहत काय (काम बं उदने अनाज याजना) में खुदाई हुई हैं। इस काय में गदी तलाइ और नाले का भी पूरा काय हा चुरा है। लागी का काम क बदले अनाज में काफी अनाज मिला।

कालू के खान खदेडे—रतोली मतह के नीचे मफे कच्चा पत्थर। चूने का पत्थर और कई तरह की मिट्टियाँ हैं। वे खान बनाने या लीपने पातन के काम आती हैं। यहाँ के ताला की घानव (धोली मिट्टी) चूने की कमी के माफिक सफेद ह और बेज की (कमठाने की) मिट्टी मोटे चूने की मात करती है। यह बतन बनाने के भी काम आती है। नेथक के खेत की मिट्टी से प्रभावित भारतीय भू-खानिक संस्था ने पोटाग निकालन के लिए खुदाई आरम्भ कर रखी है। अब बहुत से खान-खदेडा पर लोग न खातेदारी कच्चे कर लिए हैं। लाल मिट्टी के भी ऐसे बहुत से खेत हैं।

कालू और नहर—रेल के ऐसे बिनाल बीरान प्रदेश में जलामाव की मिटान का काम देनी खीर है।¹ इसलिए नहर अब तक हम गाव में नहीं आ सकी। कि तु जब ता गीघ्र आने की समावना बन रही है। क्योंकि राजस्थान नहर के राबतमर निजट हैट पर अब गावा के साथ कालू का बारी रूप जलप्रदाय नाला है, जिस पर कालू ग्राम का नाम अंकित है। इस लिख इरेमेनि भी नजदीक है। कालू का काकड से हम बिरोमीटर दूर, मायवाणा गाव में इसका पानी खग रहा है। अब एक इन समय कालू में पानी का जा जाना कल्पना से पर का बात नहीं रनी है और न ही पत्थर पर फूल लगने की वान है। राजस्थान नहर की विनाल परियोजना के लिए विश्व बैंक ने काफी ऋण दिया है, जिसमें रेल के बड़े बड टीका का समनरीकरण होगा तथा इस क्षेत्र के विकास व मुधार में भारी मदद मिलेगा। नहर के निकट आ जाने से नौ गाव कालू दिना दिन अपना विकास करता है और अब मामाग अरनी प्राचीन गरिमा का स्थायी करने के लिए पूरा सक्रिय है।

कालू के निकट भोल—कालू से बीस बिनामीटर उत्तर पश्चिम की ओर रेगिस्थानी क्षेत्र में खार पानी की नील है जिसमें पहले नमक निकलता था। लूनकरणसर के नमक पर लगाय गया म ययुगोन कर से बीकानेर राज्य का खूब आमदनी होती थी। इसमें बनजारे और दलात सहायक रहते। तत्कालीन महाराजा व्यापारियों को

1 पक्का उत्तम बिस्म का खाल पत्थर (अधात्रीय) गाव दुलभरा खारी (त० लूनकरणसर) में प्रसिद्ध हैं।

2 राजस्थान नहर उपनिवेश क्षेत्र में अलाटमर कानून पृ० 12

सुविधाएँ दिये रखते थे। अब नमक निर्माण का काम असें से उद है तथा कंपनी की ओर से बहुत अधिक मात्रा में अन्नक जमा—जिप्सम निवृत्त है।

कालू का जलवायु—कालू का जलवायु गरम व शुष्क है¹ किंतु स्वास्थ्य के लिए सुफीद है। वर्षा या अभाव, गर्मियां म गर्मी सद्या म अधिक सर्दी ही इसका प्रमाण है। यहाँ न जन स्वास्थ्य और मन को देमन से ही दम बात का पता पड़ जाता है कि कालू के निवासियों चरित्रवान परिश्रमी एवं बड़े कायकुशल होते आये हैं। वे अपनी भाषा, वेग भूषा, रीति रिवाज धार्मिक विश्वासा व मस्तिष्क की समानता के कारण एक होकर रहने रहे हैं। अब एक ही राज व्यवस्था में वय जान के कारण साधन और सुविधाओं के बड़े जमान से एन दूसरे के अधिक नजदीक हो गये हैं।

कालू में कुएँ—कुएँ चार हैं। ये झाई सौ फुट या इससे ज्यादा गहरे हैं। मगर अब मशीन से चलने के कारण पन्द्रह वर्षों से गहराई का प्रभाव नहीं रहा है। अनिश्चित वर्षा और शुष्क जलवायु का हात हुए भी कालू में भूमिगत जल के अच्छे स्रोत हैं और इस बात की प्रकट करत हैं कि कालू में भूमिगत जलापलम्बि गया के मदान माफिक मिलगत है। पाववा कूआ स्वामीजी का था लेकिन पानी खारा। महत विष्णुदासजी न मन ने अपने कुएँ के बोटे बरडों के पुराने पत्थर चूने से बना पाठशाला की चहार दिवारी बनवा दी है। माघजनिक होने हुए भी पहले इन सब कूआ पर अमानवीय भेद भावाधिकार चलने लगे थे। भगी सत्ती और उनका स्तर की जातियों की पशुओं के साथ खेती में पानी पीना पड़ता था, जिसमें कुत्ते तैरने रहते। थोड़ी चमार, बलाई, रेगर, मावी जाति जातियाँ की अलग से घड़ोइया बनी हुई होती। मुस्लमानों की भी चारा कुआँ पर अलग घड़ोइया थी। फिर भी इन घड़ोइया के नालों में कुएँ बढने वाले लोग हर वक़्त कपड़ा ठूस रखते थे। अच्छता की बड़ी बड़ा भिन्नते चलती रहती कि— 'कोई नाला खोलकर हम पानी भरवा दें।' मगर झाई दयालु व्यक्ति पहुँच जाता, तब ये लाग पानी भर सकते, नहीं तो अच्छतो की भिन्नतो पर सदैव सबकों की गालियाँ बरमती रहती। पड़े भरने की एक तरकीब होती थी, माघाण व्यक्ति के वग की बात नहीं। लोगों के घना में पानी भरने वाले स्त्री पुरुष कुएँ में पानी प्राप्त करने में बड़े माहिज थे। ऐस लाग या अच्छे-अच्छे घर में पूरा सम्मान रहता। य लोग दोघड़ से भी पानी होने और दीड दीड कर कुएँ का चक्कर जान रहने। भीड होने या ओड पड़ने पर अधिकतर रात को पानी लाया जाता था। बड़े अवसरों पर पखासों में भी पानी पहुँचाया जाता था। ऊँचा पर पानी की चौखंड भगी जाती और बोग में आठ आठ घड़े पानी साथ भर कर लादते थे।

गर्मियाँ के दिनों में कुएँ रात दिन चलने रहने। पानी की कमी पड़ने पर इनमें से कोणी (रेत) निकालते थे। लाव या कोस अंदर पड़ जाते तब रात को भी आदमी को अन्न जाकर लाव को निकालना पड़ता था। इसलिए कूआ का काम बड़े खतर का होता था। 'कूआ भूवा बहनाता यान कूआ भीत का घर की कहावत बोली जाती।

भूमि और पदार्थ—यहाँ की भूमि की वनावट रेतीली मरुभूमि का एक भाग है। इसलिए पानी की नमी को रोकने वाले महीन मिट्टी के कण कालू की धरती में

1 मई जून में तब लूएँ चलती हैं और गाम की प्राय काली पीली आंधियाँ (रेतीने सूफान) आ जाया करता हैं।

नहीं है, मोट कण है। फाग और ठूठिये निकल जाने से चरती भूमि रहती है तथा खरीफ की एक फसल वर्षा के सहारे देती है। ग्राम की भूमि में मोठ बाजरा तथा ग्वार की पदावार अधिक मात्रा में होती है और मूंग चने तथा तिल की फसल भी अच्छी हो जाया करती है। आजकल शदिया में कभी कभी तारामींग भी बीजा जाता है। किंतु अनावष्टि वर्षा की कमी, टिड्डी फाका, वातरा, हवा आदि के अनेक भीषण प्रकोप प्रभाव यहाँ की फसल पर सदा से पड़ते आये हैं। जिनके कारण जनता को अनेक आर्थिक कष्ट भुगतने पड़ते हैं। प्राचीनकाल में पट भरत ही समस्या के साथ ठिकान की रकम भी एक प्रश्नात्मक रूप बना जाया करती थी। ऐसे समय गांव के नवयुवक सदा ॥ आगे रहते आये हैं। वे पड़ते से चगड़ कर लगान माफ आदि काय करवाते।

कालू और राशिकल—भारतीय ज्योतिष पद्धति के अनुसार सब नामा की राशियाँ होती हैं। राशियाँ बारह हैं और प्रत्येक नाम के प्रथम अक्षर से ही उस नाम की अपनी राशि जानी जाती है। कालू के पहले अक्षर 'क' में आ की मात्रा मिलकर 'का' बनता है। का, की, कू, घ ड छ के को, हु की मियुन राशि होती है। इस राशि का स्वामी ग्रह बुध है और यह नाम—देह, देवी निवास कहलाता है, क्योंकि मियुन राशि का देवता लक्ष्मी है। कालू नाम जो मियुन राशि में पड़ता है अपनी दैविक नीति से विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने की क्षमता रखता है। इसकी जीवनी बड़ी जीवटदार एवं विचित्र होती है। मानसिक दृष्टि से यह नाम उन्नत होता है। इस नाम का प्रारम्भिक जीवन निवास अत्यंत परिश्रमी एवं कठोर स्थिति वाला होता है, किंतु क्रमशः लम्बे जीवन में यह अपनी दशा सुधार लेने में समय पाता है। यह नाम जन्म जात नेता है जो नेतृत्व प्राप्त एवं भाग्यप्रिय भी होता है। इस वर्ष (ई० 1983) कालू ग्राम में बिराधाभास का प्रभुत्व रहेगा। अपने ही लोग काय में बाधक होंगे। वर्ष का उत्तरार्ध अर्थात् जून से दिसम्बर अधिक ठीक होगा।

कालू और वास—गांव कालू के निकट चार बेह मिलते हैं।¹ य कालू के चार पृथक् पृथक् वास थे। एक विदासर नाम से ही यहाँ गांव बसता था जो भाटा जागी की विश्वसनीय बहियाँ देखकर माना गया है। यहाँ "चन्द्रप्रभु" के जैन मंदिर में स 1865 के लेख ब्रजन में गांव का नाम "कालूपुर" उल्लेख है। वर्तमान गांव की गदी तलहट्टी वाले स्थान पर पहले एवं प्राचीन बसती हुई ढाणी बताई जाती है। वह कभी की गांव कालू के नवम निवास हेतु यही पर समावस्थित हो चुकी है। तभी से यह देवी के ताल की ओर पसर कर गौरववान गांव बना है तथा उत्तरादी बेह बाया बड़ा वास आकर इसमें मिला है। शेष अवशेष यही बतलाते हैं कि गाँव बहुत पुराना है।

कालू के पुराने बड़े करतब—कालू में पहले कई प्रकार की होड़ें (शर्तें) हुआ करती थी। य विविध विवाद स्वरूप चलती रहती। निकटस्थानीय क्षेत्र के लिए इन होड़ों में कालू के लोग प्रमुख माने जाते थे। कुछ विशेष होड़ें (यहाँ की) दूर तक प्रसिद्ध थीं। जस कूओ पर तलमुट्टी गांव मोरजा (चलाना), ढाल बजाना अनेकें छाटी लादना, ऊँच का

1 पहला, अब भूदान की खेड़ी है, उसी से यह वर्तमान गांव बड़ा है। दूसरा ससियों का क्षेत्र है—(बग्नीसर के सम्ये पर)। सूरजाने तालाब में पश्चिम में देवल के पास वाला बेह तीसरा है। बेह—बेह। उजड़ा हुआ पुराना गांव।

मुह दूसरी आर फेरना भाला (बगीच दो डाई मन वा पत्थर एक हाथ स ऊपर उठाना) देना, ऊँट दोढाकर आगे निकालना, कुदती बरना, बजन उठाना डेढ सेर तक घी या लड्डू पीखा जाना, नारियल फेंकना, खोपरा की चिटकी बरना खेती के काय करना अगुनी पकड़ना पजेंचा छुड़ाना, आढी आढना घट फाँना, घडे उठाना टोरे भारना जेल पाना, हिमाव पूछना और हल बगना आदि अनेक प्रकार की शतें हुआ करती थी। लोग बरातो म जान और चार चार गोज वहाँ ठहरते। तब भी वहाँ इस तरह की शतें चलाया करते थे। आजकल इस तरह की शतें चुनाव के समय द्वार जीत को लेकर हजारों रूपये की खाई बमाई होती है। इस काय को 'इ मोदा बहने हैं और कतिपय लोग जूना।

मकान तथा भवन—पहले कालू म दूहे पड़ुवे छान, चापडे मेनी, चौबारे, साल तिबारा, माडे दरबाजे कच्चे और लिये पुने मकान होने थे। अब पुरानी कला कारीगरी की कीरणीदार रंगीन हथेलिया बड़ी सुंदर तथा दर्शनीय हैं। वर्तमान समय में आधुनिक टाइप के भवन भी निर्मित होन लग हैं।

नब्बे साल पहले एक दो हवेलियों को छोड़कर कालू म अय सुंदर भवन आर मस्याएँ नहीं थी। अब अच्छे अच्छे मकानों और भवनों का सभ्या बहुत अधिक है। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजकीय प्राथमिक विद्यालय तथा राजकीय उच्च प्राथमिक कया विद्यालय के भवन।

हॉस्पिटल भवन—राजकीय चिकित्सा एवं स्वास्थ्य केंद्र, ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केंद्र तथा ग्रामीण परिवार कल्याण केंद्र के भवन, साइबेरी भवन, विप्रामालय भवन दुग्ध उत्पादन सहकारी समिति भवन, कालू ग्राम सहकारी समिति भवन, महिला मंडल भवन, अतिथि भवन, डाकघर भवन, ग्राम पंचायत भवन, माताजी के मंदिर का दुग दरवाजा, हरिरामजी का मंदिर, हनुमानजी का मंदिर मस्जिद भवन, पशु अस्पताल भवन तथा पचास से ऊपर की मस्या में क्वाटर्स घोष बाजार म बहुतसी सुंदर दुकानों की इमारतें, विद्युतीकरण के कुएँ और उनके मकान भी बन चुके हैं। कालू पहले खुले मदान (टाड़ा) के रूप में इधर उधर बिकरा हुआ बसता था। न चौटी सड़कें थी तथा न ही सफाई। अब एक राइन से दोनों ओर सुंदर मनोहर दुकानें बनवा दी गई हैं तथा स्वच्छता का भी पूरा ध्यान रखा जाता है। कमबख्त दुकाना और उपयुक्त रास्तों के कारण गांव बाजार की शोभा में चार चांद लग रहे हैं। यहां पर आकाश वाक्ती अट्टालिकाआ, सम्थाआ और रमणीक रास्तों के बन जाने से मन्मथ कालू ने नवजीवन प्राप्ति कर लिया है। इसलिए पचास साल पहले का कोई बड़ व्यक्ति आकर अपने इस गांव को देख ले तो नौबतका हो जाय।

मुख्य सस्थाओं में १० उ० मा० विद्यालय तथा छात्रालय हैं जिनसे तहसील भर में शिक्षा का प्रसार हुआ है और जिनके लिए गांव न काफी रुपये खर्च किये हैं। गांव में पंचायत भी सदा से समृद्ध रही है। सरपंच पद पर स्व० श्री गिरधारीलाल शंकर चि० गोपालचंद दुदानी और प० सोहनलाल सारस्वत प्रमति पदासीन रहे हैं। जि हने समय समय पर लावा रूपये की संपत्ति उक्त सस्थाओं के भवन, निर्माण हेतु 'यय करके अपनी दक्ष एवं उदात्त भावनाओं का पूरा परिचय दिया है।

सड़कें—कस्बा कालू म अभी (मई 1979 जून तक) एक सड़क पूरी बनी है जा

लूनकरनसर स सरदारसहर बाया कालू हीकर जाती है। इसको शीघ्र ही राष्ट्रीय हाइवे रोड¹ बनाया जायगा, क्योंकि इससे श्री गगनगर और पाकिस्तान की सामा से भारत की राजधानी दिल्ली तक का सीधा एव सुविधाजनक मार्ग बनता है। लूनकरनसर से श्री डूंगरगढ़ की, और धीकानगर स कालू तक की सड़क बनने की योजनाएँ भी चल रही हैं। गांव में यह श्री डूंगरगढ़ सड़क (अप्रोचरोड) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तक संबंधित है। वि० सं० 2036 माघ फाल्गुन (सन 1980 परवर) स जा यहां सड़क निर्माण कार्य चल रहा है, उसका संबंध सीधा राज्य की राजधानी जयपुर तक रहेगा। यह श्री गगनगर स बाया कालू होती हुई श्री डूंगरगढ़ सुजानगढ़ सीकर रीगस और जयपुर से सीधा संबंध बनायगी। यह कालू से गांव स्लोडेरा तक बन गई है।

कालू के वृक्ष—इस गांव की भूमि पर खेजडा (धमी), जाल, नीम, पीपल, झाड़ियाँ² बबूल फरास, रोहिडा, गूदी बूमटे³ आदि मुख्य वृक्ष हैं। आजकल नूतन पड़ भी लगाये जाते हैं। जैसे मुत्तय सफेदा इत्यादि। इस गांव में सबसे पहला सफेदा (यूक्लिप्टस) लेखक के घर लगाया गया है।

कालू में इन वृक्षों को पहले के लोग काटत नहीं थे। यदि कोई लुक छिपकर काट लेता तो पत्ता लगने पर वह लकड़ी पट्टे के गड़ में मगवा लेते और काटने वाले आदमी को सजा और जुर्माना दाना से दण्डित करते। इसलिए उस समय लोक में कहावत प्रचलित थी—

“आक न जेलो बाडिये, नीम न धालो घाव।

रोहिडे न बाडण वाला, चारा दरया में हुसी ‘याव’।”

परंतु कालू के बीच बाजार का रूपक तीन केलें (पांच सौ बय लगभग से लहलाते पुराने गमी वृक्ष) जो प्राचीन समय से लेकर आज तक अपनी छाया—आश्रय⁴ ले आये गए मनुष्यों एव पशुओं की सेवा करती आ रही थी। जिनके नीचे कई बार राजा-महाराजाओं के तम्बू लग चुनाव हुए बड़ी बड़ा पचायतें बठी थीं और बाहर स आई हुई बराता के सेहला (तीरण बानन से पहली रश्म) में अनक बार महाशया की घोष वदनाएँ होती आई थी। उनका छाया में साधारण जनता फलती फूलती रहती और हर साल चन्न महीने में बड़े तकड़े हीडा (झूनी) पर कालू के तमाम आबाल बढजन हाडते थे। कभी कदा याचकों द्वारा घोषरियों के गुड्डे भा कला पर बसे थे। दिनांक 27 8 78 को पचायत द्वारा मिस्त्री महान के बनाये विश्रामालय के नक्शे के अनुसार इनकी कटाई आरम्भ कर दी गई। केलों को बड़ई लोग बड़े बड़े कस्सी कुहाड़े लेकर खुदाई कर काटने लगे। केलें रोई और अपनी चरमराहट से हाय तोबा करने लगी कि ‘दक्क गति!’ तत्काल प्राकृतिक प्रकोप हो गया और तूफान आ गया। तूफान आ गया का गांव भर में शोर मच गया। यह गांव की उत्तर दिशा से अचानक उठकर भयानक आधी पानी के साथ आया, चारों

1 राष्ट्रीय राजमार्ग।

2 झाड़ियों की कटीली डालिया से गावों के लगभग घरों की बाड़ें बनाते हैं।

3 बूमटा और बावसी से गाद उपजता है, जो पीप्टिक पदार्थ होता है। प्रसव के समय यहाँ की महिलाओं को गाद के लड्डू बनाकर खिलाये जाते हैं।

आर चार चार, पांच पांच किलोमीटर के क्षेत्र में तुरंत उत्पात मचान लगा। गांव और जंगल के सैकड़ों खेजड़े तथा नीम, पीपल, झाड़ियों एवं जाल के तकड़े पेड़ इत्यादि टूट पड़े। तीन और फूस की छतें, झोपड़ियाँ और सारी छानडिया प्रथम आक्रमण के आते ही उलट गईं। कतिपय बाड़ों का पता ही नहीं लगा। तूफान आ गया। तूफान आ गया। हल्ला मच गया। दूसरे दिन दिनांक 28 8 78 को प्रायः पचासत की बाँछें मिल गईं। गांव के ताला और खेतों में लकड़ी निलामी की बाड़ सी बह निकली। पांच सौत हजार की रकम एकत्रित हो गई। साल के अंत में बची खुची लकड़ी से खुशी-खुशी घर में आये साधुआ के धूँके सुशोभित करवा दिये गए। बूड़ी केला की हाथ से तूफान आ गया। तूफान आ गया। कालू पर उसी साल (म० 2036) में अकाल का भयावना प्रकोप आ गया।

दिनांक 16-11-78 से 26 11 78 तक ओसवालों के नाहरे का बड़ा खेजड़ा भी काट दिया गया। क्योंकि आगामी दिसम्बर को गांव कालू में आषाढ श्री तुलसी का आगमन होने वाला था, इसलिए नाहरे के सरसकों को बड़ा पड़ाव बनाना जरूरी हो गया था। लेकिन फिर तो गलियों के पुराने खेजड़े भी कटाने के आयोजन बन गये। बचारा ऊभली गाल (सीपी मुरय गली) वाला बड़ खेजड़ा भी काट दिया गया और टकी के पास वाला बड़कणा घोषा मोटा खेजड़ा भी कटवा दिया गया। 'भाई जनता का गासन चलता है। गांधी का बख रोपण सूत्र सिसकता आहें भर रहा था।'

गांव कालू में मुख्य मुख्य पेड़ों के नाम भी बोले जाते हैं, जो पुस्तक के राजस्थानी वाल तृतीय अध्याय (रेखाचित्र) में लिखे गए हैं। इन पवित्रता के लेखक ने तो इन पेड़ों आदि पर "दस-देव" नाम से एक पुस्तक भी लिखी है, उससे पेड़ा सबधी नमन का एक नमूना दृष्टव्य है—

नमो देवता नीम, खमा खेजड़ला फाया।

पाडल, लटक जुहार, जान पा लागण जोया॥

कूबो वें दुणा वार, जो'ड न सात मलामा।

धीर खपेड धोक खानरा है जी जामा॥

नामा कामा काया वणी, धाम पुजाप दस बडा।

बलिहारी धारी भलाई मरु भाणस राखो लडा॥

कालू के पेड़ों के फल—भारत के अन्य भागों में पतनड शुरू होता है, हमारे गांव कालू में वसंत की बहार आती है। चारा आर खेजड़े पील तपते धोरा का हरे-भरे कर देते हैं। इनके फल का सागरी कहते हैं। सागरी स पक्कर खोखा¹—बनता है जिसे बालक चाब में खाते हैं। सागरी का साग और करिया के साथ अचार बड़ा स्वादिष्ट होता है। यह स्वास कास वाले रागी के लिए बड़ा हितकर बताया जाता है। जब लाग सागरियों के साग में एक प्रकार का अमाच गन्धित बताते हैं—

1 जकात धान वाले खेजड़े पहले ही कट गये थे, जो रामसिंह के मकान की जगह थे। से (आकाश)—जड। (जिसकी जड़ें आकाश से पानी खींचता है।)

2 (DRY Fruits)

सा सागरिया माग, हुबं बिग्माण बमाऊ
 सा सागरिया साग, वण है वीर जुझाऊ
 सागरिया र साग, सती सिग्मोट सुरार्ण
 सा सागरिया माग, नरा पर पीन पिछाणा

बेर की भाडिया—कालू के वेता में पाले (झाड़िया) की सदा से बहुतायत है। इसी की जडा का रागजडी मतीरा मोठा हाता है और उसकी शराव भी बनाई जाती है। कातिक के महीने में लाल पोल रंग के टटटे मीठे वर बिशेषकर बच्चों के मन को मोह लेते हैं। बच्चे भाडिया की जालियों में लगे लक्ष्मण बेरा को खूट चुग कर खाते हैं। विद्यालय तन के बच्चे उरी के लिए सेत जाते हैं और मतीरे राकड़ी, सिट्टे मोठेड़ी तथा बेर सबेर तक बेर खाकर पिक्कि (गोठ) का आनंद लेते हैं। अब तो बेर दूर दूर तक जान लगे हैं। अंग स्थानों में इसके छिलके का चूण, भीठी मिच के नाम से विक्रय होता है।

जालोटिये—जाल कालू का बडा हरा भरा वन है। इन पर सुगन्ध गाम पक्षिया का मेला ना लगता है और उनकी चहचहाट सुनने लायक होती है। इस फल को पीलू कहते हैं। ये पीलूडे यहाँ रसपुंज कहलाते हैं। ये रसगुस्ता के लघु रूप होते हैं। वक्ष के मोती माणक, नगीनी की भांति सफेद और हरे जालोटियों की बहार बच्चों को ही नहीं बूढ़ों तक का मन ललचा देती है। ये लघु अगूर बड़े रमदार और स्वादिष्ट होते हैं। इसलिए बालक तो पड़ की छोटी तक खट जाते हैं। ये सब बर्दों के फल होते हैं।

गूदिये—गूदिये गूदी वक्ष के सखनी फल होते हैं। ये पक्वान् बूदिया (नुकता) की तरह गोठ दाने के रूप में दिखाई देते हैं। पर खाने में बड़े रसदार और विपचिपे होते हैं। इनकी फसल होती के जस-पास परती है। ये लघु फल पौष्टिक हात है।

डोलू—डोलू पाचन और मीठ होते हैं। यह कर नाम के झाड़ीमुमा पेड़ पर लगते हैं। हरे गुनारी रंग के फल होते हैं। बेर के माफिक छोटे फलों का साग अचार और उससे थोड़ा बडा (आलू बुखारे जितना) होन पर बच्चा के खेन का फल बन जाता है।

निम्बोली—निम्बोली दाग स्वरूप नीम वक्ष का फल सावन के महीने में पकता है और उडा मोठा तथा रमदार हो जाता है। कालू में इस बालक पान हैं और बाखियाए गीत भी गाता है— नीमा निम्बोली पाके मावजिया रद आसी ए माय। औरतें निम्बोली के गोठों से काजल बनाती हैं। इसकी मजरी दन्ती रायने रीर छाछिन के छोक में काम आती है।

फोगला—फोग के फोगले (मजरी) से तोकले (गिड़े) या वाजरी के आटे के भाप में पकाये मटके) बनते हैं जो घन में चूरने पर बडा मिष्ठान होता है। फोगल के रायत को कालू के लाग विशेष प्रकार का त्का खट्टा खाद्य मानत हुए प्यार से स्वाकार कर

खाते हैं। चत क महीने में फागो पर फागला लगता है। तब उन पर भवरे और मक्खिया गुजारन लगते हैं। फोग का जड से काटना रेगिस्तान निवासिया के अहित में है। किंतु वनमान में ठूडिय निकालन की प्रथा बालू में बहुत चल गई है जा वन विकास में भारी बाधक है।

कालू के कुदरती पौधे—यहां की भूमि में खीप, आक¹, घतूरा, अरड, हरमल² आसगध, मुरायली, फोग, सरकन, सिणियाँ, अश्वगधा, बूई मरहवे, मकाय, तुलसी एवं महुदी आदि छोटे पौधे होते हैं। वर्षा होने पर कुल्हेक में घास भी उग आती है। किसान जालो के घरा में बहुत सी जगहों पर इनका उपयोग होता है। आक, खीप और सिणिया के रेशा से रस्ती बनाते हैं, जिनसे बड़ी सुदर-सुदर साटें बनाई जाती है। कतिपय ये पौधे दवा-स्वरूप काम में आते हैं। मेहुदी और मरहवे के अपने रंग-सुगंध के अलग गुण होते हैं तथा तुलसी ताप तप मिटाने में काम देती है। जंगल के ताली में 'जलमोष' खोदकर बच्चे खाते हैं।

यहां के जंगल में प्रायुर्वेदिक औषधियाँ—कालू में विविध प्रकार के अनाजा एवं साग-सब्जियों के सिवाय आयुर्वेदिक औषधिया भी उत्पन्न होती हैं, जिनके मात्र नाम दिये जा रहे हैं—अरणा या अरणी, अरड, आक और आसगध, इन्द्रायण फल, उदगण चंदेरी कर्पूरगधा, कुरड गाखर, चिडघणियों (सहस्रदानी), जवासी या घमासी ताल-मलाणा तुलसी घतूरी, नागरमोषो, निम्ब, प्रसारिणी (खिपाली) फूभी (खु भी), बूर (रोहिपतृण), भफोड, भागरो, भू रीगणी, मरहवो, महावला, रतनजोत रोहिड रा फूल, लालरू, सपगधा, सखपुष्पी (धातफूलियो), शिवलगी आदि। (पूरा वनन पीछे राजस्थानी विभाग में दिया है।)

कालू के डामले खेत की डाम तो आस पास के गावा तक में जाती है। स० 2035 माघ महीने में होने वाले 27 कुडीय वन के लिए पड़िता द्वारा सब टामकाय इसी डाम से सपन किए गये थे।

कालू में घास—कालू गांव का भूमि में भुगट, मुरट, लापडो वामरिया, बेकरियो, घठील, सेवण, बूर उचाम, मडूसी आदि घास, वर्षा होने पर मुख्य रूप से उग जाते हैं। घामण, झीटियोघास तथा बरू के बूटे ही बड़ जगह पाये जाते हैं। खाते समय भस के गले में मुरझाये हुए बरू के पत्ते चिपक जाते हैं ता वह मर भी जाती है। ल्होरडो, ल्हूठियो तथा हिरणचव्वो आदि शरद ऋतु के घास होने है। राजस्थान के आदमी और जानवर प्राकृतिक ढंग से घास पर निर्भर हैं।

- 1 इससे पत्ते भक कर (गम करके) छाक ले जाते समय सत्री और दही-दूध के छोट बतना पर बापते हैं। आक के दूध स चमड़ा भी साफ किया जाता है। 12 बने (दिन) के बाद पीडा पर लगान स रामबाण का चमत्कार करता है।
- 2 हरमल का पौधा कम 'रततचाप' में काम देता है। इससे बीज वृमिनासक हात हैं और दमा, गठिया, पीलिया जुडी, भूतअवराध निवारणादि में उपयोगी होत हैं। बीकानेर, जामसर, धीरेरा लूनकरनसर, गगानगर पाली-वगा आदि स्थानों में यह जहाँ पानी इकट्ठा होता है, बहुतायत से पाया जाता है।

पालतू पशु और उनका ज्ञान—कालू गाव में गाय भस ऊँट तथा भेड़ बकरियाँ मुख्य पालतू पशु हैं। बल, गधे घोड़े और कुत्ते बिल्ली का उपयोग भी यहाँ के जन मानस में प्रचलित है। घास, सेवण, कड़नी, तूनी, चारो गुणा खार पानो, लग व फलानाज इनका भोजन है।

यहाँ के पशु पक्षियों का ज्ञान घम घटा अज्ञात है। गाय भसादि मादा पशुओं के गर्भ धारण कर लेने के बाद नर पशु उसके पास तक नहीं फटकते। कुत्ता यहाँ का घनानिक जीव उसके पेशाब में तेजाब जसा एक एसिड हाता है। अतः वह किसी दीवाल चौकट या पक्के ऊँचे पत्थर पर पेशाब करता हुआ छोटा कीड़ा मकोड़ा का बचाता रहता है। बिल्ली अपनी उदरजमी पर कभी भी दूध दही नहीं खाती और बच्चों के घावों का जीभ से चाटकर ठीक कर देती है। कुत्ते और बिल्ली अपने बच्चा को नित्य प्राप्त शिकार का विशेष प्रशिक्षण देते हैं। कुत्ता दूर के पत्ते खाकर अपना पेट ठीक कर लेता है और बिल्ली तेल का त्याग करके अपने स्वास्थ्य का बनाये रखती है। यात्रा के समय कालू के लोग बिल्ली से जुठलाकर दही खाने का शकुन मनाते हैं। किंतु घर से जाते हैं तब कुत्ते के काम फटफडा दन पर अपगुवन मान कर लौट आते हैं।

पशुओं के भी यहाँ बड़े हँदकी (बघ) होत हैं। ब ऊँटा को घी गुग्गुन घोड़ा का रातब तथा भंस के रोग में बिरमी आदि दवा दिनबाकर ठीक कर देते हैं। वे ऊँटों के पातडी तोड़ते हैं, लीडी लगाते हैं और भुँह में मलू काटकर स्वस्थ बना देते हैं। यहाँ मनुष्यों के भी टोहय सीमडी और धाचवे जगाये जाते थे। वतमान में डाक्टरों प्रचलन हो गया है।

वन के पशु जहरीले जीव एवं शकुन—कालू ग्राम की वन भूमि में हरिण सियार भेड़ विलावा (वन बिल्ली) लोमडी, मेही, जरख, रोय भेड़िये (ताहर) नेबले मेले आदि अनासे पशु पाये जाते हैं। लोमडी एक सेले नायक काटेदार जीव की जानी दुश्मन, उसके तन-बदन बंद कर लेने पर भी वह उसे अपनी चालाकी में उलटती हुई भुँह पर पगान करके बेचारे निरीह को मार डालती है। यहाँ भेड़िय अधिक मर्यादा में हुआ करते थे जो गाय भस भेड़ बकरी आदि पशुओं का बड़ा नुबशान पहुँचाते। इसलिए भेड़िया मारने के कृत्य को यहाँ के लोग धार्मिक समझते थे। अब जमीन अधिक भेती के काम लिय जान व कारण भेड़िया की सरया अपने आप कम हो गई है।

कालू अरथ्य में राह को बायें सियार या दाहिने लोमडी मिल जाय तो गुम माना जाता है। 'डाव तीनर डाव म्यार डाव खर बोल असराल। डाव (बायें) लूना डा-डा कर लका का राज बसीमण कर।' जंगल के शकुनों में छिपकली और छछदर भी बाईं ओर गुम माने जाते हैं। बदर नीलकण्ठ मृग और मधुर तथा काव व रीछ दाहिनी ओर दिखाई दें ता गुम माने हैं। जीवा में यहाँ कुम्हार, पाडाळी बाडा पीणो शलचूड, मोह मोहिरा, पयनाम, काला नाग और बिच्छू टाटिय टिन्डाना भयरे आदि पाये जाते हैं। बाडी पीणे, शलचूड और गाहिर इत्यादि आदमा व दुश्मन तथा मारी खतरनाक जीव होते हैं। साडे छिपकली, पाटागोह किरडे, हिचडगावे और साप की मासा से यहाँ के लोग फिजूल में डरते हैं। यात्रा के समय सप का दाहिन निक्कलना गुम समझा जाता है। जैसे—खर डावा विष जावणा (पान्नि)।

स्थानीय पक्षी—गाव के पक्षियों में गोरया, बनया (काली चिड़िया) पुटिया (छाटी चिड़िया), मोन चिटी, मालाली, लीलटासादि चिड़ियाँ होती हैं। तीनर, कौआ वज्रतर कमंडी (पिण्डुली), बाज, मुगा, खुदखुडवाती (कठफोडक) गुरसा गिद्ध, चील, ँघधू, मोर, बटबट, तिलोड आदि पक्षी भी यहाँ होते हैं। वर्षा के दिनों में यहाँ तानाबा सरोवरो के सहारे किनारे मोटावण, त्रौच और बिहूट तथा मुगाबिया आठ व्रतख प्रभृति पक्षी हर साल आते हैं। वर्षा के दिनों में जगनू, मैदक, बोगवहटियाँ एवं भीम जैसे बड़े भयंकर जीव दिखाई देते हैं।

चिड़िया-गुर बूचाट कागलो होल घुगव ।
गुरसा गोर गीत, वज्रतर बग वजाव ॥
तीनर डेक तान तबलची ताना तोड ।
मोर ठहूवा मिल, बनया जोझा मोड ॥
कोयल सूबा बण्या चाव, गीज महफिल रामडी ।
पण पोसाल जाल पर जुड बागा पछी बागडी ॥

कालू में मालाली के शकुन,¹ लीलटास के दशन, गुरजा के लोच गीत एवं कौए की अदृश्य प्रजनन प्रकृति, मानव जाति को सबन ससीख माय हैं।² यहाँ पुटिया नाम की छोटी चिड़िया के लिए एवं बड़ी अहमियत की बहावत प्रसिद्ध है कि—क्यू पुटियाला पग कर ? (पुटिया गगन गिर जान की आशका हेतु उसे राख अटफाने के लिए रात को अपने पर ऊपर को करने सोता है।) न ही गोरया प्रथम गन धारण करने के समय तुरत मातृ मुबुडि में घामला बताना शुरू कर देती है। हमारे कम रेगिस्तान में चींटियों तक के छोटे जंतु प्राणी प्रबुद्ध, वर्षा आने से चार घंटे पहले ही पालन वृत्ति से अपने अंडा को सुरक्षित स्थान में ढोकर (उठाकर) ले जाती हैं। रेवड (भेड वनरियों का समूह) वर्षा से आठ पहर पहले ही पीठ से पीठ मिला कर बैठता है और स्टाड (जैटनी) पर पटकने लगती है तथा गिरगिट बाड़ा पर चढ़ जाता है। गोहू की पनकी पक्षा पकड़—डाकूआ का हित साधन, तथा सप की एकांत साधना³ मनस्य की भिन्न का बचाव है। हरिण की आवाज बचाकर प्यास मिटा लेने में होशियारी और कौए में नजर बचाकर चीज चुरा लेने की चतुराई वगैरह विशेषताएँ इस देव धरा के पशु पक्षियों की स्वाधनीय रमचतता है। यहाँ के स्थानीय प्राणियों में प्रत्यक्ष देखी कमरकार पाये जाते हैं। भरो में यहाँ माताएँ बहने पुत्रा को बहलाती हैं तब उसे कौए से सयाना बताया भरती हैं। कहती हैं—“तू तो रे काम सू स्याणो ! मोर सू स्याणो !”

1 (A) चील की पनी और पतली आवाज बड़ी मधुर होती है।

(B) किसी व्यक्ति का नाम सिद्ध हो जाने पर कहा जाता—“मालाटा मना” आया।”

2 गूढ मयुन चारित्र्य काले काले च मग्रहम् ।

अप्रमत्तम विश्वास पच शिष्येच्च बायसात ॥

3 खण (काले) माहिर, तपेदिक और हिडनाच के राम यहाँ अमानयिक मृत्यु के कारण माने जाते हैं।

जनसंख्या—कम्बु कालू म स्स वर्षीय जनगणना सन 1981 मे 11वी बार हो रही है। परन्तु यहाँ के गृहस्थ बाहर अधिक रहते हैं। अत जनसंख्या अधिक नहीं आयेगी। इन पत्रितयो के लेखन ने ईस्वी सन् 1931 से लेकर 1971 तक कालू का जनगणना मे श्रु खलित क्रम से पाच बार प्रगणन का काय किया है जिनक पुरस्कार मे भारत सरकार गृह मन्त्रालय दिल्ली द्वारा रजत पदक एव राष्ट्रपति से प्रमाण पत्र मिले हैं। गाव काल मे यह जनगणना सन् 1881 से होती आई है। इसका कायालय पहले अजमेर मेरवाडा म था और सन 1950 तक वही से सवध रहा। सन् 1951 की जनगणना मे यह काय जयपुर से सवधित हावर चला। हम प्रगणको को राजप्रभुत्त धी मानसिहजी से प्रमाण पत्रादि मिले। सन् 1971 मे गवनमट आफ इण्डिया (Ministry of Home Affairs) जयपुर स सुन्दर काय सचासित हुआ। ई० स० 1931 का उत्तेख नीचे पढेंगे।



GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
CENSUS OF INDIA
CERTIFICATE OF HONOUR

To — Shri. Nani Ram Sanskarta

In recognition of your outstanding zeal and high quality of services rendered by you during the 1971 Census of India, the President of India has been pleased to confer upon you the 1971 Census Silver Medal

K. S. D.
Dated 15.8.1972

Acharya
Census Commissioner India

एक जनगणना का झोरा—तहसील लूनवरनसर के अ तगत कालू का रक्बा (तत्कालीन समय में)—“रजिस्टर देहात बीकानेर पृष्ठ 45” के अनुसार 25,706 ॥ बीघा बताया गया है। आबाद घरों की तादाद 419 और जनसंख्या 1793 (पुरुष 863, स्त्री 930) लिखी है और यह गांव राजवी गजमिहोता को बेतलब मिला हुआ लिखा है। लेखक की स्मरण है सन 1931 में घरों के अब लिखे थे तब वे सारे गांव के बाद अंतिम अब सख्या 419 गांव के गड पर जाकर अंकित किये थे। इनमें प्याऊ (कालू से लूनवरनसर मार्ग पर स्थित) और रामस्नेहियों की जगहरी भी शामिल थी। लेखक के पास 419 आबाद घरों के नाम की उस समय की लिस्ट प्राप्त है।

कालू की जनगणना 1981—कालू की कुल जनसंख्या 5877 हैं जिसमें पुरुष—3006 तथा स्त्रियाँ—2871 हैं। साक्षर—1925 हैं, जिसमें 1284 पुरुष साक्षर हैं तथा स्त्रियाँ 641 साक्षर हैं। कालू में कुल निरक्षर 3952 हैं, जिसमें पुरुष 1722 हैं तथा स्त्रियाँ 2230 हैं। अनुसूचित जाति के पुरुष 346 हैं तथा स्त्रियाँ 309 हैं कुल संख्या 655 अनुसूचित जाति की है। अनुसूचित जनजाति के 10 पुरुष हैं तथा स्त्रियाँ 5 हैं। कुल संख्या अनुसूचित जनजाति की 15 हैं। कालू में कृषकानों की कुल संख्या 1166 हैं जिसमें 1074 पुरुष कृषक हैं तथा 92 स्त्रियाँ कृषक हैं। अन्य काम करने वाला की कुल संख्या 374 है जिसमें पुरुष संख्या 354 हैं तथा स्त्रियों की संख्या 20 हैं। निजा व्यवसाय करने वालों की कुल संख्या 27 है जिसमें पुरुषों की संख्या 22 है तथा स्त्रियाँ 5 हैं।

विभिन्न वर्ग	कुल व्यक्ति	पुरुष	स्त्री
कुल जन संख्या	5877	3006	2871
साक्षर	1925	1284	641
निरक्षर	3952	1722	2230
अनुसूचित जाति	655	346	309
अनुसूचित जनजाति	15	10	5
कृषक	1166	1074	92
अन्य काम	374	354	20
निजा उद्योग	27	22	5

धर्म—कालू में मुख्यतः शैव, वैष्णव शाक्त (वैदिक धर्मी), जन एवं मुस्लिम धर्म के मानने वाले लोग निवास करते हैं। जनिया में अधिकतर जन शैवताम्बरी है। दिगम्बरी तो आये गये ही होते हैं। स्थानवासी भी नहीं है। पहले यहाँ आर्य समाज और राधा स्वामी मठ के लोग (गुरुचरण पटवारी) भी थे। अब आर्य समाजी ही हैं राधा स्वामी मठवासी नहीं। यहाँ इस्लाम धर्म के अनुयायियों में जनिया नहीं केवल

1 रजिस्टर देहात बीकानेर पृष्ठ 45।

लेखक—चंद्रमल चौडक नटिक यंत्रालय, जजमेर।

सुनी आकर बस है। इस भेद की सरया ही यहाँ अधिक है जिसकी आजादी पाकिस्तान बनने के पश्चात बढ़ा है।

जातियाँ—इस कस्बे में ब्राह्मण, जन, जाट, खत्री (वणिज्या) माहेश्वरी राजपूत, पुराणा, ठाकुर, चाग्ण, बरागी नार्द खानी नाथ गोसाईं, मुनार, मुथार, सेवग, भाट कुम्हार, भाटिया, तुहार माला मोची, जोतकी, दर्जी रईवा, रगर, छीपा, गवारिया, ब्रावरी जाति और हरिजना में मेघवाल, नायक सैमी, मेहतर आदि जातियाँ हैं। मुस्लिमानों में तली, बिसायती डाटी, धावी, फरीर रगरेज बाजा, कुजडा वगैरह जातियाँ हैं।

कालू में पारीय सारस्वत खडेलवाल और गुजरगौड चार प्रकार के ब्राह्मण बसते हैं। इनकी अपनी अलग अलग उपजातियाँ हैं। जय जातियाँ में सबसे अधिक जन एव जाट हैं। मुख्य रूप से कालू में काठारी नाट्टा वद बोरड बिरमेचा, साड, मटिया तातड भादानी बायग बरटिया मिषा, पुगलिया डागा, दूगड, मोतछा, चौपडा, नवलवा इत्यादि जन (ओसवाल) हैं। ज्यादा यहाँ जाट जाति के ही ठाट बाट हैं। इसमें गोदारा नण च्छी भूत मारण भादू डोगवाल बसवा, लघा, ज्याणा, जादू, सियाघ, तड, धिटाता कुण्डलिया पाडाण, भावू बुरडवा बाजिया भीला आदि गांव के वासिंदगान हैं। जाधू मया माधू और राय नाम की कतिपय जाट जातियाँ यहाँ से बाहर जा चुकी हैं। माहेश्वरी यहाँ के गृहण बना है। उनकी श्वर, दूदाणी, राठी कर्वा बागटी, करनाणी मोहता भूषटा आदि उपजातियाँ यहाँ निवासित हैं। डागा ललोटिया और मनिहार अब कालू में नहीं रहे। राजपूतों में यहाँ के रावजीर पुराने सरदार हैं। चारणों में बारहट और बरागियों में कालरा डारा भड स्वामीता, सारण, गोदारा आदि उपजातियाँ हैं। नार्द जाति में मुख्य डेलवाल जीर फूलभाटी हैं। अन्य एव दो जीर उपजाति भी अब यहाँ आ बसी है। गुमाई पुरी जीर मुनार केवल कडोल उपजाति के ही यहाँ बसते हैं।

मुख्य धर्म—कालू ग्राम के लोग अधिकतर खेती का धंधा करने वाले हैं। वे साथ में पशुपालन का पेशा भी चलाते हैं। खेती के साथ जातीय पेशा करने वाले लोग भी यहाँ हैं। इनके अतिरिक्त कुछ लोग यापार से संलग्न हैं। जय लोग नौकरी दस्तकारी, मजदूरी तथा लन दन में निर्वाह करते हैं। यहाँ के मुस्लिमान चज भाट और खूने सुर्खी का काम करते हैं इराक में जाते हैं। साधारण लोग इनके कमठान या भट्टा उद्योग पर बारहमास मजदूरी करते रहते हैं।

कालू की लोक संस्कृति—कालू की संस्कृति इस गाँव की साधारण जनता पर आधारित है जो यहाँ के खेती खाने खेन देन एवं पशुपालनादि में व्यस्त रहती आई है। यहाँ की संस्कृति में भारतीय लोक जीवन के उच्चादम पाये जाते हैं। वे प्रजा के स्थानीय आचार विचारों में दृष्टिगोचर होते हैं। इस निराली संस्कृति का श्रेष्ठता में कालू के माणव समाज का बल प्राप्त होना है और उसकी जिंदगी की निमलता निखरती है। क्योंकि संस्कृति जाति की सत्र से महान एवं प्रिय निधि होती है।

यह गाँव राजस्थान प्रदेश का अभिनव अंग है। यहाँ के लोग जय स्थानों में

राजस्थानी कहलाते हैं। अतः राजस्थान की तरह कालू गाव के भी अपन कुछ विशिष्ट गुण हैं। राजस्थान की सस्कृति ही कालू की मस्कृति हैं और उनसे भी यथापयुक्त इतिहास म महिमा सबद्धि हाती है। यहाँ क लाग सदब त्याग बलिदान वाली भावनाआ म राजस्थान के गौरव का हृदस्थ रखते है। इसलिए कालू म होने वाली देव पूजा व्रत-अनुष्ठान मले मगरिय तथा पर्वोत्सव जादि सास्कृतिक विकास के नमून ह। य सभी तत्व एव दूसर से जुडे हुए अपनी प्राचीन एव धार्मिक विभि नताए लिए चलन हैं।¹

कालू म वेदो पुराणा के वर्णित देवी देवताआ के अलावा बहुत से लोक देवता भी पूज जात ह। इनके नाम गि जा रह ह, जा कालू की पूजा प्र ण प्रजा की देव श्रद्धा के परिचायक है। मूय, गिव, शक्ति मती बिनायक गनिश्वर आदि वदिक पौराणिक एव नाक देवता ह तथा श्रीराम कृष्ण अवतार रूप म पूजे जाते है। यहा यक्ष नाग पितर भोमिये तथा पाबू रामदेव गोगा केरार कँवर, वभूताजी, बाबा हरिराम आदि प्राचीन जर्वाचीन लाकवार एव पीरस्वरूप पूजमान ह। यहाँ गाँवा की बाकट (सीमा) जीर चौराहे भी पूजे जात है। माय घरों के कार लगाई जाती है।

वास्तव मे कालू की सस्कृति साकधर्मी एव मंगलकारिणी है। मुस्लिम लोग भी अपनी धर्म सस्कृति का श्रद्धा म मगगूल है। कालू के जन मन द्वारा बनमान म पुानी सस्कृति की धराध्री पर नय सस्कृति का बिल्डिंग बनाई जा रही ह। इनम स्वन रता समता मानवता एव राजनीतिक, शधिय तथा सामाजिक सौ दर्यानद की सुबिबाए होगी। कि तु कालू म सामाजिक कुरूपना, बिबिधना और शीशाआ की बहलता बिन्कुल नही रहनी। जन सामा य सास्कृतिक मर तास्त से सत्य गिव सु रम की जार जायेगा। आज तक की मस्कृति मानवता का प्रतिनिधित्व करने म कदापि समथ नही थी अब उनके द्वारा लोकहिताथ का पूण प्रतिनिधित्व हुगा। अतएव कालू खेडे की बाछे दिल रही है और सुखानद के साथ इच्छापूति हो रही हैं, क्योंकि नई मस्कृति गुलाब के पुष्प क समान अपनी महक और मधुरिमा सहित बिबसित बिखरित है।

कालू के रीति रिवाज एव बिश्वास—कालू अपन अनोखे रीति गिवाजो धार्मिक अनुष्ठानों, जध बिश्वासी टोन टाटकी एव जय प्रयाआ स श्रुत्वलित ग्राम है ना युगो से उनके त्रिया व्यापारा सहित बिमल वास स्थापित है। थावण मास तक वर्षा म विलम्ब होता देसकर गाव कालू के मुखिय अपन ग्राम के प्रति घर से कुछ राशि एननित करक कालिकाजा के मदिर म हवन बग्वात हैं और महामारी आदि के प्रनोप पर गाव के चारा ओर कालिकाजा के नाम की अखड बार (बच्च दूध और जल की रेखा) लगवाते हैं। य द्वय काय कालू म पीढिया स होत आय हैं और आज भी गाव प्रतिनिधिया का परम्परा म उवन कार्यों का करवाने म कतिपय सजन पूण समथ हैं। कभी कभी गाय भसाति पशुआ के महवाव (एक पशु राग) या खुरसाण के राग सवत्र फन जाते हैं तब उनके समूह वावत किसी साधु खेवडे से डोरा जत्र तथा टूणा टसमण करवाया जाता है। वह स्थाणा ब्यक्ति, शनिवार का आधी रात का नग्न तन श्मशानों म जाकर अधजला बास ले आता है। उसका गोल डारे (सून) और एक डन्ना से मलगन करक

1. कयाकि बीकानर मडल की सीमा से मटनी दुई भारत की पुनीत प्राचीन मरस्वती नदी के किनारो पर श्रधियो न वेद मना के उच्चारण क्रिय थ।

गाव किनारे की चौड़ी गली पर ग्राम द्वार पर की भांति सटका देने ह। राग गाति क त्रिण गाव के मारे पशु उसके नीचे से निकाले जान ह। उस राज दही मथना चक्की पीसना और पाठे (गोबर) उठाना जाति वाय बंद गये जाते हैं। इस वधी (हटनाल) क लिए पहले दिन सध्या गाव मे हेली (उच्च स्तर आवाज) बग्वाया जाता है। हमारे गाव कालू मे यह भफल कृत्य आज मे पनालीम वष पहले श्री गणेशलाल यमि द्वारा होमा था। आजकल के लोग इस पूण विन नही ह। लेकिन गात्री वात राग के लिए पशुओं क झुंड म बहूक चसाकर रोग गाति चाहन का विश्वास अभी तक प्रचलित है। पशुभा के छोटे बछड़ो और टाडिया को नजर सुरक्षित रखने के लिए कालू म उनके परा मे नीले टारे बांधे जाते ह। यदि कोई भस या गाय न बछड़ा को एक साथ ज म दे देती है ता उसे ज्योतिषी का दान कर दी जाती है। बिना बछड़े बछड़ी के छन पर कत जान पर भी उसे ज्योतिषी को अनाज आदि वस्तुआ के साथ दान करना पड़ना है।

रीति रिवाज इस गाव के लोगों का गहना है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां के लाम विवाह आदिया और औसर मामर म खय खचने हैं। गहरमारीणी नाम से यहां सारे गाव को बड़े बड़े मृत्यु भोज होने आए है और ब्रह्मपुरी अथान छ यात (छ व जाति के ब्राह्मणों का भोजन पान) अब तक चलता है।¹ कोई भी मयन व्यक्ति अपने बुजुर्ग पुत्र तथा स्त्री की मृत्यु पर कालू के सब वय ब्राह्मण वैरागी सबग नाथ जोनकी जोगी आदि जातिया के तमाम परिवार को बारहवें दिन अन घर भोजन करवाता है। हालांकि बीकानेर राज्य म औसर राखने को नियमित करन का प्रीकानर औसर (मृतक भोज) प्रतिबंध बिल (अधिनियम) सन 1946² मे लाा है।³ लेकिन उसरी पाबंदी म तीजो, बारहवा, छ मामी, गगेडा, चहरलम आदि नामा म अनग कालू म छ यात ब्रह्ममाज होता है। यन् पागम्पन्वि रुडि है जो बिगदग म ऊंचा नाम करो का माहम रखती ह। ऐम अनक लोक विश्वासी अनुष्ठान तथा धन पशु एवं येतीबाडी आदि म टान टमषण यहां प्रचलित हैं। कि तु नई चेतना आन क कारण यानिका मंदिर म दी जाने वाली पशु बलि एक द्वाक मे बिल्कुल बंद है। डाकण स्यारी भूत प्रेत तथा देवताआ के परचे (आदेश) करा वाले पुजारी पडा की भी (एक दो पड़ी के सिवाय) कमी आ गई है। मृतक के परिवार से बारहवें दिन दादे (पडिग) का नई खाट पर मिश्र भोजदियो म मुलाकर हिंते (मुलाने) हुए गाय भम टोडिय वामन कपडे धन धा य आदि अपने स्वर्गीय जन को मिल जान के विश्वास पर देत है और दादे के मुंह में माठा दे दकर पूछते हैं— दादा सागे क दोरो ? दादा खाट आदि सहित सब धन माल प्राप्त करता हुआ कहता — सारा ! सोरा ! नय उसका हिंडे देन छाडते। ऐसी ऐसी अनेक प्रथाए कालू म अब नाममात्र की रही हैं।

1 श्रीतिलाकचंद बरनाणी (पुत्र श्री नाररामजी) करीब तीन दशाब्दिया से बरसी म बस गया है। कि तु गत वष उसरी बडिया का देहायमान हो गया था। तब बरनाणी ने पूवजा के साथ वाम कालू आकर क उडे टाट वाट मिष्ठान स ब्रह्मपुरी की एसो मुता³।

2 बिल न० 4 सन 1946 द० बीकानेर नयिधान निमात्री सभा (धमालान)।

कालू के बुजुर्गों की पुण्य प्रवृत्ति और परम्परा—आदरणीय श्रुति मुनिया न लाया वपों की तपस्या साधना और ज्ञान विज्ञान के परिणाम से जो बातें लिखी हैं वे विलकुल सत्य हैं। उनके लिये कठिन पराश्रित अनुभवों की आजबल के अत्यन्त कपोल कल्पित गर्वें बताकर अपनी नाममयी या परिचय देते हैं। मगर कालू में हमने अपने बुजुर्गों को नबरे माव उठते हा इश प्राधना और धरती धाव कत दखा है—

ईश्वर प्राधना और माला—मन्त्रों की मन्त्रों का प्रतिनिधित्व रूप से माला द्वारा हा जाती है। गत्वश्रुण प्रधान भगवान राम, कृष्ण विष्णु आदि की सात्त्विक निष्काम भाव से उपासना के लिए सात्त्विक त्रिदाय नामों की माला का विधान किया गया है तथा राजस सखाम भाव से विष्णु रहित वाय की सिद्धि के लिए विधानाशक विनायक गणेशजी की उपासना के लिए राजस हरिद्रा की माला का विधान है। तामस अपवित्र भाव से गन्धुमारण आदि तमामुणी निच वाय के निमित्त तथा तामस भूत प्रेत आदि की उपासना के लिए तामस अपवित्र सप की अस्थि की माला का विधान किया गया है। इसका अतिरिक्त जिस दकता का जो पदार्थ प्रिय है, उसी की माला बनान तथा पूजन में समकाल प्रयोग करने का विधान किया गया है।

मध्यमा अङ्गुली से माला—मध्यमा अङ्गुली का हृदय नाडी में स्थित है अतः हृदय ईश्वर का प्रभावित करने के लिए मध्यमा अङ्गुली से जप करने का विधान किया गया है। ताड़ना नाम से प्रसिद्ध हान वाली अङ्गुली के पास की तृतीया अङ्गुली से गन्धु-पीडन आदि तमामुणी कामों के लिए जप का विधान किया गया है।

108 मणिका—27 नक्षत्रों की एक माला है इसलिए छोटा माला (सुमिरनी) में 27 मणिका रखते हैं। 27 नक्षत्र चारों दिशाओं में एक सुमेरु पर्वत के सहारे घूमते हैं, अतः $27 \times 4 = 108$ मणिकाओं की हमारी माला भी एक सुमेरु रूप बड़ी मणिका के सहारे घूमती है। सुमेरु पर्वत अनुत्तमनीय है इसीलिए जप करते समय माला के सुमेरु का भी उल्लेख नहीं करते।

ब्रह्म शब्द में व २५ म य चार अक्षर हैं। व से व तक 23 अक्षर हैं एवं व स र तक 27 और व से ह तक 33 तथा व से म तक 25 अक्षर होते हैं। इस प्रकार $23 + 27 + 33 + 25 = 108$ अक्षर ब्रह्म शब्द में प्रविष्ट हैं। ऐसे ब्रह्म की प्राप्ति में सहायक हान से माला में 108 मणिकाएँ रखते हैं तथा महापुरुषों के लिए श्री 108 लिखते हैं।

कलाशाधार से—(वप 55 अक 11, नवम्बर 1981)

भगवान के 108 नामों की माला—

राग काही—कहा कहि तोहि पुकार करतार हमारे।

नाम अनन्त अत नहि जाको बहुगुण रूप तिहारे ॥

- 1 अजर 2 अमर 3 अविगत 4 अविनाशी 5 अलख 6 निरजन 7 स्वामी ।
- 8 पुरुष पुरातन 9 पुरुषोत्तम 10 प्रभु 11 पूरण अंतरायामी ॥ 1
- 12 कृष्ण 13 कहैया 14 विष्णु 15 नारायण 16 ज्योति रूप 17 विधाता ।
- 18 अपरम्पार 19 मुकुन्द 20 मुरारी 21 दीनबन्धु 22 प्रजनाथ ॥ 2

1 भास फाटी, माल टाटी, जागी जोया जूण, दे चतरशुख चूण ।

- 23 यादवपति 24 जगदीश 25 चतुर्भुज 26 निभय 27 सवप्रकाशी ।
 28 पाश्र्वहा 29 प्राणनवा दाता 30 सबटा घट घट वासी ॥ 3
 31 निर्विकार 32 परमेश्वर 33 गिरिधर 34 माधव 35 गोविंद प्यारा ।
 36 कमलनन 37 कान्त 38 मधुसूदन 39 मयम 40 मयसे मारा ॥ 4
 41 हृषीकेश 42 मुरलीधर 43 माहन 44 ह्री 45 ज्वलित 46 अयोनी ।
 47 भगवत 48 यमुदेव 49 भगवाना 50 नानी 51 ध्यानी 52 मोनी ॥ 5
 53 दीनानाथ 54 गोपाल 55 हरी 56 हर 57 गरुडध्वज 58 धनश्याम ।
 59 भक्तवन्दन 60 अरू देवकीनन्दन 61 करता सब विधिकाम ॥ 6
 62 आदि प्रथान 63 माधुरी मूर्ति 64 धरणीधर 65 वलवीरा ।
 66 नन्दनन्दन 67 अरू यमुदानन्दन 68 सुन्दर श्याम गरीरा ॥ 7
 69 परशुराम 70 गरुड 71 विश्वेश्वर 72 अचल 73 अखण्ड 74 अरूपी ।
 75 ईश 76 अमोचर 77 और जगतगुरु 78 परमानन्द 79 बहुत्पी ॥ 8
 80 कल्याणमय 81 कल्याण 82 अनन्ता 83 दयासिन्धु 84 जनदारी ।
 85 धारणशाला 86 हवमणि पति 87 अनन्दकन्द 88 बिहारी ॥ 9
 89 परमदयाल 90 मनोहर 91 नरहरि 92 कृपानिधि 93 फलदाता ।
 94 वसन्तिकन्दन 95 रावणगजन 96 जगपति 97 नन्दमोनाथा ॥ 10
 98 जगन्नाथ 99 अरू खत्रीनाथा 100 निर्गुण 101 सरगुणधारी ।
 102 दामोदर 103 रघुवर 104 सोतापति रामा 105 कुल बिहारी ॥ 11
 106 कुण्डलन 107 सतन को रक्षक 108 सबल सट्टि को सार ।
 दुख हरण के कौतुक अनमिन जेय पार नहि पाद ॥ 12
 मो अरू आठ नाम की माला, जो नर मुक्त उच्चार ।
 अपने कुल की सारी पीली एक रू सौ को तार ॥ 13
 गुरु शुक्रदेव भग्न निज दी हो राम नाम तत मारा ।
 चरणदास निश्चय मो जप करि उनरो भव जल पारा ॥ 14

(श्री गुरु भक्ति प्रकाश)

धरती धोक— धरती माता तू बड़ी तमू बड़ी न कोय ।

ऊठ मवार पग धरा पाप मिटाओ मोय ॥

प्राचीन शिक्षानुसार के पूज्य विस्तर छोड़ने के पहले पृथ्वी प्रणाम गुणगान करना जानने थे । फिर सट्टि सचालक जगनियता जगदीश्वर का स्मरण करके अपने कर्तव्य चिन्तन से प्रथम शुभ दान करते थे । वे देव चित्र दण्ड पुष्पमाला, चन्दन चिटकी चाबन एवं अथ किसी उज्ज्वल पदार्थ को अपनी दन्ति सफाई तथा दायाँ हिस्से देपन । शुभ वाय की प्राप्ति के लिए गाय सफेद वस्त्र और घट के दण्डन भी अच्छे समझते थे । कई लोग यहाँ अभी प्रातः हमरी का गुरु देखने से पहले अपने हाथों का दान करते हुए 'गाम्भीर्य' इसीक बोलते हैं—

कराये वसत लक्ष्मी कर मध्य मरुवती ।

कर भुने म्बितो ब्रह्मा प्रनाने नर नशनम ॥

किंतु बाडा, हृषण, पापी जाना, क्या जपाहिज, नगा, नवटा, सुअर, गधा, बीआ, बिस्मा इत्यादि प्राणिया को प्रातःकाल देखना यही अनुम माना जाता है।
गुन काय के समय सब मांस इनके बचकर निवसना चाहते हैं—

काणो कुचडडा, कावरो, ना छातो पर बाळ ।

दरमणियां निग बुरा, पण दोषारा टाळ ॥

घातसी अभिवादन—पानागन के समय यहाँ के बृद्धजन, बानकों की आशीर्वाद देते हैं—‘राजा रवी, हजारों ऊमर होवो, बीठ नीवाली राज करो आग-बूझा टोकरा पश्य नीव जडा हाथो’ आदि अनग मुवाकय कहते हैं। मेहमान आपस में प्रातःकालीन अभिवादन करते हैं और बाह्यांग बाह्यण से नमस्कार। राजपूत आपस में मिलते हैं सब—जय रघुनाथजी की माह-वगी महाजन जय गापावजी की एव धरणी, धरणी (धन्नावणी) जय ठाकुरजी की करते हैं। कारण जय भाताजी की, ओमवान जय जिनद्व-जी की, अक्सरीं ने जयगामजी की तथा अज अधिराज गमी आपसी राम राम करने हैं। पहले राजा महाराजाओं ने प्रजाजन ‘घपी गम्मा’ करते थे। आसपास में मिलाम और फुहार तथा राजपूता में मुजरामिवादन अभी चलता है। बानू में आजकल हाथ मिलाकर जयहिंद करने का रिवाज चलतिबर है। गांव का भासूहिज आगर अभिवादन “राम राम” होली और दीवाली के दूसरे रोज हर व्यक्ति एक दूसरे ने पावन पद के रूप में अक्षय करता है। यहाँ के जनी अपनी सम्पत्तियों (महावीर बापिणी) के निज प्रायश्चित्त से गन वष की भूल खूब हनु क्षमा पावना करने हैं और अपने गुरुओं में वदना करते हैं। राम झही मानु—‘जय मियागम !’ नाथ घपी आगे ! आदेश ! और कई मठ—‘नमा नारायण !’ के अभिवादन में थड़ा रहते हैं। मुत्तमान सनामे मानेकम की सानिह में उसका उरटा गछ बावेक सलाम बोलते हैं। कृष्ण लोग अज लोग से सान्य मलाम करते हैं। बानू के दानी गांव के झिडू समान १ (जो उनके मजमान हैं) ‘मुमराज’ करते हैं। वतमान में यहाँ कई मिक्क समाज के लोग भी आकर पस गए हैं। उनका आपसी अभिवादन—‘सतयी अवाल !’ है। बालका में “टाटा” अभिवादन चल आया है।

- 1 परंतु सफेद बिल्ली को देखना यहाँ गुम माना जाता है। जस—

फतस अरठ पिछोवड धोली के करली बिल्ली धोली ?

गधर बिछामे सूती नार सच्छण अक, मुलच्छण चार ॥

(घर के दरवाजे पर अरठ व घर के पिछवाड़े में प्रोन होन का दुष्प्रभाव, घर में सफेद बिल्ला के होन से शुभ प्रभाव बन जाता है। किंतु घर की मालकिन सहसा पिछवाड़ा देखकर सोयी रहे तो शुभ की प्रतीति सफेद बिल्ली क्या कर सकता है ?)

- 2 होली दीवाली के दूसरे दिन गांव के चौधरी और मुखिये पहले पहन गठ मिलन (राम राम करो) गाते थे। वे मंदिर उपासने भी अवश्य जाते। यहाँ पाक अभिवादन के बाद रुपया या नारियल चढ़ाया करते। चौधरियों की भेंट एक रुपया होती और अज किसानों की मतीरादि। गठ और उपासने वाले भी वालीमिरच पिप्री तथा दस्तापची से उन लोग की मनुहार किया करते थे। अब ये मनुहार, नेगाचार, नस्तनावद है।

कालू का अपना एक रोग—मानव जीवां स सबधित अनेक प्रकार के रोग होते हैं। स्वभावमिलन अनुसार उनमें से कोई न कोई एक मनुष्य शरीर में पनप जाता है। प्राचीन समय में कतिपय राजरोग (बड़े रोग) अपने भयावने रूप में प्रगट हुआ करते थे। 'राजयक्ष्मा' भी उस समय रोग सम्राट कहलाता था। किंतु कालू का यह ऐतिहासिक रोग इन सबसे बड़ा विचित्र अलवेली एवं आधुनिक विकसित रोग है। यह यज्ञ के बेकार तथा निरुद्धमी हथ्याई के रूप में टांडा (मैदान) मस्ती लेन वाल लोक जावन में रमा हुआ है। अकम्प्य, गल्पलानुपता एवं अत्यधिक आलस्य के लक्षणा से विभूषित घर का धधा उजाड़कर और परिवार का संगठन बिगाड़कर भूख प्यास से बेपरवाह पीड़ित रहकर कालू के कई विन गुण बड़े लाग, रात दिन बाजार मध्य टांडामस्ती की व्याधि में टहलते हैं। आयुर्वेद में एक कहावत है—'राम बाण दवा क्या है?' उत्तर—'किसी भी घबे से, उचित रीति से धन कमाना, क्योंकि ईमानदारी पूर्वक धन कमाने से चित्त स्थिर रहता है तथा उत्साह और आयु की वृद्धि होती है।'¹ परंतु कालू के इन कतिपय निष्ठुरे घुमकट रागियों पर यह राम बाण दवा कदापि अमर नहीं करती। अत एव यह राग का गरीबी सबद्धक एवं सकामक महाराग है।

यह राग जो अभी छुपि के क्षत्र में अग्रणी नहीं है और रोजगार नहीं कर सकता है। जनसाधारण का स्थिति उत्तरात्तर दुबल होकर बिगड़ती जा रहा है। ऐसी समय में उद्यम ही सुख लाभदायक हो सकता है। जलविहीन भूमि और प्रायः हर दूसरे साल दुर्भिक्ष की स्थिति आ जान के कारण पशुओं के लिए घास एवं पाला भी नहीं मिलता जबकि यहाँ के निष्ठुरे नर अपनी लापरवाही में रहकर सुभिक्ष के समय उक्त चीजों का साज (संग्रह) नहीं कर पाते। सुकालिक रूप में मजदूरी बढ़ाकर कहते हैं—“पालो पोसावे नहीं।” अत एव कालू में किसी एक अच्छे उद्योग की बड़ी आवश्यकता है। आशा है उसकी पूर्ति हेतु हजारों व्यक्तियों के लिए रोजगार प्रदायक एक संस्थान की स्थापना करके किसी योग्य व्यक्ति द्वारा कालू की बेकारी का रोग मिटाया जा सकेगा, तब रोग की जड़ कटगी।

वेशभूषा और आभूषण—यहाँ के पुरुष निवामी अगरवा काट धाती, पगड़ी, साफा टोपी, टाप पहनन वाले थे पहन दगली झुगतरा अगरखी² आडणिया कुडती, खलको, मेखलिया चालिया भगुला आदि वस्त्र सब जगह चलन थे। बड़े बड़े लटके पातड़ी-काछड़ी पहाने थे।

महाभारत काल में पुरुष अपने शीर्ष पर उष्णाश (पगड़ा) पहाने थे।³ मध्य काल में यह धूर बीरा की मस्तक रक्षा का लोकप्रिय साधन थी। इसके बाद ता पागड़ी के अनेक नाम प्रचलित हुए हैं। यह बड़े आदमी के सिर पर पाघ नाम से सम्मानित होती थी, धने ही छोटे बच्चा के मस्तक पर मनाहर मोलिया⁴ कहलाती थी। मालिया

1 वद्य पचानन श्री हरिदास—स्वास्थ्य रक्षा 263 (परमोपयोगी शिक्षा।)

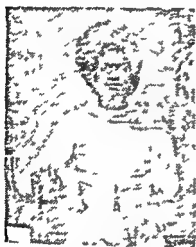
2 कालू में मट्टाली अगरखी बनाने में टीकराम दर्जी दूर दूर तक प्रसिद्ध थे। यह गुलाबिया रंग की पहनाया करते थे।

3 भारतीय चिंतन का इतिहास (रमेशचंद्र शर्मा) पृष्ठ 72

4 चायरा रे धीमो मधरो बाज, चढत जवाई रो बीज मैमन माछिया। रा० लोक गीत (सं० कु० चूडावत) पृ० 79 (मोछिया पगड़ी और मैमन आभूषण)

दो रंग की सहारा युक्त विशोर शींग गोमा का रूप दुआ करता था। राजस्थानी में मीहमद मोलिये और पचरम पेचे व, बड़ा चाव था। पेचा या चीरा जवानों की पगडिमें के नाम बोने जाने थे। माफा दुमाना, अथवा फेंटा गजपूता का मस्तक वस्त्र था। किसान लोग अपन मिर पर पानिया बाधा करते थे। राजाआ की पागाक म लिडकिया पाप का उल्लेख भा मिलता है। बीन या राजा तथा धनवाना की पाप पर सोन का सत्पेच सेली, तुरा कलगी अथवा सेहरे बाधने का रिवाज था। अपने-अपन क्षेत्रा तथा रजवाडों की पृथक्-पृथक् पगडिया हुआ करती थी। बीवानर की फौज के माफा की मूठ द्वाहिनी तरफ होती, किंतु जयपुर की फौज का साफा बायी और मूठ रखकर बाधा जाता था। जय लोग जायेगा गोत्र पेच लगाकर साफा या पागडी बाधा करते थे।

गोल साफा व बासे साबली



स्व० बालू राम



स्व० बालू राम

बालू के युवक पहले विभिन्न वधेज बानी पगडिया रखते थे। इनमें चून्डी मोठडे एव सहारिप के वधेज और अमरवी मलमल (376) तथा मनीपुरा पाघे अमीरा क सिर हुआ करती एव केरिया वसूमल रंगो की पाघें विवाहादि गुन अवसरों में श्रेष्ठमानी जाती थी।¹ धनुष बाण और सोनिया मोनिया की रंगाई दो या तीन रंगों से लपयुक्त हुआ करती थी। अनिरित इनके तरमुलावी गुलेनार तोरु कूना निम्बू-शाही, मनागरी मिणिया मलयागिरी तेलिया मलागरी बोनलिया मिहूरिया सदरकी चम्पाकेशर सरवतो, किसमिस कमेडिया राख रावनी आदि अनन रंग हुआ करते थे। लेखक के बड़े भाई साहब स्व० श्री बालूरामजी सत्कर्ता सरवतिया मोतिया बदणिया कपूरिया और मनागरी जादि सोफानी रंगों की पगडिया का नित्य नवीन बेदा भूपा के ढग से नाम लाया करते और व अपनी पाप के बडप स्वयं लगाते थे।²

1 केरिया वसूमल राजा राठोडा न साहेजी भगवा ता सोहे सिध नाथा न। (नोक धमाल)

2 वे पाघ में मोपटा या अय कपड़े की माल बँद सी बना कर मुन्दर पाघ बाधते थे। गाव महानन म लखड़ी की लघु स्मृतियाँ और अन्न कपड़े या पागज की टोपी दिया करते थे।

वि० स० 1984 म श्री गिरधारीलालजी क्षवर की बरात बालू से गाव मूडवा (मरवाड) गई थी। तब बरात विदाई के समय बरातियाँ को विभिन्न रंगों की विशिष्ट 551 पाँचें उनकी पसंद मुजब "मीख स्वरूप" भेंट की गई थी। विवाह में वर का पाग बाधन का नेग दिया जाया करता था। विवाह हो नहीं पति की लाश के अभाव में मृतका महाराजाओं की पत्नियाँ उनकी पाघ के साथ सती हो जाती थी। मित्रता, शाक भजन तथा अन्य सात मवष के समय पाँचों पाशाक में पगड़ी का स्थान सर्व प्रथम माना जाता था। प्राचीन समय में पगड़ी ही पुरानी वस्त्र भूषा का एक मानवीय अंग थी।

पाघ भचलन



स्व० साधू राम नाहटा
मुग्धता में लिया है—



राजनकार स्वयं

पाणवार मृजावण तजावल विधदनम ।
पवित्रम् नश्यमुष्णीय वातात पर जापहम ॥

(पगड़ा मिर का चाट म वचाता है साफ रखती है और मल नहीं भरन देता। वण नेज और बल बढ़ाता है। जाला का भा पवित्र एवं हिनकारी है। व मु धूप और धूल से महत्त्व की-छा डरता है।) 'उज्जत रत्न' का निगमद की मयादा एवं मरदानगी का प्रतीक पागरी समझी जाती। तिमो जी गुरवीर के सामने मद की पगड़ी या औरत या आत्मा आ जाता ता वह वार नहीं करता। विवाह के समय वर या वधू के सिंग झोल डालत समय उसने नातन लाग पागड़ी का एक पैर खालत थे। बालू में अब भी बालिका दहन के समय भवन लाग पागड़ा उतार वर गिर नवाने हैं। किन्तु इस नवयुग का लाग कहत हैं — पागड़ा जात्रा आगड़ा मिर सलामत जाय 'यह कहावन बालू व बुजुर्गों का माय नहीं है। क्योंकि पहले सुने मिर रहना खनगात एव अभद्र व्यवहार माना जाता था। पुगन आदमी तब चाट म जाते ता सुने सिर जा का मनाई थी। अपना ओर राज्य कमचारी कभी भी सुने गिर नहीं गन्ते। त्योहार या उगव के समय तो सारे लाग रंग रंगोसे पचे पागड़ी या साँप से सजते थे।' उन्धपुर क

1 सापण आया मयत्रा बाधा पाग गुरग ।
घर उठा गजम करा हरिया वर सुरा ॥

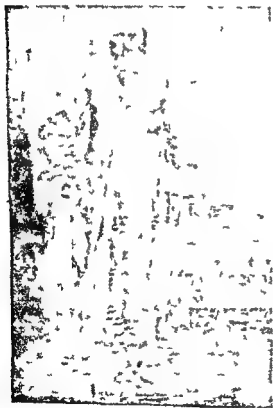
महाराणा साफा नहीं पागड़ी बाधते थे। हमारे यहाँ महाजन के राजावा की पागड़ी दाढ़ी दूर-दूर तक प्रसिद्ध थी। जब महाजन में पागड़ी के बाधने वाले कई मानीन लोग भी रहते थे। कालू में 'मूँछ पागड़ा' रखना मदव इज्जत का कहते हैं। श्री भानुव्यास की कगरिया पागड़ी बनी रह" कविता कम तक कालू के कई लोग गाते थे। लेकिन अब समयानुसार लोग खुला सिंग करने लग हैं तथा कुछ पायजामा पहनते हैं।

गहनों में पहने पुष्प परा में बड़े, जंगर और तानी रखते थे। काना में बान साफली, मुक्की बिम्बनी काजर, गुडना मातीचानटा तथा ऊपर में मामा-मुक्की पहनते थे। उस में बरिया भी कहते थे। गने में गाये जारा कठी और हाथा में बड़े धणत तथा टहुँ पहनते थे। दाँतों में मोन की मल (चूप) लगाने थे। अगर अब लोग अगूठी, घड़ा मूत आदि का साधारण चीज रखते हैं।

बाड़ी का महाज

बनस राव बहादुर
राजा हरि सिंह जी महाजन

स्व० जमनाराम जी बर्दा कालू



परी आन रिपान एव परों व आंगों पर मानन (लगाया हुआ) व जिम माट
बपद हुआ जाता था। पारर पर आन मान बपदा में गोम, जंगर राइट बट
पट्टे, बामल मुकर बीजिय (बातरा व) बनान, घुषा दुर्ग, बटाट (मूँछ के बर)
पुष्पा आदि मय प्रसिद्ध वस्तु लाते थे। जात्रम गदा, लम्बू बज्ज, लुगा, बज्ज
माट माफा बिट्ट न एव मान के काम आया जाता था। ॥ एव मान बपदों का
बपदा व मान माफा बपदों मुरारा का मज्जि, एव एव बज्जियों में एव एव

करती थी। अतः रंग उनके गीता में गाया जाता था। एक आढना नामक गान गीत देखें—

आणी ओणा आढनी म गारा गोरा गाल
वाल्स वर्णी आढनी र लाल ।
आन ना ही आन्नी म राट ली हा गाल,
वादल वर्णी आढनी र लाल ।।”

राजस्थानी लाख मण्डूति की पांच पांगर में जूती के जाड़े का भी बड़ा महत्व माना गया है। देवता का द्वाहण तथा किसी सुनारण को पोशाक दत्त तब जूती का जोड़ा भी साथ लिया जाता था। प्राचीन समय में इसे खमलक में रखा जाता। छूमडा वेटर जोड़ी माचडी जरवा लिंगतर पमरखा आदि इसी के नाम हैं। बीद की जूती को जोड़ी कहा जाता था। अबड़ तथा गाय भस्यानि के गुवाने अपनी जूतियाँ नीचे लुहार में लाह की एडिया (खडतान) लगवाया करते थे।

स्त्रियाँ की पोशाक में घाघरा¹, पीजरिया घाघनिया तथा लावडी चूड़डी ओढ़ना पाना जोधपरी, घनस (लहरा पामचा) आदि पाशाकें जनसाधारण की थीं। लहंगा चोली दुपट्टा, कच्चा काबली एवं कपडा में भागकीन छोट, अतलस आदि ऊँचे परो की पोशाकें थीं। गावा के जाट परिवारों में लड़की की ब्याहिक पोशाक युगिया स्याडती होती थी। अगिया एक कबुकी प्राचीन महिला वस्त्रा में समाया थी। अत्र स्त्रियाँ पटोकाट साडिया, लॉन्ड पहनती हैं तथा घाघरा व ओढ़ना चूनडी और सानू को अधिक पसन्द नहीं करती हैं। जच्चा वच्चे के नामकरण मन्कार पर पीला ओढ़ती हैं। मुस्लिमान औरतें चुन्न पायजामा, सम्मा कुर्ता तथा ऊपर चूनी एवं आढना पहनती हैं।

स्त्रियाँ पहले कटला पानी साठी आवला नवरी ताती आनि गहन परो में पहनती थीं। तथा में हमबना बेन (बड़ी जगूठी) राजूबन टड्डे बगडी नामक गन्ने रखती थीं। गल में मोन्नमाना हमसी हमेल, आड कठा तिलडी, तीमणिया गलसरी तलसी मादलिया पानर गलपटिया कठी, धुकधुकी तेवटो दुस्सी इ आदि के गहने पहने जाते थे। मैमद फाणी ग्यडी माथ पर बोर टीका कानों में कनफूल, सुरलिया, झूटणा कनीना बूजली, पंग की अगुलिया में त्रयलिये आदि पहनने पर औरत नख-चन्च शृंगार में सुमज्जित होती थी। दाता में खूप और नाक में लोग शालीन गहने मान जाते थे। आजकल युग परिवर्तन के साथ साथ स्त्रियों में गहना का चाव और उनके डिजाइन में श्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। स्त्रियाँ चूटिया के अलावा टीका काटा पाजेब अगूठी बाले तथा नेकलेम जैसे सुगन्ध गहना का ही शृंगार करती हैं?

प्राचीनकाल में यहाँ अनेक प्रकार के महिला भूषण होते थे। ये महाजना तथा अथ घनवानों में साने चानी के बनने और साधारण वर्ग में रामे-जसरे के गहन भी

- 1 अस्सी कलया रो घाघरो लावण में लुक् जाय, छोटो बालमा।
- 2 ओढ़नी पर जरी व खरी तिनार का नाम होता था। साधारण राजपूता दारागो तथा चारणा—नायका की स्त्रियाँ का पहनावा नीले रंग का घाघरा हुआ करता था। आसवाला में विधवाएँ कगनिया रंग की लहंगी आढती और बाले रंग की काबली पहना करती थीं।

प्रचलित थे। धनवानों के गहने जड़ाई और मोनेकारी के कार्यों से सुंदर बनाये जाते। किंतु गरीबों के गहनों में भू गिय, मोती मिणिये और कपड़े की कानग से भी साज सज्जा हो जाया करती थी। पर धनवान स्त्री पुरुष पगो में सान के गहन नहीं पहन सकते। परों में साना पहनने वाला “साना नरस” कहलाता जो राजा महाराजा की स्वीकृति से खिताब प्राप्त होता था। बरात जिस शुभ अवसरो पर जन बाहन जानवरो का भी सुंदर वस्त्रा भूषण पहनाये जाते थे।¹

औरता के अनंतर शृंगार की वस्तुएँ कालू के दिसावरी लाग, सी साल पहले ही नान वपरान लग गए थे। व पांच पांच मात सात वर्षों की मुसाफिरी करके वापिस घर आते, तब अनक प्रकार की नवीन वस्तुएँ माप साया करत थे। इस परदेशी महामनों के घर आ जाने पर उनकी औरतें प्रात साठ से उठ कर अपने दाँता में कसीस व मस्ती का प्रयोग किया करती थी। स्नान के समय पेई से साबुन की बट्टी निकाल कर लगाती तथा सोहें से कपड़े धोया करती थी। सिर बुधबानी तब भण मीठी कठवाती और प्रत्येक दिन सध्या समय बासवाली भी लगाया करती थी। राजवश और धनिक वर्गों की नारिया केश प्रसाधन के लिए सेविकाएँ रखनी जो केशकारिणी कहलाती थी। माजनापरात एस बड़े घरों की नारिया अपन बटुएँ से धीकणी सुपारी निकाल कर खाया करती थी। मेहमानों की खातिरदारी के लिए अमीर घरों की औरतें पीपल और अचार भी संग्रह करके रखती थी। बढिया दपण रबट की महान काधमी टीकी दालिय मूरज-चाँद, सलमे मितार हींगलू हाथों के लिए मेहवी आँखा का सुरमा, ताणी, आटी खुसतू का तेल इत्र लाल तथा चीड़ मोती कण्ठ के गर एव आरमी अमूठा इत्यादि के अनुपम जागओहल्ले साज, लोक मुख विवरण के साथ पाए जाते हैं।

वसे सौभाग्यवती सामान्य नारियों के प्राचीन शृंगार साधना में सिर धान के लिए बही छाछ अँठा मेट एव चिटकी का वणन मिलता है। कपड़े धोने में वे सज्जी सोडाक्षार काम लेती, पर शुभ अवसरो, विवाह शादिया एव उसक पुन ज में पर पीठा खदटन लगा कर नहान का आभ रखाज था। विशेष शृंगार वस्तुएँ नववधुएँ अपन पीहर से भी साथ लाया करता थी। जैसे घर व्यय के लिए इडदूणी, जामी और भाङणे तथा देवर नणदी का भेंट स्वरूप खोपरे तागडी, मोलिया आटलिय काकणिये आदि सुंदर चीजें देने की प्रथा थी।

खान-पान—यहाँ का खान पान बाजरे की रोटी और माठ की दाल प्रतिष्ठ है। बाजरे का खीचड़ा मध्या का और डावा गर्मी का भोजन हाता था। कई लोग दूध और बाजरे की रोटी खान का भी वणन करत हैं। गेहूँ की रोटीया जीर हरी साग-

- 1 ऊँटा, बला, घोडा और हाथियो के वस्त्रा में बढिया चूल्, छेवटी एव पाखर पहनाये जात थे। नेवर नवेल बालिया, हार गौरबद एव चाँदी, सोने के तुरें माहर-बलचा आदि में अपने बाहन मजाय जात थे। अमोरा के लिए सोहरी (आरामदायक) तथा तेज चाल के फोरे हुए ऊँट, नाचन वाले घोडे और चूमन वाले हाथी हुआ करते थे। ऊँटा नो फूल, बल एव पत्तियें कडा कर उतराया करत थे।

- 2 भारतय चिन्तन का इतिहास—ने० रमेशचंद्र पृ० 72

सब्जियाँ का प्रचलन अब बहुतायत में हो गया है। घी, दूध, दही और छाछ राबड़ी यहाँ से अब बिल्कुल लुप्त होन लगी हैं। पहले दूध और घी के चक्कर वाले का उपेक्षा का जाता था। लेकिन अब दूध का व्यापार घटने से होता है।

उत्तमवा ल्यौहारा और विवाह आदियाँ में जन माधारण के यहाँ चावल लापसा तथा हलवा उनाया जाता। मयमवग में आजकल हनुवे की जगह विशेष रूप से बूँदों (नुकनी) एवं अय मिठाइयाँ भी बनन लगी हैं। गाव के घना वग का पान पान सहरी खान पान के सामान है तथा इस वग की विवाह आदियों में भी मभी प्रकार के मिष्ठान बनाने जाते हैं। पहले मेवे की खीचड़ी में चावल का अधिक मेवा (नोत्रे पिस्ते और घादाम के गोटे) डाला जाता था। मिठाइयों में बर्निया कण्टर तथा चाँदा के वग का प्रयोग अधिक था। दाल के हलुव और पावस तम्मी (लौंग) में भी पचाए जा दिया जाता था। आजकल नाम मेवे की खीचड़ी और हात हैं केवल डालडा मीजित पीने चावल। पच्चास साल पहले यहाँ किसी के घर एक जेबार्न आ जाता तो मन (किटल) पक्षे आट में प्रदिया थी का लुवा उनाया जाना और सारे परिवार तथा पत्नी के बच्चे वगैरह साथ खाना पाने। कानिवाजी की कड़ाई (प्रमाद) वगैरह नव ही इस तरह से बटा भाग्य का आयोजन रखते थे। सगे सबधियाँ के साथ विवाह आदियाँ में भोजन करने पर आपस में काइय (ग्रास) बदलन की प्रथा यहाँ बनी सुन्दर एवं मनहमयी थी। भोजन के पश्चात् पान सुपारी, लौंग, इलायचा की मनुहार करने का रिवाज था।¹

मेहमान—विशेष कर जवाई का पान चवान देते सब साथ में खपया भा दिया जाता था। उसके लिए चैवर, कसार, भातपूए, लाडू जेबो तलबो चूरमो दूध पेने दाल बाटी सई मानू गकरपारे सुहास केरिया फलिया पापडी सलोनी वगैरह दान तथा भाति भाति के मिष्ठान व नमकीन घन तेल नर करके बनाये जाते थे।

कानू गाव के लोग में पहले मुख्यत मोठ और बाजरे का ही चावल प्रचलन था। यहाँ के लोग गहू से ताँ परिचित मात्र ही थे उसक स्वाद से बिल्कुल अनभिज्ञ होते थे। गेहूँ की राटी के लिए लोग बाग बड़े लालायित रहते थे। बघारे एक भाले बच्चे को बन्नी गेहूँ का एक दाना मिल गया। उसे लेकर वह दौड़ा गेटा घर जाया और अपनी गिण्ठनी बड़ी (बडिया) से कहने लगा— बड़ी ओ बन्नी। मे गिहूँ खाले भाई (गिण्ठ) न दूध आसी। इसी प्रकार एक बूढ़ी चमारी—बटी चौधरी के घर छाछ नैन गड। चौधरी के छाट सटके को रेलगती बाजरी के साथ जाया हुआ गेहूँ का एक दाना मिल गया। भागकर बड़ी के पास गया और कहने लगा— बन्नी गिहूँ ओ! गिहूँ। चमारी बड़ी बोली— बेटा तेरे गिहूँ रो नादीद है बड़ी तो आपसी ऊमर में गिहूँ बिरिया तीन घसकाया है। (बेटे गेहूँ का आश्चर्य तेरे है बडिया ने तो अपनी गिण्ठनी में तीन बार गेहूँ खाये है।) बच्चे ने पूछा— तीन बिरिया कए ओ बटी? बड़ा— एकर

- 1 मेहमान के लिए टुकड़ा चिलम चडस भाग गाजा और अमल मनुहार की भी प्रथा था।
- 2 रेल प्रचलन के बाद कोटकपूरा, कसूर जादि स्थानों से बाजरा लाकर व्यापारी बेचन। उसे रेलगती कहते थे।

तो बनाछ मे दूज हथवावण मे, तोज तेरै बापग व्याह मे ।” फिर कहावन चली—

मास्टर हो चोखा गेहूँ खाव ।”

इसी तरह एन चौधरी के घर खाती काम कर रहा था। दोपहर मे वह खाना खाने बठा ना चौधरानी न पहले उसकी थाली मे दो गेहूँ की रोटी, शक्कर-घी के साथ परोस दी। चौधरा क छोटे बच्चे ने कारीगर के लिए परोसी गई थाली मे गेहूँ की रोटिया पर ताक (नट्टि) सगाली। थाली खाती के मामन घरी गई और खाती खाने म पहले अपने हाथ धान लगा। इस समय चौधरी वाला लउका परोमी हुई उस थाली से झपटकर गेहूँ वाली राटिया लेकर दे गया तेतीमा (भाग गया)। आ जावे। ओ जावे। दाँता से तोड़ता खाना हुआ घर से बाहर दूर तक भाग गया। पर वतमान (म० 2036-37) के मजदूरो न काम के बदले अनाज, मे गेहूँओ से घर भर लिए हैं। बिन्दु

घाघा लागे घाव घी गेहूँ भाव घणा।

अडा तो उमराव राटया मूषा राजिया ॥

फल और सजिया—फला म बटे बडे मात भतीसे मतारे काकडिये होते हैं। यहा की रागजड के मतीर बटे मीठे और स्वास्थकर माने जात। इनमे भूरा, पट्टाला सीकाला मूनपट्टा और आल नाम के मतीरे बहुत मीठे होते। इसके खान से आनद तथा रम की प्राप्ति हाती। यह जीवनदायी सजल'फल प्रत्येक रोग का नाशक तथा अद्वितीय द्रव्य क समान है। वनमान समय मे मतीरे के बीज भी बडे उपयोगी होने जा रहे हैं। बादाम, काजू, पिस्ता की कमी महंगा म बिवाहात्सव पर मतीरे के बीजा की मिंगी (गोटो) मे बरफी (कनलिया) बनाई जाती है। पमारी इनको ठंडाई म मिलाकर बेचते हैं। पहले यहाँ हरा फल (मतीरें) बेचना पाप समझते थे। अब इनका खूब व्यापार होता है।

सजियाँ—कनडी व कचरिया (काकडिये और काचर) की सज्जी बड़ी स्वादिष्ट होती हैं। मोठ और ग्वार की फलिया भी सज्जी के काम आती हैं। इनकी काचर-काकडिये के साथ मिलाकर भी सज्जी बनाई जाती हैं। केरिये और सागरी यहा की अचार सामग्री है। कालू मे मूम्बी या कुम्बी का स्वत पदा हान वाला पीछा सज्जी के काम लिया जाता है। यह पीछिक व्याघ्र पदाध कुकुर्मुता भी कहलाता है। इसमे प्रोटीन, खनिज और विटामिन जैसे पीछिक तत्व काफी मात्रा म पाये जाते हैं। कालू मे पीप तथा खीप की फलिया की भी सज्जी बनाई जाती है। यहा ग्वार पाठे का साग तो बडा सामग्री एव गुणकारी माना जाता है। पत्ता के साग चीलाई, सूखा पालक, पानमेथी के होत हैं। व मूले, वंगन कूमडा और सौगरी के साग भी होते हैं। यहा पर खेलंगी पापलिय गोठके बानन काचरी और छोनेटी के सूते साग होते हैं। बडी, पापड व मोगर भुजिया के सम्माननीय अन्न के साग बनाये जाने हैं। कालू म छाछेनो आलणियो, सिराबडा तथा बट्टी चटणी की भी सज्जी स्वरूप काम म लेते हैं। यहाँ का जन साधारण काचर की चटणी (मिच के साथ काचर निचाडना) एव मतीरे की पिरी (गुदे) को भी मज्जीरूप मिश्रण का राटी खा लेते हैं।

द्वितीय प्रकरण

लोक रजण एव लोक मगल

भाषा साहित्य और संस्थाएँ—यहाँ की मातृभाषा उत्तरी पश्चिमी राजस्थानी है, जो इस प्रदेश में मुख्यतः बाली जाती है। इसका ब्रह्मिक रूप से तो प्राचीन भाषा का पद प्राप्त हो चुका है परन्तु सर्वतोरूपेण व्यवहार में अभी कुछ विलम्ब का अनुमान लगाया जाता है। अभी हमारी मातृभाषा राजस्थानी का वाछित स्वरूप और पद मिलने में लोभ और अकर्मण्यताओं की अनेक बाधाएँ हैं। क्षेत्र के पड़े लिखे लोग साहित्य-संस्कृति की बातें हिन्दी में करते हैं तथा घनिक वध भी जन सामान्य के समक्ष हिन्दी बोलकर अपनी विशेषता जतलाता है। किन्तु यहाँ की मातृभाषा सरल एवं सुन्दर है। इसका वाच्य भण्डार बहुत बड़ा है। भाषा में दोहरे शब्दों का अधिक प्रचलन है, जो कि भाषा को रोचकता प्रदान करते हैं। नमूने स्वरूप कालू क्षेत्र में प्रचलित कुछ दाहदे शब्द प्रस्तुत हैं —

अतर—धर	आका—बाका	ओल—छान
अगळ—ढगळ	आधो—परधो	अग—भा
अवार—बवार	आव—आव	अ—ट
अरु—बलू	इज्ज—बिज्ज	कळ—कज्जा
अलग—धलग	इन—बिन	कण—कतीण
आळा—मोरी	उवळ—धुवळ	कस्सी—कुवाडा
अरस—परस	उठा—घठा	काली—काली
अठसा—मठसा	उठावो—पटको	काई—किली
अलड—पलड	उगळ—मुगळ	काठ—पील
अळया—सळयो	ऊँचा—नीचा	काठा—माठो
अळा—धळा	ऊदड—गूदड	कारो—कुटको
अलाय—बलाय	ऊँधा—पाधरा	कार—गार
अळी—सळी	ऊल—फल	कास—फिकर
अरुली—परुल	अडे—छेड	कुत्ता—बिल्ला
अस्त—यस्त	अकलो—दोकला	कारु—कमीण
आई—गई	अँक—भेक	खरच—बरच
आळो—मोळो	अेढो—टामळो	खरला—खूसडा
आट—साट	अळ—डळ	खाड—खापरा
आली—दोली	अरा—बरा	खाडा—बोरा
आकळ—व्याकळ	ओर—छार	खाटो—मोठो
आढा—भूभो	ओर—घोर	खाणा—दाणो
आटा—टटो	आछा—लामा	खुलक—मुलक

पाळयो—पोस्तो	माण—ताण	सास—पात
पान—पूल	भीठो—चीठो	साठ—माठ
पाणी—लूणी	भौज—मस्ती	साधो—बुधो
पाणी—पाणी	यारी—दोस्ती	सिवळ—भिवळ
पाती—पोठी	याग—याग	विरख—पथरणा
पूर—पल्ने	रावळ—विरावळ	सोरो—पूडी
पला—दूजा	रावडी—रेळो	साधा—फिरोळो
पसो—पापी	रण—कण	सूरज—चांद
पाग—नाग	रिपिया—पीसो	मुणी—अणमुणी
फूस—फरटो	राना—तना	सेठ—साहूकार
फांगलो—फूस	रोटी—राजी	स तरो—ब तरो
फाग—दुगी	गेग—दोल	माचा—विचारा
बारा—बाट	गई—मीरी	मुई—सडी
बूठ—बडोरो	रणक—पुणक	सी—पचास
बूढो—ठेरो	रोब—दाब	हावपा—दाक्यो
बाणियो—बवाल	रिगत—भिछा	हट्टो—कट्टा
बठा—सुता	रोही—राहमो	रोळा—बधा
ध्याह—मावो	लढड—बमड	हबो—रबी
वर—विराघ	लढाई—झगडो	हाती—पीळी
बूजो—बाठ	साट—पाट	हाल—बेहाल
मला—बुरा	लिया—दिया	हाथे—बाथे
भणाई—गुणाई	लावा—दूता	हाथ—गग
भूल—प्यास	लागो—दोसो	हडक—फडक
भाव—भगती	लूण—सखण	हाया—पाथी
भूत—पलीत	लवर—पवर	हेळ—मळ
भूल्या—भटवयो	लूखो—लाणा	होको—चिनम
भरण—परण	लसर—पसर	वत्तो—कमत्ती
माचा—डलो	मिला—मिटो	वास्ते—बोभर

कालू में घर गृहस्थी के विज्ञापन और साधारण शब्द—

घर—देवता रम जिंसा । नर—देवता । पूत—सुलक्षणा । नारी—लिछमी ।
क्याएँ—बिडकोली । नीर—गगाजल । गाय—सुरघेन । ऊँट—उडणी जहाज । भस—
हथणी सी । बीज बरमोला सा । लपरी—कचोळा सी । जळ—सरवत सो । गिरी—
मिसरी सी । काकडिया—मतोला सा । जनता—बीडी नाठ । राजा—द्वितीय भगवान ।
राजगत—रामगत । तगत—सा मंगत । सत्तामद—तदात्रास ।

रग—लालचुट । लाल—कुरळ, लाल—चिम्मी सो । काळा—टीट । काळो—
बुट, काळो—जुरळ । घोळा—फट, घोळो—घप । भूगो—छम । हरयो—क्व ।
पीठी—पेवडी पीठा—कैसर । गोरा—मुट । लामो—लडछ । ओछा—गदमीगणा ।
रोटी—फलका सा लडछ । साग—सिफाया रो सा । रावडी—खार सी । छाछ—

बादो सी, डोको रोप जिसी दही—भाठो सो । धी—तेरवो रतन । बाजरी—पीतल सी । तेल—कसाधार । मेवो—कापर बोर । चारो—मैंहदी सो ।

काल् क्षेत्र के जन जीवन मे प्रचलित लोकोक्तियाँ—राजस्थानी की लोकोक्तियाँ यथाय जीवन से जुड़ी हुई वे उक्तिया हैं, जो मानव जाति के विराम के साथ विकसित होती चल रही हैं । लोकोक्तियाँ मे सामाजिक और लौकिक सत्य प्रकट होता है तथा व मानव के काय कलापा के प्रति व्यंग्य मुखरित करती है । लोकाकिनया लाव जीवन मे अधिक प्रचलित हैं तथा बडे ही सु दर ढग से और सफलतापूर्वक प्रयोग म लाई जाता है । उन बोलचाल की भाषा म प्रयुक्त हान वाली कुछ लाकोविनया निम्नलिखित है—

सीटी क बाधना (बढ़ या बीमार के साथ कया का विवाह कर दना), कत्र म पग पसारणा (मृत्तु के पास पहुँच जाना), सिर खुसना (विषका हा जाना) मद भाग (बधाय) तीजी ईस हाना (अतिम श्वास लेना) पग भाङ्ग हाना (गभ रहना), पेट म गादडा बडना (मदेह हो जाना) टाग ऊपर रखना (अपनी बात न छोटना) आठणियो नाखणो (स्त्री का पुनर्विवाह) दातो में लावण लिए फिरना (माहताज बनना), पूठ देना (दगा देना) लाड खाना (धून खाना) धूड रा सिनाम (चूठा पगडा) काठ रो हाडी (धोवैवाजी), लाडे गी धार (मुश्किल बात) कान रा बच्चा (शीघ्र बात मानन वाला), कर रो खूटा (भजवूत मनुष्य) कापर रो बीज (धून व चगडालू), गादड बभकी (चूठी डरावनी) टग नकडी (झूठ कपट), भेटा खाल (दला देवी), कदार काकण (डोग), बूराडो मतीरा (गुणवान व्यक्ति) कूटी डोल (डफोल सख), उठाऊ बूल्हा (बघरबार), वाषा वावल (फच्चा बात), पाको पान (बढ़ मनुष्य), गाजरवाली पू गी (दीना जोर का फायदा) अलत रो बीज (कुछ नहीं) घेण रा दाणा (कृपण का घन), वन वन रो काठ (जगह जगह के व्यक्ति), ठाड रो डोकी (बढ़ का भय), नाज रा कीडा (ज्यादा खाने वाला), बूर रा लाडू (निस्तार चीज) पोपा बाई रा राज (अनियमित काय) हमोर हठ (पक्का प्रण), घूडेजी हाळी चाकरी (बिना लेन देन का काय) कू भकणवाली नीद (अधिक आलस्य), पुटियाळा पग (अनीति कर्मा), घोरी वाला यूक (जबरन लडाई लेना) मूछ बाळो वावल (झूठा अभिमान), कुत्त हाठा नारळ (बकार वस्तु), कू जड रो गल्ला (बिना हिसाब किताब का व्यापार), पीम रा पूत (कजूम) छावड हो जाना (अधिक प्रसन होना), काळजरी कोर (प्रिय), डोका नीरणा (व्यथ की बडाई) ।

प्राचीन समय मे कालू के लागो मे मनुष्य क सुया क वार म इस प्रकार की धारणा थी, भाषा देखें —

पत्तो सुख निरोणी काया,
दूजो सुख घर म माया,
तीजो सुख पतिव्रता नारी,
चौथो सुख पुत्र आग्याकारी
पाचवो सुख नीर निवासा
छठा सुख राज म पासा
सातवा सुख स्वय म वासा ॥¹

- 1 सात भुखा की तरह आठ दुख—पहला दुख हाथ साकडा दूजो दुख बरी वाकडा तीजो दुख पाडोमी चोर, चौथा दुख घर म ब्रडवोर पाचवो दुख कया कूवारी छठा दुख पुत्र जुवारी सातवो दुख परायो जोखो आठवरा दुख हाथ म होवा ।

लेकिन युग परिवर्तन के साथ यहां के लोगो की उपरोक्त सुखो व प्रति भावनाएं तथा धारणाएं बदल गई हैं जो व्यंग्य में अब इस प्रकार बतलाई जाती है।

पला सुख टोपनी धोळी
दूजो मुख पगरखी म्वाळी
तीजा मुख हाथ मे झोळा,
चीथो मुख राज म रोळी,
पांचवो मुख जनता मोळी
छठो मुख नार अडोळी,
मातवो मुख गुंडा री टाळी।

राजस्थानी साहित्य—कालू मस्मृति की विशेषता है कि यहां की भाषा में हार्दिकता, सरमना तथा तरसना है और यहाँ की बनी हुई मकड़ी की सन्ध्या में सृक्ति, मुक्तभावधिया परम्परित रूप से जन कण्ठ पर चलती आ रही हैं। अतः कालू को मैं तो राजस्थानी लोक साहित्य का गन्द भंडार ही कहूँगा। यहाँ राजस्थानी भाषा की अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं। ई० सन 1946 कालू में कळायण नामक पुस्तक बीकानेर महाराजकुमार श्री अमरसिंहजी को भेंट की गई। कवि सत्कर्ता को राज्य सनद और पुरस्कार मिले। उक्त अभिनव काव्य (कळायण) को प्रो० श्री नरोत्तमदासजी स्वामी ने राजस्थानी साहित्य की अमर वस्तु सिद्ध होना बताया है।

“दी कल्चरल हैरीटेज ऑफ इंडिया” नामक अंग्रेजी पुस्तक में राजस्थानी साहित्य के खण्ड में कळायण की समीक्षा में उमे राजस्थानी साहित्य की उच्च का यदृति लिखा है—

1 Extract from chapter on Rajasthan literature in—The cultural Heritage of India

Vol VI PT V

NanuRam is a poet of rural nature and village life His Kalayana (Dark Clouds) is a Vivid Picture of Country life of Rajasthan all the year round The poem is a piece of Superior art to be ranked as one of the immortal works of Rajasthan literature

कळायण की समीक्षा, समीक्षक और पत्रिकाएँ—1 शोध पत्रिका उदयपुर भाषा सं० 2006 वि० भाग 2 अंक 2—डॉ० पुरुषोत्तम मेनारिया।

2 राजस्थान भारती बीकानेर, अप्रैल 1950 भाग 3 अंक 2 मुरलीधर यास।

3 वरदा विस्तार, अक्टूबर 1959 वर्ष 2, अंक 4, अर्वाचीन राजस्थानी काव्य—प० श्रीलालजी मिथ, एम० ए०, बी० टी०।

4 युगा तर—जयपुर, मासशीप, शुक्ल 1 सं० 2007 (रविवार 10 दिसम्बर 1950) वर्ष 9, खण्ड 2, अंक 8, श्री जवाहिरलाल जैन (सम्पादक)

अनेक साहित्यकारों एवं विद्वानों ने कळायण पर अपनी प्रशस्तियाँ एवं अभिमत प्रेषित किए हैं। अतः कतिपय नाम उद्धृत अपेक्षापूर्ति हेतु दृष्टव्य है—श्री भवरमलजी सिंधी कलकत्ता (सा० 1-12-49) श्री ईश्वरदासजी आलान (रूपीकर पश्चिम बंग व्यवस्थापिका मभा सा० 3-12-49 ई०) श्री भूरामजी अग्रवाल कलकत्ता हाईकोर

(ता० 5 12 1949), श्री रत्नलाल जाशी c/o जालान स्मृति भवन 186, चितरजन एवयु कलकत्ता 7, (ता० 5 12 49), श्री बेणीशकरजी बी०एल० 2289 चितरजन एवयु कलकत्ता । श्री रामदेवजी चोखानी, राजस्थानी परिषद् कलकत्ता (ता० 3 12 49) श्री भवर्मल नाहटा (राजस्थानी परिषद् कलकत्ता ता० 1-12 49), श्री अनन्तप्रकाश दीक्षित Lt—Col कूचविहार (ता० 23 12 49) श्री महादेवलाल सुरेका, संपादक— निमाण" व मंत्री पूर्णिया जिला मागवाही सम्मेलन (कटिहार) ।

राष्ट्र कवि श्री मधिलीशरण गुप्त, ई० म० 1951, म० 2009

श्रीमान
मधिलीशरण गुप्त
मुम्बई 401 001 आना है
'को काया' के लिए 4 म
आपको मुझे लिख चुका है।
मुझे पता है कि आप लिखने का
आपका पुत्र नहीं है। पता
आपका नहीं है, स्वयं आपका
हूँ और उसमें कोई दोष नहीं
है। मैं जानने के लिए
• मुझे नहीं है। मधिलीशरण
गुप्त के लिए

POST CARD

ADDRESS ONLY



श्रीमान मधिलीशरण गुप्त
पोस्ट कार्ड
मुम्बई 401 001
Kantam
५.

मधिलीशरण गुप्त
पोस्टकार्ड ।

मधिलीशरण गुप्त के कार्ड
का पता ।

श्री भगवतमिहत्री मेहता कमिशनर बीकानेर ता० 28 3 50

श्री जो० पा० मकमला श्री तुलसीराम त्रिवेदी, श्री पुलराज पुगलित ता 15 1 52

श्रीरामचन्द्र कल्ला इमपवटर ऑफ म्बूनम् बीकानेर दिवोजन ता० 3 1 53 ।

श्री सादुल राजस्थानी रिसर्च इस्टीमेट बीकानेर द्वारा स० 2006 म बताया
कति प्रपम बार प्रकाशित हुई थी । साहित्य जगत व माध-भाष विद्या के क्षेत्र में भी
यह पुस्तक बरत पसंद की गई । राजस्थानी लिखविद्यालय के सहित ईयर एवजामिनर
आप दो श्री ईयर विद्या कान में मन् 1972 म 1976 77 तक (कॉन्स्टा ऑफ आर्ट्स)
विद्या प्रपम पत्र पत्र म निगर कवायत के मु रर स्वयं आज रहे ।

**SECOND YEAR EXAMINATION OF THE
THREE YEAR DEGREE COURSE, 1974
(FACULTY OF ARTS)**

HINDI

FIRST PAPER—पद्य

(Also Common for B A Hons Part I)

TIME THREE HOURS

Maximum Marks— 100

१. प्रद्योतिचित्र ग्रन्थारणों की ससबभ व्याख्या कीजिए —

(क) विपातहि चूब परी में जानी ;

भाबु गोविंदहि देखि देखि हौं नई समुझि पछितानी ॥
रवि नचि सोचि सँवात्रि सकल भग चतुर चतुर टानी ।
दीठि न दई रोम रोमेनि प्रसिद्ध इरहिहि बला नसानी ॥
कहा करों प्रति मुख दुई बना उमगि चलत भरि पानी ।
'सूर' सुमेर कथाइ कहाँ बौ बुद्धि बासनी पुरानी ॥

अथवा

विलमिल फूला माँ, पुन महकार उदाव ।
मीठो भोजन जीभ जियाँ मगतो गुण नाव ॥
कुर बलायण लोर, निलोरी बादल झुरल ।
मुडता टीका माँ, भोम सँ बाता करता ॥
घनल बाण नभ ठाण बालका हरल बछाव ।
पलक-सलक खान बीज दिन रग बणाव ॥
सावट-छाया तोड जोड भट जान बणाव ।
धरम-वन बर बणा बीज गणा पँराव ॥

(सावण बीकानेर से)

लेखक की राजस्थानी भाषा की दूसरी पुस्तक 'समय बायरो' का प्रकाशन स० 2009 में हुआ । समय बायरो की भूमिका उमर कालेज 'बीकानेर' के प्राध्यापक श्री मेघराज वर्मा 'मुकुल' ने लिखी । भूमिका में श्री मुकुल ने पुस्तक का एक उत्कृष्ट काव्य रचना बताया है । 'समय बायरो' पुस्तक की समालोचना 'निर्याम' पत्र के संपादक द्वारा की गई, जिसमें समालोचक ने पुस्तक को एक प्रगतिवादी सामाजिक काव्य बताया है । 'साप्ताहिक-ज्वाला' पत्र में भी समय बायरो पुस्तक की समालोचना की गई है जिसमें पुस्तक को कवि की माहिँय जगत में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि बताया है । श्री राहुल साठ्ठ्यायन, हान निलफ हैपीवेली, मसूरी ने लिखा है — 'समय बायरो' में मचमुच सीधे हृदय में चुभ जाने वाली कवि की पंक्तियाँ हैं । नानूरामजी अपनी कविता से मरुवाणी को समझ करें यही मेरी कामना है ।' ता० 13 9 54 । आधुनिक राजस्थानी साहित्य का

लेखक भूपतिराम माकगिया न 'समय वायरो' को कवि का प्रगतिशील कविताज्ञा का सग्रह बताया है। अलगोजा में भी इसकी कविता चुनी हुई है।

बालू में राजस्थानी भाषा की तीसरी पुस्तक 'दम देव' है। दस देव का प्रकाशन सन 1955 ई० में हुआ। प्रस्तावना में पुरुषोत्तमलाल मेनारिया न कहा है— 'दम देव रा छ' राजस्थानी प्रकृति देवी रा स्तोत्र रूप में अवतरिया है। राजस्थान भारती रे गल में बिराजमान होवण बानी राजस्थानी पुस्तक भाला में 'दम देव' रो मोनी पोवना म्हन धणो हरष है।' राजस्थान भारती के भाग 6 अंक 34 जून 1959 में दम देव की समालोचना करते हुए डॉ० परमेश्वर ने लिखा है— आप राजस्थानी के जान-मान कवि हैं। बालू के बामी होने पर भी आप हृदय के उज्ज्वल और मुँह के मीठे हैं। दमदेव में कवि ने पाँच भूमि देवा की स्तुति गाई है। प्रत्येक देव की अचना में कवि ने माला मूधी है। देवों के परिचय के लिए सस्कर्ताजी बघाई के पात्र है।'

आधुनिक राजस्थानी के कथा साहित्य में 'शोयी' का प्रकाशन स० 2014 में हुआ है। शोयी बीम कहानिया का सुंदर सग्रह है। शोयी की भूमिका में श्री अश्वमेध शर्मा प्रधानाचार्य, भारतीय विद्या मंदिर बीकानेर ने लिखा है— 'ये कथाएँ जीवन में डूबकर लिखी गई हैं। राजस्थानी मनुष्य में यह नये माड का सकेत है।' डॉ० राजेन्द्र-प्रसाद, राष्ट्रपतिभवन नई दिल्ली (9 जून 1957) राष्ट्रन सांस्कृत्यायन हान क्लिफ हंथोपरी मसूरी (ता० 22 3 57), मधिलीगरण गुप्त चिरगाव झासी, डा० कन्हैयालाल सफल हिंदी मस्त्रन विभाग बिन्ता आटस कॉलेज पिलानी श्री विद्याधर शास्त्री बीकानेर श्री नरोत्तमदास स्वामी बीकानेर विश्वेश्वरनाथ रेड मन्मन्त्रोपाध्याय आदि अनेक राजनैतिक व साहित्यिक क्षेत्रों के जान मान विद्वानों ने शोयी पर अपने प्रशस्ति-पत्र एवं अभिमत भेजे हैं।

'दसदेव' श्री नानूराम सस्कर्ता की एक सजनामक कृति है। इसका प्रकाशन स० 2023 में हुआ है। इसमें लेखक ने समाज में व्याप्त दम घातक रूढ़ियों के ऊपर क रारा व्यंग किया है। इसकी भाषा लोचदार एवं क्ली सरन है।

'घर की रेल' लेखक का तीसरा कहानी सग्रह है। इसमें इक्कीस लघुकथाओं का संग्रह है। 'घर की रेल' का प्रकाशन सन 1969 में हुआ है। डा० मनोहर शर्मा संपादन करण न घर की रेल पुस्तक के बारे में लिखा है— 'लेखक की ई पोथी ने साहित्य जगत में पुरो सम्मान मिलसी जर, का री कलम सू ईंधी भात राजस्थानी साहित्य की श्रीवृद्धि हुवनी ई रहसी। श्री सम्कर्ताजी राजस्थानी भाषा रा लूठा कवि अर लेखक तथा 'नोक' साहित्य रा धारणी है।

'घर की गाय' सम्कर्ता की इसी शृंखला का चौथा कहानी प्रकाशन है। इसकी पंद्रह कहानियों में सामाजिक गतिविधियों का यथाय चित्रण है। पुस्तक का प्रकाशन सन 1970 में हुआ है।

'छप्पय सतमई' श्री नानूराम सस्कर्ता की राजस्थानी काव्य कृति है। इसका प्रकाशन सन् 1972 में हुआ है। 'श्री नरोत्तमनाथ स्वामी ने छप्पय सतमई के अभिमत में लिखा है कि— 'कवि न राजस्थानी साहित्य भंडार को अंध महत्त्वपूर्ण देन दी है।' मनस्पली विद्यापीठ (राजस्थान)।

श्री विद्याधर शास्त्री एम० ए० टाइरेक्टर, हिन्दी विश्वभारती दाध प्रतिष्ठान बीकानेर ने लिखा है—“इस उत्तम मग्न के सजन के लिए सस्कता महोदय सवधा प्रशसनीय एव सम्माननीय है।” (28 11 66) श्री शम्भूदयाल सक्सेना बीकानेर न लिखा है—‘श्री नानूराम सस्कर्ता राजस्थानी के सुकवि हैं। इनकी काव्य प्रतिभा किसी भी भाषा के लिए गौरव की वस्तु हा सकती है। राजस्थानी भाषा पर इनका जसा अधिकार है, वसा बहुत कम हा देखने मे आता है। इनके काव्य क हरएक वाक्य म मधुर की आत्मा का निवास है। मैं व्यक्तिगत रूप से सस्कर्ताजी की काव्य प्रतिभा का कायल हूँ और मुने उनके काव्य से सदब आकषण रहा है। (29 11 66) डा० दशरथ शर्मा जोधपुर ने लिखा है—‘श्री नानूराम सस्कता के कवित्व से प्राय सभी राजस्थानी किसी न किसी अंश म परिचित हैं। श्री सस्कर्ता का यह काव्य पाठकी के हृदय का अनकधा मस्जुतकर उहें सभी अवस्थाओ म कलमनिष्ठ होने की प्रेरणा दता रहेगा।’ (दिनांक 11 11 66)

डॉ० वामुदेवशरण अग्रवाल वाराणसी न लिखा है— श्रीसस्कता लाक सस्कृति के पुजारी हैं यह जानकर भी बड़ी प्रसन्नता हुई। इनका छप्पर सतसई म सरसता स्पष्टता तथा मामिकता का हादिक वणन दष्टिगोचर होता है। मैं ऐसी लोक सास्त्रुतिक भाषा सजना के लिए श्रीसस्कर्ता को धन्यवाद त्ता हू। (दि० 15 2 65) श्रीचन्द्रवान चारण, एम० ए० साहित्यरत्न प्रिंसिपल, भारतीय विद्या मंदिर बीकानेर न लिखा है— रस की दष्टि स यह रचना महत्वपूर्ण ह। इस प्रय की एक बहुत बड़ी विशेषता है इसकी ठेठ राजस्थानी भाषा। छप्पर छद अपनाकर कवि न ओ अलकारो से शाभित रचना की है वह भाषा के माधुर्य स बहुत निखर गयी। सवमुच श्रीसस्कर्ता मे महाकवि की प्रतिभा है और मैं तो उनकी महाकवि ही मानता हूँ। (15 8-64)

‘साकल सधान’ श्री नानूराम सस्कर्ता की खण्ड काव्य के रूप म राजस्थानी भाषा की एक सुंदर काव्य-कृति है। इसका प्रकाशन स० 2030 मे हुआ है। श्री चन्द्रवान चारण प्रिंसिपल भारतीय विद्यामंदिर बीकानेर ने इसकी विशेषता गिनाते हुए बताया है कि—“आ पोषी नतिक भावना सू ओत प्रोत है। इय मे एक तरफ पान अर कम रो समबय है जो दूखी तरफ श्रम अर उद्योग री मठता है। इय म राष्ट्रीय चेतना जगावण री बात है अर भेदभाव र खिलाफ स देस है।’ (दि० 2 7 73)

सकाणवणी ‘श्री नानूराम लेखक की राजस्थानी काव्य कृति है जिसका प्रकाशन सन् 1976 मे हुआ है। श्रीसस्कर्ता को इस पुस्तक पर पद्य वय का राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा सन 1977 78 का दो हजार रुपय का पुरस्कार प्रदान किया गया है। नवभारत टाइम्स नई दिल्ली राजस्थान पत्रिका जयपुर टाइम्स आफ राजस्थान बीकानेर नवजीवन उदयपुर, युगपक्ष बीकानेर शिविरा पत्रिका बीकानेर आदि अनेक पत्र पत्रिकाओ न श्रीसस्कर्ता की पुस्तक ‘सकाणवणी’ पुरस्कृत किए जाने पर अपनी प्रशस्ति एव अभिमत प्रकाशित किए तथा बधाई सदेश शुभकामनाओ सहित भिजवाये हैं।

गापीचंद ‘(राजस्थानी खण्ड काव्य) क रचयिता भी कालू के ही श्रीनानूराम सस्कर्ता है। इस का प्रकाशन सन 1977 मे हुआ है। श्री गायानकृष्ण जोशी, प्रधान सचिव, मादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर न गापीचंद के प्रकाशनीय म लिखा है—“श्रीसस्कर्ता राजस्थानी भाषा साहित्य जगत क जाने मान विद्वान लेखक हैं। इसम पूव उनकी अनक पुस्तकें गद्य व पद्य मे प्रकाशित हा चुकी हैं। सम्था उक्त

प्रकाशन पर गव का अनुभव करती हैं।" (विजयदशमी, अक्टूबर 21, 1977) डा० हीरालाल माहेश्वरी, एम० ए० एल एल० बी०, डी० फिन० डी० लिट०, प्राध्यापक हिंदी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर ने लिखा है— 'मा० म० श्रीनानूराम सस्कर्ता राजस्थानी के सुपरिचित साहित्यकार और मोन साधक हैं। इनका 'गोपीचन्द' शृङ्खला काव्य पढ़कर अतीव प्रमनता हुई। बोलचाल की प्रवाहमयी राजस्थानी में श्री सस्कर्ता ने एतद् विषयक राजस्थानी काव्या की परम्परा में एक और भावन कड़ी जोड़ी है तदय वे बघाड़ के पात्र हैं। मैं कवि के चिरायु होने की कामना करता हूँ। (दि० 12/4/75)

'गोपीचन्द' यह काव्य की समीक्षा में डॉ० श्री कहेयालाल शर्मा एम० ए० पी० एच० डी०, साहित्यरत्न, अध्यक्ष हिंदी विभाग, श्री डूंगर महाविद्यालय बीकानेर ने लिखा है— 'श्री नानूराम सस्कर्ता के 'गोपीचन्द' का कथानक बड़ा ही ममस्पर्शी तथा कायमय है। जीवन के दोनों छोरों, भोग और योग के मध्य में तबनीत सा कोमल कथानक पाठक को गलतधुन किये बिना नहीं रह सकता। माता भणावती जब गोपीचन्द को राज्य का परिचय करने बराबर को अपनापन का उपदेश देती है तब कथा का विकास में रोचकता आने लगती है और फलस्वरूप राजा द्वारा विशाल साम्राज्य का परित्याग किये जान पर कथात्मक आकषण चरम सीमा पर पहुँच जाता है। गुरु जालधर के आदेश से गोपीचन्द का अपनी भावा पत्नी और बहिन के पास भिक्षा-याचना के लिए जाना काव्य की दृष्टि में बड़ा कल्याणपूर्ण प्रसंग है। प्रस्तुत 'गोपीचन्द' काव्य घटना प्रधान न होकर चरित्र प्रधान है। भूलम्प से गोपीचन्द और उसके केंद्र बिंदु से अवाय पात्रों के चरित्रों पर प्रकाश कवि का मुख्य लक्ष्य प्रतीत होता है। 'गोपीचन्द' का मारा कथानक भाषा से छनछला रहा है। श्री सस्कर्ता जी 'गोपीचन्द' के मार्मिक कथा प्रसंग को लेकर काव्य रचना के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।"

आचार्य श्री परगुरामचतुर्वेदी ने लिखा है— श्रीनानूराम सस्कर्ता का 'गोपीचन्द' यह काव्य देखा, बड़ी प्रमनता हुई। बराबर भावना और बभर त्याग का अनुठा उपान्तरण है। मेरी शुभनामना स्वीकारें। परगुरामचतुर्वेदी (3-5-76)

कालू के राजस्थानी साहित्य में श्री नानूराम सस्कर्ता की कुछ अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ भी हैं। पद्य वग म 'स्यामजी दम दात', हरिरस-हजारा', आदि अनेक पाण्डुलिपियाँ हैं।

गद्य वग म भी दही रोटियो (बच्चों के निबंध) तथा 'डाई बिगा' (उपयास) आदि अनेक पाण्डुलिपियाँ पड़ी हैं। उपरांत पद्य व गद्य वग की अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ भी राजस्थानी साहित्य का कालू की अपूर्व देन है।

कालू में राजस्थानी साहित्य के हिंदी शोध ग्रन्थ—भारत में सोवन्त की स्थापना के साथ ही प्रांतीय सरकारों के आधिक सहयोग से साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में भा चेतना की लहर आई। फलस्वरूप सदा से उपक्षित लाक साहित्य के विकास को बढ़ावा मिला। राजस्थान का प्रांत, लाक साहित्य के क्षेत्र में एक अमूल्य सम्पत्ति का अखूट सजाना है। गाव-गाव और घर-घर में राजस्थानी लाक कला और लोक साहित्य की स्फूर्तपूर्ण यात्री के दक्षन मिलते हैं। सारे राजस्थान में अनेक विद्वानों ने लाक साहित्य की सतत प्रवाहिनी भाव धारा में अवगाहन करन हेतु पूर्ण योगदान दिया है।

राजस्थान व लोक साहित्य क्षेत्र में श्रीनानूराम सस्कर्ता की 'राजस्थान का लोक साहित्य' पहली पुस्तक है, जिसमें सर्वांगीण रूप में एक साथ सोचने का प्रयास किया है। अब तक राजस्थानी लोक साहित्य की विधाओं पर पृथक् पृथक् या छुट पुट रूप से अथवा एकाकी अंगों पर पत्र पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में लिखा जाता रहा। किंतु लोक कथा गाथा, लाकगीत, बहावतों, मुहावरों सेनो, बालका के वाणी विलास, पहेलियों एवं लाकानुरजन जैसे विषयों पर एक विश्लेषणात्मक पुस्तक का अभाव था। श्रीनानूराम सस्कृता के इस प्रयास से निश्चय ही लोक साहित्य के अध्ययन की सीमा में विस्तार आयेगा और इस विषय से सम्बन्धित विभिन्न अंगों का जो पारस्परिक संबंध है उस पर भी राजस्थानी सस्कृति के अध्येताओं का ध्यान आकर्षित होगा।¹

राजस्थानभारती भा. 67, भाग 9 अंक 4 सादर राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट बीकानेर में लिखा है— 'बीकानेर जिले के ग्राम बालू के निवासी श्रीनानूराम सस्कृता की हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग (हिंदी विश्वविद्यालय) ने उनके शोध प्रबंध 'राजस्थान का लोक साहित्य' पर साहित्यमहोपाध्याय की उपाधि प्रदान की है। यह उपाधि वितरण मुम्रिद्ध हिंदी सेवा साहित्यकार सेठ श्री गोविंददास मालपाणी ससद् सदस्य द्वारा हाल ही में सम्मेलन के दीक्षांत समारोह के अवसर पर किया गया।

श्री सस्कृता ग्राम बालू में वर्षों से अध्यापन कार्य करते आ रहे हैं एवं राजस्थानी साहित्य का सज्जन करते रहते हैं। आपका यह शोध प्रबंध राजस्थान के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

'लोकमत बीकानेर' तथा राजस्थानी वीर 362 बुधवार पठ पूना 2, (1 मई 1967) आदि अनेक पत्र पत्रिकाओं में भी श्रीनानूराम सस्कृता के 'साहित्य महोपाध्याय' की उपाधि से विभूषित होने का वतांत लिखा है। रूपायन संस्थान बोरुदा की ओर से श्री कोमल काठारी ने लिखा है— 'संस्थान का प्रसन्नता है कि राजस्थान के लोक साहित्य के क्षेत्र में एक नवीन पुस्तक प्रकाशित हो रही है। आशा है कि इस विषय के पाठकों को न केवल लाभ होगा किंतु वे इस प्रयास के द्वारा अपने भावी कार्यों को अधिक गहराई देने में सफलता प्राप्त करेंगे।' (दि० 5 3 68)²

नवभारत टाइम्स नई दिल्ली के अनुशीलन म डॉ० प्रभाकर माचवे ने लिखा है— 'फिर भी राजस्थान लोक साहित्य नामक इस प्रदेश की सस्कृति का उत्तुषधियों के संबंध में भ्रातियों का कुहासा छाया रहा है। श्री नानूराम सस्कृता के इस गवेषणापूर्ण ग्रंथ से इन भ्रातियों के निवारण में बड़ी सहायता मिलेगी।

इस अध्यायों में विभक्त इस ग्रंथ में राजस्थानी लाकगीत लाक कथा, लोक कथावतें पहेली बाल लाक साहित्य लोवानुरजन, लाक प्रचलित कुछ सध्यादि लिखित-अलिखित साहित्य के अंग उपायों का गोष और विश्लेषण बड़े ही विद्वतापूर्ण ढंग से

- 1 पुस्तक समीक्षा राजस्थान का लोक साहित्य (कल्याणसिंह)
- 2 राज्य के शिक्षा विभाग द्वारा संचालित शिक्षकों की विद्वतापूर्ण एवं सज्जनशील कृतियों का प्रकाशित करने की योजना के अंतर्गत बालू के श्रीनानूराम सस्कृता द्वारा रचित 'राजस्थान का लोक साहित्य' का प्रकाशन स० 2024 में रूपायन संस्थान बोरुदा की ओर से हुआ। (प्रकाशनीय)

प्रबंध में राजस्थानी साहित्य के विभिन्न पक्षों पर उपादेय सामग्री प्रस्तुत की है। लेखकों का प्रयास सराहनीय है।' आज्ञा है, पुष्पराज राजस्थानी साहित्य के विद्यार्थियों, गीतकर्ताओं और अन्य जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी मित्र होगी।

श्री गणेशधर टाटिया ने निम्ना है—'श्री नानूराम सरस्वती की इस पुस्तक में राजस्थानी लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं की रोचक सामग्री संग्रहित है।' (दि० 12 10 70 फानपुर) श्री मातृकाप्रसाद कोइराला मानीड' विराटनगर (मोरंग) नेपाल ने कहा है—'राजस्थान का लोक साहित्य या प्रचारा राजस्थानी साहित्य में प्राग्मणीय अभिवृद्धि है।' (दि० 15 9 68)

श्री भागीरथ कानोडिया, इण्डिया एक्स्प्रेस जयपुर पत्रिका में लिखा है—'राजस्थानी भाषा को समृद्ध करने का श्री नानूरामजी सरस्वती का प्रयास स्तुत्य है। मैं उनकी सफलता चाहता हूँ।' (दि० 9 10 68)

नागरी प्रचारिणी पत्रिका, पृष्ठ 72 में 2024 अर्ध 14 कागरी नागरी प्रचारिणी सभा के अडाजलि अब में पृ० 543 में लिखा है—'साहित्यमहापाध्याय श्री नानूरामजी सरस्वती का यह प्रयास प्रशंसा योग्य है क्योंकि राजस्थान के अप्रसिद्ध ग्रामीण अंचलों में बैठकर उत्तम पुस्तकालयों आदि माधन बिहीन एक बिचलतम महगों की परिस्थिति में यह एक सामान्य शिक्षक का ध्येयनिष्ठा अथवा सपना का सधुर फल है। यह ग्रंथ लोक साहित्य एवं लोक सभृति के प्रेमियों के लिए सग्रह करने योग्य है।'

कालू में राजस्थानी साहित्य के शोध ग्रंथ लिखन वालों में दूसरा नाम श्री किरण नाट्टा का है। राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर ने उनके शोध ग्रंथ 'आधुनिक राजस्थानी साहित्य प्रेरणा स्रोत और प्रवृत्तियाँ' पर डा० की उपाधि प्रदान की है। इस ग्रंथ का प्रकाशन सन 1974 में हुआ है। डा० किरण नाट्टा सन 1969 में राजस्थान विश्व विद्यालय से एम० ए० (हिंदी) उत्तीर्ण करके वहीं से शिक्षक स्कॉलरशिप लेन लगे। इन चार वर्षों में शोध ग्रंथ लिखकर श्री नाट्टा सन 1972 में सम्पादित कर दिया। जिस की द्विती सन 1973 में मिली। आधुनिक राजस्थानी साहित्य प्रेरणा स्रोत और प्रवृत्तियाँ 'राजस्थानी साहित्य में विवेचनात्मक एवं समालोचनात्मक दृष्टि को प्रधानता के कारण महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

यह शोध ग्रंथ पांच खण्डों में बंटा अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम खण्ड 'विषय प्रदेश' से संबंधित है। द्वितीय खण्ड 'प्रेरणा स्रोत' में आधुनिक राजस्थानी साहित्य के काल क्रम का संक्षेप में विस्तार से विचार किया गया है। तृतीय खण्ड में गद्य साहित्य की प्रवृत्तियों पर विस्तार से उल्लेख है। चतुर्थ खण्ड पद्य साहित्य की प्रवृत्तियों में प्रारंभ में प्राचीन राजस्थानी पद्य साहित्य की सामान्य विशेषताओं का संक्षेप में परिचय दिया गया है और अंत में आधुनिक राजस्थानी पद्य साहित्य सामान्य विशेषताओं की चर्चा की गई है। पंचम खण्ड उपन्यास उपलब्धियाँ एवं भू-याचन से संबंधित है। इसमें आधुनिक राजस्थानी साहित्य की उपलब्धियों पर सामान्य रूप से विचार करते हुए चार पांच वर्षों के साहित्यिक एवं साहित्यिक परिवर्तनों का परिचय में उनके समाहित गति क्रम पर विचार किया गया है।

आधुनिक राजस्थानी साहित्य प्रेरणा-स्रोत और प्रवृत्तियाँ श्री नरेन्द्र मानावन

के निर्देशन में श्री विरण नाहटा का प्रस्तुत 'गोध प्रवचन आधुनिक राजस्थानी साहित्य की अध्ययन परम्परा में एक सराहनीय प्रयास है।

कालू में अथ लघु शोध प्रवचन

(क) श्री श्यामसुन्दर स्वामी एम ए (अध्यात्म), एम एम सी (गणित) एवं बी एड ने इस कालू ग्राम के विशेष सदस्य में 'सामाजिक एवं आर्थिक सर्वेक्षण' शीर्षक से एक लघु शोध प्रवचन लिखा, जो एम ए (उत्तराखण्ड) अध्यापन 1976 की परीक्षा सम्बन्धी अपक्षाओं की पूर्ति के अन्तर्गत राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर को समर्पित किया गया है।

यह प्रवचन प्रो० श्री जी सी आचार्य एम ए (अध्यात्म—ममानात्म), व्याख्याता, स्नातकोत्तर, अध्यापन विभाग श्री डूमरमहाविद्यालय बीकानेर द्वारा प्रमाणित किया गया है।

इसमें (1) परिव्यात्मक (2) गांव का सामान्य प्रारूप (3) जनसंख्या (4) कृषि (5) पशुपालन (6) पारिवारिक एवं कुटीर उद्योग (7) व्यापार एवं वाणिज्य (8) वित्त एवं वित्तीय स्तर (9) स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन (10) सामाजिक स्तर (11) मारान, निष्पन्न एवं सुभाव इत्यादि नामों के एकादश अध्यायों में इस सम्पूर्ण किया है। गांव कालू के लिए अध्यापक श्री स्वामी का यह मुक्तक श्लाघनीय है।

(ख) कालू के प्रबुद्ध निवासी डॉ० श्री बट्टीनारायण रमन एम डी न 'हारमानल इक्विटस ऑन दी ड्यूमस्टीक पटन इन दी पालीमार्ग फोयूक्लीयर सूट्राफील ल्यूकोसा इट्स इन रबीन्स' शीर्षक से एक लघु शोध प्रवचन लिखा जो डॉक्टर ऑफ मेडिसीन (फिजीओनाजी) श्री डिग्री 1969 की परीक्षा सम्बन्धी अपक्षाओं की पूर्ति के अन्तर्गत राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर को समर्पित किया गया है।

यह प्रवचन या श्री मन्त्रय श्री एम सी एम बी बी एन एम एन प्राप्तेसर एण्ड हड ऑफ दी डिपार्टमेंट ऑफ फिजीओनाजी एण्ड बायोकमिस्ट्री, सरदार पटल मेडिकल कॉलेज बीकानेर द्वारा प्रमाणित किया गया है।

गांधी प्रवचन का (1) इट्राइकान (2) रिब्यू ऑफ लिटरेचर (3) मटिरियल एण्ड मयड (4) ऑरजर बगन (5) रिजन्टस (6) डिस्क्रिप्शन (7) कानोनूनस (8) समरी (9) बाइ उलीआन्नाफी व नामा से नी अध्यायों तथा चीवन पृष्ठा में इसे सम्पूर्ण किया है। श्री रमन का यह कार्य उत्तमस्वर्णीय है।

श्री जोराराम गिया और डा० अनोलन गालछा न भी अपने अपने विषयों में एक लघु शोध प्रवचन लिखे हैं, ऐसा उन्होंने बताया है।

कालू में हिन्दी साहित्य—कालू के हिन्दी साहित्य के इतिहास में ग्रामस्वता व बटाहा नामक प्रथम कल्प काव्य का प्रकाशन स० 2010 में हुआ। बटाही में कवि ने अपने गांव व एक व्यक्ति की जीवन कहानी से प्रेरणा पाई है। समस्त काव्य में एक छन्द का प्रयोग किया गया है।

राजस्थान भारती बीकानेर, श्री सादून राजस्थानी लिख इस्टीमेट बरानर के सम्पादन में अब में लिखा है— बटाही कवि की हिन्दी में प्रथम कृति एवं सफल प्रयास है। बटाहा का विषय महान है।" (दि० 1 12 59)

मान्यता जवाला व साहित्य सत्कार है लिखा है— बटा-नी एवं वरुण सख वाय है। भाई वहिन के प्रेम मूत्र पर निभर यन् राव्य हिन्नी म लिखा गया है। जहाँ-जहाँ भाषा सरल हुई है वही काव्य सफ़्त न पाया है।”

बोट बावनी श्री नानूग्राम भस्कर्ता की हिंदी भाषा में दूसरी रचना है। इसका प्रकाशन स० 2022 में हुआ है। बोट बावनी एक सामयिक और युगानुकूल रचना है। बावनी कुडलियो में बड़ी यह रचना मत की पृष्ठ महत्ता प्रतिपादित करती है। श्री जनादनराय नामर उदयपुर न बोट बावनी के अभिमान में लिखा है— आपकी दिल चस्प रचना बोट बावनी पढ़ी। सब तो यह है आपने जनतंत्र के समुद्र मथन के जहर की मार्मिकता के साथ व्यक्त किया है। इतनी स्पष्टता, निर्भीकता तथा मर्मता के साथ आपने जाज के आम्बरी बोटो-नुर जति महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की मनोभासा चुनाव-परिस्थितियाँ उना-चगावा एवं समाज पर निम्ब-ह पढ़ने वाले प्रभावा का वर्णन किया है कि आपकी दाद देते ही बननी है।

आपकी बाट बावनी प्रतिदिन लाभ लालच तथा अधिकार से भरन जात समाज के हमारे जनतात्मा में कुछ बद पदा करेगी। इस प्रकार की पीड़ा की हम आज बहुत ही आवश्यकता है। आपने स्वतंत्रता के सपने लन विखत प्रेरणाशील नाप्रत भारत के नामूर का ही जैसे वर्णन किया है। अभिनदन। (उदयपुर 5-3 66) श्रीमती लक्ष्मी कुमारी बूढावत सदस्य विधानसभा राजस्थान ने लिखा है— बोट बावनी जमी सामयिक रचना के लिए धन्यवाद। (लक्ष्मी निवास बनीपाक -9 3 66)

श्रीभक्तदशन उपनिष्ठा मंत्री भारत ने लिखा है— इस छोटी सी पुस्तिका में बोट की सारी कथा और उसके उपयोग का सही रास्ता दिखाया, अतः हृदय से धन्यवाद देता हूँ। (नर्सिल्ली 19 अप्रैल 1966) श्रीमोहनलाल सुखाड़िया मुख्यमंत्री राजस्थान जयपुर (दि० 1 4 66) और श्रीवजसु दरगमा शिक्षामंत्री राजस्थान जयपुर (5 4-66) ने भी बाट बावनी की प्रशंसा में धन्यवाद प्रेषित किए हैं। श्री निरजननाथ जाधव उपनिष्ठा व महामंत्री जयपुर (11 मार्च 1966) ने बोट बावनी के अवलोकन में लिखा है— रचना का लक्ष्य मनदाता को उसके मत का मूलांकन कराना तथा उसने सही उपयोग की प्रेरणा देना है। इसमें गहन मतदान के कुपणिगामों पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। प्रशंस अर्चना।”

श्री भीमसेन एडवोकेट सभ्य राजस्थान विधानसभा तथा श्री चन्द्रदानजी चारण प्रिंसिपल भारतीय विद्यामंदिर जीकानर ने बोट बावनी का उत्कृष्ट रचना और श्री भस्कर्ता का माधुवाद का पात्र बताया है।

बोट बावनी की भूमिका में प्रा० पुष्करदेव शर्मा मस्त्रुत विभाग, हुगर बालेज, बीकानेर ने लिखा है— पक्किल ग्राम राजनीति के दुष्प्रणिगामा से सगर होकर श्रीसर्वता जी ने बाट बावनी लिखी है। राजस्थान के प्रतिनिधि जन कवि के द्वारा सामयिक समस्या का यह मशक्त प्रस्तुतीकरण है। इसकी पढ़ने से जनता को अपने मत का समुचित उपयोग करने की दिशा मिलेगी। यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि जन जागृति की दिशा में यह रचना बहुत ही सामयिक एवं प्रेरणा जनक है। श्रीभस्कर्ता की स्वस्थ-चिन्तन पद्धति एवं स्वस्थ परम्परा की स्थापना का फायदा प्राप्त प्रशंस एवं अभिनंदनीय है।”

कालू के श्री नानूराम सस्कर्ता की हिन्दी भाषा की तीन अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ हैं। प्रथम अप्रकाशित पाण्डुलिपि हिन्दी भाषा में 'खाटे का विवाह' नामक उपन्यास है। 'खाटे का विवाह' में ग्रामीण सामाजिक गतिविधियों का सशक्त वर्णन किया है। गावों के वातावरण का श्री सस्कर्ता ने सुन्दर चित्रण किया है। 'गाय पुराण' श्री सस्कर्ता की दूसरी अप्रकाशित पाण्डुलिपि है। इसमें दस सुन्दर कहानियों का संग्रह है।

'चाय पुराण' श्री सस्कर्ता का तीसरा अप्रकाशित हिन्दी काव्य है। इसमें कवि ने आधुनिक पेय चाय का महत्त्व बतलाया है जो कि काव्य के नाम से ही विदित है। 'चाय-पुराण' में उन चालीस विषयों पर चाय से सम्बंधित अनेक छंद लिखे गए हैं। प्रारम्भ में 'चाय बागान भूमिका' रूप में लिखा गया है तथा अंत में 'चाय हित पद्यतन' और 'चाय पियवकड़ नता शीपक', कविता स्वरूप में लिखे गये हैं। कविताओं के पश्चात् 'चाय गीतिका' और 'राजस्थानी गीतिका' लिखी गई हैं। चाय पुराण पाठकों के लिए हास्य से सराबोर रचना है। काका गायरमी संगीत कायानय गायन (उ० प्रवेग) ने चाय पुराण की भूमिका के लिए एक छक्का लिखा है—

"रतियुग के इन पेय में, आनंदिन हो प्राण,
घर घर 'नानूराम' का चमके चाय पुराण।
चमक चाय पुराण प्राण मुस्ती से पाओ,
मर्दी बादी आमी जुरा दूर भगाओ।
कहूँ कामा कवि चाह चाय की दिन दिन बाढ़े
नता पीकर चाय, मच पर खूब दहाड़े।"

—काका गायरमी (दि० 21 11 71)

बाबिकोत्सव साहित्यकार सम्मान समारोह एवं सरोत्सव, मार्च 1979—श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के प्राणन भ आशोजित राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के बाबिकोत्सव साहित्यकार सम्मान समारोह एवं सूर पंचगती के सम्मिलित समारोह में राज्य के तीन विनिष्ट साहित्यकारों का सम्मान किया गया तथा साहित्यकारों को प्राण के श्रेष्ठ कृतियों के लिए पुरस्कार दिया गया। इनमें कालू के श्री नानूराम सस्कर्ता की 'लकाणवणी' काव्य पुस्तक पुरस्कृत हुई है। जिसके लिए दिनांक 17 3 79 को साहित्यकार सम्मान समारोह में अय साहित्यकारों के साथ श्री सस्कर्ता का सम्मान हुआ तथा साहित्य के अय विद्वान डॉ० भयेन्द्रजी के द्वारा नारियल पुस्तक और प्रमाण पत्रादि भेंट किए गये। इस अवसर पर राजस्थानी साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा सम्पन्नणीय साहित्यकारों की एक परिचय पुस्तिका प्रकाशित की गई। जिसमें श्री सस्कर्ता का चित्र परिचय पुरस्कृत काय 'लकाणवणी' का वर्णन तथा समारोह के आयोजन एवं भभापन संबंधी काय कलापों का विवरण भी दिया गया है।

मारवाड़ी सम्मेलन, 227 कालवादेवी रोड बम्बई 2 की व्यवस्थापिका सभा ने श्री नानूराम सस्कर्ता के 'छप्पय सप्तसई काय की पाण्डुलिपि देखकर 11 सितम्बर 1971 को रु० 1000) (रुपय एक हजार) की धनराशि साहित्यकार पुरस्कार स्वरूप प्रदान की। मारवाड़ी सम्मेलन बम्बई के अध्यक्ष डॉ० मेजर श्री रामप्रसादजी पोद्दार

तथा श्री राधाकृष्णजी खेमका स० मंत्री मारवाडी सम्मेलन बम्बई ने कालू के श्रीसम्कर्ता का रतुत्य सम्मान किया ।

कालू के नौजवान डा० श्री किरण नाहटा ने राजस्थानी भाषा में "शिवचन्द्र भरतिया" के नाटको पर एक समीक्षात्मक बड़ा निबन्ध लिखा, जिसको श्री रावत सारस्वत ने पुस्तक स्वरूप मरुवाणी अंक से प्रकाशित किया है । इससे राजस्थानी नाटक साहित्य का इतिहास प्रकाश में आया है और "शिवचन्द्र भरतिया" पुस्तक की पश्चात् सराहना हुई है ।

श्री नाहटा ने राजस्थानी साहित्य की अनेक विधाओं पर लिखते रहने के बाद श्रीमदुजयाशाय की महत्वपूर्ण कृति "उपदेश कथाकोश" का सम्पादन किया है । इसके बाद ई० सन् 1980 में डॉ० भूलचन्द सेठिया (प्राध्यापक—राजस्थान विश्वविद्यालय) के माध्य 'दीप चारो देश' नाम से जनपदीय साहित्यकारों का पुस्तक रूप, एक कविता संग्रह संपादन किया है । इन कृतियों के लिए श्री नाहटा की सख्त प्रशंसा है ।

कालू निवासी श्री जीवराज शर्मा की अप्रकाशित पाण्डुलिपि "मुरलीधर काव्य" शर्मा की प्रतिभा की प्रतीक है ।

गारवदेश्वर के प० खुनीलास शर्मा (राजस्थानी विशारद) द्वारा रचित अप्रकाशित पाण्डुलिपि "पुष्प वाटिका" भी धार्मिक पुस्तक है । सूत्रकरनसर के श्री सातचन्द गौड़ का भजन संग्रह 'भक्ति सरोवर' मनोहारी है जो धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों के लिए सुपाठ्य है । कालू के शिवराज सरस्वती का कविता संग्रह 'नय सदेव' प्रसाद गुण युक्त व हृदय ग्राह्य रचना है ।

कालू में संस्कृत साहित्य—संस्कृत को देववाणी कहते हैं जिसका सात्त्विक यह है कि संस्कृत देवा की भाषा है । इसमें वेद हैं, जिनको भारतीय परम्परा की दृष्टि से अपौरुषेय और चतुर्मुख ब्रह्मा के मुखा से प्रकटित समझा जाता है । वेद ही क्या ? ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, महाभारत, रामायण प्रभृति काव्य एवं साहित्य संस्कृत में है । व्याकरण का सबसे प्राचीन ग्रन्थ पाणिनी की अष्टाध्यायी है किंतु संस्कृत का सलित साहित्य महाकाव्य, अठ्काव्य, नाट्य साहित्य, गद्य काव्य चम्पू तथा साहित्य जैसे अनेक वग विभाजित है । यसे तो संस्कृत का महाकाव्य वग रामायण से ही प्रारम्भ होता है किंतु कालिदास के कुमार ममय और 'रघुवश' बड़े उत्तम काव्य है । इनका मानवीय भाषा का चित्रण वर्णन वाला मेघदूत एक अभूतपूर्व काल्पनिक खड्गकाव्य है । ऐसे सुन्दर एवं मानव हितकारी साहित्य ग्रन्थों के कारण सब भषाभाषा का जन्म संस्कृत से हुआ बताया जाता है । भाव कालू के प० श्री दुर्गादत्त शास्त्री ने संस्कृत में कतिपय काव्य ग्रन्थों की सरचना की है ।

इनमें 'सरस चरित' महाकाव्य के नीचे लिखे एकादश गण हैं —

- | | | |
|------------------|-----------------|-------------|
| 1 बन्दव सग | 2 सधव सग | 3 लौद्र सग |
| 4 प्रावास सग | 5 आनुकम्प्य सग | 6 सारस सग |
| 7 हारपत सग | 8 जानराज्य सग | 9 वायपीठ सग |
| 10 राष्ट्रकूट सग | 11 सर्वाभुदय सग | |

प्रसाद गुण सरोवर "सरस चरित महाकाव्य" की निजल भूमि वणन की पवितरों दृष्ट्य है—

मिक्षाऽति वेत मपि सिधु सरस्वतीभ्याम् ।
उर्वी प्रकाशित वणा, सह सीतया च ॥
रत्नानि काति निचतानि, पुरस्कृतानि ।
प्रोद्यत मुखानि वय मय, तया स्मराम ॥

(अर्थ—सीता (दृष्टति), सरस्वती और सिधु नदी से निर्गत मीची गई पृथिवी से घूलिकण भी चित शक्ति से सजीव हो उठे । भूगर्भ अनुसंधान करने वाले आज भी उसके ऐश्वर्य की साक्षी में जवाहरातों के दर्शन पाते हैं ।)

श्री सरस्वती की स्हाद टूटी, तब महाराज ने देवी से प्रार्थना की—
यथेच्छ कुरु, ताव कोऽहम्, नामया वलयामि ते ।
वल मोढु देहि मात, वेदना शुभदे शुभे ।

इनकी देवी देवताओं की अनेक रचताओं में पवन पुत्र श्री हनुमानजी का अस्त्र काव्य प्रत्येक हिंदू जन के लिए रसास्वादन करने योग्य है । श्री सास्त्री मस्तिष्क साहित्य साधना में सदैव सलग्न रहते हैं ।

लिपि विकास और काल—यहां लिपि प्रश्न है, काल की लिपि कोई अलग छोड़े ही है ? इसके अतिरिक्त विकास सहित भारतीय लिपियों का उल्लेख देना पड़ता है, जो लिपि विकास सहित अनुसंधान हुए ह ।

लिपि का पहला रूप—स्मृति चिह्न (Memory Aids) राखी, अगूठी, चढ़ावा आदि के रूप में हुआ था । रज्जुलिपि ग्रन्थिलिपि सूत्रलिपि इत्यादि इसी के नाम हैं । इनके बाद का रूप चित्रलिपि है जैसे दा तलवारी के चित्र लड़ाई के चोटक और बिंदी से आदि का आभास मिलता था । जंगल की तबाही पानी की लूट और मनुष्य की निक्ली पसलियों का चित्र अकाल का लेख माना जाता था । बाद की कुछ लिपियाँ अशोक के शिलालेखों में प्राप्त हुई हैं । वे खगोली और ब्राह्मी दोनों ही विदेशी लिपियों जसी हैं । अतः इन लिपियों के उद्गम का पूरा पता नहीं के उरावर है । मगर भारतीय लिपियों में मुख्य देवनागरी, गुजराती, कुटिबलिपि, पुस्त लिपि बंगाली और द्राविडी लिपि आदि मुख्य लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से ही निक्ली हुई मानी जाती हैं ।

1 भारतवर्ष में प्रयुक्त म ब्राह्मी लिपि सबसे प्राचीन है । ब्राह्मी शब्द ब्रह्मा से उत्पन्न हुआ । जगत की ममस्त जागतिक पदार्थों की उ हाने रचना की, लिपि का भी उही से प्रादुर्भाव हुआ ।

जब अग वाङ्मय के पंचम अग व्याख्याप्रवृत्ति (भगवती) सूत्र के प्रारम्भ में जहाँ अहंत्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय तथा साधु को नमन किया गया है वहाँ ब्राह्मी लिपि को भी नमन करने का 'अमो वगीए लिबीए' का उल्लेख मिलता है । 'आगम और त्रिपिटक एक अनुशीलन' (भाग 2) के लेखक शारद सत मुनिश्री नगराज जी को० सिद्ध० महाविद्वान ने अपने उक्त ग्रंथ में ब्राह्मी लिपि का विश्लेषण करने हुए 64 लिपियों की सूची पृ० 276 पर दी है ।

राष्ट्र भाषा हिन्दी की देवनागरी लिपि है जो स्वर एवं व्यंजना की ध्वनियों के मन्दातिन मन्वेतो सहित पूर्ण वज्ञानिक हैं। कालू के व्यापारी अपन व्यवहार में देवनागरी लिपि के एक उपरूप महाजनी लिपि का भी प्रयोग करते हैं, जिस यहाँ 'मुडिया' या 'मोडिया' का नाम से पुकारा जाता है। कई लोग देवनागरी के प्रतिलोम रूप में मुडिया की भूतनागरी लिपि भी कहते हैं। इनके अक्षर बिना मात्रा लिखे जाते हैं। जिनका प्रचलन दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और विशेष रूप से सार राजस्थान के व्यापारियों में बहुतायत से पाया जाता है। कालू के समस्त पुराने व्यापारी इस लिपि के लिखने में बड़े सुविन हैं। इन मुडिया अक्षरों के आविष्कता राजा टोडरमल थे, जसा कि उनके बनाये हुए छद से प्रामाणिक है—

“देवनागरी अति कठिन स्वर व्यंजन व्यवहार।

ताते जग के हित सुगम, मुडिया किया प्रचार।” (राजा टोडरमल)

इसके लिए राजस्थान में राजा टोडरमल का बहुत सम्मान रहा और वे हिन्दू समाज में बड़े बुद्धिमान और सावजनिक व्यक्ति माने जाने थे। सम्भवतः सारे राजस्थान में ऐसा ही हाता होगा? किन्तु हमारा गांव कालू में जब कोई भी बूल्हा विवाहित हो कर अपनी नववधू घर लाता है तब तत्काल “टोडरमल जीरया” नामक एक सुप्रसिद्ध वैवाहिक गीत उस घर की महिलाओं द्वारा आवश्यक रूप में गाया जाता है। इसमें वर पक्ष के समस्त वरासी पुरुषों का सुविन बसा बसाकर गीत का बढ़ावा दिया जाता है। ऐसा अधिकतर महाजनी में देखा जाता है।

कालू में स्व० श्री गोबिन्दराम यति चाँदमल पुण्ड्रिपा आदि पुराने लोग कागज पर मन मोहक मोती से मोडिया (मुडिया) अक्षर लिखने वाले थे। विद्यमान में श्री बालचन्द्र कोठारी, ईशरचन्द गोलछा, और भवरलाल सिंघी वगैरह ललित लिखत (लिखन) के लिए अग्रणी माने जाते हैं। किन्तु ईशरचन्द ने दाहिने हाथ का अंगूठा डाकुआ द्वारा काट दिया गया। अतः वह अब सुनेखक नहीं रहा। स्वर्त्तात्मज सुमुष्ण देवनागरी अक्षर लिखने में सब सुजान हैं। ५० दुर्गादत्तजी मुहूत ज मपत्रियों तथा कुडली आदि में बड़े अनूठे एवं आकर्षक अक्षर लिखत हैं।

कालू में शिक्षा प्रेम—यहाँ के लोगों का रहन सहन वर्तमान समय में भी प्राचीन भारतीय संस्कृति के अणु परमाणु से संयुक्त है। अधिक अध्ययन भाग तथा रोगादि अहितकारी प्रवृत्तियाँ से यहाँ का काम दे सतन सुरक्षित है। जमाने की बिपसी हवा कालू के घरों में पूरी तरह नहीं घुस पाई है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि यह गांव शिक्षा में पिछड़ा हुआ है। गांव के लोगों का शिक्षा प्रेम उत्प्रेक्षनीय है। यहाँ के व्यक्तियों ने निरंतर अध्ययनरत रहकर शिक्षा की उच्च उपाधियाँ प्राप्त की हैं। कालू के लोगों द्वारा शास्त्री साहित्यरत्न प्रभाकर, साहित्यमहामहोपाध्याय, एम० बी० बी० एस०, एल० एल० बी० बी० ए० बी० एड० एम० ए०, सा० ए० एम० डी० पी० एच० डा० आदि

1 मुडिया के अक्षरों पर मात्राएँ एवं अनुस्वार आदि नहीं लगते। यई, ट ठ जस कुछ अक्षर एक से होते हैं। चार चोर मोर मारा आदि शब्द भी अम्मासागुभव से पढ़े जाते हैं। मूलचन्द लोढा और मालचन्द लोढा दोनों नाम एक ही भाति से लिखे पढ़े जाते हैं।

उपाधिया प्राप्त की हुई हैं। आर० ए० एम० जसी राज्य की महत्वपूर्ण परीक्षा पास करके शिक्षित युवको न कालू के शिक्षा प्रेम के महत्व को स्पष्ट किया है। यहाँ के कुछ युवक आज भी एल एल० बी० एम० डी० सी० ए० तथा एल एल० एम० जमी उच्च महत्वपूर्ण शिक्षा में अध्ययनरत हैं। गांव के अनेक युवक स्नातक एवं स्नातकोत्तर बन चुके हैं और अनेक प्रयास में हैं। गांव की यह सफल शिक्षा ही शिक्षा प्रेम की गारंटी है।

क्षेत्र में सजन सजनकार और कालू—भारत में बीकानेर एक प्रसिद्ध राज्य रहा है। इसमें नळी, पळी, मगरा नामक तीन प्रकार की भूमि के दशन हात हैं। अब यह ससार की नव से बड़ी नहर 'राजस्थान केनाल' से सम्बन्धित सिंचित जिला है। यहाँ के सती महेत्तो वीरा, व्यापारियों और सतियों ने दूर दूर तक यश पाया है। साहित्यकारों के नाम भी तो शताधिक की सरया में आते हैं। अतः बीकानेर नगर और उसके अन्य जिला नगरों का जिक्र न करके केवल बीकानेर के राजा कालू तथा उससे संबंधित काकड़ सींवाड़ी गावा के प्राचीन एवं अर्वाचीन कवियों साहित्यकारों की वाणी का मात्र परिचय देता हूँ।¹ कालू अपने इलाके में साहित्य संस्कृति का केन्द्र रहा है। इसके पास लगते चार आर के गावों में काफी वाणी के बरद पुत्र कवि एवं लेखक हुए हैं। अतः राज्य के अन्य सम्य स्थानों से यह कदापि पीछे नहीं कहा जा सकता। वाणीकार नाथ सम्प्रदाय का यहाँ आदर्श स्थान था। रामस्नहियों के कवियों का प्रभाव भी पूरा रहा है। जन साहित्य तो यहाँ परम्परित रूप से प्राप्य है। चारणों के वास पास हान के कारण भापा डिंगल, अपभ्रंश, मरु भाषा और हिन्दी संस्कृत मिश्रित चलती थी और वर्तमान समय में शुद्ध रूप प्रचलित है। यहाँ के काव्य साहित्य से डिंगली अपभ्रंश सिंधी प्रभृति भाषाएँ दौड़ कर मिली और यहाँ की कविताओं में डिंगल और सिंधी पंजाबी के शब्द काफी आकर अच्छे फले हैं। वे चारणों के कथा छंदों तथा ढाढी काव्या में काफी मात्रा में पाये जाते हैं। यह का पुराना साहित्य सुरक्षित नहीं रह सका। इसीलिए यह सांस्कृतिक स्थान विद्वानों की दृष्टि में नहीं आ पाया। फिर भी बीकानेर के इस अगल-मगल मध्य बसते कालू के कवियों की जमान में सरस्वती का निवास और आत्मा में विश्वास के उदात्त भाव हिलोरे लेते रहे हैं। उसी प्रभाव से कालू में साहित्य निर्माण का वातावरण इतना अधिक बना कि गांव के नाम पर सकड़ा कहावतें चल निकली हैं।

साहित्यकार परिचय—कालू के निकटतम गांव कुविया के अद्वितीय महान विद्वान दयालदासजी सिढायच (जन्म वि० सं० 1855 ई० सं० 1798 मृत्यु 1948 ई० सं० 1891) रयात कार के रूप में प्रसिद्ध हैं। वे बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह, रत्नसिंह, सरदारसिंह और श्री डूंगरसिंह के कृपा पात्र रहे थे। उनकी राठोड़ी की रयात, देश-

- 1 वसे ता बीकानेर के सभी महाराजा साहित्य प्रेमी हुए, किन्तु रावलूनकरण, महा रायसिंह महा० करणसिंह महा० अनूपसिंह महा० जोरावरसिंह और गजसिंह स्वयं साहित्यकार थे। पृथ्वीराज का नाम तो सूय की भांति परम उल्लेखनीय है। सं० 1726-55 में महा० अनूपसिंह ने अपने नाम से संस्कृत का पुस्तकालय (अनूप संस्कृत पुस्तकालय) स्थापित किया। जिसकी रयाति भारत ही नहीं, विदेशों में भी बहुत है।

राष्ट्र भाषा हिंदी की देवनागरी लिपि है जो स्वर एवं व्यंजनो की ध्वनियों के मद्भातिव सवेतो सहित पूर्ण वक्षानिर हैं। कालू के व्यापारी अपन व्यवहार में देवनागरी लिपि के एक उपरूप महाजनी लिपि का भी प्रयोग करते हैं जिस यहाँ "मुटिया" या "मोडिया" के नाम से पुकारा जाता है। कई लोग देवनागरी के प्रतिलाम रूप में मुडिया को भूतनागरी लिपि भी कहते हैं। इसके अक्षर बिना मात्रा लिखे जाते हैं,¹ जिनका प्रचलन दिल्ली पंजाब, हरियाणा और विशेष रूप से सार राजस्थान के व्यापारियों में बहुतायत से पाया जाता है। कालू के समस्त पुराने व्यापारी इस लिपि के लिखने में बड़े सुविज्ञ हैं। इन मुडिया अक्षरों के आविष्कता राजा टोडरमल थे, जसा कि उनके बनाये हुए छद से प्रामाणिक है—

‘देवनागरी अति कठिन, स्वर यजन व्यवहार।

तात जग के हित सुगम, मुडिया कियो प्रचार।’ (राजा टोडरमल)

इसके लिए राजस्थान में राजा टोडरमल का बहुत सम्मान रहा और वह हिंदू समाज में बड़े बुद्धिमान और मावजनिक व्यक्ति माने जाते थे। ‘संभवत सारे राजस्थान में ऐसा ही होता होगा ? किंतु हमारे गांव कालू में जब कोई भी दूल्हा विवाहित हो कर अपनी नववधु घर लाता है तब तत्काल ‘टोडरमल जीत्या’ नामक एक सुप्रसिद्ध वधाहिक गीत उस घर की महिलाओं द्वारा आवश्यक रूप से गाया जाता है। इसमें वर पक्ष के समस्त बराती पुरपा का सुविज्ञ बत्ता बत्ताकर गीत को बढ़ावा दिया जाता है। ऐसा अधिकतर महाजनों में देखा जाता है।

कालू में स्व० श्री मोविंदराम यति चाँदमल पुगलिया आदि पुराने लाग कागज पर मन मोहक मोती से मोडिया (मुडिया) अक्षर लिखने वाले थे। विद्यमान में श्री बालचंद कोठारी, ईशरचंद गोलछा, और भवरलाल सिंधी बगरह ललित लिखत (लिखन) के लिए अग्रणी माने जाते हैं। किंतु ईशरचंद के दाहिना हाथ का अनूठा डाकुओं द्वारा काट दिया गया। अतः वह अब सुलेखक नहीं रहा। सस्मर्तःमज मुसुष्टु देवनागरी अक्षर लिखने में सब सुजान हैं। प० दुर्गादत्तजी मुहूत जमपत्रिया तथा कुडली आदि में बड़े अनूठ एवं जाकपक अक्षर लिखते हैं।

कालू में शिक्षा प्रेम—यहाँ के लोगो का रहन सहन वर्तमान समय में भी प्राचीन भारतीय संस्कृति के अणु परमाणु से संयुक्त है। अधिक व्यय भाग तथा रोगादि अहितकारी प्रवृत्तियाँ स यहाँ के वाणिज्य मन्त सुरक्षित हैं। जमाने की विपत्ती हवा कालू के घरों में पूरी तरह नहीं घुस पाई है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि यह गांव शिक्षा में पिछड़ा हुआ है। गांव के लोगों का शिक्षा प्रेम उल्लेखनीय है। यहाँ के व्यक्तियों ने निरंतर अध्ययनरत रहकर शिक्षा का उच्च-उपाधियाँ प्राप्त की हैं। कालू के लोगो द्वारा शास्त्री साहित्यरत्न प्रभाकर साहित्यमहामहोपाध्याय एम० बी० बी० एस०, एल० एल० बी०, बी०ए० बी० एड० एम० ए०, सा० ए० एम० डा० पा०एच० डा० आदि

1 मुडिया के अक्षरों पर मात्राएँ एवं अनुस्वार आदि नहीं लगते। यई, ट ठ जैसे कुछ अक्षर एक से होते हैं। चारा चोर मोर मांग आदि शब्द भी अभ्यासागुमव से पढ़े जाते हैं। मूलचंद लाढा और मालचंद सदा दोनों नाम एक ही भाति से लिख पढ़े जाते हैं।

श्री गोविन्ददान—भाव नाथूसर (तहसील सूनकरनगर) के रोहिडा बारहठ विठ्ठल के पुत्र ठा० गोविन्ददान (जन्म वि० सं० 1938 स्वगवास 2014) न 'किसन प्रकाश' नाम का एक प्रसाद गुण काव्य, विविध छंदों में भक्ति रस आप्लावित सजित किया है। यह वरदा वष 5 अक्षर एक म पुस्तक रूप प्रकाशित हुआ है। इनकी अन्य कविताएँ भी मनोहारी हैं। अनाज निकालते समय और महाराजा श्री गंगासिंहजी के स्वगवास पर बनाये हुए दो छंद ।

(1) अहो जादूराय मैं कहता हूँ सुणाय भेम् ।

हुपा सिधू आप ऐसी वारता बिचारी क्यूँ ? ॥ 1 ॥

जगत को जामो ममसाह सुरा लाक भेज्यो ।

वहो रघुनाथ ऐसी भई भूल चारी क्यूँ ? ॥ 2 ॥

नागयण दूजो पूरो राखतो प्रजा पे नेह ।

केशव हुपाल दुनी करी त दुख्यारी क्यूँ ? ॥ 3 ॥

हा ! हा ! मेरे नृप बिना देख्या अकुलात हियो ।

धनी मेरा साँवरा छिपायो छत्रधारी क्यूँ ? ॥ 4 ॥

(2) ऐमी नीत राखतो प्रजा न प्रीत नीत आछो ।

कहूँ पूरो प्रेम लोभ बेन ज्यूँ लवाई को ॥ 1 ॥

दुनी काज रेला नैर मदरसा बणाया दाता ।

आछा विद्वान राह्या बिद्या की पढाई का ॥ 2 ॥

रहे सामग्रम बादगाह गौरधित केरी ।

कमधेस पायो जस बीरता बढाई का ॥ 3 ॥

हा ! हा ! मेरा नप गय जात न भिनायो हरि ।

केतो दोस देऊ काल अक्रमी जयाई का ॥ 4 ॥

हवा के न चलन पर पवन का पापिनी बता कर उलाहता देन के कवित—

(1) प्रकट भटा पचाद,^१ विविध बरपा विस्तार ।

पड धूँद प्रथमीस, भटक बादला विडार^२ ॥

ओडा^३ वाण उडाय, घपट धोरा धमकाणी ।

बरजा सग न बात प्रतक सोस धर पाणी ॥

नव छड फेट मारै निदर, अनचाह अनसावणी ।

गाँवद खळा फागण धणा, पवन अघाव पापणी ॥

(2) तुकज्या घारा-सार खळा सू डरप मोटी ।

अन उनाळ^४ बीच आध ज्यूँ दब कर ओटी ॥

घुट घुट घेंग देत लेव नुव छिप कर लावा ।

कदवे साग कान, फेर पाछी फिर जावा ॥

रग बार मास फागण रमो, मान तेज अनमापणी ।

कवि विठ्ठल सुवन गोविन्द कस पवन अघावन पापणी ॥

दपण, आर्याग्यान कम्पद्रुम, पेंवार वण दपण और पञ्च म जस रत्नाकर तथा सुजन बावनी आदि अनेक पुस्तकें हैं। अंग्रेज सरकार के साथ संधि कर सेन पर राजपूताना के राजाओं का अपने अपने इतिहास संग्रह करवाने पड़े। महाराजा रत्नसिंह ने और अन्य नरेशों ने भी इन से इतिहास लिखवाने चाहें। तब इन्होंने प्राचीन वंशावलि, बहिमा, गेहली परमान, राजकीय पुरातन पत्र परवाने प्रभृति संग्रह कर बीकानेर राज्य का विस्तृत इतिहास लिखा जो दयालदास की रयात कहलाता है। कनल पाउनेट आदि ने अपने इतिहासों में इसी रयात को आधार माना है। उसका प्रकाशात्मक—

कहे सषस उगणीम के मात बीस के साल
बरणी रयात विक्षेप कर, दपण देण दयाल

सं० 1927 की फीज बनी की याददास्त के बाद जब खजाना महमूल की जानकारी भी रयात में है। इसमें बीकानेर उदयपुर जयपुर जोधपुर बूंदी झालावाड़, कोटा, जसलमेर, टोंक भरतपुर, डूंगरपुर आदि राज्या के अंग्रेजा से किए संधि नाम भिखते हैं। मैं सिढायब दयालदास हूँ पवार वण दपण' के सरस्वती व गणेश के दो पद उद्धृत करता हूँ—

- (1) बीणा धारद कर विमल भव तारु सुभाय ।
हूँसाकड दाग्द हरो गारद करा सहाय ॥
- (2) मद जल वकृत मधुप, लसन गज मुख सुखमा मय
मिदूराचित अरुण क्षीप चचित चन्द्रोदय
वक्रदत नव विमल वसन, तन अरुण विराजत
करस पानि मन गुन निधान निधि धान अमल चित
सुखद अग्रवर्णी सुधर जगत विघन हर सुजस जय
जति नाच कीर्ति महिमा जपह तनमामि गौरी तनय

सिढायब श्री दयालदास उस समय बुढ़िया जमे ऊजड़ गांव में रहकर भागवत का ही नहीं श्रीस, रोम और इंग्लंड के इतिहासों का भी हाल जानते थे। उन्होंने अपना सारा जीवन अध्ययन संग्रह और लेखन में बिताया जो उसके प्राप्त साहित्य से ज्ञात होता है। इतनी रयात में फारसी फरमानों और अंग्रेजी मुरासिना के अनुवाद भी हैं। इतना विद्वान और महत्वपूर्ण लेखन हम साधन मरुत न युग में भी बहुत कम व्यक्ति कर पाते हैं।

श्री बिहद दान—ये कासू के काकड़ सीमाडी गांव नायूसर के रोहिडा वारठ थे। इनकी बहुत सी फुटकर रचनाएँ मिलती हैं। ये साधारण गीत लिखने में बड़े सिद्ध हस्त कवि थे। वि० सं० 1975 की महामारी का इनका एक पूरा सामयिक साधन गीत यथा प्रसंग इस पुस्तक में दिया है। जिसका नमूना -

उजड़ उण तार विष वरर करती इधक बीस हत्य तारली वरर बगती
आकड़े असू आधार इव आपरो साकड सिढायब वार सगती
निमागण रोडनी यकी, आजे तुरत, आम न ताडती मते अटकी
रमावल फाडती यकी मत रहीजे गोडनी समदग असुर गटकी

श्री गोविन्ददान—गाव नाथूसर (तहसील खूनकरनसर) के रोहिडा बारहठ बिहदान के पुत्र ठा० गोविन्ददान (जन्म वि० सं० 1938 स्वगवास 2014) न "किसन प्रकाश" नाम का एक प्रसाद गुण वाक्य, विविध छंदों में भक्ति रस आप्लावित सजित किया है। यह बरदा वष 5 अब एक न पुस्तक रूप प्रकाशित हुआ है। इनकी अन्य कविताएँ भी मनोहारी हैं। अनाज निकासते समय और महाराजा श्री गंगासिंहजी के स्वगवास पर बनाये हुए दो छंद !

(1) अहो जादूराय मैं कहता हूँ सुणाय जेम ।

कृपा सिधू आप ऐसी बारता बिचारी क्यू ? ॥ 1 ॥

जगत को जामी गगसाह सुरा लाक भेज्या ।

कहो ग्युनाय ऐसी भई भूल धारी क्यू ? ॥ 2 ॥

नारायण हूजो पूरो राखतो प्रजा पे नेह ।

केशव कृपाल दुनी करो त दुयारी क्यू ? ॥ 3 ॥

हा ! हा ! मेर नृप बिना देखा अनुलात हियो ।

धनी मेरो सावरा छिपायो छत्रधारी क्यू ? ॥ 4 ॥

(2) ऐमी रीत राखतो प्रजा पे प्रीत नीत आछी ।

कहूँ पूरो प्रेम लोभ बैन ज्यू सवाई को ॥ 1 ॥

दुनी काज रेसा, न'र, मदरसा बणामा दाता ।

आछा बिद्वान राख्या बिद्या की पढाई को ॥ 2 ॥

रहे सामग्रम बादशाह गीरमिट केरी ।

कमबेस पायो जस बीरता बढाई को ॥ 3 ॥

हा ! हा ! मेरो नृप गग जोत मे मिलायो हरि ।

केतो दोस देऊ बाल अक्रभी अयाई को ॥ 4 ॥

हवा के न चलने पर पवन को पापिनी बता कर उलाहना देन के कवित—

(1) प्रकट घटा पचाद,¹ विविध बरपा विस्तार ।

पह बूद प्रथमीस, भटक बादला विडार ॥

ओडा² बाण उढाय, घपट घोरा धसकाणी ।

बरजा तयै न यात अतक सास धर पाणी ॥

नव सड फेट मार गिडर, अनचाहे अनसावणी ।

गोविंद सळा फागण धणा, पवन अधाव पापणी ॥

(2) तुकज्मा धारा-तार सळा सू डरप खोटी ।

अत्र उनाळ बीच आग ज्यू दब कर आटी ॥

घुट घुट घेग देत सेत लुव छिप कर सावा ।

कदके लाग कान, फेर पाछी फिर जावा ॥

रग बार भास फागण रमो, भान तेज अनमापणी ।

कवि विहद सुवन गोविंद कब पवन अधामत पापणी ॥

श्री मेघदान—जन्म म० 1978 फाती बदी 10 स्व० गावि ददानजा गाव नाथूसर व सुपुत्र हैं। ये बहुत अच्छी प्रणार की रचनाएँ करत हैं। इनके सम्बन्धु हानिवणन से दोहा एवं छप्पय देखिय—

दोहा— पिये तम्बायू प्रेम कर, हाज साम्प्रत हाण ,
इण मे ओगण है इता जगत देवगी जाण

छप्पय— हाथ रमीज हाथ, मड मुख दत मदाई
गजब फीफरो गठ हुय सनमा हलका
बता देय बसेर, साय वन भाह लगाव
जड चेतन स जीव जड मारा जळ जाय
अपगाय बडो इण विसन म पाप घडा मिर फाड्दया
कर जोड सुबब मेघा कच सुरन तम्बायू छोटदया

ठाकुर किसनसिंह—मूनरग्नसंग तहसील के प्रसिद्ध गाव गारबदेसर के ठाकुर बाघसिंह के छोटे भाई का नाम श्री किमनसिंह था। जमा नाम वसे ही उनमें मद्गुण भी थे। ठाकुर किमनसिंह भगवान के भक्त एवं कवि थे। उनकी कविताएँ यहाँ बड़ी प्रचलित हैं जमे—

मो कोसा बीजळ तिव जारा कित्ता स्तह
रिमना तिसना तद मिट आमण वरम मेह

फालू से चार कोम के इन गारबदेसर म खरतरगच्छाचाय श्री जिनराज सूरिजा के शिष्य लक्ष्मीवल्लभ उपाध्याय का नाम जठाहबो शतादी में यहाँ बड़ा भाग रहा है। काश्य व्याकरण भाषा विज्ञान छन्द ब्रह्म एवं मद्भारत विषयों में आपकी असाधारण गति थी। आप मरुत हिंदी और राजस्थानी में गद्य पद्य की अच्छी रचनाएँ करते थे। सिंधी भाषा में भी आपका स्तवन मिलता है। आपके रचे अनेक ग्रंथों के साथ 'कालपात' नाम के ब्रह्म ग्रंथ में कुछ उदाहरण यहाँ दिए जाते हैं।

जग ब्रह्म विद्या जिता नही न विद्या और
फळ दायक परतिप प्रगट सब विद्या मिरसोर
गग निवारण यह कर कर धम की बडि
धन की भा प्राप्ति नरई दुट लोक द्रव सिद्धि

आपका विहार भागवाट गुजरात और सिंध प्रांत के स्थानों में भी हुआ था। जसलमेर लोदवा फलीणी मूरत हिसार गिणी आदि स्थानों में भी आप परिभ्रमण कर आए थे। वि० सं० 1728 फा० सु० 5 का आपने राजस्थानी के विजयमालि पंच दंड चौपाई नाम के ग्रंथ (खंड 6) का गाव गारबदेसर में सम्पूर्ण किया था।

समय सुन्दरोपाध्याय—वि० सं० 1684 में आपने लूणकरणसर में 'दुरियर बति' नामक पुस्तक की रचना की। यहाँ सध में वर्षों से मनो मालि यथा अत उपदेशात्मक मतोप छतीमी की रचना कर सध में ऐश्वर्य और प्रेम स्थापित किया। इन्होंने यहाँ बला मूत्र पर कल्पिता की टाका की जो जिनदत्त सूरि पुस्तकालय फंड मूरत से प्रकाशित है। वि० सं० 1685 में दीक्षा प्रतिष्ठा शुद्धि नामक ज्योतिष ग्रंथ

लूनकरणसर म ही लिखा गया ।¹ आप सतगृही शती के महान विद्वान एव कविग्र थे ।

कवि रघुपति—वि० स० 1819 में खरनरगच्छ के कवि रघुपति ने 'रत्नपाल चौपाई' कालू में बनाई थी। कालू के उपाधय में रघुनाथ हज्व की एक लिपि का लेखन काय भी हुआ बताया जाता है। वि० स० 2009 में आचार्य श्री तुलसी कालू पघारे। वहाँ उन्होंने गति मोजन करना पाप व्रतान्नर कतिपय भजन बनाय। एक अवलोकनीय पद्याश—

तुलसी गाव कालू गढ म ।

सहवर्ती मुनि साधविया ॥ 15 (सोमरम—पृ० 187 88)

यहाँ रामस्नेहिया की अगेरी म सता ने भी काफी काव्य अवन किया है। वि० स० 1969 म नेनूराम और वि० स० 1987 म सीताराम नामक दो साधुओं की कविताएँ मिलती हैं।

गाव राजासर (हरणामर) के साधोबास धरामी स० 1956 75 के बीच प्रसिद्ध हुए, एक भजनीक कवि थे। उनका एक भजन है—

भजी क्यू नी गये जिस्ना फेर पछनाओगे ॥

श्री भानीनाथजी—वैसे तो भानीनाथजी की बाणी का प्रचार समस्त राजस्थान में पयाप्त है। किंतु कालू आदि अ य स्थानों पर भी इनकी समाधियाँ बतार्द जानी हैं। इनका आविर्भाव यहाँ 19वीं शताब्दी में कालू से संबंधित है और विविध बाणिया गाई जानी है।

(1) नाथ गुलाब मित्या गुरु पूरा, भक्ति भावना भारी ।

भानीनाथ सग्न सतगुरु री, निजर चर्या गिरधारी ॥

गाव पीपासर (तह० लूनकरणसर) के निवासी श्री दानोराम सारस्वा (भू० पूव जपात धानेदार) ने वि० स० 1974 में श्री मरमजी महागज का जीवन चरित्र हिंदी में किया है। जिसके सुपाठय विचरे पने (हस्तलिपि) म्मागे मत्स्या में प्राप्य हैं। मंत्री, राजा के पास सरस महाराज को बुला लाए मो कुछ वणन पढ़ें—

ब्राह्मण सुन मंत्री बचन हरगन भयो शुभचित्त

कावनदी में स्नान कर भग्न हाथ हरसत

बनिदान सट वम विधि किये आज प्रवारा

मंत्री द्विज शोना मिले, आये नथ गढ़ पाम

कर जोडे मंत्री कह मुणो राज सुनिधान

द्विजवर सग्न दयान है जाण सबल जहान

जाण सबन जहान देर जमा 'दुग्दासा

गुण सुनाऊ नायनु बहुत है ग्यान प्रकासा

1 मातागम चौपाई—प्रवागव सादूल राजम्यानी गिख इस्टीद्यूट बानानर देवे—
बीबानर जन लेख मद्रक

बाछ बाछ निकलव मान ममता का मारे
सत जो सील सुभाव त्रिय सध्या ब्रत धारे
बर विमल वेद वाणी वदत ध्यान ग्रह पद को धर
जाय जय जहाँ जुगत सू थी इष्ट दव स्मरण कर

श्यालीराम उर्फ लमाणाराम—श्यालीराम गांव घेंसूरा व सारस्वत ब्राह्मण थे। वे वि० सं० 1912 से 1986 तक वं समय में कविता करने के लिए बड़े प्रसिद्ध थे। महाजन राजा श्री हरिसिंहजी एवं प्रपाचक्षु श्री केगरीप्रसादजी शास्त्री इनका पूरा सम्मान किया करते थे। इनकी एक प्रकाशित पुस्तक वि० सं० 1985 से मेरे पास थी। सा खो गई। एक उक्ति याद है इन्होंने अपने गांव घेंसूरा का वर्णन किया है—

“माता गढ़ से भील भर घेबर गढ़ है नाम” (याने महाजन स घेंसूरा गांव एक भील है।)

श्री हिमतराराम सारस्वा—कालू से पांच कोस पश्चिम का काकड़ लगता गांव सारखा के श्री हिमतराराम गम्मा बड़े प्रसिद्ध कवि थे। ये अपने सजनकता गुण के लिए जम्मू काश्मीर तथा बलकत्ता बम्बई तक बुनाये जाते थे। सत्तक न इनकी चार पुस्तकें प्रकाशित पड़ी हैं। ये करीब 70 वर्ष के हुअर सन 1964 में स्वगम्य हुए थे। त्रिमयी तथा कडला छंद वाली इनकी कालिका स्तुति नामक पुस्तक में से स्मरण आता है। ‘हिमतराराम खारडे वासा लिया आसरा तरा’ ‘मया लिया आसरा तेरा’ ‘अय मे से—’ कह हिमतेशा गग भरगा महिपालाजी महिपाला।”

इस भाति कालू के पास कुमिया, चादनर, नाथूसर एवं वासी आदि गांवों के अनेक बारकठा की कविताएँ यहाँ बनी हैं। कालू हल्के के अय गावों में भी अच्छे कवि हुए हैं। आपसी ससग के कारण उनकी कविताओं का कालू पर पूरा प्रभाव पड़ा है।

श्री गिरधारी ढाडी—स्वतंत्रता से पहिले ठिकाना के हल्का कालू के अधीनस्थ चार पांच कोस ल्होडेग गुसाईसर में श्री गिरधारी ढाडी एक भक्त कवि थे। वह अभी सं० 2010 तक जीवित थे। उनकी कविताएँ बड़ी सुन्दर एवं मनमोहक हैं। पूरी कविता तो याद नहीं, पर जैसे एक छंद भगवान के लिए—

यहाँ ही तू वहाँ ही तू जहाँ देखें जहाँ जहाँ ही तू
भक्त तू मस्जिद तू काब मया काशी तू
पवत जगल वासा तू जहाँ देखें जहाँ जहाँ ही तू

श्री पन्नादान गाढन—हल्का के पूर्विय गांव भालसर के श्री पन्नादान चारण की उपदेशात्मक कविताएँ बड़ी प्रभावदायक एवं सुभावनी हैं। बातचीतपयोगी कविताएँ तो इनकी बड़ी सार गर्भित हैं।

सुखदायक नीति सुणा जर सारा, धम सोय भाखू उर धार।
बार बार चित्त माय विचारो सारा कारज तबो सुधार॥
प्रथम सीख उठजे प्रभाते निमल चित्त लीजे हरि नाम।
नेम धम अस्नान दान कर कीजे पछे गह कुन नाम॥

(चौबीस दूहा गीत स)

बग्गा दादी—वम तो इन ढाड़िया की कविनाएँ बड़ी मुन्तर हाती हैं किन्तु बालू से पश्चिम सात काग लगने गाव कुजटी (तहसील नूनकर्मनगर) में बग्गा नाम का एक दादी बड़ा अच्छा कवि हुआ है। बग्गाजी का 63 वष की उम्र म म० 2031 को निधन हुआ।

दक्षिमुत भग्गण बाहिनी, द दक्षिमुत प्रकाश।

वीन भुजा हँम बाहिनी लग लक्षपत भुज जात ॥

रमजान दादी—समीप बालू—गान्धारावाटी के गाव रुणिय (बड़ वाम) में रमजानदादी के अनक भजन एवं गीत मिलने हैं। 70 वष की अवस्था में म० (2036 में) रमजान की मृत्यु हुई। एक भजन का नमूना—

दुनिया में एक रोज फलम्या सुणिय चाय पाणी का
पढम्या बल जगन में इस नममा¹ खाणी का
देवा देव लागन नार के छाटा के मोटा
दानू टेम चुनन ना नव चाहे घर में जाव टाटा
दूध मागना घर घर हाड ले हाथ में सोटा
गाळ बढाव, गड विदराव अ सखण है थोटा
कितना दिन यू पार पड़ेगे दम है घर जाणी का ॥१॥ दुनिया में एक

यद्यपि हमारे इस क्षेत्र में पुराने कवियों का अधिक प्रभाव रहा है, परन्तु कुछेक हमें ज्ञात हुए नए युग के पास होने वाले और विद्यमान कवि नेहरू का नाम भी नीचे दिया जा रहे हैं जो बालू निवासियों कहलाते हैं।

स्व० श्री पुरवारामजी मारस्वा

डॉ० श्री निरप नाहटा

स्व० श्री उमारामजी मारस्वा

श्री शिवराज मस्कता (12 9 54)

प० श्री दुर्गादत्तजी मारस्वा

श्री जीवराज गर्मा

(ज० म० 1974)

(ज० म० 1995)

श्री नानूराम मस्कता

श्री बगीचाल बिग्मेचा

(ज० म० 1973 श्रावण कृष्ण 7)

(ज० म० 9 म० 1939 इस्वी)

श्री रामेश्वरलाल शारङ्गिया (ज० म० वि० म० 1988 आमाज सुदी 5)

कविता के गीतकीन सम्राट् यहाँ बहुत से मञ्जन हैं जिनमें श्री गजरलाल राठो (वाणिज्य स्नातक) और शकर्साल बग्गाणी (कला स्नातक) के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। श्री रंजितमन गोतछा भी अच्छा कवितावाक्य का रिकॉर्ड रखता है।

बालू में दम्नकारी—यहाँ दम्नकारी में बम्बल, लूकार, मेमल चोटिय² बरडी कामलिय तथा पट्टे बनाय जाते हैं। बालू के बुनकरों में श्री फरीरा राम मेघवाल का नाम है। ऊँट का जट (बाली) में भासले तथा दावडें भी बनायी जाती हैं। घरों में यहाँ की औरतें पहल नावडी चुनडी, धावला भी बनाया करती थीं। अब जनी जर्मी,

1 ताकत

2 बच्चों के खेलने वाले कूपसीदार लूकार (टोपना)।

मोजे व मकनर आदि बनाती हैं। यहाँ की बुनकरी गाव के सागो के लिए सुन्दर आरपक एव उपयोगी रही है।

व्यापार—कालू में व्यापार अ न कपडे मनिहारी दवाइया साहे और लकडी रा हाता था। अब अ न का व्यापार यहाँ से दूर दूर तक हाता है। यहाँ के मोठ और श्वार के व्यापारिक मोदे काफी प्रसिद्ध हैं। चुनावो के अउसर पर कानू म व्यापार के तरीके से राजनतिक मोदे भी हाता ह। ऊन व लकडी का व्यापार भी यहाँ का काफी बढा गरा रहा है।

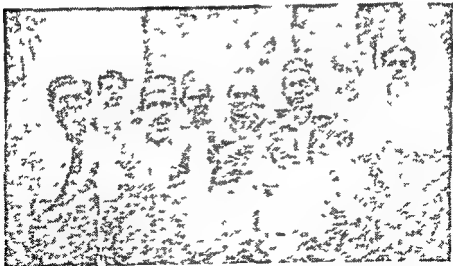
कालू के त्यौहार—गाव के निवासिया म कई तरह के त्यौहार मनाने के रिवाज प्रचलित हैं। जिनम सीखल सात्यू गणगौर (चारो वासा की) रामनवमी, छोटी बही तीज, अक्षय-तृतीया रक्षा बंधन गोमानवमी, गगहरा दीवाली, होली तथा मकर सक्रांति हैं। नव-त्यौहारो मे प द्रह जगस्त तथा छव्वीस जनवरी राष्ट्रीय पव हैं। दीपावली और होली यहाँ के धार्मिक तथा ऐतिहासिक पव है। महाशिवरात्रि और ज माष्टमी यहाँ के विशेष धार्मिक पव है। इ ह बडे उत्साह से मनाते हैं।

मेले मगरिये—गणगौर का मला सावन भादवा की ताज का मेला जल भूखणी एकादशी का मेला तथा नवरात्रो का मला प्रभति जन सम्मेलन यहाँ बडी धूमधाम स मनये जाते हैं। गणगौर का मेला यहाँ का दूर दूर तक प्रसिद्ध है। सावण की ताज का लडकिया गाव के बाहर जाकर अपनी मुड्डियाँ जलाती है और गीत गाती हैं। वहाँ गूबरी वनाकर भी खाती चबाती हैं। किसी अपने मोमी (जेष्ठ) भाई का परजमीन में गाव कर तालाब की तरफ भाग जाती हैं और मगरिये में खरीक हो जाती हैं। लडका अपना पर निकाल कर इहे मारन लौता है। गधरी पवाई हुडियाँ लडकियो के पीछे फेंक कर तोड डालता है। सावण की तीज के मने का यह रिवाज मुख्य आकर्षक होता है। भादवे की तीज को भी जनाणे तालाब पर मेला लगता है और जोरतें उसक जल मे आक पने (आक क पत्ते) ताड कर तराना हैं।

कालू म खेल कूद—यहा क लोग खेल का मइत्ता का सदा से समझते आये हैं और नियमपूर्वक खेल सेहत हैं। इसलिए दिन भर काम करत हुए थकते नहीं है और उनकी आयु भी अधिक हाता है। कालू के लोग मनोरजन के दृष्टिकोण से ही नहीं खेलते हैं बल्कि वे खेलना अपना उत्तम समय समझते है। इसी कारण गाव क सोगो की बुस्ती-दुरुस्ती बनी रहन म उनका नाव उन्नत है।

कानू म प्राचीन समय से जनक प्रकार के खेल मेले जाने है। चौपड (पास या चौडिया से) गुड्डी गुल्नीखडा कवड्डी तरना तथा कुश्ती यहाँ के उत्साही तथा मनो रजक खेल रहे हैं। कालू के लग चरभर तिगो तास राई राई ओडी ओडी लूणिया घाटी उता घुता हड्डयो चिवदडी चोर कुडिया आँख मि गौना आदि गल भा बूडे जवान सभी खेलन रहे हैं। कालू मे गणगलान यति की गुड्डी के पूँछ म लालटेन या टाकर बांधकर रात भर उड़ाई जाती थी। पीछे के पचास वर्षों मे श्री दीपचंद डढाणा की तिरकारी म मोतीचंदजी करनाणी के दरवाजे मे मुगनचंद नाहटा के कमरे म, गुराजा के कमरे मे और फतहचंद बोथरा क घर मदव तास और चौपड का खेल होता था।

की मडला द्वारा भी समय समय पर खूब प्रदर्शन किए जाते हैं। कभी कभी गांव में कठपुतली का खेल निम्नतान वाले भी जा जाते थे। चिडावा व झुझनू की तरफ से नानू राणा की मडली भी रंगान करने के लिए आया करती थी, जिसे देखकर बड़े ही आश्चर्य मिश्रित आनंद से देखा करते थे। वि० सं० 1985 में बनकर नाट्य की बेंटी की वरान राजलदेगर से आई थी। जिसमें 3 अपने गांव से एक नाटक मडली माय लाय थे। उस नाटक मडली ने दो दिन पत्र आकर श्री तानाच दजी नाट्य के घर के पास स्टेज (मंच) बनाया था। मडली द्वारा भवन प्रह्लाद और भवन सूर्यदाम (विन्ध्यमाल) नाम के दो नाटक खेले गये थे। जिसका गांव के सागा पर बहुत प्रभाव पड़ा। उन्हीं के अनुकरण में गांव के कुछ नवयुवक श्री मनापचंद साधूगम नाट्य नेमन द रिमंचा घालूगम सस्कता जयचंदनाल विमंचा मेघराज गोलछा आदि न नाटक खेलने का कार्य आरम्भ किया। इन व्यक्तियों का अभिनय करने का भारी शौख था। लेकिन इनके साथ शोभाचंद जम्मड हत वाल विवाह में श्री भीखमचंद नाट्य सहित अभिनय का पाठ किया था। इसी प्रेरण परिस्थितियों में गांव के कुछ सभ्य एवं निम्न युवकों का अपने गांव में नाट्य परिषद की स्थापना की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ। फलस्वरूप श्री गिरधारीलाल शबर खेताराम स्वामी (प्र० अ०) जयनारायण पारीक (चे०) प्र० दुगादत शर्मा नानूराम सस्कता, काशीराम राठी रूपचंद नाट्य जोरमल राठी आदि युवकों ने बड़े उत्साह तथा रुचि के अनुसार सं० 1996 में संवासदन सरस्वती पुस्तकालय की शाखा स्वरूप सरस्वती नाट्य परिषद की स्थापना पर्याप्त धन व्यय कर के की थी। जिसमें पदों विगा भलरियो के सिवाय तरह तरह की योगाओं जय सामान सग्रह किया गया था। दिनांक 13/9/40 को बार अभिनय नाटक खेला गया जिस दूर दूर के वस्त्वों से लोग देखने को आये। फिर घमशाला में नाटक के विषय में सरस्वती नाट्य



पहली पंक्ति श्री भगलदास काशीराम राठी नानूराम सस्कता, श्री गिरधारी लाल शबर, खेताराम स्वामी (प्र० अ०) श्री रयाका न त्रिपाठी।
 दूसरी पंक्ति पाँछे लगे श्री भवनान कर्वा, रामेश्वर शबर रामेश्वर पांडिया।

परिषद्' के सदस्यों की समा हुई जिसमें 'दानवीर कर्ण' नाटक खेलना निश्चित हुआ। दिनांक 17 10 42 को नाटक खेला गया। स० 1998 को नाट्य परिषद् द्वारा हाली के अवसर पर हास्य अभिनय किया गया। तत्पश्चात् स० 2002 भादवा वदी 7 तदनुसार तारीख 30-8-45 को धवणकुमार' नाटक खेला गया। इन नाटकों के खेलने के लिए एम० पी०, सदर पुलिस विभाग स स्वीकृति सेनी पच्छी थी।¹

License for Theatrical Performances
at Kalu in favour of Head Master Patta
School Kalu, Bikaner

- 1 The Drama Danvir Karan would be played on 15th August 1942
- 2 The Government will not recover entertainment Tax as laid down in article 5 of the Bikaner State Entertainment Duty Act 1936 as the performance would be free to the public
- 3 No performance, which is likely to cause communal excitement religious rivalry or has a political bias will be permitted

2415325R
12 9 42

BC/12 9 42


Revenue Minister

To

D/-

Copy forwarded to the
for information and
favour of necessary action

Revenue Minister

नाटक करने का आदेश

तत्कालीन समय में गहरी सम्यता और विकसित साधना में दूर वैसे हम छाते से कस्ये में सरस्वती नाट्य परिषद् की स्थापना परिषद् के नवयुवक सदस्यों की महान सफलता एवं योग्यता की परिचायक थी। नाट्य परिषद् द्वारा वर्षों तक धार्मिक एवं सामाजिक नीतिप्रधान नाटक खेले जाने के कारण इसको अपूर्व प्रसिद्धि प्राप्त हुई। गांव कालू में इस संस्था द्वारा मनोरंजन के अच्छे साधन उपलब्ध करवाये जाते रहे और उत्साहमय वातावरण बना रहा। लेकिन तत्पश्चात् गांव में राजनीति का प्रवेश हुआ और गुट-बिंदियाँ हान लगी। जिससे अपने आपको बड़े समर्थन वाले कतिपय लोगों की उपस्थिति के कारण परिषद् की गतिविधियाँ धीरे धीरे कम हो गईं। अब तो इस संस्था

क वार्धा का केवल नाम ही लिया जा सकता है। वनमान म कुछ उत्साही रघुपति
प्रय न से वक्ष्य सभी स्थान पर कभी कभार अभिनय द्वारा जनता जनान का
मनोरजन कर लिया जाता है। लेकिन नाट्य परिपद् द्वारा पन विए गये नाटका जमा
सम्प अभिनय और साज सज्जा की पृणता अब वहाँ ? आज भी गाव क बुजुग सरस्वती
नाट्य परिपद् द्वारा लेले गए नाटका का याद करने एन सुन्द अनुभूति मटूम करते हैं।

कालू की भजन मडली - भजन मडली यहाँ की मण से प्रसिद्ध रही हैं। भजन
गायकी में पहल महत श्री मेघदास श्री कानूराम वर्मा जेठाराम जाणी सावन कुम्हार
मुगनाराम सुनार मुख्य माने जाते थे। आजकल श्री मेघनामजी क शिष्य श्री विष्णुदास
की भजन मडली गाय में अग्रणी है। जिनम श्री रामेश्वर नावनिर्वा मुख्य गायक है और
कानदास मधाराम पारोक, जालदाम (वन्ग) स्वामी, नरसी पाडिया आदि अय गायक
हैं। महत श्री विष्णुदास की मडली दूर दूर तक के गावों में जागरण ने के लिए
जाया करती है।

कालू में शिक्षा प्रचलन—गाव कालू म बड़े लम्ब समय में शिक्षा क प्रति
रुचिबर प्रसार होता आया है। ई० सन 1908 क समय से गाव कालू म राज श्री
बोवानर दावत माह दिसम्बर 1909 रजिस्टर हाजिरी बबरा विद्याधियान पाठशाला
कालू का प्राप्य पुराना रजिस्टर देखने से भी ऐसा बात हुआ है। उक्त रजिस्टर म
राजा महाराजाओं के वप गाठो की और धाढा की छुट्टियां बहुत हैं। हेडमास्टर क
नामा में श्री नाथूनाल, निवबबम हैं और दस्तमत्त एक उडू म तथा दो अप्रजी म लिखे हैं।
नवम्बर ई० म० 1909 म जिन छात्रा के नाम है उनम श्री विगनसालयति गिरधारीमल
(पुत्र चुनीलाल बब) सोलाचद नाहटा (गणेशमल) जसे अच्छे नागरिक निकले थे।
वतमान म नरमिहदास सिधी (अखेराज) मगतमल (सूनकरन कोठारी) जसे दो एक
व्यक्तिया को अभी भी देखे जा सकते हैं। रजिस्टर म 1909 में सन 1911 तक का

गाव की केवली कालू का रजिस्टर

क्र.सं.	नाम	पिता	वय	धर्म	व्यवसाय	संकेत
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10

हाजिरी रजिस्टर (1909 10 ई०)

क्र.सं.	नाम	पिता	वय	धर्म	व्यवसाय	संकेत
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10

है। इनसे पूर्व उपामरे एव रामस्नहिया की जगगी न प्रारम्भित शिक्षा पढ़ाये जीर हिसाब पढ़ाये जात थे ऐसा मुना गया है। श्री फूलागम वनर जीर शेरमन डूढाणा आदि लोग भी रामस्नहिया की जगगी में पढ़े। श्री रामविशन मडेनवाल न अपन पिता श्री चुनारामजी व पटन के उल्लेख में उल्लेख कि व गगनाल कगनाणी व पाम पढ़े थे जो गाव व लहके पढ़ाया करते थे। मन् 1913 14 के बाद के समय में यहाँ ए० गुरुदत्तजी रतन गन् निवासी व पटन का उल्लेख मिलता है। इनके पाम तुलसीराम शवर और नालचन राठी पढ़े। ई० मन् 1926 27 के आम पाम पट्टा स्कूल पुन गुलवा लिया गया था, जा ई० सन् 1930-31 तक रहा। इसके हैडमास्टर श्री जामागमजी शर्मा (रवाही) भावानदान शर्मा (यू० पी०) और पमानद चौधरी (हरियाणा) रहे थे। इस समय के विद्यार्थियों में गुमानदास बरानी मोहनलाल पटवारी नानुराम सक्कना वाणीराम गठी रामविशन लडेनवाल आदि हैं। उस समय चौथा कक्षा की परीक्षा भी बीकानेर जाकर दनी पड़ती थी। सेनिन ई० सन् 1928 29 (वि० स० 1985) को राज्य में प्रारम्भिक शिक्षा का प्रचार करने के लिए अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा कानून पाम हा गया था। सन 1930-31 में फिर यहाँ माहेश्वरियों में गुरुदत्तजी आमवालों में श्री शिवप्रतापजी (बीकानेर) प्राइवेट अध्यापक बुला लिए गए। इनसे पढ़े हुए छात्र श्री पीधाराम, बहीनारायण, माहनलाल रामू और राजमल, जवरी मल नाहटा हैं। इसके बाद ई० मन् 1933 34 में पट्टे की आर स श्री मूरजमलजी पातीवाल हैडमास्टर न जाकर पुन स्कूल खोला। सन् 1937 में महायक मास्टर पद पर श्री मगलदास आये और फिर श्री नारायणदत्त। यह पट्टे का प्राथमिक स्कूल सन् 1940 तक चला। ए० बी० पट्टा स्कूल में पहले प्राइमरी स्कूल की रक्षाओं में तीन भवरलाल एक कक्षा में साथ पढ़े (सिंधी, बर्वा और बंद)। हैडमास्टर—मूरजमल जी सेतरामजी बाधस्पतिजी स्यानागमजी और गगाराम छीपा रहे। इनके बाद श्री भल्लू-दान आडा और उदयपाल आये। इस समय छात्रा में तिलोक्चंद करनाणी भवरील बोधरा विश्वनाथ राठी, श्रीराम शवर, जगनाथ डूढानी, बीडामल बर्वा आदि रहे। सन 1951 में यह स्कूल सावर मिडिल हुआ और सन 1952 में पूर्ण माध्यमिक हो गया। मिडिल स्कूल की कक्षाओं में साथ पढ़े व हैमानाल नाम के तीन विद्यार्थी—शवर, बंद और मिधा हैं। हैडमास्टर मात्र एक ही रहे—श्री जयनारायण भागव।

ई० सन 1939 40 में पाँचवा कक्षा की परीक्षा लूनकरनसर तथा छठी कक्षा की परीक्षा बीकानेर देनी पड़ती थी। तत्काल श्री भवरलाल बर्वा और हनुमानमल डूढाणी न छठी कक्षा का परीक्षा बीकानेर जाकर दी थी। श्री गिरधारीलाल नाहटा और भवरलाल माट, पाचवी कक्षा की परीक्षा लूनकरनगर—बीकानेर से आये श्री राम प्रसादजी सहल का देख रेख में दकर आये थे। सन 1941 में डाइरेक्टर शिक्षा विभाग की तरफ से ए० बी० पट्टा स्कूल कालू की स्थापना हुई और इसके बाद स्कूल का निरंतर विकास होता आया है।

द० सन 1956 से वर्तमान राज० उच्च मा० विद्यालय है। इसमें कला वग के अध्ययन के साथ सन 1968 से विज्ञान वग का अध्ययन भी होने लगा है। इससे पहले

वॉमस विषय भी था। इस रा० उ० मा० विद्यालय (1956) पर गुरु से आज तक जित प्रधानाध्यापकों की शासन व्यवस्था रही है, कम से उनका नाम इस प्रकार हैं— सव श्री एम० एम० बपेना, वी० वी० चारण, जो० एल० व्याम, सी० आर० आचार्य, एल० डी० शर्मा और के० एस० भागव हैं। फिर श्री जयनारायण मायूख एव गंगा प्रसाद गर्मा आये और नवम्बर 1980 से 24 अगस्त 1981 तक प्रधानाध्यापक के रिक्त पद पर श्री रामचन्द्र सोलंकी ने इस विद्यालय का कार्यभार संभाला। वर्तमान में श्री जयनारायणजी पारीक अति योग्य प्रधानाध्यापक हैं। इन से पहले श्री रामचन्द्र नागल भी रह कर गए हैं।

यहाँ प्राइमरी स्कूल का विद्यालय भवन भी जिले भर में अपने ढंग का अनुठा है। अच्छी मर्यादा में बालक विद्या लाभ प्राप्त करते हैं। लड़कियों का अपना उच्च प्राथमिक विद्यालय भवन अलग है। इसका निर्माण सन 1975 में हुआ और 1976 सितम्बर में राज्य के भू० पू० मन्त्रिमन्त्री श्री हरिद्वज जाधवी ने इसका उद्घाटन किया था।

राज० उ० मा० विद्यालय का भवन जो अब देखने योग्य है पहले 1947 ई० में श्री अमर मिडिल स्कूल भवन के रूप में स्थापित हुआ था। सन् 1978-79 में रा० उ० मा० विद्यालय बालू माध्यमिक शिक्षा ग्राह राजस्थान की परीक्षाओं का केंद्र भी हो गया है। महाजन कोषसर, लूनकरनसर आदि तथा अन्य अनगणित विद्यालयों से यहाँ लड़के लड़कियाँ, पढ़ने व परीक्षा देने आते हैं।

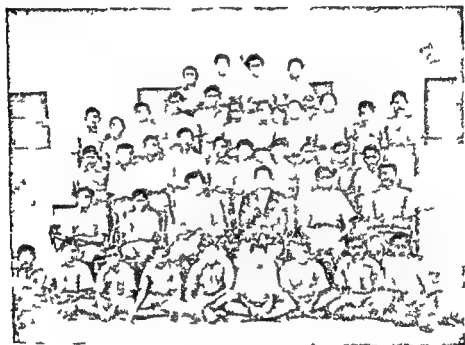
हाई स्कूल के पहले प्रयत्न

सन 1953 में हाईस्कूल के लिए बालू से भी किसानलालजी बगरह कई लोग जयपुर गए। मगर उस समय कोई सुनवाई नहीं हुई। 1952 के चुनाव में श्री कुभाराम आर्य का लूनकरनसर क्षेत्र से बतई बाट नहीं मिले। बालू के लोग भी साथ नहीं हुए और तत्कालीन मन्त्रिचौ० मूलाराम के धार विराघ की बातें भी जयपुर के मन्त्रीमंडल तक पहुँच चुकी थी। तीसरी बात यह हो गई कि श्री हंसराज आर्य जो कि कुभाराम के अभिनव महाजन थे वह हाथ में गोली बग गई और उनकी धर्मपत्नी बहुत बीमार थी, ऐसे सबट के समय श्री किसानलालजी यति से श्री आर्य ने वज्र रूप एक हजार रुपये माँगे, पर श्री यति बाता बाता में टाल गया। तब श्री किसानलालजी को भी हाई स्कूल का श्रेय कैसे मिले? ऐसी पुश्तानी दास्ती क्या? कि समय पर उठने के लिए तिनके रूप तनिक सहारा भी नहीं दे सके? बस, यति के तत्सामयिक पार्टीजन एव स्वयं जयपुर जाकर ताली हाथ लौट आये।

वर्तमान सुधारक शिक्षित बंधुओं के दोरे पर भी जयपुर में उनकी नजर नहीं खुली। तब वविध्य विषय विचारक श्री गिरधारीलालजी खवर ने इन पकितया के लेखक के लिए सोचा कि नानूगम मास्टर और हंसराज जी पटवारी ठिकाना के समकालीन कमचारी साथ रह हुए हैं और दोनों ही आय गमाजी, अतः यह द्वय सज्जन सम विचार हैं। श्री हंसराज कुभाराम जी आदि मंत्रियों के अवगानी कार्यकर्ता हैं और संस्कृति भी वर्तमान में अपने मडनीय आदमी हैं, इसलिए इन दोनों को बालू की सही सत्य स्थिति में लाकर हाई स्कूल स्थापित करवाना का कार्य सुलभ करवाया जाना चाहता है।

फिर क्या था ? भाईजी के दह धन विचार 21 जून 1954 की संध्या मुन साथ लेकर बस पर जा जमे ।

23 को 9 बजे सुबह रेल से जयपुर जा उतरे । आगे सप्ताह भर स गया हुआ श्री गयाविंगन बागही प्रतीक्षित प्रस्तुत मिला । उसने बताया कि गोपानचंद और राजकीय उच्चतर माध्यमिक स्कूल बालू बीकानेर के 1960 61 सत्र मन्त्रालय के सदस्य



पक्कि नीचे बठी हुई (दाये से बाये) हसराम सेठिया मानचंद वर भूमर मल नाहटा पृथ्वीसिंह सेलावत विजयसिंह वर जगरम मरना बम्पालान सेवग मालचंद गर्मा ।

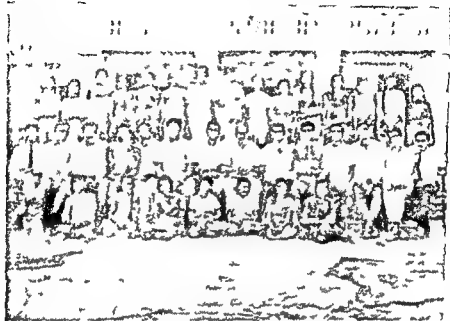
दूसरी पक्ति पहली पक्ति के पीछे (कुर्सी पर बठे) बजलाम डूपाणी जारा राम गया श्रीधर दामा (व अ) भद्रदान जी चारण (प्र अ) हनुमान मन चौधरी ईश्वर राम चौधरी ।

तीसरी पक्ति म जगदीश चौधरी निरण नाहटा पूनमचंद गया बशीलाल पीपळवा केसरीचंद घाडेवा विजयसिंह सिंधी बाबूलाल सिंधी रामेश्वर लाल राठी रामकुमार पारीक लिखमीनारायण पीपळवा ।

चौथी पक्ति पीछे लामूराम नण विजयसिंह तातेड, देवीलाल खाडन कन्हैयालाल नाहटा मालनाथ योगी धमचंद चौधरी मोहनलाल खाडल मुरजाराज चौधरी, रतनलाल नाहटा मागोलाल पारीक ।

पाचवी पक्ति पक्ति इन्द्रचंद्र नाहटा शंकरलाल करनाणी नाधराम नाहटा शंकरीनान भादानी ।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बालू (बाकानर)
(छात्रों का ग्रुप सन 1970-71)



नीचे बठी हुई (बायें से दायें) कु० दुर्गा कु० गायत्री कु० तारा कु० सूरज कु० उर्मिला
कु० विजय लक्ष्मी ।

कुर्सी पर बैठ हुए (बायें से दायें) सवर्धी जुगुनीलाल चौधरी (ब अ रसायन) रामकिशन
(स अ) मदन माहन (स अ) । शम्भूनाथ शर्मा (प्र स रसायन),
नानराम सस्कता (स अ) महादेव प्रसाद आचार्य (ब अ ना शास्त्र)
सुन्दरलाल धानवी (ब अ इतिहास) चंद्दरत्न आचार्य (प्रधानाध्यापक)
गोरीशंकर जाशी (ब अ अर्थशास्त्र) लियान्तर्जली रा (स अ विज्ञान)
जमिउद्दीन सिद्दीकी (ब अ विज्ञान) केशरमल चौधरी (स अ),
सुभाषचन्द्र कोहली (ब अ गणित) ।


पकित में खड़ी हुई (बायें से दायें) कु० मंगनी कु० भवरी कु० रत्नहस्ता कु० रेसमी
कु० इन्द्रा कु० राजवहिन सरस्वती कु० लीला कु० निमला कु० तारा
कु० उर्मिला कु० नीला कु० उषा कुमारी कु० भिषलक्ष कु० सताप ।

हृदयचक्र दोनों ता आग जाश निराग होकर बनवत्ता गये । मैं आपके पत्रानुसार
इतजार कर रहा हूँ । हाई स्कूल खुलने की संभावना तो अभी बहुत दूर प्रतीत होती
है । इस पर भाईजी ने पूछा 'तुम सांग किस किस से मिले हो ?' बागडी ने कहा 'हम
सब संबंधित लोगों से मिले हैं व ता पूरी बात भी नहीं सुनते ?'

श्री गिरधारीलाल जी एसी सावजनिक समस्याओं के मध्यस्थ पाणित प्राणी
उनके हृदय पर बागडी की बातों का कोई असर नहीं हुआ । व नहीं बाले—फवत

मुस्करा दिये। रेल्वे स्टेशन के पास वाली घमझाला में डेरे डाककर चाय पान किया। फिर मुझे सारी बातें ममयाकर गंगाविशन के साथ कर दिया। वह मुझे सिविल लाइस के 16 नम्बर बगले ले गया। बगले के प्रवेश में बाई आर ही हंसराजजी का मकान मैंने वहाँ जाकर भाईजी के बताये अनुसार सारे विचार बताकर दिन भर वहीं गुजारा। कुभाराम जी की माताजी के वात्सल्यमय हाथों जल पान किया और बाद दोपहर के चौ० सा० के साथ जाकर कांग्रेस की मिटिंग देखी। फिर उसके बाद विधान सभा की गलरी में बैठकर विधायकों के बाद विवादा का आनंद उठाया। पांच सान दिन

Rajasthan Legislative Assembly
NOT TRANSFERABLE

VISITOR'S CARD  No **16757**
PUBLIC GALLERY

ADMIT Shri Narain Ram
to the meeting of ASSEMBLY to be held in the
Assembly Chamber on Wednesday
the 2nd June 1954
Issued through Shri Kumbha Ram M. L. A.

M R PUROHIT
6/8 crda y
२६
(हस्ताक्षर)

चिन्ता में रह तथा वहाँ कालू के डेपूटेशन की बात पता गई। परन्तु हाई स्कूल स्वीकृति की किसी न ही नहीं भरी। चौ० श्री रामचन्द्र ने हनुमानगढ़ फीट में अपनी हाई स्कूल की स्वीकृति ले ली थी। लेकिन भवन न होने की वजह से आदेश नहीं मिला। हमने अपने बनाये गांव के भवन का भी वहाँ एक निरीक्षक से साबित करवा दिया। श्री रामचन्द्र से भी अनुमति की कि "आप की स्वीकृति हम दे दो।" फिर हम अपने क्षेत्रीय विधायक श्री जसवन्तसिंह जी के पास गये। वे अपनी कार में हम तीनों को बठा कर मास्टर भोलानाथ, (तत्सामयिक शिक्षा मंत्री) के पास ले गये। लेकिन उस माल प्रयास निष्फल ही रहा। अगले साल के लिए सब न (मुख्य मंत्री श्री जयनारायण व्यास तक न) हा भर दी। परन्तु फट हुए चौ० कुभारामजी के मटल को हमने राजी किया और उनकी कोठी में हम एक पार्टी दी गई 'अब हम एक हैं। अगले साल कालू का शर्टस्कूल पक्का हो गया।'

जाना जाना और पत्र व्यवहार का सम्बन्ध बना। 1956 के माघ के चलते विधान सभा के मंत्र में नेहरू और जेवरीमल नाहुटा वहाँ मिलन गये। सभा के अर्द्ध वकाश में श्री हंसराज जाय न पुस्तकालय में हम दोनों का बड़े दिलाकर मुख्यमंत्री श्री माहनलाल सुखाड़िया को लाकर बसाया कि गत वर्ष की बात पर हाईस्कूल

- 1 सन् 1982 में छ नाथ रूपया की स्वीकृति रद्द हो गई छात्रावास नहीं बना और जय वर्मा काशी की उपस्थिति से माध्यमिक बोर्ड की परीक्षाओं का केन्द्र और उच्च माध्यमिक विद्यालय की मायता किसी भी समय समाप्त हान की ऐसी समाधान बन गई है।

खुलवाने के लिए "कालू का डेपूटेशन फिर आ गया है?" थी सुखाडिया न बट कह दिया— अवश्य ! इस साल सब से पथम कालू का स्कूल ही पास होगा ।"

गई में कुम्भारामजी कालू आय और घमगाता भवन के नाटकीय मंच स्थान पर नभा की । उन्होंने कहा— आपके गांव से हाई स्कूल की मांग थी । हमन हायर सेक्ण्डरी के प्रस्ताव पास करवा दिए हैं । आदेश यहूच जायेगा ।'



कालू में थी कुम्भाराम साय

यथा समय (10-6-56 को) सेलर के पास हँसराजजी का पत्र आ गया कि "आपका हाई स्कूल मजूर होकर डाईरेक्टर साहब के पास बीकानर चला गया है ।

कालू में शिक्षा की विधियाँ प्राप्त करने वाले—यहाँ के गाँवों में पहल शिक्षा देने वाले स्कूलों का भारी अभाव रहता था । शिक्षा गाँव के धार्मिक मुखियों द्वारा दी जाती थी, जिसमें परीक्षा देने का कोई सिलसिला नहीं रहता । सन् 1932 तक कालू का स्कूल में केवल अध्ययन ही कराया जाता था, परीक्षाओं का आयोजन नहीं किया जाता । अंग्रेजी भाषा के अध्ययन का प्रचलन विस्तृत नहीं था । इसलिए गाँव के कुछ प्रतिभावाली एवं अध्ययनरत छात्र हिंदी व संस्कृत की परीक्षाएँ ही बाहर जाकर दिया करते

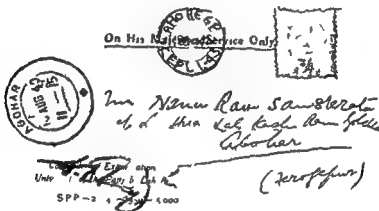
1

बीकानर गाँव में आये

जयपुर
६-५६

लिखा कि आपकी सुझावों के लिए मैंने सोचा है
इसलिए मैं आप को सूचना दे रहा हूँ कि आप
का टाईपिंग मशीन लेन देकर डाईरेक्टर साहब
के पास ले जाने का प्रयास करेंगे तो क्या आपकी
मशीन ले जाएँगे कि आपके गाँव में रखवा सकें

थे। इसलिए उनका बड़ी कठिनाइया का सामना करना पड़ता था। तेसरे स्वयं अपनी तत्समय की पहली एक हिंदी परीक्षा सबंधी कथा बता रहा है। ई० सन् 1940 फरवरी में हिंदी भूषण की परीक्षा के लिए पंजाब का नागरिक (जाली) बनकर पंजाब यूनिवर्सिटी से फ़ाम भरना पड़ा। पत्र व्यवहार का पत्ता भी हीरालाल काशीराम मोलद्या, अवाहर का लिखा जो नाहुटा के सबंधी है। विद्या भवन गणपत रोड, अनारकला द्वारा नीतला बानेज के छात्र बनकर फ़ाम तस्दीक करवाया। 13 मई सन् 1940 का ला फ़लिज में परीक्षा आरम्भ हुई। दस दिन वहां रहना पड़ा, परीक्षा समाप्त होने पर लायलापुर, रात्री नदी, दाहीदगज (म्यान विन्नेप) अमृतसर जादि स्थान देखे। मगर परीक्षा फ़न दबा तब राना आ गया। खर ! इसरे साल उलनी मेहनत से लाहौर जानर परीक्षा



श्री जीर उल्लास होकर हिंदी भूषण का प्रमाण पत्र प्राप्त किया। फिर सन 1950 में
 जमा कॉलेज गनी बाजार, बीकानेर के प्रिंसिपल द्वारा प्रभाकर का काम भरा, परीक्षा
 केन्द्र जवाहर हार्ड स्कूल मिर्जा। परीक्षा देने गया तो रोल नम्बर नहीं आये। जब
 यूनीवर्सिटी लाहौर नहीं सोलन (शिमला स्टेशन) थी। रोल नम्बर के लिए तार निया
 किंतु खाली हाथ घर लौटना पड़ा। दूसरे वष पत्र व्यवहार करके दूसरा परीक्षा गुल्फ
 जमा करवाया और सन 1951 की परीक्षा में मुश्किल से सम्मिलित हो सका। दिल्ली आय
 समाज भवन में परीक्षा केन्द्र रहा। एक प्रश्न पत्र दे देन के बाद वहीं से प्रमाणित जम-
 तिय अनिवार्य रूप से भागी गई। लाओ, नहीं तो परीक्षा से वंचित। अत मेरे मित्र श्री
 तुलाराम गौड़ प्राध्यापक जामिया मिलिया बेसिक प्रशिक्षण (आखला) के पास पहुँचा।
 वहाँ के प्रधानाचार्य डॉ० श्री जाकिर हुसैन थे।¹ श्री गौड़ के प्राथना करन पर भी
 प्रधानाचार्य महादय ने मेरी जम तियि प्रमाणित नहीं की। तब श्री गौड़ के बताय
 अनुसार कई हायर सेकेंडरी स्कूलों में और मजिस्ट्रेट के पास तक गया। आखिर ज
 कॉलेज, नई सड़क के प्रिंसिपल श्री टीकाराम की दया भावना से जम-तियि प्रमाणित
 करवा कर ठीक परीक्षा शुरू होने के समय परीक्षा हाल में जाकर बठा और प्रभाकर
 (आनंद झा हिंदी) में पास हुआ।

परीक्षा के दौरान लाहौर में एक बार गाज़साग के मुस्लिमानों का पार्टी की भीड़ में बुरी तरह फँस गया था। किसी तरह एक भले मुस्लिमान की दुकान में छिपकर जान बचाई।" 'एमे ही श्री दुर्गादत्तजी को भी बिना परीक्षा दिए बनारस से दा वार लानी पड़ना पड़ा था। बनारस में हिंदू मुस्लिमानों के साम्प्रदायिक झगड़े के कारण मागल जा लागू था। अतः वे उक्त समय परीक्षा से वंचित रह गए।' तब! दश आज़ाद हुआ शिक्षा का प्रभाव बड़ा और कई शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की गई। सन 1956 से कालू में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में कक्षा 11 तक की बच्चा एच यिसान बग की पढ़ाई होती है। अंग्रेजी भाषा का अध्ययन भी अनिवार्य विषय के रूप में करना पड़ता है। कालू की हायर सेकेंडरी स्कूल में पढ़े हुए व अ य प्राइवेट छात्रों की वार्षिक बोर्ड की परीक्षाएँ भी यही हाँ लग गई हैं। यहाँ की शिक्षा प्राप्ति करने के बाद ही गांव के युवकों को विद्याध्ययन हेतु बाहर जाना पड़ता है।

डिग्रिया शिक्षा की है, जिनका प्रभाव बड़ा व्यापक दृष्टिगोचर होता है। इनके अनेक स्तर हैं जो किमी भी विश्वविद्यालय की परीक्षा उत्तीर्ण करने प्राप्ति किए जाते हैं। इनसे जीवन में आदर्शों का निर्माण होता है और सभ्यता का विकास तथा आत्मा की भावनाएँ उदात्त बनती हैं।

कालू में शिक्षा की सुधा धारा प्राचीन काल से बहती आई है। कई कालों में इसके प्रवाह का पानी गहरा हुआ है और कभी कभी कम। समयानुसार इसके वेग का रूपांतरित होना पाया जाता है, मगर सूखापन कभी नहीं।

पहले ये डिग्रिया भारतीय शिक्षा संस्कृति तथा उसके अध्ययन अध्यापन के ढंग से हुआ करती थी। आजकल इस पर विदेशी शिक्षा स्तर का प्रभाव है। दुख तो यह है कि आचार्य विद्यावाचस्पति विद्या महोदय, उपाध्याय शास्त्री विद्यारण्य प्रभाकर भूषण जमी परीक्षाओं का आज के लोग जानते भी नहीं हैं। भारतीय होकर भारत का संस्कृति को न जानना महान दोष है। ऐसी विनिष्ट डिग्रियों के प्राप्तकर्ता व्यक्तियों के कुछ नाम दिये जा रहे हैं जो सभी कालू के निवासी हैं और वर्षों पूर्व अपने छोटे से ग्राम में अध्ययन त रहकर बड़ी दुविधाओं के साथ परीक्षाएँ दी हैं।

- 1 प० दुर्गादत्तजी मारस्वत—शास्त्री और माहित्य भूषण बनारस।
- 2 श्री नानराम मस्कर्ता—हिंदी भूषण (1941) हिंदी प्रभाकर (ज्ञान इन हिंदी) (1951) पञ्जाब हिंदी विश्वारद (1955), साहित्य रत्न (1958) प्रयाग साहित्य महोपाध्याय (गमकष पी० एच० डी०) (1968)।
- 3 'हिंदी प्रभाकर' (पञ्जाब)—डा गोवर्धन शर्मा (1953)।
- 4 'संस्कृत भूषण' मय श्री मोहनलाल सारस्वत गमाहृण खडेलवान माननराम पटवारी और लेखक (1941) आदि हैं।
- 5 'हिंदी विश्वारद'—श्री रामप्रसाद पागीव (1955) भू दान आज़ा, बंगालाल विरमेवा, दुर्गागम शर्मा आदि मय (1960) हैं।

- 2 पन्ने चौथी अथवा फिर आठवीं कक्षा करके यहाँ के लटक बीकानर जाकर आई स्कूल करते थे।

- 1 वतमान शिक्षा पद्धति में कालू के निम्नलिखित निवासी वाणिज्य स्नातकोत्तर (एम० काम०) हैं—श्री जुगल किशोर नाहटा (1963), जोराराम गिया (1971), अमृताराम शर्मा (1978), भगनलाल गठी गरमल खवर (), महेंद्रकुमार नाहटा (1979) बशीलाल खडेलवाल (1983) ।
- 2 कालू के निम्नलिखित निवासी विज्ञान स्नातकोत्तर (एम० एस० सी०) हैं—श्री बद्रीनारायण रमन (1971), सीताराम खडेलवाल (1975) और शुभकरण नाहटा (1973) प्रभृति ।
- 3 कालू के निम्नलिखित निवासी कला स्नातकोत्तर (एम० ए०) हैं—श्री किरण नाहटा, अमृताराम शर्मा (1971), बशीलाल खडेलवाल (1972), सीहनलाल बोयरा, नन्दलाल वर्मा, तीयराज सस्कर्ता (1979) श्यामसुन्दर सेवदा, शिवराज सस्कर्ता (1981), कु० अजना सेवदा ।
- 4 कालू के निम्नलिखित निवासी डॉक्टर ऑफ फिनांसकी (पी० एच० डी०) एवं उसके समकक्ष (इक्विवैलेंट) साहित्य अनुसंधानकर्ता हैं—सा० महा० नानूराम मस्कर्ता (1968 ई०) डा० किरणचन्द नाहटा (1973 ई०) ।
- 5 कालू के निम्नलिखित निवासी डा० आफ मेडिसिन (एम० डी०) हैं—डा० बद्रीनारायण रमन, डॉ० अमोलक गोलछा ।
- 6 कालू का चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट (ए० सी० ए०) श्री साटनलाल बोड है ।
- 7 कालू के निम्नलिखित निवासी दवा और चिकित्सा के स्नातक (एम० बी० बी० एस०) हैं—श्री ओमप्रकाश खडेलवाल बाबूलाल नाहटा ।
- 8 कालू निवासी श्री अमृताश्रम शर्मा शिक्षा स्नातक (बी० एड०) (1970) है ।
- 9 कालू के निम्नलिखित निवासी वाणिज्य स्नातक (बी० काम०) हैं—मन श्री हनुमानमन डूडाणी (1952), नरलाल राठी (1961) नन्दलाल शर्मा (1962) शंकर लाल राठी (1963), हनुमानमन गठी (1963) औरारमल बागडी (1964) लामचन्द साह, गौरीशंकर शंकर (1965), जेमल डूडाणी, बजलाल डूडाणी, कहेयालाल नाहटा, बाबूलाल गोलछा, शिवनारायण खवर रतनकुमार नाहटा धर्मचन्द गोयरा (1968), नगराज नाहटा (1967), रामकिशन शंकर, भवरलाल गठी (1974) ओमप्रकाश शंकर अमरचन्द नाहटा, पानमल नाहटा, लखनमल बोड सुरेन्द्र नाहटा (1978) कृष्णकुमार वर्मा जुगल नाहटा (B) जयमाल सेठिया (1975) सत्यनारायण शंकर, लक्ष्मी-नारायण खवर भवरलाल पारीक, सम्पतकुमार डूडाणी (1978), पूनमचन्द सिन्धी महावीर बिरमेचा (1979) सुरेण डूडाणी (1979), महावीर डूडाणी (1979) रमेश-कुमार नाहटा विमलकुमार बागडी मागोलाल शंकर (नेपाल) कमलकुमार बागडी चारणलाल साह (1979) महावीर प्रसाद पाडिया (1974) इन्द्रचन्द शंकर (1981) यदनलाल बोयरा (1981) कहेयालाल साह, रामकृष्ण सेवदा, धर्मचन्द नाहटा, श्याम सुन्दर बोयरा, ओमप्रकाश बोयरा, गुलाब डूडाणी, पवनकुमार राठी मानिकचन्द व सुरेन्द्र गोलछादि ।
- 10 कालू के निम्नलिखित निवासी कला स्नातक (बी० ए०) हैं—
- (अ) श्री जगदीशप्रसाद खडेलवाल (1967) शंकरलाल वर्मा (1969),

गमेश्वरलाल राठी (1969) रतनलाल राठी (1970) भूमरमल नाहटा, मालचन्द खडेलवाल (1973) केशवप्रसाद खडेलवाल (1977) जितेद्रकुमार नाहटा (1979) जनाराम आर्य (1979), विमलसिंह नाहटा (1979), मालचन्द साहस्रवत, इन्द्रचन्द भाटी नारायणदत्त मिश्रा बाबूलाल बोधरा प्रदीपकुमार राठी विजयसिंह नाहटा निमलकुमार नालखा सुशीलकुमार विरपचा आदि।

(ब) कला स्नातक सङ्कलित—कु० तारा नाहटा, मञ्जू डूढाणी (1979) सविता डूढाणी श्रीमती सगज बोधरा (अध्यापिका सिकिम), कु० कुसुम नाहटा (1982) एम डी वि वि रोहतक कु० कचन नाहटा (1982) कु० बबी नाहटा, मञ्जू सठिया, प्रेमलता राठी, कु० सतोष नाहटा।

11 (A) कालू के निम्नलिखित निवासी विज्ञान स्नातक (बी० एस० सी०) हैं— डा० ओमप्रकाश शर्मा, जुगलकिशोर राठी साहनलाल बोधरा, गोबधनलाल स्वणकार, ललितकुमार नाहटा आदि।

11 (B) विज्ञान स्नातक उद्दिष्ट—मुखमाल कोठारी (1970) लीला स्वामी (1980), विजयलक्ष्मी सेवना (1983)।

12 कालू के निम्नलिखित निवासी विधि (कानून) स्नातक (एल एल बी) हैं— श्री वन्द्यराज कोठारी (1968) रतनलाल गर्मा (1978) शिवराज सक्ती (1979), धमचन्द बोधरा (1971) बगीलाल खडेलवाल (1980) हरिप्रसाद राठी (1980), देवीलाल खाती (1982) गिरधारीलाल खडेलवाल देव ह कोठारी रवीन्द्रकुमार नाहटा (1983)।

13 (A) कालू से निम्नलिखित नवयुवकों का महाविद्यालयीय वाणिज्य स्नातक त्व का नियमित अध्ययन किया हुआ है—श्री जाकारमन राठी श्री इन्द्रचन्द नाहटा, मूलप्रकाश डूढाणी।

13 (B) स्नातकीय शिक्षा के अन्तिम वर्ष के दिनों में विवाह निश्चित हो जाने के कारण परीक्षा से वंचित रह जाना पड़ा, उन मेधावी लड़कियों के नाम हैं— कु० दमयंती राठी कु० उमिता नाहटा कु० कान्ता बोड।

वर्तमान समय में कालू के अनेक युवक उच्च शिक्षा में अध्ययनरत रह कर भाव में शिक्षा के महत्व को निरन्तर बनाय हुए हैं। परन्तु काल में सकुण्ठरी पाठ करने वाली पहली लड़की सरोज नाहटा (अब) पुर्गलिया है तथा गांव का पहला प्रेजुएट H M Dudhani।

उपाधि पदक और सम्मान सूचक पुरस्कार—यद्यपि प्राचीन काल में मानव कार्यों की योग्यताओं को सूचित करने के लिए आदर प्रतिष्ठा आत्म सम्मान, अभिमान, अभिशपा, प्रार्थनाहन बघाई देना स्वागत करना आदि के आनन्ददायक एवं प्रसन्नता प्रभति के समयापयुक्त सुयशपूर्ण तरीके प्रचलित थे। परन्तु वर्तमान समय तो पण पण प्रतिष्ठा का युग है। इसमें अनुप्य के नाम की ओज उज्ज्वलता का अवलोकन अवश्य होता है और विभिन्न या यताओं के माध्यम से उसे सम्मान व शौरव मिलता है। अतः काम आज का युग धर्म है, जो सुदृढ़ता एवं शालीनता सहित सम्पन्न होने पर राज्य

सरकार संस्थान परिषद कस्वा व नगर तथा व्यक्ति विशेष की ओर से कमठ कार्य-कर्ता जन प्रमाण पत्र उपाधिया पदन पदविया सनद सिरोपाव एवं पुरस्कार प्राप्त करते हैं।

विश्वविद्यालय से विद्यार्थियों को मात्र शिक्षा की उपाधिया दी जाती हैं। जो आदमी जितना भा पढ़कर परीक्षोत्तीर्ण हो लेता है—तब उसके नानानुसार उस डिग्री दी जाती है। एम ए, एम काम एम एस सी तथा एल एल एम जैसी अनेक पढ़ाई की डिग्रिया आत्मी को शिक्षक स्तर के क्रम से वितरित होती हैं। किसी विषय के पारंगत विद्वान को विश्वविद्यालय की एक डी (डाक्टर आफ फिनासफी) डी लिट महामहोपाध्याय जैसा डिग्रिया भी प्रदान करता है। य पढ़ाई की उपाधियों में पृथक् महत्त्व की होती है। पढ़ाई के प्रमाण पत्र तो मनुष्य के शिक्षा तान परिचायक साधन होते हैं जिनके सहार उसको याभ्यता सिद्ध हाती है। किंतु य हमारे सम्मानोय खिताब मनुष्य की विनिष्ट काय कुशलता के रूप में दिये जाते हैं।¹

तेरहवी शताब्दी में मीनम उपत्यका में दा याई मन्तार बम्बुज के सामंत के तौर पर रहते थे उनमें से एक का बम्बुज राजा ने श्री इन्द्रावती दादित्य की उपाधि दी थी।² अपने यहां भी अपूर्व गौरवों के कारण लोग सम्मान से अशोक महान कहताता है। मराठा वीर शिवाजी का सरजा³ की उपाधि थी। औरंगजेब के जमाने में साहम बहादुरी के कारण बीकानेर के राजा करणीसिंह को 'जय जगलवर बादशाह' की उपाधि मिली थी। बीकानेर के डाना अवीरचंद रामरत्नदास की उच्च दान-गीलना के लिए अंग्रेज सरकार ने 'गय बहादुर' दीवान बहादुर' मर' 'सी आई ई', और 'के सी ई' के उच्च खिताब देकर दाना की प्रतिष्ठा बढ़ि की थी। ई सन 1902 में सम्राट एडवर्ड ने हरिसिंह सत्तासर का जो ठिकाना छत्रगढ़ के सुपर-बाइजर थे, 'कारानशन मेडल तथा 'सी आई ओ' और 'ओ बी ओ' के खिताब दिये थे। ऐसे खिताब लेन वानों में महाजन के राजा श्री हरिसिंह को 'राय बहादुर' सन 1928 में और फिर 'सी आई ओ' का खिताब मिला था। बियरा के ठाकुर बनसिंह सुरनाणा के भूरसिंह और कुभाणा के दीननसिंह को 'राय बहादुर' तथा गजससर करणामर के गुताबसिंह को भी 'राय बहादुर' तथा कृपजाल कागनेशन मेडल मिल थे। परंतु सहजगमर के ठा० धनपतिसिंह वद मेहता के पूर्वजों को पुरान समय में 'राय' तथा 'महाराय' की उपाधिया मिली हुई थी। बीकानेर राज्य में पद राजा ठाकुर और ताजीम की उपाधिया तथा छडी कडा, खास रुक्का एवं मिरापाव के सम्मान मिलने थे।⁴ ई० सन 1946 में गांव कानू के श्री किशनलाल यति

- 1 भारत रत्न पद्म विभूषण पद्म भूषण पद्म श्री, पानपीठ पुरस्कार राष्ट्र भूषण पुरस्कार, नावन पुरस्कार नेहरू पुरस्कार कलिय पुरस्कार अजुन पुरस्कार आदि आन्त उपाधिया—पुरस्कार देने की सुयवस्था भी यहां हैं।
- 2 बौद्ध संस्कृति—आत्मी भूमि (स्याम), पृ० 210 ले० था रान्न साहित्यायन।
- 3 सरजा = सिंह
- 4 बीकानेर राज्य का वा इतिहास भाग—द्वितीय पृ० 766-67।

श्री सुगनमल नाहटा और श्री रामनारायण बालचंद खवर को बीकानेर राज्य से स्वर्ण छड़ी का सम्मान मिला था। उस समय श्री फतेचंद बोहरा को स्वर्ण कड़े का मान दिया गया था। तब लेखक को भी 'यत्नायण' काय बालचंद पुरस्कार एवं सनद हासिल हुई थी।

पदक—कोई बहुत अच्छा काम का काम होन पर किसी प्रशंसित व्यक्ति को उपहार के रूप में दिया जाना वाला सान चानी आदि के निक्के जसा गाल या अंग आकार का मढ़ा सजा हुआ कलित टुकड़ा जिस पर प्रायः देने वाले का नाम भी अंकित रहता है। ऐसे विशिष्ट पदक सैनिक अधिकारियों एवं कमचारियों को मिलते हैं, जो वीरता, शौर्य प्रदर्शन व सेवा काय के लिए 'परमवीर', 'महावीर', 'अदोक्त चक्र', 'वीर चक्र', 'शौर्यचक्र', 'वातिचक्र' परम विशिष्ट सेवा पदक', 'अति विशिष्ट सेना सेवा पदक' 'अति विशिष्ट सेवा पदक' आदि नामों से राजकीय प्रतिष्ठा—पदक प्रचलित हैं।

कालू के कावडसीमाड़ी ग्राम गारवदेश के सूबेदार श्री सादूसिंह को प्रथम विश्व युद्ध विजेता के रूप में मेडल मिला था।¹ वनमान भवन के पौत्र लेफ्टीनेंट कनल जगमालसिंह, कमांडिंग ऑफिसर (13 फ़िनेडियरस) की पाकिस्तान युद्ध (1971) विजेता



- 1 तत्समय का एक पदक विक्टोरिया क्रॉस का समान। घडसीसर के मेजर दीपसिंह ने चीन युद्ध—1900 में एक बटालियन का नेतृत्व किया। उसके पुत्र मेजर जनरल शिवदत्तसिंह को किंग कमीशन दिया गया। दीपसिंह के द्वितीय पुत्र किशनसिंह को 1947 में पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध में भाग लेने व वीरता प्रदर्शित करने के लिए 'महावीर चक्र' प्रदान सम्मानित किया गया। हरियासर व छांगसिंह ने प्रथम विश्व युद्ध में गंगा रिसाला की ओर से भाग लिया व रूस की ओर से इन्हें 'रशियन आर्डर ऑफ द क्रॉस ऑफ सेंट जॉर्ज' प्रदान किया गया।

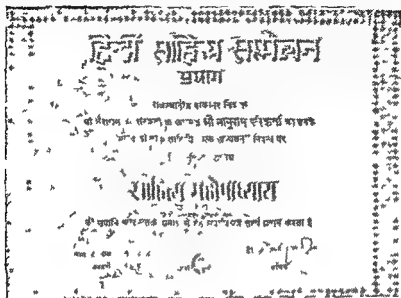
के रूप में राष्ट्रपति श्री वा. वी. गिर्री ने 'वीरचक्र' पदक भेंट किया। उनके अगुज लेफ्टीनेंट कर्नल लक्ष्मणसिंह को भी कई मेडल मिले हैं। सन् 1965 में भारत-पाक युद्ध में स्व० श्री पूर्णसिंह (मणैरा) ने 'वीरचक्र' अर्जित किया। इसी वर्ष कच्छ युद्ध में गडरा रोड पर उनको वहाँ के सरपंच की ओर से अभिनन्दन पत्र और शाल के सादर उपहार मिले थे। इन पत्रितया के लेखक को कई संस्थाओं से अनेक बार मेडल मिले हैं। भारत की जनगणना में 5 बार (ई० सन् 1931 से 1971 तक) असाधारण उत्साह एवं उच्च कोटि की वाय कुशल सेवाओं के लिए राष्ट्रपति रजत पदक मिला हुआ है।



लेखक को राष्ट्रपति से मिला रजत पदक

सन् 1899 में भीपण अकाल के समय राव बीकाजी के बसज महाराजा गंगा-मिहृजी अपने राज्य में स्वयं भिन भिन गाथा और तहसीली में गये तथा प्रजा के दुख को दूर करने का प्रयत्न किया। अतः महारानी विक्टोरिया ने प्रशस्ति होकर उन्हें 'कसरे हिंद' स्वर्ण पदक प्रदान किया। इसी तरह बीकानेर के समाज भूषण प० श्री विद्याधरजी शास्त्री, एम० ए०, 'विद्यावाचस्पति' के सम्मान से राष्ट्रपति द्वारा विभूषित किए गए। प्रो० नरसिंहदासजी स्वामी का भी अपने गौरवमय कार्यों के लिए बीकानेर राजकीय सनद (सन् 1927), महाराजा गंगासिंह स्वर्ण जयंती मेडल (सन् 1937) तथा महाराजा सादूलसिंह मेडल (सन् 1944) मिला था। सन् 1972 में राजस्थानी साहित्य अकादमी द्वारा श्री स्वामी का साहित्यिक सम्मान दिया गया। कालू निवासी प० श्री दुर्गादत्तजी शास्त्री का दूधर महाविद्यालय बीकानेर की राजस्थान संस्कृत परिषद की ओर से मार्च 1978 में सम्मान किया गया तथा उन्हें अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया। सा० महा० श्री नानूराम संस्कृता को 'संस्कृत भूषण' पदवी लब्धवान (दि० २८-११-१९९६ वि० १९९६) काशीस्थित भारत वर्षीय संस्कृत परीक्षा समिति की ओर से मिली तथा 'स्वाउट-मास्टर' एवं 'नव मास्टर' की उपाधियाँ राजस्थान स्टेट भारत स्वाउटम व गाइड्स ने क्रमशः ई० स० 1951 व 1957 में प्रदान की। वि० स० 1996 में संस्कृत कायालय अयोध्या ने 'प्रतिष्ठा-पत्रम्' (काय मनीषी) की उपाधि प्रदान की। हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 28 जनवरी 1967 ई० में

सस्कता का साहित्य महापाध्याय" का उपाधि पत्र प्रदान किया गया और सन् 1977-78 में राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार प्रदान कर साहित्यिक सम्मान किया गया। सन् 1977 में राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति से 'साहित्य श्री' की उपाधि मिली। श्री विरण नाट्टा को अपने शोध प्रबंध पर राजस्थान विश्वविद्यालय की ओर से सन् 1974 में 'डा०' का उपाधि पत्र मिला।



राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

पुरस्कार-प्रमाण-पत्र

श्री नानूराम सस्कता कालूजीकलेठे राजस्थान साहित्य अकादमी
उदयपुर द्वारा उनकी कृति लक्ष्मणधणी पर सन् १९७८ में प्रमाण-पत्र
अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया।
(राजस्थानीय अकादमी)

सन् १९७८
११/११/७७

Signature
संस्थापक अध्यक्ष अकादमी

Signature
संस्थापक अध्यक्ष अकादमी

चिकित्सक और चिकित्सा भवन—कालू में पहले पुराने ढंग से बंधी और हसीमो द्वारा ही इलाज होता था। दो चार देगी दवाइयों के नुस्खे याद रखने और रागों को समाल लेने थे। छोटें गांवों में पहले कई जाटू वृक्ष भी होते थे। जा गम हो चाहे शब्द कुलडिय वाली उकाली कुटकी चिंगायता तथा तम्ब (इ द्राघण) की जड़ से जलाज करत थे। पर बम्बा हान के नाने कानू में ऐम भूख वृक्ष नहीं थे। साधु महामाश्री के सहित यहाँ सब पड़े निश्च एव चतुर वृक्ष थे। श्री किशनलाल गाविन्दगम यति पंडित गणेशाराम शर्मा मेघदाम स्वामी कालूराम शर्मा आदि मयान वृक्ष थे। श्री बूढाराम ईश्वरप्रसाद वृक्ष भैरवदत्त आसाराम अजुनलाल पुरुषोत्तमदाम (वृक्ष विज्ञान) आदि बाह्य में जान बाने भी अनुभवी वृक्ष थे। श्री राधूराम रमाकांत पागल न भी यहाँ आयुर्वेदिक चिकित्सा का काम किया था। अब वृक्ष जीमप्रसाग कौशिक तथा श्री० नानूराम यहाँ आयुर्वेदिन इलाज करत हैं।

ई० सन् 1952 में ग्राम सेवा संघ कालू में नवयुवक कायकलाजी न अस्पताल के लिए विभागीय कार्यवाही के कामज चलाये। तब सितम्बर सन् 1954 में एक डिस्पेंसरी खोल जान के आदेश हुआ गया। नाहटों ने अपना एक भवन डिस्पेंसरी हेतु दे दिया। तब श्री के० मेहता पी० एम० ओ० द्वारा अस्पताल का उद्घाटन हुआ। उस समय श्री रामप्रताप मेहता प्रथम श्रेणी कम्पाऊडर आये और साथ में एक चररासी भी था। ई० सन् 1954 में आल्बिनी चरण में डॉ० श्री वामुदेव गंग (एम बी बी एस) पहले पहल आये। इस तरह में सन् 1954 माह अक्टूबर में एनारबिक डिस्पेंसरी खुला जा अब कालू में तहनील के प्राथमिक स्वास्थ्य चिकित्सक केंद्र का मुख्य कार्यालय है। इसके भवन की नींव बड़ी अस्पताल की आगा पर सन् 1962 वि० सं० 2018 में पड़ा थी। तीन वर्षों (स० 2021) में यह भवन बनकर तैयार हो गया। उस समय तक यहाँ एक छोटी डिस्पेंसरी ही चलती रही। तब इसकी उन्नति के प्रयत्न में रहा सन् 1963-64 में पंचायत समिति नूनकन्मर की भीटिंग रहा। जिसमें पंचायत समिति के सदस्यों ने इस उपयुक्त भवन का उपमागिता पर प्रस्ताव पास करके सीधा जयपुर भिजवा दिया। तब तब प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खाने जान के आदेश जा गये। यह भवन सठ शर्मल डूपाणी द्वारा बनवाया गया है। इसलिए इसका नाम गन्धीय डूपाणी प्रा० स्वास्थ्य केंद्र कालू रखा गया। प्राथमिक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा केंद्र कालू में सबसे प्रथम एम बी बी एस डॉ० श्री बा डी गंग पी पी गुप्ता बी वी शर्मा आर के अग्रवाल तथा डॉ० ज्ञानी जस महान चिकित्सक रह चुके हैं। फिर यहाँ डा. स्थान हा गंग और डॉ० सन्धीय दुग्गड, टी० बागड तथा रिमालमिह राठौर के एल भार आदि अनेक चिकित्सक स्थानांतरण अनुसार आये। इनके बीच में गाँव छोड़वा जिला नारीय निवासि डा० टी आर गादारा बड़े सज्जन डॉक्टर आये। जिसके बाद उदात्त भावनावा के लिए डा० श्री ज० सामता का ही नम्बर आता है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रभारी पद पर डा० था के एल बायरा भी यहाँ अच्छे चिकित्सक रहे। अब डॉ० श्री राजेंद्र प्रसाद माथी मुख्य प्रभारी तथा डॉ० श्री दुर्गाशंकर कश्यप अच्छे मुख्यव्यवहारिक एवं अनुभवी चिकित्सक नियुक्त हैं। ग्रामीण स्वास्थ्य प्रमाण केंद्र और ग्रामीण परिवार कल्याण केंद्र आदि संस्थाएँ प्रा० स्वा० केंद्र कालू की गलाए हैं।

डा. स्थाना का इतिहास टेलीफोन और कालू—प्राचीन समय में भारत में राजा

य दूसरे दिन ले जाने का सेवा काय करन लगा। हर माह गांव की तरफ से डाकखाने का दा दियासलाई एवं बीतल तिलो का तल और सूतली आदि चीजें मयब से मिलती थी। बगाल में यहां के अधिक लोग रहते थे। सन 1947 को पाकिस्तान बनने के कारण उस समय कालू के डाकखाने में बीस हजार रुपये तक की डाक आने लगी थी। इस्योड और मनिआडरी में रुपये भेजे जाते थे। इसलिये सन् 1952 के माह जून में सुपरिटेण्डेंट श्री आर० एन० दत्ता के आदेश से कालू में डाक राजाना आने जान लगी है। इन पक्तियों के लेखक का 1952 से इजाज होने के बावत बीस रुपये माहवारी एलाऊस मिलते थे, लेकिन सुपरिटेण्डेंट के उपरोक्त आदेश के साथ इजाज के माहवारी वेतन में भी दस रुपये की वृद्धि हो गई। सन् 1970 में कालू के ग्राम पोस्ट ऑफिस को सब पोस्ट ऑफिस में पदानत कर दिया गया। इसका भवन श्री अलायचंद साह की माता श्रीमती बाधू देवी ने दि० 3-10-70 को बनवाकर दिया है।

पहले चाय, कपड़े आम के पापड़, पुस्तकें मनिहारी आदि सामान आने का केवल डाकखाना ही साधन था। अतः अनेक चीजों की पासलें डाकखाने में आया करती थी। जकात धानेदार को हमेशा पोस्ट ऑफिस की पासलें नोट करनी पड़ती और खाना या खाली चिट्ठी बना देने पर ही पासल पाने वाला उसको अपने घर ले जा सकता था। पासल पहले जकात के धाने में ले जाकर धानेदार के सामने लौटती पड़ती थी। ऐसा जकात की अनिवायता के नियमाधीन किया जाता था। इसलिए जकात के धानेदारों से लोग बहुत डरते थे। उनसे जरा मज्जी की सा '1' किया करते थे। जकाती रगाती कहलाते थे, क्योंकि वे जकात मारने का हर किसी पर मामला बना सकते थे।

वर्तमान समय में कालू के सब पोस्ट ऑफिस द्वारा सभी प्रकार की डाक सवाएँ उपलब्ध हैं। विदेशों में गये हुए कालू के लोगों से भी उनके परिवार वाले पत्र व्यवहार करते रहते हैं। विभागीय व्यवस्थाओं के कारण कालू का डाकखाने की सतोपजनक सेवा से गांव के निवासी पूर्णतया सतुष्ट हैं।

कालू गांव में टेलीफोन—कालू गांव में टेलीफोन की प्रथम स्थापना दिनांक 14-11-78 को डाकखाने में हुई। इसका उद्घाटन दिनांक 15-11-78 को हुआ। स्थापना के समय में सर्वप्रथम भू० पू० विधायक श्री भीमसेन ने टेलीफोन बावत गांव के व्यापारियों से दो हजार रुपये की राशि इसके विभाग में जमा करवाने को कहा। इनके प्रयत्न से सन 1976 में कालू के व्यापारियों ने अपनी आवश्यकता मुजब उक्त राशि जमा करवा दी। उस जमा राशि की पूरी कायवाही दिनांक 13-11-78 को हुई जिससे टेलीफोन के तार लूनकरनगर से कालू डाकखाने तक पहुँचे। दिनांक 14-11-78 को कालू के सब पोस्ट ऑफिस में इसकी स्थापना हुई एवं दूसरे दिन इसका उद्घाटन हुआ और टेलीफोन पर प्रथम सफल वार्ता हुई। टेलीफोन पिन कोड नम्बर 55 पोस्ट ऑफिस कालू में ही हैं।

गांव में टेलीफोन की स्थापना से कालू के निवासियों के छोट मोटे एवं आवश्यक कार्यों की समस्या गांव में रहते हुए ही हल हो जाती है। अब तो कालू के कुछ घरों में बाजार में और गांव गारबदेशर तक फोनफोन बातलाप होता है।

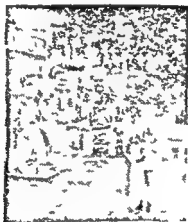
विजली आगमन—घरेलू प्रकाश सुविधाओं के सिवाय निम्नलिखित के मनोरंजन के, यातायात तथा जल और वायु के सुख साधनों में विद्युत्-उपयोग अपनी प्रदेश प्रगति का प्रत्यक्ष प्रमाण होता है। वर्तमान काल में मनुष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण बहुमुखी एवं सामाजिक सुखाराम के वायु विद्युत् शक्ति-सहायता से ही सम्पन्न होते हैं। पहले रजवाड़ा के समय में बीकानेर राज्य के बड़े बड़े शहरों को बिजली का बीकानेर स्थित "थर्मल पावर" स्टेशन से बिजली दी जाती थी। उस समय यह शक्ति, जन-साधारण के लिए दशनीय, रूपायन एवं चमत्कारी शोभा समझी जाती। यह केवल राजा-महाराजाओं तथा धनिकों के ही मुख्य उपयोग में आती रहती थी।

देश स्वतन्त्रता के बाद सब क्षेत्रों में बिजली का आगमन आरम्भ हुआ और कृषि तथा औद्योगिक उन्नति के लिए प्रत्येक स्वतन्त्र जन, इस परमावश्यक तत्त्व को तरस भरी नजर से ताकन लगा। अब यह दैनिक जीवन के लिए आर्थिक अनिवार्यता के साथ खेती और उद्योग उत्पादन में मनुष्य को द्वितीय भगवान जैसे अनुपम वरदान देने वाली प्रकटत प्रत्याप्त दवा है।

कालू गांव के निवासियों में अब पड़ोसी कृषि की देखा देखी बहुत अर्थ से बिजली की लालसा एवं आवश्यकता महसूस होती रही। इस संबंध में गांव के लोगो ने बहुत कोशिशें की लेकिन उनकी आशा सफल नहीं हुई। अंतिम प्रयत्न दिनांक 13 सितम्बर 1976 को राज्य के मुख्य मंत्री श्री हरिदेव जोशी के आगमन पर हुआ। जिले के चार निर्वचन क्षेत्रों के विधायक भी उनके साथ थे। गांव वालों ने पुर्ण जोर शब्दा में बिजली लगाने की मांग की। किन्तु मुख्यमंत्री ने स्पष्टतया हाँ नहीं भरी और कालू में बिजली लगाना 25-30 लाख रुपये का खर्चा बतलाया। तत्पश्चात् दिनांक 7-12-78 को जनता पार्टी के अंतर्गत गांव कालू में बिजली का प्रवेश हुआ। तब सचप्रथम स्थानीय कालिकाजी के भविष्य में जाँच स्वरूप विद्युत् ज्योतिष की गई। दिनांक 8-12-78 को क्षेत्रीय विधायक श्री कल्याणसिंह मानिकचंद मुरावा के हाथों कालू में विद्युत्-उत्पन्न का उद्घाटन हुआ। बिजली विभाग का कार्यालय अभी चबरा की धमशाखा में ही स्थित है। गांव के अधिकतर घरों में विद्युत्-उत्पन्न हो गया है। गांव में विद्युत्-उत्पन्न से यहाँ के निवासियों की पाना प्रकाश, व आटा पीसाई जसी मुरा एवं बड़ी समस्याएँ हल हो गई हैं। आशा है भविष्य में भी कालू के निवासियों की अनेक समस्याओं की समाप्ति तथा सुविधाओं की प्राप्ति संभव होगी।

कालू में बक—यहाँ स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर की शाखा दिनांक 24-1-1973 से कार्यरत है। गांव में बक खेती, पशुपालन, ऊँट याड़ा उद्योग धंधों तथा अन्य छोटे माटे व्यवसायों हेतु ऋण उपलब्ध करवाता है। पहले स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर का शाखा कालू वन भवन ऑफिस के छोटे रूप में खुली थी। अतः बैंकिंग कार्य कम ही हुआ करता था। लेकिन अब यह बक फुल बाव हो गई है, जिससे इसकी बैंकिंग व्यवस्था में बढोत्तरी हुई है। सन 1975 के काम के आधार पर कालू शाखा को वन भवन ऑफिस के रूप में ट्राफी मिली हुई है। कालू के निवासियों एवं बक के व्यवस्थापकों के मध्य मधुर व्यवहार बने रहने के कारण बक का कार्य व्यापार मराहनीय रूप से चलता है। इसी कार्य-कुशलता की प्रयत्न परम्परा में वर्ष 1979 के लिए कालू शाखा ने संपूर्ण भाग्यवश की स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर की शाखाओं

मे हुए कम्पीटोरान में पुनः ट्राफी जीतने का श्रेय अर्जित किया है। कालू में यह शाखा 2 साल के डिपार्जिट में एक आदमी की शाखा के रूप में खुली थी, लेकिन गाँववासियों के लगातार सहयोग के फलस्वरूप इस समय अब में 25 साल जमा है तथा शाखा की तरफ से 10 लाख रुपये का ऋण भी गाँव के निवासियों का दिया गया है। कालू का यह सीमागम्य है कि वस्त्रों की इस शाखा अब में करीब तीन हजार छाते ग्रामवासियों के हैं जो कि गाँव के लोगों का बर्बिंग माइंड आदमी हाना बताता है। कालू शाखा के व्यवस्थापक पद पर कई महानुभाव विभागीय आदेशानुसार आते रहे हैं जिनमें सर्वश्रेष्ठ सुरक्षात सक्सेना, सुभकर पांडे विमल कुमार मिश्र हैं। अवकाश के अल्प समय के दौरान श्री लक्ष्मणसिंह जैसे मनेजर भी कालू अब में जाये हैं। वर्तमान में श्री निहालबद कोषर स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर की शाखा कालू के मनेजर पद पर विराजमान है। श्री कोषर अपनी काय-कुशलता के लिए बीकानेर जिले की स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर की शाखाओं में प्रसिद्धि प्राप्त पुरुष हैं। कालू शाखा का वर्ष 1979 की ट्राफी भी इनके काम काल में ही प्राप्त हुई है। अब में सबसे अधिक लोक-प्रिय कामकर्ता (सन् 1973 से) श्री रतनसिंह राठौड़ हैं। अब मनेजर श्री सम्पतलाल बोहरा हैं।



बक में लेन देन करते हुए

कालू में पुलिस चौकी—यहाँ सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिकोण से कालू में पुनः सन् 1974-75 से पुलिस चौकी की स्थापना हुई है। यह चौकी गाँव केला से उठाकर कालू में स्थापित की गई है। पहले ई० सन 1951-52 में यहाँ गाँव वालों के प्रयत्न से जनता की जानमाल की सुरक्षा हेतु आम्ड पुलिस चौकी कायम की गई थी। यहाँ के गाँवों में विस्तुरिया के डाकू जगमालसिंह तथा डाकू भवरसिंह के आतंक के कारण भय प्रचलित था। इसलिए कालू के निवासियों ने अपनी सुरक्षा हेतु आम्ड पुलिस की स्थापना करवाई। लेकिन 11 साल बाद डाकूओं के आतंक की समाप्ति के पश्चात् सरकार ने यहाँ से पुलिस चौकी हटा दी थी। वर्तमान में पुलिस चौकी का कार्यालय गाँव के गड में रखा गया था लेकिन फिर मुविद्या के लिए पशु चिकित्सालय

मवन में बदल लिया। बालू की पुलिस चौकी के स्टॉफ में एक मुश्मी महोदय तथा चार पुलिसमन (सिपाही) रहते हैं। पुलिस चौकी के मुश्मी पद पर अब तक आने वाले महानुभावों में सबश्री साधुसिंह, श्री बत्तासिंह, श्री राजेन्द्रसिंह, श्री जगदीशसिंह तथा वलमान म श्री गोवधनदान जी वारंठ तनात हैं।

ग्राम पंचायत बालू की चुनाव परम्परा—वैसे तो बालू में पंचायत सन 1951-52 में स्थापित हुई है, पर महाराजा गंगासिंहजी ने अपनी चतुराई से बीकानेर राज्य के गांवों में जगड़े आदि के फसना वादत ई० सन 1928 (वि० स० 1985) में ही एक कानून पास करके इन्हे दीवानी और फौजदारी के कई अधिकार दे दिये थे।¹ आजादी मिली, स्वतंत्र गांवों तथा कस्बों में जादू छा गया। मुलामी का गम लू से झुलसा हुआ हमारा तहसीलीय क्षेत्र स्वतंत्रता की निविध समीर से सहलहा उठा। गांधीजी का ध्यान तो सदब से गांव की ओर ही रहता था। अब सबन ग्राम पंचायतों की स्थापना हान लगी। इस याजना से काफी लाभ मिला। विद्या की वृद्धि साम्प्रदायिकता के भेद भावों में कमी तथा राष्ट्रीय सेवा का भाव जमें और आपसी सहयोग से गांधीजी का राम राश्व का स्वप्न सच्चा हाता दिखाई देने लगा था। शिक्षा और स्वास्थ्य सुधार में तो ग्राम बालू की पंचायत परम्परा के इतिहास का पहला पना वि० स० 2004 (ई० स० 1947) से प्रारम्भ हुआ है। क्योंकि बीकानेर राज्य के शासकों ने शासन को जनतांत्रिक बनाने और लोक कृतिकारी कार्यों में अपनी रुचि दिखाने के लिए ई० स० 1928 में कानून पास करके पंचायतों को दीवानी तथा फौजदारी के कई अधिकार दे दिये थे। राज्य की सारी तहसीला के कस्बों में जिनमें लूनकरणसर (तहसील) भी शामिल था, तब से ही पंचायतें और सरपंच पद कायम हैं। तत्समय सदर, सूरपुरा, लूनकरणसर, श्री डगरगढ़ और सरदारसहर आदि अनेक तहसीला में ग्राम पंचायतें कायम हो गई थी। किसी भी एक पंचायत में 5 से 9 तक निर्वाचित सदस्यों की एक समिति काम करती थी। इन ग्रामीण क्षेत्रों की पंचायतों को 50) रुपये तक की धन राशि की दीवानी तथा लूट, अगति, गडबडी, मान आदि का भद्दा प्रदर्शन महिलाओं के साथ अमर व्यवहार बगरह के फौजदारी मुकदम सुनने के अधिकार दिये हुए थे। परन्तु सजा का अधिकार 10) रुपये जुमाना अथवा क्षति का दुगुना से ज्यादा नहीं था। उक्त प्रशासन के सिवाय स्कूल सरोवर, जल वितरण, पेड़ एवं शमशानों तक की व्यवस्था पंचायतों द्वारा होने का विधान था और एक रुपये के पीछे तीन पैसे चुगी के भी लगाने का अधिकार था। पंचायतों का निपटण राजस्व विभाग के अंतर्गत था। तहसील लूनकरणसर ग्राम पंचायत में उक्त समय दो सरपंच थे। प्रथम जगमालराम गोदारा (भिश्नाई) गांव डेलाणा और द्वितीय तुलछाराम गोदारा शेखसर। तत्समय गांव शेखसर में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की पाठशाला स्थापित हुई थी।

गांवों में प्रजातंत्र शासन की शिक्षा देने और स्थानीय मामलों की स्वयं देखरेख करने की योग्यता उत्पन्न करने के प्रयोजन से जिला सभा (District Board) की

1 बीकानेर राज्य का इतिहास प्रथम भाग पृ० 33—हैं श्री ओषा।

2 आगे जाकर ई० स० 1951-52 के पंचायत चुनावों में तुलछाराम का बेटा हीराराम गोदारा शखसर क्षेत्र का सरपंच बना था।

स्थापना करके भी कानून पास हुआ था। आगे चलकर राज्य के शासन को अधिक जनताधिक बनाने के लिए महाराजा श्री गान्धूलसिंहजी ने वि० सं० 2003 (सन् 1946) में मताधिकार निर्वाचन क्षेत्र समिति की नियुक्ति की। उन्होंने 1947 में भारत के साथ विलय के समझौते पर हस्ताक्षर करके राज्य की स्वतंत्र कर देने की सहमति दे दी। इस तरह से सं० 2005 (ई० सन् 1948) में देशी रियासत का एकीकरण होकर राजस्थान गंध का उद्घाटन हुआ और पंचायत राज्य पनपा।

कालू में बीकानेर राज्य नियमों के तहत जून 1947 ई० में ग्राम पंचायत का प्रथम चुनाव सम्पन्न करवाया गया। झवरो के दीवान खाने (बैठक) में एक रजिस्टर में नाम लिखे गये और उस प्रलेख की नकल चुनाव अफसर अपने विभाग बीकानेर ले गये। पंचायत सबधी रजिस्टर और सारे कागज बनचदजी नाहटा को फोपाध्यक्ष बना कर सौंप गये। यह पंचायत दिसम्बर 1950 तक रही। लेकिन काम कुछ भी नहीं हुआ। आपसी अह के कारण रजिस्टर ही नहीं खोल सके। उस समय पंचायत इन्स्पेक्टर पहले श्री चौ० भैर सिंह और फिर श्री अजीतसिंह तथा सरपच प० दुगादत्त गर्मा 1950 के आखिरी महीने तक रहे। फिर गांव कालू श्री गगननगर पंचायत विभाग के नीचे चला गया, इसलिए ग्राम पंचायत कालू का दूसरा चुनाव करवाने वही के इन्स्पेक्टर (एक सरदारजी और अप्रवाल साहब) बगैर जनवरी 1952 प्रथम माह में आये। मगर यहाँ के व्यक्तियों की जाति विशेष की प्रमुखता सबधी चण्डे के कारण आये हुए अफसरों ने जो पंचायत बनाने के अभिलाषी थे, अपने आप निर्विरोध पच सरपच बना दिये। साख स्वरूप पचा के पक्ष समूह से लोगों के काफी हस्ताक्षर ले लिये। सरकार ने इनको तुरत आय (फाटक बगैरह) के स्रोत उपलब्ध करवा दिये। तब 1952 से इनके बिक्रय बड़ी बिलाफतें होने लगी। गांव के नवयुवकों द्वारा सरपच की मीठी तर जलाई गई। मगर गांव का विरोध होते हुए भी सरपच ने कई काम किये और नद परम्परा खाली। ई० सं० 1955 तक द्वितीय सरपच श्री मूलाराम ग्हे और ग्राम पंचायत मस्थान फालू, पुन बीकानेर विभाग के नीचे आ गया। इस समय श्री गवतमल आचार्य पंचायत इन्स्पेक्टर थे और बीकानेर राज्य के पुराने अधिनियम भी लागू थे।

बीकानेर राज्य द्वारा स्थापित ग्राम पंचायत कालू के प्रथम एवं अंतिम सरपच श्री दुगादत्त सारस्वत रह। इनके कार्यकाल में विरोधाभास के कारण कुछ काम नहीं हुआ। किंतु आजादी के बाद जो असली अधिकार पंचायतों में प्राप्त किये, उनमें सरपच श्री मूलाराम बने और उसे कुछ धाय फँसले एवं फाटक बगैरह आय के काम हाथ लगे। मूलाराम सरपच के कार्यकाल में पंचायत के भवन वाबत तय की हुई जमीन को किसी ने अपने अधिकार में ले ली और घर भी बना लिया।

राजस्थान पंचायत अधिनियम 1953 लागू होने के बाद ई० सं० 1955 में पहला आम चुनाव हुआ। जो कालू में तीसरी बार पंचायत का परंपरित चुनाव था। यह जनवरी 1955 और सरपच का दुबारा माच 1955 दो बार में सम्पन्न हुआ। चुनाव आफिसर आये जो चुनाव इन्स्पेक्टर श्री हरिमिह मागव थे। प० श्री दुगादत्तजी के साथ श्री गिरधारीलालजी खवर विजयी होकर कालू एवं आडसर बाड के सरपच बने। इनोंने गांव में शिक्षा जिस और स्वास्थ्य के कार्यों में काफी सुधार करवाया एवं इन समस्याओं के भवन भी बनवाये तथा निक्ट के गावा में भी सब जन जित के काम

करवाय। इनमें निर्माण कार्यों की याजना बनाने और बड़े लोगों को प्रभावित करके वाय करवा लेने के अपन अद्वितीय गुण थे। ये सच्चे सरपंच थे, इनका पदीय कार्यकात्त में पचायत की सारी काय व्यवस्था प्रजातान्त्रिक ढंग से हुई है। इन्होंने जनवरी 1956 तक काय किया। कई दिना तक इस काय में लभ रहने के कारण, फिर श्री उप सरपंच को काम सौंप कर एक बार इन्हें अपना कारवार देखने बाहर जाना पड गया था। पीछे स उप सरपंच भी चला गया। तब उप सरपंच का ई० सन 1956 में उप चुनाव हुआ और उमम श्री गोपालचंद डूढाणी उप-सरपंच निर्वाचित होकर सरपंच का कार्य मभालता रहा। इस बार श्री गोपालचंद सन् 1958 फरवरी तक इंचाज सरपंच रहा। फिर उस बप पचायत का आम चुनाव का समय आ गया। तब गाव की ओर से श्री साहनलाल सारस्वत को निविराध सरपंच पद पर आसीन कर दिया गया। श्री साहनलाल न गाव के बीच ठहरने वाले अमुविद्याजनक जल की निकासी के लिए तन मन लगा कर सगील टाडे के पानी का गाव से बाहर जान का रास्ता बदलवा दिया और टाडे की जमीन नीलाम करके पचायत का सुचारु ढंग से काम चलाया। दिसम्बर 1960 में पचायतों के चुनाव हुए और उसमें फिर श्री सोहनलाल सरपंच नहीं बन सका। वह बाड पच ही बना। दिसम्बर 1960 के पचायत चुनावों में गाव कालू के सरपंच का चुनाव बड़ी भिडत के साथ हुआ। श्री गोपालचन्द डूढाणी के साथ श्री नदलाल शर्मा नामक नवयुवक ने बड़ी अच्छी टक्कर ली। किंतु श्री डूढाणी कायकर्ता था, इसलिए उसकी विजय हुई। उसके बाद सरपंच के सारे चुनावों में श्री गोपालचंद को ही विजयश्री मिलती रही, जो आज तक ग्राम व्यवस्था हित कामरत है।

सन 1965 के चुनाव में श्री डूढाणी के साथ सरपंच पद के लिए श्री हुक्मराम सहैलवाल लड़े हुए थे। बड़े जोरों शारा से प्रचार हुआ और पाटिया बनी। गांव में चुनाव की घूम एवं हलचल मच गई। पर सरपंच श्री गोपाल डूढाणी विजयी हुआ इस समय का विजयी पचायत स्टाफ पूरे 13 बप तक गसन मलग्न रहा। इसके बाद 5 फरवरी सन 1978 रविवार को पचायतों के आम चुनाव हुए। जिसमें सरपंच पद के लिए श्री गोपालचंद के सामने श्री हजारीराम शर्मा बड़े ओग के साथ चुनाव लड़े। मगर चुनाव में हजारीराम भी नहीं जीत पाया और वह गाव का नेता ही बना रहा। सरपंच के लम्बे कायकाल में श्री डूढाणी का स्थान स्तुत्य है। इसके विद्यमान काल में काफी सज्जन एवं निर्माण के कठिन काय पूण हुए हैं। हायर सेक्ण्डरी स्कूल भवन, राजकीय प्राथमिक विद्यालय भवन पचायत भवन अस्पताल भवन, कूजा का सुधार एवं भवन काय व पा विद्यालय ग्राम कालू सहकारी समिति लि० भवन पशु चिकित्सालय पोस्टॉफिस का क्वाटर अनक जल स्टैंड विद्यालय गृह ग्रामीण परिवार कल्याण केन्द्र, ग्रामीण प्रशिक्षण केन्द्र दुग्ध उत्पादन समिति कमचारियों के अनक क्वाटरस, अप्रोच राड आदि पय एवं भवन निमाण काय श्री डूढाणी के समय में ही हुए हैं।

10 दिसम्बर सन् 1981 के पचायत के परंपरित आम चुनावों में विरोधी उम्मादवार श्री गोपालचंद के साथ श्री इन्द्रचन्द राठी विजयी होकर सरपंच बना है। जा नोजवान समय और गालानी गल्ल का सज्जन ह।

बीकानेर राज्य का वैधानिक प्रथम चुनाव—कालू में बीकानेर राज्य के नियमों व तहत जून 1947 ई० में ग्राम पचायत का प्रथम चुनाव हुआ, जिमें निम्नलिखित सज्जन पच बनाय गए थे

सरपंच

उप-सरपंच

महिता पंच

हरिजन पंच

श्री दुगादत्तजी साख्खन श्री किसनलालजी यति — —

अप्य पंच—श्री बालचन्दजी पवर, दीपचंदजी डूढाणी, बनचंदजी नाहुटा तोलाचंद कौठारी (एनी), मूलारामजी पारीक, गिरधारीराम ज्ञानी, लाम्भाराम भादू आदि ।

द्वितीय चुनाव ई० सन् 1951 52

श्री मूलारामजी जादू श्री गोपालराम सुनार — श्री सरदाराराम मेघवाल

अप्य पंच—श्री ईसरराम गोदारा, श्री बालूराम वमा और आसदासजी बरागी आदि ।

तृतीय चुनाव इ० सन् 1955 मे राज० पंचायत अधिनियम 1953 लागू होने के बाद हुआ ।

श्री गिरधारीलालजी शवर श्री बेगरीचंद डूढाणी — श्री जुहागगन मेघवाल

(सन् 1956 मे उपचुनाव हुआ जिसमे उप-सरपंच श्री गोपालचंद डूढाणी चुना गया, जो इंचाज सरपंच बन कर काम करता रहा ।)

अप्य पंच—(1955 के) नानूरामजी खडेलवाल कोडारामजी पारीक हरिरामजी पारीक, किसनारामजी ज्ञानी, जसररनजी घोषरा, धनराजजी भादानी, लाम्भाराम जादू और गामंदराम भादू आदिसर बाड । इस पंचायत बाँडी के सिध एक कबिता बनी थी—

पवर, डूढाणी घोषरा, लीना री जोड़ी ।

नानू कोड़ी आल बाड, ज्यू चाटाड़ी रोड़ी ॥

चतुर्थ चुनाव सन् 1958—

श्री साहनलाल साख्खन श्री डूमरराम खाती — श्री सरदाराराम मेघवाल

अप्य पंच—मेधाराम भारण धनराजजी भादानी, सदासुखजी खडेलवाल आसाराम बरागी रावतरामजी पारीक, लियाराम जादू, नूनारामजी पारीक दूननाथ मिष (गाव आदिसर) स ।

इस स्टाफ से श्री धनराज भादानी का अधिवेशन प्रस्ताव पास हुआ ।

पंचम चुनाव दिसम्बर 1960—

श्री गोपालचंद डूढाणी श्री हजारीराम श्रीमती जीवणा श्री फणीराम
सारखन सारखन, जोऊ नेधा मेघवाल

अप्य पंच—धनरूपजी बंद सोभाचंदजी सोडा रामेश्वरलाल साख्खन आगा रामजी बरागी, बालूराम गोसां, नीमाराम नाई, मन्गूराम ज्ञानी रामेश्वर राम पारीक बरठम चुनाव जनवरी सन् 1965—

श्री गोपालचंद डूढाणी श्री गामप्रभा श्रीमती मरम्बनी श्री० श्री फणीराम
डूढाणी पारीक दीपापारीक मेघवाल

अप्य पंच—गोडाराम साख्खन हजारीराम सारखन फुमाराम साख्खन इटमान दाग बरागी, लालूराम गामाई रामरत्नजी शवर बहेयानाल बंद नीमाराम नाई आदि । इस स्टाफ मे 12 महीनों बाद उप-सरपंच मानमान साख्खन बन और बरागी लाल का डूमरा चुनाव हुआ ।

सरपच	उप-सरपच	महिला पच	हरिजन पच
सप्तम चुनाव फरवरी सन 1978— श्री गोपालचंद बूढ़ाणी	श्री भैरवलाल वद	श्रीमती बालीबाई मणी नार्द	श्री फूसाराम नाथ

अप पच—चूसाराम ज्याणी भगतूराम ज्याणी, घेवरचंद नाहटा रामूराम नैण गोवधनराम खडेलवाल रामबन्ध पारीक, रामचंद्रराठी, सतदास बरागी। स्टाफ में प्रेमरचंद नाहटा का अविश्वास पास हुआ।

अठम चुनाव 10 दिसम्बर 1981—

श्री इन्द्रचंद राठी	श्री आकारमल राठी	श्रीमती मगनीदेवी सेठिया, रामप्पारी पारीक	श्रीरामरख भेषवान
---------------------	------------------	---	---------------------

अप पच—जैठाराम ओषा, दुर्गाराम शमा गोवधनराम खडेलवाल गौरीशकर खडेलवाल मागीलाल पुगनिया हरिराम दास बरागी नानूराम बूढ़ी जैठाराम नैण आदि हैं। गांव में राजनैतिक दो दल हो जाने के कारण अभी (माह माच 1983) तक कोई विशेष कार्य नहीं हो सका।

“ग्राम पंचायत काल के चुनाव (मतदान) स्थान”

(1) भवरो की हवेली—1947 में भवरा की हवेली पर ग्राम पंचायत के चुनाव आयत गांव के मुखियों की एक सभा हुई। उसमें चुनाव करवाने वाले अफसरों ने कालू के योग्य व्यक्तियों के नाम (पच पद के लिए) तय करवा कर लिख लिए।

(2) घोसवालों का नोहरा—1952 के वष चुनाव करवाने के लिए अफसर आये। वे नोहर में ठहरे और उन्होंने गांव के प्रमुख व्यक्तियों को बुलाकर पचा के नाम माहे। लेकिन नागरिकों द्वारा अपना निष्पक्ष नहीं हो सका, तब आये हुए अफसर अन्य स्वयं स्वीकृत निर्भीक जना का पच, सरपच बना गये।

(3) डाई में कैलों के नीचे—1955 के प्रजातांत्रिक चुनाव में कैला के चहु ओर बाड़ों की पृथक् पृथक् पक्षिया बना कर उम्मीदवार के नाम पर बाड़ बाण हाथ उठवा कर पच बनाये। सरपच के नाम गिने गए बाड़ों (मत) में गडबडी हो गई। इसलिए आगामी माह में गांव के उतरादे घौरे पर (जहां अब मुसलमानों का मोहल्ला है) धूल के दो अलग-अलग घेरा में मतदाताओं का बड़ा कर मत कर लिए और जीत घोषित की। तत्पश्चात् पुलिस थानेदार का भी उपस्थित रहता पटा था और मत संह के लगभग हुआ करत थे।

(4) भवरो की धमगाला—1956 का उप चुनाव धमगाला मध्य कार्यालय में बडे मतदाताओं से हाथ उठवाये गए, तब सफल हुआ था।

(5) खुला मतदान—1958 का आम चुनाव ओसवाल नोहरे के आये, गोदारा के नूप की सहायण टूडी पर हाथ उठवा कर सम्पन्न करवाया गया।

(6) भवरो की धमगाला—1960 का चुनाव धमगाला भवन के दा कला में हुआ और उबन पंचायत चुनाव में पहले पहल पेटियों में वोट डाले गए। लेकिन विधान सभा के चुनाव में 1952 से पटिया का उपयोग होता था।

(7) राज० उच्च० माध्य० विद्यालय भवन—1965 में ग्राम पंचायत का चुनाव विधानसभा भवन के तीन वक्ताओं में सम्पन्न करवाया गया।

(8) द्वय विद्यालय भवन—1978 का पंचायत चुनाव दोनों विद्यालयों (हायर सेकेण्डरी और प्राइमरी) के परीक्षा कक्षों में हुआ।

(9) द्वय विद्यालय भवन—1981 का पंचायत चुनाव भी दोनों स्कूलों में उपरात एरिया समय तक चला। भरा पूरी पेटियों से रात, चार बजे तक मत गणना चालू रही (वाट वृद्धि के कारण आगामी चुनावों में तीसरा क्या विद्यालय भवन भी चुनाव के समय काम में लेना पड़ेगा ऐसी धारणा बन गई है।) अंत बाद में गड़बड़ी की आशंका सदम से अदालतों तक अनेक निस्तार दावे (फिट) भी हाँ गये। इस चुनाव में कुल मत 3910 में से 2815 ही पेटियों में डाले गए थे।

पंचायत भवन तथा निर्माण—सन् 1958 में पंचायत भवन का शिला-यास गांव के बीच में गोदारान कुएँ के पास (जहाँ वर्तमान में पोस्ट ऑफिस भवन बना हुआ है) हुआ था। लेकिन गांव की जनता के विरोध के कारण पंचायत भवन वहाँ नहीं बनाया जाकर गांव से बाहर माताजी के मंदिर के पीछे बनाया गया है। गांव के लोगों का विरोध यही था कि पंचायत भवन गांव से बाहर ही बनना चाहिए। पहले एक बड़ा कमरा उसके आगे बरामदा और चौकी बनाई गई। बाद में एक बड़ा हॉल विधायक गृह रिकार्ड रूम आदि अनेक भवन बनाए गए हैं। इसमें फाटक के बाह्य की दीवार उसमें साइकिलों और पंचायत भवन के लिए स्टोर आदि मकान भी बने हुए हैं। इसमें अभी तक 9600 वर्गफुट भूमि घेरी हुई है। अब यह दुर्गा कॉलोनी के बीच में आ गया है। लेकिन पंचायत भवन की अपनी विस्तृत व छायादार जमीन होने के कारण इस सामाजिक संस्था का स्वरूप एवं सुख बड़ा आनंदमय है।

ग्राम पंचायत कालू द्वारा कई विकास व निर्माण कार्य हुए हैं—

(क) बरसाती पानी निकास योजना—यह योजना शुरू में सन 1960 में गांव के बाजार के बीच का पानी बाहर निकालने के लिए बनाई गई थी। पर यह बरसाती पानी गांव से बाहर जाकर नागको और ससियान के घरा के पास खुले मैदान में इकट्ठा हो जाता था। जिससे इन गरीब परिवारों को परेशानी होन लगी। तब सन 1964-65 में इन गरीब परिवारों की समस्या के समाधान के लिए पंचायत ने इनके घरों के पास के मैदान में भरती करवाकर इसका भूमि स्तर ऊँचा उठाया और गांव से पूर्वोत्तर में एक तालाब (गद्दी तलाई) खुदवाया तथा राज्य से पक्का पुलिया बनवा लिया। जिससे समस्त पानी उस तालाब में जाने लगा है। तत्पश्चात् सन 1977-78 में बास गोदारान के मोहल्ला सारस्वती और बरागियों के पानी निकास के लिए फूसाराम बावरी के घर के सामने वाली ऊँची गली को खुदवा कर जल रास्ता बघाई करवा दिया। इससे बरसात का पानी निकास होने के साथ ही सीधे आवागमन के लिए एक उपयुक्त मार्ग खुल गया। यह मार्ग पहले कचरे के ढेर के कारण बंद था। पर अब इस प्रकार जल निकासी का कार्य और आगे बढ़ा। लेकिन सारे गांव का पानी एक ही जगह जाकर इकट्ठा होने से उस तालाब की क्षमता कम पड़ने लगी। इसलिए सन् 1980 में अकाल राहत कार्य के अंतर्गत उस तालाब को और लम्बा चौड़ा खुदवाने के साथ ही एक ओवरफ्लो नाला 700 फुट लम्बा खुदवाया गया है। उसके आगे एक जोर लम्बा

चौड़ा सानाव, जिस काजरवाली जहाड़ी बहुत है खुदवाया है। इसलिए अब अधिक वर्षा होने पर भी कालू गांव की पानी से किसी प्रकार का खतरा नहीं हो सकता।

(ख) कालू की जल योजना—इस योजना के अंतर्गत पहले सन 1959 में टरवाइन पम्प मट लगाया गया था। बाद में टरवाइन पम्प की काय कमी को देखते हुए सन् 1964 में माटर पम्प मट लगाया गया और पचायत न अकाल महायता काय में राशि स्वीकृत की। गांव में सन 1964 में पम्पलाइन बिछाई गई तथा सन् 1965-66 में राज्य सरकार से ऊँचा टकी का निर्माण काय करवाया गया। यह जल योजना सन् 1974 तक पचायत न चलाई बाद में जल विभाग बीकानेर का (जून 1974 से) सौंप दी है। तब से यह योजना जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग (डी. पी. ए. पी.) द्वारा चलाई जा रही है। दिसम्बर 1978 में सरकार द्वारा मोटर इंजन हटाकर इसे बिजनी संचालित किया गया है।



पानी की टकी

(ग) पीने के पानी की सुविधा—सन 1979-80 में पचायत द्वारा पीने के पानी की सुविधा हेतु प्रत्येक वाड में एक पाँच मी घड़ा का होज बनाया गया है तथा पशुओं के पानी पीने के लिए गांव से उत्तर की तरफ एक बड़ा कोठा निर्माण कराया गया है। प्रत्येक होज के बड़े कांटे के पास पशुओं के लिए पानी की खोल (नाली) बनाई गई है।

(घ) अध्यापिकाओं के आवास गृह—सन 1962-63 में तीन आवास गृह बनाए गए। आधी राशि पचायत समिति से और आधी राशि पचायत कालू द्वारा खर्च की गई। समिति से मिलने पर तीन अध्यापिका आवास गृहों का निर्माण काय सम्पन्न हुआ। एक आवागमन उम समय पाँच हजार रुपये की लागत से बनकर नया हुआ है। आवास गृह जो टाइप के डिजाइन पर बनाये गये हैं।

(ङ) ग्रामोण गृह निर्माण योजना—सन 1980 की इस योजना के अंतर्गत ग्राम पंचायत कालू के संपन्न श्री गोपालचंद देवाणी के प्रयत्नों से पचायत समिति ने ग्रामोण गृह

के माध्यम से तीस आवासगृह निर्माण करवाकर एक सु दूर कॉलोनी बनाई गई, जिसका नाम दुर्गा कॉलोनी रहा है। इस योजना का अंशगत (5000) रुपये ऋण स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति को दिए गए और (3000) रु० स्वयं की ओर से खर्च किए गए। ऋण राशि 25 वर्षों में 50 छ माही किस्तें मध्य व्याज वसूल करने की शर्त पर दी गई है। यह राशि सरकार की ओर से पंचायत समिति लूनकरनसर को आवंटन की गई थी।

दुर्गा कॉलोनी—बालू के इतिहास में एक नया अध्याय उस समय जुड़ा जब कि ग्रामपंचायत के प्रयत्नों से गांव के दक्षिण पश्चिम में तीस मकान निर्मित हुए और उस क्षेत्र का नाम रखा गया—‘दुर्गा कॉलोनी’। पानी बिजली जसी समस्याओं के समाधान के लिए एक विकास समिति का गठन 14.7.80 को किया गया। जिसके अध्यक्ष श्री रतनसिंह राठौड़ और मंत्री श्री रसीराम बनाए गए। इन्होंने कॉलोनी-वासियों का सहयोग जुटाकर अपने प्रयत्नों से दीपावली के दिन कॉलोनी में बिद्युत कनेक्शन दिलवाकर इस उजाड़ जगह को जगमग कर दिया। पानी की पाइप लाइन भी बिछा दी गई है व कनेक्शन क्षीघ्र मिलने वाले हैं। अब श्री सतोषी माता का मंदिर का निर्माण कराना भी विकास समिति का एक लक्ष्य है। अथ कायों में एक सामाजिक उद्यान वृक्षारोपण कार्यक्रम, आदि कार्य पूरे करवाने का भी उद्देश्य है। दुर्गा कॉलोनी क्षेत्र कालू में सर्वाधिक आकर्षण स्थान बन जाएगा ऐसी आशा है।

‘पाय पंचायत’—ग्राम पंचायत कालू से प्रत्येक इस क्षेत्र के करीब तीस गांवों का पाय पंचायत कार्यालय ही यहाँ रहा। उसने प्रथम अध्यक्ष मेजर श्री रघुनाथसिंह आडसर नियमित हुए थे। फिर क्रमशः श्री चुनाराम कुजड़ी तथा बनाराम रावासर अध्यक्ष बने। श्री पतराम शर्मा सहअसर हीराराम डोगवाल और डूगरराम खाती कालू तथा चंदरा राम शर्मा गारुबदेसर आदि सदस्य ‘पाय पंचायत कालू’ में रहे। इस तरह चार ग्राम पंचायतों से पाय पंच चुने जाते थे। अब यह कार्य ग्राम पंचायत के साथ सम्मिलित रूप से चलता है।

कालू के क्षेत्रीय विधायक—राजस्थान विधानसभा के प्रथम चुनाव सन् 1952 में हुए। उसमें हमारे लूनकरनसर निर्वाचन क्षेत्र से बंध श्री मधाराम शर्मा कुम्भाराम आय, आदि अनेक उम्मीदवार चुनाव लड़े। आसवाला के नाहरे में कालू गांव के नागरिका का मतदान हुआ। श्री बरिसालसिंह (जोधपुर) बस्टमस आफिसर बीकानेर, पीठासीन अधिकारी चुनाव करवाने आए थे। उनके साथ श्री रघुनाथसिंह खीची पुलिस इन्स्पेक्टर थे। इस चुनाव में श्री जसवंतसिंह (दाऊदसर) विजयी हुए। इन्होंने रा० उ० मा० विद्यालय भवन के लिए दस हजार रुपये दिलवाये थे और विधायक बनकर हार्ड स्कूल खुलवाने में गांव के लोगों की सहायता की। 1 से 2 जून सन् 1954 में गांव के डेपुटीमैन (श्री गिरधारीलाल चवर नानूराम सस्कती और गंगाविशाल बागडी) को अपने साथ कार में बैठकर मास्टर श्री मालानाथ (तत्कालीन शिक्षा मंत्री राजस्थान) से मिले और कालू में हार्डस्कूल खुलवाने हेतु काफी जोर दिया। इनके अपर ग्रेड में चल जान पर जुलाई सन् 1956 में उपचुनाव हुआ जिसमें श्री रामरतन कोचर, श्री मानिकचंद मुगना गिरधारीलाल मोबिया आदि प्रतिद्वंद्वियों को हराकर विधायक बने।

दूसरा आम चुनाव सन् 1957 जनवरी में हुआ। इसमें हमारे क्षेत्र से श्री सोहन-

लाल सारस्वत (कालू), रामचन्द्र बिहानी (जतपुर) आदि की टक्कर म थी भीमसेन एटवाकेट विजयी बने। इनके लम्बे समय में कालू में प्राइमरी हैल्थ सेंटर तथा लूनकरन-सर कालू सड़क, मात्र दा काय हुए हैं। लेकिन तहसील में इनके द्वारा बाकी कामपूरा करवाय गए। जून सन् 1977 के चुनाव में लूनकरनमर निर्वाचन क्षेत्र से काता खतूरिया गिरधारीलाल भोविया आदि अनेक उम्मीदवार चुनाव लड़े। परंतु श्री मानिकचंद मुराना विजयी होकर विधान सभा में गये और वहाँ वे वित्त मंत्री पद के लिए चुन लिए गए। कालू में बिजली, टेलीफोन आदि काय उही के समय में संपूर्ण हुए हैं। इसके बाद फिर सन् 1980 अप्रैल के आम चुनावों में श्री मालूराम तथा ने श्री मानिकचंद मुराना, मामराज गोदारा आदि का बड़ी भिड़त के साथ पराजित किए। दिनांक 16 80 से लेपा विजयी विधायक बन हैं। कालू के अधूरे काय पूरा करवायेंगे, ऐसी उम्मीद थी, पर वही कुछ नहीं।

पुस्तकालय और सरस्वती पुस्तकालय का इतिवृत्त—

विद्या तथा बुद्धि निधि प्रधान, न ग्रंथ हावे यदि विद्यमान।

ता जानते क्याकर आज, मिन, स्व-भूषण के हम सन्चरित्र ?

(ग्रंथ गुण - गान)

मनुष्य, सृष्टि आरम्भ से ही गान पिपासु रहा है। वदिव काल में मौखिक उपदेश, ग्रंथ और गुरु भ्रमणशील पुस्तकालय के समान थे। वेद की श्रुति (सुनना) एवं विद्वान का बहुश्रुत (जिसने बहुत कुछ सुन रखा है) कहा जाता था। भाग चलकर मनुष्य ने अपनी भावनाओं की रेखाओं एवं चित्रों द्वारा प्रकट करना शुरू किया। निनवा की खुदाई में चित्रों वाले लगभग दस हजार पत्थर के टुकड़े मिले थे जो जसोरिया के राजा असुरबानी का पुस्तकालय था। फिर लिपियाँ बनीं और पत्थरों के जलावा अथ पई चीर्जे लिपि के काम आईं। मिट्टी के बच्चे बनना ब ईंटा पर लिखकर अग्नि में पकान का काय भी हुआ। अजाक के गिलातेस राजाओं के ताम्रपत्र, भाजपत्र और ताडपत्र भी लिखने के काम लिए गए। प्राचीन चीन में लकड़ी की तरनी, दास की बटाई और रंगी कपड़ा पर ग्रंथ लिखे जाते थे।

यूनान में अच्छे पुस्तकालय थे। प्लेटो अरस्तू और यूक्लिड जैसे विद्वानों का अपन पुस्तकालय थे। राम का राजा आगस्टस सावजनिक पुस्तकालय का जन्मदाता कहा जाता है। पुरातन काल में शलैवजडिया का पुस्तकालय बड़ा ख्याति प्राप्त था। चीनी सांग भी पुस्तक संग्रह का धर्म समझते थे। हमारे देश में भी प्राचीन काल से पुस्तक संग्रह करने की अत्युत्तम प्रथा चली आई है। यहाँ बौद्धकाल में पुस्तकालय आंदोलन की बड़ी उत्पत्ति हुई है। ईसा की प्रथम शताब्दी में बौद्ध राजा कनिष्क ने अपन ग्रंथों का बड़ा पुस्तकालय स्थापित किया था। नालंदा जन्म भारत के दिव्य विद्यालयों में महान पुस्तकालय था। नालंदा विश्वविद्यालय का पुस्तकालय तीन प्रासादों में विभक्त था। उनमें एक रत्नादधि नाम से भी मज्जिमा भवन था जिसके तीन सौ कमर ग्रंथों से भर-पूरे थे। इसलिए बहुत से चीनी यात्रियों ने 399 ई०, 414 ई० 529 ई० 644 ई० में चन्द्रगुप्त द्वितीय के दृष्टवर्धन के समय में भारत आकर यहाँ के साहित्य का अध्ययन किया था। सन् 1200 ई० में विदेशी आक्रमणकारियों (बन्धुमार खिलजी) ने नालंदा पुस्तकालय को नष्ट कर दिया था।

भारत और चीन का प्राचीन संबंध था, इसलिए चीनी विद्वान समुद्र और प्राकृत की पुस्तकें भारत से ले जाते और अपनी भाषा में अनुवाद करते थे। पर मुस्त मानी युग में पुस्तकालयों का ज्ञान हुआ। जन धर्म में जसलमेर, बड़ीना, पाटन, त्वानियर, अहमदाबाद के जन मदिरा में पुस्तक भाण्डार सुरक्षित रहे। अरु देनी रजवादा में भी जैसे नेपाल, काश्मीर, गुजरात भावनकोर मैसूर जयपुर जोधपुर बीकानेर अलवर, भोपाल के पुस्तकालय विशेष अवलोकनीय हैं।

कागज और प्रेम के आविष्कार के बाद तो पुस्तकालयों का भारी प्रचार होना लगा। प्रत्येक समुन्नत शहर पुस्तकालय से सुशोभित हो गया। मनुष्य इच्छित पुस्तकें प्राप्त करने लगा। अंग्रेजी राज्य के समय में विश्वविद्यालयों एवं कानूनी में अच्छे पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी थी। वर्तमान समय के बड़े नगरों में मनुष्य मात्र की निराला सेवा हेतु भावजनिक पुस्तकालय खुले हैं। इस तरह की सेवा के लिए समय केवल मजदूरी भावजनिक पुस्तकालय ही हैं। मगर शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकालय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता समझकर 45 वर्ष पहले वि० स० 1992 ई० सन् 1935 में पट्टा स्कूल के हैडमास्टर श्री मूरजमल पालीवान ने उपरोक्त विषय का कतिपय नाप केवल बाह्य से पढ़कर जान वाले सुविधा एवं महत्वाकांक्षी नवयुवकों के सहयोग से कालू में श्री सेवामदन मरस्वती पुस्तकालय की स्थापना की थी। उस समय तहमील लून करनसर के गांव महाजन के गढ़ में, श्रीरामसरोवर पुस्तकालय था। 1967 के समय बीकानेर में गुण प्रकाश सज्जनलाल रत्नगढ़ में श्री हनुमान पुस्तकालय (स्थापित स० 1976 वि०) और कलू में मुराणा पुस्तकालय (ई० स० 1922) जैसे साहित्य मूर्तों की ज्ञान रश्मियाँ दूर दूर तक प्रकाश फैला रही थी।¹ ई० स० 1920 में राजगढ़ और (1929 में) तारानगर सावजनिन पुस्तकालय थे। लेकिन सम्प्रदायों के लिए उन जमानों का बानावरण बड़ा भयानक था। लार्डब्रेरी में किसी नेता की सम्वीर लगाना प्रत्येक अखबार से काग्रेस मजदूरी कोई समाचार पढ़कर सुना देना तथा धार्मिक ध्यायान दे देना भी उस समय सरकारी कानों के आधार पर राजविद्रोहात्मक अपराध मान लिया जाता था। काग्रेसी साहित्य और ध्यापे ज्वलत होते रहते थे। अनजान सस्था में ऐसी सामग्री मिल जाने पर कायकर्ता जुल्म करार दे दिए जाते थे। पुस्तकालयों पर उस समय पुलिस की माहवारी चेकिंग रहना कर्त्तवी थी। कालू में पुलिस अफसरों की जवानक वैजिट होती, तब कायकर्ताओं में बड़ी भागदौड मच जाया करती थी। एक दो निर्भीक जन ही इनसे बात करके सस्था मजदूरी कागजात तथा माहवारी हिमाय पेश कर सकते थे। उस समय राज्य की जनता के धार्मिक एवं सामाजिक काय भी राजनतिक व आपत्तिजनक लगते थे। महाराजा गंगासिंहजी अपने राज्य शासन की बड़ाई चाहते पर वे भले थे उसने ही कठोर स्वभाव के भी थे। इसके कई कारण भी हो जाया करते थे, जो आज में भी का काम साबित होता।²

1 म० 1992—सूरतगढ़ की बान—एवं भवन की आलमारी में देखकर जन पुस्तकालय भी देखा था।

2 ई० सन् 1927 में 'अखिल भारतीय देशा राज्य लोक परिषद्' का बम्बई में अधिवेशन हुआ। तब बीकानेर सहित राजपूताना के बहुत से राज्या से लोगों को परिषद् के मन्स्य बनाये गए। आये जाकर उस परिषद् का एक गिफ्ट मडल द्वितीय

उस समय शिक्षा का नाम ही दणनीय था। शिक्षा जन-साधारण को पहुँच से बाहर थी। प्रबुद्ध चेतना भी कायर बनी हुई सावजनिक मत से बाहर ही घूमती रहती। तब निरंकुश गामन और दमन का पाप, निर्दोष सत्समाजों के लिए भी सूरदास बना हुआ था। अजुन, भिलाप, प्रताप लोकमाय और हिन्दुस्तान टाइम्स आदि समाचार पत्र राष्ट्रीय भावना के साथ खड़े हो रहे थे। अजमेर से ऋषिदत्त मेहता का 'राजस्थान' पत्र निकलना था। उसका अपना सिद्धांत वाक्य होता—

‘यश ब्रह्म की चाह नहीं, परवाह नहीं जीवन न रहे।

इच्छा है यही जग म कि, स्वेच्छाचार दमन न रहे ॥”

‘राजस्थान’ पत्र का मुख्य पेज पर स्वयं के हाथ से गढ़ा पर चलती तलवार और दूसरे हाथ में रक्त सरता मुण्ड लिए हुए घड़ का चित्र छपा रहता था। उस पत्र में राजा महाराजाओं की बड़ी आलोचनाएँ छपती थी। लेकिन बीकानेर राज्य में प्रायः ऐसे समाचार पत्रों एवं पुस्तिका का जन्म करवा दिया करते थे। यह सत्समाज में जान बजित थे। “राजस्थान” पत्र भी एक बार अयभीत होकर रियासती बन गया था।

गोलमेज सम्मेलन में लदन गया। उस विशिष्ट मंडल में अपन उद्देश्यानुसार बहा, राजाओं की बराबरी में भारतीय जनता का दृष्टिकोण भी सम्मेलन में सदस्या के आगे प्रस्तुत किया। उस गिफ्टमंडल में पूना के प्रा० अम्बेकर, सौराष्ट्र के गणमाय प्रिन्स्टर श्री बूझर और ज. भूमि के सपादक श्री अमृतलाल सेठ आदि लाग थे। इन्होंने अय राज्यों के साथ बीकानेर राज्य के संबंध में भी एक पम्फलेट साइक्लोस्टाइल करवाकर तथा महात्मा गांधी की राय लेकर सम्मेलन के सब सदस्या में बाँटा। उस समय महाराजा गंगासिंहजी गोलमेज सम्मेलन में “देशी राज्या के भारतीय मध्य में सम्मिलित होने की ब्रिटिश सरकार की योजना के समर्थन में और निजाम हैदराबाद दीवान के विरोध में” जाशीला स्पीच में रहे थे। सम्मेलन के अध्यक्ष लॉर्ड मैकी ने उस पम्फलेट पर ‘बीकानेर महाराज का इसका जबाब देना चाहिए’ लिखकर श्री गंगासिंहजी के हाथों में थमा दिया। बीकानेर राज्य गान्धियों की बड़ी आलोचना जिसमें जोधपुर के जयनारायण व्यास और बूँद क कुछ ज्ञाप्रिसिया का हाथ था। स. महाराजों साहब जापा भूल उठे और सम्मेलन समाप्त होने से पहले ही अम्बेकर हाकर बीकानेर पधार आय। प्रथम दिसम्बर सन् 1931 को सम्मेलन समापन हुआ और 28 दिसम्बर का ही महात्माजी बम्बई आकर उतरे। ब्रिटिश सरकार का दमन चक्र चल पड़ा। प० महारू श्री टडन, सरदार पटेल एवं महात्माजी सहित मारे नया गिरफ्तार कर लिए गए। उस समय देश की राजनतिक सत्समाजों के साथ अय सत्समाजों का भी गर मानुनी घोषित करने हेतु एक पर एक बंदोर एय दमनात्मक ऑर्डिनेंस निकलने लग। (राजनितिक भारत पृ० 83 84) बीकानेर राज्य में 13 जनवरी 1932 में “संवर्धितवारिणी समाचूरू” के जन वर्याणवारी मुख्य वायकर्ता श्री स्वाधी गापालदासजी, चंदनमल बहड, महंत गणपतिदासजी वर्य शांत दामा वर्य भासचंदजी, मास्टर गानचंदजी आदि समाज सेवा सागों का ही आर्जी जी पी मवलसिंह ने राजद्रोह के अपराध में गिरफ्तार करके बीकानेर जेल में भेज दिए और बड़ी मातनाएँ दी गई। मुकदमा चला और सत्समाज सजाएँ हुई। (बीकानेर राज्य द्रोह और पडयन्न की मुकदमावली बाने —पृ० 16 20 34)

उम समय श्री सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय कालू म किसी सज्जन ने (इन समाचार पत्रों के असावा) चाँद के ज्वल फासी अब व बलिदान अब भी भिजवा दिये । अत ऐसे माहित्य को हम लोग म स्थान पर समाधिस्थ बनाकर रखते ये ।

उत्साही युवक कायकताओं ने अपने उच्चादक्ष आत्मवल तथा दद सकल्प के साथ श्री सेनामदन सरस्वती पुस्तकालय का कायभार संभाला था । विनम्र पत्र व्यवहार और अतिथि आदर सम्मान करने के कारण स० 1997 के चत माह म ठा० श्री जुगलसिंह एम ए एल एल बी, बार एट नॉ डाइरेक्टर शिक्षा विभाग बीकानेर और श्री पूणसिंह, सीनियर डिप्टी इन्स्पेक्टर शिक्षा विभाग बीकानेर द्वारा पुस्तकालय प्रमाणित करवा लाय । पुस्तक चैकिंग का भय कुछ कम हुआ । फिर भी पुस्तकालय की तत्कालीन काय विवरण पत्रिका तथा नियमावली के नियम सत्या 7 में "पुस्तकालय भवन म राजनैतिक वाद विवाद करना सवया मना है ।" लिखा है ।¹ उसमें चंदा दाताओं की नीचे लिखे मूजब नामावली है ।

चन्दा दाताओं की नामावली

(सम्मत 1994 से 1996 तक की आय)

श्री कूमाराम रामनारायण झवर	101)	श्री मोतीलाल करनाणी	100)
, सुगनमल लाडूराम भाहटा	81)	, जोरमल राठी	27)
, मोतीलाल करनाणी	25)	प० जयनारायण पारीक	33111)
, रिद्धकरण बोधरा डूंगरगढ	17)	श्री बीजराज पूगलिया	15)
, दीपचंद डूढाणी	15)	, बिरपीचंद कर्वा	15)
, नरसिंहदास भइया	15)	, जसरूप मालू डूंगरगढ	15)
, पैमराज हजारीमल आसूगज	15)	, हृषीरमल अपालाल आसूगज	11)
, रूपचंद दुगढ आसूगज	11)	, रामदेव अग्रवाल आसूगज	11)
, कृदनमल तोलाराम अग्र पारवीसगज	11)	, जयच दलाल नाहटा बीकानेर	11)
, छाटूलाल सेठिया आसूगज	11)	, बिडला ब्रादस आसूगज	11)
, कल्याणचंद अनरूप आसूगज	11)	, जयकिशनदासमल भैरव	11)
, नथमल मेठी आसूगज	11)	, खेमचंद चाडव सरदार शहर	11)
, जानकीलाल बजाज आसूगज	12)	, ध्यनलाल बागही कलकत्ता	11)
, पूनमचंद बोधरा सरदार शहर	11)	, गुलाबचंद हरकचंद भादानी	11)
, छाटूलाल सेठिया भरव	9)	, बुधमल नाहटा	9)
, काशीराम राठी	9)	, मूलचंद ओसवाल आसूगज	7)
, इन्द्रचंद सोहनलाल दुगढ	7)	प० सूरजमल पारीक	7)
, मानराज रूपचंद दुगढ लून०	7)	श्री लूनकरन रूपचंद मगाशहर	7)
, विजयसिंह पूरनमल गार्डबादा	7)	, रावतमल मोतीचंद भाईबादा	7)
, काशीराम राठी	6)	, भीखमचंद नाहटा	6)

1 श्री सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय कालू (बीकानेर) का काय विवरण तथा नियमावली पृ०—6

श्री बालचंद सेठिया	6)	श्री बीजगज पूगलिया	6)
, मेघराज गोलछा	6)	, " गिरधारीलाल खवर	6)
, चम्पालाल नाहटा	6)	, मेघराज गोछला	6)
, छनमल जवाहरमन गार्डवादा	6)	, 'रामचन्द्र माह्दवगी आसूगज	5)
, रूपचंद सरावगी आसूगज	5)	बालचंद जयचंदलाल बोधरा, सर०	5)
, शोभाचंद राखेचा फारवीसगज	5)	, भगलचंद डागा फारवीसगज	5)
, कागीराम खेमाणी फारवीसगज	5)	, " अज्ञान मज्जन	5)
प० कूनणमल कर्हेयालाल ओझा	5)	, 'हुलामचंद बायरा आसूगज	5)
श्री भारमल तुलगी मम कलकत्ता	5)	, " योगाल भाई जूट मील भरव	5)
, जुहारमल चम्पालाल भरव	5)	, भैरवलाल चुनीराल गार्डवादा	5)
, जैबरीलाल अमरचंद गार्डवादा	5)	अमालकचंद हुलीचंद गार्डवादा	5)
, मुसलिम सीया डोलमागा	5)	हरकचंद पूनमचंद भादानी डूग०	5)
, जोरमल राठी	5)	, " घमढीराम मरावगी आसूगज	5)
, जयचंदलाल विरमचा	5)	प० मोहनलाल पारीक	5)
, मोहनलाल वागडी	4)	श्री विरधीचंद कर्वा	4)
, लालचंद लाडा	4)	, " तोसाराम चौपडा गगाशहर	4)
, आशकरन डूडानी	4)	प० जेसाराम पारीक	4)
, तजपान सोमानी डूगगड	4)	श्री चादमन घनालाल भरव	4)
, पूणचंद्रोसाह शादुलपुर	4)	गुनमीराम खवर	4)
प० राजाराम तिवाडी फालावाटा	4)	, " इस्पक्टर आफ पोस्टा० बीकानेर	3)
, भोमाराम सारस्वत	31)	, " रामलाल सोनी	2)
, " खेमचंद गिरदावर	2)	, नानूराम सस्कर्ता	2)
श्री आसाराम खवर डूगगड	2)	प० सुखराम व्यास	2)
प० श्रीराम लाण्डल	2)	श्री तोलाचंद मिथी	2)
श्री बालकिशन वागडी	2)	, दीलनराम कानाणी	2)
, किशनलाल सेठिया उदासर	2)	, अज्ञान मज्जन	2)
, नयमल गोपीलाल धोडावत	2)	गगाराम मानकचंद गार्डवादा	2)
, उष्यचंद वस्तीमल गार्डवादा	2)	मेघराज शिवदान लिखमादेनर	2)
, नानगराम सुगनचंद भादानी डूग०	2)	, छत्रीदाम हुनुमानमल बोधरा	2)
, अकवाराम नार्द भायाभागा	2)	, " दीपचंद फूसाराम मेठिया सर०	2)
, गुमानमल प्रेगचंद पूगलिया	2)	, बालचंद जैवरीलाल बोधरा सर०	2)
, " रामचंद्र सोमानी	2)	, " फूसराज बूचा लूनकरनसर	2)
, आणदमल चौपडा गगाशहर	2)	, कप्तान साहब रघुनाथमिह	2)
, नानूराम सस्कर्ता	11)	, गोपालचंद सोनी	11)
प० सोहनलाल भोजक	11)	, लादूराम वारड	11)
श्री माहनलाल खवर	1)	, केशरीचंद डूडानी	1)
, भगलदास स्वामी सगदागहर	1)	खेतगम स्वामी मरदारशहर	1)
, गुमानदास स्वामी	1)	जयचंदलाल बंद	1)

प० रामेश्वरलालजी बी ए एल एल बी	1)	, चरित्र साहित्य बनिया विराटनगर	1)
श्री ठोगरामसाहा तेली विराटनगर	1)	, तोलाचंद सिंधी	1)
„ काशीराम सिंधी	1)	„ शोभाचंद सिंधी	1)
„ छोगमल मोहनलाल डूंगरगढ़	1)	, विरधीच द चंद सरदारशहर	1)
प० हुक्मराम खाण्डल	1)	„ पन्नालाल खेठिया डूंगरगढ़	1)
प० खोडाराम सूरजमल पारीक	1)	राजवश प० बूटाराम अबोहर	1)
श्री सिचियालाल सिंधी	1)	प० नानगंगम शिव प्रताप	1)
पं० रावतमल पारीक	1)	श्री विधिनचंद्रदास भाषाभागा	1)
श्री महारायजीर्तद्वेनाथ मुजमदार	1)	छात्रों द्वारा जदा व पुराने अक्षभार	1)
		बित्री किए गये	7 3/4

1008 3/4

व्यय

- 100 -) अक्षभारों का वार्षिक मूल्य लगा ।
 168 3/4 =) 1) फर्नीचर जिल्द तथा स्टेशनरी सामान में खर्च हुआ ।
 18 1/2 -) व्यायाम निमित्त खर्च हुआ ।
 56 1/2) श्री सेवासदन नाट्यशाला में नाटक खेलने में खर्च हुआ ।
 20) धर्माय खाते लगा ।
 16 1/2) पास्टेज काज ।
 285 1/2 -) नूतन पुस्तकें मंगाई गईं ।
 666 1/2 =) 1)
 235 1/2 -) श्री बीजराजजी बनेचंदजी कोपाध्यक्ष के नाम रहे थे ।
 100) , फूसारामजी रामनारायणजी खबर ह गिरधारीलाल के नाम थे ।
 6 1/2) श्री प० दुर्गादत्तजी मंत्री श्री से स सरस्वती पुस्तकालय के नाम रहे थे ।

1008 3/4

जिस समय श्री सेवासदन सरस्वती पुस्तकालय बालू स्थापित हुआ, उस समय जनरल मिटिंग में वार्षिक आय व्यय का वाक्यावली हिसाब पेश हुआ करता था। सबत 2004 तक सारा वार्षिक रिकॉर्ड निज्जु फाइलों में सुरक्षित रहता और एड बढ़ोतरी हेतु प्रति वर्ष अग्रिम बजट, पत्र पत्रिकाएँ पुस्तक सरया बकिंग कमेटी के मेम्बरों की सूची आदि का सब विवरण शिक्षा विभाग बीकानेर के कार्यालय में भेजना पड़ता था। तत्समय बकिंग कमेटी में एक हरिजन तथा अय जातियों से भी सदस्य लेने के सरकारी नियम माना जाया करत थे। लेकिन हमने आपाद कृष्णा प्रतिपदा सबत 1994 से चत्र शुक्ल अष्टमी 1996 तक सरस्वती पुस्तकालय का (वष दा का) हिसाब पुरानी नियमावली देखकर यहाँ लिया है। इससे पहले वष सवा वष में सह्य पुस्तक संग्रह

काय ही अधिक हुआ था। फिर वि० सं० 1997 का थोड़ा आय विवरण पुन पालिया है सो चित्र देखियेगा।

सम्बत् १९६७के वार्षिक चन्दा दाताओंकी नामावली।

- १) श्री बा० मेघराजजी गोलघा
- १) " " भीखनचन्दजी नाहटा
- १) " " बाबुलालजी मँबर
- १) " " बट्टीप्रसाद मँबर
- १) " " जयचन्दलाल वैद
- १) " " फारीरामजी राठी
- १) श्री प० सुरजमलजी शरीक
- १) " " बी० पी० त्रिवेदी
- १) " " मास्टर मङ्गलदासजी स्वामी हिन्दीभूषण
- १) श्री प० रमाकान्तजी वैद्य
- १) " बा० मोहनलालजी बागड़ी
- १) " " जयचन्दलालजी विरमेचा
- १) " " पनेचन्दजी नाहटा
- १) " " लालचन्दजी लोढा
- १) श्री बा० नुचमलजी नाहटा
- १) श्री नानूराम सरकर्ता काव्यमनीषि
- १) श्री बा० विरधीचन्दजी कदा
- १) श्री माणकचन्द कोठारी
- ii) श्री माणकचन्द (सूचीव बाज)

अवदीव-

प० दुर्गादत्त शास्त्री साहित्यभूषण
मन्त्री श्रीतेवासदन सरस्वती पुस्तकालय
काल (बीकानेर)

स० 1996 में यह पुस्तकालय पाठशाला की चौथी कक्षा की आलमारी में भुक्त होकर धमशाला के बाहरी कक्ष (काठरी) में आ चुका था। मन्त्री प० श्री दुर्गादत्त मारत और उपमन्त्री प० श्री वाचस्पति त्रिवेदी (प्रधानाध्यापक) थे। कोषाध्यक्ष श्री बीरराज बनेचन्द एवं पुस्तकाध्यक्ष प० लाम्भारामजी पूजारी थे। इन पदाधिकारियों सहित काय-चारिणी सभा के 14 सदस्य श्री मेघराज गोलछा श्री गिरधारीलाल शबर, श्री लालचन्द नोला श्री काशीराम राठी, श्री रूपचन्द नाहटा श्री मोक्षमचन्द नाहटा श्री मोतीलाल बरनाणी, श्री सोहनलाल सारस्वत आशुन गोविन्दराम यति, श्री स तोकचन्द नाहटा श्री जयचन्दलाल विरमेचा आदि थे। इस सस्था के हिसाब परीक्षण प्रायः श्री माहनलाल बागडो रहे हैं। उम समय हर साल गांव के सामने हिमाव गेग किया जाता था।

वि० सं० 1997 ई० सन 1941 में श्री संदासदन सरस्वती पुस्तकालय काल का राजकीय सहायता तीन रुपय मिलनी शुरू हो गई थी। शिक्षा विभाग बीकानेर से हर

माह चैक आ जाया करता, जिसका उपट्रेजरी लूनकरनसर से भुना जाते थे। फिर यह महायता तीन रुपये से पाँच रुपये हुई, फिर सात, दस, पन्द्रह, बीस रुपये और सन 1955 में इसको पच्चीस रुपये माहवार सहायता मिलती थी, जो श्री रामचन्द्र कल्सा इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूलस् बीकानेर डिवीजन के द्वारा स्वीकृत हुई थी। दिनांक 17.7.1956 में लेखक (सामयिक मंत्री) पुस्तकालय का नया चुनाव करवा कर श्री एस टी सा के प्रशिक्षण में चला गया और दो साल बाहर रहकर वापिस आया, तब ग्राम सेवा सब के साथ काय सलग्न रहकर पाया कि पुस्तकालय की राजकीय सहायता बढ़ हो गई है। फिर तो इसका नाम केवल श्री सरस्वती पुस्तकालय ही रखा गया है।

स० 1992 से स० 1996 चंत सुबो 8 (चार वर्षों) तक पुस्तकालय में एक सौ पुस्तकों से बढ़कर सात सौ की सरया हो गई थी और निम्नांकित पत्र पत्रिकाएँ आने लगे थे—

दैनिक—1 हिन्दुस्तान 2 विश्वामित्र। साप्ताहिक—1 मीरा, 2 समाज सेवक, 3 जाग्रति 4 भारवादी ब्राह्मण 5 श्री बीकानेर राजपत्र, 6 विजय। मासिक—1 चाँद, 2 तरुण ओसवास 3 कल्याण, 4 सिद्धांत 5 बालसत्ता, 6 संस्कृतम 7 जनमत। त्रमासिक—1 राजस्थानी।

कालू में शिक्षा प्रबुद्ध धनता, सभ्यता तथा सभ्यता के वातावरण को विस्तृत विस्तृत बनाने वाला श्री सरस्वती पुस्तकालय ही है। अब इस पुस्तकालय का स्थान (भवन) कोई लग कोठरी में रहकर, अपना सावजनिक विशाल भवन बन गया है। कभी कभी प्राचीन वाघाओं के चक्र में आ जान वाला यह पुस्तकालय आज बीच बाजार के मध्य भवन में बड़ी छान के साथ उ नत भाल प्रकाशमान हो रहा है। यह पुस्तकालय सव-प्रथम छाला की चौथी कक्षा की आलमारी में फिर सन् 1939-40 में धमछाला के बाहुर बरामदे की उतरादी कोठरी (जहाँ अब मालिन रहती है) में इसके बाद नाहटा की ह्वेसी का बाहुरी पूर्वी कोन वाला बड़ा कमरा (सन 1941 में), पचास सन् 1946 में धमछाला के अंदर वह कोठरी जो श्री सत्यनारायण मंदिर और बोरटी के पास पूर्व मुख है' में रहा था। श्री जसवर्तासहजी, हाम मिनिस्टर बीकानेर ह्वेसी वाले कमरे में और महाराज कुमार श्री अमरसहजी धमछाला वाली कोठरी में ही इस पुस्तकालय को देखन पधार थे। अब ता बाहर से आन वाले सारे महमान एव सांस्कृतिक प्रोग्राम, धार्मिक प्रवचन सम्मान व विदाई समारोह आदि के समस्त कार्यक्रम नये पुस्तकालय भवन में ही आयोजित होते हैं। परन्तु पुस्तकें बढ़, पत्र पत्रिकाएँ काफी आती हैं और अव्यवस्था का बालबाला है। सुंदर तन रुण मन।

यह पुस्तकालय भवन फतेहपुर के सेठ श्री सोहनलालजी दूगड द्वारा दो बार के दान द्रव्य से बनाया गया है। पहले सन् 1951 कलकत्ता में सरस्वती पुस्तकालय के भवन बावत श्री लालचंद राठी स्व० बुधमल नाहटा, श्री हुक्मचंद बोधग श्री गिरधारीलाल अवर बगरह मावजनिक रूप में सेठ श्री दूगड के पास गये। श्री दूगड ने सत्काल दस हजार का चेक इनको प्रदान कर दिया। लेकिन काम तो बहुत बड़ा करना था, कैसे होता? आखिर अवसर आया और राज्य सरकार के नियमानुसार उनसे

दुगुने लेकर पुस्तकालय भवन का काम शुरू किया गया। सन् 1964 के आस पास श्री साहनलालजी दूगड गौशालादि संस्थाओं को देखन श्री डूगरगड आये, तब कालू क कुछ लोगो ने पुन जाकर पुस्तकालय भवन की सम्पूर्णता हेतु पाँच हजार रुपये फिर उस वरसन वाले बादल श्री दूगड स प्राप्त किये। श्री डूढाणी सरपच कालू ने अपने पचायत कार्यालय से पलोयण (ऊपरी सहायता) लगा करके इस भवन को पूण करवाया है जा गाव के बीच एक गौरवपूर्ण ज्ञानप्रवाश मंदिर है। यद्यपि बाचनालय सबधी आधुनिक उपादानो, उपकरणों का अभी अभाव है तथापि संस्था की वाचक दैनिकी सरया के अनुसार कठिनाई वाली बात प्रत्यक्ष रूप म महसूस नहीं होती। हाँ ' आय क क्षात अवश्य कम हैं जिनके लिए नवयुवक कायकर्त्ता सक्षम रूप मे जागरूक हैं।¹

श्री सरस्वती पुस्तकालय के पहले अध्यक्ष पद पर सबधी गिरधारीलालजी खेंबर, श्री दुर्गादत्तजी शास्त्री, श्री नानूराम सरस्वर्ता तथा एच० एम० डूढाणी आदि रह हैं। मंत्री पद भी तत्समय परिवर्तित होत हुए यही लोग सभालते रहे। अब पूण आश्वस्ति पूर्वक कहा जा सकता है कि कस्के कालू के शिक्षित नौजवान श्री सरस्वती पुस्तकालय की श्रीबद्धि मे सतत प्रयत्नशील रहत रहग।

लोकसाहित्य प्रतिष्ठान कालू—यह संस्था लोक साहित्य के क्षेत्र मे सन् 1960 से काम कर रही है। प्रतिष्ठान का उद्देश्य लोक जीवन की अनुपम निधि लोक साहित्य संग्रह संरक्षण एवं प्रकाशन है। आज जिस तजी स लोक साहित्य विलुप्त होता जा रहा है उसे देखते हुए इस काम की महत्ता और अधिक बढ जाती है।

प्रतिष्ठान न लोक साहित्य के सम्पूर्ण अंग उपागो की ओर पर्याप्त ध्यान दिया है। अब तक लगभग 500 लोक कथायें, 350 कहावता की कहानियाँ, 300 कम सवृद्ध बास लोक कथायें 200 लोक खेना के बाणी विलास, 500 लोकगीत प्राचीन, 200 मवीन लोकगीत, 7 लोक उपन्यास संग्रहित किय जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त कहावता, पहलियों जीर सक्षिप्त लोक शब्दा को संग्रहित करन की योजना कालू है।

उपयुक्त साहित्य मे से पर्याप्त मात्रा मे साहित्य प्रकाशित भी करवाया जा चुका है। प्रतिष्ठान के लक्ष प्रतिष्ठित राजस्थानी लेखक श्री नानूराम सरस्वता का "राजस्थानी लोक साहित्य" (साहित्य महोपाध्याय के लिए स्वीकृत शोध प्रबंध) प्रतिष्ठान की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रस्तुत प्रबंध सम्पूर्ण राजस्थानी लोकसाहित्य की

- 1 यहाँ के दूकानदारों को व्यापार मंडल से श्री सरस्वती पुस्तकालय की सभाल सहायता रखनी चाहिए। जस लूनकरनसर के बजरग भवन का बाजार की ओर स संग्रहित लाख रुपये का धन जमा है।
- 2 वि० सं० 2038 (ई० सन् 1981) आसाठ म पचायत की ओर से सरपच श्री डूढानी न पाँच दुवाने पुस्तकालय की बाहर दिवारी म बनवा कर किराये के लिए सलग्न कर दी है। परंतु दस सालों से इसकी पुस्तकें पढ़े क पीछे चलायमान प्रगति स्थिति पर हैं, जो पक्षकटो, सूखी-सगडी कपाटों मे जकडी पड़ी हैं। वे विद्यार्थिया से लेकर आम जनता तक के लिए प्रकट रूप नहीं, बरदश्य एवं अलाभकारी वस्तु बनी हुई मरणासन हैं। उनकी नाम सरया सूची और कूची न मालूम कहाँ जा पहुँची? समूची ऊँची गायवाही मे चलती हैं—ऐसा मुना है।

वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयास है। लोक कथाओं की दृष्टि से अनेक कहानी संग्रह व वाक्य प्रकाशित किये जा चुके हैं। राजस्थान एवं राजस्थान के बाहर से निकलने वाले गोप्य पत्र पत्रिकाओं द्वारा विलुप्त प्राय साहित्यिक विधाओं का प्रकाश में लाने का प्रयत्न निरन्तर किया जाता रहा है।

प्रतिष्ठान ने लोक साहित्य के वाक्य का स्वरूप एवं पूर्ण महत्व स्पष्ट किया है। विभिन्न प्रवृत्तियों के प्रतीक नवीन एवं प्राचीन लोकगीतों के संग्रह से लोक परंपरा का निर्वाह हुआ है। प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित ऐतिहासिक, पौराणिक और काल्पनिक लोक कथाएँ लोक वाक्य का आवश्यक अंग हैं। रहस्यमयी रमणीक एवं नीतिपूर्ण कहानियों की कहानियाँ कहावत समझने की सच्ची कुंजियाँ हैं। कम सबूद बाल लोक कथाएँ भी विशेष गतिमय और जिज्ञासात्मक विलक्षणता लिए हुए बास सुलभ मनोवृत्ति के अनुकूल शिक्षा सामग्री हैं। खेल सम्बन्धी, मनोरंजन सम्बन्धी भुलावा, बड़ावा, योरे निमग्न आदि लोक खेलों ने वाणी विलास द्वारा बालकों की उदात्त भावना का विकास होता है। कहावतें, पहेलियाँ, प्रवाद तथा सांस्कृतिक एवं व्यवहारिक शब्दों आदि अन्य लोक साहित्य की सामग्री द्वारा सामाजिक व्यवहार को बड़ावा मिला है। प्रतिष्ठान के कला विज्ञान, समाज एवं राजनीति में भ्रामक ज्ञान की छाया सबंधी लोक उपयोग सामाजिक धार्मिक एवं राष्ट्रीय रूपाति प्राप्त व्यक्तियों की सही परब है। सीमित साधना के कारण प्रतिष्ठान का सारा साहित्य प्रकाशित नहीं करवाया जा सका। अतः दीमकों का आहार बनता जा रहा है। प्रबल इच्छा होते हुए भी आर्थिक अभाव के कारण लोक साहित्य के विपुल भण्डार का संरक्षित नहीं कर पा रहे हैं।

लोक साहित्य प्रतिष्ठान साहित्य धर्मा भवन कालू के एक कमरे में विद्यमान है। अभी तक इसका अपना भवन नहीं बन पाया। पर स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर शाखा कालू में अकाउंट नम्बर 336 पर अपना खाता रखता है। प्रतिष्ठान के पदाधिकारी इसके उत्तरोत्तर विकास के लिए कार्यशील हैं। प्रतिष्ठान राजस्थानी लोक साहित्य समृद्धि में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लि०—यह संस्था सन 1960 में बास भादवान कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लि० के नाम से स्थापित हुई थी।¹ इसके बाद दूसरी—बास जाणियान कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लि० फिर खोली गई। आगे चल कर ये दोनों सन् 1965 में मंजर (एक) हो गई और इस संस्था का नाम कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लि० रखा गया। इसका अपना सुंदर भवन और बड़ा

1 बीकानेर रियासत ने सन 1920 में "बीकानेर स्टेट को ऑपरेटिव सोसायटीज एक्ट 1920" लागू किया था। लेकिन आम जन काय हेतु इसका विधिवत नाम दो दशक से प्रकाश में आया है। दखें—केन्द्रीय एवं प्राथमिक स्तर की समस्त सहकारी संस्थाओं विभागीय अधिकारियों, शीघ्र विधि-व्यवसायिक आदि के लिए 'राजस्थान में सहकारी कानून' नाम की पुस्तक।

गोदाम जादुओं के कूए पर इसकी आय उपज से सरपंच डूढ़ाणी द्वारा सन 1966 में बनवाया गया है। अब सन् 1983 में इस पर दूसरा माला (मजिल) भी बन गया है। पहले इसके द्वारा गांव के लोगो को कपड़ा, चीनी और अनाज आदि आवश्यक पदार्थ सस्ते दामों पर उपलब्ध करवाये जाते, मगर अब ना तेस, सोडा, साबुन, घी, खम एवं अनुदान जसा द्रव्य भी दिलवाना सुलभ करवाया जाता है, जो तहसील की विशेष व्यवस्थावा में से एक है। पहले पहले मुखिया से इससे 40-45 सदस्य बन पाय थे, लेकिन अब सदस्य संख्या 900 तक सह्य पहुँच गई है। कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लि० द्वारा पाँच हजार के साधारण ऋण वितरण काय से अब 12 लाख तक का बढ़ा लेन-देन होता है। कम से इसके चार चुनावो मे—श्री डूढ़ाराम छाती, श्रीवणदास, श्रीगोरीशंकर और फिर श्रीवणदास संस्था अध्यक्ष बन चुके। मंत्री पद सन् 1960 से सन् 69 तक निरंतर श्री गोपालचंद डूढ़ाणी द्वारा सुव्यस्थित तथा दठ रहा है। एक बार श्री रामप्रसाद पारोक भी संस्था मंत्री चुना जाकर पूरे कार्यकाल तक सेवा सलग्न रहा हुआ है। किंतु अगले चुनाव में पुनः श्री डूढ़ाणी चुनाव जीतकर कालू ग्राम सेवा सहकारी समिति लि० का मंत्री बन गया। अब तो श्री डूढ़ाणी अध्यक्ष है।

इस संस्था में ग्राम सहयोग के अनक काय होते हैं और यह बीकानेर जिले की प्रमुख सहकारी संस्था है। समाजवादी ढंग से समाज का निर्माण करने हेतु सबसे महत्वपूर्ण बात इसमें यह होनी है कि जनता के किसी भी वर्ग को राष्ट्रीय सामाजिक अधिकारों का अधिकार बनने के लिए सम्मान दिया जाता है। कालू का लोक जीवन कई पीढ़ियों से आर्थिक एवं सामाजिक ढंग से अस्वस्थ स्थिति में चला आ रहा था, अब इस संस्था के कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रीय स्तर पर सहकारिता प्रति द्वारा उसको पूर्ण आरोग्य एवं समृद्ध बना दिया है।

कालू दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति—भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा उत्तरी राजस्थान सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लि० की स्थापना 1972 ई० में हुई। तब इससे अर्धीन 1 जनवरी 1975 को कालू दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति ने दुग्ध सकलन काय आरम्भ किया। गांव में पशु पालन पेशे के अनुसार पर्याप्त दुग्ध संग्रह होने लगा और पृथक्-पृथक् मालिकों के द्वारा हजारों गायों भर्से अच्छी व्यवस्था के अंतर्गत पाली जाने के बावजूद समिति का काय सफल माना जाने लगा। सन 1975 में श्री शिवचरण मायूर, योजना तथा सामुदायिक विकास मंत्री राजस्थान कालू आये और समिति के सदस्यों (दुग्ध विक्रेताओं) को पीतल की बाल्टियाँ वितरित की गई। मंत्री महोदय ने सरपंच के द्वारा पशुओं की खरीद के लिए सदस्यों को ऋण प्रदान करने हेतु समिति का माठ हजार का चेक भेंट किया।

दुग्ध उत्पादक की रुचि देखकर समिति का निजी दुग्ध संग्रहालय व कार्यालय भवन बनाना भी आवश्यक समझा गया। अब ग्रामवासियों के सहयोग से समिति का उक्त भवन सन 1978 में जाकर पूर्ण निमित्त हुआ। भवन निमित्त भूमि, दुग्ध समिति की उपयोगिता एवं ग्रामवासियों की सहयोगी भावना के परिणाम स्वरूप ग्राम के मध्य प्राप्त हुई है और गत तीन वर्षों के लाभ से एकत्रित रुपये 32000) तथा दूसरे स्रोतों से

राशि उपलब्ध करके इसने कायकर्त्ताओं ने यह भवन तैयार करवाया है। समिति के भवन निर्माण काम में बाबूलाल भोजक का कार्य सराहनीय रहा है।

इस समिति का विशाल भवन गांव के मध्य (गोदारा के कुए चीन पर) बना, जिसका उदघाटन दिनांक 8.11.78 को श्री जयनारायण पूनिया, सावजनिर निर्माण व विकास मंत्री राजस्थान के हाथों से हुआ। इस अवसर पर कालू में विजयती तथा विश्वामालय आदि के उदघाटन हेतु प्रो० वेदार श्रम मंत्री, श्री मानकचंद मुराणा धिसमश्री श्री कल्याणसिंह कानवी वृषि एच सिंघाई मंत्री और समद सदस्य चौधरी हरिराम आदि नेता एवं मंत्रीगण भी विद्यमान थे। दुग्ध समिति के भवन को मख ने सुराहा और इसे अच्छा काय बताया। गांव कालू में यह एक सफल एवं अनुकरणीय समिति योजना है। अब तो गांव भस खरीदने के लिए समिति द्वारा श्रृण व अनुदान भी दिलाया जाता है। पशुओं के इलाज वास्ते सगरा की ओर से डाक्टर खाद्य सामग्री और दवाओं का भी पूरा प्रबंध है। समय समय पर पशु प्रदर्शनी, दुग्ध प्रतियोगिता एवं प्रशिक्षण परीक्षा के लिए कम्प आयोजन भी होते हैं। इस सरकारी एवं व्यक्तिगत व्यवसाय को समाज धरातल पर और विधायक भाग पर रखकर सफल करने का यह परम सुंदर प्रयत्न है। कालू दुग्ध उत्पादक समिति के द्वारा दुग्ध विक्रेताओं को फ्रिल्स प्रदर्शनी दिखाने, परीक्षण हेतु बाहर भेजने पशुओं के चित्र लिवाने तथा डाक्टरों करवाने आदि के अवसर प्रायः मुलम रहते हैं। सत्याना अभ्यक्ष श्री बाबूलाल भोजक हैं और पन्द्रह बीस बेरोजगार व्यक्ति भी इसमें काम पर लगा रहे हैं जो मुक्ति मन स्वयं सम्पन्नता के पथ चलेते हैं।

तृतीय प्रकरण

ग्राम सेवा सघ कालू व अन्य सस्थाएँ

ग्राम सेवा सघ कालू के बाय सिद्धांत निम्नलिखित हैं—(स्थापित 27 मार्च सन् 1950)—

1 साक्षरता हेतु—(क) खुद पढ़ना एवं गाव में अपढ़ लोगों को पढ़ाने की चेष्टा करना । (ख) गाव में पुस्तकालय, वाचनालय हैं, अतः लोगों का शिक्षा की तरफ ध्यान आकर्षित करना ।

2 जनता की सामाजिक तकलीफों को मिटाने के लिए—(क) अकाल आग महामारी आदि के समय सब लोग मिलकर बिना घबराहट के काम करना । (ख) रिश्तत, चोर बाजारी आदि को मिटाने की कोशिश करना । (ग) स्कूल, अस्पताल, कुएँ, तालाब, अन्न वस्त्र आदि समस्याओं का हल करने की कोशिश करना ।

3 सामाजिक रुढ़ियाओं और स्वल्प हैं, हटाने की कोशिश करना—(क) छूआ-छूत व भेदभाव को मिटाना । (ख) बाल विवाह बढ विवाह आदि कुप्रथाओं का रोकने की कोशिश करना ।

ऐसे सघ के अपने 15 और नियम थे । सघ के सदस्य बनने के नियम और उनके कर्तव्य 18 माने जाते थे । ग्राम सेवा सघ कालू के सहायक किशोर सघ के 6 नियम थे । अध्यक्ष के अधिकार एवं कर्तव्य सबधी 15 नियम थे । सघ के अन्य सदस्यों के भी 4 अधिकार निर्धारित थे । मंत्री के महान अधिकार एवं कर्तव्य सबधी 14 नियम थे । सघ के बोधायक के तीन कर्तव्य और हिसाब परीक्षक के 4 कर्तव्य सुनिर्धारित थे । प्रचार मण्डल मंत्री के 3 काय थे । सघ के औपधि इंचार्ज के 7 आदेश कर्तव्य सुनिर्धारित थे । सघ की हिंद क्लब के 16 नियम थे तथा हिंद क्लब के सदस्य बनने के नियम एवं अधिकार 5 थे । सघ के खेल मनोरंजन मंत्री के 10 अधिकार थे । हिंद क्लब के कैप्टन को 9 अधिकार मिले हुए थे । इस तरह से सघ के वायकर्ताओं को 129 नियम और उपनियम तथा कर्तव्यों एवं अधिकारों का पालन करना पड़ता था ।

ग्राम सेवा सघ कालू का काय विवरण—ग्राम सेवा सघ ने अपनी स्थापना स सेवर दिनांक 31 7 55 तक जो काय किये, वे इस प्रकार हैं—(1) सघ बनने के समय स्थानीय पुस्तकालय चिन्ताजनक परिस्थिति में था । पुस्तकों की अस्त व्यस्तता थी । आय व्यय के हिसाब का भालूम नहीं था । वर्षों से चुनाव नहीं हुआ था । पुस्तकालय के प्रति जनता की धृष्टा कम होती जा रही थी । इस हालत को देखकर ग्राम सेवा सघ ने इसकी दगा मुधारन के लिए प्रयत्न किये । गाव की सभा बुलाकर पुस्तकालय के पदाधिशायियों का दुबारा चुनाव करवाया । हिसाब एवं किताबें सुव्यवस्थित की । पटी किताबों के लिए जिल्दसाज बुलाकर जिल्दें बँधाई सदस्यों की सख्या बढाई उनका फीम इक्वटी की और गाव से खदा एकत्र किया । सरकारी इमदाद भी बढा ली गई थी ।

सम्पूर्ण रेकाडस नये बनाये। पाठको का नियमित रूप से पुस्तकें मिलन लगी और उनकी इच्छानुकूल पत्र पत्रिकाएँ आनी शुरू हो गई।

(2) गांव में अशिक्षित प्रौढों को साक्षर बनाने के लिए ग्राम सेवा सघ ने भरसक प्रयत्न किये थे। अपनी साधारण आय स पट्टी बरता, किताबा का व्यय करके प्रौढों में शिक्षा के प्रति दिलचस्पी पैदा की। वे साक्षर हुए एव किताबें पढ़ने लगे, जिनमें हरिजन और किसान भी थे।

(3) अपने गांव का मिडिल स्कूल भवन, सघ की स्थापना के समय अधूरा पड़ा था। इस अधनिर्मित भवन को पूरा करने के लिए ग्राम बंदा दाताओं की एव स्कूल कमटी के सेम्बरों की सभाएं बुलाई। फिर सघ ने भवन को पूरा बनाने के लिए सरकार से कोशिश की। प्रतिनिधि मंडल बीकानेर गया। आखिर 'श्री साद्वल बल फेयर एण्ड पब्लिक प्री वाटर सप्लाई फंड' से 10 000) दस हजार रुपये मिले तब स्कूल भवन पूरा किया गया।

(4) किंतु इस उपरोक्त स्कूल भवन में आठ बसासा की पढाई के लिए दो कमरों का होना निहायत जरूरी था, जिसके लिए सघ ने कोशिश करके राजस्थान सरकार से 3925) रुपये मंजूर करवाये तब कमरों की कुछ कमी पूरी हुई।

साहित्य समाज में जाति पदा करता है। समाज में उत्पन्न कुरीतियों को हटाने के लिए ग्राम के लड़का में लिखने की तरफ रुचि पैदा की और उनके 'मस्तिष्क' विकास के लिए सघ ने एक हस्त लिखित त्रमासिक पत्र (विकास) निकालना आरम्भ किया। सघ का यह सरानीय काय उच्च आदेश उपस्थित करता हुआ अत तक सामयिक उद्देश्य की पूर्ति करता रहा।

कालू ग्राम में बालिका विद्यालय क्यों स था। किंतु श्रीमती आमा देवी के प्रधान अध्यापिका काल में विद्यालय की दुदशा हो गई थी। लड़कियों की समस्या घट चुकी थी। पढ़ाने का तरीका सतोपजनक नहीं था। सघ ने गिना विभाग से प्राथना करके उसका तवादला कराया और दूसरी अध्यापिका का यहां बुलाया। विद्यालय की प्राइमरी की जगह लोअर मिडिल बनाने के लिए कोशिश भी चलाई थी। शिक्षा विभाग का आदेश हुआ कि लड़कियों की संख्या ज्यादा होने पर कक्षा बड़ा दी जायेगी। इसलिए ग्रामवासियों से अनुरोध किया कि अपनी लड़कियों को घर न रखकर स्कूल भेजें। ऐसी कागिश करके लड़कियों की संख्या 100 तक बड़ा दी थी।

सघ की स्थापना स पूर्व गांव में दवाई का बड़ा अभाव था। प्राइवेट तौर से नहीं एव सञ्जन दवाई बेचते एव मनचाहा चीगुना मुनाफा लेते थे। इस कितलत को देखकर सघ ने एक औपघालय कायम किया। वह गांव की अधिक से अधिक सेवा करता रहा। सन् 1955 में यहां डिस्पेंसरी में एम० बी० बी० एस० डाक्टर आन के बाद उनके मुलाव से सघ ने दवाईयों का बहद भंडार खोलन की योजना बनाई। किंतु सघ की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। इसलिए सघ के सदस्या से ही रुपये वज लेकर दवाईयों की संख्या बड़ाई थी। फलस्वरूप जनता को उपयोगी दवाईयाँ उचित मूल्यों में प्राप्त होने लगी। औपघालय में होगियोपथिक का (मुफ्त वितरण हेतु) बड़ा स्टोक था। जिससे गरीब जनता पूरा फायदा उठाती थी।

गांव में अस्पताल का होना जरूरी था। सन 1951 से सघ के सतत प्रयत्न का परिणाम है कि हम आज अपने यहाँ बड़ा अस्पताल देख रहे हैं। इसकी स्थापना के लिए सघ ने अनेक प्रयत्न किये थे। स्वास्थ्य विभाग राजस्थान को पत्र देकर सघ का प्रतिनिधि मंडल बीकानेर एवं जयपुर में सञ्चाधिकारियों तथा मंत्रियों से मिला था। सघ ने मठ श्री सुगन्धद अनेचंद नाहुटा के परिवार को हार्दिक धन्यवाद दिया, जिन्होंने प्रथम अपना मकान डिस्पेंसरी के लिए देकर जन मन को कृतार्थ किया है।

सितम्बर सन 1953 में अपने गांव एवं आसपास के बीसों गांवों में मलेरिया बड़े जोर से फैला। सघ में मलेरिया की रोकने के लिए सरकार से पैलोडीन, मेपाक्वीन, कामाक्वीन आदि गोलियाँ सहायता के लिए प्राप्त कर सुदूर ढग से रोगियों को वितरण की। उस दवा ने 'रामधान' का काम किया। गरीब जनता को मुफ्त गोलीयाँ मिलने से बड़ी राहत पहुँची। उनका सब हिसाब ब्योरेवार सरकार का भेजा गया। करीब 5000 पाच हजार गोलीयाँ बाँटी गई थी।

सघ की स्थापना के समय कालू में डाक महीने में 15 दिन ही आती थी, जिससे गांव की समय पर बिछ्छी प्राप्त नहीं होती। नजदीक से आने वाले पत्र भी अटकने की वजह से लेट हो जाते थे। इस परेशानी को दूर करने के लिए सघ ने डाक विभाग से पत्र व्यवहार किया। एक बार डेपूटेशन सुपरिन्टेंडेंट ऑफ पोस्ट ऑफिस से मिला, अपनी परेशानी प्रकट की। काफी कोशिश के बाद ता० 9 7 53 से रोजाना डाक आने जाने का हुक्म जारी हो गया। पर पोस्ट ऑफिस से इन्श्योर नहीं लगाई जा सकती और सेविंग्स एकाऊंट भी नहीं। इन कार्यों के लिए भी कोशिशें की गईं। आस पास के गांवों के कागज पत्र यहां आते हैं, इसलिए देहानी डाकिए के लिए भी कोशिश की गई। पोस्ट ऑफिस को ऊँचे दर्जे में परिवर्तित करने के लिए भी कागज चलाये गये।

सन 1953 में श्री गादूल वल फैयर एण्ड पम्पिंग की वाटर सप्लाई फंड 'से गांव के तालाबा की खुदवाई के लिए 8000) आठ हजार रुपये मिले थे। इन रुपये से खुदाई काय हुआ उसका हिसाब पूरातया सघ में ही रखा था। सघ के समस्या ने ही अवैतनिक मेठा एवं सुपरवाइजरी का काय किया। समस्त मस्ट्रोल बनाकर तहमील से पाम करना और फिर चेकमेंट करना विस्तृत काय होता है जो सघ न बड़ी इमानदारी से किया।

ता वाग भिवानी से आँखों का इलाज करने के लिए डॉक्टर बुलाये थे। कम्प कालू में लगे थे। सघ न गांव में आँखों में मदद लेकर रोगियों के खान पीने तथा समुचित सेवा का प्रबंध किया था। रोगियों को उनके कमरों से ऑपरेशन हाल में तथा वापिस ऑपरेशन हाल से उनके कमरों में अपने हाथों से लाने-लेजाने का काय किया। तब अपॉय न आँखें पाई थी। डॉक्टर ने सघ-यवाद स्थानीय लाईब्रेरी का द्रव्य प्रदान किया था। इस प्रकार सघ हमारा भेवा काय में नत्पर रहता।

मन् 1953 में मारवाही रिस्पी सोसाइटी ने अपना एक स्थाई कम्प बीजानगर में अगान पीडिर्तों की सेवाय लगाया था। ग्राम सेवा सघ न अपना सम्पक सोसाइटी के साथ स्थापित करके कालू एवं आस पास के पंचायत गांवों में सेवा काय चालू किया

ये जो निम्नांकित हैं—(क) बस्वा कालू में राजस्थान सरकार की ओर से तालाबा की खुदवाई का काय चालू कराया गया, जिसमें हजारों मजदूर काम करते थे। आस पास के अथ गाँवों में भी खुदवाई के काय सच की निगरानी में चालू हुए। मजदूरों को पेमेंट देरों से मिलने के कारण बड़ी दिक्कत होती थी। किन्तु सच ने इसको बड़े सुन्दर ढंग से सुलझाया था। स्थानीय दुकानदारों से बात करके सच वाले उन पर पर्ची फाट कर मजदूरों को दे दिया करते थे। मजदूरों का उससे अनाज वगैरह आवश्यक खाद्य सामग्री मिल जाती थी।

अकाल में गायों की बड़ी दुश्घा हान लगी थी। सोसाइटी के सहयोग से सच ने कई जगह अस्थाई गोशालाएँ कम्प खोले, जिससे हजारों की तादाद में गायों की रक्षा हुई।

अच्छी नस्ल के साढ़ा को ख़ार देकर उनकी रक्षा की गई जिससे नस्ल खराब होने से बची। आस पास के पचासों गाँवों में ऊटों पर धूप में दौड़े करके सच न साढ़ों के लिए ख़ार का प्रबंध किया था और गायों के लिए भी सहायता दी थी। इसके साथ अपाहिजों को कपड़े व अनाज वितरण किया गया था।

सासाइटी में मिलें हुए पाउडर दूध का बड़ाहा में अपने हाथों से तैयार करके सुव्यवस्थित ढंग से मजदूरों और गरीबों के बच्चों, बूढ़ों एवं गभवती स्त्रियों का पिलाया जाता था। माघ में उनको विटामिन की गोतिरियाँ दी जाती थी जिनसे गरीबों और मजदूरों का स्वास्थ्य धरकरार बना रहा।

गर्मी के मौसम में कई जगह पानी की किल्लत हो गई। जिसको मिटाने हेतु कई जगह कुएँ खोदने के लिए ख़र्च दिये। उन गाँवों को सच से बड़ी सहायता मिली।

इस प्रकार यह काय बहुत बड़ा काय था, जिसको सच ने बड़ी ईमानदारी, तत्परता एवं मुस्तदी के साथ सफल बनाया था। इस काय प्रणाली को देखकर सोसाइटी के आये हुए प्रतिनिधि श्री ब्रह्मनारायणजी सादाणी ने सच की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और दोनों पर आये हुए श्री रामेश्वरलालजी टाटिया, भासादीनजी खेतान न भी सच के काय देखकर सराहना की। फिर सोसाइटी के हेड आफिस कलकत्ता से एक धनबाद पत्र भेजा था।

कालू का इलाका पवित्र थी के लिए सदा से प्रसिद्ध है लेकिन कई व्यापारी बाहर से बैजीटैक्स की लाकर चोरी से यहाँ के धर्म में मिश्रित कर देते थे और इस इलाके को बदनाम कर रहे थे। सच न निगरानी एवं जाँच पड़ताल से ऐसे व्यापार करने वाले गिराह का पकड़ा। फिर बीकानेर से डी० एस० पी० साहब एवं पुलिस इन्स्पेक्टर वगैरह को यहाँ पर बुलाये। इसकी पूणतया जाँच करवाई और मिलावट करने वाले सज्जनों पर मुकदमों का भय डाला। सच के इस साहसी काय को देखकर पुलिस विभाग ने सच की भूरि भूरि प्रशंसा की।

अपने गाँव में मिडिल स्कूल से बढ़ाकर हाई स्कूल की शिक्षा के लिए दो वर्ष से प्रयत्न हो रहे थे। इन सब कोशिशों के लिए सच को डेपूटेशन लेकर शिक्षा मंत्री तथा यूनिवर्सिटी के रजिस्टार तक मिलना पड़ा। इसके अलावा आस पास के गाँवों में प्राइमरी स्कूल खुलवाने के लिए सच ने पूरी कोशिश की और कई गाँवों में प्राइमरी स्कूल चालू

करवाये। इन गावा में शिक्षा का प्रचार होने से ऊँची कलासा की शिक्षा ग्रहण करने के लिए वहाँ के छात्र कालू में पढ़ने के लिए आये। अपना बाइंग हाउस जो गढ़ अमरसिंह जी से मिल चुका था, बाहर के छात्रों को रहने के लिए मिला और विद्यालय की उन्नति हुई। अब कस्बा कालू शिक्षा-परीक्षा का एक अच्छा केन्द्र बन गया है।

सघ ने अपना सम्पक रैडक्रॉस सोसायटी से स्थापित किया। रैडक्रॉस मातायटी ने पाउडर दूध मगवाकर बच्चों, बूढ़ों और गमबती औरता का अर्से तक पिलाया था।

अपाहिज एष पर्दानगीन स्थियों का सरकार से सहायता दिलाई एव भाग के लिए सहायता चालू रखने के लिए सघ न भारी बाँगीन की। राजस्थान सरकार की जल बोर्ड योजनानुसार आस पास के बीसों गावा का दौरा करके सघ न उन गावों की पूरी रिपोर्ट एव जानकारी जल बोर्ड के समक्ष पेश की। अनेक गावों में काय चालू करने की मजूरी भी मिली थी।

स्थानीय कस्बे के मिडिल स्कूल में कक्षा 7 व कक्षा 8 में ड्राइंग (चित्रकारी) पढ़ाई जाती थी। सघ ने कोशिश करके कामस भी खुलवाई। इस काय के लिए एक डेपूटेशन शिक्षा अधिकारिया में मिला।

इन कार्यों के अलावा कालू में बहुत स छोटे माट काय भी सघ द्वारा हुए हैं। गाव स कोई भी आपसी सहायता मागता तो सघ यथाशक्ति सहायता देता और सदब दैन का तत्पर रहता था।

सघ की हस्तलिखित त्रमासिक पत्रिका 'विक्रम' का विकासना सदस्या की साहित्यिक भावना का परिचायक था। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर यह दोहा लिखा जाता था—

‘विग्रह फूट विवाद का, हवित चाहे हाम।

रनेह सरोवर सघ का यह बीच विकास॥’

सघ के कार्यों के फलस्वरूप कुछ सम्मति पत्र आये थे जो निम्नलिखित हैं—

1 आज में कालू अपने दोरे पर प्राग्राम के अनुसार आया और 'ग्राम सेवा सघ' सस्था का कुछ काम देखने का अवसर मिला। यह सस्था इस ग्राम के कुछ उत्साही नव-युवकों के हाथ में है और सावजनिक काय कर रही है। किसी भी गाव में ऐसी सस्था का जाना उस गाव के लिए खुश किस्मती है। मैं नामना करता हूँ कि यह सस्था उन्नति करे। मेरा सुचाव है कि इस सस्था को Red Cross Society से सपक बढ़ाना चाहिए।
—Khem Chand, Collector of Bikaner, 8 6 54 Campkalu

2 I certify that during my stay in village Kalu [I found that "Gram Seva Sangh" of this village is going a lot of Social work in this village & Especially the work which they are doing to help the poors is worthy of praise I have found the members always ready to work in all sorts of Matters I wish success to th's sangh in future
-V D Garg M B B S, C A S Class II 18 7 55

ये जो निम्नांकित हैं—(क) कस्बा कालू में राजस्थान सरकार की ओर से तालाबों की खुदवाई का काम चालू कराया गया, जिसमें हजारों मजदूर काम करते थे। आस पास के ग्राम गांवों में भी खुदवाई के काम सघ की निगरानी में चालू हुए। मजदूरों को पेमेंट देरी से मिलने के कारण बड़ी दिक्कत होती थी। किन्तु सघ ने इसको बड़े सुंदर ढंग से सुलझाया था। स्थानीय दुकानदारों से बात करके सघ वाले उन पर पर्ची बांट कर मजदूरों को दे दिया करते थे। मजदूरों का उससे अनाज वगैरह आवश्यक खाद्य सामग्री मिल जाती थी।

अकाल में गावों की बड़ी दुश्वाहाने लगी थी। सोसाइटी के सहयोग से सघ ने कई जगह अम्बियाई गोशालाएँ चम्प खोल, जिससे हजारों की तादाद में गावों की रक्षा हुई।

अच्छी नस्ल के साढ़ा को खार देकर उनकी रक्षा की गई जिससे नस्ल खराब होने से बची। आस पास के पचासों गांवों में ऊटों पर घूप में दीये करके सघ ने साढ़ों के लिए खार का प्रबंध किया था और गावों के लिए भी सहायता दी थी। इसके साथ अपाहिजों को कपड़े व अनाज वितरण किया गया था।

सोसाइटी से मिलें हुए पाउडर दूध को बड़ाहा में अपने हाथों से तैयार करके सुपवस्थित ढंग से मजदूरों और गरीबों के बच्चों, बुढ़ों एवं गम्बती स्त्रियों को पिलाया जाता था। साथ में उनकी विटामिन की गालियाँ दी जाती थी जिनसे गरीबों और मजदूरों का स्वास्थ्य बरबराव बना रहा।

गर्मी के मौसम में कई जगह पानी की किल्लत हो गई। जिसको मिटाने हेतु कई जगह कुएँ जोड़ाने के लिए रुपये दिये। उन गावों को सघ से बड़ी सहायता मिली।

इस प्रकार यह काम बहुत बड़ा काम था, जिसको सघ ने बड़ी ईमानदारी सरपरता एवं मुस्तदी के साथ सफल बनाया था। इन काम प्रणाली को देखकर सोसाइटी के आये हुए प्रतिनिधि श्री बहीनारायणजी सोदाणी ने सघ की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और दूरी पर आये हुए श्री रामेश्वरलालजी टाटिया मातादीनजी खेतान ने भी सघ के काम देखकर सराहना की। फिर सोसाइटी के हूड ऑफिस क्लकता से एक धन्यवाद-पत्र भेजा था।

कालू का इलाका पवित्र धी के लिए सदा से प्रसिद्ध है। लेकिन कई व्यापारी बाहर से बेजोटेबल धी लाकर चोरी से यहाँ के धी में मिश्रित कर देते थे और इस इलाके की बदनाम कर रहे थे। सघ ने निगरानी एवं जाँच पड़ताल से ऐसे व्यापार करने वाले गिरोह को पकड़ा। फिर बीकानेर से ४०० एस० पी० साहव एवं पुलिस इन्स्पेक्टर वगैरह का यहां पर बुलाये। इसकी पूछतछा जांच करवाई और मिलावट करने वाले सज्जनों पर मुकदमों का भय डाला। सघ के इस साहसी काम का देखकर पुलिस विभाग ने सघ की भूरि भूरि प्रशंसा की।

अपने गांव में मिडिल स्कूल से बढ़ाकर हाई स्कूल की शिक्षा के लिए दो वर्ष से प्रयत्न हो रहे थे। इन सब कोशिशों के लिए सघ को डिपेंडेंशन लेकर शिक्षा मंत्री तथा यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार तक मिलना पड़ा। इसके अलावा आस पास के गांवों में प्राइमरी स्कूल खुलवाने के लिए सघ ने पूरी काशिश की और कई गावों में प्राइमरी स्कूल चालू

करवाय। इन गावा में शिक्षा का प्रचार होने से ऊँची क्लासा की शिक्षा ग्रहण करने के लिए वहाँ के छात्र कालू में पढ़ने के लिए आये। अपना बाइंग हाऊस जो गढ़ अमरसिंह जी से मिल चुका था, बाहर के छात्रों को रहने के लिए मिला और विद्यालय की उन्नति हुई। अब कस्बा कालू शिक्षा-परीक्षा का एक अच्छा केन्द्र बन गया है।

सघ ने अपना सम्पन्न रडनॉस सोसायटी से स्थापित किया। रडनॉस नासायटी में पाउडर दूध मगवाकर बच्चा, बूढ़ों और गमवती औरता का अर्से तक पिलाया था।

अपाहिज एव पर्दानागिन स्त्रिया का सरकार से सहायता दिलाई एव भाग के लिए सहायता चालू रखने के लिए सघ न भारी कोशिश की। राजस्थान सरकार की जल बोर्ड योजनानुसार आस पास के बीमा गावा का दौरा करने सघ ने उन गावों की सूरी रिपोर्ट एव जानकारी जल बोर्ड के समक्ष पेश की। अनक गावों में काय चालू करने की मजूरी भी मिली थी।

स्थानाय कस्बे के मिडिल स्कूल में कक्षा 7 व कक्षा 8 में ड्राइंग (चित्रकारी) पढ़ाई जाती थी। सघ ने कोशिश करके कामस भी खुसवाई। इस काम के लिए एक डेपूटेशन शिक्षा अधिकारियों से मिला।

इन कार्यों के अलावा कालू में बहुत सछाटे माट काय भी सघ द्वारा हुए हैं। गाव से कोई भी आपसी सहायता मागता तो सघ यथाशक्ति सहायता देता और सदब धेन का तत्पर रहता था।

सघ की हस्तलिखित त्रमासिक पत्रिका "विक्रम" का निवालेना सदस्यों की साहित्यिक भावना का परिचामक था। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर यह दाहा लिखा जाता था—

विग्रह कूट विवाद का, हृषित चाह ह्रास।

सह सरोवर सघ का यह बीचि विक्रम ॥'

सघ के कामों के फलस्वरूप कुछ सम्मति-पत्र आये थे जो निम्नलिखित हैं—

1 आज मैं कालू अपने दीरे पर प्राग्राम के अनुसार आया और ग्राम सेवा सघ' संस्था का कुछ काम देखने का अवसर मिला। यह संस्था इस ग्राम के कुछ उत्साही नव-युवकों के हाथ में है और सावजनिक काय कर रही है। किसी भी गाव में ऐसी संस्था का होना उस गाव के लिए खुश किस्मती है। मैं कामना करता हूँ कि यह संस्था उन्नति कर। मेरा सुझाव है कि इस संस्था को Red Cross Society से संपर्क बढ़ाना चाहिए।

—Khem Chand, Collector of Bikaner, 8-6 54 Campkalu

2 I certify that during my stay in village Kalu [I found that 'Gram Seva Sangh' of this village is going a lot of Social work in this village & Especially the work which they are doing to help the poor is worthy of praise I have found the members always ready to work in all sorts of Matters I wish success to this sangh in future

—V D Garg M B B S, C A S Class II, 18 7 55

3 'ग्राम सेवा सघ' की नियमावली हमने देखी। जिससे यही प्रतीत होता है कि इस नियमावली का अनुकरण करने से हमारा समाज एक आदर्श समाज बन जायेगा। यह नवयुवकों का उत्साह साराहनीय है।

—H Sharma, D I G P, Bikaner, 23 9 54

—K Mehta, F R C S (Eng) P M O, Bikaner 23 9 54

4 मैंने आज बरवा कालू मे 'ग्राम सेवा सघ' के काय का निरीक्षण किया और उत्साहो सदस्यों से मिला और बातचीत की। मैंने बीकानेर डिस्ट्रिक्ट में इस तरह की संस्था यह पहली देखी है जिसमें सेवा करने का पूरा उत्साह बलन है। इस सघ में भविष्य के लिए जो योजना हम कस्बे की जनता के लिए बताई उससे मेरी पूरी रुचि है और मेरी हार्दिक इच्छा है कि उनकी योजना सफल हो।

—Hazari Lal S D M, North Bikaner 4 9 55

5 श्री ग्राम सेवा सघ, कालू बलरत्ता, 4 अक्टूबर 1953

कालू

प्रिय वधु

पिछले दिनों अप्रैल सन 1953 से अगस्त सन 1954 तक मागवाडी रिलीफ सोसायटी, कलकत्ता द्वारा संचालित बीकानेर डिवाजन में स्थित अकाल सेवा केन्द्रों में आपने जो सहयोग अपना बहुमूल्य परामर्श एवं समय दिया है उसके लिए मैं आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। सच तो यह है कि आप जैसे रचनात्मक कार्यकर्त्ता का सहयोग से ही साक्षात्कारी इतने बड़े व्यापक राहत काय का भार सफलता पूर्वक वहन कर सकी है।

साक्षात्कारी एक गुड रचनात्मक सेवा संस्था है, मुझे विश्वास है कि जब कभी भी हमें ज़रूरत पड़ेगी आपका इसी तरह हार्दिक सहयोग मिलेगा।

एक बार पुन मैं आपके कठोर परिश्रम एवं निस्वार्थ सक्रिय सहयोग के लिए सोसायटी की ओर से धन्यवाद देता हूँ।

आपका—रामेश्वर टाटिया प्रधान मंत्री, मा० रि० साक्षात्कारी

'ग्राम सेवा सघ कालू' के जो सदस्य रहे उनके नाम निम्नलिखित हैं।

श्री गिरधारी लाल भवर केवरी चंद डूढाणी मोहनलाल रामेश्वर लाल मोताराम श्रीराम भवर मांगीलाल बंद हुकमचंद महालचंद शबरीलाल मोहनलाल बोधरा भवरलाल रायरा (क) प्रेममुख बरनाणी भवरलाल कर्वा, अजु नराम पारीक बाबामल गिरधारा लाल कर्वा, रामचंद्र श्रीराम इंदरचंद्र राठी भवरलाल गोरीगंज लाल चम्पानाल कर्वा पृथ्वीराज, मित्रियालाल धंद गंगाविनाय बागडो हनुमानमल जगन्नाथ मल इड़ाणी गुरजाराण पारीक जेठमल नंदलाल राठी विशनागम लाल मोतीलाल नाटा नीलमचंद मेठिया मानमल लाड़ा जवरीलाल, धनराज नाहटा पूनमचंद, नामराज बंगीलाल माणकचंद नाहटा श्रीचंद भाणिकचंद, कुम्भकरण कोठारी, लूणकरण भासचंद बिम्बेचा हंसामचंद नाहटा, भवरलाल, हनुमानमल इसराज सिधा रिधकरण पुगलिया, माणकचंद गालछा सम्पतलाल धनराज मिधा, बहेयानाल, विजयलाल नीलता भवरलाल माड, बुधमन गिरधारीनाथ भासचंद नाहटा प्रताप मल नमचंद बागड जानाचंद दूगट नानुराम मन्बर्ना धनराज जागिट।

वि०स० 2012 (सन् 1955) ग्राम सेवा सघ कालू के पदाधिकारी निम्नलिखित थे, जिनका चित्र नीचे दिया गया है ।

संघ के पदाधिकारी

श्री जंवरीलाल नाइटा	अध्यक्ष
॥ नानूराम सक्कर्ता	उपाध्यक्ष एवं रहित्य संगीत मन्त्री
॥ नेमचन्द बोर्डे	प्रधान मन्त्री
॥ रिद्धकरण भूगलिया	उप-मन्त्री
॥ नन्दलाल राठी	प्रचार संगठन मन्त्री
॥ भीखमचन्द सेठिया	खेल मनोरंजन मन्त्री
॥ भवरलाल साह	कोषाध्यक्ष
॥ भीचन्द कोठारी	हिसाब परीक्षक
॥ शिवनारायण झड़ानी	औषधी इंचार्ज

अपने कार्यकाल में इस संस्था ने खुद की 'सर्व हितकारिणी सभा' (स्थापित वि०स० 1964) और रतन नगर का 'समाज सेवा मित्र मण्डल' (स्थापित सन् 1950) की तरह अनेक क्षेत्रों में सन् 1961 तक सच्ची लोक सेवा करने का श्रेय लिया है ।

कालू गांव की प्रगति युवा नागरिकों के पवित्र हृदय का प्रयास है । बहुत से युवक समा कर मेरी सोचना में नहीं आयें, किंतु ग्राम सेवा सघ कालू के सारे कार्य मैंने इसलिए लिखे हैं कि विद्यार्थी युवक इससे प्रेरणा लेकर कार्यकर्ता बनेंगे और कालू की कीर्ति को प्रकाशित करेंगे । जिज्ञासु शोधार्थी लेखक भी इस टिमटिमाते प्रकाश से प्रभावित होकर क्षेत्रीय इतिहास लेखन की ओर अग्रसर होंगे ।

संस्थाएं जन चेतना की द्योतक, जिस क्षेत्र में कार्यरत होती हैं वह इलाका अधिक सुख-सम्पन्न तथा सम्पन्न-सुसंस्कृत कहलाता है । ग्राम सेवा सघ कालू ने अपने क्षेत्र की परम्परागत रीति रिवाज सामाजिक नियमां एवं धार्मिक मयादाओं की व्यवस्था बनाये रखने के हित में अनवरत सुधारपूर्ण प्रयत्न किए । ग्राम सेवा सघ सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा राजनैतिक जागृति के लिए लूनकरनसर तहसील की प्रमुख एवं आदर्श संस्था रही । यद्यपि यह अचल सदैव अभाव ग्रस्त रहा मगर यहां के नवयुवकों की लग्नशील निष्ठा अदम्य उत्साह एवं सफल कार्यक्षमता के कारण अपने गाँव (कालू) तथा भास पास के चोतरफे क्षेत्र में आवास वृद्धि विकास कार्य और भव सुख-साधन यथाशक्य सुलभ करवाये गये । इसकी स्थापना समाज सेवा, शिक्षा प्रसार समाज सुधार एवं राजनीति की सामयिक प्रेरणा देने के पावन उद्देश्य में पूर्ण सफल रही । कालू में यह आदर्श संस्था प्रथम थी और निकट भविष्य में ऐसी कार्यशील संस्था स्थापित होने की कम सम्भावना

है। इससे उभरे हुए अनेक सभ्य नागरिक आज भी ग्राम सेवा सभ की याद दिलाते हैं। परन्तु सबधियों सम्बंधित गुट, सिंधी की अध्यक्षता सभ को मार गई। व्यथ विनडावाद फंलाकर रिकॉर्ड प्रभृति नष्ट किये और 'ग्राम सेवा सभ कालू' के काम सदा के लिए नेस्तनाबूद कर दिये।

ग्राम सेवा सभ कालू के प्रवासी सदस्यों ने देश के अनेक दूर अंचला में परिचित उदात्त एवं त्यागी महानुभावों के आपसी सम्पर्क सेवा योग से द्रव्य सग्रह करवाकर क्या विद्यालय भवन निर्माण की यथा समय लक्ष्य पूर्ति करवाई थी, जिन भुक्तानों से राशि एकत्रित हुई उनके नाम नीचे दिये जा रहे हैं—

कूचबिहार, मायाभागा जाटामारी मोहेश चूरू बड़ोखोलीमारी जमालदा, मोटपटी, टीलावाडी, जोरपावडी मैनागुडी, हेलपाकडी जगडाबादा मोलानोहाट, लाटागुडी, रांगामारी, हचलूहाट धीरपाडा फालाकाटा रायचौगा, सिलीगुरी बरेली खरस्याग चमरखची, धानरहाट रक्सोल पीलोभीत चोराचोरी, धूपगुडी गुलाबबाग करीमगंज धमनगर सिलचर, बदरपुर, गुसाईगाव कमरुयागुडी, विराटनगर (नेपाल) जोगबनी (बिहार) गडवनली कसबा अररियाकोट कटिहार आदि।

सदस्यों का मानिक अढमासिक एवं साप्ताहिक वेतन सहयोग—

सदस्यता गुल्क के सिवाय ग्राम सेवा सभ कालू के कतिपय सदस्य वष में एक बार अपना विशेष वेतन सहयोग भी दिया करते थे। वष के बारह महीनों में से कई सज्जन एक महीने का कई पंद्रह दिन का तथा कुछ लोग साप्ताह भर का अपना वेतन द्रव्य देने में स्वयं सकल्पित सहयोगी रहे। तत्कालीन वेतन से आय—

सहयोग राशि	सहयोगदाताओं के नाम	विशेष विवरण
201)	श्री मोहनलाल शंकर	मासिक
151)	, जवरीलाल नाहटा	अर्द्ध मासिक
151)	, भीमचंद सेठिया	,
151)	, गोपालचंद डूडानी	,
101)	सीताराम शंकर	,
101)	, हनुमानमल डूडानी	साप्ताहिक
101)	पृथ्वीराज सिंचिया लाल बंद	"
51)	, बुधमल नाहटा (बीभीता)	
51)	, इन्द्रचंद राठी	"
51)	, हुकमचंद बोयरा	सहयोग ,
51)	, मानिकचंद गोलछा	"
51)	, शोभाचंद दुग्ड	,
31)	धनराज नाहटा	
31)	, श्रीचंद कोठारी	,
25)	भवरलाल साह	,
25)	महालचंद नाहटा	,
25)	, पुनमचंद सोडा	

25)	श्री सुनवरन शवर	साप्ताहिक
21)	„ कहेयालाल करनाधी	5 दिन
11)	„ सुनवरन बिरमेचा	,
11)	„ नानूराम सस्कता	„
11)	„ धनराज जॉगीड	„
201)	„ बाबूलाल शवर	अ० मासिक
101)	„ रामेश्वरलाल शवर	,
25)	„ प्रतापमल नेमचद बाग्ड	साप्ताहिक
15)	„ भीखमचद S/o सतोषचद नाहटा	5 दिन
	„ भीखमचद बोड	}
	„ कहेयालाल पारीक	
	„ धनराज सम्पतलाल हमराज मिधी	

ग्राम सेवा सघ के कतिपय सेवा साधकों का परिचय—

(1) ग्राम सेवा सघ कालू के भू० पू० अध्यक्ष श्री जवरमल नाहटा का जन्म वि स 1982 भादवा सुदी 1 का है। इनके पिता का नाम श्री तालाचदजी नाहटा है। श्री जवरमल श्री धमडीराम नाहटा के उदात्त घराने के नौजवान नेता हैं। श्री नाहटा न स्थानीय स्कूल में प्राग्भिव शिक्षा समाप्त करके समाज सेवा की ओर ध्यान दिया। ये सीस बप से अपन गाव कालू में सामाजिक नेता के रूप में प्रेम कुशल व्यक्ति माने जाते हैं। श्री जवरमल के नेतृत्व से गाव और निकट क्षेत्र के लोग बड़े प्रभावित हैं। गाव में सगठन का कार्य करने में इन्हें बड़ा हासिल है। अतः गाव के विशेष कार्यों के समय इनका बाहर से बुलवा लिया जाता है।

श्री जवरमल नाहटा कालू के मुख्य नेता कहलाते हैं। इनकी अदृष्ट समाज हिन निष्ठा, आज्ञा सेवा भावना और सगठनात्मक प्रतिभा की अजेय दक्षता दक्षन परजन के योग्य है। श्री जन श्वेताम्बर तेरापची समा कालू ओमवाल श्री सघ पचायत कालू महिला मंडल एवं कल्याण मंडल आदि मस्याओं में श्री नाहटा सनिय भाग लेते हैं। श्री सरस्वती पुस्तकालय कालू और ग्राम विनाम पण्डित कालू के श्री नाहटा अध्यक्ष हैं और ग्राम सेवा सघ कालू का गम्भीर कार्यकर्ता तथा कार्यशील प्रौढ यन्त्रि रहा है। गाव के लोगों में सगठन एवं प्रीति स्थापन के लिए जवरमल का प्रयास अपूर्व है अथेस्वर है। यह शिक्षा स्वास्थ्य एवं धार्मिक कार्यों में भी कभी पीछे नहीं रहता है।

श्री नाहटा का यकितत्व इतना सरल है कि कोई अपरिचित गस्त चलता जादमी भी इससे प्रभावित होकर लाभ उठा लेता है। समाजवाद का हिमायती कहा जाय अथवा भावुक व्यक्ति, कि घर के नौकरादि तक भी सघ के वातावरण से मुक्त रहते हुए स्वतंत्र कार्यगल बन रहते हैं। गरीब और भलेमानस की सहायता करने में नाहटा कभी नूनम्व नहीं करता। कोई भी इस सीषाई से अनुचित फायदा नमाओ, पर नाहटा कभी बुरा नहीं मानता। अपनी नासनिक दिलाई के कारण टगा भी जाये तो विस्वास नष्ट नहीं कर सकता। नमी तो स्वयं रात दिन मफर में रहकर बठार परिश्रम करने वाला जीवन बनाया है।

मस्त-व्यस्त शरीर, गेहूँवा रंग रूप, ढीला शर्मीला सा शारीरिक ढाचा, सफेद-सुंदर घाती और उस पर लम्बी बाहों का बढिया कमीज तथा पैरों में चप्पलें धारण विये हुए हर समय पान चबाते हुए काय सलग रहने वाला एक सब व्यवहार कुशल व्यक्ति कालू गांव में जो 'नेता' नाम से पुकारा जाता है, वही श्री जवरीमल नाहटा है।

श्री जवरीमल वि० स० 1995 में भादवा वदी 7 को प्रथम प्रवात यात्रा पर दिनाजपुर जाकर कपड़े के दुकानदार श्री पूनमचंद, मिलापचंद के यहां काय करने लगा। मगर वहां से जल्दी ही इधर-उधर सुंदर काय की खाज में कई अगह रहा। शासकीय जीवन क्या तक कपड़ा काट सकता था? प्रगतिशील युवक तत्काल से स० 2012 (3 नवम्बर 1955) में ईस्ट इंडिया ट्रांसपोर्ट की स्थापना के साथ से लिया गया। वही श्री नाहटा अपनी प्रतिभा, परिश्रम तथा वित्तव्यय बुद्धि के कारण शीघ्र ही जनरल मैनेजर बन गये। बिहार, बंगाल, आसाम और नेपाल तक के विस्तृत काय को पदोन्नत करके अब सन् 1972 से दिल्ली रोजन में है। और रोजन क्या? सुदूर दक्षिण तक के ट्रांसपोर्टों में श्री जवरीमल नाहटा का ही निरीक्षण है। अप्रैल 1981 ई० में कम्पनी का रजत जयंती महोत्सव मनाया गया, तब कर्मचारियों में मात्र नाहटा का ही सम्मान हुआ है। इसके द्वारा करीब 200 आदमियों का ईस्ट इंडिया ट्रांसपोर्ट एजेंसी में सर्विस मुलभ करवाई गई है। गांव के करीब 50 व्यक्ति भी इसके सहयोग से ईस्ट इंडिया ट्रांसपोर्ट में सवारत हैं।

श्री जवरीमल के वनिष्ठ भ्राता श्री बनराज नाहटा बड़ा विनम्र मिलनसार तथा परिष्कृत विचारों का व्यक्ति रहा, जिसका पुत्र मदनलाल ईस्ट इंडिया ट्रांसपोर्ट कम्पनी में सेवाशील है। श्री जवरीमल के दो सड़के मनोज एव राजू कालेज तथा उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययन सलग हैं। श्री नाहटा की ज्येष्ठ आत्मजा सरोज, गांव के विद्यालय की मेधावी छात्रा रहा है।

श्री जवरीमल न ग्राम सेवा संघ का काय करीब 10 वर्ष तक चलाया। इस संस्था में अधिक काय करने से ग्राम विकास के अनेक काय सम्पन्न हुए। इन कार्यों के करने से अपनी ड्यूटी पर कम जा सके और व्यय भी करना पड़ता था। पर घर वाला न नेता को कुछ नहीं कहा। ई० सन् 1959 में नया विद्यालय के लिए द्रव्य संग्रह हेतु लेखक श्री मस्कुरी का बाहर भेजा तथा सुप्रबन्ध किया। तत्कालीन समय में करीब दस हजार रुपये एकत्रित हुए जिससे प्राथमिक विद्यालय के भवन की नींव लगी और तीन कमरे बनवाये गये।

श्री जवरीमल नाहटा वास्तव में सौम्य सज्जन तथा मिलनसार प्रवृत्ति वाला व्यक्ति है। धार्मिक भावना के कारण सात्विक विचारों का स्रोत परिवार में प्रवहमान है।¹ दयालुता और दानशीलता का निर्विकार भावना से इस परिवार ने सदा पालन

1 श्री जवरीमल नाहटा का घराना सदा से चरित्रवान एवं धार्मिक प्रवृत्ति का रहा है। इस घर के स्त्री पुरुष सम्य तथा सयानी वृत्ति के मान गये हैं। इस घराने के दो पुरुष साधुव्रत भी दीक्षित हुए और दो महिलाएँ भी साध्वी बना। एनी उन्नतिशील एवं धार्मिक आत्माओं के जन्म लेते रहने से कालू में यह घराना अवश्य गौरवाचित हुआ है।

किमा है। इसलिए गांव कालू में श्री जवरीमल नाहुटा और उसका परिवार आदर्श स्वरूप माननीय है। कालू में नव सृजन का पूर्वादि नविक, बौद्धिक और सामाजिक जाति के साथ ग्राम सेवा सघ द्वारा हुआ जिसका अधिक श्रेय श्री नाहुटा को है।

2 ग्राम सेवा सघ में अधिक परिश्रम से कार्य सफल करवाने वाला दूसरा व्यक्ति—

देश स्वतंत्र होने के बाद बहुत से लोग जनहित कार्यों में लगे। ग्राम सेवा सघ कालू से तहसील के समस्त गांवों में श्री गोपाल चन्द डूढाणी का सेवा काम बड़ा सराहनीय रहा है। श्री डूढाणी उच्च विचारों का व्यक्ति है और वह राम द्वेप तथा घोलाघड़ी रहित काम करने में सवप्रथम सतत रहता है।

वागा वाको धन हर, कोयल किसको देय।

इस जिह्वा के कारण, जग अपना कर लेय ॥

बाहे में बताया गया है—एक मीठी बोली के कारण से दुनिया अपनी हो जाती है। सब मीठी बोली वाले ने उपकार कार्यों से तो लोक का आकर्षित होना स्वाभाविक ही है।

डूढाणी का जन्म सन 1931 के 15 मार्च का है। सन 1944 में यह अपने गांव की प्राथमिक शाळा से दीक्षित होकर श्री इंगरगढ माध्यमिक स्कूल में पढ़ने गया। सन् 1950 में पादुल हाई स्कूल बीकानेर से मैट्रिक हाकर बगबासी कॉलेज कलकत्ता में दो वर्ष तब अध्ययन किया। सन् 1952 में कॉलेज छोड़ने के बाद अपने गांव कालू में वापिस आया और सेवा कार्यों में सक्रिय भाग लेने लगा। ग्राम सेवा सघ का मुख्य कार्यकर्ता बनकर उसके नियमों की मोहर अपनी आत्मा के चारों ओर लगा ली।

ग्राम हित के लिए गांव के प्रमुख लोगों की ओर से जितने भी कूजों उहोड़ों और स्कुनों के साथ एक अवकाश राहत के आयोजन सफल हुए, डूढाणी उन सब में दिल खोलकर सम्मिलित हुआ। इन कार्यों के साथ में उसने घरवालों और बाहर वालों से मोरचा भी लेता पड़ा। सन् 1953 की अवकाश परिस्थिति के मौके इसके नष्टे सफेद हाथों से प्राणिया की रक्षा में दो लाख करीब रुपया गांव के अर्थ सज्जना के सहयोग में सामान्यगया गया। इसके सज्जवल एवं उत्साहजनक कार्यों के कारण ही उक्त दुर्भिक्ष के समय मारवाडी रिलीफ सोसाइटी कलकत्ता के मुख्य कार्यकर्ताओं ने राजस्थान में सेवा काम के लिए कालू को अपनी बताया था। क्योंकि डूढाणी की पार्टी ने तहसील में वे गांवों में धूम धूमकर सोमायटी की तरफ से आने जल की समस्या को सुलझाया। श्री रामेश्वर नान जी टाटिया और मानाप्रसाद जी खेतान ने डूढाणी के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। श्री वट्टीप्रसाद जी माढ़ानी ने भी डूढाणी को अपना पहला विश्वास प्राप्त एक कार्यकर्ता बताया था।

आज भी अपने गांव कालू के कई समस्या स्थान-स्थान बने हुए श्री डूढाणी की वही महनत का चमत्कार बना रहे हैं। यह सदा से धूप धूल और मिट्टी में गड़ा रह कर मर्यादा गरीबों के काम करवाने का शीर्षक है। दूर दर्शियों लोगों ने जेट के महीनों में इसका निरंतर राहत काम कराते हुए कई बार देखा है।

स्वाभाविकता, सरलता एवं सेवावृत्ति से डूढ़ाणी का व्यक्तित्व ओत प्रोत है। भोजन रहकर काय करना ही इसकी मुख्य आदत है। इसी कारण गांव के बहुत से अछूरे काय पूरे हो पाये हैं। कहने की अपेक्षा करने की ताकत रखकर ही डूढ़ाणी ने अनगणन गुन्दर भवा तैयार करवा दिए हैं।

गोरा गोल मटोल, हंसमुख एवं विचारशील चेहरा हर किसी का आकर्षित करता है। कासू के सावजनिक कार्यों की विशेष चिंता रखने वाली मे भाईजी श्री गिरधारी लाल जी शंकर के बाद गांव में श्री गापाल चंद डूढ़ाणी ही हैं। सन 1965 में सरपंच के कायकाल का समय समाप्त हुआ और डूढ़ाणी ने पाकिस्तान या सिलीगुड़ी जाने का निश्चय किया। इस समय डूढ़ाणी पर एक घरेलू भारी आपत्ति भी आ गई थी, इसने उदास होकर प्रवास जाने की पूरी साध ली। पर गांव की जनता ने इसको विदाई नहीं दी और आम्रहृत्पूजक भविष्य के लिए फिर राक लिया। डूढ़ाणी पुनः अपने सेवा पद (सरपंच) पर आ गया। वह कासू गांव के ही नहीं, तहसील भर के कार्यों को पूरा कराने के लिए गंभीर बन गया और दृढ़ संकल्प होकर सावजनिक एवं रचनात्मक काय करवाने लगा।

डूढ़ाणी अफमरो से निर्भीक मिलन और समन्वय उनसे गांवों के काय करवा लेने में बड़ा कुशल है। यह हिसाब किताब का पक्का खला पट्टी का धनी तथा नियम का पूर्ण पाबंद है। तबन्नीफा और अडचना की ताकतई परवाह भी नहीं करता।

वर्तमान समय के हमारे नेता लोग हिसाब किताब में प्रायः पिछड़े हुए हैं। हिसाब मागने के समय वे क्षिप्तते से दीप्त पड़ते हैं। आज के युग में स्पष्ट हिसाब के साथ श्री गापालचंद डूढ़ाणी का आम्रहृत्पूजक रहता है कि "जनता के सावजनिक धन में से नये पैसे का उपयोग भी उपयुक्त आवश्यकतानुसार सोच समझकर तथा अच्छी तरह लिख पढ़कर करना चाहिए।"

श्री डूढ़ाणी सतत सनातन राष्ट्र प्रेमी व प्रजातान्त्रिक नागरिकता का विकास कर्ता विमद व्यक्ति है। यह अपने शायसियों को नतिक एवं भौतिक दोनों प्रकार के सुख पहुँचाने का हर समय यागदान करता रहता है। इसके समय में गांव के सारे स्कूल भवन, अस्पताल भवन, पुस्तकालय भवन, जल प्रदाय भवन, सड़क निर्माण, कालू ग्राम सहकारी समिति लि० दुग्ध सहकारी समिति भवन पंचायत भवन विद्यामालय अनेक निवास गृह आदि लोक हितकारी बनी बहुतेरी इमारतें यह बतला रही हैं कि "बातों से नहीं बार्मों से हाती सबकी पहचान।" डूढ़ाणी ने बहुत स मुधारो और निर्माण कार्यों के साथ राजकीय कमचारियों को भी विस्मरण नहीं किया। उनके तब्रादलो पर पाटिया, सम्मान, अच्छी सेवाओं के उपलक्ष्य में पुरस्कार अभिनंदन पत्र वस्तुएँ द्रव्य आदि दे देकर उनके उत्साह में वृद्धि की है। इसने अपनी भरपूर काशिश से इच्छुक कमचारियों को मकान बनाकर दुर्गा कालोनी बसाई है। श्री डूढ़ाणी को अपने गांव के प्राचीन एवं ऐतिहासिक स्थानों गढ़ मंदिरों और कुएँ तालाबों की रक्षा का भी पूर्ण ध्यान रहता है। लाखों रुपये खर्च करके समय समय पर इसके द्वारा इन स्थानों की मरम्मत करवाई गई है। जिससे गांव की गरिमा अभी तक यथावत बनी हुई है। डूढ़ाणी ने इन कार्यों में कभी दश और लाभ की परवाह नहीं की।

मेरे चालीस वर्षों के अध्यापन कायकाल में निकले हुए बहुत से सवाभावी शिष्य सितारे नजर आते हैं। इन सितारा की जगमगाहट में गोपालचंद डूढ़ाणी शशि की भाँति चमकता हुआ श्रेष्ठ सितारा है और ग्राम सेवा सघ में मम सहयोगी कार्यकर्ता रहा हुआ है।

कभी कभी गांव के किसी कार्य को हाथ में लेते समय राजनितिक लागा का भयकर विरोध भी हुआ है दोषी लोगों में बड़ा चढ़ाकर अपनी करतूतों पर की हैं। फिर भी श्री गोपालचंद ने अपने व्यवहार में सौज यता और शालीनता ही बरता है। वह चरित्र हीन लोगों से आदर्य शिक्षा के जरिये निपटता नजर आया है। आज की दुनिया कहती है—राजनीति में घूट फरेब, धोखा तथा दगाबाजी चलती है, किंतु पच्चीस साल के सद्भव्यवहार को देखकर गांव कालू के नागरिक कहते हैं कि— हमारा सरपंच श्री गोपालचंद डूढ़ाणी छल कपट ईर्ष्याभिमान से कतई अलग है। गांव के अनेक सुंदर कार्य उसके सचारित्र्य सम्पन्न हुए हैं। उसमें सजन चेतना की समयता और गरिमा है। गांव में इसके जन मामाय उपकारीय प्रयत्न सम्य जनोचित जीवन के उजागर प्रमाण हैं।

तहसील लूनकरनसर के बड़े कस्ब कालू में दिनांक 5 2 78 ई० को ग्राम पंचायत का हर्षोमर्ग पूरा चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। इसमें तहसील के उदभट कार्यकर्ता श्री गोपालचंद डूढ़ाणी अपने विमल आत्मविश्वास के साथ सरपंच पद के लिए लड़ा हुआ। इसका विपक्षी प्रत्यायी श्री हजारीराम ब्राह्मण बना। चुनाव में इधर उधर से जरूर कुछ जातीय आतिथी उत्पन्न हुई और राम परशुराम सवाद की भाँति प्रचार पनपने लगा। परंतु मतगणना पूरी हुई, तब डूढ़ाणी की विजय का नाम सुनकर सब लोग प्रफुल्लित हो उठे तथा आपस में गले मिलने लगे।

श्री डूढ़ाणी लग्नशील, परिश्रमी एवं निस्वार्थ जनसेवक हैं, अतएव नागरिक बड़ी खुशी के साथ अपने सरपंच की मंगल कामना करते हैं।

सघ सेवा स्तम्भ

श्री गिरधारीलाल अवर (जन्म म० 1970, भादवा बदी 2—निर्वाण स० 2029) मिंगसर बदी 3 कालू के सावजनिक जीवन में अग्रणी सज्जन थे। गांव का उनकी भारी चाह थी। पर उनके चले जाने से निस्वार्थ सेवा सभाल का क्षेत्र गूँथ हो गया। उनका जीवन परम पवित्र एवं सारल्य सलग्न था। वे अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी कोने की नहीं भाँक पाय। जब तक जीये, साफ सेवा मसलाव की वेदी पर समर्पित हाकर जीये। जब गय तब गांव के बहुत से कार्य रास्त लगाकर गय। वे गांव में भाईजी नाम से जान जात थे। वे ग्राम सेवा सघ के दंड स्तम्भ थे।

श्री भाईजी बहुत माफ-सुपर व्यक्तित्व के धनी थे। वे कालू बीकानेर महल में ही नहीं दूर दूर भ्रम के भाईजा थे। उनमें अथाह ममता असीम वात्सल्य और बहुर दया भावना की लहर समाई रहती थी। वे दूसरों के कष्ट निवारण की असाधारण शक्ति संपन्न सज्जन थे। जीवन पयत ग्राम मुखिया और कुछ समय तक सरपंच भी रहे किंतु निष्कलक निष्पक्ष, माधारण जन में लेकर उन्हें, महाविशिष्ट जन तक प्यार करत थे। अच्छे अच्छे विद्वान एवं आना अफसर अधिवारी उनकी सौनवक मूर्ति देखकर ही गद्गद् हो जाया करते थे।

में जानता हूँ वे पुसरा जवान, छड़छड़ोले तन पूरे बंद, चेहरे पर एक साव-जनिक वायकर्ता के रोवदाब रखत थे। हर समय हंसमुख और मिलनसार मुँह में रहा करते थे। ई० सन 1939 के पास कालेज छोड़कर आये और गांव के सावजनिक कार्यों में भाग लेने लगे। कोई भी प्रकार का चंदा जाता, उनको अधिक देने का प्रयत्न करने। उनको अपने घर की भीतरी बातें लेकर बड़े बड़ों के पुराने स्वभाव का सुन करके चंदा दिलाया करते थे। गांव के हर एक सावजनिक काम में पूरा भाग लेते। लेकिन विशेष बात शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए उनका प्रयास कालू जैसे गांव में बड़ा बारगर सिद्ध हुआ है। वैसे पानी की योजना उनकी दो युग से गांव का ही नहीं पूरे इलाके की असुविधा में सुख लाभ प्रदायक प्रस्थापित हुई है।

(2) सनातन धर्म सभा—इस संस्था की स्थापना सन् 1940 में धर्मशास्त्र भवन में धर्म व समाज सुधार हेतु की गई थी। इसमें सघुस्व एक वाचनालय भी चलता था जिसमें सस्कृतम् सिद्धांत, शारदा, कल्याण आदि पत्र पत्रिकाएँ आया करती थी। यह संस्था अपने समय में हिंदी सस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार में श्रेयार्थी बनी रही। काशीस्थ सस्कृत की प्रथमा मध्यमा का केन्द्र एवं हिंदी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाएँ दिलवाने का कार्य भी इसके द्वारा होता था। मोहनराम पटवारी रामकिसन खडेलवाल, सोहनलाल सारस्वत, नानूराम आदि लोगों ने इसी संस्था के द्वारा सस्कृत प्रथमा परीक्षा पास की है। व गणेशरामजी व श्री दुर्गादत्त सारस्वत रामनारायणजी दानधरजी शंकर, प० चैतन्यजी पारीक, रावतमनजी कर्वा पुष्करदत्तजी मास्टर आदि अनेक महानुभाव इसके सदस्य रहे हैं। यह ई० सन 1950 तक कामरत रही। फिर सुप्त प्राय हो गई। सन 1945 में इसके अध्यक्ष श्री दुर्गादत्तजी सारस्वत तथा इन पणितयों का लेखक सचिव रहा।

(3) ग्राम विकास परिषद् कालू—ग्राम विकास परिषद् की स्थापना गांव की सावजनिक समस्याओं का समाधान करने हेतु माघ सन् 1973 में हुई थी। इसका मूल सङ्घेय शासकिक, साहित्यिक न होकर राजनतिक पत्र व्यवहार कायदाही सबंधी रहा है। गांव के विकास एवं सुधार के लिए हुक्म और स्वीकृति हेतु सरकारी कार्यालया में अनेक पत्र पत्रोत्तर दिये जाते हैं। होनहार व्यक्तियों में रचनात्मक कार्यों के लिए सेवा भाव जगाना तथा संस्था के साधन सग्रह करके काम करना इसका कर्तव्य रहा है। वर्तमान में इसके अध्यक्ष श्री जवरीलाल नाहटा और सत्री रामप्रसाद पारीक हैं। संस्था मौनावस्था में गतिमान है।

(4) अखंड रामचरितमानस पाठ कायकारी मंडल—जैसे तो इस मंडल में अनेक सघुस्व सम्मिलित होते हैं, मगर श्री रामप्रसाद, जगदीश प्रसाद पारीक, नंदलाल सोहन लाल सारस्वत (रावासर) पुनमचंद सेवक डालचंद डूडानी मूलचंद-पुनमचंद दर्जी आदि मुख्य हैं और कुछ बालिकाएँ मुख्य रूप से भाग लेती हैं। दो चार बालक भी यथा समय उपस्थित रहकर प्राय 24 घंटे में इसे सफल बनाते हैं। इनकी स्वर लहरी व निष्ठा लग्न, श्रद्धा स्वयंभक्ति से आप्लावित सबत्र गांव के क्षेत्र में गुंजरित होती है। श्री चिरजीलाल सोनी हिंदी वरिष्ठाध्यापक श्री रामसजीवन मिश्रा, सोहनलाल पारीक और श्री छोटूलाल उपाध्याय (पोस्ट मास्टर) का इसमें पूरा योगदान रहता है। मंडल के लोग 101 अखंड पाठ का मकल्प लिए हुए प्रगति विमग्न रहते हैं।

चतुर्थ प्रकरण

विविधाभास-प्रकाश

प्राचीनकाल की सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति

तीजो सुख नीर निवामा—प्राचीन सुख सुविधाओं में यहाँ पानी की बहुतायत वाला ग्राम मनुष्य जीवन का उच्चतम सुख माना जाता था¹। परन्तु पानी के अभाव में भंडाण का क्षेत्र सदा से भयंकर अग्रणी रहा², जो अब कुछ विस्मृत अवस्था में दल्ला जान लगा है। एक दशक पहले यहाँ हर समय घी, दूध से अधिक पानी न मिलन का खटका ही नहीं, भय बना रहता था। यहाँ के लोग 20 मील तक से राजाना पानी लाया करते थे। भंडाण के गाँवों में कुएँ नहीं खारे पानी की कुइयें³ हुआ करती थी। इनका पानी पशु पीते रहते, मगर गर्मियों में अधिक पीकर विराइज जाया करते थे। बेचारे मर भी जाते। मानिक देख लेता तब उस आफरा चढे पडे पशु को दवा के रूप में थोड़ा कुड का मीठा पानी पिला कर जीवा लेते। नहीं तो वह जानवर तुरंत मर जाता। इस तरह इन गाँवों में बहुत से पशु मरते रहते थे और कूँआ वाले गाँवों में भी पानी एक दुलभ पदार्थ माना जाया करता था।

कुछ मीठे पानी के कुएँ कुछ खारे पानी के और अधिक कुएँ यहाँ कम पानी देने वाले हुआ करते थे। छोटे गाँवों में पानी के लिए प्रायः 'स्वारी' का रिवाज अधिक प्रचलित था। घर सम्पत्ति के हिसाब से (अनुसार) महीन या पंद्रह दिनों से प्रत्येक गृहस्थ की स्वारी निम्नलिखित पड़ती थी। इसलिए हरेक घर में अपना-अपना लाव-कौश के माज (सामान) हुआ करते थे। स्वारी वाले घर के आदमी अपने ऊट या बल्ला की जाड़ी को कुएँ जोतकर एक राज सारे गाँव को पानी पूरते थे। स्वारी बड़ी लाकड़े चलती था। हर घर वाले की अपनी स्वारी अगुलियों पर गिन कर याद रखनी पड़ती और नियत समय पर सारे गाँव को पानी पिलाने का सुप्रबंध करना पड़ता था। तत्समय में कालू बड़ी अनसरया वाला और बहुतेरे कूँआ वाला गाँव होने से मुलिये लाग मिलकर एक माली (पानी के ठेकेदार) को पानी की जुम्मेवारी दे दिया करते थे। वह माली गाँव के तमाम घरों से पानी के माह्वारी पस (पीट) पळीखों के हिसाब से बसूल कर लिया करता था। पानी की कमी हो जान पर गाँव से उसको ओल्ला (उपालम्भ) या दंड भी मिलता था। इस समय कूएँ से उस कीणी (धूल) भी निकालनी पड़ती थी। एक घर में पळीखे के सिवाय, एक गाँव या भस का एक आगा (निश्चित पीट का नग) माना जाता था। पाटे, सूरज के साड तथा ऊट की पीट उन दिनों माफ की जाया करती थी। गड की पीट लेने का कोई प्रश्न ही नहीं रहता।⁴ गाँव के काबूवा (सरकारी

1 उस हीरा, जल जोहरा जल योतियन की माल।

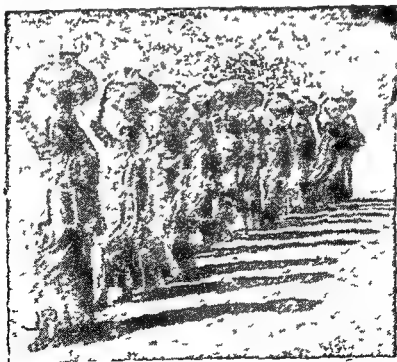
निगाह उठाकर देखिये, जल विन जग कगास ॥

2 पीवण पाणी नीर है, हावण पाणी नीर। धन धामण उ दूमरा, बाहू रे नद कितार ॥

3 गाडवाळो तपसी जको, राजाजी रा घाडा पायमी।⁵ (बीबानरी कहावत)

या सावजनिक काम देने वाली) का भी पीह की सारी छूट रहती थी। राज्य कर्मचारी तथा मंदिर के पुजारी भी पीह से वंचित रहे जाते थे। चलते रास्त वाले यात्रिया का कालूम एक रोज (बैठक बगरह पशु सहित) मुफ्त पानी पिलाया जाता था। ये सब घाने कुए की वही मे ठेका देने समय गाव की ओर से लिख दी जाया करती थी। वही जोहडो का पानी चुक जाने पर (प्राय माह फाल्गुन मे) माली के दस्तखत अगूठे स नियमित डाक (बोली) द्वारा ठेकेदार को बोली का पावद रखती थी। यह वही श्री मलाराम या बोडाराम पारोक की दुकान भ सौरी जाया करती थी। (लेखक की स्मृति में)।

कालूम मे चार कूए सदीने राजा सुगड के समय मे निर्मित हुए बताये जाते हैं। बाद में इन्हें लोग घीरे घीरे अपने बनाते गये। मध्यकाल के बाद शक्तिशाली जाटों ने इन कूओं पर अपना अधिकार कर लिया। उनमधी सनाब्दी से कालूम गोदारो, जाटुओं जाणियो और भाटुआ के नाम ये अपन चार कूए हा गए थे। जाटुआ के साथ उनके कूए पर गाव 'वामी' की जनता सम्मिलित रूप मे पानी पीने के राजकीय इस्तिमारा रखती थी। पानी पीने की इनकी खेला पढी हुआ करती थी। विवाह, मृत्यु भोज में भी 'वासी' वाले जाटुआ के साथ रहने व। स्वामीजी का कूआ (1975-76) उनका अपना निजु था। पानी छारा था इसलिए व (बरागा) जाटों के कूओ से ही



पनिहारनिर्मा की टोली

- 1 राजा सगर के सति हजार पुत्र जा राजाना एक नया कूआ खाद कर जल पीते थे।

पानी पीते थे । आठसर जैसे आस पास के गांव भी जनाभाव के समय कालू से ही पानी ले जाया करते थे ।¹ कालू के सब कूए एव मालिक के ठेके रहते थे, जो कूओं सबंधी कार्यों में बड़ा माहिर हुआ करता था । अज्ञान व्यक्ति के लिए कूआ भूवा (मोत) बड़ा मुश्किल काय माना जाता था । कहावत है—“कम हीण रो टावर कूव खेले ।” कोम हाथ से छूट जाने पर साव टूट जाने पर और बारिखे की आवाज से पहले कीलिये के किसी निवाल देने पर पास खड़े आदमी भी चोट फेट से मर जाया करते थे । किंतु सुंदर पनिहारियों की नयनाभिराम कतार छटाएँ देखते ही बनती थी ।

कूओं पर बारिखे बड़ी सुरीली आवाज से बिली खोलने का सकेत (आधो रे !) देते रहते । उसकी अच्छी तरह सुनकर ही खामी बिली खलता था । रात के समय नींद भगाने के लिए 'सेवा' मीठे गीत भी गाता और खामिया भी वैसे ही अपने बला की या ऊटो की जोड़ी को सलकारता चरता रहता था । कालू के कूए मदा मालीपे से झलते और चार पहर तक निरंतर बड़े ताकड़े से चलते थे । आस पास के गांवों में कहीं बारी, कहीं स्यारा और कहीं गावा में बारा ही दे लिया जाता था । ओढ़ पड़ जाने पर आठ पहर तक ऊटा एव बल्ला की तपी टूटती गति से कूए चलते थे । गर्मी के दिनों में अनेक बाले अपने इन जानवरों को तासे से पानी पिंसाते, तो भी वे प्राम प्यासे ही रह जाते । गांव का कोई भी व्यक्ति किसी एक कूए पर पौ दिल्वाता, तब सारे प्राणी मुपत का पानी पीते । पौ अठपोरी या चौपोरी लगाई जाती थी, जो किसी के मा बाप के मर जाने पर या पुण्य स्वरूप प्रथा प्रचलित थी । इसमें दोषड चौखड व पखालें बंद रहती ।

कूओं के नाम अग प्रत्यग एव नाम आने वाली वस्तुएँ—दरडो=लडहर कूआ । सारियो लाड या बेरो=सारे पानी का कूआ । बेरो=छोटा कूआ । नाळ=पुगने कूए का केवल लड ।

बोडियो=आवाज बापिम न देने वाला । सरबो=आवाज (नामने) देने वाला । बोडियो=अधूरा लडहर । पावटा=परम सुंदर कूआ । नीमचक=तल लगाया हुआ लकड़ी का घेरा, जिस पर कूए का चेजा चालू होता है । डयाड=तले पानी से कटकर हाने वाली दिवागे की दरार । चाठ=कूए में से आया पानी, लेने की जगह । घडोई=पानी भरने का छोटा हीज । कोठा=पशुओं के लिए पानी संग्रह का बड़ा हीज । खेळी=पशुओं के पीने की लम्बी जल नाली । भरवे=गुम्बज । दरडो=चौक एव देह । घूड=छत स्वरूप पक्के पत्थर की बड़ी सिला । खूडिया=घूड से समुपत घों खूटे । भूण=लाव चलने का चक्र । गुडी=भण की खूटियाँ । लाव=बरी, चमड़े का रम्सा । बास या चडस=चमड़े का डोल । बिल्ली=लोहे के बड़े काटों का गुच्छा जो नाव के कूए में गिर जाने पर उससे निवाला जाती है । कीणी=कूए से निवाली जाने वाली मिट्टी । पास=कूए के अंदर जाने के लिए रस्से का फंदा । पोछडी=लाव का अंतिम छोर । पजाळी=बलों को गलजूट (समुपत) करने के लिए लकड़ी की गाली ।

1 अक्टूबर १९७९ में आठसर को कालू से ही पानी की पाइप लाइन दी गई है । गांव गारवदेशर और गुसाइमर (त० थी डूगरगढ) को ट्रकरो द्वारा कालू का पानी जाता था । पहले समय समय पर लूनवरमसर में भी कालू से पानी जाया करता था और सूरतगढ से लेकर बीकानेर तक की सड़क बनी उस समय कालू से काफी पानी दिया गया था ।

बुरखेडा = कोस रूप कोस की लकड़ी । पाजर = लोह का चक्र जो कोस को गोल बनाता है । इसे बणा भी कहते हैं । गाळिय = पोछड़ी और गाळिये किली से समुक्त करके ऊटो या बला को चलाते हैं । ढाचिया = ऊटो पर ढाँचिये लगा कर कूए जोतते हैं । किली = एक साफ चिकणी लकड़ी, जो ऊटों या बला को लावसे जोड़ती है । सेबो = वारियो । लामी कीलियो । बारा लेना = अंदर से आये पानी को कास से उडेल लेना । पळीढो = घर का जलाशय । तास = दो रोज क प्यासे । झलना जपना = जुतना । ताकड = द्रुतगति । टिब = भरा पूरा । माळीपा = ठेका । बारा देना = अपने लिए कूआ लेकर अलग जन निकालना । सणी टूटती बग = तेजी से चल । पो = प्याऊ । आड = पानी की कमी पड जाना । गोधीज = प्यासे मरने लग जाय, सोरण = माटी रस्सी या लाव, चौखड = ऊट पर (लकड़ी के ढाँचे में) लदे चार घडे । आगा = एक नग लगान । भीठ = पानी प्राप्त करने हेतु भयकर जन भीड । अळीणो पाणी = बद कूए का पुराना पानी । गायो नीर = गम पानी । मोरणो लाव बलाने का स्थान । स्हारण = लाव सम्बी जाने का नया हुआ स्थान । होरा या दूधी = सारण का अंतिम तट । महरा या सिका = पानी भरने वाले व्यक्ति । कूआ अंदर दुडना = गिर पडना । घोबा = पानी की अजली पेना । इडूणी = औरतें अपने घडे के भीचे कपडे की सुंदर मेढी देवर सिर पर पानी साया करती हैं उसे इडूणी कहते हैं । जलवा पूजन = प्रसूता कूए जाकर जल पूजन करती हैं वही जलवा पूजन कहलाता है ।

कूबो दरसन ज्ञान याग भक्ति है वारी ।
 सारय-नाळ नभीर निराश्वर, सेश्वर भारी ॥
 मीमासा भर कोस, सद, प्रात जळ बाट ।
 याम यथाय नाव भेदभाव जहें न खाट ॥
 वेदा त रीत मर्याद है, मुख्य आचार्य वारिया ।
 पोसाळ पनघट सरब छात्र, शिक्षा खोखी स्मारिया ॥
 नाळ काय सिर भूण खूडिया भुज दो भारी ।
 पूठी पेट सपीठ, तीमचक नाडा सारी ॥
 सरत मरत खोव सदाव्रत सरस पावण ।
 भीडा वाज भीठ नीर परसाद लावण ॥
 चाठ घडोई वतण भाडा, कोस मुसायब केवळी ।
 नर सेवक देव कूबारा, धुक विरडो देवळी ॥ (रस देव)

जानवर—सूनकरनसर तहसील क्षेत्र में पहले जानवर पालने का घंघा विशेष रूप से सवत्र व्यापक था । गावों में गायों के साथ, भत्तों के छेड, भेड वकरिया के अंबड (रेवड) और स्थाई-ऊटा के टाले हुआ करते थे । एकूक किसान के घर अलग अलग बगैले उछरते थे । हर घर के पशु अपने मालिक की बिरादरी के चिह्न स्वरूप खग (दाग) से पहचाने जाते थे । खग प्रत्येक पशु की पीठ या पीडे तथा ऊँटों के कनपडे पर लगाए जाते थे ।¹ भेडों के गग के निशान लगाये जाते और साड अथवा अमर किए

1 इस क्षेत्र में कालिका जी की त्रिमूल का खग की सर्वाधिक मायता है । जाटा के जेई का, माइयो के चिराग (मयाल अस्त्र) का, खाती तथा सुहारी के सडासी का और वेंरागियों के कूबडी या चाखडी के खग थे जो अपने पशुओं के लगाए जाते । लोग ने अब अपने नामों के खग भी बना लिए हैं ।

हुए मीढ़े-धकरा के बानो में ताम्बे या साहे की बानियाँ (छल्ले) डाल दी जाया करती थी। लहू भर्सी (शोटो) के नाक में नाथ, खा जाने वाले ऊटो के नाक में नवेल या सेवा तथा मारने वाले साड और भसा के गले में छीगरा (बड़ा मोटा लट्ठ) लटका दिया करते थे। अमार-बेमर पशुओं को, हेदकी लोग डाम (दाग) देकर ठीक कर लिया करते थे। वे घिराइजे हुए पशुओं को बान चीर कर बचा लेते थे।

राज्य के गोधा (साडों) के पीछे पर नम्बर के खग लगाये जाते और बालू में सूय साड के पीछे पर माताजी की त्रिसूल का दाग लगाया जाता था। इस तरह राज्य मन्थनी पर इस रियासत में लफज (न) का दाग लगाया जाता था।¹ और बछड़ों के आक के दूध से खग लगाते थे।

राज्य के ऊँटा को प्रतिदिन बारह सेर चारा हर ऊँट के वास्ते मजूर या और सफर में एक सेर गुड एवं आधा सेर फिटकड़ी भी हर ऊँट को दी जाती थी। मगर हाथिया को एक जसी सुराव नहीं मिलती, उनके बंद के मुताबिक दी जाती थी। एक भीरा हाथी (टिक्काई हाथी) को आटा बीस सेर, खाड एक सेर, घी तीन पाव और घास पाच मन दैनिक खाना मिलता था। बाकी अ य को आटा पंद्रह सेर एवं घास चार मन रोजाना का मिला जाया करता था। घाड़े घोड़ियों को रातब तथा दाना छ सेर चौकड़ चार सेर, जीबिरिया दो सेर, तुम्भू अलसी एक सेर, तेन अलसी आधा सेर और नमक आधा पाव रोजाना मिलता था। वि०स० 1945 में राज्य के पाँच घाड़े विलायती व अंग्रेजी बाबूगड एवं अ य स्थानों से नस्ल बनाने हेतु मगवाये गए थे। इन सबके लिए गुमास्ता आदि कर्मचारी तनात किये हुए थे। उक्त समय में सब के साथ नूनकरनसर तहसील में भी छोड़े घोड़ियों का आला इ तजाम होता था।

गावों में पशु चराने की बारी—पुराने समय में कूप की स्यारी की भाँति पशु चराने की भी बारी हुआ करती थी। बारी के दिन हरेक घर से आदमी को पशुओं के बाग का ग्वाला (चरवाहा) बनना पड़ता था। बालू में दो गावों की एक बारी और एक भस की अलग बारी मानी जाती थी। बारी के पशु समूह में जितने भी अधिक पशु होते, बारी उतनी बिलब से लाया करती थी। स्यारी बारी के समस्त काय शारीरिक ढंग से चलते रहते, जो ग्रामीण जीवन को अप-ग्रह में सदैव मुक्त रखते थे। बारी निकालने वाले लोग परा में झाडोले (चमड़े के खोल) पहन कर मध्य रात्रि के समय पशुओं के बाग चरा लाया करते थे। ये पशुओं के जानकार एवं सौदागर भी होते और पशुओं के लेन देन में मध्या समय को शुभ मानते थे।

जमीन बोहरा और ब्याज—यहाँ किसान लाग अच्छी जमीन वाले खेत बीजकर अन उपजाते आए हैं, जो उनके अपन पृथक् पृथक् खेतों में पदा होता है। पुराने समय में ये खेत रकम (लगान) देते रहने के समझौते से राज्य सरकार या पट्टेदारों द्वारा निश्चित दरों में लिये हुए रहते थे। उक्त समय में खेतों की मालगुजारी, घटाई, कूता तथा नन्द बीघेड़ी के रूप में ली जाया करती थी। यह उपज अथवा भूमि की भाँति (विम्म) पर निभर किया करती थी। बज्र जमीन की रकम आधी या तय गुदा मामूली लगान के रूप में ली जाया करती थी। किसान साग अपने पशु चराने तथा घास काटन

के लिए बजड खेत रखते थे।¹ टाड ने अपने धन्य में पुस्तो, मल्वा तथा घत्तोई इत्यादि नामों का भूमि कर के सम्बन्ध में वर्णन किया है।² मंदिर डोहली व मुआफी वाले किसान, खेत की रकम देने से बर्चित रहा करते थे। ऐसे लोगों के पास राज्य के लिखित आदेश व पट्टे एवं ताअपन खुदा खेत हुआ करते थे। किंतु हज (ऊँटादि) रखने वाले पूरते आदमी अल्प सरया में ही मिलते थे। अतः लोग तो उनके आगडिये रह कर ही खेती किया करते थे। ये किसी के हल पीछे हाला धन जाया करते थे। आगडिये हाला तीन दिन ऊँट वाले मालिक के खेत में सामूहिक हला में चलता। तब चौथे रोज उस आगडिये हाला की कं खेत में हल चलाये जाते थे। बीच भी प्रायः ऊँटों के मालिक को दना पड़ता था। इस तरह से निनाण (निरवाई) का कार्य भी सामूहिक रूप से सम्पूर्ण करवाना का परंपरित रिवाज था। फसल पकने के अवसर पर किसान लोग अन्न एकत्रित करने हेतु मिलजुल कर कार्य कर लिया करते थे। उस समय मजदूरी देने की अपव्यय ममक्षते थे। ठाकुरों को गाँव के साग लहासिये (हर घर से एक आदमी ठाकुर के खेत में काम) दिया करते थे। कुछ पंडित पुजारियों तथा नाई-खानियों को भी ऐसी मदद मिल जाया करती थी। गाँवों में बडसी (अपने और दूसरों के खेतों में बदला बदली के समय से सामूहिक कार्य) से भी खेत कार्य हुआ करते थे। विशेष कार्यों पर 'लहास' करने का प्रचलन था। इसमें आस पास के अनेकों गाँवों के लोग सम्मिलित हुआ करते थे। कई गाँवों में सरकारी लहासे भी हुआ करती थी। वहाँ लोग मुस्तदी एवं तक्रार के साथ काम-अजाम देकर मालिक से मिष्ठान प्राप्त कर खाया करते थे। ऐसे सामूहिक कामों में 'गम भणना' तथा उच्च बाह बाही देना जरूरी माना जाता था।

प्राचीन काल में खला (खलिहान) निकालते समय ऊँट, बल या छोटे काम में लिए जाते थे। बाजरी के सिंटे (भुट्टे) तथा ग्वारादि की फलियाँ गाहने का नाम "गाहवटा" कहलाता था। उसके लिए लोग पशुओं को भाग कर भी काम निकाल लिया करते थे। अन्न को साफ करके खले में "रूसा" (बड़ा खड्डा) खोदकर बहोल का अन्न उसमें भर देते और फिर सुविधानुसार ऊँटों द्वारा बोरे भरकर धीरे धीरे घर ल आया करते थे। इस तरह से सबड़ा मन अनाज कई दिनों तक घरती के पेट में सुरक्षित रख लिया करते। थोड़े अन्न की आदमी तरकाल अपने सिं पर पडोक चौपड, लोदे एवं गठरियों से भी ढो लिया करते थे। घरों में उस समय अनाज भरने के लिए कच्ची कोठिया, कीठलिये, बुरज तथा भखारी आदि स्थान हुआ करते थे। दुबल स्थिति वाले लोग खले से सीधे अनिये की हाठ, छाटी ले जाकर अपने खेत की उपज का भास फरोहट कर दिया करते थे।

बोहरा पुराने समय में प्रथम कृत्य ऋण चुकता करना आवश्यक समझा जाता था। क्योंकि लणा कमी भी छूट नहीं सकता, ऐसी मायता थी। अन्न आसामी अपनी फसल का सारा अनाज बोहरे को देकर पाडखती³ लेने की पूरी चेष्टा रखता था। जब तक

1 अब बजड खेत बिसकुल नहीं रहे।

2 यहाँ सिंगोटी कर भी लगता था।

3 अन्न की रास (राशि) लाटते समय और खेत जीतते समय करबद्ध किसान मोन बनकर ईश्वर प्रार्थना करते हैं।

4 पाडखती = पावती रबीद।

ऋण रहता, बोहरे को बदला देते एवं हिसाब चुकाते समय धुरिये उमका पीछे¹ पर वठा कर धोक दिया करते थे। इसलिए खेती करवाने वाले कृतिपय बोहरे तो अपनी बोरियाँ लेकर खलिहान पर ही पहुँच जाया करते थे। क्योंकि किसान की फसल पर राज्य की रकम का और खेती कराने वाले बोहर का प्रथम अधिकार माना जाता था। जैसे —

घोरा घूड उठ जद बाहग धुरिया न धन देवणा।

हुव कळायण री त्रिया जद, पाछा कम नयू लेवणा॥

नी नगद, तेरह उघार की कहावत के बावजूद भी व्यापारी लोग दुबलो के सहायक बन कर उघार देने वाले पूजीपति (सेठ) बनते रहते हैं। खेती नहीं, विवाह ओसगादि के मौके पर भी वे ऋण दिया करते थे। इसलिए बोहर के ब्याज का सब धुरियो (आसामियो) को भारी भय बना रहता था। कई बोहरे ब्याज लिखने में अपनी कलम को बड़ी कड़ी बनाये रखते थे। तब आसामी कजा चुकत कर ही नहीं सकता।² खान के लिए पास में अन्न नहीं और छाती पर निदयी बोहरा, बेचारा किसान, बनिये के दूने डयोडे ब्याज से दबता ही रहता था। जोधपुर नरेश स्व० श्री सरदार सिंह ने लिखा है—

हित मे चित म हाय म, खत मे, मत्त म खोट।

दिल मे दरसाव दया पाप लिया सिर पीट॥

बसे माधारण ब्याज रुपये सफटा की कहावत थी। साथ में कहीं-कहीं गहना बगैहरा गिरवी रखवा लिया करते थे। मगर रुपया देते समय काटों कायली कड़ाई, साख एवं लिखाई बगो धमदि आदि के नाम से काट कर सी के साठ रुपये भी मुश्किल से पल्ले डालते।³ ब्याज की ऐसी कड़ी दर को पाणिनी ने कुसीद कहा है, जो कभी सम्मानित शब्द से संबोधित नहीं हुई। ब्याज पड़-ब्याज और चक्रवृद्धि आदि ब्याजों के नाम आसामी लोग आज भी जानते हैं। गौतम ने छ प्रकार की ब्याज वृद्धि बताई है जिनके नाम—चक्रवृद्धि काल वृद्धि कारित वृद्धि, कायिक वृद्धि, गिखा वृद्धि और अधिभोग वृद्धि हैं। इनमें कायिक वृद्धि ब्याज की प्रथा द्वारा मनुष्य की काया (शरीर) पर रुपये की मिलगत हुआ करती थी। जब तक वे रुपये वापिस चुकता नहीं करवाये जाते, तब तक कजदार धुरिया बोहरे के काम आता रहता था। महँत, यति और ठिकानेधारी नप इस तरह से आसामी से सावालिग एवं सम्म सठको को खरीद कर लेते एवं गुद लोग शिष्य भी बना लिया करते थे। कालू में निम्नलिखित बोहरो के कारबारी नाम काम सुने जाते हैं।

सरतरगन्धीय उपाधय (जन) के गुराजी श्रीपाल जी, जेसराल जी व गणेशलाल जी ब्याज पर रुपये दिया करते थे। लेखक ने उपाधय के अर्थ बागजा में ढाई सौ वर्ष

1 पीछा = छोटी छटिया।

2 A निस दिन निभय नीद, सपने में आवे न सुख।
दुनियाँ में नर दीन, करजा सून वये किसानियाँ॥

3 मु. साहनलाल कृत तवारीख राज श्री बीकानेर में लिखा है—महाजन सूद दर सूद बढ़ाकर धुरिये का पाबद कर देते हैं कि वे कभी करजे से मुबुकदोश नहीं हो सकते (पृ० 73)

व्यवसाय—पुराने समय में पेशेवर जाति के लोग अपने वंश परम्परित धंधे किया करते थे। वे अपने पेशे की आमदनी पर गुजर करते और हर किस्म किरायेदारों से वसूल करते थे। उनके ज़िम्मे बहुत ज़ियादत काम भी नहीं रहता। कालू में गाड़ियों लुहार, खानाबदोश ढंग से रहा करते थे। वे सभी कालू, सभी गारबदेगर और सभी कमास आसपास तक खते जाया करते थे। भराखुहार यहाँ प्रायः जम कर तोह की विविध चीजें बनाया करता था। उसका परिवार गांव के बीच एक खेजड़े के नीचे बैठ कर अपना काय करता। हम बच्चे इनको गम लाहा बघाते हुए देखा करते थे। इस गृहस्थी के पास अपनी एक लकड़ी की बलदा (बल) गाड़ी रहती, जो समस्त परिवार के लिए बड़े भवन स्वरूप काम आती थी। इसी पर खान पान एवं औज़ारादि का भार सामान सुरक्षित रहता था। यहाँ आधी पानी के समय इनका आश्रय था। सिक्कीगर लुहार यहाँ आये ही रहते थे। मगर नखू सिक्कीगर यहाँ काफी समय रहा। भेरा और तजा अपने घरों में मिट्टी के बतन बनाया करते थे। इनका अपना माहस्ता था और जलजल अलग था। आवा (याही) गांव की बाड़ा के बीच रात भर सुलगता जलता। मगर मजाल क्या कि आग लग जाये। पकने पर 'याही' के बतन निकालते, तब सारे गांव से औरों जाती और मन मुताबिक पसंद करके बतन लाया करती थी। बचपन में नानी मा के साथ लेखक भी पानी के लिए लघु खोदड़ी कुजियों के साथ मोह में कुम्हारों के घर जान का जानकार रहा। यहाँ खानिया की खानों में जाकर लोग लकड़ी की वस्तुएँ बनाया करते थे। किन्तु इन खानियों की मजदूरी नहीं बरसोद या खाना के दिया करते। बिबाह औरत के समय ऐसे काम करने वाले सब लोग यजमान के घर ससम्मान जमाये जाते थे। दासाराय कुथलाराय और हेमाराय यहाँ के खानों के तथा धीकिसन असलिया गुसाईसर से आकर बस गये। फिर दूसाराय और जगराम नाम के मूधार भी यहाँ आकर रहने लगे। सोने चांदी के गहन बनाने में श्री मधाराय कालूराय, नेताराय और सूडाराय भुनार के परिवार गत 19वीं शताब्दी से बड़े पट्टे माने जाते थे। पहले यहाँ के श्री फरताराय टीकूराय छीपे (हिंदू) कपड़ा की छपाई किया करते थे। अब असें से इनके परिवार दर्जी का काम (सिलाई) करते हैं। रंगाई कार्य के लिए यहाँ पचासा साल पहले मालाबक्स (सरदारगहर) और आलमदीन (बीकानेर) आदि, साफे एवं पायडी रंगने के लिए आकर बसे थे। पदमा तेली घाणा निहालता, बहू गांव का पुराना वासि दगान था। उसका लड़का नूरमाहम्मद हमारे साथ (सन् 1927-28) में पढता था। रूपा मेगवाल जूतियाँ बनाता, मगर कालू मंडाल और भोजा मेघवाल बेजा (कपड़ा) बुनते थे। सिलावटे, कारीगर बेजारे और भित्ती चित्रकार भी यहाँ समय बीकानेर आदि नगरों से आया करते थे। ई०स० 1923 के इंदिरा पूनजी मिलावटा छोटी भित्ती चित्रकार और चिम्मा महमद बेजारा तथा श्री उदयराम, जय-नागयण कारीगर (लकड़ी के) यहाँ आने लगे थे।

भुनारों के काफी घर पहले यहाँ थे, किन्तु जड़िय और पट्टे बाहर से आये गये रहते। तेजा जी आदि कई पुराने जड़िया के नाम आज भी साहूकारों की बहियों में मिलते हैं। पर कहेयालाल जड़िया बाद में आकर बसा था। कदोई भी बाहर से बुलाये जाने मगर साधारण भोजन (हलवे जसा) बनाने में श्री कालूराय सेवक जस व्यक्ति यहाँ

बड़े व्यवहार कुशल रसोइये थे। मासी वभी यहाँ आकर बाढी करते और वभी वापिस चले जाते। खटीक और रंगर भी अपने धंधे के अनुसार आग गए रहते थे। मोची उसन, परतु पिनारे, कुजड़े और विमायती गहरो से आकर अपना व्यवसाय किया करते थे।

वि०स० 1978-79 में मरदागाहर से यहाँ आकर भुराराम दर्जी न बपड़े का काफी काम दिया था। फिर वही के बालुराम छीपा, रामकुमार शर्मा और दुधमल भोजक न वषों तक मोदी की भाति बनार और बपड़े का गठरी व्यापार किया। अग्य पेजे के लोग म वि०स० 1976 से कालू आने वाला गुलाब सखारा, भागीरथ इय पराश मौसम विसायती अनार (अरी) बनार विर्रता, भूग और याकूब मूगफली फाक, गोड तमा मनिहारी का सामान बेचने आया करते थे। पहले यहाँ मारिमे हटडी म और नद बीच बजार में अपने धंधे आरम्भ कर दिया करते थे। बंड बाजा यहाँ नहीं था किन्तु दोना बाजी की तुरही (तुरी) सी साम पहले में ही विवाह शादी के समय अपनी तज सीसी आवाज से शुभ काज के संदेश फलाने लगी थी।

बर्खा बातना, सोवडी एव चुदडी बाघना तथा धुडी काकरिये काठने का काम यहाँ की पुरानी महिलाएँ किया करती थी। राजाओं के समय म भूकला बजाकर हर घर से पैसे उगाहन वाले सय्यद भुमत्तमान भी कालू म यथा समय आते रहते और प्रति घर से एक पचा उगाह लेते। घर से बाहर निकलने समय वे भूकला बजा देते इसलिए भुगुग पहा करते कि यह इस पसे के धम की भूकला बजाकर यही उठा गया है। वैवाहिक अवसरो पर हीजड़े आते और अपने नेगचार हेतु गा बजाकर रुपये उगाह लेते। पागे (सत्यानागी) लोग हठ धर्मी से उगाही करते तथा चाकू भी खा लिया करते थे। साग भरने म जेता भाड बडा मजाकिया व्यक्ति यहा आया करता, पर अब मोहन भाड था जाता है। ससी यहाँ के सदीने बासिदगान हैं, मगर महत्तर (भगी) वि०स० 1965 के बाद श्री सुगनमल नाहटा लाये थे। यह महत्तर परिवार आज तक कालू में समृद्धा वस्था में बसता है। इनमें पहले चादू मुखिया था एव अब सोहन है।

पुराने समय म साटिये¹ गवारिए और बालदिये गाव बसो के सोदे करने कालू आया करते थे। पर तु राठ साग अपने पंगुघन को चराने तथा व्यापार करने हेतु हिराबडे चोर बने फिरते रहत। सीगडी निकालो वाले साँप² दिखाने वाले तथा फड बाधने वाले भोपे सदा से इस अम्य गाव में अपनी उदर पूर्ति करते रहे हैं। बेलदार (भोड) तालाब छोदने, कापडिये सासी चारी सीनाजोरी करने तथा वन बाघरिय यहा वन म आनेट करते फिरते थे। तब उनसे किसानों के बच्चे एक औरतें भयभीत रहते। किसी के घर मृत्यु हो जाती तब दसवें दिन उसकी क्रिया कम करवान के लिए गाव सहजरा मर य गारजदेशर से तारगिये (आचारब या महापंडित) आया करते। मेघवालो के धरो में गुमाचुम अवसरा पर वही के गुरडे (उनके ब्राह्मण) कालू आते हैं।

कालू में ढाई सौ वर्ष पहले लोग आकर वसे वसे उसमें से गये भी बहुत हैं। कुछ रहे कुछ नहीं रहे, मगर व्यवसायिक और अव्यवसायिक दोनों प्रकार से लोग ने

1 साटिये लोग आज म अपनी स्त्रियो के सोपे भी जातीय प्रधानुसार किया करते थे। अब कालू में गवारिये और बालदिये कम गये हैं।

कालू को छोड़ा अपनाया है।¹ यहाँ का प्रथम महाजन श्री देवचंद राठी वरार क्षेत्र के घमोरी नामक स्थान पर रूई आदि का काम किया करता था। इनके पुत्र श्री बद्रीदास का व्यापारिक साधन सहित पञ्जाब में आना जाना बना रहता। श्री बद्रीदास सुत श्री गोवर्धनदास राठी फाजिलका में वि०स० 1895 में आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। इसी समय श्री हिमताराम जाणी ने कालू से जाकर तह० फाजिलका (फिरोजपुर) में कूलार नाम का गाँव बसाया। फिर यहाँ के एन जाटू जाट ने फतुई (शिवपुर तह०, श्रीगगनगर) नामक ग्राम स्थापित किया। कालू के गोदारे अबोहर, फाजिलका व मूडा में रहते हैं। तह० पदमपुर के चक् 69 एल०एन०पी० (सालगढ मोरा पेरिनल) में कालू के जाणी हैं। यहाँ के पारीक ब्राह्मण ता बसीर, नगराना, रतनपुरा (तह० सगरिया) में गये हुए हैं। वे कटेडा (पजाब) में भी बसते हैं, जो सब उक्त समय में गए हुए हैं। दो सौ साल पहले कालू के नाई (डेववाल) परिवार से तीन भाई बाहर गये थे। एक भाई मने गया और वह वहाँ का जागीरदार बना। गांव मने पाकिस्तान में आ गया, तब उस परिवार के लोग समुदायके टालीवाला (तह० अबोहर) आ बसे। दूसरा भाई मुणाराम कालू से रामनगर, जो अब श्री गगनगर में समाहित है—गया था। उसके बसंत केनाराम भूराराम SE नाइया वाले बास के नम्बरदार रहे। वे बीकानेर राज्य से पूरा सबधित रहे। तीसरा भाई तुलछाराम डेववाल गांव राजपुरा (तह० तारानगर) जाकर वहाँ 27 गांवों का कामदार बना था। इससे परिवार का एक व्यक्ति (समबन ईश्वरराम) तारानगर में बसता है और वनवस्ती में अच्छा व्यापार करता है।

लोक व्यवहार एवं सहभागिता

माल एवं यात्राएँ—प्राचीन समय में माल बलों की गाड़ियाँ एवं ऊटों पर लगा ले जाना सुविधाजनक माना जाता। चोर डाकू, जो कटव या धाड़वी कहलाते रास्ता में दल-बल सहित मिल जाया करते थे। अतः एक सुरक्षा के लिए सेठ साहूकार अपनी यात्राओं में ठाकुर लोगों को साथ लेकर चलते थे। उन्हीं के ऊट किराये किया करते थे। चोरा के मिल जाने पर नई अथवा लोग भी अपने को ठाकुर (राजपूत) बताकर बचने का कोशिश किया करते थे।² कालू के लोग श्री डूगरगढ, सरदारगढ़ और बीकानेर आदि के रास्ता में कई बार डाकूओं के शिकार बने हैं। एक बार घमडीरामजी नाहटा बीकानेर से ऊटों पर माल ला रहे थे। छारदे और कालू के बीच जहाँ बूम्डे

- 1 श्री रावतराम भाणजा और घनाराम सूईवाला ने अपनी मशीनों द्वारा एक दिन में पाँच पाँच, चार चार, घण्टा बफ के निकाल कर बित्री किए हैं।
- 2 स० 1977 में कालू के एक जाट भाइती को श्री डूगरगढ के रास्ते में चोर मिल गये। चोरा ने उससे पूछा—“के जातियो?” भाइती ने कहा—“राजपूत।” चोरो ने कहा—“कुण सा राजपूत हो?” भाइती ने कहा—“गोमट्टी सरदार।” उनका कहा—“विण रा कुवर।” भाइती बोला—“भाकराम जाट रा।” तब चोरो ने कहा—“छोड़ छोटा ऊट। भाइती के दो उलाय मारे और ऊट लीस कर ले गय। उस मौक एक भाटू जाट ने अपना ऊट नहीं छोड़ा, सामयिक अजीब बात—चोरो ने गोली ॥ मार डाला।

वे घने वृक्ष हैं, उन्हें चोर मिल गये, माल और रुपये खोस (छोन) कर ले गये।¹ तब थाने में रिपोर्ट पहुँचाई।

कालू के पास लूनकरनसर तहसील के आत्तिरी गांव चाँदसर² का मेघदान चारण वि० स० 1977 से तकड़ा घाड़वी बन गया था। मेघदान शेर जसा पीरुपवान पुरुष था। साढे सात फुट लम्बा, हूट्ट पुष्ट एव तेज जावान वाला घम भयानक धाड़वी था। वह दूर-दूर की चोरियाँ करता करता, डाके डासता तथा किसी के बच्चे नहीं आता। किंतु वह प्रसिद्ध घाड़वी बना, तब कालू के लोगों पर छकतियाँ पड़नी कम हो गई थी। मेघदान ने अपने गांव के पास न तो स्वयं ने चोरी की और न अन्य घाड़ेतियों के हमले होने दिये। एक बार वि० स० 1977 के पास मेघदान पकड़ा गया और उसको कद हो गई थी। वह स्वयं बताया करता था कि मैं हथकड़ी तोड़कर भाग आया और फिर उसी राय में लग गया। जब कभी कालू आ जाता तो लोग उसकी बातें बड़े चाव से सुना करते थे। फिर भी व्यापारियों को दूर दूर से माल मगवाना पड़ता था और माफिलो के ढग से कुछ लोग मिल कर (एक हाकर) व्यापारिक यात्रा किया करते थे। अब वस्त्र से लेकर चादी सोने तक के भाव सस्ते रहते थे तथा घी खाड़ से गुड नमक तेल मिर्च आदि दमिर्च जरूरत की चीजें भी महंगी नहीं थी। कुछ टक्को (24) के कुछ सेर, पदार्थ मिल जाया करते थे। जैसे दो टक्के का घत आध सेर। कहीं एक टक्के (12 दाम) का आधा सेर भी मिलना बताया गया है।³

दोवटी रुपये की 30 हाथ, बारह आन की छोट बारह हाथ और दो रुपये का दादाम (मगज) सात सेर मिलते थे। मूज। आने की दो सेर, पागो की जोड़ी के चार आने तथा ईस और सेरु के दो आने लगते थे। स० 1734 आश्विन (ई० सन् 1677 सितम्बर) में जोधपुर राज्य से गांव बिलाडा के राजसिंह अपने दोस्त मित्रा सहित पेशावर जमरुद की यात्रा पर गये थे। ये लोग जहाँ ठहरते खान पीने की वस्तुओं वही खरीद किया करते और अपने राजनामके में उनका भाव लिख लिया करते थे। (अतः वर्तमान के शाघाथिया का तत्कालीन भावा का जानकारी प्राप्त हो सकती है।) व ई० स० 1678 की फरवरी में रास्ते के गांव शेखसर, जो लूनकरनसर तहसील का बड़ा गांव, कालू से नौ कोस दूर (राठीटा से पहले गोदारा जाटो की राजधानी रहा) है उसमें ठहरे थे। शेखसर को उस समय शेख फरीद ने बड़ा उन्नत बना रखा था।⁴ इसलिए भारखाड, जसलमेर और बीकानेर के लोग लाहौर सामनपुर रावलपिण्डी, अटक, पेशावर और जमरुद इसी रास्ते से जाया करते थे। ये सब कालू के पास हाकर, शेखसर के पड़ाव से निकलते थे। उनके यात्रा वणिन में रास्ते के गांवों की भावों सबधी विगर्तें बनी थी, वे अब इस क्षेत्र के प्राचीन भाव, ज्याति रूप टिमटिमा हैं।

1 प्रसंग—घमडीराम ने चार मिल्या कूमटाळी भर मे।

गणो गाँठो खोस लिहो, बात पूगो सर मे ॥ तब लूनकरनसर का थाना पुलिस, चोरो के पीछे चडा।

2 कालू से तीन कोस दक्षिण पूर्व में चारणा का गांव चाँदसर है।

3 ये भाव मौय काल और मुगल काल के मध्य प्रचलित थे।

4 आइने अवबरी के अनुसार शेखसर के पास गांव घोरदाण में शेखफरीद का मकबरा बना हुआ है।

भावी की तरह तोल भी यहाँ की पुरानी विगत बहियों में विविध प्रकार के पाये जाते हैं। जैसे तो नाप तोल के बतन एवं बट्टे बहुत प्राचीन समय से प्रचलित थे। किन्तु अनाज के लिए पायसी की मिणती और कपडे के लिए हाथ के नाप तो गावों में अभी तक चलते हैं। इस क्षेत्र में ताकड़ी, तराजू तथा अन्य के तोल भी भाय थे। तत्समय सेर 24 तोले का और कहीं कहीं 28 पैसे भर का भी चलता था।¹ स० 1542 के अकात में सत जाभोजी, वाईस के तोल का सवा मन अन्न प्रतिदिन भुपत वितरण करवाया करते थे। उस समय सारे क्षेत्र में वही ताल चल गया, ऐसा जाभाणी साहित्य में वणन मिलता है।²

फिर 40 भरी का ताल भी चला और 56 भरी का भी। आगे चलकर अंग्रेजी राज्य में सेर का 80 भर के तोल से समारम हुआ और मन 40 सेर में। हाई मन की घोरी और बारह मन का पल्ला भी चलता था। यह मन आठ पैसेरी के बराबर होता था। पैसेरी को घड़ी या घारण कहा जाता था। बाटों की साट में सेर, आध सेर, पाव और छटाक आध छटाक के बट्टे भी हुआ करते थे। मन के आधे भाग का बट्टा अदून और उसके आधे भाग में दस सेर के बट्टे (दसेरी) भी हुआ करते थे। अब उनके स्थान पर किलोग्राम और विबटल प्रचलित हो गये हैं।

सोने आदि के प्राचीन तोल व बटे—8 खस खस का एवं चावल, आठ चावल की एक रत्ती, आठ रत्ती का एवं मासा और बारह मासे का एक तोला माना जाता था। इस तोल में 96 रत्ती हुआ करती थी।

जमीन के नाप हेतु यहाँ पावडा का उपयोग चलन था। ये छेत अथवा दूसरे गांव तक की जमीन नापने के साधन माने जाते थे। राज्य के ताम्र पत्रों में बीघा का जमीन नाप, डोरी (20 फी) से माना गया मिलता है। बेटों के नाप, बीघे बिस्वे और राम्बी दूरी के कोस तथा योजन प्रचलित थे।³ कुड या कूए के गहरे नाप पुरुस अथवा हाथ के माने जाते थे। अंगुलियों के बिस्वा से यर्धा का लोक नाप था। अ य स्थान से जूतियें करवा कर मगवाते, तब 13 अंगुल 14 या 15-16 आदि के जो नाप होते, अंगुल

1 बीकानेरी स्मृत पृ० 12

2 जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य पृ० 654

3 बीस अनवासी एक कचवासी बीस कचवासी एवं बिस्वामी बीस बिस्वासी एक बिस्वा, बीस बिस्वे का एक बीघा।

अ य माप—माप के रूप में खारी का प्रयोग राजस्थानी साहित्य में अनेक स्थलों पर प्राप्त होता है। विक्रम की तेरहवीं शताब्दी में इस माप का खुलासा इस प्रकार किया गया है।

12 अघावालि = 1 कुडव

4 कुडव = 1 प्रस्थ

4 प्रस्थ = 1 आढक

4 आढक = 1 द्रोण

16 द्रोण = 1 खारी

का नाप भेजते थे। बपड़े या डोरी में मुढ़त हाथ और ऊपर कुछ अंगुल लगाकर गज का नाप गिना जाता था। मकान बनाते समय भी हाथ का नाप काम में लाया जाता था। जमीन नापने का गज दो फुट का होता तथा नपड़ा नापने वाला गज तीन फुट का प्रचलित था, जिसमें 16 गिरह भी समाये रहते थे।

कस्बा बालू "छत्तीस पूण" याने सब जातिया का प्राचीन निवास स्थान, जिसमें सबकी अपनी रिवाजें पृथक् पृथक् सामाजिक प्रथा थी। परिवार का बड़ा बूढ़ा, मुत्तिया होता, जो सार कुटुम्ब का उत्तरदायित्व निभाये चलता था। पिता की संपत्ति में सब पुत्रों का अधिकार माना जाता, किन्तु पुत्री का नहीं। विधवा स्त्री वस्त्र गहनों के अतिरिक्त पति की संपत्ति में पुत्रों के साथ अधिक नहीं ले सकती। क्योंकि पुत्र घर का रत्न माना जाता।

बेटे का जन्म—बेटे के जन्म में सबकी बालू में अनक गौरवावित कहावतें प्रचलित थी। जैसे—'बेटो जाम्यो ही पञ्चीस वष को हुब।' 'बेटे के जन्म पर बाडो के काटे खड़े हो जाते हैं।' 'बेटा हुब जद ही बाजरी हुब।'

रण चढण, कण बधण, पुत्र बधाई पाव।

ज तीनू दिन स्थान रा, कहाँ रक् कहँ राव ॥

"बेटा मर्या अर दाळिद चल्या।" 'बेटो घर से जास अर सुरण रो सुख चादणो।' इसलिए बेटे का यहाँ असाधारण महत्व रहा है। बिना बेटे वालों को लोग निपुत्रा कहकर उनके दशन टालते। नि सतान की वन परम्परा समाप्त मानी जाती। नि सतान स्त्री अपना जन्म व्यर्थ माना करती थी।¹ वह विविध गुण पुत्र जन्मने के लिए विविध प्रयत्न किया करती थी। बेटे के जन्म पर अनेक मंगल कार्यों का विधान हुआ करता था। जन्म समय बाल बजा कर हूय प्रकट करना, गुड रुपये बाटना, सातिय पुरवाना आदि के नग घर में होते रहते थे। बाहर वाला को भी पोशाक पुरस्कार बांटे आते थे। जन्मा गृह पर पर्दा लगाया जाता, द्वार में बड़कें छुटा कर धूल प्रेतादि का भय मिटाया जाता और छठे दिन स्नान फिर नामकरण सस्वार आदि के नम चारो द्वारा जन्मा बच्चा की बड़ी सुरक्षा की जाती था। मन मन (40 सेर का तोल) धी, गूद सूठ के साहू हलुवा अजवायन, पीपलामूल आदि के मिष्ठान खिलाय जात और घेवर गूघरी सीर जैसे मिष्ठाना के गीता की रसघार प्रवाहित की जाया करती थी। सिरघोषण (दशोठण) जसवा पूजन एवं देवी देवताओं के धोक जाने का प्रथा नामकरण के बाद पूण करवाई जाती थी।

कालू में पुरातन काल के नूतन विवाह—जन्म की तरह विवाह भी मनुष्य जीवन का उत्साह एवं उत्सासपूर्ण अवसर रहा है। बालू बाणिका (वणियो) ग्राम होने के कारण का

1 गीत—भरू जी काठे रे गवाँ रे चाडू लापसी, माय तो माया रो देखी धीव।

बासी रा बासी एक तो अरज म्हारो हेतो सामळो ॥

भरू जी देराण्या-जेठाण्या भर्ते मोसो बोलियो,

देराण्या जेठाण्या रे हीड पालण।

भरू जी म्हें एक पुतर विन कुळ मे बाझडी ॥ कामी रा बासी ।

कितनी मामिक प्राथना है।

प्राचीन समय में कुछ विवाह बड़े ठाट बाट के होते रहे हैं। वि० स० 1960 में रघुनाथ दास राठी के घर श्री डूंगरगढ से बरात आई थी। उसने तोरण सहेली के समय कालू में वागवाही आदि की पुष्प तताएँ (वागजी) लुटाई थी। इन्हीं के घर दूसरी लड़की के विवाह में अच्छी घोड़ी नचाई गई थी। ऐसी बरातों में गाव-होरा और घोट की जीमणवारें दी जाया करती थी। श्री वनेचंद नाहटा के घर लटकी की बरात राजलदेसर से आई उसमें वे अपनी नाटक मढली लाये थे। श्री कालूराम करनाणी की पुत्री के विवाह में कालू गाव में पहले पहल मूक सिनेमा दिखाया गया था। सेठ सुगनमल नाहटा के बड़े लड़के लाधूराम की बरात कालू से आइसर गई थी। उसमें तीन सौ ऊँट, दस घोड़े-घोड़ी, ऊटो के बीस इक्के, अग्रेजी बाजा तुर्रि, भगतण का तायफा, नगारे निशान और सात सौ आदमी गये थे। वहाँ तातेडो न सरवरा (खातिर) व देहज में शोभा पाई थी। वनेचंद जी के घेठ बुधमल नाहटा की बरात (श्री डूंगरगढ) बहुत बड़ी गई थी। जिसमें चोरे का हयाल हुआ था। श्री गिरधारीलाल क्षत्र के विवाह में सब प्रथम बरात स्टेशन पहुँचाने के लिए बस, कालू आई थी। इस बरात में बरातियों को सुंदर पार्श्व भेंट-स्वरूप मिली। श्री भागूराम बंद के विवाह में भगतण तायफा आया तथा बरात अबोहर गई थी। दीलतराम बंद के प्रथम विवाह में श्री भूलचंदजी ने चिढ़ावे से तिलचारी बुलाये थे। कालू में ऐसे अनेक असाधारण विवाह स० 1950 से 1997 तक होत रहे। यहाँ के जाटो आदि की बड़ी बरातें (ऊटो की) भी देखने लायक हुआ करती थी।

पहले विवाह, घर घराने के तौर तरीका से तय हुआ करते थे। किंतु प्रथम घर और घर की शोध, नाई सेवक या ब्राह्मण द्वारा हुआ करती थी। फिर कन्या का पिता सगाई (बागदान) करके टीके के रूप में रुपये आदि की भेंट दिया करता था। सगाई के समय गणेश पूजा तथा आरती आदि के नय करके सबंध को पक्का बनाया जाता था। उस समय कन्या के लिए भी घर पक्ष से वस्त्राभूषण भेजे जाते थे। इनके बाद दाना सम्बंधियों की सुविधानुसार सावा (मुहूत) दिखाकर विवाह की तिथि निश्चित करके तयारियाँ किया करते थे। बवाहिक गीतों के आरम्भ हान पर घर को बीन राजा और घघु को यहाँ वनडी नाम से संबोधित किया करते। बीन को बनाकर कन्या के घर ले जाने तक उसके हाथ परा में मेहदी रचाई जाती आखा में काजल डाला जाता और ललाट पर बादला तथा तारे चिपकाये जाते थे। उसका लाल बागा, लाल पगड़ी और मुह का जाडिया पहन कर पाणिग्रहण सस्कार तक सुरक्षित रहना पड़ता था। रंगीन जूते गुलाबी कमर पेटा सिर पर सेहरा परो में काकड़ डोरडे तथा हाथ में तलवार देकर घर निकासी किया करते थे। घाड़ी के गीत स्वरो के साथ घाड़ी चढ़ाते एवं बाजे तुर्रि, मगाडे निशान आतिशबाजी और बटूका आदि के छाही ठाट से घघू पक्ष के कस्बे या गाव मोहल्ले में घर प्रवेश करवाया जाता था। यथा-स्थान काकड़ पेय, अगवानी, डेरा दिलवाना ढुकाव तारण मारना, फिर विवाह मंडप के नीचे दुल्हा दुल्हन के फीरे हुआ करते थे।

घर का पिता बड़े विनम्र भाव से मना मनाकर बरातियों को अपने पुत्र की जान में जाता और उनकी वहाँ अच्छी इज्जत एवं खातिर तबज्जे करवाया करता था। बरात आम तौर पर तीन या चार रोज ठहरती सब बेहू टीकना, बड़ा भात, सण मनाव पडली, घाना जाना समझणी ढाल गुवाड आदि के अनेक बवाहिक नग पूरे

करने पड़ते थे ।¹ घर बधू के लिए मीठी हाथ, फूफडा फाफडी, चेंवर कलेवो, वासी जुहारी प्रभृति प्रयाएँ आवश्यक मानी जाया करती थी । चेंवरी के बाद त्याग, दापो और ब्राह्मणों की भूरादि दान दक्षिणा के नेग हुआ करते थे । दमामिया तथा ससिया को भी पवित्र बद्ध करके दान दिया करते थे । वहाँ के भाड, कागे, हीजडे और अनेक भागण-हार महिलाएँ भी नाच गाकर अपनी सोयात प्राप्त कर लिया करती थी । बीन का बाप अपने गाव की या बिरादरी की बहिन बेटियों को वहाँ ओढ़ना देता था ।

बरातियों का आठ-आठ दम दस तक नित्य नई मिठाइयों के भात दिये (विलाय) जाते थे । तरह तरह की जीमनवारा में अनेक प्रकार की मिठाइयाँ, अनेक भाति के हलुवे स्नोर और खीचड़ियों के भात (भोजन) दिये जाते थे । लापसी-चावल व दाल घाटी में भी की खुली धार बहती रहती थी । जीमने चालो की कतारें, समूह और टोलियाँ बड़े ठाट से उड़ कर माल उड़ाया करती थी । बरात के साथ क्या पक्ष के लोग भी सनि-मल्लण पोरे, निरतर भोजन किया करते थे । साथ खिलाने का रिवाज था, नही बुलाने पर बदनामी कर दिया करने थे । परोसने वाला का टोल भी सबसे पहले खा पीकर तैयार हो जाया करता और उच्च स्वर से बोल कर भोजन परोसता रहता था । जैसे—

‘लाडू लोसा, जलेबी लोसा, पेठा सल्लूणी-भूजिया, पापड़ सूजी लोसा ।’ भोजन करते समय, सबधी एव बरातियों को घर एव बिरादरी की औरतें मिलकर गद्दी गालें (सीठने) भी गाया करती थी ।² कुंधारे सबधिया के वे अपने गीतों में काली कुतिया से विवाह करवा दिया करती थी । बीन राजा का बरात जीमने के समय शुभाशीर्वाद के गीत गाया करती थी । औरतों के समूह द्वारा बरात के डेरे स्थल पर जाकर एक भिन्न कोटि का जलाजी माहू नाम का गीत गाया जाता था । वहीं उनको बीन के बाप की तफ से त्वाग्व सिंघाड़े बादाम-लोपरे, गुड एव विस्कुट तक बाटन की प्रथा थी । वे चार दिन तक अपने कई नेगचार किया करती थी । उन में बाटका उठाने और मोघड दिखाने का नेग ‘कठपुतली की भाति’ बड़ा मनोरंजक हुआ करता था । सीख के समय ‘मालवा की भूमली’ का एक सुसंवादात्मक गीत बड़े हास्यात्मक ढंग से गाया जाता था ।³ क्या विवाह के समय तो वे अनेक गीतों की कारुणिक झड़ी लगा दिया करती थी । ओसवालो में सीख के समय प्रभावना प्रभृति नेगाधार हुआ करते थे । बीसवीं शताब्दी में पुरानी प्रथाओं और रीतियों का रूप बड़ा बढ़ा-बढ़ा था । देने लेने के ढंग एव रीति रिवाज, कोर्ति अपकीर्ति को लिए सम्पन्न हुआ करते थे । बाल विवाह बद्ध विवाह, बैजोड विवाह

- 1 विवाह वाली रात पीछे घर के घर ‘टूटा टाटी’ मनाई जाती थी ।
- 2 सबधियों को हास्य प्रधान भोजन करने में मिगणियों तथा भफोड का माग और चार का रायता भी परोस दिया करते थे ।
- 3 बरातियों पर रंग छिड़कने थापा लगाने एव भीगणा की माला पहनाने के कृत्य बड़े अनूठे तथा विनोद प्रिय हुआ करते थे । बीन राजा को रुई के फफूदे रंग कर केशरिया माला पहनाई जाती थी ।
- 4 स्मरण आता है एक बार सनकरनसर में केशरी चंद थोथरा के घर बालू में गई वोडों की बरात मीय के समय वहाँ की औरतों ने ऐसे बालू गाव के ताने दे देकर मालवा की भूमली का गीत सुनाया कि सब बालू के बराती शर्मादि हो गए ।

और कया विग्रह जैसे हृदय विदारक दृश्य भी समाज के पचा, बूढ़ो तथा नेताओं के द्वारा अपना लिए जाते थे। दूध मुँहे बालक-आलिकाओं के विवाह, सिवाय शक्ति हीनता के अन्य किसी भी हित पक्ष में नहीं थे। किन्तु तत् समय की गति बड़ी कुटिल थी। कभी-कभी तो पचास वर्ष के बूढ़े वर का विवाह दस बारह वर्ष की कया के साथ कर दिया जाता था। वह बूढ़ा अपनी आयु का शेष समय बिताने परलोक गमन कर जाता, तब समाज के सिर उसकी बाल विधवा का शापदायक जीवन ही रहता। इस तरह विधवाओं की तादाद बढ़ि से भूण हत्याएँ तक होती रहती और कई नवयुवक बूढ़ारे ही रह जाया करते थे।

वर्तमान समय के बदलते प्रतिमानों में कालू की प्रथाओं भी रुढ़िवादिता से काफी ऊपर उठ चुकी है। उसमें सत्य, स्वच्छ सत्व और सामाजिक व्यवहार प्रणाली का प्रबुद्ध प्रभाव प्रसरित हो गया है। संस्कृति वही है, पर उसमें नूतन संस्कृति के जागृत तत्व प्रवेश कर गये हैं। अतः पुरानी प्रथाओं का रूप बदलता जा रहा है तथा उस अंध बातावरण में ज्ञान बल का दुसाध्य संचार हो गया है।

सामयिक मृत्यु प्रथाएँ और भोज—जैसे तो भीत के अनेक भाग हात हैं, मगर माँचे (खाट) में पड़कर मरने वाले व्यक्ति का जी, (प्राण) जूण (खाट की रस्सी) में निकलने से सुगति नहीं होती, ऐसा हिन्दू धर्म शास्त्रों में विधान चलता आया है। इस लिए अंतिम समय जान कर मरने वाले व्यक्ति को खाट से नीचे ले लेते और आग्न में सुलाकर उसके मुँह में दही मिश्री या गंगाजल आदि दिया करते थे।¹ प्राणांत के बाद स्नान करवा कर गोबर के चौके पर सुलाते और रेणुका, गंगाजल तथा चंदन गोपीचंदन आभादि का उपयोग किया करते थे। साधारण जन को केवल कफन, किन्तु धनवान व्यक्ति को बढिया दुसाला उढाया जाता था। सुहागन स्त्री को बढिया चीर या दुपट्टा उढाकर चलेवा करने की प्रथा थी। बूढ़े जन के हाथ में तलसी की माला दिया करते थे। योग्य जन की सीढ़ी पर रुपये पैसे की उल्लाल भी किया करते थे। पीपल की लकडिया चंदन खापरों तथा सम्पन्न व्यक्तियों का सारा दाग खोपरों नारियला में किया जाता था। मगर जलते शव पर घा डालकर दिया कम करन का रिवाज हाता और इसका बाद उपस्थित जन, मृतक की जलती चित्ता पर मुट्ठी सजड़ी देते थे। सम्पन्न व्यक्ति के शव की बकुठी (विशेष अर्थों) निकाली जाती थी। अपने माईत की बकुठी निकालने वाले को बडा ओसर (भोज) करना पडता था। साध सतो की बकुठी निकालने का कालू में साधारण रिवाज था। यहाँ तीसरे दिन तीजा (सधु भोज) करने का सामाजिक विधान था। चौथे रोज गंगाजी को फूल भिजवाने गरुड पुराण बचवाने दसवें दिन दस-गात्र, इग्यारहवें दिन भेल और बारह से ओसर किया जाता था। अपनी सामाजिकता में कोई बडा छोटा नहीं, सबको अपने भाँवाप, भाई भोजाई, सधवा विधवा अथवा कुवारा लका ही क्या न हो, सबके पीछे बिरादरी भोज करना पडता था। घृत पचो

1 चलेवे के समय मृतक के मुँह में साना, आखो कानों में मोती भिजिये भर देने का रिवाज था। खाट से नीचे लेकर जीवन स्नान भी करवाया जाता था। मृतात्मा के घर उस रोज गायों का दूध नहीं निकालने, बछड़े चूगा दिये जाते हैं। शोक के कारण खाना नहीं बनता, पडोसी जन या बिरादरी वाले अपने घरों से खाना

को धाव के भय से गरीब एवं किसान (सामान्य जन) भी कज लेकर ओसर या नुकता के नाम से मृतक भोज किया करते थे। कितनी मुन्किस हो, परन्तु भोज रूपी विरादरी टेक्स चुकाये बिना किसी प्रकार से छुटकारा नहीं मिलता। जनसाधारण के मकान जेवर तथा बच्चे तक विप जाते तो भी ओसर अवश्य करते रहते थे। इस विषय पर एक कवि कथन देखें—

जेवर बेचे घर को बेचे नुकता करना होता है।
नहीं करे ता जाति भाई का, ताना सटना होता है॥
जाति वाले ता इक दिन जीमें, घर वाला तित रोता है।
लहू वाज सब जन उडावें, वह मुख नीद न सोता है॥

ओसर की अवसर चुन या असमयता पर, उस व्यक्ति के घर वाले को महणेमोख एव तान दिया जाता करते थे कि 'तुम्हारे भाईत आबो मे अरडाते (भूखे रोते) फिरत हैं। इस भय से उसके घर वाले अच्छा पहन ओढ भी नहीं सकते। क्योंकि उनके गहना-बपडों में विरादरी वाले हलुबे आदि मिष्ठान की गंध बताकर जन-समूह मध्य काफी बदनामी कर दिया करते थे। अतः मृतक के पीछे विरादरी भोज हर हालत में जरूरी और शोमाननक माना जाता करता था। तभी तो गाव के बड़े धनी मानी लोग अपने मा-बाप के मरन पर सारे गांवक सह्य मिष्ठ भोजन करवाया करते थे। ऐसे सामूहिक मृतक भोज का 'शहर सारणी' नाम से संबोधित किया करते थे। शहर सारणी में तमाम उस गाव के लोग और आस पास वाले गावों के व्यक्ति भी शामिल होकर बड़ी भीड़ पदा कर दिया करते थे। मृद के मृद आदमी औरतें, बालक बढ तथा मब जन बड़ी तत्परता से शहर सारणी वाले घर पातियो के साथ बठकर एक दूसरे की शत से बढकर माल उढाया करते थे। सबत्र प्रस नता उमग और उस्तास के साथ हजारो हजारो चुस्त चेहे उमड पढते थे। बढ पुरुष भी नवयुवकों से आगे नम्बर लिए हुए चलते और वास वास तथा मुतरले मुहल्ले से जन घटा उमड आया करती थी। घूत लथपथ याबक या मिठाइया तथा पूडिया पकीडिया उनके मन की व्यग्र लालायित किए हुए से चलती। तब के आखो में अद्वितीय आभा रचाये हुए शहर सारणी जीमने आया करते थे। इनके साथ राज्य नमचारी भी पातिये के नाम बड़ी गान के साथ मृतक भोज जीम कर आया करते थे। भाजनाधियों की सुरक्षा व्यवस्था हेतु काक कुतो को दूर रखने के लिए दूसरे आदमी तैनात रहने और सारे नगर में भूखे तिते (प्यासे) का हेला (डिढोरा) करवा दिया करते थे। किसी भी घर के बूल्हे पर तवा नहीं चढने पाता।

ऐस ऐसे बड़े सामयिक भोज्यों की शहर सारणियों के आयोजन दो कारणा से हुआ करते थे। प्रथम तो मृतात्मा की शानि एव मुक्ति के लिए धनवान लोग ऐसे बर्द

- 1 शहर का अथ नगर, कि तु सारणी = जल प्रणाली, धारा या तालिका को कहते हैं। जल प्रवाह की तरह शहर का जन प्रवाह भोजनाथ उमड आया, तब उमका नाम शहर सारणी रहा। शहर सारणी की प्रवा पहले शहरा से प्रारम्भ हुई और फिर उसी नाम से गावा मे प्रथय पा गई। कालू में सहरी और ग्रामीण (ओसर) दोनों प्रयाए पनपती थी।

- 2 लुवा।

काय, किया करते और द्वितीय अपन स्तर के धनी मानिया की अपना धन सम्पत्ति व ऐश्वर्य के दशन करवान तथा स्वय को पुण्यात्मा कहलान के लिए । वास्तव म ऐसे कार्यों से उन लागी की इज्जत बढ़ती थी । किन्तु उनके समान दूसर धनी मानी व्यक्तिया व दिला पर भी ईर्ष्या के सप लीटन लगत थे । वे सोचते— हमारे माइतो के मरन पर हम भी अधिक मिठाइया करेंगे और इनकी इस शहर सारणी को एक दम तुच्छ साबित कर देंगे । इस तरह कालू म शहर सारणी वाले प्राचीन महाजना म श्रीकृष्ण ढागा बींझाराज अवर बन्नीप्रसाद राठी फूमागाम अवर रघुनाथदास राठी भूदान कोठारी बींझाराज नाहटा बुन्नीसाल बंद रामसाल नाहटा नैनकराम हरजबंद भादानी (1957) दीपचंद डूढाणी और छोगमल डूढाणा बगैरह के नाम आते हैं ।

चौधरियो में केवल श्री अमराराम मारण ने ही कस्या की शहर सारणी की थी । श्री सारण ने उस आयोजन बाबत जब गाव के मुखियो को अपने घर बुलाया, तब सेठ साहूकार उनके घर दूहा देने (मृत्यु भोग्य लेने) से साफ इ कार हो गये । क्योंकि वे खाद के हलुवे और चीणे (मिजाये पकाये छोलों का साथ), चावल के बिना जाटो के साथ गुड का सीरा खाने में अपनी माहकारी इज्जत हत समझते थे । लेकिन अमराराम सारण न उनके कह मुजब (वि० स० 1960 के लगभग) खाद का सीरा एव चीणे चावल (विशेष रूप से) बनवान की बानिजी राय मानकर 'शहर सारणी' की थी । उस चौधरी ने गाव की गली गली म आमत्रण घोषणा करवाकर दाम तमाम जन को अपने घर शहर सारणी के नाम खाना बिनाया था । अ य कालू के कुछ धनवान जाटा ने अपने माईता के पीछे सारे गाव क लोगो को (बनिया के सिवाय) गुड के हलुए के गाव ओसर" जिमाये थे । इन ओसरा म गाव के तमाम वासिदगान (बाणिमा के अतिरिक्त) भोजन किया करते थे । ब्राह्मण बरागी, नाथ व्यातिपी, मुस्लमान, ना^१ खाती सुनार, लुहार, बावगी, राईका और समस्त हरिजन आदि लोग, करीब साढ़े सात सौ घरों के चार पांच हज़ार व्यक्ति (नर-नारी) 'गाव ओसर' के सामूहिक भोजन में सम्मिलित होते थे । यत पांच दशका में निम्नलिखित चौधरियो के घरों में उनके माईतों के पीछे 'गाव ओसर' के मफल आयोजन हुए । चूहडराम डोगवाल के घर पहला 'ग्राम ओसर' हुआ बताया जाता है । फिर लाभूगम भादू, नयाराम भादू तथा मघाराम भादू ने 'गाव ओसर' किये थ । किन्तु गिरधारीराम जाणी खिराजराम जाणी रतनाराम डोगवाल बनताराम नण^१ जेठाराम जाणी आदि लोग ने अपनी माताओ के पीछे मृतक भोज (गाव आमर) किय थे । बींझाराम गोदारा रामरतन भादू और हकमाराम जाणी आदि ने अपने पिताजा के पीछे ग्राम ओसर किये । अ य जाट लोग अपने अपने बासा म मायप (जाति) के ही ओसर किया करते थे ।^२

I श्री बलताराम नण की मा के पीछे उनके भ्र घी और लाफती का ग्राम ओसर हुआ था ।

II इन ओसरा के समय काइ भी गृहस्थ ईर्ष्यापति, गमी या शोखिया भोजन करने नहीं जाता तब उसवी (प्रत्येक छोटे बड़े जन की) दो बड़ी जर (कुदछा) घाली (कासा) नामग्री होती थी । गाव के काम में (वि० स० 1970 से 2000 तक) गोदारी के पास वाले कालूराम वर्मा ढा^१ (हमारे देखी म) यह काय सळटाया जाया करता था । उनक हाथा प^१ महीने भर तक सीजन एव फफोले हुए रहते थे ।

दूसरी जाति के लोग चिट्ठी फाड़ (भेज) कर अपनी विरादरी की यात बुलवा लिया करते थे। इनके सिवाय साधारण महाजन कहलाने वाले कालू के लोग अवस्था की प्रत्येक मौत के पीछे गाव के समस्त ब्राह्मणों, वैरागियों तथा अथ छट दशन को ब्रह्मपुरी¹ किया करते थे। समय के अनुसार राज्य सरकार की मृतक भोज पावदी के भय से ब्रह्मपुरी का नाम बदल कर "छ यात" नाम से कुछ दिन जिमात जीमते रह हैं। फिर सूके पदाय या नकद रुपये ब्राह्मणों के घर गिनती करवा कर ब्रह्मभोज स्वरूप दिये जाने लगे हैं। आखिर अब देा और लेने वाले स्वयं इस औसर प्रथा का त्याग करते जा रहे हैं।

कालू में ब्रह्मपुरियां बहुत हुआ करती थी। बभिय लोग अपन को दानी तथा धर्मात्मा कहलान के लिये ऐस मृतक भाजों के अधिक आयोजन करते थे। ये गाव के किसी भी ब्राह्मण को पीछे नहीं छोड़ते। हजारों ब्राह्मणों को मिछा न खिलाकर प्रति व्यक्ति को एक रुपया दक्षिणा का भी दिया करते थे। 'जीवदीठ' रुपया देन में गोदी के बालक को भी इससे वंचित नहीं रखते। बुजुर्गों का कहना है कि प्राचीन समय में बड़े कस्बों के ब्राह्मण लाटे गडुवे आदि बतन कीड़े मकोड़ा से भर कर ब्रह्मपुरी जीमने जाया करते और अपने बतनों के जीवों की गिनती करवा कर काफी रुपये लाया करते थे। सेठ लाग इस तरह के आयाजनों द्वारा ही साहूकारी का सर्टिफिकेट अर्जित किया करते थे। आजकल वे धर्मात्मा लोग अपन धन का सही उपयोग करने लगे हैं। वे कए मंदिर एवं धर्मशालाएँ बनवाते हैं तथा स्कूल अस्पतालों खुलवा कर यश लाभ कमाते हैं। अतः कालू की भोज प्रथाएँ आजकल कृप्रथाएँ कहलान लगी हैं।

विरादरी पचायतें और उनके स्थान—पुराने समय में प्रत्येक समाज अपनी विरादरी पचायतों द्वारा संचालित रहता था। विरादरी के व्यवहार से चलता था। विवाह शादी, औसर मोसर, याय निणय एवं चंदे धमाके जैसे अनेक कार्य कालू में जातीय पचायतों द्वारा सम्पन्न हुआ करते थे। राज्य सरकार के कोट-अदालत भी विरादरी पचायत के फसलों पर विश्वास किया करते थे। फिर धन धन समय प्रभाव से उन पचायतों में विवृत्तियाँ आईं, तब क्षुब्ध होकर लोक ने स्वयं त्याग तो नहीं किया, किंतु उनमें काफी सुधार कर लिया है।

यहा औसवालों की गवापयुक्त आबादी है। उनकी पचायत व्यवस्था सदा से उत्तम गति रहती आई है। पहले इनका एक नोहरा था जो अब सुंदर पचायत भवन है। विरादरी के बतन वगैरह का सब सामान इसी में रहता है और साथ सत तथा अथ आगतुक जन भी यही ठहरते हैं। विस 1974 में अधिक वर्षा के कारण औसवाल नोहरे के चारों ओर पानी भर गया था और अंदर तीन सतियाँ (वान बेंबर जी आदि) रह रही थी। थावकों द्वारा नोहरे की एक तर्फीय दीवार तोड़कर उनकी बाहर निकाला गया था।

चौभीते में औसवालों की अपनी छोटी साल थी। वह मोहल्ले के मुख्य द्वार पर

1 ब्रह्मपुरी का अथ ब्रह्मलोक और वाराणसी ! अतः नगर के समस्त ब्राह्मणों को एकत्रित करके सिलाते हुए धर्मात्माजा ने अपने निवास का भी ब्रह्मलोक की बराबरी में मृतक भोज का नाम ब्रह्मपुरी रखा है।

चीबीदार के रूप में पहचाना रहने के लिए बनाई हुई थी, जो कल तक लण्डन खड़ी दिखाई देती थी। जमीन की मांग बढ़ी और उसकी जमीन भी लोगों ने इधर-उधर मिला ली। तत्समय ओसवाल समाज के श्री सुखलाल कोठारी मेघराज बोरड और भीकमचंद बोयरादि विगदरी पच थे। य संगठन विकास, हित रखा जादि के पूरा अधिकार रखते थे। विवाह और सारे कार्य इन्हीं पंचों द्वारा सलटाये जाते थे। आग्रवाल अंतर्राष्ट्रीय और वनानिक सामाजिकता के युग में श्री मन्दात साह तथा मन्मानचंद बोरड विगदरी का पच पद संभालते हैं।

कालू की महिलाएँ और काय—भारतीय इतिहास महिलाओं के उत्कर्ष की गाथाओं से भरा पड़ा है। प्राचीन समय में भारत की अनेक देवियाँ वद्वान्त योग मार्ग याय गणित, साहित्य कला संगीत इत्यादि विद्याओं में पंडित एवं निपुण थीं। श्री मनु महाराज ने ठीक कहा है— 'यत्र नाभ्यस्यु पूज्यते रमते तत्र देवता।' आज लोग कहते हैं कि लड़कियाँ जो उच्च शिक्षा दिलान से क्या लाभ? वे सभा सोसाइटी में जान लेंगी।' ऐसी ऐसी अनेक भ्रात धारणाओं के बावजूद भी कालू में जन महिला मंडल शिक्षित सुधारवादी महिला विगदरी का सर्वोत्कृष्ट संगठन है। मंडल की सदस्य महिलाएँ सामाजिक, शिक्षक एवं दस्तकारी के कार्यों में पूरा समय लगाती हैं। मानवोचित गुणों में महिला मंडल की औरतें पूरा विकास पा रही हैं। गांव के बीच उनका अपना भवन है और अन्य सामान भी। जब स श्री ब्रह्मदास राठी की धर्म पत्नी शेर देवी ने पचायती के मंदिर की स्थापना करवाई, तब से ही यह मंदिर माहेश्वरी समाज का पचायन स्थल बना हुआ है। इस समाज के धार्मिक सामाजिक एवं मांगलिक भीकों पर आरम्भ से ही इस मंदिर में जीवन व्यवसाय सबकी प्रश्नों तक के विचारों का आदान-प्रदान एवं मांग दशन के कार्य यही होते रहे हैं। माहेश्वरी समाज की पचायती के बतन बगरह का सारा पुराना सामान भी इसी मंदिर में रखा हुआ रहता था। उस की विवाह शादी में उपयोगी देने और महो रूप वापिस लेने का कार्य पहले श्री परसराम डागा तथा अशु नदास श्वर आदि लोग किया करते और वे सुरक्षा भी रखते थे। भोजन करवान, कामगार मजदूरों को लेन देने तथा सीध बाड़ी की पूछताछ के कार्य श्री हरसुख दास मूलचंद श्वर और चौधमन मनहार के हाथों से सम्पन्न करवाये जाते थे। बतना-दि का सामान अब मंगल चंद श्वर के सुपुत्र है और अन्य सामाजिक कार्य पचायत क माफिक विगदरी के नवयुवक संभालते हैं।

पारीक ब्राह्मणों की पचायती का अपना पुराना भवन (पारीक धमनाला) है। उसी में इस विगदरी वाला क बतन बगरह रखे रहते हैं। इस भवन में उनके बास की आई हुई वरातें ठहरती हैं। अब वे किसी के अधीन नहीं होते। यह धमनाला भवन पारीक मोहल्ले के मध्य स्थित है और इसमें पानी, रोगनी आदि का भी सुंदर प्रबंध हा गया है। पारीक बरादरी में पहले श्री इ नाराम भगवानाराम, सुगनाराम इत्यादि पच थे। अब पारीकों की पचायत में श्री मूनाराम की भायता है।

सारस्वतों की पचायती के बतन बगरह श्री नानूराम सारस्वत के पास सुरक्षित है। इनके सारस्वत भवन का जमीन तो मुकरर है पर भवन अभी नहीं बना। इसलिए अगूने बास के प्रमुख पच भवन स्थापित करवान में लगनी है। पहले इस काम में श्री

जेठमल बोधरा ने वि०स० 1978-80 के लगभग स्वयं श्रम सम्पन्नता धारण करके अपने समुक्त परिवार निवास हित एक दिव्य मनोहर हवेली बनवाई थी। तत्सामयिक प्रयानुसार उसमें आक्कक टोडे भी लगवाये थे। सेठ श्री जेठमल बोधरा का कुछ के साथ झगडा हो गया। क्योंकि श्री सेठ की नव्य संपत्ति व्यवस्था से पुराने सेठ कहलाने वाले कतिपय स्थानीय व्यक्तियों में झूठी लडाइयाँ गुरू हो गई। श्री बोधरा ने ऐसी शतानी करने वाले लोगों (एक दो छटवा) पर मामला ठोक दिया। तब निरुपाय विरोधियों ने लूनकरनसर में बोधरा की साखी (कविता) बनवा कर प्रचलित करवा दी—

नई हवेली नो टोडा, एक रामलाल अर नो मोडा ।¹

जेठा भागी रे, तेरी भाया मामले सागी ॥

सेठ सुगनमल नाहटा की वि०स० 1970-71 से बनी 70 वर्ष पुरानी हवेली अपनी उत्कृष्ट कला बनावट के कारण कालूम में आये गये लोगों का मन मोह लेती है। इस हवेली की स्थापत्य कला व साल पत्थर पर कारीगरी के खुदे नमूने बीकानेर की हवेलियों के अनुकरण पर बनाये गये जान पड़ते हैं। आस पास के अन्य शहरों में पत्थर की खुदाई का ऐसा बारीक काय कम देखने में आता है। दुलमेरा का साल पत्थर कलाकारी के हाथों में आकर ऐसा सजा मवरा कि जड़ चतय के अभेद जसा बोलता सा अनूठी कला में परिवर्तित हो गया है। इस प्रोनत पत्थर पर जालीदार काम पापाण नक्काशी का निरालाकन है।

पूरणराम सिलावटे की छेनी हथौडी से पत्थर की बारीक खुदाई ने इस भय हवेली के जाली झरोखा एवं लटकी गुच्छेदार लडियों के आभूषणों ने बीकानेर की हवे लिया के जानदार स्वरूप को प्रत्यक्ष करके दिखा दिया है। दुमजिले बरामदे की कलात्मक विनिष्ट शिल्प आज भी गाव कालूम में देखने योग्य बनी हुई है। इस बरामदे की भीतरीय दीवारों एवं छतों की रवीन चित्रकारी बस्तीराम उस्ता की रंग कूची से चित्रकला के मनमोहक नमूने बहे जा सकते हैं। हवेली स्व० श्री सुगनचंद नाहटा की अपनी हादिक कलाप्रियता वाली वाँछा पूति की प्रतीक है और उनके पुत्र पीतों द्वारा उपयोग में लायी जाती है। किंतु गाव की यह हवेली बेजोड, बुद्धि घातुय एवं उदात्त आत्मबल सहित सठाई कौशल का नय कारणीय रूप है। इसके लिए यहाँ एक कहावत प्रचलित है—

धू (ध य) सुगनचंद कमर न, धू है सारण अमर न ॥

-
- 1 लूनकरनसर में श्री चादमल विरसेचा का यवसाय प्रसिद्ध घराना था। उसके देहात बाद एक अयवसायिक पुत्र रामलाल, फकीरी में बैठकर भाग सुलफा पीने लगा। वह साथ कुशलनाथ व अन्य को रखने लगा, जो अकारण श्री जेठमल की संपत्ति वडि से चिडकर मार पीट तक उतारू रहते। श्री बोधरा ने इन पर राज्य वादी फौजदारी दावे दायर करवा दिये। इस पर स्व० चादमल के जेष्ठ पुत्र श्री विरधीचंद तो अपनी सभ्य स्थिति लेकर कालूम आ बसे।

कालू मे पितर पूजा एक युग धर्म

कालू मे पितर पूजा की आस्था प्राचीन काल से प्रचलित है। अपन दिवगत दिव्य पुरुषा की पूजा को यहाँ अधिक महत्त्वपूर्ण समझते हैं। यह पूजा, लोक और वेद दानो से प्रमाणित है कि सभी पितर पूज्य हैं "अनो भवति व वाल पिता भवति मन्त्रद" इत्यादि प्रसंग मे ज्ञान प्रधान होने के कारण पितरा को देवताभा स श्रेष्ठ बताया गया है। पितर जानी होते हैं उनम अपनापन भी रहता है। इसलिए उनकी पूजा मे लागो का स्वामादिव आदर भाव बना रहना प्रत्यक्ष है। भगवान भी बटे लागो की पूजा करने वाला से बहुत प्रसन्न होते है। अत एव अपन पूव पुरुषा की पूजा प्रथा यहा परम्परित है।

मनुस्मृति मे " महात्मान पितर पूव दत्ता । आदि श्लाका द्वारा पितरो की पूजा को देव पूजा से प्राथमिकता एव तदपेक्षया महत्त्वपूर्ण बताया है। कालू सदा से पंडिता विद्वानो का गाव हान के कारण यहा के लोग ऐसे श्लाका की साधकता से अनुप्राणित होकर अपने अपन पूज्य एव आराध्य पितरो की आराधना मे दत्तचित्त रहते हैं। पितरो को यहाँ [पारिवारिक जन] विवाह मे बुलाते हैं, बरात बढ़ाते हैं, भाज्य पदार्थो का थाल परोसते हैं और परिधान वस्त्र वितरित करते हैं। उनके आदश मानते हैं, भक्ति करते हैं गीत गाते हैं और उन परलोकगामी, स्वर्गस्थ मृत्युञ्जयो दिव्य पुरुषो व कृपा पात्र बन रहते है।

यद्यपि पितर पूजा अपने दिव्य पूवजा की भक्ति भावना का प्राचीन रूप है, तथापि अर्वाचीन समय में अज्ञात फल प्राप्ति के लोभ हेतु अंधविश्वास एव पोगापथी के असंग्य टोटकों से प्रस्त कृच्छ लोग उस दविक भावना से दूर भी जा रह हैं। आज अंध विश्वास, कुठित बुद्धि अथवा चारित्रिक दुबलता के परिणाम अनेक रूपो मे घटित हो रहे हैं। अब निष्काम भावना वाली पितर पूजा का बीमारी, दुख दद व सक्कट टालने वाली तथा व्यापार शिक्षा एव सर्विस मे सफलता देन वाली पूजा मानने लगे हैं। पड़े-पडियो तथा भोपे भोपियो के आश्चय जनक एव भीति भीति के पाखंड चक्करा म पडकर डिग्रीधारी व आधुनिक शिक्षा प्राप्त सुसंस्कृत गृहस्थ तक अनिश्चित लोगो की तरह सकाम भाव से पितर पूजने लग हैं। पहले जहाँ एक दो घर म ही पितर पूजा हुआ करती थी, अब वहाँ अनेक घरो म पितर पितराणिया के पूजा प्रसाद प्रचलित हुए है। यह सब महंगाई के शिकार पड़े पडियो की करामात ही दिखाई देती है। ब्राह्मण ही नहीं अ य जातियो के लोग भी झूठा ध्यान लगाकर अपने ऊपर पितरा की छाया लाने लगे हैं और मरल लोगो को हर काय मे सफलता दिलवाने की आशाबद्ध करके पितर पूजा म ठग विद्या को बढ़ावा द रह हैं। यह काय यहा पुरुषा की अपेक्षा औरतें अधिक करती हैं। धार्मिक और धनवान तथा माहेश्वरी महाजना के घर म जाने जाने वाली दादियाँ औरतें जसे—कोई पंडित की पत्नी है तो कोई किसी नता की मासी, पितरो की छाया लाने में माहिर बन गई हैं। तब गुपीय आवश्यकता के अनुसार कालू के दूरदर्शी लोग अपने पितरो को "भयाजी" भिजवान लगे हैं। था जमनाराम वद्विचद कर्वा के पर पूज जाने वाले प्राचीन पितर श्री धनराज कर्वा (थी वद्विचद व चाचाजी) को गयाजी

वे तीर्थ घास भिजवा दिया गया है। पर तु भाद्रपद वि० सं० 1987 म, ससार से जाने वाले श्री रावतराम (पुत्र कालूराम सेवग) गाँव में अभी पूजमान हैं। शास्त्र सम्मत बात यह है कि मनुष्य का अपना ज्ञान एवं नम इहलोक में तथा परलोक गत होने पर उसके वंशजों द्वारा उसके निमित्त किये गये सत्कर्म, व्यक्ति विशेष की उत्तमोत्तम लोका की प्राप्ति में सहायक होते हैं। “पुरायेन पुराय लोका जयति पापेन पापमुभाभ्यामेव—मनुष्य साव।”



पंचम प्रकरण

मंत्री मिलन की मनोवृत्तियाँ

दिल बहनाव और साधन—पहले यहाँ तालाबों की प्रचुरता के कारण समूह में नहाना, जल में डुबकी लगाकर छुपना बहु तरीकों से तरना भीगने से खेलना घड़े से तलाब पार करना तथा मेले मगरियों के दिन पानी में नारियला की पकड़ प्रतियोगिता में विजय प्राप्त करना आदि अनेक जलतीय मनोरंजन हुआ करते थे। खलाबूटी चरकचूड़ी मक्खड़ी बढाना हींडो पर^१ ऊमली मचाना व लकरी का लौंग लाना धूमर घीदड़ डाडिया नरय, जागरणो में भवान्नी की छाया आना डफ, डामकी, डमरू, डोल अलगूजा, वदारी बजाना तथा ग्वाला के अनेक खेल तमाशों की परम्परा में कालू स्थान सदा से अग्रणी रहा है। दडी (गेंद) के खेल भी वहाँ बड़े चाव से हुआ करते थे। हाली के बाद गुड्डी उठाने का सावजनिक मनोरंजन कालू में बड़ा प्रसिद्ध रहा। विवाहों के अवसरों पर बीद (बर) की घोड़ी के जुलूस निकलते, तब गांव भर में मनोविनोद की चहल पहल हो जाता करती थी। घोड़ी के साथ सक्का आदमी हथित हास्य घूमते और औरतें भी अपने समूह में गीत गूढ़ का लाभ सवर्ण नहीं कर सकती। घर या सभा में गणेशा मिरासी आदि के कल्पकादि को नृत्य बड़े मनोरंजन हुआ वगैर और नाटक में श्री जोरमल राठी के मजाकिये हास्य नृत्य दशका की आनंदित कर दिया करते थे। रासलीला रामलीला व होली के स्वाग सावजनिक ढंग से होते थे। घर भीतर के खेलों में गुराजी के उपामरे में हाथी दात के प्राचीन पामे थे, बाकी खेल स्थानों में कीडियों से ही चौपड़ के खेल चल जाते थे। स्यारें लकड़ी की हाती, किंतु रंगीन व सफेद दोनों तरह की चलती थी। गड्डा, झोक्-डूहा वगैर खेल घर के भीतर खेले जाया करते थे। तास में पहले बूझमाणा कोट पीस गदहापीस और मिरच नाम के खेल अधिक खेले जाते थे। यहां वि०स० 1985 से कालू की सांस्कृतिक परम्परा में नाटक का खेल प्रारम्भ हुआ है।

कालू के पुराने लोग पशु पक्षियों का भी अपने मनोरंजन का साधन बना लिया करते। कबूतर उड़ाना^२ मुर्गे लडाना, ऊँटों की दीड धाड़ों का नृत्य शोटा व साडा की मिडाना कुत्त दौडाना,^३ घोला को बड़े चिबाना (बुचाला) हाथी के आ जान पर नारियल खिलाना तथा व दर या लकूर की गुड की डली फेंकर चिदान आदि के लोक मनोरंजन यहां सर्व्व हुआ करते थे। चाचक बोहरो डाई सेरो और भाड (बहुत्पिय) के बेग पर के चित्र मान देवताया की झानियाँ कठपुतली, कच्छी घोड़ी के ख्याल नट के चमत्कार मदारी बाजीगरी जादूगरी तथा कालबेलियों की पूगी बांधने की कला जैसे आश्चर्यजनक तमाशा की यहाँ निरंतर आवक रहती थी। बड़ा गांव होने के नाते भाट जोगी, डाढी शोली एवं घले भोतीसर भी प्राय आते थे और गांव में हफ मनोरंजन के टाटक प्रस्तुत किया करते थे।

- १ हीड हाली से गण गी- तक हीड जाते थे। सावन में हीडने की प्रथा यहाँ नहीं थी।
- २ उडाय जान वाले कबूतरों के परो में नेवरी एवं छप्पे पहनाए जाते थे।
- ३ दाहाय जाने वाले कुत्ता व गले में चमड़े के पट्टे लगे रहते थे।

स्वामाविक गुण—पक्षिया के मनोरजन से हमारे बच्चों को एक मनोवैज्ञानिक ज्ञान-दीपलब्धि होती थी। वे उनकी एक-एक बात को जानते समयसे और समझते से चेहरे देखकर लड़ा भिड़ा दिया करते थे। वे उनकी लड़ा, नचा तथा भगाकर बड़े लुश होते और अपनी-अपनी हार जीत मान लिया करते थे। जानवर लड़ते तब उनकी आज्ञास्वी भावनाएँ चेहरे पर उतर आया करती और चेष्टाएँ प्रतिद्वंद्वी ने डटकर भिड़ने का भाव बता देती थी। कबूतर का ऐसा क्रोध, अपने तन बदन को फूलाकर गदन का हिलाता और वह लपक लपक आगे पीछे चलता रहता था। मुर्गा क्रोधित होकर अपनी बलभी का खड़ा कर लेता और उछलता हुआ, बार-बार बोला करता था। बिल जब क्रोधित होती, तब अपनी मटमली आँखें खोलकर चोंच से बी-बी करने लग जाता करती थी। आजकल बच्चों ने ऐसी मनोरजन के कार्यक्रम नहीं देखें होंगे।

पशुओं में दौड़ते हुए ऊँट व गधे पूल जाते और मूह से आग निकलते। वह अपने प्रतियोगी से आगे निकल जाने व लिये पूरा जार लगाकर दौड़ा करता था। घोड़ा नाचता तब मालिक से आदेश की थपकी लेने के लिए हिनहिनाता और बारी-बारी से अग्रिम दोनों टांगों का मोड़कर जमीन पर बजाया करता था। घाट एवं साड़ लड़ने के समय बड़े भयावह घन जाते और उनकी आँखा से चिनगारियाँ निकलने लग जाता करती थी। आगा पीछा नहीं करते, गुस्सा आ जाने पर पूछ उठाकर प्रतिद्वंद्वी पर तीर की तरह जा झपटते। दौड़ते हुए कुत्ते पछ दबाकर परा से जमीन नापते दिखाई देते, किन्तु लड़ाई के समय व आगे के दोनों परो का विरोधी के परो से मिला कर खड़े हो जाते थे। मूह खोलकर गुराते ललकारते से बोलते और दुश्मन व मूह पर दात चलाते जाते। समय के विनोद प्रचलन से पशु पक्षी पद एवं प्रशिक्षित होते थे। इडिक इडिक करके चोट लड़ाये जाते, लग-लग करके कुत्ते और सीटी बजाकर कबूतरों का आकाश में उड़ा देते तथा वापिस बुला लिया करते थे।

महिलाएँ रात्रि जागरण विवाह एवं जैवाई आगमन तथा अय्य सौहारा पर खुलकर मनोरजन किया करती थी। बरात चढ़ जाने के बाद घर के घर बहुत सी स्त्रिया मिलकर टूटा टाटी का हास्यप्रद खेल नेगाचार के रूप खेला करती थी और पदों में रहने वाली औरतें गीत गाली में अपना हृदय खोल दिया करती थी। बालक-बालिकाएँ यहाँ हर समय बेफिक्र होकर अपने खेल खेला करते थे। बालक-लुक भीचणी, भू-भू भरियो, खोडियो खाती मारदडा आदि खेल खेलते और बालिकाएँ गुड्डा गुड्डी, तिलडी छीकी बगरह के खेल खेला करती थी। इसी तरह से पुराने जीवन में बड़ी मस्ती एवं बेफिक्री रहा करती थी।

गुड्डी या पतंग—पतंग का शौखिया मनोरजन कालू निवासियों के जीवन में सदा से रहा हुआ चला आया है। इस गाँव में यह बाल मनोरजन का माधन ही नहीं, अपितु मानव अस्तित्व के लिए पतंग का अपना निज का महत्त्व रखता है। आदमी पेच लडाकर अपने आप विजयी बनन की कोशिश करता है। क्योंकि पेच लडाने की कला स्पर्ति, मनुष्य के जीवन सग्राम में महायक होती है। पेच लडाने वाले पतंग बाजों के लिए उद्देश्य का कोई ध्यान नहीं रहता उन्हें तो फकत ध्वेय की बिता रहती है। अतः यहाँ के लोग स्वतंत्र रूप से पतंग उड़ाकर प्रसन्नता प्राप्ति का काय करते हैं। इसमें कप या शील्ड लेने की इच्छा नहीं होती, केवल शामने पेच अटाने वाले का किना

काट देना चाहते हैं। कितनी भ्रम लगे, धूप लगे, रात पड़ जाये। कितनी व्यय वृद्धि चढ़े कि तु कालू का पतंगवाज (पेच लडाकू) एकाग्रचित होकर विरोधी की फाटी (हार) करके रहेगा।

कालू के पतंगवाज लोग इस वास की कमालियों के ढाँचे पर कागज मड़ कर बनाये जाने वाले खिलौन रूपी विन्ने को गाद काच से मूँते हुए मजे (तागे) से बाधकर हवा के सहारे आसमान में उड़ाने ह। यह जापान का प्रचलन बताया जाता है। इसके उड़ाने का एक टुनर होना है, जिसे यहाँ के पतंगवाज अच्छी तरह जानत पहचानते हैं। हमारे बीकानेर महल में इसके अनेक नाम बोले जाते हैं। जैसे—गुड्डी चग किना बनवावा, बनकया किनडी एवं पतंग। किसी भी आदमी की पराजय पर यहाँ 'पतंग कट चली' का मुहावरा चला जाता है तथा पद से हटे हुए व्यक्ति को कालू में 'कटा हुआ किना' कहकर संबोधित कर देते हैं। दूसरे व्यक्ति के साथ बंधे प्रेम के लिए प्राचीन समय से गुड्डी की लम्बी डोर के लक्षणों से उसका धीरे धीरे एवं स्थिर प्रेम दर्शाया जाता है कि—'गुड्डी उड़े आकाश में डोर लम्बरी होय।' गाया भी जाता है—'उड़ चली रे पतंग मेरा चली रे।'।

वैसे तो पतंग सबत्र उड़ते होय ही, किंतु कालू के लोगों को इसे उड़ाने का विशेष व्यसन व प्रेम है। इसलिए वे रामचरितमानस के रचयिता श्रीतुलसीदासजी के निम्न दाहे को भी इकारते हुए दण्डिगोचर होते हैं।

बीच, चग मम जानिये, सुनि लखि तुलसीदाम।

डोल देत महि गिर पडत, लीचत चढत अवास ॥

इस बहु प्रचलित आधुनिक शौख के लिए तो कालू में पतंग के लाख गीत भी गाये जान लगे हैं। मम आत्मज शिवराज के विवाहोपलक्ष पर श्री एम० के० पांडे (एक मनेजर) की पुत्र वधु ने निमंत्रण पर आकर हमारे परिवार के समक्ष राजस्थानी में एक बहुत सुंदर नूतन 'बनडा' गीत गाया था। वह बनडा गीत—

कालू र बजारा दादोसा पतंग मोलाव,

छन माथ ऊभा बनसा पतंग उड़ाव।

फमनवाली बनडी से पेच लडावै

नखरजादी बनडी में पेच लडाव।

डोल द्योजी-डोलदूयो, गुडवण द्योजी गुडवणदूयो।

पच है जी पच है, बोई मारा। बोई काटा ॥ (1)

बाजाँ में बठा जीमा पतंग मोलाव,

छन पर ऊभा गिबजी पतंग उड़ाव।

फमनवाली सरिता मू पेच लडावै,

कामनगारी बनडी मू पेच लडाव।

डोल द्योजी-डोलदूयो गुडवण द्योजी गुडवणदूयो।

पच है जी पच है बोई मारा। बोई काटा ॥ (2)

1. गुड्डी तो बड़ी काट का भाति सुन्दर बाल की फटियों और माट कागज से बनाई जाती थी।

बाजारा म बठा जीजोसा पतंग मोलाव,
छत पर ऊमा शिवजी पतंग उडाव ।
फसनवाळी 'सरिता' सू पेच सडाव,
साहजादी बनडी सू पेच सडाव ।

डील दयाजी डीलदयो, गुडकण दयोजी गुडकणदयो ।
पच है जी पेच है, बोई मारा ! बाई काटा ! (3)

बाजारा म बठा वीरा सा पतंग मोलाव
छत पर ऊमा शिवजी पतंग उडाव ।
फसनवाळी सरिता सू पेच सडाव,
रायजादी बनडी सू पेच सडाव ।

डील दयोजी डीलदयो गुडकण दयोजी गुडकणदयो ।
पेच है जा पेच है बाई मारा ! बोई काटा ! (4)

(1 जुलाई 1976 ई० थीमती निमसा लता पाण्डे घमपत्नी श्री जगदीश पाण्डे) ।

पर । गीतो को छोड़ो कालू म गुड्डो उडाने का प्राचीन शौल, गुराजी आ गणेश
मालजी, ए० गोधूरामजी तथा गोविंदरामजी यति को काफी परिपक्व रूप म था । पर
पतंग उडान मे यहाँ क स्व० श्री बुधमल नाहटा (डाई बिग्गा) स्व० क० हैयालाल बूढाणी
स्व० फतेहचंद बोधरा स्व० भीलमचंद नाहटा, स्व० भीलमचंद साह आदि सज्जन पुराने
शौलीन थे । बूढ़ लागे मे श्री खुमानचंद बोड ईश्वरचंद गोलछा और केशरीचंद बूढाणी
भी बड़े उस्ताज पतंगबाज रह है । बतमान समय म यहा पतंग उडाने वाले कतिपय
निराके नौजवान हैं । क काफी दाव और ट्रिक्स जानते हैं । कालू म अनेक तरह से
पतंग क अग प्रत्यक्ष सहित नाम वाले जाते हैं । जैसे चरखी कणियाँ, दुंगरो, फरीं,
सींग, लोळ लिप्पू ताणदार पूछ पासो, डील, गोच, पेच, नटिया पेच, ऊपरला पेच,
टेडिया पेच, नीचला पेच लपना फँकना सहारना ताण दखना आदि बहु भाति के पेच
नाम हैं ।

पतंग की उमग, गाव कालू की लोक कलोल प्रवृत्ति म इतनी घुल मिल गई है कि
उसके लिए कोई परिभाषा करने की शक्ति नहीं मिलती, पर तु शिक्षित नवयुवक
उसकी परिभाषा जाने बिना कस रह सकते हैं ? इसलिए पतंग क मनोरंजन को हम
मनोवैज्ञानिक शब्दो मे मनुष्य क रचनात्मक काय कलाप की एक लालसा भरी ललित
अभिव्यक्ति कहेंगे ।¹ पतंगबाज व्यक्ति अपनी विशिष्टता का असंग वातावरण प्रकट
करने का प्रयत्न करता है । वह सचसुच पतंग के माध्यम से अपनी आत्माभिव्यक्ति का
अवसर प्राप्त करता है । बूढ़ बीमार, घनवान, विद्वान या कमाल कोई भी व्यक्ति
बटे हुए किने को अपने पास से जाते हुए देखेगा ता फौरन उसका तागा पकड़ लेने की
तरकीब जुटायेगा । देखिए कितना जबरदस्त मनोवैज्ञानिक मनतव्योत्साह है । मूल्य तो
इसक पाँच रुपया से अधिक नहीं हाता, किंतु ऊँचे से गिरकर जान दे देते है, मगर
किने को नहीं जाने देते ।

1 देर तक आकाश म देखना और एकाग्र होकर हाथो को हिलाना, आँखों क स्वास्थ्य
के लिए मुफीद (लाभकारी) माना जाता है ।

कालू में बेचारे पतंग प्राप्य नहीं कर सकने वाले बालक ककर पथरिया से धागा जोड़कर पेच लड़ाते हैं और बड़े अथ गाभीय के साथ बोलते हैं—

ढेरिया ढाटी, सबकी फाटी ।

समाजा चूना माटी, काकरा सू दाटी ॥

हमारे देश में सब जगह पतंगबाजी होती है । किंतु पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र राजस्थान और दिल्ली में पृथक-पृथक अवसरा पर पतंग उड़ाया जाता है । पंजाब में वसंत के समय महाराष्ट्र में दिवाली पर दिल्ली में रक्षाबंधन के अवसर पर तथा राजस्थान में मकर संक्राति के दिन पतंग उड़ान की परम्परा प्रथा है ।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में मकर संक्राति के दिन धार्मिक उत्सव के रूप में पतंगबाजी का दूनामट होता है । कलकत्ता, बम्बई आगरा इलाहाबाद, बनारस लखनऊ तथा अजमेर आदि स्थानों से पतंगबाज आते हैं । मुना है सवाई रामसिंह पतंग में मोहरें लगाकर तुड़ाया करते थे । आज भी देश में मान्य पतंग में करोड़ों का कारबार होता है ।

कलब ऐतिहासिकता और कालू

खेलों के ढंग अति प्राचीन हैं । गमायण¹ और महाभारत काल में खेला का तो पूरा वर्णन मिलता है । राजा महाराजाओं के सभा खेल, उद्यान क्रीडा भृगुया, जल-विहार की परम्परा भी प्रसिद्ध है । पर खेल की दितरजन पद्धति नृत्य, संगीत राम, हिंदोला आदि ऐशोआराम के खेला में बदल गई थी । अंग्रेज आये, नय खेल लाय ।

अंग्रेजों के शासन समय में बड़ी बात यही हुई कि उस अभिनव स्थिति में खेल मनोरंजन के विविध साधन अनुकरण के चाव से प्रकट हो रहे थे । लाड कलाइव ने पहले पहल राजा महाराजाओं को उनके खाग भुमाहिबों दरबारिया अमीरों और गृहीसों के प्रेम वातावरण वाले स्थानों से हटाना चाहा, तब बंगाल में प्रथम 'रायल हट' नाम से एक लंदन मार्का क्लब का जन्म संस्कार हुआ था । आगे जाकर उसी परम्परा में वह बंगाल क्लब कहलान लगा । बम्बई में ऐसा राजगृही सुख माधन पूण स्वयं 'रडियो क्लब' स्थापित हुआ है ।

शासन बदलता है तब संस्कृति भी बदल जाती है । छोटे बड़े नेता मुखिये और मव अधिकारी गण आने वाले प्रगासकीय रग में दौड़कर प्रवेगित हो जाते हैं । उछल-बूद मचती है, उत्साह जोश बढ़ता है और मग्नी लाग अपना आदश दिक्ताते हुए नय विगिष्टता प्राप्त करने की कोणिग कग्ने लग जाते हैं । तब सार देग में ही नहीं प्रत्येक राज्य में और गाव गाव में उसी शासन सत्ता का सम्भ्यता का स्वरूप छाया हुआ रहता है, जब तक कि कोई दूमग महत्त प्रभाव नहीं पड़ता ।

कलकत्ता में प्रथम 'कट्टी क्लब' सन 1885 में स्थापित हुआ और वही 'टालीगज क्लब' । फिर प्रमिद्धता के नाते सडरडे क्लब' सन् 1898 में खुला, जो रोड पर रोड अपना स्थान बदलता रहा । कलकत्ता क्लब सन 1905 में और कागीपुर क्लब ६० सन 1906 में—दोनों अपने नाम पर उत्पन्न हुए थे । पंजाब क्लब भी सन् 1930

मे जम लेकर राह बाई रोड चल पड़ा और अंग्रेजी सभ्यता में सबप्रथम रंगा जाने वाला भारतवर्ष का महानगर कलकत्ता को कलबो का विशेष वास बन गया। उसमें कलकत्ता माउथ क्लब, कलकत्ता रॉयल गोल्फ क्लब, कलकत्ता रोडिंग क्लब, कलकत्ता रॉयल टफ क्लब, कलकत्ता स्वीमिंग क्लब, कलकत्ता फुटबाल क्लब, कलकत्ता क्रिकेट क्लब इत्यादि कलकत्ता नाम के जगहों तैराकी तथा घुड़दौड़ तब के लिए क्लब स्थापित हो गये।

१ ई० सन् 1938 में ब्रिटिश आर्मी अफसरों ने "आर्म्डिनेंस क्लब" खोला। तब से ई० सन् 1946 में 'हिन्दुस्तान क्लब' तथा मार्वाडियों के अपने "राजस्थान नवयुवक क्लब" और "नीमस्तना स्पोर्टिंग क्लब" की नींव मुण्ड बनी थी। फिर तो स्वतन्त्रता के बाद कलकत्ता ही नहीं सारे देश में क्लबों की काफी भरमार हो चली थी। दिल्ली का कॉन्स्टाबल क्लब और जोधपुर का राजपुताना यूनिवर्सिटी फिनांसिकल क्लब भी खेल खेल द्वारा सामाजिक सेवा स्वामत के लिए प्रस्तुत हो गये।

बीकानेर राज्य की वसुंधरा खेल विनाद के क्षेत्र में कभी भी पिछड़ी हुई नहीं रही। यहाँ की धरती पर खेल मनोरंजन को महिमावित्त बनाये रखने वाले अनगिनत विनोदी उपासकों का आविर्भाव हुआ है। ऐसे विशिष्ट पुरुष रत्नों के द्वारा प्राचीन काल से अर्वाचीन काल तक बीकानेर में निरंतर खेल और खेलघर उजागर होते आये हैं। बीकानेर के सब खेलापणी महाराजा गंगासिंहजी को कौन नहीं जानता? उन्होंने राज घानी में ई० सन् 1912 से पहले ही विकटोरिया मेमोरियल क्लब के भवन की स्थापना करवा दी थी।¹ वे स्कूलों में खिलाड़ियों को खाकी वर्दी दिलवाते और यारोप जता खेल प्रचलन चाहते थे। उन्होंने घुड़दौड़ के लिए भी एक क्लब बनाया था। जिसमें दौड़त हुए प्रतियोगी घोड़े अपने सिर पर सवार को चिपका कर ऊँचे से ऊँचे स्टैंड से नूद जाया करते थे। अब तो सब म्यानों में क्लब कीर्ति स्थापित हान लमी थी।

जानू से दूर दूर के सहरो में प्रवास पर जाकर आने वाले नौजवान वद्य श्री किशनलालजी ने अपने घाम में नूतन खेल उद्योगिता जगाने के लिए ई० सन् 1930 में फुटबाल लाकर क्लब खोला और स्थानीय लोगों को आश्चर्यावित्त किया। तब श्री परमात्माद मारस्वत के घर की पूर्वी बाड़ से लेकर स्वामीजी जाने कूप के मारण तक खिलाटी साधिया सहित उनके फुटबाल खेल का मदान बना था। उस बाल के हाल जाना हनु उस समय के अय लाग हाथ लगाकर ही अपने की कृताय समझते थे। इसके बाद तो यहाँ भाहटा के प्राइवेट मास्टर भी दहा यान अंग्रेजी बाल ले आये थे और पट्टा स्कूल के अध्यापक भी। ई० सन् 1936 से यहाँ बालीबास्त्र का खेल भी आरम्भ हो गया था जो श्रृंखलित प्रगतिरूप आज तक गतिमान है। श्री गिरधारीलाल

1 'बीकानेर नरेन' पृष्ठ 82 मूल लेखक मेजर के० एस० पनिकर बी० ए० (ओक्सन) वार ऐटला फॉरेन एण्ड पोलिटिकल मिनिस्टर एण्ड वाइस प्रेसिडेण्ट आफ कौंसिल, बीकानेर स्टेट।

2 सन् 1929 के पास कस्बा राजसदेशर में साहूकार क्लब नाम की एक संस्था थी। उसमें मुग्दर फिराना आसन ब्रूक निवासना मसल संचालन, छाती पर बजन उठाना, पेरुलवार चेस्टएकमपण्डर आदि व्यायाम एवं अनक प्रकार की एक्मर-माइज तथा नाटक व स्कार्टिंग के खेल द्रुआ करने थे।

बाबूलाल चंदर, केशरीचंद ठूढाणी, जयनारायण पारीक, प० दुर्गादत्त सारस्वत सूरजाराम पुत्र काठाराम पारीक, श्री भीखमचंद नाहुटा और लेखक इत्यादि खेल जनाप्रणियो द्वारा एक क्लब भी बनाया गया, जिसका वि नाम श्री कालिका क्लब रखा। आग जाकर वह क्लब कालिका से कालू बन गया था।

सन् 1940 के समय शाला अध्यापक म श्री भगलदास स्वामी (भगल साठ), श्री स्यासीराम मीना और प० नारायणदत्त शास्त्री वालीवाल के प्रसिद्ध खिलाडी थे। तत्समय स्कूला मे भी फुटबाल बाॅलीवाल के खेलो को आवश्यक मानने लग थे और छात्रा का विलान वाले अध्यापक को अलाऊस दिया जाता। (ई० सन् 1947 48 म लेखक न अपने बेतन व साथ इत्यारह माह तक आठ रुपय माहवार से अलाऊस भी प्राप्त किया था। किंतु 18 फरवरी सन 1948 स रा० मिडिल स्कूल नोखा म स्थानांतरित हाकर जाने के बाद यह अलाऊस श्री चंद्रकुमार घमा अध्यापक को मिला।)

ई० सन् 1950 मे गाव का स्कूल सोअर मिडिल बना और घारे घोर खिलाडी अध्यापक आते गये। दो वष मे स्कूल मिडिल हो गया, तब गाव क्लब के लाग और स्कूल स्टाफ के खिलाडी मिलकर साथ खेलने लग। ये बाॅलीवाल का खेल पास देकर बडा सुंदर गेम खेलते थे। गाव के अय लोग इनका उत्साह बढ़ाते और खेल दखन आया करते थे। गाव के भागरिको में स्व० श्री गंगाविशान बागडी, भीखमचंद नाहुटा भीखमचंद सेठिया आदि वालीवाल व अच्छे खिलाडी थे। स्कूल मे स्व० श्री जुगलकिशोर शमा और जयनारायण भागव बाॅलीवाल के खेल में पूरा भाग लिया करते थे। इन्होंने महाजन, लूनकरनसर आदि कम्पा के साथ अच्छे मच खेले थे और ई० सन् 1954-55 के समय अपन विद्यालय द्वारा तहसील टूर्नामेंट भी करवाये थे।

ई० सन् 1954 मनोविनोद खेल एव प्रगति का युग था। बीकानेर म महाराजा करणीसिंहजी न 'बडर बोल्डस् क्लब' की स्थापना की थी। इनन भारत सरकार में फलाहग क्लब का भी प्रस्ताव रखा था जो नामजूर हो गया। (बीकानेर मे त सेव बतमान 'यूनियन क्लब' सामाजिक एव सांस्कृतिक कार्यो मे पूण सेवा सलग्न है।)

कालू के कुछ उत्साही नवयुवकों द्वारा गाव के सावजनिक सेवा कार्यो के करने हेतु माघ सन् 1950 मे एक ग्राम सेवासथ नाम की संस्था का स्थापन हुआ। इसके पदाधिकारियो न अच्छे खिलाडिया की अपेक्षा रखते हुए अपने सथ में हिंद क्लब नाम की एक शाखा संस्था का का उद्घाटन करवाया और क्लब मे इनडोर तथा बाऊटडोर गोनो ही खेलो के सामान-साधनो का पूण प्रबध किया था। क्लब की वार्षिक फीस सथ सदस्यो के लिए आठ आन प्रति वष रखा गई थी किंतु बाहर के लागो स एक रुपया प्रति वष अदा करन का नियम बनाया गया। यह फीस अपने किशोर मध के प्रति-निधियों स आठ आना और सदस्यो से चार आना नियमित रूप से ले ली जाया करनी थी। मगर चार आने प्रतिमाह के हिसाब से प्रत्येक खिलाडी को खेल फीम पृथक से-देन का निश्चित नियम था। क्लब न पाच नियम एव अधिकार बने हुए थे तथा खेल मनोरजन मंत्री व लिए आर्थिक एव सांस्कृतिक ढग के इत्यारह अधिकार थे। इसने केप्टन को भी नो (9) अधिकार दिये हुए थे। खेल मनोरजन मंत्री सठिया था और क्लब पर मध का मारल अधिकार प्रबध गतिमान बना रहता था।

कालू में पहले होती व त्यौहार पर सार गाव व जवानों की परस्पर कुश्तियाँ हुआ करती थी। वे सब इस काय को शकुन के रूप में अवश्य खेला करते थे। मुहूर्त के अनुसार चारा बासो (गादारान, जाणियान, जादुवान और भादवान) की अपनी पथक पथक हानियाँ जला करके पहले या पश्चात् चासाऊ (अपने अपने बास के कूड़ा के पास) कुश्तियाँ खेलते और तयार होकर गाव के बीच में आत थे। तब होती और छारेडी— दो दिन रात व समय, बीच मैदान गाँवाऊ (गाव की सामूहिक) कुश्ती हुआ करती थी। उसमें विस्तृत गोल घेरा बना कर सभी बठ जाया करते थे और उनमें से कुछ बालक युवक एवं बड़े भी कबड्डी कबड्डी कहकर ताल ठाकते हुए मदान मध्य मब बठे हुए सागा व सामन गोल चक्कर लगाते रहते तथा कभी हाथों और परो से चलकर चक्कर लगाते। इस काय को 'कबड्डी बाचना' कहते थे। इस तरह से वे आन वाले वर्ष का सुभिक्ष बनाने के शकुन मनाया करते थे। कालू में हर समय इसकी तयारियाँ होती रहती तथा फाल्गुन व महोना में तो हर जगह कुश्ती के अखाड़े लग जाया करते थे। इन पक्षियों के लेखक को साठ वर्ष पहले तब की गावाऊ कुश्ती व्यवस्था याद है। उसमें पचहत्तर वर्ष का राजूराम बाँभू, सत्तर वर्ष का गिरधारी राम ग्याणी पसठ वर्ष का मालूराम सारस्वत आदूराम बीना 'बाभू राम भादू आदि लोग कबड्डी खेलते और स्वयं कुश्ती भी खेल लिया करते थे। एक बास (माहल्ले) व जवान से दूसरे बास वाले जवान का कुश्ती लड़ाने का काय भी इन्हीं कतिपय मुखिया लोगो द्वारा सम्पन्न करवाया जाता था। गाँवाऊ कुश्ती में एक बास से दूसरे बास की हार जीत रहती। यदि कोई बास किसी वर्ष हार जाता तो अगले वर्ष काफी तयारी के साथ डटकर इस सामूहिक अखाड़े में आकर जमता।

पचास वर्ष पहले के कुश्तीकार जवानों में भराराम नथ आसूदास बरानी, लुमाणाराम भेलाराम भारण पनाराम बाभू माटाराम जाणी रामरतन भादू रामरतन सारस्वत आदि मुख्य पहलवान थे। कभी कदा बाहर के लोग भी आ जाते अथवा बुला लिए जाते थे। (उक्त युवकों के साथ लेखक ने भी कुश्ती खेली है।)

उस समय होती व सतरह अठारह दिन बाद गण गौर का पव आता, तब उस टांडे (मैदान) में जैटो की दीड़ से सब माहल्लों के लोग हार जात के रूप में अपने-अपने जैटा का सजाकर लात और देर तक दीहात हुए हार-जीत किया करते थे। विस 2006 (ई० सन् 1951) तक धीरे धीरे मैदान समाप्त (विक्रय) होने लग गया और जैटो की दीड़ का भी विसर्जनोत्सव का रूप बनन लगा। तब भाई जी श्री गिरधारी लाल शंकर ने उत्साह-युवक उस बचे-बुचे (शेष) टांडे में गणगौर के पव पर डोल बजाकर रात की बजाय दिन में कुश्ती करवाने की प्रथा प्रस्थापित करवादी। कुश्ती के अपन नियम विधान, विज्ञापन बाजियाँ, प्रथम द्वितीय, तृतीय आदि पुरस्कार और काफी सुरक्षा व्यवस्था के साथ यह काय आरम्भ हुआ था, जो आज तक हर वर्ष पंचायत ग्राम और अथ सस्थाओं के सहयोग द्वारा पर्याप्त इनाम धन्यवाद और धन्य-अप-धन्य के साथ सफल करवाया जाता है। कालू अखाड़े के कुश्ती नियमों का रजिस्टर लेखक के पास रहता है, जिसमें दिनांक 26 से 27 मार्च 1966, शुक्रवार

दिनांक 14 से 15 अप्रैल सन 1967 और दिनांक 2 अप्रैल 1968 (गं० 2025) आदि वर्षों के कुश्ती मेला का वर्णन है।

वालू अखाड़े में कुश्ती के आकषक इनामा के कारण दूर-दूर के पहलवान कुश्ती करने को वालू आकर इम आयोजन में सम्मिलित होते हैं और निष्पक्ष पुरस्कार प्राप्त करते हैं। इस आयोजन में गांव और बाहर वाला का भेद भाव बिल्कुल नहीं रखा जाता। गांव के प्रतिष्ठित एवं अनुभवी लोग निषायक बनाये जाते हैं। दशकों में पञ्चायत स्टाॅफ सहित सरपंच स्वयं एवं अथ सम्य नागरिक यथा स्थान आकर बैठन हैं। पञ्चायत के कमचारी हर बात का इतजाम करते हैं और पुलिस कमचारी संपूर्ण सुरक्षा बनाये रखते हैं। तीन दिन तक बराबर प्रातः सायं यह आयोजन चमता है। रात हा जागे पर प्रकाश का विशेष प्रबन्ध भी करवाया जाता है। दाव पेच की अच्छी कुश्ती करने वाले का गांव के लोग पुरस्कार स्वरूप खूब रुपये आदि देते हैं और किसी पहलवान के पक्ष विशेष वाले लोग उसे अपने कर्षों पर चढाकर मंदान में बाहर ले जाते हैं। किंतु गांव बीच का टाडा (मदान) वतमान समय में बिल्कुल स्थापित हो जाने के कारण कुश्ती अखाडा प्रायः अस्थाई धन चुका है।

सन 1965 में सरपंच श्री गोपाल चंद डूढाणी ने इन पक्षितों के लेखक का कुश्ती खेल हनु नियम बनाने को कहा। लेखक ने कुश्ती प्रतियोगिता के सम्बन्ध में दस निगम बनाये। सन 1966 तथा 1967 के वर्षों में इन्हीं नियमों के आधार पर कुश्ती-क्रीड़ा सम्पन्न हुई। जिसमें निम्नलिखित महानुभाव समायोजन प्रबन्धक थे—श्री गिरधारीलाल खवर श्री कश्यपलाल डूढाणी गोपाल चंद डूढाणी, डूढरगम खाली श्रीराम लडेलवाल भूषान सन्नोटरी, हजारीगम सारस्वत लालूराम जी गुसाई, आसारामजी बरागी नानूराम सम्कर्ता श्रीराम खवर। उक्त वर्षों में भरागम नाई भीयाराम गोदाग कालू धनागम जाट सोढेरा, मोटाराम साँसी माना आदि पहलवानों ने कालू गांव में अविस्मरणीय कुश्ती लड़ी थी। वतमान समय में श्री शिवराज सम्कर्ता दाव माहिर कुश्तीकार है। इसने 15 अगस्त सन 1965 को पूष बरद कालू द्वारा आयोजित तहसील स्तरीय खेल कूद प्रतियोगिता में 60 किलो वजन तक की चुनौती पूर्ण कुश्ती लड़ी थी। जिसमें शेखर के अध्यापक श्री भवरलाल पहलवान का बाटे की टक्कर में पराजित करके कालू गांव में आयोजित कुश्ती प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार जीता था।

गणगौर पर्व वि. म. 2038 (ई. सन 1981) पर बड़े व्यापक स्तर से कुश्तिया संचालित हुईं। इस बार मणि के बीच बाजार में सुबह स्थित अखाड़ा ढोलों की जोंगी लौ तानें सिपाइयों की तनाती, स्वयं सब इन्स्पेक्टर पुलिस की उपस्थिति और दशकों के लिए एक करीने में कुश्तिया, पाटे तथा विशेष बेंचे लगाई गई थी। इन प्रतियोगिता में दूर-दूर के पहलवान सम्मिलित हुए और आस पास के गाँवों से दशक भी उमड़ आये थे। मदान में बड़ी भीड़ भारू हुई। पहलवानों की कुश्तियों के फोटा लिये गये। श्री रामचन्द्र राठी और शिवराज सरस्वा अखाड़े के मध्यस्थ बन तथा उन्होंने अच्छे पहलवान भिड़ाय थे। इस वर्ष अखाड़े का विजेता श्री प्रभुदयाल खेल मास्टर गाँव

शुभलाई रहा जिस ग्राम पचायत कालू द्वारा 101 रुपये का प्रथम पुरस्कार दिया गया तथा उसका नागरिका द्वारा भी विभिन्न पुरस्कार दिए गये। श्री घनसिंह गगननगर का 151 रुपये का पचायत कालू द्वारा विशेष पुरस्कार दिया गया। क्योंकि अस्ताडे में उसके माथ कुश्ती खेलने का बाई भी पहलवान दुबारा तयार नहीं हुआ। द्वितीय आने वाले श्री लाधूराम रामसिंह नगर तथा कालूराम सहजरासर का 51 रुपये के दो पुरस्कार दिये गये। तृतीय आने वाले श्री तुलछाराम कासवास तथा भीरे राम हरियाणा को 25 रुपये के दो पुरस्कार दिये गये। जय कुश्तीकारों में श्री भनीराम रामसिंह नगर, सोहनलाल गोशरा मन्सीसर अजुनराम नाई नत्थूढाढी कालू नक्षमीनारायण गारवदेशर, मुगनाराम भाभू वाशा राम पाडाण चेतनराम नाई आमप्रकाश खडेलवाल कालू बलदेव राशगड आदि का सात्वना पुरस्कार स्वरूप इक्कीस रुपये पंद्रह रुपये ग्यारह रुपये तथा सात सात के अनेक पुरस्कार वितरित किये गये। बाहर से आए हुए सभी पहलवानों का पुरस्कार प्रदान कर मनोपजनक स्थिति में सम्मान दिया गया।



पहलवान—मास्टर प्रभूदयान घनाराम सिंह। मध्यस्थ—गिवराज सक्ती

तहसाल लूनकरनसर के गाँव लियेरा महार बप थी रामदेव जी महाराज के मेले पर पहलवानों की कुश्ती का अच्छा अस्ताडा लगता है। दिनांक 15-3-81 को लूनकरनसर में श्री वजरग भवन के सामने मदान में कुश्ती आयोजन रखा गया, जिसमें लियेरा मेले के अस्ताडे के जीते हुए सभी पहलवान आकर इसमें भी सम्मिलित हुए। इनके अतिरिक्त बीकानेर समरिया राम सिंह नगर और ततारनर आदि स्थानों से भी अनेक पहलवान आय थे। इनके लिए आयोजकों का बार से महाने भर पहले हा विनम्रिया निकली थी। यह कुश्ती आयोजन भी कालू के अनुकरण पर सुनियोजित ढंग से सम्पन्न हुआ था।



पहलवान—कालू राम अजु न राम

गण वष की भाति वि स 2039 (ई० सन् 1982) के गणगीर पव पर भी बड़े सानदार ढंग से कुशिया आयोजित हुई। अलाहे का आयोजन गाव के बाजार म ही हुआ तथा अय व्यवस्थाएँ भी बहुत सुंदर रही। इस वष क कुशी पव पर बाहर के पहलवानो न बहुत और खूब प्रदर्शनात्मक कुशिया लड़ी। दशका की भीड़ तो आश्चर्यजनक रही। अलाहे की मध्यस्थता पिछले वष की तरह थी रामचंद्र राठी और शिवराज सस्कना न की और कुशिया का घातिपूर्वक संचालन किया। इस वष अलाहे का विजेता श्री श्रवणसिंह पुन श्री दिलीपसिंह गगानगर रहा, जिसे ग्राम पचायत कालू द्वारा 101 रुपये का प्रथम पुरस्कार दिया गया। द्वितीय पुरस्कार 51 रुपया का तथा तृतीय पुरस्कार 31 रुपया का प्रदान किया गया। गाँव क पहलवाना तथा बाहर मे आये हुए सभी पहलवाना का सात्वना पुरस्कार स्वरूप इक्यावन रुपए इक्कीस रुपये तथा ग्यारह रुपयो के कई पुरस्कार वितरित किय गए। ग्राम पचायत कालू की ओर म कुल 968 रुपयो की पुरस्कार राशि दी गई तथा गाँव क साया न सभी पहलवानो को सहृण मकड़ा रूपय प्रदान किए। कुशी प्रतियोगिता म सम्मिलित सभी पहलवाना को ग्राम के नूतन सरपंच श्री इन्द्र चंद राठी ने पुरस्कार प्रदान कर ससम्मान विदा किया।

गणगीर कुशी प्रतियोगिता स० 2040 चत सुदी 3, दिनांक 17 4 83 को आयोजित हुई। यह कुशी अपनी पिछली शृंखला मे सब श्रेष्ठ रही। बाहर क प्रसिद्ध पहलवाना न इसम भाग लिया।

कुशी न० 1

- (1) श्री दशन सिंह मकसार
- (2) श्री पुरसा राम वणाला
- (1) था श्रवणसिंह श्री गगानगर
- (2) श्री प्रभुदयाल मास्टर, बननाई

कुश्ती न० 2

- (1) श्री नूगर राम नायक, 68 N T, रायसिंह नगर
- (2) श्री कासम अली, राजूवाला
- (1) श्री हगर राम नायक, 68 N T, रायसिंह नगर
- (2) श्री बलवीर सिंह, लूनवरनसर

कुश्ती न० 3

- (1) श्री किरताराम, नवा (हनुमान गढ़)
- (2) श्री लाधूराम, 68 N P रायसिंह नगर
- (1) श्री धरमदास, गारबदेशर
- (2) श्री राम प्रसाद रावासर
- (1) अजुन राम नाई, कालू
- (2) राजा नवा (हनुमान गढ़)

कुश्ती न० 4

- (1) श्री हनुमान मल सेवक कालू
- (2) श्री चेतनराम नाई कालू
- (1) श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल, कालू
- (2) श्री सत्तार खाँ, गावदेशर

प्रथम कुश्ती के विजेता को 201/ द्वितीय के विजेता का 101/ व तृतीय तथा चतुर्थ के विजेता को 51/ रुपये के पुरस्कार दिये गये। शेष सभी लड़ने वाले पहलवानों को 31/ व 51/ रुपये के भातना पुरस्कार प्रदान किये गए। प्रतियोगिता का आयोजन सरपंच की दक्ष देख में हुआ। पचायत की ओर से कुल 637/ रुपये पुरस्कार स्वरूप दिये गए। गाँव के नागरिकों ने भी खिलाड़ियों का उत्साह बघन किया और कुश्ती से प्रफुल्लित होकर काफी पुरस्कार दिये। प्रथम बरीयता श्री प्रगट सिंह (गगाराम) का मिली।¹

पत्रकार, सवादक और पत्र-पत्रिकाएँ

सीमा न कमानो का न तसवाग सभासा।

जब तोप मुजाबिल हो तो, अखबार निवालो ॥

युगानुसार समाज का बनना विघटन या बदल जाना किसी सामाजिक समाचार पत्रों के ही अधीन होता है। किन्तु कालू जन्म करके म ऐसे प्रधान लक्ष्यीय "समाचार देने वाले दैनिक पत्र" प्रकाशित किये जाएँ—ऐसी स्थिति के साधन अभी मुलम नहीं हो पाये। मासिक व मासिक तथा वार्षिक और हस्तलिखित पत्र पत्रिकाओं की यहाँ युगानुसार भरमार रही है। विचारपूर्ण लेख तथा गंभीर साहित्य से परिपूर्ण स्थिर मामूली जनता तक पहुँचाने का अयासकय नाथ कालू की पत्र पत्रिकाओं द्वारा समय समय पर अवश्य मुलम हुआ है। इसलिए कालू ने नागरिक कूपमण्डूक की पदवी

1 यहाँ हर साल कुश्ती प्रतियोगिता सम्पन्न करवाई जाती है, पर लखन न सक्षिप्त तोर से साक्ष माग वषों का ही विवरण लिखा है।

सीमा से बिल्कुल वंचित है। यह लिखना भी अत्युक्ति नहीं है कि कालू की पत्रकारिता भारतीय साहित्य सस्कृति से सलग्न है। कालू के चाहे हस्तलिखित पत्र पत्रिकाएँ ही हो अपने क्षेत्रीय साहित्य जगत में प्रकाशमान रहे हैं। किन्तु यहाँ राजनतिक समाचारों से सम्बन्धित पत्रकारिता अभी पनपी नहीं है।

लगभग साठ पसठ वर्ष पहले यहाँ के कुछ लोगों में पत्र निकालने का शौख उत्पन्न हुआ गया था और पन्द्रह वर्ष बाद वहाँ के कतिपय शिक्षित जन अथवा पत्रा म समाद भेजने लगे थे। परन्तु यहाँ से प्रकाशित होने वाली सामग्री पहले की लिपी हुई सफल है। उक्त समय पं० श्री दुर्गादत्त सारस्वत और नानूराम सक्ता आदि अजमेर से निकलने वाले पत्र व मोरा बाशी की छारदा कस्तकता के जनमत और अलवर के 'राजस्थान क्षितिज एवं माधुरी' सरस्वती आदि पत्र पत्रिकाओं को साहित्यिक सामग्री भेजा करते थे। यहाँ के राजनतिक सज्जन भी जोधपुर के 'प्रजा सेवक' अजमेर के 'नवज्योति' व राजस्थान (बाद में रियासती) आगरा के 'सैनिक' एवं कानपुर के 'प्रताप' में यथा समय अपनी रियासत के मुख्य समाचार भेजा करते थे जिनमें स्वामी गोपाल दास जी (भाट) एवं बालूराम जी सक्ता मुख्य थे।

स्थानीय प्राचीन प्रकाशन

- 1 'भगवती' (वि० स० 1981 से 1985 तक) ईश्वर धर्म और अध्यात्म जैसे, गंभीर विषयों की वार्षिक पत्रिका।
- 2 'कलायण' द्व मासिक—साहित्यिक पत्रिका।
- 3 'शिशु सेवक' (बाल साहित्यिक) वार्षिक पत्र।
- 4 'विकास' साहित्यिक मासिक पत्र।
- 5 'रा उ मा वि कालू का वार्षिक मुख्य पत्र' बंदिध।
(ई० स० 1956-57)
- 6 'ई सन् 1960 से 62 तक रा उ मा वि कालू के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों ने 'विकास', 'नव ज्योति', 'जागृति' आदि विभिन्न नामों से अनेक हस्तलिखित पत्र पत्रिकाएँ निकाली, जिनकी प्रतियाँ सुरक्षित हैं।
- 7 'प्रेरणा' शैक्षणिक प्रवृत्तियों के रूप में वार्षिक पत्रिका। (ई स 1963 से 1970 तक)।

समाचार पत्र अधिकांश में प्रकाश का काम करते हैं। कालू में प्रथम पत्रिका वि स 1980 से 1985 के मध्य सब समय में पं० श्री गणेशराम जी सारस्वत, पं० चैतराम जी, मोघूराम जी वरद किशनलाल जी शर्मा, श्री अमरनाथ जी मिरदावर आदि सज्जनों ने वार्षिक पत्रिका 'भगवती' निकाली थी, जिसके कुछ पन्ने लेखकों के पुस्तकालय में प्राप्त हैं। बदलते युग में वि स 1997 से 'कलायण' हिंदी राजस्थानी साहित्य की एक महान सुंदर पत्रिका पं० दुर्गादत्त जी सारस्वत, श्री भरूदान जी आढा (प्र अ) नानूराम सक्ता (स अ) और गांव के अथ शिक्षित नवयुवकों के उत्साह से निकाली गई थी। इसने सम्पादक श्री दुर्गादत्त जी तथा भरूदान जी आढा रह। लिपिकार श्री मरुता श्री मंगलदास स्वामी श्री जयनारायण पारीक श्रीकृष्ण लखोटिया विद्यार्थी (महाजन) रह। इस पत्रिका की प्रतिर्या 'श्री गुण प्रकाश सज्जनलाल' बीकानेर।

महोदय

कल्याण

सत्यमेव जयते

वर्ष १९९७

श्रीराम कल्याणवीर पूजित धर्मपरा
 दत्तिलाल कल्याणवीर साठे कल्याणवीर
 जलकवीरलाल - कल्याणवीर
 कल्याणवीरलाल कल्याणवीर

दिनांक १९९७

हस्तलिखित पत्रिका "कल्याण" (वि० सं० १९९७)



शालापायागी पत्र शिशु सेवक

श्री हनुमान पुस्तकालय रत्नगढ़ जीर 'महावीर' शुभचि तत्क पुस्तकालय लूनकरनसर आदि स्थानों को बाहर भी भेजी जाती थी। इसमें लेख कविता, कहानी सुभाषित लतीफे, चुटकले कणिका एकांकी और नव्य युगीन साहित्य तथा समाचार देन वाले सुंदर शीपक समाग होने थे। मवाद दाता एवं लेखक प० श्री रामदत्तजी त्रिवेदी साहित्य (स अ), श्री मूलप्रकाश शास्त्री (स अ) श्री नूतनदान चारहठ अध्यापक देगनोक मुगनमल लोडा भरूदान जाड़ा वल्ल क्रांतिकर्तृ शास्त्री श्री सारन श्री मोहन लाल सारस्वा, श्री नानुराम सक्कना, मणल्लास स्वामी श्री शम्भूदयान जी मक्केना साहित्य-रत्न, बीकानेर आदि महानुभाव थे। यह विम 2001 (सन 1945) तक निकलती रही। इन लोगों के लेख भी मीरा आदि पत्रिकाओं में प्रसिद्ध होते रहे तथा क्षेत्र के अन्य लोग भी रुचि लेते लगे। जतपुर के श्री रामचंद्र बिहानी ने "माहेश्वरी सेवक" नाम का जातीय पत्र निकाला, जो अब नष्ट होबारात है। साहित्यिक पत्रकारिता का कार्य भावुक व्यक्तियों द्वारा चालू किया जाता है। ई सन् 1948 फरवरी में सम्पादक श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा (जो प० सेमबदजी गिरदावर ने रखनेदार थे) ने कालू में "शिशु सेवक" नाम से एक लघु पृष्ठाय बहुत सुंदर पत्र निकाला था।

पत्र निकालने का उत्साह प्रायः शिक्षित नवयुवक भी रखते हैं। सन 1953 में ग्राम सेवा सघ कालू से 'विक्रम' नाम का एक पत्र निकाला गया था।

विकास के सम्पादक हनुमानमल गोपालचंद डूंगाणी नानुराम सक्कर्ता आदि रहे। इसमें लेखादि प० श्री दुर्गासजी जयनारायणजी (प्र अ) जुगलकिशोरजी (स अ) राम प्रसाद जी मुंदरिया (स अ) रामचंद्रजी सोलंकी (स अ) जेठमल राठी, श्री चंदनमल बहदेवा (श्री दुर्गासजी) आदि देते थे। यह मासिक पत्र बराबर पाच साल निरन्तर रहा।

विद्यार्थियों में सचिन साहित्य निधि का समुपयोग करने हेतु उच्च कक्षाओं के विद्यार्थी भी दाला पत्रिकाएँ निकालने हैं। रा उ मा वि कालू का वार्षिक मुख्य पत्र अप्रैल 1957 में निकाला गया। यह श्री पी रत्नागि द्वारा नवजीवन प्रिंटिंग प्रेम मेरठ में छापा। इसके सम्पादक तथा निदेशक श्री मदन सिंह बघेरा एम ए बी टी (प्र अ) रहे। सम्पादक मणल श्री रामकुमार पाण्डे एम ए सी टी व अ हिंदी और कभी लमि कक्षा 9 नन्नाल गर्मा कक्षा 8 मन्तराल राठी कक्षा 8, मोहनलाल नाहटा कक्षा 8 साधुराम नाहटा कक्षा 6 आदि मज्जनों से बना था। इनके मित्रा उमम लेखक और कवि श्री नानुराम सक्कना, हनुमान प्रसाद राठी कक्षा 9 मोहन लाल जन किष्ण चन्द नाहटा कक्षा 5 सताथ चंद पुगलिया अविनाश कक्षा 8 उमिला कुमारी बघेला (भुनी) कक्षा 8 हनुमान प्रसाद सोनार कक्षा 8, कन्हैयालाल सिंघो मजेद प्रताप सिंह चौहान कन्हैयालाल अवर अतिप्राता कक्षा 8, बाबूलाल बंद कक्षा 6 भरूदान लोडा

1. इस समय गांव मजाजन के श्री लालचंद शंकर कानपुर में "व्यापार समाचार" निकालते। उसमें भाव उनाचढ़ाव के समाचार रहते और श्री शंकर व्यापार तथा आहत को बढ़ावा मिलता। दीपावली आदि पर्व पर प्रेम से प्रिंट करवाने, नहीं तो अपने व्यापारियों को साइकलास्टाटन बुलेटिन भेजते थे। (श्री निबनारायण शर्मा भी कॉम द्वारा)

कक्षा 6 आनार मल राठी कक्षा 5 भवरलाल राठी (जेतपुर), गावरधन लाल सानार कक्षा 6, भीलचन्द थोठारी कक्षा 8, रैवतमल गोलछा कक्षा 8, जवरीलाल भादानी कक्षा 6 आदि थे। इसके सम्प्रहर्ता डालचन्द, दुर्गाराम कक्षा 9, श्री प्रेम मनोहर सबसेना अध्यापक भी ए. बंगीलाल, जुगल किशोर आदि कक्षा 9 बने थे।

6 ई० मन् 1963 में विद्यालय की मुख्य पत्रिका "प्रेरणा" सूप प्रेस रतनगढ़ से मुद्रित करवाई गई। इसके सरक्षक प्र. अ. श्री भरदान चारण एम. ए. एम. एड. बने। प्रधान सम्पादक श्री मोतीसिंह राठी एम. ए. बी. एड. अंग्रेजी विभाग के श्री सदीप एम. ए. बी. एड., हिन्दी के श्री बनवारीलाल एम. ए. सा. रत्न और राजस्थानी के श्री नानूराम सस्कर्ता सम्पादक बने तथा सहयोगी छात्रों में श्री गूनमचन्द मीणा कक्षा 11, श्री धर्मचन्द बोधरा कक्षा 9, श्री लामूराम आय कक्षा 8 आदि निर्वाचित होकर सम्पादक भइल म. कायकारी बने। लेख कविता और कहानी लिखने वालों में श्री बाबूलाल सेठिया, विरम चन्द नाहटा, सोहनलाल बोरड, इन्द्र चन्द नाहटा, बशीलाल कानन, जठमल डूढ़ानी 'रवि' (विशारद) आनारमल राठी, राजेन्द्र कुमार नागर, कुमारी सम्पत नाहटा जुगराज सस्कर्ता, केशरी चन्द धाडेवा जवरीलाल भादानी नबीन द्वारवा प्रसाद सोनी (स. अ.) गणेशमल बिरमेचा श्री गाविन्द पुरोहित एम. ए. (अध्यापक) सुश्री गायत्री कुमारी राठी, धर्मचन्द साठ रामकुमार पारीक सधमणदत्त देवीदत्त जांगिड़ (रा. सा. विशारद) शकरलाल करनाणी, प्रतापसिंह चौहान (एल. डी. सी.) रामेश्वर लाल राठी बाबूलाल सिधी, मालचन्द शर्मा झूनवरन साठ, ईशरराम चौधरी अवतार सिंह रवावा (स. अ.) पृथ्वी सिंह खेलावत, बंगीलाल शर्मा, रामकिशन शर्मा, मोहन लाल नागर एम. ए. बी. एड. (प्र. अ.), किशनलाल तातेड, कन्हैयालाल नाहटा मरेन्द्र बिडवालकर एम. ए. बी. एड. (प्र. अ.) आदि ने सामग्री लिखकर दी।

दूसरी बार ई. सन् 1968 की "प्रेरणा" पत्रिका बड़ा सज्जन से निकाली गई। इसके सरक्षक श्री गोविन्द लाल व्यास एम. ए. बी. एड. (प्र. अ.) और सम्पादक श्री सोहनलाल बोधरा 11, भागीरथ वर्मा 10 विजयचन्द भसाली 10 तथा परामशदाता श्री बनवारीलाल शर्मा हिन्दी अध्यापक व श्री नानूराम सस्कर्ता साहित्य महापाध्याय हुए। लिखने वाला में श्री तीधराज सस्कर्ता, रामकुमार शर्मा, झूमरमल नाहटा, रमेशचन्द्र जोशी, नैमचन्द नाहटा भवरलाल तैवर (स. अ.), शिवराज सस्कर्ता मांगीलाल खडेलवाल, सीताराम शर्मा दयाम सुन्दर शर्मा धासकरण गिया जयकिशन चौधरी, ओमप्रकाश शर्मा, भाणकचन्द बोधरा जुगलकिशोर राठी अमोलकचन्द गोलछा, विजयलाल बोधरा, धिमल कुमार बागडी, ओमप्रकाश, कु. विजय लक्ष्मी सोनी, जुगराज सस्कर्ता, ओमप्रकाश शर्मा, ओमप्रकाश शर्मा, शकरलाल शर्मा, रामलाल सारस्वा शर्मा, रामेश्वरलाल कायल, डालूराम चौधरी, शानचन्द बोधरा, राजपाल सिंह शिवराज सस्कर्ता, भवरलाल राठी, रतनलाल शर्मा झूमरमल साठ रामनारायण चौधरी (प्र. अ.) बशीलाल जन आदि सज्जनों का पूरा सहयोग रहा इस अवसर में छात्रों ने दो-दो तक सफलता दी है। यह प्रेरणा (अ.क.) अतुल प्रिंटिंग प्रेस बूट से मुद्रित करवाई गई थी।

द. स. 1969 में लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस बीकानेर द्वारा प्रिंट हान वाली प्रेरणा का अंक

भी भुवे मिला है। इस अंक के संरक्षक श्री गाविंदलाल 'याम' (प्र. अ.) हैं और सम्पादक मटल में श्री माधोराम चौधरी (ब. अ. हि. दी) श्री सोहनलाल बोषण ११, मोहनलाल जाखड़ ११ (प्र. य.) श्री अनागम अय (भा. भ. त्री) कायगत रहे इसके तृतीय अंक के सम्पादक भी श्री गाविंदलाल जी रहे।

अय लेखक कवि तथा साहित्यिक सामग्री देने वाला म. विद्यार्थी घमचर नाहटा 'आजाद' बाबूलाल मेठिया हेतराम चौधरी बीरबलराम चौधरी बीरबल सिंह बिसनाराम डोगीवाल आमकरण गिया, दीपाग्रम चौधरी, लूणकरण जम, सोहनलाल चौधरी हरिराम घनरवाज शकलाल नर्मा, गौरीशंकर यवरा उमाग्रम सिमाग, हरिग्राम गोदारा विष्णुचंद भवन्लाल पागीक दूमाराम डेलू लाधूम, उमराव सिंह (स. अ.) आदि सज्जन रहे।

इस तरह से पत्र पत्रिकाओं का स्वच्छ एवं जाग्रत प्रकाशन यहाँ प्रायः 60 वर्षों से होता आया है। प्रगतिशील युवक इस परम्परा का बनाये रखेंगे यही अभिप्रेति है।¹



1. वर्तमान म. सूत्रकरणसर से काशी पायल एवं अलविदा पत्रिकाएँ निकली हैं तथा माहन मित्र मनीषी न. रेमिस्मान टेलिग्राफ नाम से एक राजनैतिक पत्र निकाला है।

षष्ठम प्रकरण

कुछ मजे तपे पावन पृष्ठ

कालू मे स्वरोदय साथ—प्रत्येक व्यक्ति एक ही स्वर से सांस लेता व छोड़ता है, जिसका जम घण्ट घण्टे पर बदलता रहता है। दाहिने स्वर को सूर्य और बाये स्वर को चन्द्र स्वर कहते हैं। जब दोनों स्वर एक साथ चलें तो इसे सुषुम्ना स्वर कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रथम तीन तिथियां को दाहिना स्वर सूर्योदय के समय रहना चाहिए और शुक्ल पक्ष की प्रथम तीन तिथियों को बाया स्वर सूर्योदय के समय होना चाहिए। तीन तीन तिथियों में एक एक स्वर बदलने का प्रमाण है। जैसे कृष्ण पक्ष में एकम से तीज तक सूर्योदय के समय दाहिना स्वर रहना तो चौथ से छठ तक सूर्योदय के समय बाया स्वर रहेगा। फिर सातों से नवमी तक दाहिना स्वर फिर दशमी से बारस तक बाया स्वर, यही क्रम बराबर चलता है। इसमें उदय तिथि मानी जाती है। तिथि घटने पर दो दिन में और बढ़न पर चार दिन में बदलता है। स्वर की गड़बड़ी रहना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद नहीं होता है।

बाई करवट साइये, जल बाए स्वर पीव।

दाहिने स्वर भाजन करें, तो सुख पाव जीव।

स्वर साधन में स्वर विज्ञान का, प्राण विज्ञान के साथ अभिन सम्बन्ध है। इस विज्ञान का ज्ञाता स्वर, योग, कुण्डलिनी ईटा, पिंगला, सुषुम्ना आदि को निकाल कर रहस्य बताने में स्वानुभव से समर्थ हो सकता है। वह बात का धनी, सदाचारी, धीर-शम्भीर और वीर होता है। यदि कोई भी मनुष्य विज्ञान का विचार रखकर उचित मात्रा में स्वर विज्ञान तथा साथ में प्राण विज्ञान इन दोनों का अध्ययन मनन एवं अनुसरण करे तो गृहस्थ धर्म में रहकर भी सासारिक कष्टों के आघातों को हँसी खुशी के साथ सहन करता हुआ दीर्घायु हो सकता है। यन् विज्ञान शिवजी ने पावती जी की जिज्ञासा पर वर्णित किया था कि 'यह ब्रह्माण्ड तत्त्व से उत्पन्न होता है, उसी से पालित है और बाद में उसी में लीन हो जाता है। निर्लेप निराकार सच्चिदानन्द भगवान् से आकाश आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी ये पाँच तत्त्व पदा हुए। इनके विस्तार से यह बराबर ब्रह्माण्डोत्पत्ति हुई। इ ही स शरीर बना है। इस ज्ञान की भारी महिमा है। यह सब तत्वों का शिरामणि ज्ञान है। सत्य का निश्चय कराने वाला नास्तिकों को आस्तिक बनाने वाला तथा योगीजनों का आधार ज्ञान है। इसके ज्ञान से प्राणी सबज्ञाता बन जाता है। इसी में वेद शास्त्र और रहस्यमय ज्ञान विद्या है। जिसमें मनुष्य इस ससार में सुखी रहकर परलोक में भी सुखी स्थान पा सकता है। इसके बल से शत्रु नाश लक्ष्मी प्राप्ति देव सिद्धि, इच्छित वस्तु और ठीक समय पर मल मूत्र विसर्जनादि होना है। इसके बिना मिथ्या भ्रम और अज्ञान मोह रहता है।

पक्ष लगत प्रातः उठे, स्वर का कर विचार।

उचित भाग पर जो चले, अमृत सुख का मार॥

कालू में बाबा भानीनाथ जी की प्राचीन जगह होने से यहाँ योग नान की सतत टिमटिमाती ज्योति ज्वलित रही है। वतमान में भी यहाँ पर श्री सेवानाथ नाम के एक योग विद्या के जानकार सन्त थे। उसी आत्मज्ञान की प्रक्रिया के सस्र से प्रचलित आजकल श्री बालदास (बडा), किसनदास, लिखमणाराम कानाराम, रघाराम और हनुमानमल आदि साधक, सत्त्व ज्ञान में साधनारत हैं। ये स्वर नान के द्वारा दैनिक साप्ताहिक, मासिक और वार्षिक फल की जाँच करने में लगे रहते हैं। तिथियाँ व क्षय और वृद्धि का नियम अपने स्वर विज्ञान की सहायता से करते हैं। यह एक पहुँच की बात है।

इनके नान मुताबिक शीघ्र स्नान, भाजन मन्त्र आराधना पत्र लिखना, विद्या अध्ययन, पूज और उत्तर दिशा की यात्रा, सवारी खरीदना दवाई खाना आदि काय दाहिने स्वर में करना चाहिए और स्थिर काय—बिबाह, गुरुमन्त्र यागाम्यास, खेती, औषधि बनाना, बाग तड़ाग बनवाना प्रीति दक्षिण और पश्चिम दिशा की यात्रादि के काय बाँये स्वर में करने से दिनमान अच्छा रहता है। किन्तु यहाँ लोगों को इनकी बातें अच्छी नहीं लगती। जमाना बिलक्षण है और नेतावादी भी, सत्य नहीं, शिष्य चाहिए। (साम्प्रदायिकता भी बड़ी भारी है, वह दूसरे का बड़ापन शर्गिल देखने में क्रूर है।)

सष का दिशा घूस विचार—

साम शनिश्चर पूव वासा
मंगल धुष उत्तर निवासा
गुरुवार दक्षिण में राजे
रवि शुक्र पश्चिम निराजे
सम्मुख दाहिने अशुभ जानो
पीछे बाँये शुभ पहिचानो

(मस्कृती)

गाँव चौधरी एवं नेता—चौधरी गाँव का मुखिया उसका पद उच्च उत्तरदायित्वपूर्ण होता है। गाँव अपनी भलाई के लिए चौधरी की ओर हर समय आशा लगाये रखता है। पहले क समय चौधरी के सिर प्रधानता का सेहरा माना जाता था। मानवता में ही पूजता निहित होनी है—हमारे गाँव में ऐसे अनक मुखिए एव पुरान चौधरियों के नाम आते हैं। उन्ही की बुद्धिबल पर कालू का निवास नित्योन्नत रहता आया है। मेला मादारा टीकू का भोषत नदाराम, गोधूराम ज्योषी, जीवण एव इय कालू, हरला गोदारा लामू भादू गिरधारी ज्योषी आदि प्राकृतिक एव राज्य के बुनिदा चौधरी थे। श्री भरदान कोठारी, बीसराज नाहुटा, दीपचन्द डूढाणी, मूलचन्द बंद, सुगन चन्द बारड मोक्षम चन्द बोयरा, किसनलाल यति, भूलाराम पारीक जैसे अय लाग भी जब तक रहे मानो गाँव के भोड व घ मुखिये बने रहे। ये सताधारी की तरह हुकूमत लिए आपसी प्रेम के साथ गाँव सुधार के कार्य कर्त्ता कहलाते। पर जमाना बदला, जगत बदला फूट और फरेव के घये बडे। देश में वृत्रिम चौधरी अपना नाम बदल कर नेता कहलाने लगे। बुरे काम करना अपने आप सीख गये और भले काय एव अच्छे गुणों में बटकर चलन लगे। इन चौधरियों में चारी चुगली और

चाटुकारिता जैसे पाँच चकारी शब्दों की वृद्धि हो गई। बेकार मस्ती के राग से प्रसित होकर नया युग के चौधरी लोग चाटे की चाट में दिन गुजारने लगे। नीयन बिगड़ गई आदत सडियल हो गई। वि० सं० 1996 (ई० म० 1940) के बाद पुगान चौधरियों की स्थिति गिरन लगी और माँ के पेट में ही कोरे जाने वाले अनुभव हीन नता चौधरिया का स्थान छीनने लग। आजादी मागने की अमुकरणीय लहर में एक दो बार मंच पर सुलकर गालियाँ खोल लिए और नना बन गए। धान की प्लासी जमीन की तुम्बापलटी तमा खेत असोट कम्बान का अगवाना मय लोग नाम करने लगे। किन्तु गांव बाबू में सदासे शिक्षा प्रेम रहना आया है। जत यत्न के बहुत से नेता साग बड़े कायकर्त्ता विकासशील नए एवं अनोखे उद्यमो हुए हैं। अतएव श्री गिरधारीलाल झवर, रूपचंद नाहटा, गंगाविशन बागटो, हुकमचंद बाधरा कहेयालाल दुद्धाणी आदि लोग भी केवल राजनैतिक नहीं गाँव के रचनात्मक कायकर्त्ता नता थे। उनकी नतिकता के भाव उदात्त ही नहीं अपितु मनुष्य मान के एकीकरण और समाज व्यवस्था हित थे।

वर्तमान समय में विकास के कामों में कई प्रकार के लोग नेता नाम से ग्राम काम करते दृष्टिगोचर होते हैं। इनमें ग्राम सरपंच श्री गोपाल चंद जवरीमल नाहटा श्री हजारी राम राम प्रसाद रामचंद्र इन्द्रचंद राठी श्री जीवनदास डगरराम मिस्त्री आबूलाल भोजक, धरामी मोहनदाम आदि ग्राम कायकर्त्ता हैं। कतिपय ग्राम पंचायत काय लग्न गील पुरुष और महिलाएँ श्री ग्राम पंच तत्पर कायकारी हैं। अथ कुछ सफेद पोशाक लुप नीति से पद प्राप्ति का शाउण्ड बनाने के लिए फिजूल फिमाद फलाते रहत हैं। अनतिकता का मूल कारण मनुष्य की स्वाध्वत्ति होती है और उमम राक्षसी वत्ति उदिन हो जाती है। तब वह अपने स्थान को भी बण्ट केन्द्र बना देता है। सामाजिक जीवन विपला बनना है तब गाँव में कट बड (लडाई भिडाई) अधिक बढ़ती है। कालू द्वारिका स्वरूप प्रसिद्ध कस्बा है। द्वारिका के छप्पन करोड यादवों की भाँति अब यहाँ के कुछ लोग भी लडाई में अपना नाम अमर करना चाहते दिखाई देत हैं। अब गाँव में गंदी राजनीति और विकृत धर्म बढ रहा है। त्याग की नहीं, तस्करी तूती घोसती है।

किसको दोष दें ऐसा ही समय आ गया है। चुनाव के बाबत जिस प्रकार के नेता चरित्र बने बिगड़े और उनकी सीला हुई हैं, वे सब गभीर चिन्ता के विषय हैं। एमा लगता है पंचायती का अब गाँव और क्षेत्र में सुख सुविधाएँ बनाए रखना नहीं, अपने पंच पद हेतु सत्ता प्रभुता जमाए रखना है। पंच का मतलब उस नीति निपुण व्यक्ति से नहीं रहा जो हर बात में हर समय गाँव और निवासियों की प्रगति विकास विस्तार तथा समृद्धि को सर्वोपरि माने। किन्तु उस विद्रूपक चालाक व्यक्तित्व से है जो गाँव के विकास और सुख को अवनति के गड्डे में गिराकर भी अपने पद को आदर मानता रहे। का अब गाँव को उन्नति की दिशा में अग्रसर करने वाला नहीं रहा पर अपनी पार्टी के लोगों की स्वार्थी व निज इच्छा को गाँव के नामा में अग्रदस्ती भा यत्न दिलवा देने का साधन हो गया है। सिद्धान्त हीन जन प्रमुख है। चरित्रवान मन गौण गिना जाता है। इसलिए एक सरपंच में नागरिक चरित्र याय सिद्धांत और नेतृत्व क्षमता के गुणों की

आवश्यकता होते हुए भी नहीं रही, कुशल तिव्वडम बाबू आदमी होन लग हैं जा अपने दल के लिए गांव के साथ भी व्याय कर सकता हो तथा अपन पद के लिए अपनी पार्टी के साथ भी विश्वासघात करन का जिसमे माह्रा हो ।

एक पक्ष या नेता दूसरे से अधिक आदरणीय माना जाता है ता वह अपन सेवा स्वभाव के कारण । धन तो भ्रष्टाचार से ही कमाया जा सकता है पर चरित्र तो मन की उज्ज्वलता से ही बनता है । आदमी का सम्मान उसके पद, द्रव्य अथवा विलक्षण सूझ-बूझ के कारण हा जाया करता है, परंतु हार्दिकता से नहीं, ऊपरी ढग से होता है । वह पीढियों तक नहीं रहता । यदि चाहे समय के लिए स्थायी भी बना रह ता वह सम्मान, भय तथा लाभ के बावन हाता है । ईश्या एवं बाह्य स्वार्थों की आर मन विषय लगाये रखने से मनुष्य की अंतरात्मा का विकास बिल्कुल व्यवरुद्ध हो जाता है और अंतरात्मा की शक्ति के बिना समस्त ससार को विजय करके भी सत्य शिव सुन्दरम् काय की उपलब्धि प्राप्त करना किसी भी नेता के लिए कदापि सम्भव नहीं हो सकता । मनुष्य का प्रथम धर्म है—भलाई करना । किंतु स्वार्थ में दया का भाव नहीं रहता । साम्प्रदायिकता महानेता को मार डालती है । आजकल श्वान उदर पूर्ति करवान की चेष्टा रखने वाले नेता लोग निरीह जनता के लिए स्वयं सिद्ध, क्लक चिह्न हैं । पडा लिखा व्यक्ति भी लाख सम्माननीय तभी बनता है जबकि वह कच्चे सबा भाव सहित चरित्रवान हो । बुद्धिमान एवं धनवान गांव के उत्तम प्रिय नहीं बनते जितने की शुद्ध सेवा भावी चरित्रवान । स्वार्थी लोलुप और मान बढ़ाई के भुले लोग नाम कमा नहीं सकते, गमाते हैं । रग बदलते हैं और गुल्फ सगठन बनान हैं गांव के रचनात्मक कार्यों में बाधा उपजा कर पापी बनते हैं तथा राजनितिक पार्टी पापण करत हैं । कुछ नेता लोग क्षणिक सम्मान भी पा लेते हैं पर उनका जीवन जहरीला कहलाता है । कालू में एक छात्रावास नय बूए और बडा टकी की महान आवश्यकता है, किंतु इनकी कमी का कारण नेताभा की आपसी ईर्ष्या न हो ।

कुछ सभ्य एवं सरल नागरिक—कालू के खेडा रपट की मृतत आस्थावान एवं पठनगति बनाये रखने हेतु गांव के सीधे सादे कहलान वाले व्यक्तियों को भी हमें न भूल जाना चाहिए । कालू का सरल व्यक्तित्व भी रचनात्मक कार्यों में बड़े एवं गारौरिक सेवा से सदब काम आया है । यह बात मैं ही नहीं, सब लोग जानते हैं । परंतु ऐसे लोगों के नाम काम का अभी तक कोई जिक्र नहीं था । मैंने उनके स्वभाव की मोन प्रवृत्ति को मांका और आपके हाथ तक उन सरल व्यक्तियों का नाम काम पहुँचान का प्रयास किया है । वि स 1996 ई स 1940 स पहने यहाँ गांव कार्यों में काम आने वाले कुछ व्यक्तियों के नाम इस प्रकार हैं—स्व श्री रामनारायण जी खाडल जो 'शर्मा जी' के नाम से प्रसिद्ध थे गांव के तार बाँचन तथा कानूनी सलाह आदि में प्रथम सेवा भावी महानुभाव थे । ठा० गणपत सिंह रावजीका और जमनाराम जी कर्वा जम जात सभ्य एवं भले व्यक्ति थे । स्व० श्री ननकराम जी खाडल भी बड़े धार्मिक एवं सामाजिक व्यक्ति थे । स्व० रावतराम जी (पुत्र कालूराम जी) सेवक सयान व्यक्ति कहलाते थे । स्व० कोडाराम जा सुई वाले और नानूराम जी खाडल भी समय के भले व्यक्तियों में गिन आते थे । य दाना मज्जन सन् 1954 55 में स्व० गिरधारीलाल जी शर्मा सरपच के

साथ ग्राम पचायत में पच थे। स्व० श्री चम्पालास जी, नाहटा गाँव के एक सज्जन पुरुष थे। वे अपने घर मजदूरी पर काम करवाते, तब पूरी मजदूरी देन और अपने घर से गौरी बगरह भी खिला देते थे। कभी रुदा मजदूरी कारीगरों को पुरस्कृत भी देते थे। वे अपने व्यापार में कभी किसी के साथ घोखा घड़ी नहीं करते और उपयुक्त कमरेट पर माल वसत थे। उनकी मास्य श्री वि. ग्राहक की मल का वे वर्षों बाद वापिस लौटा कर सुधार देने थे। उनकी बोली और मुस्कान बड़ी मधुर थी।

श्री हसराम आय और भुक्चरण पटवारी भी भले मनुष्य के रूप में यहाँ रहे। स्व० जेठाराम जाणी और लेखूराम घिटासा धार्मिक कार्यों में आगे रहते थे। किंतु मालूराम मारम्बत और गोपालदास (पुत्र जीवणदास) किमी ब्रो-डाकू से लुट जाते बने व्यक्ति की पूरी मदद करते थे। ऐसे आसूराम जाणी और मूलाराम मूड पशुओं के बड़े अच्छे हेतकी थे। स्व० महंत श्री मेघदास जी और गोविंदराम जी यति गांव में नाटी देखने और दवाई देने में बड़े सेवा निष्ठ जादमी थे। उस समय इनका गाँव में भारी सम्मान था। स्व० जीवणदास जी बरानी (कालेरा) भी भले सीधे एक सरल व्यक्ति थे। सिर्फ बाक पटुता से कालूराम चर्मा के साथ राम भादू किसी की विगदगी पचायत में फौरन भगड़े सलटा देते थे। श्री भूगणम सारस्वत एक सम्य दूकानदार थे।

वर्तमान समय में आसकरण जी डूढाणी, रावतमल जी कर्वा निहाल बड़ डूढाणी रायतराम पारीक, तोलाराम जी सिंधी, मोहनलाल बागड़ी रामकिशन जी खडेलवाल ओकारमल राठी, हीरालाल नाहटा, बशीलाल बिरमेचा श्रीचंद कोठारी जेयानाम खल्लवाल, रामरिवराम पारीक, रतनाराम जी गोदारा, आसूराम नण लामूराम पटवारी भागीरथ मदनलाल सारस्वत, जुगराज सस्वर्ता प्रभति कस्बे के सम्य एवं सरल नागरिक हैं। हरिजनो में सुजगराम मेमबान विनम्रता का व्यवहार करने का वास गोदारान का वासिदगान है।

प्राचीन समय के स्वामी सेवक-भाव—

प्राचीन काल में दूर-दूर तक काराबार करने वाले बालू एवं आम पाम के धनी पुरुष अपने व्यापार विस्तार हेतु मुनीम भुमास्तो ठाकुर जमादार, चौकीदार मजदूर और दलाल बक्रील आदि लोगों को साल दरमावा देकर रखा करते थे। उनकी काय-भार सम्मलते समय ईश्वर की साक्षी से शपथ दिलवाते और धर्म ईमान से काम करने के बचन लिया करते थे। सेठ और मुनीम भुमास्तो के बीच सत्य काज की सत्य रूप, लोम लालच न करने की पाबंदी के पत्र में दस्तखत अँगूठे हुआ करते थे। सेठ लोग आपसी लेखा पढ़ी के बाद नौकरी देते और नियुक्त व्यक्ति को किसी एक जगह दुकान पर मास व्यय देकर भेज दिया करते थे। ऐसी नौकरी पर जाने वाले सब व्यक्ति मालिक सेठों के प्रति बड़े उत्तरदायी हुआ करते। वे लेन देन, हँडी चिट्ठी, उधाही पनाई सौदा स्पष्टता भीमा विवरण माल व जोखिम की नोंध तयार करने तलपट बनाने व्यापारिया दलाला, आडिनियो आदि के हिसाब लेन देन जवाब, लदान का सम्पूर्ण काय सत्य मन से मीमांस प्रण महित पूरे किया करते थे। उनका व्यापार कुशल जीवन मालिक के काय हित रात दिन प्रस्तुत रहा करता था। उनके निय हुए काय की मारी जिम्मेदारी

मालिक मेठा की मानी जाया करती थी। मालिक की आग से, उह भाजन वस्त्र, आवास-आवागमन दवा पानी और साबुन तेल आदि फुटकर खर्च फी हुआ करता था। उनका आज की भाँति महीना नहीं, अपितु साल का वेतन माय होना था जो 51 रु० से लेकर 351 रु० तक चला जाता था। उस समय आज की तुलना में रुपये की दलवती कीमत औसतन सवा भी डेढ़ सौ गुना अधिक थी। परन्तु व्यापार के कार्यों में नौकर लोग भी बड़े कुशल लाभप्रिय और हिसाब किताब में चौकस-चमुर इमानदार व्यक्ति हुआ करते थे। सेठ लोग भी उनका अपन परिवार का व्यक्ति मानते तथा उनके हाथ से हुए अथ काम को भी तन मन धन से पक्ष लेकर मायता देने थे।¹

मुनीम, अधिक साल (वार्षिक वेतन) एवं निज्ज कारखारी—मारवाड़ी समाज के सभी धनी परिवारों में घनाजम किया, वह काम अपन दस एवं उत्तम चरित्र वाले पुराने मुनीमों द्वारा ही उनत हाता रहा है। मुनीम एक ऐसा उच्चादश वाला व्यक्ति होता है कि न तो वह स्वयं गड़बड़ करता है और न किसी अथ को अपनी जानकारी में खान देता है। वह मालिक के काम में हर समय रात दिन तत्कालीक सहन करके भी फायदा पहुँचाता है। अपन तुच्छ वेतन के बल पर ईमानदारी के साथ मालिक का धन में घर भरता रहता है। उठ अपने घरों में सात खाने डकारें लेते रहते हैं पर मुनीम अहर्निश परिश्रम पूरक काम कर मेठ की खम बढ़ाता जाता है। आजकल ऐसे व्यक्तियों का मनजर स्तर पर मानते हैं।

कालू में हाशियार और अधिक साल (वेतन) लेने वाले नीचे लिखे पुराने व्यक्ति थे। महेश्वरियों में श्री गनगमल जी राठी (बादसर) चौधमल जी मनिहार, गामाचदजी डूढाणी दीपचद जी और उनके भ्राता आसकरण तथा उनके भाई। हनुमचद जी कवा राजाराम जी कवा हुकमाराग जी खडेलवाल भगवानदास जी यवरा मोतीलाल जी करनाणी रामरिलजी शवर आदि बड़े व्यावसायिक व्यक्ति थे तथा इनमें से बहुत से लोग अच्छी-अच्छी फर्मों में मुनीम भी रहते थे। आसवालों में श्री हरखचद जी, हनुममल जी गोलछा मूलचद जी तोलाचद जी बीजराज जी बंद, बेगराज जी बोधरा, सुगनमल जी तालाचद जी पुगलिया जसकरण जी बोधरा, पनेचदजी डागा आदि लोग अच्छे योग्य व्यापारी कार्यकता थे। ये सभी मुनीम पदा पर रहते थे। उस समय (वि० स० 1956-94) में इनकी साल (वार्षिक आय) अधिक मानी जानी थी जो करीब तीन सौ पौने तीन सौ तक मिलती थी। कालू में घर का काम लाहटो खबरों, बंदो डूढाणिपी कोठारियों, साडी के तथा श्री करणीनान जी बोधरा मेधराज सुगनमल जी बोरड, लिवमीचद जी दूगल, मूरज मल डागा गुमानीराम जी पूगलिया मानीचद लालचद राठी, जमनाराम जी कवा प्रभति लोग बगाल, आमाम में अपने घर का कारबार करने थे। श्री वरणीदान बाधरा की दुकानों में रहने वाले मुनीम श्री सुगनमल जी पूगलिया न सेठ के देहात के बाद नेपाथ बिहार के बागोवार को अच्छी तरह मभाल कर अपन शिष्टु मेठ पतेहचन जी बोधरा को अच्छा सपनि शालीन बना दिया था।

1 सगरदार गहर के बसाली सेठा क बगाल की दुकान में हमारे गांव काल का एक गोलछा व्यक्ति मुनीम था। एक बार किसी व्यापारिक गण्डे में वही उसके हाथ में खून हो गया। पर सेठा न उस वक्त भी उस व्यक्ति को पूरी तरह से बचा लिया था।

वर्तमान समय में यहाँ के योग्य कारबारी हैं—श्री वृद्धिचंद कवा, श्री अलायचंद साह, श्री बाबू राम राठी, लाधूराम नाहटा (पनेचंद नाहटा) श्री दुलीचंद हनुमान मल राठी, बाबूलाल करनाणी, श्री बालचंद भीखमचंद कोठारी, गिरधारी लाल जयचंद लाल बोधरा, पूनमचंद मोतीलाल नाहटा (H) तथा कुछ अ म सेठिया, कोठारी, जवर, नाहटा राखेचा आदि परिवार के व्यक्ति भी यहाँ होमियार व्यापारी हैं। श्री केशरीचंद मदनलाल शिवनारायण डूढाणी, श्री जेठमल नदलाल राठी भवरलाल कर्वा, हनुमानमल डूढाणी, न दनाल खाडल, जय नाथ टूढाणी, जवरी मल नाहटा, जुगराज-नगराज इन्द्रचंद रायचंद नाहटा लूनकरण भीखमचंद विरमेचा, हमाराम, हजारी राम सारस्वत आदि अच्छे स्तर पर ऊँचे व्यापारी एवं बेतन वाल व्यक्ति हैं। श्री इन्द्रचंद राठी इस समय एक चाय बागान का मालिक हैं तथा पध्वीराज बंद कपडे का स्थानीय दुकानदार। किंतु वर्तमान में कालू का श्री मोहनलाल जवर एक उच्चादश श्री पुरुष माना जाता है। मत्स्यनारायण पारीक (D) और रामेश्वर खडेलवाल (A) आसाम में अपना कारबार करते हैं।

कालू से बाहर जाकर बसने वाले धनिक सेठा में श्री दूगरगढ के हरलचंद, महालचंद भाषाणी सरदार शहर में भरुदान पूनमचंद बोधरा आदि लोग वि० स० 1960 के आस पास अपनी अच्छी स्थिति में कालू छोड़ कर बाहर चले गये थे। वि० स० 1998 में कालू से श्री मूलचंद राठी पहले श्री दूगरगढ और फिर सरदार शहर जाकर बस गये। श्री नेमचंद दूगरगढ पीसीबगा एवं श्री तिलाकचंद करनाणी बरेली कम से वि० स० 2006 व 2010 में लगभग अपने भवन बनाकर वहाँ के निवासित नागरिक बन हैं। अब कालू के बहुत से लोग नेपाल, बिहार, कलकत्ता, फरीदाबाद आसाम, बंगाल ब्रीकानेर जमपुर जोधपुर श्री गंगानगर आदि स्थानों में स्थायी अस्थायी रूप से बस गए हैं। श्री माहनलाल पूनमचंद, धमचंद साह लूनकरणसर में व्यापार करते हैं और मोहनलाल पीपलवा घडसाना में कपडे की दुकान करता है। कालू के कुछ गोदारों और जानी जाट अबाहर के आस पास तथा श्री गंगानगर जिले में बसते हैं। इन सभी के भवन व घर कालू में बोलते हैं। तात्पर्य यह है कि यहाँ के बहुत ज्यादा व्यक्ति बाहर रहते हैं।

कलकत्ता ही चाहे कटला, डिपाटमे ट एजुकेशन हा या ईस्ट इंडिया टासपोट, अथवा श्रीगंगानगर ही या गुलाब बाग। कालू का एक नागरिक जाकर जम गया फिर कालू ही कालू दिखाई देने लगेगा। इस तरह से कालू के बहुत से लोग अब बाहर रहने लगे हैं और अपना अच्छा कारबार करते हैं। ई० स० 1981 में जनगणना हुई, कालू की जनसंख्या करीब करीब गिनती में थोड़ा आई जो 10 वर्ष पहले थी। मतलब कालू के करीब आधे लोग बाहर गये हैं और जाते रहते हैं।

कालू का व्यापार, बाजार और दुकानें—गाँव कालू में तीन बाजार एक मंडी और अनक दुकानें हैं। फसल के मीके खूब आमद होती है और काफी लेन-देन होता है। यहाँ का वाणिज्य व्यापार साहूकारों पर चसता है। यह वाणिज्य व्यापार अधिक सरल सुगम और उपयोगी है। सरकारी आफिसों में जहाँ बीसा रजिस्ट्रारों से लेन देन होता है वही हमारे गाँव की पुरानी दुकानों में फक्त चार बहिया व जरिय आसान कर

व्यापार किया जाता है। रोकड़, नकल, खाता तथा एक जमा खच वही।—ये ही चार बहियाँ ऐसी हैं जो कि नियमित रूप से खाता तैयार रखने वाले दुकानदार के लिए हर समय दीपक का काम देती हैं। वही खाता लिखने की पद्धति—

बाम जमा दक्षिण सरच सिर पेटा पर पेट।

ऊपर नाम घनी लिखें हस्त पुनरीं देठ ॥ (राजा टोडरमल)

इनसे माल का स्टॉक लेन देन तथा अ य सारी बातें किसी भी समय जानी जा सकती है। तलाश देखना तो यहाँ की बहियों में इतना सरल कि लाल पैसे का भी फक नहीं पड़ता। आफियों में जहाँ दसों आदमी हिमाच जिताने की ठीक रखते हैं, वहाँ कालू का एक मुनीम पदेन व्यक्ति काफी कायकर्ता होता है। तभी तो कालू में कभी भी इ कमप्लेक्स सेलटेक्स वाले आफिसर दुकानदारा के बही-खाते गलत नहीं बता सकें। यहाँ का व्यापार-मंडल बदनाम नहीं है। व्यापार का जमा-खच करना, हिमाच जोड़ना, ब्याज फलाना जाड़ देना तथा बाकी निकालना आदि काय कालू के लोगों की पुख्ता याद रहते हैं। कालू के श्री बीरराज पूगलिया और लूनकरनसर के श्री तोला चंद बरहिया वाणिज्य व्यापार के गुरु हिसाबों में मदा से माहिर कहलाते रहें हैं। उनकी साहूकारी के लक्षण—

आधा ऊपर आधा तरे, आधा देय साह के गरे।

आधा में आधा निस्तरे, जुग टर जाय साह नहीं टरे ॥ (राजा टोडरमल)

स्व० बादमल पूगलिया मनीष चंद नाहटा तोलाचंद काठारी (कानूनी) वही का काम करने वाले बीजीज व्यक्ति थे। अब आसकरन जी बूढाणी, बाल चंद जी कोठारी और सुगनाराम सारस्वत बड़ी के सुधरे एवं सुंदर कायकारी हैं। श्री गुमान दास बरागी खाते का कायकर्ता है।

कालू के मुख्य बाजार का नाम प्रायः सदर बाजार बोला जाता है जो गाँव के बीच चीहूटे में है। राणी मती बाजार तथा नया बाजार भी सदर बाजार के पास ही लगते हैं और लूनकरनसर से सरदार शहर आया कालू जाने वाली मंडक पर रामा मंडी बाजार भी अपने नाम रूप में यथायथा रहता है।¹

1 पुरानी दुकानें जो गाँव के सदर बाजार में हैं—

- | | |
|-----------------------|-----------------------------|
| (1) बीराराम शिवनारायण | (2) हीरा लाल घेवर चंद |
| (3) मांगी लाल घनपतराय | (4) हनुमान राम पुत्र म्हागम |
| (5) धनराज मंगल चंद | |

उपरोक्त दुकानें पुरानी हैं किंतु फर्मों के नाम परिवर्तित हो गये हैं।

2 मेडिकल की दुकानें—

- | | |
|---------------------------|----------------------------|
| (1) रतन मेडिकल स्टोर | (2) जिनेन्द्र मेडिकल स्टोर |
| (3) विजयकुमार प्रतीपकुमार | (4) सावित्री टी कंपनी |

कालू में हर मेडिकल स्टोर को सघ कहने की कहावत प्रचलित है। क्योंकि पहले पहल ग्राम सेवा में बाल न एलोपैथिक दवाइयाँ मगवाकर गाँव में उसी दामा पर विप्री धुल की थी। तभी से दवाइयों की दुकानों को सघ कहा जाता है। (कालू में पहले आयुर्वेदिक दवाइयों की दुकान लेखक की वि० स 1986 से वि० स 2013 तक चलती थी।)

1 यह रामदास बरागी रामनारायण गदारा की दुकानें चलने पर नाम पड़ा है।

3 परचून व गल्ली माल की दुकानें—

- | | |
|---------------------------------|----------------------------|
| 1 चैनरूप बंद | 2 बाल चंद बागडी |
| 3 दुर्गा भंडार (मंगल मल हंसराज) | 4 प्रकाश स्टोर (विजय लोढा) |
| 5 जनता स्टोर (वशीलाल पूनम चंद) | 6 कमल स्टोर (भरूदान लोढा) |
| 7 बाबू लाल रतन लाल | 8 अमित कुमार बोड |
| 9 ईशर चंद रतन लाल | 10 साधूराम शवरलाल बोधरा |
| 11 उत्तम चंद साह | 12 हनुमान शमा |
| 13 कुम्भकरण भासाराम | 14 दानाराम चूनाराम |
| 15 मानक चंद भादानी | 16 पमाराम शगवाल |
| 17 कुम्भकरण दीपचंद | 18 सुरेश जनरल स्टोर |
| 19 हरल चंद पून चंद राठी | 20 जुहारमल विनोद कुमार |
| 21 रामलाल महाल चंद | 22 भुगन चंद सातेड |
| 23 विशन लाल चवर | 24 काशीराम कानदास |
| 25 मागीलाल बोड | 26 साधूराम बोधरा |
| 27 पैमराज बाधरा | 28 मानिक चंद रणजीतकुमार |
| 29 जयचंद लाल बागडी | 30 बागडी स्टोर |
| 31 सोहनलाल शमा | 32 कसास भंडार |
| 33 कमल स्टोर | 34 नाहटा ब्रादश |
| 35 बसंत कुमार मधडा | 36 महावीर स्टोर |
| 37 जन किराना स्टोर कालू | 38 बंद ब्रादश |
| 39 राजरूप ललित कुमार | 40 सुगन चंद सादा |
| 41 लीलाधर पारीक | |

गल्ली माल जगत का काजिल कहलाता है।

4 कपडे के दुकानदार—

- | | |
|-------------------------------|-----------------------------------|
| (1) पृथ्वीराज रमेश कुमार | (2) अज ता कसोब ईम्पोरियम |
| (3) मदन स्टोर | (4) गणेश स्टोर (मानिक चंद कोठारी) |
| (5) राणीसती स्टार (रेडीमेट) | (6) हरखचंद हनुमानमल |
| (7) रमेशकुमार कद्दियालाल साहल | |

5 मनिहारी की दुकानें—

- | | |
|--------------------------|-----------------------------|
| (1) पावती स्टोर | (2) शदीप स्टोर |
| (3) महावीर टी स्टोर | (4) बालचंद काशीराम शवर |
| (5) रेवतमल गोलछा | (6) श्री नारायणी जनरल स्टोर |
| (7) माया भंडार | (8) शवरलाल पुराहित |
| (9) श्री दुर्गा स्टोर | (10) राकेश स्टोर |
| (11) श्री जगदम्बा ट्रेडस | (12) श्री वरणी स्टार |
| (13) विजय कुमार सिधो | |

पहले लेखक की अपने मामा जी के साथ मनिहारी की दुकान थी। दूसर नम्बर में श्री सोहनलाल बुधमल सेवग की दुकान भी अच्छी चलती थी। मनिहारी की दुकान-दारी के सम्बन्ध में प्रचलित पुरानी बात—“मनिहारी की दुकानदारी, पल मार तहसीलदारी।”

6 पान की दुकानें—

- | | |
|---------------------------------|-------------------|
| (1) रूकमान द शर्मा | (2) बंशीलाल सुनार |
| (3) रामा पान भंडार | (4) उदय पान भंडार |
| (5) हरि पान भंडार | (6) कालूराम पारीक |
| (7) पूनम चंद सेवग | (8) रैवत नाहटा |
| (9) चनरूप पान भंडार | (10) बाबा पान पलस |
| (11) पारीक पान भंडार (गम कुमार) | |

7 चाय मिष्ठान भण्डार—

- | | |
|-------------------------------------|----------------------------|
| (1) हड़मानमल मूषा | (2) जगदम्बा हाटल |
| (3) महाकाली मिष्ठान्न भण्डार | (4) बजरग टी स्टाल |
| (5) चोपडा टी स्टाल | (6) सावल राम स्टाल |
| (7) सिर्षिया लाल स्टाल | (8) मासी पनालास होटल |
| (9) मानक चंद का होटल | (10) पूनम चंद सेवग का होटल |
| (11) रामनारायण गोपालराम | (12) प्रभुराम पारीक |
| (13) शंकर लाल नाई | (14) शिव करण पारीक |
| (15) महावीर गुडस ट्रास्पार्ट एजेंसी | (16) पूनम चंद चाटिया |
| (17) रतिराम पीपलवा होटल | |

8 बिजली के सामान की दुकानें—

- | | |
|----------------------|--------------------|
| (1) रैवतमल गोलछा | (2) रतन लाल भादानी |
| (3) राधेश्याम डूढाणी | (4) भवर लाल नाहटा |

9 साग सब्जी और फलों की दुकानें—

- | | |
|---------------------------|---------------------------|
| (1) सावलराम गाधिदगम सिंघी | (2) किस्तूराम मासी की माँ |
| (3) मुमताज अली | (4) मालूराम पारीक |

10 साह लकड़ तथा पत्थर पट्टी की दुकानें—

- | | |
|--------------------------|---------------------------|
| (1) आसकरुण मिषी (लोह) | (2) हजारीराम (लकड़ी) |
| (3) मधाराम (पत्थर पट्टी) | (4) शंकर स्टोर (लोह-लकड़) |

11 सिलाई और कसीदाकारी की दुकानें—

- | | |
|----------------------------|-----------------------|
| (1) नयूराम टेलर (सिलाई) | (2) दुमाराम कसीदाकार |
| (3) कानाराम कसीदाकार | (4) पूनम चंद कसीदाकार |
| (5) हड़मानमल तुलधाराम टेलर | (6) बुलाकीदास दर्जी |
| (7) बुधमल शर्मा | |

इनके अतिरिक्त पाँच नाइया की दुकानें तीन मोचिया की, एक रेग्न की और सात स्वणकार भी सदा से कालू में दुकानें करते हैं। रेहवी खूमचे की दुकानें भी लगती हैं। पूर्णाराम की सलून और नयमल सोनगरा की दुकान भी बहुत पुरानी है। धोवा (आसूराम), तेली (अहमद), सुहार (साजन), सिक्लीगर (बजू) और रंगरेज लखारा आदि लोग कालू में किसी का काय नहीं अटकने देते। यहाँ घड़ीसाज रेडियोबाज (विश्वकर्मा रेडियो सर्विस) और पेट्रोमेक्स वाले भी दुकान लगाकर बैठे हैं। अब दा फोटो स्टूडियो तथा एक वीडियो सटर भी यहाँ खुले हैं। यहाँ सब्जी और चाय की दुकानें अच्छी चलती हैं। गाड़ो के गायरो में हवा भरने वाले भी दुकानें करते हैं। जूतो और चप्पलो की मरम्मत करने वाले भी अपनी अपनी पेटिया द्वारा दुकानदारी का व्यवसाय करते हैं और रिजली बल्डिंग की भी दुकानें चलती हैं।

कालू में पत्थोर मिन्स—जैसे तो आटा पीसने की खराब (पशुआ से चलने वाली चक्की) वि० सं० 1987 (ई० सं० 1931) से गाँव कालू में लग चुकी थी। यह श्री गोपालराम सूतार द्वारा सालूराम सूतार के घर में एक ऊँट से कुछ समय तक चलाई गई थी। इसके बाद वि० सं० 2006 (ई० सं० 1950-51) में रामचन्द्र सूतार श्री झूगरगढ वाले ने तेल से चलने वाली इजन की चक्की मूलचन्द मालू के घर में बटाई और श्री गोपाल राम सूतार ने गाँव के बीच, जो अब श्री दानाराम चुनाराम की दुकान है (लेखक की दुकान के पास) में मशीन की चक्की लगाई थी। फिर सन 1959-60 में श्री धनराज जागिड ने उदय पलार मिल नाम से कई वर्षों तक तेल वाली कल चक्की चलाई थी। श्री जागिड की प्रतियोगिता में सरदार शहर के श्री मोपालराम शर्मा ने झयगे की घमशाला के पास जहाँ की जमीन पर मशीन की चक्की लगाकर करीब दस वर्ष तक बड़ी सफलता के साथ कालू का आटा पीसा था। फिर नयमल पुगलिया हजारी महाराज और खोर्गसिंह (धोरासर वास्ता) ने अपनी अपनी कल चक्कियों से गाँव का पूरा आटा पीसा था।

वर्तमान समय में श्री भदू दान साह¹ नयमल पुगलिया जेठाराम नण, झूगरराम म्याती, मगतूराम सेठिया और रामेश्वरलाल शर्मा आदि लोग अपनी अपनी कल चक्कियाँ से कालू का आटा पीसने में पथक पथक रूप से भरमब भरतन करते हैं। इनके साथ तेल ऋई आदि के पड़े भी हैं। ये सब चक्कियाँ अब विद्युत द्वारा चलती हैं।

कालू में मोटर वस बट्राक्टर और ड्राइवर—पहले आवागमन के साधन में पशु सवारियाँ ही मनुष्य के काम आया करती थी। इन स्थल की सवारियों में हाथी और घोड़े राजा महाराजाओं तथा अमीरों की सवारी मान जाते थे। यहाँ की खाश सवारी में विशेषकर ऊँट स्ट्राई काम आते रहे हैं। (जल की सवारी में नौका पुरानी सवारी है। किंतु नभ यात्रा के लिए विमान का मात्र नाम ही सुना जाता था।)

समय की गति द्रुतगति। ई०स० 1912 के बाद कलकत्ता जैसे बड़े नगरों में मोटर कारों का प्रचलन अधिक होना लगा है। घनिक बम्प, एव राजा महाराजाओं ने पहल पहल इस स्थलीय वाहन का उपयोग किया, जिससे आम जनता को बड़ा आश्चर्य हुआ।

किंतु गाँवा में न कोई राजा महाराजा और न ही धनवान बसते। इसलिए गाँव के लोग किसी परदेशी व्यक्ति से मोटर की घातें मुनकर हँस दिया करते थे। उनका माटर के अपने आप चलन की बात निरर्थक एवं अतर्हनी मालूम होती थी। धीरे धीरे माटर का प्रसार गाँवा तक बढ़ा और लोगों के हृदय में मोटर प्रचलन की कथा सत्य प्रतीत होने लगी।

ई० स० 1930 तक कभी कभार बालू गाँव में नहीं से कोई झूठ दुकान मोटर लोरी आ जाती तब पुग्ने व्यक्ति दशनाथ दूर खड़े देखा करते थे। गाँव में भस्म विदक जाती, ऊँट सहाब चौक चमक उठने और आगें बाढ़ा तथा छता पर चढ़कर देखा करती थी। कई बुजुर्ग घात भी दिया करते थे। गाँव में इस बल (मशीन) की देवी (गाड़ी) का बिना बल ऊँट एवं घाड़ों के खींचे अपने आप चलकर बालू आ जाना बड़ा अजूबा लगता था। महाराजा गंगासिंह जी का पहले पहल माटर पर चढ़े देखकर बीकानेर के ब्राह्मणों ने ता बड़ी धार्मिक आपत्ति उत्पन्न कर दी थी। उन्होंने कहा— 'सूय वशी महाराजा गंगासिंह जी राठौड़, रवड़ के पहिये की गाड़ी पर चढ़ गए, कलियुग आ गया है, धर्म भ्रष्ट हो गया।' पुराने लोग रवड़ के पीते से वशी हाथ बड़ी वाले व्यक्ति को रसाई घर के चौके में प्रवेश भी नहीं करने देते।

बालू में प्रथम बार सन् 1928 में विजय भवन में मोटर कार का प्रवेश हुआ था, जिसकी सारी आवश्यकताएँ कहानी पीछे लिख दी गई हैं। इसी दिनी बालू के पड़ोसी कस्बे श्री झूगरगढ़ में एक दो सठ अपनी मोटर-कार ले आये थे। बालू के कुछ अगले लोग झगर उधर से मोटर देख आते और खूब खबरें सुनाते थे।

सन् 1929 की श्री गिरधारीलाल झगर की वगत गाँव मूढ़वा के लिए मोटर बस में चड़ी। वह 8-10 चक्कर लगाकर लूनकरनसर स्टेशन पहुँचाई गई थी। ग्रामोफोन भी प्रथम उन्हीं के विवाह में ले अपना लाये थे। श्री नृह्यालाल झूठाणी की बरात मोटर द्वारा श्री झूगरगढ़ गई थी। इसके बाद बालूराम साह की बरात और लुमानचंद बोड तथा फिर साधूराम भवर्लाल की बरात भी नौरी के गठके लगाकर लूनकरनसर गई थी।

लेखक के अग्रज स्व० श्री बालूराम जी सस्कर्ता सन् 1929 में मोटर ड्राइवरी प्रशिक्षण के लिए लाहौर गये थे। उस समय वहाँ तीन माह के प्रशिक्षण के बाद ड्राइवरी का लायसेंस दिया जाता था। प्रशिक्षण शुल्क 60 रुपये था। फिर श्री बालूराम जी 1930 में मोटर वाहन महागजकुमार श्री विजय सिंह जी के विजय भवन में रहे। वे उनके समवयस्क थे उतने ही समकक्ष साल में दोना स्वर्गस्थ हो गये। उस समय बालू के निवासी श्री मोहनदास (लेखक के सहपाठी) ने श्री विजय भवन में रहकर ड्राइवरी सीखी और लगभग चालीस वर्ष तक बीकानेर माजीसा की मोटर चलाई। श्री मोहनदास कुछ समय पश्चात बीदासर के निकट दहोवा-जाकर बस गये। श्री मोहनदास पुत्र श्री बुधरदास गाँव बालू में सबसे पहले ड्रावर बने। गाँव के दूसरे ड्राइवर रामचन्द्र पुत्र श्री बालूराम मुनार बने थे जो कि द्वितीय विश्व युद्ध के समय फौज में भरती हो गये थे। सेना में श्री रामचन्द्र मुनार फीजी ट्रक चलाया करते थे, युद्ध के समय वही उनकी मृत्यु हो गई।

गाँव बालू में सबसे पहले बस कंटाक्टर (सन् 1947 जून से) ग्राम पंच श्री बालूराम जी मुसाई हैं। उनके लूनकरनसर से श्री झूगरगढ़ और सरदार शहर स्ट के

सारे काय विश्वास पर चलते आये हैं। उनकी गाँव में बड़ी प्रतिष्ठा है। पच-पचासवीं के कार्यों में भी उनका पूरा सम्मान है। कालू के प्राय पेशेवर डाक्टर उन्हीं की बंपी पर रहकर योग्य बन रहे हैं। अब उनके बेटे पोते स्वयं काम देखते हैं।



प्रासवच श्री लालराम जी बस कटारदार

कालू में बस दूध जीप कार दूधर व मेटाडोर मालिकों के नाम—

मालिक का नाम	बस (मोटर)	दूध	जीप	कार	दूधर	मेटाडोर
श्री लालराम जी गुमाई	2	1	—	—	—	—
, भक्त दास जी साहू	1	—	—	—	—	—
, हजारी राम सारमुत	—	1	1	—	—	—
, हेमराम सारस्वा	—	1	—	—	—	—
स्व० रूपचंद नाहटा	—	—	1	—	—	—
श्री इन्द्रचंद्र राठी	—	—	—	1	—	—
, सतलाल नाई	—	1	—	—	—	—
, रामकुमार सारमुत	1	1	—	—	—	—
, सीताराम सारमुत	—	1	—	—	—	—
, घम चंद साहू	—	1	—	—	—	—
, भवरलाल बंद	—	—	1	—	—	—
, सीताराम खडेलवाल	—	—	—	—	1	—
, गोपालराम कायल	—	—	—	—	1	—
, सोहनलाल सारस्वत	—	—	—	—	1	—
, करणराम मिरासी	—	—	1	—	—	—
, बाबूलाल वर्मा	—	—	—	1	—	—
, मुरजाराम पागीक	—	—	—	—	2	—

श्री रुघुलाल पुगलिया	30	छठा पास
„ बाबूलाल गुसाई	26	,
„ मुखराम वराभी (श्री गगानगर मे)	30	साक्षर
„ देवीराम खाती	34	बी० ए०
„ घमराम पारीक	25	साक्षर
„ सोहनलाल चौधरी	30	दसवी
„ गौरीशंकर नाई	25	5वीं
„ मुखराम धिंढाला	32	निरक्षर
„ मधाराम गुजर गौड	30	साक्षर
„ भूलाराम खण्डेलवाल	40	साक्षर
„ जगदीशदास स्वामी	30	निरक्षर
„ उदाराम सारण	35	निरक्षर
„ बीरबल राम सारस्वत	30	निरक्षर
„ ओमप्रकाश सारस्वत	25	सकण्डरी
„ गोपालराम कायल	35	साक्षर
„ गौरीशंकर खडेलवाल (भासाराम)	22	पाँचवी
„ बनवारी लाल सुनार	30	साक्षर
„ नथमल ढाढी	23	निरक्षर
„ गौरीशंकर खडेलवाल टकटर झाइवर	30	H S S
„ श्रीराम सारस्वत	35	साक्षर
„ चन्द्रलाल स्वामी	30	निरक्षर
„ कुम्भाराम कुम्हार	30	साक्षर
„ देवीलाल नाई (मगनाराम)	22	निरक्षर
„ भवरलाल जोतनी	34	साक्षर
„ हरिकेश जागिड	28	सकण्डरी
„ बलवन्तसिंह सरदार	28	(गुरमुखी साक्षर)

भूतपूर्व बस कन्ट्रॉलर श्री भेरूदान साह सन् 1949-52 तक लूनकरन सर से कालू रूट मे श्री लालूराम जी गुसाई क प्रतियोगी रहे। लूनकरनसर से श्री हूगरगढ रूट मे श्री लालूराम जी गुसाई के श्री धानमल सवग तथा काशीराम ब्राह्मण प्रतियोगी रहे। श्री हूगरगढ रूट के सवप्रथम बस कन्ट्राक्टर श्री धानमल सवग थे। वर्षों उपरांत श्री भेरूदान साह श्री धानमल सवग तथा काशीराम ब्राह्मण की मोटरें चलनी बंद हो गई, जब कि श्री लालूराम गुसाई की बस वर्तमान समय मे भी लूनकरनसर से सरदार गहर बाया कालू रूट मे निरंतर चल रही है। इस समय लूनकरनसर से सरदारगहर बाया कालू रूट के अथवा थप कन्ट्राक्टर श्री लक्ष्मणसिंह हनुमानसिंह राज पुरोहित तथा श्री गिरधारीलाल मिस्त्री हैं। सरपंच सवाई के श्री लक्ष्मणसिंह पुरोहित की इस रूट मे तीन बसें चलती हैं। और श्री गिरधारी लाल मिस्त्री की दो बसें हैं। लूनकरनसर से श्री हूगरगढ बाया कालू रूट मे इस समय श्री किशना राम नाई की दो बसें चलती हैं। इस रूट मे कालू निवासी श्री रामकुमार सारस्वत भी अपनी बस कुछ समय तक चलाकर

श्री विशनलाल नाई के रूट प्रतियोगी रहे हैं। एक बस श्री परसराम जी जासी नागौर वालों (वर्तमान सुजानगढ़) की R R K 3846 लूनवरनसर मे बाया कालू सरदारसहर चलती है। जिसका ड्राईवर देवाराम लाटा और कंडक्टर श्री चेताराम हैं।

अध्यापक, प्रगतिवान तथा पटवारी

इस नस्बे की मिट्टी और जनवायु ने यहाँ अनक उत्तम जन उपजाये हैं, जिन्होंने योग्यता के बल शिमा सन्मन रहकर अपनी बहुमुली प्रतिमा का परिचय दिया है। उनके नुष्ठेक पद परिचय बता देने भी प्रासंगिक है।

वैसे ता कालू की ढहरी (भूमि) सदा से सौभाग्यगामा रही है कि यहा के पटेल, पंडित मेठ और जन साधारण पूब प्रसिद्ध हैं। किन्तु वर्तमान समय मे भी राज्याधिकारी काफी नवयुवक कायरत हैं। इनमें सहायक जिनायोग विश्वविद्यालयी व्याख्याता डॉक्टर इजीनियर सीनियर टीचर और एडवोकेट आदि अपनी व्यवहार सस्कृति से गाँव का नाम ऊँचा कर रहे हैं। इन सबके सक्षिण परिचय यथा स्थान दिये हैं। यहाँ मास्टर एवं पटवारियों के नाम ज्यादा हैं और नवम पहले मविस लगन वाले कालू के जय नवयुवकों के भी।

पुनः एक नवयुवक का नाम देखा जाये।

महाराज साहब

*नाम
(सिमावेष्ट)*

*पुनः एक नवयुवक का नाम देखा जाये।
मे देखा जाये। पुनः कीये जिसे सर्वोच्चतम लक्ष्य
सिमावेष्ट जाये। देखा जाये। लक्ष्य सिमावेष्ट
देखा जाये। मे देखा जाये। १०-१-२०१५*

१. लक्ष्य सिमावेष्ट का सर्वोच्चतम
२. लक्ष्य सिमावेष्ट का सर्वोच्चतम
३. लक्ष्य सिमावेष्ट का सर्वोच्चतम
४. लक्ष्य सिमावेष्ट का सर्वोच्चतम

*33/10/15
Dr. D. S. D. S. D. S.*

उम्मीदवार से प्रमाण-पत्र मागे गए।

सबप्रथम (वि० स० 1995 96 ई० स० 1940 में) इन पवित्रता का लेखक अपनी तहसील लूनकरनसर का पहला अध्यापक है और फिर श्री साधूराम पारीक । उसके बाद श्री सत्कर्ता के छात्र परम्परा में श्री गोबधनलाल (1955), श्री सीताराम शर्मा (अगस्त 1957), श्री अमृताराम (1959), श्री वशीलाल (1958), श्री भागीरथ शर्मा (1967), श्री जीवराज (1963 64), श्री तीवराज (1973) तथा पदमाराम पारीक आदि अध्यापक हैं । श्री अनाराम (1973), श्री जसाराम ज्याणी (1977) और श्री सीताराम सोनगरा आदि के नाम भी इस स्थान पर आते हैं । यहाँ के अध्यापकों की चिन्तन प्रवृत्ति सदैव निष्ठा एवं उत्साह पूर्ण रही है । ये सब अपनी एक अलग भवा, रूपाति एवं उन्नत कौशल की चाह रखते आये हैं । इसलिए कह सकते हैं—कालू में जन्मे और बने अध्यापक शिक्षा के दीपक हैं ।

कालू शिक्षा शाला-नदी से अध्ययनोन्नत निकले प्रबुद्ध नाले, जो कला साहित्य, ज्ञान विज्ञान, दशन समाज और स्वाधीनता सरक्षणता तथा नीति निपुणता सहित अपना नाम प्रख्यात कर रहे हैं ।

- 1 श्री धमचन्द शर्मा (जन्म 7 दिसम्बर, 1928)—डिस्ट्रिक्ट जज जयपुर सन् 1939 40 में प्राइमरी पास करके निकले ।
- 2 श्री हनुमान मल इटाणी (ज म स० 1987) मिल सफ़्टवेयर की गजेज मैनेजमेन्ट-रिंग क० लि० कलकत्ता । सन् 1941 में प्राइमरी करके गाँव से पढ़ने शहर गया ।
- 3 डॉ० बी० एन० रमन प्रोफेसर शरीर क्रिया विभाग (फिजियोलॉजी) मडिकल फ़ैकल्टी खारसूँ मूनिर्वसिटी सूडान । सन् 1954 55 में मिडिल उत्तीर्ण होकर निकला ।
- 4 श्री नन्दलाल राठी, कुशल एवं प्रतिष्ठित व्यापारी । धार्मिक एवं प्रबुद्ध विचारों का व्यक्ति, 8 सितम्बर से 27 सितम्बर 1983 तक यूरोप की यात्रा करके आया । यह पश्चिमी देशों में हर राम हरे इच्छा तथा वदिक दशन के प्रचारकों द्वारा आयोजित की गई थी । श्री राठी की यह यात्रा जापान एयर लाइन्स के हवाई जहाज (जम्बोबैट) द्वारा पालम हवाई अड्डे से आरम्भ होकर रोम, इटली स्विट्जरलैंड फ्रांस इंग्लैंड हालैंड जर्मनी आदि देशों में प्रत्यक्ष दर्शनी विचारक के रूप में बहुत गान बढ़क रही । आठवीं पास होकर बढा ।
- 5 श्री जुगलकिशोर नाहटा, रिजिनल मनेजर । ईस्ट इंडिया ट्रांसपोर्ट एजेंसी, दिल्ली । सन् 1958 59 में हायर सफ़्टवेयर करके बाहर गया । राज० हरियाणा पञ्जाब जम्मू कश्मीर, दिल्ली, नाथ यू पी का रिजिनल मनेजर ।
- 6 श्री साधनचंद साह, बक मनेजर, नाहर । सन् 1956 57 में कालू स्कूल से पढकर बढा ।
- 7 श्री अमनाराम शर्मा (ज म स० 2004) बरिष्ठाध्यापक हायर सफ़्टवेयर स्कूल नापासर । सन् 1959 60 में हायर सफ़्टवेयर करके निकला ।
- 8 श्री आकाशमल राठी (ज म स० 2004) उप सरपच । मृदुभाषी व्यवहार

कुशल, समाज सेवी तथा प्रसिद्ध लोकप्रिय । सन् 1963 म हायर सकेण्डरी करके निकला ।

- 9 सुश्री विजयमाला जी (ज म स० 2007) पुनीत चरित्रात्मा माधवी । सन 1962 63 मे कालू स्कूल से प्राइमरी बरक पारमाधिक शिक्षा संस्था सीडी से 1969 म प्रशिक्षित दीक्षित हुई ।
- 10 डा० किरणचंद नाहटा (ज म सन् 1946) प्रवक्ता राजकीय महाविद्यालय सरदारसहर । वहाँ की अनक संस्थाओं मे कार्यकर्ता । सन 1963 म गांव की हायर सकेण्डरी से दीक्षित हाकर बढा ।
- 11 श्री बशीराला खाडल—उप प्रबंधक राजस्थान वित्त निगम जयपुर । सन 1963 मे कालू से हायर सकेण्डरी उत्तीर्ण करके बढा ।
- 12 श्री सोहनलाल बाढ—ए सी ए कसबस्ता (जम स० 2003) । सन् 1963 म कालू हायर सकेण्डरी उत्तीर्ण करके बढा ।
- 13 श्री जोराराम गिया (जम सन् 1947) प्रवक्ता राजकीय महाविद्यालय सरदार सहर । वहाँ बहुत सी संस्थाओं मे कार्यसलग्न । गांव से सन् 1965 66 मे हायर सकेण्डरी करके गया ।
- श्री सोहनलाल बोधरा (ज म सन् 1952) आर ए एन , प्रशासकीय सेवा मे कार्यरत, थागगानगर । सन् 1968 69 मे हायर सकेण्डरी होकर ऊँचा बढा ।
- 15 श्री बच्छराज कोठारी एडवाकेट बीकानेर । सन् 1962 में रा उ मा विद्यालय कालू से हायर सकेण्डरी करके बीकानेर पढा ।
- 16 श्री शिवराज मस्कर्ता, एम ए , एडवाकेट । सन 1972 मे हायर सकेण्डरी करके आगे बढा ।
- 17 श्री सीताराम खाडल मुद्रा परीक्षक भारतीय, रिजर्व बैंक जयपुर । सन 1970 म हायर सकेण्डरी करके गया ।
- 18 डा० ओमप्रकाश मेडिसियन डॉक्टर, सीकर । सन् 1970 मे सकेण्डरी पास करके बीकानेर पढने लगा ।
- 19 डॉ० अमोलखण्ड गोलेछा (जम सन 1955) रा० भ्रमणशील चिकित्सालय लूनकरनसर । (जम सन 1970) कालू हायर सकेण्डरी स्कूल स आगे बीकानेर पढा ।
- 20 श्री तीधराज सस्कर्ता तहसील पंचायत समिति मे गांव कालू का प्रथम एम ए अध्यापक । सन 1969 70 म कालू स हायर सकेण्डरी करने के पश्चात ।
- 21 श्री शुभकरण नाहटा, मनजर दुग्ध उत्पादक समिति राजस्थान कार्यालय जयपुर । सन 1969 से बाहर जाकर बना । बीकानेर वालो के लिए श्री नाहटा शुभचि तक जयपुर प्रवासी है ।

कालू स्कूल से (बाहर के) पढकर गये हुए छात्रो मे से श्री रामेश्वरलाल, मुकुनाराम आदि अनेक वकील बने हैं । आफिसर और धनवान भी बहुत हुए हैं ।

रा० उ० मा० विद्यालय बालू मे गहर गये, उच्च पद प्राप्त अध्यापका व नाम है —

स्थान से	नाम	पद	सीधे प्रान्त त हुए	पद पर गये
रा० उ० मा०—	रामकुमार पाण्डेय	(ब० अ०)	जससमेर	(प्र० अ०)
वि० (बालू)				
"	कृष्ण माहन व्यास	(ब० अ०)	इंटरमिडिएट गुरा आफिसर	(बगाल)
"	सदमीनारायण मिश्रा	(ब० अ०)	एस० डी० एम०	(राज०)
"	मुन्दरलाल धानवी	(ब० अ०)	जससमेर	(प्र० अ०)
"	गोपाल चन्द्र चतुर्वेदी	(ब० अ०)	अनूपसर	(प्र० अ०)
"	रामचन्द्र सोनवी	(ब० अ०)	मेहरासर (उ०)	(प्र० अ०)
"	महाधीर प्रसाद	(ब० अ०)	नागौर का गाँव	(प्र० अ०)
"	गोविन्दलाल व्यास	(प्र० अ०)	टान, जिलाशिक्षा अधिकारी	
"	बनल कानसिंह	(प्र० अ०)	T T कॉलेज (बीका०)	प्रवक्ता
"	सत्यनारायण भापुर	(प्र० अ०)	T T कॉलेज (बीका०)	प्रवक्ता
"	चन्द्रकांत शर्मा	(ब० अ०)	T T कॉलेज (बीका०)	प्रवक्ता
स्थान से	नाम	पद	स्थानांतरण श्रुतिलिखित	(पद)
			प्रोनत हुए	

रा० प्रा० वि०—मुन्दरदत्त शर्माबालू (स०अ०) डूंगर कॉलेज (बीका०) सस्कृत विभागाध्यक्ष

रा० उ० मा०—अरू दान धारण (प्र० अ०) गगानगर जिला शिक्षा अधिकारी
वि० बालू

"	दिवाकर शर्मा	(स०अ०)	डूंगर कॉलेज (बीका०) सस्कृत के प्राध्यापक
"	आर० के अग्रवाल	(ब० अ०)	मा सि बोर्ड राजस्थान में अधिकारी
"	मोती सिंह राठौड	(ब० अ०)	जयपुर आचार्य
"	हरि गोपाल	(ब० अ०)	बीकानेर (प्र० अ०)
"	दुलीचन्द स्वामी	(ब० अ०)	जज्जू (प्र० अ०)
"	बनवारीलाल शर्मा	(ब० अ०)	दूधवा खारा (प्र० अ०)
"	गौरी शंकर जोशी	(ब० अ०)	मोमासर (प्र० अ०)
"	माधोराम चौधरी	(ब० अ०)	रासीसर (प्र० अ०)
"	उत्तम सिंह	(ब० अ०)	पीलीववा (प्र० अ०)
"	हरफूल सिंह	(ब० अ०)	गगानगर जिले में (प्र० अ०)

स्थान से नाम पद स्थानांतरण श्रुतिलिखित प्रोनत हुए पद

रा० उ० मा०—अचल सिंह (ब० अ०) विद्यालय (प्र० अ०)

वि० बालू रामनारायण चौधरी (ब० अ०) नापासर (प्र० अ०)

" मोहम्मद सदीक (ब० अ०) उदासर (प्र० अ०)

" प्रेमरतन आचार्य (ब० अ०) छतरगढ़ (प्र० अ०)

" श्याम मुन्दर स्वामी (स० अ०) RTS परीक्षा उत्तीर्ण हुए

" भूलचन्द स्वणकार शिक्षा वि० कार्यालय में बड़े बाबू हैं।

" गिवलहरी नागर व महात्मा आदि भी (प्र० अ०) बन हैं।

" महादेव प्रसाद शिन्हा वि० में अधिकारी।

पटवारिया में कालू के श्री मोहनलाल पागीक सबसे पुरान राज्य कमचारी हैं। मोहनलाल पहले पहले ठिकाना छत्रगढ़ के पटवारी (ई० सन् 1942) में बन थे। इसके बाद ठिकान न रहने के कारण ई० सन् 1950 में राजकीय पटवारीक पद पर परिवर्तित हो गए। अब तीन साल से श्री पारीक सेवानिवृत्त हो गए हैं। श्री लामूराम में नि अध्यापक का जेष्ठ पुत्र श्री हनुमानमल पारीक श्री मयानगर जिले में पटवारी है। श्री लामूराम नण आर सी पी तहसील लूनकरनगर में पटवारी है। श्री बाबूलाल पारीक साढ़े साल पहले पटवारी बना है। (श्री गिवराज मस्कर्ता ई० स 1969 के पटवारी प्रशिक्षण में उत्तीर्ण होकर नियुक्ति आर्डर लाया, लेकिन वह अपनी रुचि विपरीत तबिस में नहीं जा पाया। कालू के पटवारी लोग बड़े सम्य एव व्यवहारिक पुरुष हैं। अपन हलवे की जमीन और उसकी भालगुजारी का पूरा खयाल रखते हैं। सारे राज्यादेष्टि कार्यों में चपल, चुस्त व होशियार रहते हैं।¹

ई० सन 1941 में स्व० श्री जयनारायण पुत्र चेताराम जी पारीक ने श्री डूगर कॉलेज बीकानेर के प्रथम बच (Batch) से एफ० ए० की थी। स्व० श्री जयनारायण को तीस रुपये माहवार पर शिक्षा विभाग बीकानेर का डाइरेक्टर श्री जुगलसिंह खांची ने अध्यापक पद के लिए नियुक्ति पत्र दिया था। मगर श्री पारीक शिक्षा विभाग में न जाकर उसी साल बच की तबिस में चला गया। वह पहले पहले पारीक बच में लगा था। स्व० श्री सुरजाराम पुत्र श्री कोठाराम पारीक भी उसी बच बीदासर के स्टेट बक बीकानेर में बलक बना था। मोहनलाल पटवारी का लड़का दुर्गादत्त राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की सेवा में बस का ड्राइवर है।

श्री भूदान ओषा ग्राम पंचायत कालू में प्रधान सेक्रेटरी का पद पर नियुक्त है। ओषा इस काम के लिए बड़ा योग्य एव अनुभवी व्यक्ति माना जाता है। जमीन का हा-याय का हा तथा किसी निर्माण हेतु कोई रचनात्मक काम चलता है या भूदान की जानकारी तथा पटुता की सब स्थानों पर प्रयोज्यमान रहती है। मैं तो कालू के विकास कार्यों बाबत श्री ओषा का पुरोहित मानता हूँ कि वर्तमान समय में उसी के द्वारा सारे गांव के भवन निर्माण कार्यों में नाप नक्शे का श्री गणेश ओषा के हाथों से होता है तथा ओषा द्वारा गांव का मानचित्र भी बनाया जा चुका है।

देवीलाल छाण्डल देवीलाल खानी तथा जुगलज सस्कर्ता यदि सरकारी कम-चारी हैं। श्री मोटाराम ज्याणा कालू ग्राम सेवा मण्डली समिति में व्यवस्थापक है। मूलचंद गर्मा और बाबूलाल पाठाण दुग्ध उत्पादक समिति में हैं। श्री गोवर्धन सोनी सहायक अभियंता और इन्जिनियर बनाने की कनिष्ठ अभियंता (सा० नि० वि०) क्रमश बीकानेर और नोहर हैं। सुनील कुमार विरमेचा स्टेट बक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर (कालू) में केगियर पर पर नियुक्त हुआ है। दबदर काठारी और निमल नवलखा भी बक एव कोट में (क्रमश) बाबू हैं। श्री रघुवीर सिंह चौधरी अनुभवी ग्राम सेवक कालू का ही नागरिक है।

अपनी रुचि से दुबारा कालू जाने वाले कमचारी—

- 1 गिरदावर—सब श्री बजनाथ, जयनारायण, खेमचंद।
- 2 पटवारी—हमराज आय अमरजी अस्लादीन।

- 3 वनात थानेदार—इसूवा। डॉक्टर—नथमल दूगट ।
- 4 कम्पाउंडर—बनेसिंह, क हैयालास ।
- 5 धरिष्ठ अध्यापक—प्रेमरत्न, वान सिंह, माहम्मद सद्दीक, वनवारीवाल,
रामचंद्र, प्रियाम भुदर ।
- 6 ग्राम सेवक—रघुवीर मिश्र ।
- 7 प० सफेदगी—भरूदान
- च० श्रे० मेडिकल वि०—मयूगम आदि ।

उत्पादक अन्न दूध और ऊन—कालू म अनेक गृहस्थ व्यक्ति क शीटाम्बिक तथा सायजनिक जीवन के रूप म लेती क काय का अधिग्रह महत्व दते आये हैं । अपना भारतवर्ष कृषि प्रघात देग है जिसकी सारी आर्थिक उ नति लेती पर ही निर्भर रहती है । अत गाँवा में प्राय लोग लेतीहर होने हैं । फिर भी अन्न उत्पादन म बहुत से गाँव अभी तक आत्म निर्भर नहो हा पाये हैं । कालू म अन्न की ही लेती होती है और उसके लिए धन धा य की कमी न पडने मे लेती करने की अच्छी व्यवस्था बनी रहती है । परंतु यहाँ सिंचाई की सुविधा न हाने मे कपा के अधीन रहना पडता है । वर्षा हो जाने पर भी फाके टिड्डी और वातरे जैसे फसल के कीड़ा का प्रवाप बन जाता है । यहाँ के किसानो को पूरी तकनीकी जानकारी भी नही है । लेकिन कुछ किसान ऐसे हैं जा अपने इस पशुक पेशे को हर साल जी जान स सफल करन का प्रयत्न करते रहने हैं । ऐसे लोगो म ईशरराम पुत्र श्री कानाराम गोदारा कालू मे प्रथम श्रेणी का किसान है । ईशरराम के सुधारे हुए लेत नाली के लेता की हाठ लिए हुए रहत हैं । बीज भी वह पयाप्त तीर पर छँटवा रखना है । उनके लेती के औजार और छटवे ऊँट सहाइ देखन योग्य हान हैं । इसलिए कालू म ईशरराम सबसे अधिक अन्न उपजाता है और उनके घर अन्न के कोठे भरे रहने हैं । वह कभी मजदूरी आदि कार्यों मे भाग नही लेता ।

कालू दुग्ध उत्पादक समिति म गुरु हाने से आज तक सबसे अधिक दूध दन याता व्यक्ति भी ईशरराम गोदारा है । इसलिए श्री गोदारे का विशेष उद्यमी एक उत्पादक कहा जा सकता है । इस तरह के किसानो म पहले रतनाजी गोदारा भी बडा उद्यमी और अन्न उत्पादक था । मगर अब उसकी स्थिति पहले जसी नही है ।

कालू मे अनेक किसान ऊन उत्पादक भी हैं । यहाँ की ऊन के भाव कभी कभी हजार रुपये मन तक गाने ढाई हजार रुपये बिबटल के हो जाते हैं । यहाँ की ऊन छपर सोज की ऊन जमी होती है और एक बघ सीजन की 40 बिबटल तक उत्पादित होती है । सीजन चैन आषाढ और कार्तिक तीन बार हानो है । कालू के इन ऊन उत्पादको म श्री बरनाजी नण के बेट ही अपने इस पशुक पेशे मे मुख्य हैं । इस काय म पहले यहाँ श्री सुखानाम जाणी व फिर रामरतन भादू का नाम था । श्री आयूगम और उसके चारा भाई अलग स अपने अपन खेवड (रेवट) रखने हैं । किसी किसी के पास तो सहस्र सहस्र तक ऊन उत्पत्ति की खानें भेडे एव बकरियो के जानवर हैं । यहाँ की भेडे अच्छे लाप देती है । इसलिए उबत घराने म काफी ऊन उत्पत्ति हावी है और मार भाई मनानादि से अच्छे मालदार हैं । अत कालू म इस समय नण परिवार नेह नीति से सब भाँति विशेष सम्माननीय ज न व ऊन उत्पादन हैं ।

1 श्री और ऊन के पुराने व्यापारी—कालू में पहने धी और ऊन के व्यापारियों में श्री मालूराम सारस्वत गोपालनाथ बरागी, गणेशा गोदारा, गिरधारी जाँणी और मुगता राम पारीक थे। उनकी धी की कुपिया और ऊन की बरकियों की ऊँटा की कतारें सदी हुई चलनी थी।

कालू के जागरूक बाकपट्ट एव हास्य प्रधान व्यक्ति—कालू के निवास का महत्व कई दृष्टियों से बहुत ही महत्वपूर्ण माना जा सकता है। पहला मोठे पानी की बट्टायात के दृष्टिकोण से दूसरा स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से तीसरा मुख्य धार्मिक दृष्टिकोण से और चौथा बाकपट्टता तथा हास्य परम्परा के लिए। हम लोगों की सारी जिंदगी हवा के माफिक गई, हँसते बोलते मजाकिये मनुष्या के साथ। 'किस किसके नाम बताये?' कालू के प्रायः बहुत से लोग मानवता के परम मित्र हैं। उनमें हँसने बोलने का महान् माधुर्य गुण रहता आया है। इसी गुणोचित वाय से वे उन्नत हैं और उनकी मानसिक व शारीरिक क्षक्तियाँ प्रकुल्लित रहती हैं। हास्य, प्रेम का प्रतीक होता है। यह प्राणी की एक मात्र प्रतिक्रिया है जो प्रायः अपनी बाह्य एव आंतरिक परिस्थितियों द्वारा व्यक्त होती है। यद्यपि भडाण की तहसील लूनकरनसर, अनेक आवश्यकताओं के लिए अभाव भरा स्थान कहलाता है और उसी लूनकरनसर तहसील का गाँव कालू है। वह तहसील के एक कोने में बसता है और यातायात के साधनों से बिल्कुल वंचित रहता आया है। वहाँ न नहर है, न ही रेल। विकास के आधुनिक साधनों से काफी दूर रहकर भी तहसील का वह अग्रणीय गाँव कहलाता है। शिक्षित बुद्ध, जागरूक और अटकल-वान-बुद्धिवाला यहाँ के व्यक्ति होने हैं। उदाहरणार्थ यहाँ रामनरसी बि स 1992 ई० सन 1936 में श्री मेधा सदन सरस्वती पुस्तकालय स्थापित हो गया था। जबकि श्री हृदयगढ मोमासर नापासर लूनकरनसर सूरतगढ आदि, कस्बों के लोग उस समय इसके लिए आग्रहवादी बन होते थे। बीकानेर, नोखा और सूरतगढ के साथ जुलाई सन 1956 से यहाँ राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चलता है, वह तहसील में पहला है। बि स 2021 से राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य एव चिकित्सा केन्द्र है सो यह तहसील में एक है। जलदाय विभाग भी इसी समय से स्थापित है और अनेक समितियाँ आदि सुवदायक मुरय सस्थापन हैं। अतः यह सकते हैं कि कालू के मूल निवासी निर्भीक, बाकपट्ट राज्य एव शिक्षित हैं कि उही के विकासकारी स्वभाव से ये सस्थाएँ स्थापित हो पाई हैं।

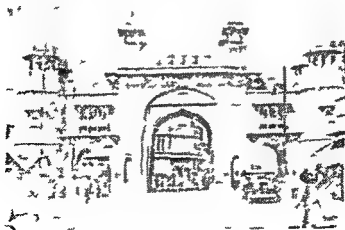
नीचे कुछ बाकपट्ट प्रत्युत्पन्नमति एव हास्य प्रधान व्यक्तियों के नाम दिये जा रहे हैं—सब श्री प० चेताराम पारीक, मूलचंद बड़, बीयरारज बड़ सुगनमल बोरड साभूराम भादू आदि लोग, कस्बे कालू में बड़े जागरूक एव बाकपट्ट हुए हैं। प्रत्युत्पन्नमति एव हास्यास्पद व्यक्तियों में गाँव के सब बग के लाग आते हैं। जैसे—उमाराम सारस्वत रावतराम (पुत्र मदाराम) सेवग, तेजाराम भाट, कालूराम वर्मा धनाराम सुनार गोपालराम सुनार अमरदास (स्वामि में), धोकलराम मया व भरा नण आदि गाँव में हसोने व्यक्ति माने जाते थे। किसी बात को बढ़ा चढ़ाकर सुंदर ढंग से कहने वाले नामजादीको म स्व० श्री हरखाराम सेवग, मूलचंद बर्वा, पुरखाराम (अगुणावास), प्रभु-राम सारस्वत स्व० बुधमल नाहुटा, भीखमचंद नाहुटा स्यामाजी चौधरी वगैरह श्रीमाना के प्रमुख नाम रहे हैं।

वर्तमान समय में सावजनिक कार्यों के लिए गाँव के सारे नरता नया पच हर समय जागरूक रहते हैं और ग्राम पंचायत का कमचारी गोपालराम सबग भी अपने काय में सतत सावधान व्यक्ति है। नाटक में सिचियासाल सिधी एव उदयचंद बोधरा आदि मजाकिये कलाकार पुरुष हैं। बंदीराम सेवग सम्पत मारस्वत तथा मधारास गुजरगौड मोलाव एव हसोड व्यक्ति हैं।

काल के चित्ररूप रसिक पुरुष—सुन्दरता में प्रकृति एवं परम पुरुष, विष्णु लक्ष्मी तथा राम मीना रूप निधान सबमाय है। अतः अफलातून की उक्ति है—इस पृथ्वी पर हम सुन्दर वस्तुओं से इसलिए प्रेम करते हैं कि हमारी आत्मा ईश्वरीय सौन्दर्य की लोभ में भटक रही है। इस पृथ्वी की समस्त सुन्दर वस्तुओं में चिर तन सौन्दर्य ही प्रतिबिम्बित हो रहा है। अतएव सुन्दर वस्तुओं का उपयोग सोपाना के रूप में करके ही मानव, परम सौन्दर्य के बोध तक पहुँच सकता है। भारतीय विचारकों ने भी महसूस किया है कि जगत में दृष्टिगोचर होने वाला सौन्दर्य परमात्मा के निरपेक्ष तथा अनंत सौन्दर्य की एक झलक मात्र है।

भारतीय पक्ष के अनुसार सुन्दर का सबंध केवल कला से माना जाता है। मनुष्य नेचर, कला प्रकृति की सर्वोत्तम कृति है। हाथों और गले विशाल एवं बलशाली, शेर और बाघ, शक्ति स्फूर्ति के समूह, कमल एवं गुलाब के फूल सौन्दर्य तथा सुगंध के गुज हैं। परन्तु मनुष्य इन स्थूल गुणों से परे प्रेम, करुणा, दया, परापकार प्रभृति परम अनुडी प्रकृतियों का भूत पुतला है, जो परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ कलाकृति मानी जाती है। ऐसी ब्रह्मवृत्ति कलाकृति के रूप में सौन्दर्य के शुभाराकषण वशात् कुछ अवलोकन घनन कर देने के भेरे इस प्रयास को सम्भवतः कौन व्यर्थ बतायेगा? मैं अपने सुन्दरता विशेष क्षेत्र के नगरों गाँवों की उज्ज्वल ज्योति में से मनोहर मानव रश्मियाँ प्रदर्शित करता हूँ।

साँध्य बीकानेर। बाटदार जगमगाती बस्तियाँ की कतार। किसी ने दखे हैं मतवाले अमीर, मिठाई बाजार तथा मोने से लदे खूबसूरत माहुकार। ग्राहक दुकानदार



कोट गट बीकानेर

ब्राह्मण और बनिये किम किसको पहचानें ? इसके ताने, गाड़िया और साइकिलें आपस में चलते जा रहे थे । तब उस भावुक हृदय ने कह दिया—

‘ दारू अमल मिठाइया, सोनो गहणो साह !

तीन थोक ग्रिष्वी सिर, वाट बीनाणा वाट । ’”

बसे तो बीवानर डिबीजन के सारे लोग विश्व विमोहन ईश्वर कलाकृति के सुन्दरतम नमूने हैं मगर डिबीजन का स्वयं नगर तथा चूरू, सरदारगढ़, मुजानगढ़, मोमासर और कालू के पुरुष तो प्रायः चित्र माफिक ही खूबसूरत होने लगे हैं । प्राचीन समय में इन स्थानों से बाहर दूर दूर बरातें जाती थीं तब वहाँ के बहुत से लोग इन्हें देखने के लिए आया करते थे ।

सामाजिक प्राणी होने के नाते हम अपने चारों तरफ फले हुए इस नवयुग की सपेक्षा नहीं कर सकते, कि तु साथ ही साथ पुराने जगत के रूप और सौन्दर्यवान जवानों की भी इसलिए नहीं भुला सकते कि मनुष्य पिता होने के नाते किसी नवीन उत्पत्ति का साधन बन जाता है । हमारे गाँव कालू के साथ भी यही बात हुई कि उन पुराने युवकों के अमीरी वस्त्राभूषण तो गये मगर सोलिनाई के नये प्रसाधनों की उपलब्धि ने गाँवों की रूप सुंदरता को कम कर दिया है ।

कालू की बरात किसी दूसरे गाँव जाती थी, तब वहाँ पर चार दिन तक ठहरती और वहाँ वाले बराती लोग अपनी रूप छटा को बिखेरने हेतु भाँति भाँति की दैनिक पोशाकें व गहन पहनते हुए वहाँ के लोगों को आश्चर्या वस्तु व प्रभावित कर दिया करते थे । इस तरह के जवानों का कालू में एक सतत शौलीना का समूह बना रहता था । लेखक की नजर में समायें सुहाये वहाँ के कुछ सुन्दर नवयुवकों के नाम नीचे दिये जायेंगे जो जरूर दृष्टव्य होंगे ।

महाराजकुमार श्री विजयसिंह जी के सुन्दर शासन में कालू गाँव की अत्यंत सुस्थिरता और आंतरिक भाँति मिली हुई थी । अतः उक्त समय सभी दृष्टियों से शासन का स्वर्णयुग माना जाता है । महाराज कुमार साहब का सब राज चरना सुंदरता का अमिन अंग और अमूल्य वस्त्राभूषणों के कारण प्रत्यक्ष अमीरी व खूबसूरती की कीर्ति प्रस्तुत कर देना वास्तविक प्रतीक था । उनके अपने आला अफसर भी हर समय सुन्दर ठाट-बाट से रहा करते थे । सक्को की सादाद में उनके साफे, कोट, हैट और बूट ऊँचे दर्जे के साफ-मुथरी चमक के बने हुए रहते थे । लंबे बड़े तलवार और मोठे बंदूक रहा करते थे । तब जनता की भी मूख और पण्डिया खुशी खुशी खिली रहती । कालू में सेठ श्री सुगनमल नाहटा की राजसी पोशाक पहनने की अनुमति मिली हुई थी । उनके बेटे अपने मोड़ी टोरडा पर चढ़कर निकलते तब किसी राजकुमार से कदापि कम सुन्दर नहीं लगते थे । बड़ा लडका श्री लाधूराम अपने ललित लावण्य के कारण बड़े छोभावान युवक थे । मशाले रूपवद एव भीक्षमचंद भी गाय गौरव के रूपवान नमूने थे । सेठ के अनुज श्री बनेच द का लडका बुधमल भी कालू की कल (मशीन) का अत्यंत नूतन शौलीन पुर्जा था । नाहटा परिवार में ही श्री चम्पालाल नाहटा तन मन धन से नसगिक रूपवान एव

~1 ससार में ऐसे थोड़े शहर होंगे, जिन्हें स्वाभाविक तौर से इतना सौंदर्य उपलब्ध हुआ है—जितना कि बीवानेर को है ।

मनहर नौजवान था। इनके सावजनिक सौंदर्य समूह में सतोपचन नाहटा, जयचंदलाल विरमेचा, तोलाचंद साठ, बालचंद फतेचंद आदि अन्य नौजवान भी सम्मिलित होते रहते थे। माहेश्वरी समाज के श्री मोहनलाल बागडी, काशीराम राठी, कहेयालाल डूढानी आदि भी सौंदर्यवान नवयुवक थे।

राजस्थानी में जिसका रूप का डला कहने की कहावत प्रचलित है, ऐसा रूपवान स्व० श्री गिरधारीलाल शंकर था। जाटों में चौधरी कालूराम डोगवाल स्व० श्री उमा राम सारस्वत, गोपालराम सुनार, बालूराम सस्वर्ता सुंदर जवान थे। ठाकरसीराम खडेलवाल (A) भी अच्छे जाकपक युवक रहे हैं। रामस्नेही गोपालदास स्वामी जैसे सुंदर, अनूठे एवं अनुपम साधु थे। अब श्री जेठमल राठी मेघराज साठ, भाणकचंद कोठारी, मोहनलाल शंकर, श्रीराम खडेलवाल, इन्द्रचंद राठी, भोमराज नाहटा, भवर लाल राठी, कहेयालाल सिधो, जुगराज बोरड, जुगराज सस्कर्ता आदि बहुत से सुंदर जवान गाँव शाभा बडाने में अग्रणी हैं। पक्के रंग में श्री भवरलाल कर्षा, भीलमचंद सेठिया व सुशील बंद (निखोर) विशेष दीदार (देदीप्यमान) हैं। मास्टर जेसाराम जाणी भी इसी श्रेणी में हैं।

नही मोहताज गहन का जिसे धूवी सुदान दी।

कि जसे लुगनुमा लगता है देखो बाद बिन गहन ॥ (गुलाम सुराई)



स्व० महाराज कुमार विजयसिंह जी
छतरगढ़ नरेश



छतरगढ़ पट्टा के सुपरवाईजर
श्री हरिसिंह (सत्तासर वाले)

कालू में सुसंस्कृत, सयानी और धर्मपरायण महिलाएँ—कालू में शिक्षा प्रसार की उत्तरोत्तर उन्नति हो रही है। इस उन्नति में स्थानीय महिलाओं का पर्याप्त योगदान है। यहाँ की समझदार महिलाओं ने अपने बालकों में और विशेषकर बालिकाओं

में शिक्षा के प्रति भरपूर उत्साह उत्पन्न कर दिया है। गाँव की बालिकाओं में इस तरह पढ़ने की भारी आवश्यकता थी कि उनके प्राचीन गाँव गौरव का सुरक्षित रखन के साथ-साथ भी महिलाओं में सलग्न सेवा भाव भी जाग्रत रखा जाय, ताकि वे प्राचीन कहावत के अनुसार— 'पान बकी गौरियाँ' बनी रहें।

राजस्थान की महिलाएँ शक्ति आगार कष्ट सहिष्णु मानवता की जन्मदात्री पवित्रता की प्रतिमा प्रकृति की कोमलता का उज्ज्वल उदाहरण, आदर, स्नेह, वात्सल्य व धर्म प्रिया का प्रत्यक्ष प्रकाश तथा त्याग सेवा की प्रतिमूर्ति होती आई हैं। आज की महिलाएँ तो यहाँ सत्य, शिव, सु दरम की जीवित कल्पना एवं ब्रह्मा का स्पष्ट ध्याना-स्वरूप नश्य नमूनों का समन्वय है।

कालू की माताएँ अपनी लड़कियों को पान देती हैं कि पढ़ा लिखी और समाज सेवा कर्त्री बनें। माता पिता की, भाई बहिन की तथा तमाम मानव समाज की सेवा करने में ही कल्याण है। यहाँ की सहेलियों का बार्तालाप है कि स्वामिनी की सेवा श्रेष्ठ मानी जाय। साम बहू से, ननद भोजाई से और बहिन-बहिन से सब सेवा का ही उपदेश देती रहती हैं। इसी सेवा पान की भत्ता को समझ कर यहाँ की अनेक कुमारियाँ उच्च शिक्षा में अध्ययनरत हैं। कालू की ऐसी कुमारियाँ ही प्रवीण नहीं होती, आदर्श माताओं की सीख पर कुमार भी सेवा शिक्षा मुक्ति विद्यार्थी हैं।

प्राचीन समय में यहाँ की औरतें अधिक शिक्षित नहीं हुआ करती, मगर सुसंस्कृत इनकी हुआ करती थी कि यहाँ की कुछ औरतें मरदाना महिलाएँ कहला चुकी हैं। सामाजिक कार्यों के मित्राण बाल कल्याण भावना में कालू की औरतें बड़ी प्रसिद्ध हुई हैं। यहाँ बालक का भाग्य सदय उसकी माता के द्वारा निमित्त होता है। दी पयूचर केप्टीनी आफ द वाइल्ड इज आलवेज दी बक आफ दी मदर।¹ बालका के लिए माता से बढ़कर कोई गुरु नहीं है— नास्ति मातु परा गुरु।²

कालू की महिलाएँ धार्मिक भावना में भी पीछे नहीं रही हैं। विस 1854 के पास श्री बट्टीदास राठी की धर्मपत्नी श्रीमती शरा देवी (जतपुर के पेढीवाला की बटी) ने गांव के बीच पचायनी का मंदिर बनवाया। उसी समय में श्रीमती हरिया देवी विराणी न जन क 8वें तीयकर चन्द्र प्रभु का मंदिर घर की जमीन दकर बनवाया। उसी परम्परा में श्री तानाचंद साह की धर्मपत्नी सुगनी देवी ने माता जी के मंदिर में कमरे, बरामदा और रतौड़ीघर आदि बना कर दिये। सुगनी देवी ने रा० उ० मा० विद्यालय में भी एक कमरा बनवाया है। श्री अलाय चंद साह की माता श्रीमती बाबूदेवी ने डाकघर कार्यालय बनाकर सरकार को दे दिया है। श्रीमती कमला नाहटा के कमला भवन में जन ॥ तो का चातुर्मास होता है। श्री शेरमल डूढाणी ने अपनी माता और धर्मपत्नी के नाम पर अनेक संस्थाओं में कमर बनाकर कालू की धार्मिक महिला-मनोवृत्ति की उजागर किया है।

कालू में बसे भजनीक और भगवान भक्त महिलाएँ बहुत हुई हैं। गांव के ब्राह्मणा और माहेश्वरियों में ऐसी धार्मिक अनेक महिलाएँ हैं। रूपा मासी घाटी मासा और नीपा मासी सब पारीक बड़ी भजनीक देविया थी। पर लेखक की पूज्य नानी जी

जनमादेवी एव माता जी श्रृ गारा देवी दो दो रात तक जागरण जम्मो मे दूसरे दूसरे मजन गये देती थी । व स्नान किये, मंदिर गये बिना (चाहे कितनी देर भी हो) रोटों नही खाती । अब लेखक के घर जुगराज की माँ उसी आतिथी परम्परा पीठी मे हैं ।

पहले यही बालको मे ओरी माता, बाँख दूखनी पाँव, झरी, ओदरी पोदरी आवडे काकडे, पाणीझरो ऊपरलो उसळनी, खुलखुलियो, रत्तानडी सीवर, पिल्ली, कोडी, कमेडा, कनमूल, गळ गळगट्टा, उल्ली दस्तादि असरय रोग चलते थे । इन सबके लिए यही की महिनाएँ हो वय डाक्टर का सफ़्त काय किया करती थी । उनको नाडी (नब्ज) देखने का अच्छा ज्ञान रहता और देशी दवाइयो के काफी घासे घूटिये और सपयुक्त उकाली उतारें, डोरे जत्र आदि जाना करती थी । वे बूढ़ पुरानी औरतें, जावे-सवाड वाली जच्चा के लिए परम हितपिणी हुआ करती थी और बच्चा की पालन कर्त्री व तपस्विनी घाय ! कालू मे आज भी ऐसे वसे अवसरा मे तुरत थी जयचंद लाल बंद की मा, सुगतचंद जी नाहुटा की सेठाणी, बनेचंद नाहुटा की घमपत्नी और भैरूदान साड की बहू आदि के नाम-काम याद आ जाते हैं । श्री कालूराम साड की बहू, वाली बाई और चुनी बाई (गिरघारोत्तल पवर की बहिन) तथा सौ भवरी देवी सत्कर्ता (C.H W) वगरह कुछ देवियाँ आज भी बालका की नब्ज की जानकार है । सीताराम मास्टर की माँ और मघाराम मारस्वा की बहू के मुँह परचे देवी देवता बोलते हैं, जिससे बालका की पीडा दूर होती है । कुछ औरतें घुपकारा झाड फूक तथा पीलिये के डोरे भी करती हैं ।

कालू मे सुधारवादी और सामाजिक कार्यों मे चदा दात्री कुछ महिलाएँ भी है । जैसे—सीताराम सवर की माँ चौधी देवीजी नाहुटा और भागजी बंद की बहू । मगनी नवलवा, मुलतानी बाई और जेठी बाई जन घम की आदश धाविकाएँ हैं । मजू सेठिया यहाँ धार्मिक सभाओ मे बोलने वाली लडकी है ।

एक ममतामयी महिला—निमग्त महिला गुण गण सिरवीर, महान व्यक्तित्व की घनी श्रीमती मयुरादेवी का जन्म आज से 78 वष पूर्व वि० सं० 1961 मे उदरासर (चूरू) निवासी श्री जीवनरामजी पुत्र ग्यानीरामजी सखोटिया के घर श्रीमती चादादेवी की कुक्षि से हुआ था । आपकी जन्मजात माधुर्य गुण विशिष्टता एव सुकुमारता के कारण आपका नाम भी हिन्दी व्याकरण के औत्तरिक भाव पोषक पदप के अंतिम स्पर्श ध्वजन मे से फु मयुरा रह्य गया । आपकी माताजी ने वात्सल्य भाव के आधिक्य से निगरानी पालना और सस्नेह आपका बचपन बनाया । उस समय से ही बाल सुलभ भावो मे आप भक्ति, विनय और विवेक का विशेष पालन करती आई हैं । भगवान के भजन तथा कथा बचन श्रवणकर आपका मन सदब तप्त आनंदित रहता है ।

13 वष की वय मे आपका विवाह कालू के प्रमुख सेठ श्री रघुनाथ दास राठी के द्वितीय आत्मज श्री लालचंद के साथ क्षत्रीय आनंदोल्लास सहित सम्प न हुआ । क्या भावनाओ से पृथक् होकर समुरान परिवार की नूतन परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाने के साथ विनय और विवेक को आपने अपनाये रखा । बडे धय के साथ समुरान परिवार की रीति रिवाजो मे आप आदशता की काय सवृद्धि करने लगी । मात पित सुल्य सप्त श्वसुर की सेवा, देवर-जेठा के सेन देन सबधी अनूठे आदेश, नणदा की स्नेह स्निग्ध

जानाएँ और अय जनों के लिए भी आपका जीवन हर क्षण हर पल अतृप्त हो रहा है। जब भी काइ पारिवारिक जन आकर मिला आपका हृदय सच्चे स्नेह से भरपूर हो गया।

उपयुक्त ब्रह्म, गौरवण हल्का शरीर, चौड़ा सलाट आत्मा अवलोकती ऐनकधारी आखें, हितमित सत्य धीमे बोल, विनय श्रुती सुमति शांत गभीर मुख मुद्रा—श्रीमती मथुरादेवी जी का भद्र परिणामी वेग वि यास पूष प्राचीन समता संस्कृति समित, घाघरे ओढ़न वाला है। पर कभी कभास तीर्थ व्रत के समय साडी भी काम ले लेती हैं। आपके निमल हृदय की आभा से निरंतर स्नेह गालीन गुणी भाव प्रकट हात रहत हैं। इसलिए श्रीमती मथुरादेवी जी न सारे परिवार के लोगों को अपन विश्वास में लेकर निश्चित एक सुव्यवहारिक बनाये हैं। जेठमल नदलाल जैसे सत्पुत्र ही नहीं, मथुराजी की पुत्र वधुएँ भी अपन जीवन पर अपनी महान दयालु साम की गहरी छाप लगाम हुए परिवार की नतिक जिम्मेदारियां निभाती हैं। पुत्रियाँ श्रीमती भक्तु और सावित्री दा हैं।

किसी को भी अपन घर का सुखी घर बनाता है तो मथुराजी जसी बड़ी बुद्धियों के स्वतंत्र व्यक्तित्व को अपने में बसा कर विकसित करना हाया। मुझे एक बृद्ध भक्त कवि का वचन स्मरण है जो दृष्टव्य—गाँव नाथूराम के भक्त, बृद्ध कवि गोविंद दान जी का देहावसान हुए पूरे पच्चीस वर्ष हो गये हैं। वे कालू आते तब श्री लालचंद जी राठी के घर ठहरा करते थे। मेरे पर भी उनका अनुराग अपनत्व था मिलन आ जाया करते थे। खान के लिए पूछन तब वे बताते थे कि लालचंद राठी के घर आता हूँ। यही स्नान पानी सँध्या बदन करता हूँ। दो घड़ी एकांत वान बैठकर माला फेरता हूँ, तब तब सेठाणी (लालचंदजी की धर्मपत्नी) मुझे मे पानी नहीं लेती। मुझे खाना खिला करके ही सदब स्वयं खाती है। आतिथ्य सत्कार की साकार मूर्ति है।" वे जब तक जीये कालू मे ईश्वरी के घर आय गये। बाई भी एकाकी जीवन एक बारगी इनके घर आकर आश्रित हो गया, देवीजी के स्वभाव क्षुद्र, जीवन भर यही रहा। शिशुपास पारीक की बद्ध एक अस्वस्थ माता जिसका इकलौता बेटा इस संसार से चला गया। उसकी अनाथ आखें इधर उधर आश्रय तानती हुई लालचंद राठी के घर लाई गईं। उसके जीवन में मथुरा देवी ने पुत्र स्वरूप संयोज की। होती, दीपावला अथवा कोई भी छोटा मोटा भोज्य पदार्थ बनता, तब मथुराजी द्वारा पहले पहल उम बुद्धिया का प्रसाद चढ़ाया जाता था। मथुराजी न दुर्भात का इस घर में नामो निशान मिटा दिया है। एक बार एक परिस्थिति अहिन इस राठी परिवार में रमोईदारिल के रूप में रहने के लिए आई। किंतु किसी कारणवश उसे इस घर से जाना भी पड़ गया। मथुराजी को बीच में चले जाने का बड़ा रज हुआ।

आपकी अभिव्यक्ति सब-सुखदायक है। निःसंदेह इसके लिए पूरे परिवार की सफलताएँ आपकी देन हैं। आप मात्र भीतर से ही उत्तम नहीं बाहर से भी बहुत धर्मा दस व्यवस्थित हैं। लगता है विघाता रूपी कलाकार ने अपने मझार के सारे गुण गण आप में लगा दिये हैं। जिन किसी का भी आपके दर्शन का वास्ता पड़ा है, वह आपकी बड़ाई का कथन करता ही गया है। फिर भी मथुराजी सादगी की मूर्ति हैं और अभिमान का आप में नाम तक नहीं है। यह निखने की नहीं केवल दखने की बात है कि मथुराजी

का मन सच्ची माँ का मन है। ममता इनके दिल में गाड़ों भरी हुई है। इनकी हर किसी के छोटे से छोटे अभाव का भी अहसास होता रहता है। इनकी आँखें हर किसी की मजबूरी में गीली हो जाती हैं। ये लड़कियों की शादी के समय दुवलों की स्थिति का बहुत ध्यान रखती आई हैं। एक बार गाँव नाथूसर के एक बागूँठ परिवार की लड़की का सुंदर वस्त्राभूषण एवं दहेज सहित सारा व्यय बड़े कारुणिक ढंग से अपने आत्मज को कह कर सम्पूर्ण करवाया था।

पति की चरित्र स्वभावा अर्धांगिनी, सनान की ममतामयी माता समाज की आदर्श पथ प्रदर्शिका तथा प्रत्येक प्राणी के लिए क्षमा दया करमाने वाली महा प्राकृतिक स्वभाव, कसबा कालू निवासित महिला, निव्य लीला श्रीमती मयुरादेवी राठी हैं। आपका स्नेह, ध्येय शालीनता तथा मधुर बचन, गाँव के जन मन पर मड़े हुए हैं। आप सरीखी शुद्ध मति गृह लक्ष्मी जिस घर में विद्यमान हैं, वह मुझ वस्तु पर स्वर्ग है।



श्रीमती मयुरा देवी राठी

कालू में सिंह सतान एवं शुक—ससार के सारे जगत व्यवहार मति प्रधान मायता के अनुसार ही चलते हैं। सुपुत्र भारतीय गृहस्थी की सर्वोत्तम वस्तु मानी गई है। वही पिंड दाता तथा मा बाप को सब सुखों का देने वाला होता है। शक्ति प्रीति धनोपाजन, वश विस्तार, कुल कीर्ति लोक परलोक प्रभति सभी शुभ काम प्राय सुपुत्र हेतु ही दृष्ट्य होते हैं। नि सतान दम्पति के सुख जीवन को हरियाने वाली अनेक की अपेक्षा एक सतान शक्ति ही प्रियुष धारा है। 'अ ये सर्वव सयुक्ता शोक सतापदायका।' (पद्मपुराण भूमिखंड 17 27 25) अर्थात् अनेक पुत्र ता जमकर शोक और सताप ही देते हैं। इसलिए एक पुत्र सिंह सतान कहलाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है—“पुत्रवती जुबती जग सोई। रघुपति भगतु जागु सुत होई ॥” अर्थात् सुपुत्र शब्द में जो पवित्र प्रभति के भाव हैं वसी सतान उत्पन्न होने से मनुष्य के परम पुण्य प्रकटित होते हैं। कालू में कतिपय ऐसे एक सतानो वाले अनेक भाग्यशाली माता पिता हैं।—सेठ फुसाराम जी शबर सुत श्री तुलसीराम जी का पहला विवाह सरदार शहर के पास वाले राजासर में हुआ था। लेकिन वह पत्नी नि सतान ही चत बनी। दूसरा विवाह जयमल घर में हुआ, किंतु चार पांच वर्षों में सतान नहीं हुई। नारी का पत्नी रूप से अधिक

सर्वोत्कृष्ट महत्वपूर्ण और योग्यतासी स्वरूप उमने मातृत्व म ही होता है। सुद, सारिवक, धार्मिक एवं भक्तिरूप आचार विचार म ही पुत्र सामंसा वाली मानाएँ अपने उदर मे धीर, धुडिमान, चतुर तथा विश्व हितधी मुपुत्र रग्य सक्ती = ? पवित्र, नानवान, भक्तिमान और योगी स्वभाव वाला पुत्र उहीं के हाना है। नहीं ता— हुनम रोमचुन मुन "।

श्वर रग्यति ने भी सद्गुण सम्पन्न पुत्र उत्पत्ति के लिए पडिता द्वारा बडे मनन के माय 'श्री हरिवंश पुराण' मुना। दान-दक्षिणा एवं सम्मान सहित जप तपण मात्रन करके ब्राह्मण भोजन करवाया। भगवान से प्राप्त की— 'हे दयामय ! मुदर, सद्भाव-सम्पन्न, चरित्र सनाधारी मेधावी और आपका भक्त हो ऐसा पुत्र देन की अनुकम्पा करे। मातृ भावना की ओर से विशेष सत-उपवाग गुरु आशीष लेना देव ग्यान और दान-दक्षिणादि के बाय हुग। तज सचमुच सिंह पुत्र का जन्म हुआ जो गो भवन श्री मोहनलाल श्वर है। यथपन म धारोण्य दूध, फन और बादाम काजू से सतवा पालन-पोषण हुआ। यह चतुर कुल को सतुष्ट करने वाला स्वजनों पर स्नेह बरमान वाला गो मयक और मात पित भक्ति परायण युवक है। इस तरह ही सिंह सतान श्री नालजी के भवन्लाल गमदयाल का नरसारांम, चादमल सारस्वत के नदलाल बानचद कोठारी के भीममचद पनेचद बोयरा के इन्द्रचद मयन्स बंगामी का सीताराम और अपनी माँ का प्यारा पुनाराराम गोपारा ब न ना हरि भी एकल सताने है।

दत्तक पुत्र—हिंदू धर्म म पूण विश्वास रखन वाले व्यक्ति अपन पूर्वजों द्वारा माय गाम्नामुमोदित परम्परा मे आस्था रखकर सत्पुत्र की भूमि म दत्तक पुत्र बना लेते हैं। नि सतान सतान होकर मर जाने के पश्चात साग अपन सुख बद्धि हेतु ऐसा करत हैं। परंतु गाद आने वाले पुत्र म अच्छे धर्म और बुने अधिक निकलते हैं। मदा भावी पुत्र तो पूव कृत्य पुण्य तथा सीमाय से ही प्राप्त होने हैं। किंतु अधिकतर तो बलह पण्ट-बद्धि के लिए गोद आकर कुल बदनामी का कारण बनते हैं।¹ दूमरी बात सुय घन के लिए और कई तन सुख के लिए गोद आ जाते हैं। मगर मन सुख के लिए गोद आने वाले व्यक्ति बहुत कम होने हैं। कई साग घर के लालच म खोले (दत्तर) जाते हैं और बहवा के राज्य सरकार के अनुसार गोलें व कागज करवान पड़त हैं। इस रिवाज को लाला गाद अथवा दत्तक के नाम से जाना जाता है। गोद कई माताआ के और रद्द पिताआ के जाते हैं। दादा दादी काका काकी भाई भौजाई, बाबा बहिया तथा सास श्वसुर के भी पाना जान की प्रथा है। ठिठाना छत्रगढ (दादीसा) व गाने श्री विश्वमिहजी और उनके श्री अमरसिंहजी दत्तक महाराजकुमार थे।² राजा महाराजाओं के गाद आन वालों म सगडे भी बहुत ही जाया करते थे और प्रत्येक पक्ष व लिए गुटबा दिया हा जाया करती थी। रानदयान की अनक कथाओं मे अनिश्चित उत्तराधिकार की स्थिति म राजकुमार का चयन निय जान हेतु हाथी के मूड म भावा डालकर घुमाया जाता था। हिंदी साहित्य म इस चयन प्रथा को मूल अमिप्राय (Motif) कहा जाता ह।

1 पलवा जेट का र बेटो पेट का।

2 श्री गगामिह महाराजा श्री दूगरसिंह जी (भा¹) व खाल थे और दूगरसिंह जी सगदारसिंह जी (म बी) के खोने गये हुए थे।

कालू में कई लोग खासा या गोद आये हुए बताये जाते हैं। स्व० चम्पालाल (पुत्र लिखमाच ३ जो नाहटा) ऐसा सुदत्तक था कि श्री लालचंद नाहटा के घर मा की गोद आकर अपने सेवा सम्मान से उसके वैधव्य आदि के पुत्र सबघी सारे दुखा को भुला दिये। चम्पालाल ने जो भी काम किये सारे के सारे माँ को पूछकर ही किये। श्री चम्पालाल ने अपने ज मदायक पित परिवार के लोगो व साथ भी बड़ा प्रेम बनाय रखा। इस तरह गोद जान वाला में यहाँ श्री चादमल सारस्वत, नदलाल राठा, सुगनाराम सारस्वत, श्रीराम राठा, मदनलाल डूढाणी, नयमल भादानी राजेश कोठारी बुधमल बोयरा, इन्द्रचंद, शालचंद बाठिया, सतदास, नयमल सोनगरा और जसराम जाट आदि हैं। कालू के ब्रह्म परिवार से लाहन् के एक धनवान घराने में बारी बारी से गाद जाने वाले दो भाई पूनमचंद और गिरधारीमल ब्रह्म, बलकला तथा कूच बिहार के बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। बाहर के कई जेवाई आदि व्यक्ति भी यहाँ गोद आकर कालू के नागरिक बने हुए हैं।



सातवाँ प्रकरण

कालू का जूना सातावरण—वीकानेर राज्य में पहले सबसे पिछड़ा क्षेत्र भड़ान कहलाता था। उसकी लूनकरनसर तहसील का थली जीविक गाँव है कालू। बड़े नगरों की लाइन से इतना दूर होने में बसा हुआ है कि 'नई रोशनी' के यहाँ तक पहुँचने में काफी समय लग गया। युवा तब यह अपनी पुरानी चाल ढाल में चलता रहा। महाभारत के समय वर्तमान वीकानेर का क्षेत्र राज्य 'कुरु राज्य' के अंतर्गत था। 'माहुरवी' गतावही के पश्चात् इस राज्य पर जोहियों चौहाना, साबली (परमारा) भाटियों और जाटों का अधिकार अवश्य रहा।¹ ब्रिटिश शासन काल में भारत की बड़ी रियासतों में वीकानेर का छठा स्थान था। देशी राज्यों के विलयन के बाद राजपूताना राजस्थान बन गया। अब उसका इतिहास, भूगोल शासन नीतियाँ राजपूताने से बिना भिन्न परिवर्तित हैं। त्याग बलिदान और शौर्य की कहानी अब कहीं इतिहास में ही मिल सकती है। राजसूता के स्थान पर प्रजातन्त्र शासन जन्म चुका (दण हो गया) है।

देशी राज्यों के जमाने में तहसीलदार एवं थानेदार का रोबदाव गाँवों वस्त्रों में सबसे अधिक रहता था। कालू में उस समय ठिकाने का गिरदावर ही सर्वोत्तम था। उसका बहुत दबदबा था। पर उनसे ही बढकर अब गाँवों के ठाकुरों, छुट भैया, जमींदारों और मामलों का बड़ा भारी आतंक हुआ करता था। गाँव वाले ही नहीं गहरी श्रीमती तक, इनका मामने सिर उठाने का साहस नहीं कर सकते। उनका हुक्म अच्छा बुरा जमा भी हो मानना पड़ता और टालमटोल करने वाले को सजा का शिकार बनना पड़ता था। राजा महाराजा एवं जमींदारों के भरण पर रियासत के सारे सम्बन्धन लोगों को भद्र (दाढ़ी मूँछा बिना) होना पड़ता था। वचन की कोशिश करने वाले व्यक्ति को पकड़कर जबरन मूँछ दिया जाता था। सट चौधरी, मुखिया और सम्बन्धी अपने आप इस काय के लिए तयार हो जाया करते थे। बड़े अफसर शासक पर शोक मूलक वाने बिल्ले लगाते और गिर पर सफ़ेद माफ़ा बांधते थे। जब तक हाना या दीवाली का त्यौहार नहीं चला जाता उन दिनों तक गाँव में गोक रचना पड़ता था तथा गान प्रजाप सब बंद रहते थे। राजा महाराजा की मृत्यु पर राज्य भर में एक मान तक किसी भी घर बिनाह सादियाँ नहीं हो पाती। राजा के मरने का आक-मवाग गाँवों तक सिफ़ाई साग घाड़े से चारा और पहुँचकर जल्दी पहुँचा देते। वे वाग (जोर का रोग) नेत्र हुए सत्र गाँवों में प्रवेश किया करते थे। राज्य की दारोगनिया आदि मुहागिन स्त्रियाँ को ठाकुरा एवं राजाजी की मृत्यु पर उनके पीछे अपने मुहाग चिह्न एक बारगी उतार फेंकने पड़ते थे। इस आक कृत्य की शिवाय कोट रावले की सेविकाएँ जस दरागनियाँ दम्पामनियाँ आदि औरतें हुआ करती थी। दरागनिया इनके दायजे आनी और प्राय चूठन पर चलता थी। जब भी राजा महाराजा जयवा उनका ठाकुर

चाहता, तत्काल पडदायत बना लिया करते थे। उनके घर वाले इस काय को बड़ा उच्चतम समझते थे। सुन्दर दरीमणिया पति स प्रथम स्वाभिम्यो की चहती हुआ करता थी। इस तरह के पडदायत सम्बन्ध पर दरार्गों से ठाकुर बन जाया करते थे। देशी रजवाड़ा के समय में जो रीति रिवाजें प्रचलित थी, वे आज अनहानी बातों के रूप में दिखाई देती हैं। ठाकुरों के छोटे गाँवों में से कोई भी बड़ा या गहमीर ऊँट या घोड़े पर चढ़ा हुआ नहीं निकल सकता। उसे उस गाँव के ज़रूर पदल चलना पड़ता था। राज भय में हरिजन आदि लोग अपने विवाह के समय भी केशरिया कसूमल पगड़ी या साफा नहीं बांध सकते उन्हें सफेद साफे स ही वर (दुल्हा) बनना पड़ता था। सामन्तों में गाये जाने वाले गुप्त गीत भी अत्यन्त सादर में गाने वजित थे। वे अधिकारियों के समक्ष हुर दस्त हाथ जाड़े खड़े रहते थे। बड़े जातिवाँ मुँदें पशुओं से और बड़े लोगों की जूठन से पेट पोषण किया करती थी। बीकानेर राज्य खालसा, जागीर और ग़ासन तीन तरह के अनुशासन में चलता था। खालसा में बीकानेर का खुद बड़ा राज्य जागीर में जागीरदार सरदारी के गाँव, ग़ासन में माफी या घमाड़े में दिए गाँव चारणा, ब्राह्मणों के होते थे। घमाड़ा स रकम नहीं ली जाती थी। जागीरदार ठाकुर बड़े राज्य को खिराज और रकम देते थे। इन पट्टायतों को रकम नहीं भिन्न पर बड़ा राज्य इनके गाँवों का काट आफ बाँट करके स्वयं रकम उगाह लेने के तनाती आदेश कर देते थे। कभी-कभी बड़ा राज्य इन ठाकुरों के अयाय के आराप पर गाँव वापिस उतार भी लिया करता था। किसान इन अपने-अपने राज्यों के बराबर निश्चित लगान देता रहता, सब तब वह जमीन का अधिकारी कहलाता। नहीं तो खेत छाड़ना पड़ता, जमीन राज्य की। डाल भाछ, ल्हासिया, कोरड आदि वर भी किसानों से लगान के साथ ले लिए जाते थे। अ य वरों में धूआ, भूगा, अग सर मलवा डण्ड आदि भी लिए जाते थे। विषवा के नाता कर्न पर और किसी भी बिरादरी का कोई निपटारा होन पर भी कर निश्चित था।

वि स 1910 के लगभग गाँव कालू घामाई ठाकुर मेध सिंह के ठिकाने में था। उसी अकाल के समय भी डाल भाछ के सिवाय कोरड-ल्हासिया के वर उगाहन शुरू कर दिए। तब यहाँ के तालान मठ भूदान काठारी जीर चौधरा नदागम ज्माणा आदि न गाँव के लोग का समझाया कि— य नये वर मत दा और ठाकुर घमकाय तो गाँव छोड़कर अन्य स्थान पर चले जाओ। जनता ने अपनी भलाइ सोचकर ऐसा ही किया और गाँव के सारे लोग घर बार छोड़कर चले गये। तब उसत मुखिए लोगो ने बीकानेर जाकर बड़े राज्य में इन बातों की फरियाद की। इस कारण उस समय कालू मेधसिंह के आधिपत्य से हटकर बड़े राज्य (खालसा) में आ गया था।

पहल यहाँ के किसानों से राज्य की बेगार भी ली जाती थी। जिसके घर ऊँट होता उस किसान का कोई भी दोर पर निकलने वाला अपसर ऊँट सहित जगल मुसाम तक पकड़ कर ले जाता था और बिगये के पस भी नहीं देता। मन चाहे वहा छाड़ देता। तब वहा से बचारा भूखा ऊँट और उसका मालिक बड़ा मुश्किल में अपने घर वापिस आ सकते। यह बेगार कालू में भी चालू थी। बेगार में गहमीर किसान को अपने ऊट सहित सान पीन का स्वयं प्रवच करना पड़ता था। महाराजा गगामिह जी ने

किसान की बेगार में काफी सुधार कर दिये। उन्होंने किसान के किराये का कानून व जबरदस्ती न पकड़ने की घोषणा करवा दी। कालू के गढ़ में माफीदारों की अत्यन्त बेगार दारी से ली जाती थी। गिरदावर, पटवारी जकात धानेदार के घरों में काटवाले नौजाना लकड़ी की भरोठियाँ डालते नायक पहरेदारी करने और नई को गढ़ का मारा पानी भरना पड़ता तथा चौके वतन की सारी सफाई करने पड़ती थी। मगर इन कामों के बदले उनको जात हेतु माफी की जमीनें प्रदान की हुई थी। अतः गांव की, कूए की तथा आन वाले अफसर सफाई की बेगार भी यं निकालत थे।

उस समय ठिकाना की रकम न चुकान पर किसान भी किसान के कपड़े तक निलाम कर दिए जाते और उम्र अत्यन्त कम लोग गांव से निकाल भी दिये थे। खड़ी फसल कटवा ला जाती और जखन गांव भस्म मगवाली जाती थी। उस समय के अफसर रकम न देने पर आदमी को घप में खड़ा करके वत की भी भंग देते थे। मगर ये कृत्य कालू में औपचारिक टग से ही पति। यहाँ के राज्य काय खालसा जस ही महान थे। महाराज कुमार विजय सिंह का पट्टा इन बातों में बड़े राज्य की भांति लाक्षप्रिय था।

कालू के गढ़ में पहले गिरदावर श्री जमरनाथ के सम्य व्यवहार से आस पास की प्रजा पर पट्टे का अच्छा प्रभाव पड़ा था। अफसरों का आतंक होता हुआ भी कालू का जन-जीवन शांति से बीतता था। ऊपर लिखी सारी अत्याचारपूर्ण घटनाएँ उस समय की साधारण बातें समझी जाती थी। जबकि पानी के अभाव में तथा अकालप्रस्त क्षेत्रों के लोग यहाँ खुली खेल (सुविधा से उपलब्ध) पानी के लिए लालायित होते हुए इस गांव कालू में आकर निवासित होने लगते। क्योंकि अत्यन्त गांव में गुरजते (चलते) हुए लोगों के पशुओं के पानी पीने पर प्रतिबंध था। कालू में मीठे पानी के चार कूएँ और चारों ओर तालाब तथा लम्बे चारागाह थे। गांव की बहुत सम्झी भूमि सीमा जो पशुओं के साल भर चरने विचरने की मुख्य सुविधा थी। इसलिए दूसरे ठाकुरों के या खालस के गांवों से लोग कालू आकर बसते थे। उन्हें यहाँ एक बंध की रकम माफ और नई मड़त घर बनाने के लिए जंगल से लकड़ी काटने की छूट थी। ये बातें अर्जो स्वीकृति से दी जाती थी। इस तरह से पट्टे के जमाने में कालू के विभिन्न सुखों से आकर्षित हुए दूर-दूर के लोग यहां आकर बसते थे। इन आने वालों में मुख्यतः ब्राह्मण समाज के लोग अधिक आये। ब्राह्मणों के लिए महाजन बस्ती के धार्मिक कार्य, पूजा पाठ ब्रह्म भोज दान-दक्षिणा और फरी भिक्षा याचनादि के अनेक जीविकोपार्जन के साधन उपलब्ध थे। इसलिए यहां के ब्राह्मण वालका की उस समय छोटी अवस्था में ही शादिमा हो जाया करती था। क्योंकि बाहर से ब्याही हुई आने वाला उन ब्राह्मण लड़कियों को काल में आने पर ब्राह्मणाश्रित सारी आवश्यकताएँ प्राप्त हो जाया करती था। अतः एक दस गांव में आज तक अधिक आबादी ब्राह्मणों का रही है। गांव की ओर से यहां अत्यधिक थड़ा सम्मान पालाएन और पचायत के कार्य सौंप दिए जाने पर ये ब्राह्मण

1. उक्त समय गांव कालू में ब्राह्मण औरतें प्रायः महाजना के घरों में खाले की प्रथा से सम्बंधित, उन घरों को अपना भवा (पीहर) मान कर रही।

समाज के लोग, सुखाधिकार स्वरूप दूर-दूर से आकर बढ़ने गए। बालू में वे आज भी दादा नाम से सम्बोधित किए जाते हैं। स्नान करते समय बालू के द्विज योने हैं—'हर गंगा हरे हरे, बार बार ब्राह्मण कर।'

गांव सूई से बि स 1976 में एक इतना बड़ा पारिव ब्राह्मणों का परिवार बालू आया कि उसका अपना अलग एक "सूई वाला" बास ही बस गया है। ऐमे ही बि स 1995-96 में गांव मालसर से आये पारिवों के परिवारों से एक मालसर का बास बना हुआ है। बि स 1976 में गारवदेशन से आये हुए बरागियों का भी यहाँ अपना बड़ा बास (मोहन्ला) है। बालू में विजयसिंह जा के पट्टे का वह प्रारम्भिक युग विक्रम एव जनमन्था की वृद्धि होने में स्वर्णकाल कहा जाय तो कोट अत्युक्ति नहीं होगी।

उस समय किसी भी राजा महाराजा के विहासनाम्न होने के समय रियासत के ठाकुरों मामतों और श्रीमता से उड़ी भेंट ली जाती थी। उस भेंट को योंता कहते थे जिसे मामध्यानुसार सारी प्रजा देती थी। मन्गजा के कुवर जम पर भी प्रजा का यह योंता देना पड़ता था तथा विवाह और मृत्यु के समय भी तमाम जनता से योंता लिया जाता था। तभी ता राजा की वग वृद्धि व जीवनी के लिए विसा विसान जाट न कहा था—'ओ (राजा) जायो भला न को परणीउयो भलो, न मरयो भला। ओ तो ऊँगो ऊँ ही रयो चोचो है।' यानि राजा का जम विवाह और मृत्यु एक भी अवसर प्रजा के लिए हित में नहीं राजा का एक जसा रहना ही अच्छा है। क्योंकि प्रजा का योंता (कम से कम एक परिवार से चार रुपए) देना पड़ता था। पर अभी योंता यह योंता भेंट ब्राह्मणों का माफ कर ली जाती थी।

उस समय राजा महाराजाओं के चोचले बड़े निराले जान थे। वे अपनी रियासत के नगरी का कभी कभी देखने जात ता वहाँ के लोग उन्हें नजराना देने उड़े बड़े उपहार भेंट करते थे। उनके साथ सक्डो कमचारी रहते थे। उनके पाँतिया का प्रबन्ध महामाज्या के रूप में होता था। रमाइये गवये, नतक बाद्य बजाने वाले सवारिया सहित साथ रहते। गावों में औरतें और कपारों कोरे कलश (वेडना) मामों बनान ले जाती थी।

सन् 1946 की 31 मार्च को गांव बालू में श्री अमरसिंह जी पधार थे। तब उनका स्वागतार्थ हुआगै आदमियों का आगमन हुआ था। तापें तो नहीं बंदूकें चरी थी बाज उजे और हर दरवाजे पर स्वर्ण मालाएँ पहनाई गई। भाग्य हुए और अच्छा नजराना हुआ था। श्री अमरसिंह जी ने बालू में आया हुआ मारा द्रय गांव बालू को ही स्कूल भवन बनवा लेने के लिए दे दिया था। उनका विमान आदि उसवो पर भी कमचारियों, भृत्यों एव बालकों को मिठाई पोशाकें एव साफे मिलते थे। बालू की देखी के लिए हर मान दोनो तदगात्रा में सरकार से भेंट एव पूजा की मामश्री आया करती थी। पहले के जमान में भानोनाथ जी की जगह में श्री राय की आर से पूजा का सामश्री आया करती थी। ये कई राजा बड़े उदात्त-दानी तथा बहादुर हात थे। इसलिए वास्तव में जनता की श्रद्धा के पात्र बने रहते थे। उसी प्राचीन गरिमा के कारण उनकी सन्ति व प्रति जनता आज तक श्रद्धावान् बनी हुई है।

उस पुराने जमान में साधारण राजपूत की बच्चा आदमी माना जाता था। आदमा

ठाकुर, लडका कुवर और उसका लडका भेंवर नाम से पुकारा जाता था। उस समय कहावत चसनी थी कि—‘राजपूत न रेकार रो गाळ।’ यानि राजपूत ‘तुम शब्द-सम्बाधन को सहन नहीं कर सकता था। इसी सदम में एक प्राचीन घटना है— जेक गाँव रो राजपूत राहो म जेवड चराव हो। कोई आदमी उव न पूछयो—“ओ जेवड रा गुवाळिया, यो गलो कठीन जाव।’ उव उथळा दियो—“कोई मिनख न पूछ।” वो आदमी गुवाळिया कानी अचरज स जाकत थक पूछिया— तू कुण है ?” गुवाळिया गव सू बोल्या— म्हे ठाकरा रो मारि हू।

इस तरह स उवत घटना के साराज में यही संकेत है कि उस समय गावों में राजपूत को सब साग ठाकुर साहब कहते थे। ग्रामीण राजपूता के घर रावले जीर कोटडी कहलाते थे। उनकी स्त्रिया छोट के कजावे, बला अथवा नख चख तन डक कर बाहर निकलती थी। पडदे (पट्टे) रखती और समाज में बड़ी बोली का व्यवहार करती थी। राजपूतो की धाक के कारण चोरी डकती के वरन (समय) अ य साग भी अपन को राजपूत कह दिया करते थे। प्राय ऐसा प्रनिद्ध है—

जाट जगल ना छेडिय, हाटी वीच किराड।

रायड कडे न छेडिये मार सिघ दहाड ॥’

(जाट से जंगल में भगडा करना बुरा बनिय से बाजार में जीर राँघड (राजपूत) की हर समय बहादुरी बनी रहती है। उससे कभी भी डर (शत्रुता) नहीं करना चाहिए। तकड (शक्तिशाली) आदमी को यहाँ अभी रायड कहते हैं।)

कालू का जन सामान्य सदैव ब्राह्मण और वणियों के प्रभावधिक्य में प्रकुलित रहा है। यही का जन साधारण चाहे इनके बहुमत एव याव तपास¹ से सतप्त ही रहा हो, किंतु अपनी भारतीय परम्परा की महान मर्यादा वशात् सम्य समाज वाले इन मुखियों के प्रति उसके मानस में आज तक भारी सम्मान और प्रेम रहता जाया है। वैसे भी हो आम जनता व काम भी तो वणियों द्वारा ही सरल होते रहे। क्योंकि यहाँ के महाजन साग सदब बाहर नाम से रूपयो का लेन-देन करते थे। व गाँव के किसानों को अपना आसामी बनाकर उनके विवाहादि अवसरो पर खूब रुपये देने थे। यहाँ के साधारण साग अपन मारिंत (माँ बाप) व मरने पर भी काफी रुपया खच किया करते थे। उस अवसर के समय गाँव के बोहरे दुख बटान के मिस (बहाने) उसके घर जाकर रुपय देने का वादा करने और मुहमांगे रुपय दकर उसमें अगूठा दस्तखत ले लिया करत थे। जेचारा आसामी कठिनाई के समय अच्छा मत्यु भाज आदि रस्मे पूरी करके अपना कावा² निकाल लेता। कावा काज, या मुह की राख—समय की शान, मारिंत के पीछे ओसर (बडा भाज्य) करके ही बचा पाता। कालू में उस समय के मृत भोज्यों के नाम बडे विविध होते थे। जैसे सारे गाँव का अथवा आस पास से अपन आप आ जान वाले लोगो का सहभोज सर सारणी और ब्राह्मणो का भोज्य ब्रह्मपुरी कहलाता था। उसमें नाथ जोगी, वरागी जातकी, भोजक आदि पट दान शामिल रहता था। छ यात, चहलम, वारह ग्वाड मगेडा छ मासी तीन घडे बगरह भी मृत भोज्य होते थे। जाटो का

यहाँ अनेक गाँव उजड़ (नष्ट) हो गए हैं।¹ इसलिये अकाल शब्द सुनते ही लोगो के दिल दहल जाते हैं। वे कहते हैं—“काल नाम मौत का हाता है।

भडाण ता दुमिक्ष का घर ही माना जाता है। यहाँ दो दो तीन तीन वर्षों तक वर्षा नाम मात्र का भी दिखाई नहीं देती। यहाँ का जन-साधारण सदैव अकाल की आपत्तियों याधियों में जूझता ही रहता है। पर सारा खेती ही इतना कष्ट सहिष्णु है कि इस दुष्ट दुमिक्ष को मात्र देवी शक्रोप मानकर कभी कभी वर्षा की धोक पूजा भी करते हैं। रोटी मिलती है न कही पूरा पानी, कि तु यहाँ के मनुष्य मर खप कर आधे होते हुए भी इस जमागतिक अकाल की प्रवृत्ति की कूरता अस्वीकारत हुए न श्रम उद्यम करते हैं और न स्थान छोड़कर दूसरी जगह जाते हैं। काम अर कुमाणस ठोड पड यो मई।” वाली कहावत को सच्ची करते रहते हैं।

बसे तो वेद पुराणों के समय में ही अकाल पड़ते बताये गये हैं और इतिहासकार भी इस भयंकर समय का वर्णन करते आये हैं। मगर स्व० जगदीश गहलात न इसके नाम रूप भेदों का विभाजन करके सन सवत् देकर सतालिका पूरा अलेख किया है। डॉ० गौरीशंकर हीराच न झापा ने राजस्थान के मध्यकाल की अकालपूण बताया है। उन्होंने सन् 12५5 से 58 तथा सन् 1290 से 96 के वर्ष महा अकाल पूण बताये हैं। सन् 1309 से 1313 के वर्ष भी अकाल के बतलाये जाते हैं। तभी तो यह हमारा राजस्थान, सतवाली एवं त्रिकाली काल का नामूनदार देश है। ई सन 1335 के समय अकाल पीडित जनता के लिये यहाँ समरावल स्थान पर देवगुरु जामोजी द्वारा दूर दूर तक उनके अनहितकारी काम बरबाद कर भारी राहत पहुँचाई थी। बीकानेर राज्य के राव लूणकण ने ई स 1505 26 के अकाल में पर्याप्त जन कल्याणकारी काम सम्पन्न करवाये थे। इस शताब्दी में राजपूताने में अनेक अकाल पड़े थे। ई सन् 1755 में बीकानेर शहर की शहरपनाह महाराजा गजसिंह न अकाल के समय बनवाई थी।

वि० स० 1812 (ई० सन 1755) में बड़ा भारी दुमिक्ष पड़ा था। कालू के चारों ओर हाहाकार मच गया था। ऐसा सुनते हैं—पुरुष स्त्री और बच्चे बिलबिला गये। पशु पक्षी तक सड़फत हुए व्याकुल हो गए। भूखे लोग हूब कर भुरट, बेर, बमरडा घास, पत्तों और खेजडो की छाल तक खा गये। महाराजा न सदाबल खुलवाये और राज्य में नई इमारतें भी बनवाई थी।² ई० सन 1796 में पड़ने वाले अकाल को भी लोग भयंकर अकाल बताते हैं। यहाँ एक अणचकिया अकाल बड़ा भयंकर पड़ा था। प्रजा कई दिन तक गाती रही—“अणचकिया काळ भले मत जाइ म्हार देश में।” (कालू के पुराने व्यक्ति इसकी सारी पवित्रता या लेते हैं।) इस अकाल के समय बहुत स लोग बाहर चले गये। अकाल के दिनों में विदेशी कम्पनियाँ यहाँ आकर बुध्दित लोगो को अनेक प्रकार के प्रलोभन देती और अगूठे करवा लेती। फिर विदेशों में ले जाकर उनके साथ गुलामवर्ति का व्यवहार किया जाता था।

1 (क) प्रजानाग गमिष्यते दुमिक्षमय पीडिता ।

(ख) तत पापक्षते लोके दुमिक्षे रोमहर्षणे । (गग सहिता)

2 इन्द्रायण पल के बीजों की बरखवाटी बनाकर खाते थे ।

3 ग्यालदास की ग्यात, जि० 2 पत्र 85/पाउलेट, गजेटियर आब् दि बीकानेर स्टेट, प० 85 ।

पाउलेट के बीकानेर गजेटियर को देखन से पात होता है कि ई सन 1834-1835 एव सन् 1849-50 के बष दुमिल के थे। सन् 1868-69 और सन् 1891-92 ई० म अकाला के उल्लेख इम्पोरियल गजेटियर मे मिलते हैं। मुता है—इन अकाला म गाय-भसो ने घाम की जगह कीड़े मकीड़े तथा टीटणें या ली थी, जिनसे उनका दूध काला हो गया था। मनुष्य की कीमत ही नहीं रही। रोटी व बदले सतानें विकने लगी थी।

वि स 1956 (ई सन 1899-1900) मे बीकानेर राज्य म भीषण अकाल पडा। सारे राजपूताने और भारत के कुछेक भागों मे इसका पूरा प्रभाव रहा। राज्य भर के सफट ग्रस्त लागों म से कुछ ता विदेश चले गये और प्राकी बच्चे लागों के लिए मरकारी सहायता के काय धुर किए गये।¹ गहरपनाह (नगर की दीवार) सुधार, गजमर झील की खुदाई और अन्य बहुत से काय राज्य द्वारा चलाए गये। नगरी म मेठा जीर राज्य की तरफ से बीमारो बावत अन खेज भी खुले। परदानगीन औरतो का यहीं इ तजाम हुआ। राज्य न जन महायताय लाखों रुपए खर्च किए और लाखों रुपए माल बसूलों के माफ कर दिए। गाँवो मे सरता गल्ला पहुँचाने के लिए महाराजा न गगारिसाला नियुक्त किया था। राज्य से पशुओं व घास पानी का भी पूरा प्रबध हुआ था। बष की समाप्ति पर लगभग एव लाख रुपय बीजा ऊँटादि पशुआ के देकर महाराजा न किसानों के छेत बीजने मे उत्साह बढ़ाया। मगर गाँवो के खेजडो पर कई दिना तक छानें नहीं पक सकी। कालू म बहुत समय तक कई खेजडे उन छीलने वाले लोगों स भयभीत रहे, जो वि सु उनीस सौ छधन के अकाल म बुरी तरह छील डाले गए थे। चौ० हरिश्चन्द्र एडवोकेट ने भरथी म लिखा है कि डूंगरगढ व कानू के बीच गुमाईसर म लाग सिधराज भाटा पीसकर आट म मिलाकर खाते।

उन दिनों हैजा आदि भयकर महामारी से हजारा आदमी मृत्यु यक्ष्या म पहुँच गए। बदनाम दशम, एक न दस्त एव उल्टी और छटपटाकर प्राणात्। महाराजा गगारिंह ने स्वय गाँव गाँव घूमकर उक्त आपतियों के समय जनता की सहायता की। इनके प्रजा हितपी कार्यों से प्रसन हजर भारत सरकार ने इन्हें प्रथम श्रेणी का 'केसारे हिंद' स्वर्ण पद्म अत्ता किया था। वि स 1959 (इ सन 1902) म तत्कालीन बाइसराय लाड कजन बीकानेर आए जीर उक्त दानों कार्यों के लिए राजकीय भोज के अवसर पर महाराजा गगारिंह जी की बड़ी प्रशंसा की।²

1 तत्समय पंजाब के नेता लाला लाजपत राय के कहने से बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री गान्धिलचन्द्र नारण स्वयं सेवक के रूप मे बीकानेर आये और सहायता कार्यों के माध्यम स लौटते समय यहाँ से अपन साथ बहुत से अनाथ बच्चा का लाहौर ले गए। वहा आय समाज के बडे अनाथालय म उन बच्चों को आश्रय दिलवाया। यदि ये बच्चे अकालग्रस्त क्षेत्र में वही रह जाते ता घुमकह पानरी लोग उन्हें अवश्य ईसाई बनाकर ले जाने। (सरिता 15 अक्टूबर 1960)

2 जिनम 9348715 मनुष्य काम करते थे। इनका प्रति पुरुष 14 छटाक प्रति स्त्री 13 छटाक प्रति बालक 8। छटाक और दूध मुँहे बच्चे को 3। छटाक अन रोजाना दिया जाता था। औषधि आदि के लिए डाक्टर भुवर था। अकाल के महकम म राज्य का सनीसर 73120—। ३ रोजाना खच पडता था।

बीकानेर राज्य का इतिहास चौथा खण्ड पृ० 131 ले० कुँवर कल्याणभूदेव

3 बीकानेर राज्य का इतिहास भाग दूसरा पृ०—506 07

वि स 1971 72 73 (ई सन 1915 16 18 19) के वष भी अकाल के रहे। इन वर्षों में हल हो खड़े नहीं हुए। पशु प्राय मर गए। वि स 1974 में वर्षा हुई किंतु रतार (बड़े चूहे) अधिक हुए, उन्होंने फसल को बरबाद कर दिया। वि स 1975 में भी वर्षा हुई, मगर मरी (महामारी) इतनी बली कि गाँव के गाँव खाली हो गये।

वि स 1996 (ई सन् 1940-41) का अकाल राजपूताना प्रदेश के लिए बड़ा भयावना रहा। इससे पहला वर्ष वि स 1995 का कुरिया मुरिया (अर्द्धकाल) था। अतः 1956 से चालीस वर्ष बाद फिर से संवत् हाहाकार मच गया। इससे जन हानि तो कम हुई मगर पशु धन सारा मृत्यु की चपेट में आ गया। रेलों की सुविधा के कारण अन्न के भाव नहीं गिर। रेलगाड़ी से प्रदेश में अन्न का सुविधाजनक वितरण होने लगा था। घास-गुड़ी की कुछ गाँवों में रेलों में भरकर आने लगी थी। कभी-कभी वे इजन में जलते बोयले की चिमपाखिया से जल भी आया करती थी। उस समय गेहूँ के भाग 14 और 16 सेर प्रति रुपए के बीच रहे। इस तरह से जनता ने बड़ी हिम्मत और साहस के साथ अकाल से संघर्ष किया।

स्वतंत्रता के बाद यहाँ जो अकाल पड़े हैं वे चार प्रकार के हैं। ई सन् 1968 का महामयकर अकाल, ई सन 1950 51 वर्ष के भयंकर अकाल तथा सन् 1961, 63 के सरत अकाल और सन 1948, 1949, 53, 57 62 66 में कुरी नामक अकाल पड़े। इन सभी के लिए जिलाधीश बीकानेर ने समय समय पर ऐसी अभावग्रस्त स्थितियों के लिए यथा सम्भव सहायता कार्यों का संचालन करवाया है।

बालू में गढ़ के गिरदावर प० श्री खेमचंद, स्थानीय प० भणेशाराम शर्मा, किशनलाल यति रामनारायण चंवर मूलाराम पारीक, दीपचंद डूडाणी, लालचंद राठी और श्री सबा सदन सरस्वती पुस्तकालय के कायकर्त्ताओं ने वि स ७० तीसरी छिन्नम के अकाल में अपना जीव गाँव का चंदा एकत्रित करके वर्ष भर तक बड़ी गोशालाएँ चलाई थी। ग्वार के कलहे बड़ा दिए और तूड़ी के डेर लगा दिए थे। वि स 1995 में बाहर से पशु लेकर आये हुए लोगों से भूषा (चारागाह कर) गढ़ के गिरदावर ने लिया था सो सस्ती मजदूरी के हिसाब से वह रकम भी अनाएँ जोहड़े (तालाब) का पश्चिमी घाट और रखवाल के लिए एक साल (मकान) बनवाने में लगवाई।

रोग-दोष, स्थानोन्निवेश और औषधि-उपाय—पुराने जमान में खूनकरनसर जैसे सर्वाधिक पिछड़े गाँवों के विस्तृत क्षेत्र में स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति घोर लापरवाही बरती जाया करती थी। अशिक्षा, अधविश्राम और अत्यंत गरीबी के कारण मनुष्य कुत्ते की मौत मर जाते थे। उनका जीवन, यातनाओं की सम्बन्धी काली रात में मरता भुगतता रहता था। किसी तरह की राहत का नाम नहीं। दिल घुट जाता स्वास अटक जाता और पथ्या पथ्य के अज्ञान में दबोचा हुआ बीमार जान जाने तक निरुपाय कराहता रहता। जन्म के समय भी ग्रामीण दाढ़ी गंदगी भर हाथा तथा जक लग छुरिया या कटारी से शिशु का नाल-छेदन कर दिया करती थी। बच्चे के निमोनिया (ऊपरला या डब्बा रोग) में स्थायी औरतें गम तात करके गोल चपकिया लगवा दिया करती थी। खेच आदि के टीक लगाने वाल आते, तब बालकों को माता-

पिता उनसे छुपा लिया करते थे। वे अभिभावक, बीमार बच्चा के नजर टपकार, देव घोष, डाकण स्यारी और जालाटिये लग जाने के अर्धविश्वास में खूब धाड़ फूँक और लोटी-शुधकी, डोरे जत्र करवाया करते थे। बीरतों के हिस्टिरिया जसी बीमारी में भूत भूतणी या चूहडावण आदि का तन प्रवेश बताकर स्याणे लोग मार पीट करते, अँगुली मरोटते और मिर्चों की धूनी दिया करते थे। निमानिये पाणीपरे जसी मियादी के बुखार में 'कुलडिए वाली' गम ऊकासी बारम्बार पिलाते हुए रात दिन भारी ठनी कपडों से दपटकर रोम दाटने की अहित कारक चेष्टा किया करते थे। मलेरिया में फिटकड़ी तजरा चौयइये में डोरे टोने जैसे टट पज और मादे की महीनी तज धूखे रखने की प्रथा बनी हुई थी। तब कई राम के डारे (भरोसे) बच जाते और पर्याप्त मद्दि, बिना मौत मर जाया करते थे। उनाले (गर्मी की ऋतु) में अलाई पचिए सियाले (गर्मी की ऋतु) में स्याऊ-घासी और चौमासे (वर्षा ऋतु) में बाले (नहत्वे) से जन साधारण पीडित पड़े रहते रहते थे। माँवा में जोइय चीचड मच्छर डकी तथा बिच्छुओं का पूरा कष्ट होता, पर खटमल नहीं।¹ आक, धतूरा और नीम उनके घर (घरलू) हकीम थे।

जस कस्यो में स्याणे पुरुष और स्याणी औरता से बीमारा को राहत मिलती, वसे गाँवों में भी पुतता पुरुषों के पहुँच जाने पर रोगियों को काफी सहारा मिल जाया करता था। कई बड़ जन तो अधिक गर्मी की रात्रियों में तीन तीन बार हेला (ऊँची आवाज) कर दिया करते थे कि— अक्लेबो भोक्ला है ताती लूवाँ चाल, मावा उठर आपरा दाबरा न पाणी पण जरूर जरूर पा देया ।।।'

रात के समय भयंकर आँधी आ जाती, तब भी बच्चों के स्वास्थ्य में दोबस्त हेतु हेले हाँ जाया करते थे।² गाँवों में ऐसे सम्बन्धों द्वारा सी बच तक का पुराना घुड़ घत बढिया शराब हाथी की लीद, कुटकी, चिरायतो अपूठ काटो, के-सूसा के फूल, किरमाले की फली, बेल गिरी, जवहरडे, काला नमक शहद साभर भस्म आदि अनेक औषधियाँ जन साधारण को सहूँपा दी जाया करती थी। अवसर पड़ने पर यहाँ पुराना घी, शहद, सफ़ेद चिरमी, नर लौंग, पीपल इसाबी और कस्तूरी तक पहाड़ी उत्पादन की चीजें सेठ साहूकारों के यहाँ मिल जाया करती थी।

कालू के जन उपासरे, भानीनाथ जी की जगह और स्वाभी जी के मंदिर में भी विभिन्न प्रकार से डोरे जत्र आटे झपटे और दवा दारू देकर मनुष्यों के रोग मिटाये जाते थे। उपासरे की शिष्य परम्परा में वीर 'से'। लाने वाले यति होते थे। कहा जाता है कि श्रीपाल एव जेसराज यति ने आकाश भाग से आती हुई किसी की अनुरागि उपासरे में गिरवाली थी। वह वि. स. 1923 के आस पास गाँव गारबदेशर में ध्योगमल बागड़ी के पीछे (भरणोपरात) होने वाली उनकी सती पत्नी को रातोंरात 'से' लाए

1 आजकल, मुसाफ़िरो के साथ खटमलें भी आने लगी हैं।

2 रात्रि के समय जोर की आँधी आ जाने पर आग लगने के डर से वासते (अग्नि) का जावना करने का भी हेला हो जाया करता था—'आँधी आव, वासत जरू ओट दिया।' बामन बड़ी भेंटगी चीज थी, माग माँग कर लाते और बप भर तक रखते थे।

थ १३ इस तरह में अनेक बारदाता के स्याण संधियों की यति परम्परा थी और वे वशी वृण, उच्चाटन, मोहन के मंत्र तब तांत्रिक थे। आगे चलकर श्री जेसराज के शिष्य गणेशलाल पशुआ के दोने टाटके करने लगे और उनके शिष्य द्वय विशनलाल गोविंद राम आयुर्वेदिक इलाज करने वाले प्रसिद्ध बंध बने। वैसे फट फिटोड़े, भूत जोगिनी के चक्कर डाकिनी साकनी के आखर भानीनाथजी के घूँगे की भस्म से मिटाये जाते और नाथ साग जन्म मन्त्र भी किया करते थे। बिच्छू आधा खीची, पया, घरण और कनमूल (कण रोग) आदि के पाड़े छोरे यहाँ के ढाढी दिया करते थे। हिंदू सिकोत्तरे (समाने) पाडा देते तब दुर्गा हनुमा शिव, गोरखनाथ आदि का नामोच्चारण (मन्त्र) बोलते और "कामरू देव कमरूया देवी एव स्माल जोगी" को साथ रटते हुए अपने चीपटे पलिये, पाडू या अगोछे से फटकार मारते थे। परंतु मुसलमान पाडागर बिस्मिल्ला रहोम और रहमान" आदि के नामा से पाड फूक किया करते थे। नीचे एक कौडा झाडने का मन्त्र देखें—
 ॐ नमो कौडा रे त कुड कुडासा, लाल पूछ तेरा मुख काला मैं तुहि पूछ कहाँ से आया, तोड माम सबको पया खाया ? अब तू जाय भस्म हो जाय, गोरखनाथजी लागू पाय, शब्द सचा पिड काचा फुरो मन् ईश्वरो वाचा ॥^{१३} 53
 इस मन्त्र को पढ़कर सात बार नोम की डाली से झाडकर कौडा रोग नष्ट किया करते थे।

बवासीर की दवाई—दुखी बडी जो जानिके, लीम सग म खाय।

वा घत सग जो पीजिये खून बवेमी जाय ॥

(रसरज महोदधि पृ० 26)

आधाशीशी का यन्त्र—

53	42
311	70

यह यन्त्र स्याही से लिखकर माथे में बाधते तब आधाशीशी दूर हो जाती थी।

कालू में बीमारी घाति के लिए मन्त्र—दवा के निवाम पड़े एवें पूजारी रोग दुर्गा के पाठ करत और रुपये गहने ऊँकार कर बीमार क पिरहाने रखने उमारा उतारने लोटी डालने नमक मिच अग्नि में डालने जैसे टोन दममण करवाया करते थे। मनीतियों में देवी देवताओं की फेरियाँ तथा ब्रूण वरसाने के काय हुआ करते थे। गावों को गुद, कुसा को रोटी और जोतकी आदि को दान देकर बीमार के भुरे ग्रह टानन की प्रथा भी प्रचलित थी। अकाल अथवा ग्राम राशि पर कड़े ग्रह पडने के समय जोतकी भी स्वयं रात्रि के अन्तिम प्रहर में हर घर के फलसे (दरवाज) आग जाकर अपन आप ग्रह शांति हेतु शानि बाबा की प्रायनाएँ कर आया करते थे। इस तरह से कालू के ढाढी भी अपने जामानों के घर आगे जाकर (गृह शांति हेतु) उनके पूबजों के नाम बोला करते थे। इस प्रथा को गावों में गज बोला कहा करते और हम नाथ की मासिक अवधि के बाद उनकी रूपय पसे, अन्न चरित्र और अय घातु चगरह देकर चुकाया करते थे। देवी की

1 इसलिए सती का दातुन (नही पटा) चमत्कार नहीं हुआ, तब सरकार में मामला दज हो गया था।

2 श्री विशनलाल के लिए भूठ मारन और पुत्र देन की लोक धारणाएँ थी। कई औरतें भी मर्दों के व्रजमण और पुतले गढ़वा देती, ऐसे विश्वास चलन थे।

3 कौटुक रत्न भाटागर पृ० 295।

कार, आशा रुडिय का गीत¹ भाँमिय का चढ़ावा और प्रह्लाद की चिटकी, कालू गांव के विशेष टोटके हैं। बाक, कुत्ते फाई आदि बालन के अपशुक्ना की तरह कालू गाँव में राति के मार बालने भी बुरे साबित होते हैं। पहले किसी को स्वर्ण गहना वगैरह पडा मिल जाता तो बुरे ग्रहों से भयभीत होकर उस वस्तु के साथ अपना अथ द्रव्य मिलाकर डाकूत को दान दे देना पड़ता था।

कातरा कुत्तर और दोने उपाय—राजस्थान में आजीविका का आधार खेती रहा है, जिसकी महिमा का घमसास्था में काफी उल्लेख है। कालू व लोग भी खेती सवधी पुराना ज्ञान एवं अनुभव रखते हैं। जाताई वोआई बायु नक्षत्र सुभिक्ष दुभिक्ष आदि शाकुन-अपशकुना से सम्बद्ध ज्ञान उनका कहावतों में प्रचलित था। किसान कृषि शास्त्र और ज्योतिष विद्या का नहीं जानत, मगर खेती की उपयोगी बातों में प्रवीण रहा करते थे। वे यथा समय खेती की कहावतें अपनी जवान पर लिए बोतते और बीजबाल की भाषा तथा सरल तुका से जुड़ी हुई होन के कारण उनको प्रायः कठा में बसाय रखते। खेती की कहावतें अनेक रूपों में हाती थी और समय पर सालह ज्ञान सत्य बठ जाया करती थी।

प्रत्यक्ष देखी—वि० स० 2035 की बात कालू में खेती का खा डालने वाले कातरे की पुरानी कहावत 'भादवा बदी छठ, कातरो न काई लट' पूरी उतरी। अर्थात् यहाँ की सुकाल खेती का प्राकृतिक रयाल से बर्बाद करके तुच्छ कीट कातरा ठीक भादवे बदी छठ का समाप्त हो गया था।

महाँ खेती की फसल नष्ट हान के पुरान सात कारण—याने इति हैं। जैसे टिड्डी, फाका कीड़े पक्षी, बूढ़े वर्षा की अधिकता, वर्षा की कमी और दुश्मनी आक्रमण। लोग इनका होना न होना कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन चाँद के पास कृत्तिका नक्षत्र को देख कर समझते थे।

काती पूनम दिन कृत्ति बाद मछाने जोय, आप पीछे दाहन जिणसु नि^२चे हाय।
आग रहे ता अन नही, पासे रहे तो ईत पीठ हूया परजा सुखी निस दिन रहो नचीत ॥

ऐसी अनेक कहावतें कालू में प्रसिद्ध हैं, कि तु खेती को नष्ट करन वाले कीड़ों की छोड़ी कहावतें देखिये—दाय मूसा दोय कातरा दोय टिड्डी दोय ताव। दोया री बादी जल हर दोय बीसर दाय बाव ॥ ये दो' हवा के दिन हाते, जो एक नक्षत्र से पहले चलने पर उबत उपद्रवा का आविर्भाव होता बताते थे। राजस्थान में चपा का आगमन गडे हप का विषय हाता, कि^३तु कभी कभास उसके साथ टिड्डी जस फसल शत्रु कीट आकर किसान के उल्लास पर पानी फेर देते—

टिड्डी उडज्या ओ भेत परायो जेठ साह मे वळ्या तावडे, पच पच हळियो बायो।

वोहर को सिर कसव बढायो बीज उधारो आयो ॥ टिड्डी

टिड्डी दल अडे दते तब फाका दल (छोटा टिड्डी) पदा हो जाता और समुद्री लहरा की भाँति लसस प्रवाहमान होकर खेता को सफाचट कर देती। लोग अपने खेतों से कपड़ों की पलाई करके बाहर निकालते, तब यह कहावत चली—

कातरियो कपूत बेटी भूँ हैं फाकाराय। म्हीरी माँ न बाजा बाजिया म्हांन ढोल बाय ॥

1 आशा रुडिया आस देई, गाया भस्यां ने घास देई मोदी बाजरी रो दलियो देइ, तेल री तिल्लोही देई, धी री धिलोही देई माँ देई बाप देई, भाई और भोजाई देई।

पहले करवो नाम से एक फसल शत्रु कीट भी उत्पन्न होता था। वह बाजरे के कच्चे सिट्टे (मुट्टे) को चूसकर दाना नहीं बनने देता। पौधे सूख जाते मगर सिट्टों में एक भी दाना नहीं बन पाता। तब उसे मार भगाने के लिए किसान लोग कई प्रकार के टोने टोटके करते थे। आग जलाकर धूआँ देते तथा मामाजी, भानजे को हाथ में चूरमे का बाटका देकर अपने बड़े बठाले और करवा' से भरे खेत की चारो सीमाओं का चक्कर बाटते हुए जोर जोर से बोलाते—

‘भागे चढ़ भाणज्यो आयो, कढ़ज्या करवा खेत परायो।’

भानजा मजे में बैठा चूरमा खाता रहता। बचपन में अबोध लेखक ने स्वयं इसका आनंद लिया था। करवे की निकालने के लिए खेत भीमाओं पर ऊँटों की हड्डियाँ भी जलाते थे। आजकल ऐसे ‘बेबल’ नाम के एक भूरे कीड़े की आमद होने लगी है। यह दिन में पौधा की जड़ों में छुपता है और रात को बाहर निकलकर मिट्टी चूसता है। चूरू जिले में कई वर्षों से यह खेती को नुकसान पहुँचाता था। पर तु 2035 के वर्ष में बेबल और कातरे में चूरू सीकर झुपनू आदि पूर्वी जिले ही नहीं, श्रीगंगानगर बीकानेर और नागौर बगैरह की खेती को भी उजाड़ दिया। आखिर खत्म तो हुआ मगर किसानों के हृदय से व्यथा और आगाभी भय बढ़ गया। वे मुस्त और उदास होने हुए बोले— ऊयो आह्वेडी तो क देख बाहेडी” दुवारा खेन बीजना यथ समझा। ठीक भा हुआ—चोर लागे, धणी नी जाग, पिछनी बाही पुण्याई नाग।” छोटी फसल को पशु पत्नी खा जाते ॥ तब व्यय जोर परिश्रम दूसरी बार फिर बोन कर ?

महामारी—वि० स० 1974 75 (ई० सन 1917 18) में बीकानेर राज्य के बहुत से भागों में अतिवृष्टि के कारण फसल नष्ट हो गई और अकाल पड़ गया। कालू में अनाभाव और वस्त्र की जरूरतें बन आई थी। ऐसे कठिन समय में गाँव के लोगों ने आपस में मिलजुलकर समय गुजारा। अतिवृष्टि के कारण सितम्बर के अंत में शीत ज्वर का प्रकोप देश में फैला और साथ ही मूर्छा और सनिपात भी होते थे। फिर जीण ज्वर और अतिसार की कोप बढ़ि चल आई। व्याधियाँ ने ऐसा उग्र रूप धारण किया कि घरा में सब बीमार, पानी पिलाने वाला तक नहीं मिलता। इन रोगों के पीछे मार्च 1918 तक प्लेग की महामारी भयंकर रूप से फूट पड़ी। इसके साथ ही पलूज ज़ा की ‘मरी’ (महामारी) बड़े भयानक रूप में तबाही मचाने लगी थी। कालू जैसे गाँव भी घुरी तरह से इन बीमारियों की चपेट में आ गये। बड़ी सख्या में लोग मरने लगे। शहर और गाँव खाली से होन लगे। सीधे सादे सुरक्षाहीन गाँवों में भारी डर और आतंक छा गया। ब्राहि ब्राहि और ज़न्न भय गया। अश्वन और बीमारा से लोग अलग होने लगे। बीमारों को दवा पानी देने वाला भी कोई नहीं था और मृतकों को जलाने वाला भी नहीं। घरों में बीमार कराहते मरते लोगों पड़ी सड़ता रहती। चलने में असमर्थ लोग घरों के किवाड़ बंद करके अंदर ही मर गये। इस महामारी (वि० स० 1975) के सबब में गाँव नाथूर के कवि गोविंददान के पिता श्री विडददान द्वारा रचित दबी की प्रार्थना रूप एक साणौर गीत प्रचलित है—

‘उरुह उणतार बिच, बहार करनी इधन बीम हृत्थ लाग्लो पार वगती,
आकड अखू आधार इक् आपरो, साकड सिहायक धार सगती,
त्रिभागण रोडती थकी, आजै तुरत, आम नै ताडती मते अटकी
रसातल फोहती थकी मत रहीजे, गोडनी समदरा असुर गटकी
भू डडा भार मत रही अत भुजाली, खडा नौ पार मत रही खिजणी,
हडा आकास ब्रह्मांड बिच डोलती, वाघ परचडा असवार बजणी,
कोप कर का ह घट तुरत माग्यो कडह, बरड पतसाह न पकड बैठी,
जहड तू असुर कई गिट गई जोगणी धी गई हाकडो सडह पटी,
बेलका सिहायक सिध पर चढाली, गडाली भाष त्रिहुलोक गजणी
मडाली म्हारो धवन सत मानजे, भोम पर डढाली बिपत भजणी,
ताप हर चारणा विडह” आख तनै, सारणा जनेका बाज सदल मारणा रोग—
—कई सजमपुर मेनदे

विदगा चारणा तण वदुल घाव कर मात चावड सन्नू घलकियो इहगा—

भलकियो बेग आता ।

खलकियो प्रथी रोग भिमल खावणो, भुलक नू पलकियो¹ काड माता ॥

वि० स० 1975 की महामारी ऐसी भयकर थी कि बच्चे मृतकों के छिपके ही रह गए । पुरानी ओसर प्रचानुसार इस महामारी में मरे हुए लोगों के पीछे दो दो चार चार वर्षों बाद कभी दस और कभी पाँचह की सुविधा से ओसर (मृतक भोज) हुए । कई वैचारों की तानें ही मिलते रहें । श्री गोबिंद अग्रवाल (नगर श्री बुरू) ने लिखा है कि— ‘घर के सदस्यों और नौकरा ने साथें छठाने से इ कार कर दिया था । ऐसी मूरत में बुरू के स्वामी गोपाल दास जी ने वहाँ के लिए अजमेर से स्वयं सेवन बुनवाये थे । जिन्होंने घरों के निशेनियाँ लगाकर मृतकों की साथें निकाली थी ।

बुरू के सुप्रसिद्ध कवि श्री सुबोधकुमार अग्रवाल की उस प्लेग विषयक कविता का अंश है—

‘हो बात दुवाई के पीछे पाणी ध्यावणिया नही दिल ।

घर घर में हहासा पडी सड मुहदो ठावणिया नही दिल ॥

भाई न भाई छोड गयो, मोटयान सुगाई छोड गया ।

बेटा माँ बापा न छोडया दादो पोता न छोड गयो ॥

गवाड र्या का खुना पड या फल्ला, हेल्या की भोली खुली पडी ।

दम अपनी जान बचावण नै सारी ही दुनिया डूली पडी ।’

यथा समय महामारी प्रकोप के सात हो जाने पर ही लोगों के जीवन में जान आई ।² कालू ने सेवा भावी लोगों ने भी दवा-पानी से बीमारी की पूरी मदद की थी ।

1 प्लेग ।

2 स्वामी गोपालदास जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ० 86 ।

3 चौ० हरिचन्द्र नण, एडवोकेट न “भरू श्री” अवाल अक के प० 21 पर लिखा है—56 के अवाल को महामारी ने और भी भयकर बना दिया था । हमारे मगे गुमाई सर (कालू डूगरगड के बीच) के मादारे हैं । जहाँ एक ही गुदाडी में 16 आदमी मरे ।

उस समय मृतकों के लुग्त दाह सस्कार कर जाने वाले कुछ लोगा में वरणीदान बोधरा, देदाराम परमानराम सारस्वत, बालूराम वर्मा मूलचंद शंकर, इंदाराम पारीक, लामूराम भादू, तालाचंद बोठारी (बंदा) आदि लोग मुख्य थे। ये लोग अपने मधुर व्यवहार, सेवा सदभाव सहयोग वृत्ति और उदारता से क्षण बंध के सम्मानार्थ प्रसन्न मुख रह रहकर बड़े लोकप्रिय बन गये थे। आखिर मृत व्यक्तियों की मस्ती भी श्मशानो में झकटटी करके थोरियाँ भर भर कर हरिद्वार के जल में प्रवाहित करवाने के लिए भिजवाई थी।

कालू से दक्षिण के चुरू रामगढ़ जादि नगरों में दवा पानी के प्रबंध हुए। महाराजा साहब (गंगासिंह जी) ने लगभग ढाई हजार रकूट बीकानेर राज्य से सेवास भेजे थे। बूट और मौजे प्लेग से बचाव वास्तव स्वयं सेवकों के लिए भिजवाये थे। सेवा समिति अजमेर की ओर से राजस्थान में स्वयं सेवक आये और बहुत सजगता के साथ दवाइयाँ भी भगवाई थी। अजमेर सेवा समिति के मंत्री, कुंवर चौदण्ड जी शारदा ने मंत्री सहायकारिणी सभा चुरू और मुजानगढ़ बीकानेर कलकत्ता तथा शेखावाटी से जन रक्षा हेतु बराबर पत्र व्यवहार किये रखा। उस समय 'भारत मित्र' आदि पत्रों में इस महामारी की पूरी चर्चा हुआ करती थी। इन महामारियों का कालू की जनता पर पर्याप्त असर पड़ा जिसकी हानि के हालात जनगणना सन 1911 के मुकाबले में सन् 1921 की जनसंख्या देखकर जाने जा सकते हैं कि संख्या बढ ही नहीं पाई थी। वि० सं० 1974-75 का वर्ष बीकानेर और कालू ही क्या सारे देश में दुर्भाग्यपूर्ण रहा।

बीकानेर के घास—प्रत्येक अपघ्नम और अभाव पर यहाँ यह विशेष कहावत है—बीकानेर का घास है मोचला काळर भूल प्यास है, सचगर धनर सास भर है सरजाम सू रचना काय। इस पंजावत के अनुसार कालू के लोग अतिरिक्त विवाह औरतों के, हर बात में बड़ी भारी किरायात सारी किया करते थे। विशेष कर पारीक ब्राह्मणों का यह सदीना रिवाज है पुराना अन्न खाने के काम सेते और नई फसल वाले को कोठे कोठियों में बंद समूह करके रखते थे। कालू के किसान प्रातः छाछ राबड़ी पीकर हवाई, कूप, खालड तथा पशुधन की निवेदारी में घर से बाहर गाँव चौगान में एक दो बजे तक घूम फिरकर घर आते थे। वे खाली हाथ नहीं, हरिया कानते जेबड़ी (रस्सी) बटते हुए तथा ॥ य काई पशु हितकारी काम करते उलते थे। प्रत्येक घर का एक पुरुष अथवा एक स्त्री कूप से पानी लाने में नियुक्त सा किया रहता था। मतलब हर घर से प्रायः एक औरत का दिन नित्य हमेशा पानी लाने में बीतता था। उन दिनों पानी और पशुओं के काम उनके दैनिक घड़े होते थे। दोपहर के बाद एक समय रोटी या खोप खाकर रात को सो जाते। पशुओं के लिए घास फूस, घिटाळ त्हासू और चारा पाला दूसरे गाँव तक जाकर काट लाते। उनके पास घास की कूडिया बागर (डेर), प्लो के पचासे छिबरे, चारे के किड़े कराई (स्पाई बडे डेर) हर वर्ष दुमिश के ढर से पूरे वर्ष के लिए काफी मात्रा में मौजूद मिलते थे। अन्न की भाँति नया समूह किये हुए पुराना घास चारा ही काम में लिया करते थे। खेती की फसल खराब हो जाने पर अथवा दुर्बल स्थिति वाले साधारण गृहस्थी अकाल समय में आठ प्रहर ही नहीं, पाँच प्रहर तक निराहार निकाल दिया करते थे। बहुत प्रयत्न के बाद वही से थोड़ा बहुत अन्न

प्राप्त घर लेते तो 'लिया' बनारस घर के सार 'गंग बाड़ा बाड़ा' घंटिकर अढ़ भूखे रहने हुए समय गुजारते थे। छाटा की यह दलिया थोड़ा अधिक दे दिया करते थे। बच्चों के ओरी, माता जैसे गंगा का गाँव में प्रवेश हो जाने पर तिशुओं के सङ्गता से गाँव के चारों ओर के टीके, गाहने की प्रक्रिया द्वारा भ्रम जाया करते थे।

अपाता, अडावासा में यहाँ ऊँट और चना की बमी के कारण मनुष्य अपने घर से औरत या सड़का द्वारा हन खींचवा लेने। उसे 'हाथा हलिया' करना कहते थे। सुसूक्षित सेतीहर बीजन वाला अन्न खा में जाम ? इसलिए उमम बरग मिला लिया करते थे। दिन भर हन चलाते और रात को पीछी नाल (पीछा मकोडा के रेने) में सो जाते थे ताकि सुबह जल्दी नींद उठ जाय। वे सेती बीजन वाले 'हाल्ली' लोग सध्या सोते समय पाम व पेड़ की छाल में डोरिया (सन का रस्ती) बाँध दिया करते थे। ताकि वे वृष्टपाय एवं सूमे पेट, उमे पककर लड़े हो उठने में समय हो सके। पहले इस तरह से गाँव के लोग सेती किया करते थे। इसलिए लोग अभाव और कठिनाई के लिए बीकानेर राज्य व रगिस्तानी गाँव में बमने की मुमोयने सेलने रहने। वे बातें अब नहीं रही हैं।

कालू के पुराने लोक स्वभाव एव वस्तु भाव—प्राचीनकाल में कालू के कुछ चलने चरित भी होते थे, ऐसा सुना जाता है। पहले इस गाँव में अशिष्टता की अपेक्षा शासीनता का पमठा ऊपरी चना उठा रहता था। कुछेब लोग अस्पृश्यता के घर चले जाया करते और वह प्रथा के अनुसार दह जुमाना भोगते रहते थे। यहाँ मातायात के मारे काम प्राय ऊँटों से ही हुआ करते थे। केवल तीस यात्रा में समूह बनाकर पैदल जाने और साल छ महीना में वापिस घर लौट कर लेते थे। दूर दूर जगला भरी यात्राओं में अधिक ऊँट ही काम में लिए जाते थे। महाजन लोग के थाल वस्त्र और विप्रवां धूर देवताओं की यात्राओं के समय ऊँट बिराये करने समूह से जात जाया करते थे। अपने और भावेतिथों के लान बाबत साथ में चूरमा, पूड़ी पराठे तथा लड्डू जलेबी ले जाया करते थे। इस तरह से भाटेतिथो के खाने का सालव भग स्वभाव असम्भ्य बना हुआ रहता था। वे विवाह शादियों के समय तथा दुकानदारों का माल लाते समय भी गहबद कर दिया करते थे। पाँच आन के बिराए में एक ऊँट और आदमी पूरा दिन लगाकर लूनवशनसर से छ मान मन बजन सादकर लाया करते थे। धी डूगरगड और सरदारगहर का बिराया इससे दूना तिगना होता था। बगला फाजिलका तथा सिरसा से अन्नादि की वतारें (अन्न से सदे ऊँटों की टाली) आया करती थी। फिर भी मन भर के प्याज मन भर का अनाज और रुपए का मन भर ही नमक मिल जाता था। उस समय मिरच तेल तम्बाखू तथा खाह, पाच सेर तक, चावल गरकर और तिल आठ सेर के एव गुड गेहूँ, पत्रह से बीसासेर के मिलते थे। घी, डेढ़ दो सेर का मिलता मगर दूध पसा से नहीं मिलता था। लाहू और जलेबी चार सेर के बिकते थे। नारियल का एक आना और खोपरे का एक पसा लगता था। आन गज दोवटी (मोटा कपड़ा) एक रुपए में जूता का जोड़ा मिल जाया करता था। सोना अठारह बीस रुपए तोला तथा चाँदी के चार पाँच आना भर के भाव थे। लाख वस्तुएँ आज के भावो को देखते

1 पानी में थोड़ा मोटा आटा मिलाकर पकाया हुआ खाद्य पदार्थ।

हुए अधिक मात्रा में सस्ती थी, मगर मजदूर लोग पस के अभाव में उनसे दान ही कर पाते थे। वे तो गुटका रोटी मिरच रोटी अथवा कादो (प्याज) रोटी खाकर ही सारा जीवन बीता देते थे। लकड़ी और भक्षान वाले कारीगर बेजारे को पाँच आने घ्पाटी (दुनियाँ) के मिलते थे। मोटियार मजदूर का एक आना तथा लुगाई टावर को टक्का पद्दसो मजदूरी थी। विवाह के समय उनके सारे नेमवारा में चालीस पचास रुपये तक काम निकल आया करता था। वह महाशय अपनी नूतन सीमाय्य काशिणी के लिए परो में कासी की कड़ी, हाथा में नारखी का बूटा और माथे पर लाख के बोगन का सुहागाभूषण भेंट करके बधू को अपने ठेठ घर ले आया करता था। जनता की जरूरतें उस समय बहुत थोड़ी हुआ करती थी। किन्तु असाधारण तथा अमीर लोगों की रईसी आम जनता से उस समय भी भारी भिन्न थी। उनके तो मेवे¹, मुरवे और हर मौसम के फल हर समय तयार मिलते थे। मना विभिन्न इत्र एवं हीरा पत्थरों से जड़े सैरों सोन के जेवरानों से वे लदे रहते थे। मिलगत बहुतायत के कारण उन लोगों की अद्वितीय जरूरतें तत्काल पूर्ण हो जाया करती थी। उनके सोने चाँदी के बत्तन पलग, किबाड, मूतिया तथा कोरणीदान² फल दशनीय³ होते थे। वि. स. 1996 तक वे सारे ठाट प्राचीन गत चलगत में विद्यमान थे। मगर वि. स. 1996 से आरम्भ होकर हर एक वस्तु में ऐसी द्रुततरफी महंगाई आई कि कम से कम पचास से लेकर डेढ़ सौ गुना रुपये तक मूल्य बढ़ गये।

वि. स. 1996 (ई. सन 1939) एवं वि. स. 2000 (ई. सन 1943) के समय तक दिल्ली में वस्तुओं के भाव थे, जो 'कल्याण' वष. 20 अंक 1 (गो. अ. व.) पृ. 432 से उद्धृत हैं।

वस्तु	वि. स. 1996 (ई. सन् 1939)	वि. स. 2000 (ई. सन् 1943)
चावल	411) रुपया मन	34) रुपया मन
दाल	5) ,	25) ,
शक्कर	121) ,	40) ,
सल	20) ,	50) ,
ची	50) ,	140) ,
दूध	5) ,	25) ,
पत्थर का कीमती	6 आना मन	2) ,
लकड़ी का कीमती	11) रु० मन	4) ,
मोटा धोती जोड़ा	2) रु० जोड़ा	12) रु० जोड़ा

प्राचीनकाल में ईसा से 500 वर्ष पूर्व गाय दस पसों में बछड़ा एक आने में बल डेढ़ आने में और भस दो आन में मिलती थी। उस समय पसे का एक पन दूध था।

- 1 वादाम, पिस्ते, अमूर अजीर, नाथपाती, अनार विसमिस, छोहारे और भांति भाति के शरबत।
- 2 बड़े लोगों के कमरों में ज़ाह फानूस गुलाब पाश, इत्रदान पानदान पोखदान आदि सामान रहता तथा गवये, नब्बान ननकिया व माह भी रहा करते थे।

दी-सी वष बाद अद्रगुप्त के समय म पसे का दा सेर भी और 25 सेर दूध था। ईस्वी सन् की बुख्यात म 12 आन मे गाय और 1 रुपया सवा सात आन म बल, मिलन थे। विजयनादित्य क समय 80 पसे में गाय और 512 पसा मे बल प्राप्त होते थे।¹

भाव सन् 1979 दिसम्बर—भारतीय राजनतिक उयस पुयल मे पार्टी दूट घटनाएँ छीना झपटी, डकती, हडताल, अनुशासनहीनता दल-बदल की नीति, कोयल व डोजल की कभी और सूखे स भयकर प्रभावित रहने वाला वष 1979 कुछ समय तक स्मरण रहेगा। यद्यपि इस वष मेहँ का उत्पादन बढा तथापि रातर पलोर मिलो को मेहँ खरीदन की छूट, ग्राम के बदले अनाज योजना तथा रूस बागला देश, कोरिया, पाकिस्तान वगैरह को निर्यात हाने स राजस्थान की भडिया म अनाज के खुले भाव इस प्रकार प्रति बिबटल रहे। ग्वार भोठ एव मूग के भाव तज गय।

वस्तु	रुपय प्रति बिबटल	वस्तु	रुपय प्रति बिबटल
मेहँ देशी	150 से 185	गहू करयाण	140 से 145
चावल बासमती	275 से 575	चावल बेगमी	172 से 185
चना	224 से 226	चना काबुली	240 से 300
दाल चना	242 से 246		
दाल मूग	380 से 415	दाल मूग घोवा	420 से 445
गुड	200 से 215	चानी	445 से 470

मूगपली साखेंड रिफाईड प्रति टीन 158 162, ची 28 रु प्रति किलो दूध दो रु किलो। किराना खुले बाजार (दिल्ली)—आम प्रति बिबटल इस प्रकार रहे काली मिष 1675-1800 रु इलायची प्रति किला 100 200, रु सौग प्रति किलो 130 135 दाल चीनी 49 रु, लालमिष 425 750 रु प्रति बिब, हल्दी 325 515 जीरा 1200-1450 घनिया 325-650 अजवायन 315-450 मेची 290-340, सोंठ 625 700, पोस्तदाना 785-815 रु प्रति बिबटल रहे। पास के भाव प्रति बिबटल इस प्रकार रहे—भुत्तर पास (सवण) 62 रु, पालो 75 रु डचाव 37 रु नीरो 100 रु,।

ई० सन् 1980 नवम्बर मे चना तज गया। गहू देशी 160-165 रु, कल्याण 140-145, चना 450 550 दाल मूग 450-500 दाल मग घोवा 525 550, गुड 450-500, तेल मूगपली 1150 1250, चीनी 1150-1200 रुपये प्रति बिबटल रहे। ची देशी 35 रु किलो, दूध डार्ड रु प्रति किलो है, बागे श्रीराम जाने।

एन् 1983 श्रीगणनगर मण्डी म विभिन्न जिलो के प्रति बिबटल भाव इस प्रकार रहे।

अनाज—मेहँ 180-235 बाजरा 164 165 मक्का 190-195, जौ 108 110 भोठ 250-255, चना 216-220 चना दाल 260 265, मूग 325 350, मूग दाल घोवा 445-450 उरद 445 455, उरद दाल खुली 510-525 मसूर दाल 310-325, अरहर दाल 540-550, ग्वार 170 172 ग्वार गम 400-405, ग्वार खूरी 100-105 रुपय।

1 'धम क नाम पर' पुस्तक से उद्धत।

गुड चीनी—गुड 188 190 चीनी गगानगर 432 435 रुपये । तेल तिलहन—
 तागामीरा 320 325 तेल 1070, खल 128 130 सरसो 430 435, तेल 1140, खल 124-
 125, विनोला 175 215, तेल 1155, विनोला खल 124 125 रुपये । कपास—देशी 385
 435 कपास नरमा 370 415 रुपये ।

कालू गांव और पुराने लोक निवास की बातें—पहले इस गांव में रहने वाले
 केवल जाट और उनकी महत्त्वी तथा कृषि कार्यों में योग देने वाले श्रमिक (घडई, बाग-
 वान, प्रजापत, नाई, लुहार तथा चमारदि) योग ही अधिक थे । कालू के चार बांस
 (माहला) अवशेषों के प्रमाणानुसार दूसरी कल्पना ही व्यर्थ हो जाती है कि इस गांव
 पर पहले किनी अथवा का भी अधिकार बास या और वह गांव का उजाड़ने बसाने में
 समय रहा हो । दूसरे सब लोग जब यहां जाकर बसे तभी इसका आवार ग्राम से कस्बा
 कहलाया है । मैंने इसी पुस्तक के पाठा में तीन लोग किस गांव और दिशा से आवार
 बसा है, सो लिखा है । इस गांव के प्राचीन लोग खेती और पशुपालन के अलावा क्षारी
 रिक कष्टमय कार्यों को भी विशेष महत्त्व देने वाले थे, ऐसा जान पड़ता है । वे अकाल,
 प्रकोप और चोर तुटेरी से त्रस्त हुए थेह से उठकर सघन वन की इस चमत्कारी कालिका
 देवी की मूर्ति के निकट गांव की सचिद्वि करने में सफल हुए हैं । नत्पश्चात् और और गांवों
 से आने वाले लोग भी इस सीमाश्रयशाली डहरी में सानद बस कर सम्मिलित रहते हैं ।
 मगर इतने लम्बे समय के उपरांत अथ समाज (जाति) के आने वाले लोग अपना जीवन
 एक दूसरे से भिन्न व्यतीत करते हैं । हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था के मुताबिक जातीय
 भेदभाव का पालन करके एक कम्पे में निवास करते हुए भी पर्याप्त दूर रहते आये हैं ।
 पुरानी प्रधानानुसार यदि कोई व्यक्ति बेकार में हरिजनों के घर चला जाता तो वापिस
 आने पर उस व्यक्ति को जाति बहिष्कार या जुर्माना कर दिया जाता था । किसी काम
 से जान वाले मध्य व्यक्ति का वापिस घर आने पर दूर खड़ा रखकर जल का छीटा
 (छिड़का) डाला जाता था । जूनियों की मरम्मत बगर चमड़े का काय बगदावर लाने
 तो जल के छीटे लगाए बिना उनको नहीं पहन सकते । शुद्ध अशुद्ध का इतना पाखंड था
 कि हरिजन के घर से दूध भी ही नहीं खेत का अन्न और फल लेन में भी अथ लागू पूरे
 बहिष्कृतियां करते थे । सयण रास्ते चलते तो सह्यात्री हरिजन, बराबर रास्ते के बिना
 चला करते थे । विवाह के समय भी हरिजन घर को दूरी नहीं, सफेद पगड़ी बांधनी
 पड़ती थी और बड़े गीत नहीं गाने दिए जाने । शूद्र स स्पर्श हो जाने पर उच्च जाति का
 हिंदू अपवित्र हो जाता और उसकी छाया तक से दूर रहने थे । शूद्रों का निवास, गांव के
 बाहर होता था । कुत्ते एवं गधे इनका घन होता तथा मृतकों के वस्त्र इनके पहनने को
 बताए जाते । फूटे बतनों में भोजन करने और कासे के आभूषण पहनने पड़ते ।¹ इसलि

1 बाह्यलक्षणपचाना तु बहिर्गामात्यतिश्रय ।

अपपाश्राश्व कतव्या घनमेया श्वगदभय ॥ (51)

वाससि मृतचेलानि भिन माण्डेपु भोजनम् ।

कार्णायसमलकार परित्त्रय्या च नित्यम् ॥ (53)

और तो क्या ईश्वरीय कानून संग्रह (Penal code) वेद भगवान को सुनने तक
 में भी रोक दिया । आना हुई—श्रवणे त्रपु जलुभ्या थोज परिपूण उच्चारणं ।

जिह्वाच्छेदा धारणे हृदयविदारणम् ॥

वेदांत सूत्र (शंकर रामानुज माध्व माध्व 11213811)

सोय अधकार एव हठ विचारों में डूबे रहते थे। वे अज्ञान में भ्रमित भीषण अत्याचार करते हुए तनिक भी नहीं समुचाते थे। मानवता पाखंड की ठाकरें खा रही थी और जातिवाद की जड़ों का जाल प्रायः फला हुआ था। ऐसे अंध परम्पराप्रस्त गाँवों में असरय भूक पशुआ की बलि घम हिताथ तथा भ्रष्ट कल्याण के बहाने दे दी जाया करती थी। मानव जीवन की सांस्कृतिक प्रगति यहाँ के सोया में अधिक समय तक क्रांति नहीं ला पाई। क्योंकि सबकों के मन से अवर्णों की अथ रीति रिवाज पालन करने पड़त था। परन्तु आज के इस प्रजातान्त्रिक युग में कालू गाँव भी अब सन सन पुराने पाखंडों एवं भेदभावा को विस्मरण करता जा रहा है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण और सम्माननीय है।

वस तो इस गाँव में जाटों के पुगने चार बास हैं। मगर गादारी जाट इस गाँव के मुख्य वासिद गान हैं और उनका एक अपना पुरातन मौहला बास है। इसमें चौमीता, बरागियान, मालसरबास, सारस्वता, साटो आदि के कई उप बास भी हैं। मौहला, बाजार, रामा भडी तथा श्री दूगरगढ सरदार शहर की सड़कें भी इसके बास पास हैं। मौहले की अथ जाट जातियाँ न गण जतासर से, भूँड भूँडसर से, डूडी मलकीसर से, सारण भोजरासर से और बुरडक यालकी से तथा एक पगदडा दिखणावा जाट भी इन बास में आकर बसा है। बरागियों के बास में ठाकुर जी का मंदिर, उनका कूआ और क धागा का उच्च प्राथमिक विद्यालय भवन भी है। गादारी के बास में गाँव कुजडी से साँड और गारव देशर से बोरड, बाहुती बागडी, बैरागी, गाडिया लुहार तथा कडोल सुनार महा आकर बसे हैं। सारस्वा हेमासर से और पारीक पुरोहित गाँव मालसर से आये हुए हैं। दूगरगढ सोमासर के, डागा बीयासर के बोधरा-पूतसर व साधासर के (तथा श्री भीलमन्द असकरन बोधरा का परिवार सोनपालसर से), तातेड सरुणा व लूनकरनसर के सेठिया—खोखराणा के तथा (श्री कालूराम सेठिया गरसर से) नाहटा—राजपुरा के नवलखा कभाणा से और कवा (रावतसरिया) असवतगढ (महाजन) से आये हुए हैं। इस मौहले से कतिपय प्रसिद्ध व्यक्ति एव जातियाँ बाहर भी जा चुकी हैं। जाटों में मद्रोरन, धौकल मया और देवसी जाघू के घर बोलते हैं पर दूसरे लोग बसते हैं। उनका निवास समाप्त हो गया। गादारी के बास में राजपुरा से आकर बसने वाला रावतमल मालू और समदसर से आये हुए उसके सिंधी भानजे भी अब यहाँ गँही रहे। काठारी कालूराम जेठमल बगरह सरदारशहर जाकर बस गये हैं। देराजसर से आया हुआ साटो का भानजा जासकरण सोडा यहाँ से नेपाल जाकर बस गया है।

कालू में गादारी के अतिरिक्त जाटों के तीन बास और हैं जिनमें भादवों के बास में अनेक संस्थाओं सहित एक काँकरिया उपबास और जादुओं के बास में छात्रावास एव ओशो का उपबास बसता है। बास भादवान में डागवाल, कसवा लेषा गिल्ला आदि जाटों के घर हैं। पोटलिया, खाड आदि जाट काँकरिया बास के विद्यालयों में अध्यापक हैं। बास जादुवान में तड, पिटाला, वाजिया, सारण आदि जाटों के गुवाडे भी बसते हैं। बास बागियान में दो उपबास पारीकों का बास और डाई बिगा (नाहटों-

शूद्र के वेद मुनन पर सीमा या साख पिघला कर कान में भर दे, बोलन पर जीभ काट दें। हृदय में धारण (कठम्य) कर ले तो छाती चीर दे।”

गुड-चीनी—गुड 188 190 चीनी गगानगर 432 435 रुपये । तेल तिलहन—
तागमीरा 320 325, तैल 1070, खल 128 130 सरसो 430 435, तेल 1140, खल 124-
125, बिनीला 175 215, तेल 1155 बिनीला खल 124 125 रुपये । कपास—देशी 385
435, कपास नरमा 370 415 रुपये ।

कालू गाँव और पुराने लोक निवास की बातें—पहले इस गाँव में रहने वाले केवल जाट और उनकी गृहस्थी तथा कृषि कार्यों में योग देने वाले श्रमिक (बडई, बागवान, प्रजापत नाई, छुहार तथा चमारादि) लोग ही अधिक थे । कालू के चार बास (मोहल्लो) अवशेषों के प्रमाणानुसार दूसरी कल्पना ही व्यक्त हो जाती है कि इस गाँव पर पहले किसी अन्य जा भी अधिकार बास था और वह गाँव को उजाड़ने बसाने में समय रहा हो । दूसरे सब लोग जब यहाँ आकर बसे तभी इसका आकार ग्राम से बड़ा कहलाया है । मैंने इसी पुस्तक के पाठों में, कौन लोग किस गाँव और दिशा से आकर बसा है, सो लिखा है । इस गाँव के प्राचीन लोग खेती और पशुपालन के अलावा शारीरिक कष्टमय कार्यों को भी विशेष महत्त्व देने वाले थे ऐसा जान पड़ता है । वे अकाल प्रकोप और चोर लुटेरों से त्रस्त हुए थेह से उठकर सघन वन की इस चमत्कारी कालिका देवी की मूर्ति के निकट गाँव की सबद्धि करने में सफल हुए हैं । तत्पश्चात् और और गाँवों से आने वाले लोग भी इस सीमाव्यवस्थाली डहरी में सानद बस कर सम्मिलित रहते हैं । मगर इतने लम्बे समय के उपरांत अब समाज (जाति) के आने वाले लोग अपना जीवन एक दूसरे से भिन्न-यतीत करत हैं । हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था के भूताविक जातीय भेदभाव का पानन करके एक कस्बे में निवास करते हुए भी पर्याप्त दूर रहते आये हैं । पुरानी प्रमाणानुसार यदि कोई व्यक्ति बेकार में हरिजनो के घर चला जाता तो वापिस आने पर उस व्यक्ति की जानि बहिष्कार या जुर्माना कर दिया जाता था । किसी काम से जाने वाले मध्य व्यक्ति का वापिस घर आने पर दूर खड़ा रखकर उस का छोटा (छिड़का) डाला जाता था । जूतियों की सम्मत वगर चमड़े का बाल करवाकर लाने तो जल के छीटे लगाए बिना उनको नहीं पहन सकते । शुद्ध अशुद्ध का इतना पालड था कि हरिजन के घर से दूध भी ही नहीं, खेत का अन्न और फल लेने में भी अब लोग पूरे हिचकिचाया करते थे । सवण रास्ते चलते तो सह्यात्री हरिजन बराबर रास्ते के किनारे चला करते थे । विवाह के समय भी हरिजन वर को रंगीन नहीं सफेद पगड़ी बाधनी पहती थी और बड़े गीत नहीं गाने दिए जाते । गूढ़ से स्पष्ट हो जाने पर उच्च जाति का हिंदू अपवित्र हो जाता और उसकी छाया तक से दूर रहन थे । शूद्रों का निवास, गांव के बाहर होता था । कुत्ते एवं गये इनका घन होता तथा मृतकों के वस्त्र इनके पहनने को बताए जात । फूटे बतनों में भोजन करन और हाँसे के आभूषण पहनने पडते ।¹ इसलिये

1 चाडालश्वपचाना तु बहिर्गामात्प्रतिथय ।

अपपात्राश्च कतध्या घनमेपा श्वगदभम ॥ (51)

बासासि मृतचेलाणि भिन्न भाण्डेषु भोजनम् ।

कार्णासिमलकारं परिब्रज्या च नित्यम् ॥ (53)

और तो क्या ईश्वरीय कानून संग्रह (Pecial code) वेद भगवान को सुनने तक से भी रोक दिया । आना हुई—श्रवणे त्रपु जनुम्या श्रोत्र परिपूण उच्चारणे ।

जिह्वाच्छेत्ना धारणे हृदयविदाग्णम् ॥

वेदात्त गूत्र (शकर-रामानुज माध्व भाष्य ॥2॥38॥)

आठवाँ प्रकरण

बीकानेर-मडल का ऐतिहासिक अंश

जाट ठिकाने और काल—अनेक साहित्यिक उल्लेखों के अनुसार महाभारत-काल के पश्चात् बीकानेर का क्षेत्र और नागौर दोनों काफी समय तक सम्मिलित सभाग-जन राज्य, एक रूप बन कर रहे। तत्समय से हम बड़े भू-भाग पर मौय्य वग-अशोक-महान कुपाणवग, सक-क्षत्रप, जोहिया गुप्त वग-हूण गुजर और वम वग-रघुवशी प्रतिहार तथा चौहान आदि विभिन्न वंशों के महान राज्य भी स्थापित हुए। क्योंकि इनमें बहुत से ऐसे राज्य थे, जिन्होंने सारे उत्तरी भारत को अपने अधीनस्थ रखने का उपभोग किया। राजस्थान में बीकानेर सभाग भा-उही रजवाडों के द्वारा भोगा हुआ एक विशिष्ट कौटिल्य का मडल है।

यहाँ की भौगोलिक स्थिति जलजलाकार से शुष्क (भरुका-तार) हो जाने पर बड़ी भयंकर बन गई थी। रतीले निजल प्रदेश के अनेक विस्तृत भाग प्रायः निजन जैसे दिखाई देते थे। शत्रुओं से आक्रांत अघात पराजित होकर बहुत से लोग भयभीतावस्था में यहाँ आकर शरण लिया करते थे। इसलिए संस्कृति की यहाँ प्राचीन परम्पराएँ ही चलती रहीं और लड़ाकू लोगों के आगमन का ताता लगा रहा तथा सूट-खसोट व लड़ाई-झगड़ों के बतार जागल प्रधान ही बने रहे। इसी सिलसिले से प्राचीनकाल में यहाँ यौधेय और मालव जाति ने शरण ली। फिर मध्ययुग में जाट जाति ने यहाँ आकर अपना जनपदीय अड्डा जमाया, जो राठौड़ों के आगमन तक बना रहा।

पृथ्वी, उनके सब सुपुत्र और उनकी संस्कृति आदि तत्त्व अपने प्रादक्षिण जीवन में एक साथ प्रगतिशील बने रहने—वे महाजन सभ या जनपद कहलाने थे।¹ जनपद साहित्यिक, भौगोलिक, राजनतिक एवं भाषा के परिप्रेक्ष्य में एक नैसर्गिक एवं सुरक्षित सभ व राज्य धारक घटक के रूप में प्रस्तात माना जाता था। महाभारत काल में ऐसे अनेक जनपदों के नाम मिलते हैं। शुभ साम्राज्य में सिकंदर के समय में और पाणिनि के सिलेख में भी जनपदों की पर्याप्त चर्चा प्रचलित हुई है। मध्यकाल (सन 1226) में महमूद गजनवी ने जोड़ के पहाड़ों के निकट से एक ऐसे लोक समूह का पीछा करके मार मगाया

1 15वीं शताब्दी में यहाँ एक जोड़ियों का संगठन राज्य सहवाण नामक स्थापित था। उस पञ्चायती राज्य का विविष्ट नाम महाजन कहा जाता था। सहवाण का क्षेत्र आज के गाँव महाजन (जिला बीकानेर) में लेकर वर्तमान भूरतगढ़ एवं अनूपगढ़ तहसील (जिला-श्रीगंगानगर) समेत लम्बेरा (भावलपुर पाकिस्तान) तक जोड़ियों का क्षेत्र जोड़ियावादी भी कहलाता था। रंगमहल, भटनेर वालीबग (जि० गंगानगर) व गाँव भी कभी जोड़ियों के अधीन रहे थे। आगे जाकर उसी सहवाण क्षेत्र का नाम शाहीन पड़ गया था और फिर राठौड़ों के राज्य में वह महाजन (जनपद) प्राचीन राज्य नाम, वर्तमान समय तक महाजन ग्राम के अर्थ में काम आता है।

कोठारिया का) वास है। इसमें सियाम, घेणा, कुण्डलिया, बाम्भू पाढाण प्रभृति जाट बसते हैं। मुसलमानों का मोहल्ला और मस्जिद भी इसी वास में स्थित हैं।¹ जाणियान वास में पारीको का वाम तो हर समय साफ-सुथरा, लिपा पुता तथा स्वच्छ गह मडित गमकता दमकता रहता है। वाम के बीच अपनी घमशाला, खेळ, प्याऊशाला है। विशेषता



सामाजिक पक्ष श्री मूलाराम, पारीक

इसमें सदा दो दो भाइयों की देवरूप जोड़ी जँचती रही है। अधिक भाइयों के होने पर भी प्रेम दो भाइयों का विशेष उज्ज्वल रहा है। जैसे—मोतीराम मघाराम, रामनाल दूलाराम, भगवानाराम बेगाराम, इंदाराम चौथाराम, सुगनाराम मूलाराम, चेताराम बेगाराम, गोपालराम दानाराम राऊराम कोठाराम, गणपतराम जालूराम, गोपालराम जेसाराम रावतराम किसनाराम मघाराम रामरतनराम, मूलाराम डगरराम रामेश्वर लाल लेखाराम, ठाकरमीराम बालूराम, हरिराम रूपराम, भीखाराम दुर्गाराम बीखाराम-किसनाराम जगदीशराम महालचंद अर्जुनराम कहेवालाल रामेश्वरलाल बजरंगलाल, मोहनलाल रामबक्स हनुमानलाल पदमाराम अर्जुनराम बालाराम मोहनलाल बालाराम रमाकांत, बुधमम, मोहनलाल जगदीश इत्यादि सरल स्वभाव विमदवेश के व्यक्तित्व पारीक वास में पड़ा हुए हैं।

आठवाँ प्रकरण

वोकानेर-मडल का ऐतिहासिक अंश

जाट ठिकाने और काल—अनेक साहिबों पर उल्लेखों के अनुसार महाभारत-काल के पश्चात् वोकानेर का क्षेत्र और नागौर दानों काफी समय तक सम्मिलित सम्राज्य, एक रूप धारण कर रहे। तत्कालीन से इनके भू-भाग पर मौर्य, अशोक महान, कुषाणवर्ग, गक क्षत्रप जोहिया, गुप्त वगैरे हुए, गुज्जर और वम वगैरे पृथ्वी, प्रतिहार तथा चौहान आदि विभिन्न वर्गों के महान राज्यों भी स्थापित हुए। क्योंकि इनमें बहुत से ऐसे राज्य थे जिन्होंने उत्तरी भारत का अपने अधीनस्थ रहने का सम्भोग किया। राजस्थान में वोकानेर सम्राज्य भी उन्हीं राजवाड़ों के द्वारा मोगा हुआ एक विविष्ट कोटि का मडल है।

यहाँ की भौगोलिक स्थिति जलजलाकार से युक्त (मरू-क्षेत्र) हो जाने पर बड़ी भयंकर बन गई थी। रेतिले निजल प्रदेश के अनेक विस्तृत भाग प्रायः निजल जैसे दिखाई दते थे। दानुआ में आकाश अर्थात् पराजित होकर बहुत से लोग भयभीतावस्था में यहाँ आकर शरण लिया करते थे। इसलिए सस्कृति की यथा प्राचीन परम्पराएँ ही चलती रहीं और महाकू लोगों के आने जान का ताता लगा रहा तथा सूट-ज्वोट व लड़ाई झगडा के यथावत जागल प्रमाण ही बन रहे। इसी सिलसिले में प्राचीनकाल में यहाँ योधेय और मालव जाति ने शरण ली। फिर मध्ययुग में जाट जाति ने यहाँ आकर अपना जनपदीय बहुतांश जमाया जो राठौड़ों के आगमन तक बना रहा।

पृथ्वी, उसने सब सुपुत्र और उनकी सस्कृति आदि तत्त्व अपने प्रादेशिक जीवन में, एक माध प्रगतिशील बने रहने—के मन्त्रजन सध या जनपद कहलाते थे।¹ जनपद साहित्यिक भौगोलिक, राजनितिक एवं भाषा के परिप्रेक्ष्य में एक नैसर्गिक एवं सुरक्षित मध्य व राज्य धारक घटक के रूप में प्रख्यात माना जाता था। महाभारत काल में ऐसे अनेक जनपदों के नाम मिलते हैं। गुप्त साम्राज्य में, सिक्खि के समय में और पाणिनि के सस्कृत में भी जनपदों की पर्याप्त वर्गीय प्रचलित हुई है। मध्यकाल (सन 1226) में महमूद गजनवी ने जोड़ के पहाड़ों के निकट में एक ऐसे लोक समूह का पोंछ करके मार मगाया

-
- 1 15वीं शताब्दी में यहाँ एक जोड़िया का संगठन राज्य सहवाण नामक स्थान था। उस पञ्चायत राज्य का विविष्ट नाम महाजन कहा जाता था। सहवाण का क्षेत्र आज के गाँव महाजन (जिला वोकानेर) में लेकर वर्तमान सूरतगढ़ एवं अनूपगढ़ तहसील (जिला-थीमगानगर) समेत लखवरा (मावलपुर पाकिस्तान) तक जोड़िया का क्षेत्र जोड़ियावादी भी कहलाता था। रममहल भटनर कालीबंगा (जि० गंगानगर) के गाँव भी कभी जोड़ियों के अधीन रहें थे। आगे जाकर उन्नी सहवाण क्षेत्र का नाम शाहीर पड़ गया था और फिर राठौड़ों के राज्य में वह महाजन (जनपद) प्राचीन राज्य नाम वर्तमान समय तक महाजन ग्राम के अर्थ में काम आता है।

जो मरते पड़त धारे घोर बीकानेर की इस भूमि में आकर बस सका। टॉड का कथन है कि भयभीत और पराजित ये जिट (जाट) लोग इस अनउपजाऊ भूमि में बस गये जो तेरहवीं शती में चौहान राज्य का पतन हो जाने पर अथ शक्तिशाली सत्ता का अभाव देखकर अपने छोटे छोटे गणराज्य (जनपद) बनाने लगे थे। उनकी अपनी भाषा में जाट जनपद भोमियाचारा के राज्य कहलाते थे जो कृषि एवं पशुपालन से विनिष्ठ समर्थ ठिकाने होते थे।

इन जाट जनपदों के संबंध में पुरानी जानकारी देने वाला कोई प्रमाणिक साहित्य न मिलता, पर क्यामखारासा, छदराउज्जयिनी, नगरी की रयात, टाड राजस्थान और दयालदास की रयात से अल्पमानिक जाटवंश का परिचय पाया जाता है। अतः बीकानेर क्षेत्र में जाट वंश के सत्य तथ्य गत पांच सौ वर्षों से पहले के अनुपलब्ध अप्राप्य हो जाते हैं।

वि० सं० 1400 के पास गण वास्तवगण पूर्णरूप से अर्थात् हाथुका था। सभी कर्म में पृथ्वीपति बन जाने की भूल उमड़ आई थी। जितनी भी जमीन जिसके हाथ आई, वही उस हिस्से का पूरा मालिक बन गया। किसी ने उसे अपने नाम पर गाँव का नाम दिया और किसी ने अपने नाम उहोड़े कूए खुदवाकर प्रमाणिक कब्जे कर लिए। जो आदमी जितना तात्पर्य था, उमन अपना उतना ही बड़ा गणराज्य (जनपद) कायम कर लिया। दयालदास ने जाटों के सात राज्यों की मुख्य राजधानियाँ नाँवें लिखे अनुसार मानी हैं—

	ठिकानाधारी	उपवंश	राजधानियाँ	अधीनस्थ गाँव
1	पाँड़ू	गोदारा	शेखसर और लाघड़िया	360
2	बोधा	सीहाग	सूई	140
3	अमरा	सोहवा	धानसिया	84
4	पूला	सारण	भाड़ग	360
5	रायसल	बणीवाल	रायसलाणा	360
6	कचरपाड़ा	दसवी	सिधमुख	360
7	काहा	पूनिया	बडो सूदी	360

सातपय यह है कि बीकानेर राज्य की स्थापना स पूर्व यहाँ की घनी पर बीकानेर राज्य की इतिहास सामग्री में मुख्य सात ठिकानों के ग्राम वंश हैं। पाउलेट, मु० सोहनलाल, क० व हैयाजू आदि के ग्रंथ प्रायः श्री सिद्धायक से मिल जाते हैं।

जाट विरादरी का आविर्भाव बड़ा विवादास्पद एवं विचित्रनापूर्ण मिलता है। भक्तिपय विद्वानों का कथन है कि जाट और गुजर, शक (सीथियन) यूरो और हूणों के वंशज हैं, बल्कि अन्य लोग जाटों को जायों की पीढ़ी में मानते हैं। स्वयं कुछ जाट कहते हैं कि हम यदुवंशी हैं। लेकिन इवटसन ने जाटों, गुजरो और राजपूतों को एक ही नवश से संबंधित बताया है।¹ डा० देशराज जधीना ने अपने जाट इतिहास में जाटों का सम्बन्ध राजपूतों से होना नहीं माना है। टाड ने राजस्थान के 36 राजवंशों में जाट या जिट का स्थान बताया है, किन्तु राजपूतों के साथ सामाजिक संबंध कतई स्वीकार नहीं किए।

1 वतमान में राजपूतों के बराबर जाट रेजीमेन्ट भी है। लेकिन इतिहास में यही नहीं मान गये। इनकी माता प्रथा और उत्तराधिकार की भाँति राजपूतों से पृथक् हैं।

पञ्जाब के जिट ही गंगा यमुना के तट से जाट कहलाते हैं। सिंधु नदी के किनार जीर समस्त सौराष्ट्र के इनका जट नाम से जानते हैं। टाउ न राजकुमार की अपनी सूची में इस वग को जिट, जेटी एवं यटु भी लिखा है।

जाटो का सुयशपूर्वक कहना है कि सन्धि मन्त्रना के समय महादेवजी ने अपनी जटा से यभूत श्रावक पावतीजी के हाथों पुतला बनवाया। फिर भोलानाथ ने उसमें जान डाल दी। उसी पुतले की वश परम्परा चली जा जाट जाति कहलाई। पुतले का प्रथम पुत्र गोदाग और दूसरा पुनियाँ था। उही पापों से जाट जाति मानी गई है। उन दोनों में फिर अय गोत्र भी सम्मिलित हो गये।¹

यहाँ जाटों की उत्पत्ति देवलिखा सनो स्मारक एक सतरहवीं शताब्दी तथा बाद की छनिया भी मिलती हैं। उनमें कोई विशेष जातियोत्पत्ति नहीं है। श्री दयालदाम की रणानुसार विजय की 16वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध कातावरण से संबंधित जाट गणराज्य तथा उनके ठिकानों की माँ गता है। इही गणराज्यों के धराधिपति चौधरी (चारों ओर पृथ्वी घेरने वाले सुदृढ़ मध्यावस्थित घुरी स्वरूप गाँव) कहलाने लग गये। आगे जाट राज्यों के चले जाने पर जाट जाति साधारणता को प्राप्त हुई और सारे जाट, चौधरी या पटेल नाम से सम्मान्य संबोधन पाने लगे।

राजस्थान में जाट, राजपूतों से अधिक आबाद हैं। ये सैनिक आकृति परिश्रमशील एवं अभय मिजाज आदमी माने जाते हैं। इनके शरीर की बनावट राजपूतों के समान लम्बी, सखल एवं सुदृढ़ होती है। ये कृषि वन्य मत्तवर्ण कुशल सम्मानित होते हैं और हठी मजाक में मूहफट तथा स्पष्टवादी कहलाते हैं। अतः जनरल कनिंघम राजपूतों की आय सत्ता मानते हैं, किन्तु वनल टाड न जाटों की राजपूतों के एक महान वंश के नाम से संबोधित किया है।²

जो भी हो—किन्तु जाट लोग अपनी उत्पत्ति शिवजी की जटा से मानते हुए अधिकतर शिवभक्त तथा कृष्णभक्त होते हैं और कालिकाजी, सती जो आदि देवियों तथा तैजाजी जसनाथजी, जाम्भोजी को अपनी जातीय विशेष माँ यता देते हैं। भक्ति प्रवृत्ति इनकी सदा से देश प्रसिद्ध रही है। बादशाह जहाँगीर के जमाने में एक भक्त हृदया जाट बशी करमाबाई नामक महिला ने अपने सख्त स्वभाव से भगवान को लिच्छवी का भोग लगा दिया। तब भक्त वत्सल परम प्रभु जगनियता ने उस भक्ता की भोली भक्ति से प्रसन्न होकर बाई करमा का वह अलौना सलोना प्रसाद स्वयं पाया था, ऐसा

1 रिपोर्ट मुकु मन्मारी मारवाड पृ० 47 48।

2 A राजस्थान की जातियाँ पृष्ठ 22

III भरतपुर के महाराज जवाहरसिंह की प्रशंसा "जाटवीर" मासाहिक पत्र में निकली थी, जिसका प्रकाशन आगरे से होता था।

जाट जीम धारें बढो, आयो देस मनाय।

मिल अगमने जायके, राना कऊ राय ॥

(करहिया गायनी)

आज भी मारवाड प्रदेश में जाटों की अनेक संस्थाएँ विद्यमान हैं।

जो मरते पड़ते धीरे धीरे बीकानेर की इस भूमि में आकर बस सका। टॉड का कथन है कि भयभीत और पराजित यंजित (जाट) लोग इस अनखपजाऊ भूमि में बस गये जो तेरहवीं शताब्दी में चौहान राज्य का पतन हो जाने पर अर्ध शक्तिशाली सत्ता का अभाव देखकर अपने छोटे छोटे गणराज्य (जनपद) बनाने लगे थे। उनकी अपनी भाषा में जाट जनपद भूमिवाचारा के राज्य कहलाते थे, जो कृषि एवं पशुपालन से विशिष्ट समाज ठिकाने होते थे।

इन जाट जनपदों में सबसे महान् पुरानी जानकारी देने वाला कोई प्रमाणिक साहित्य नहीं मिलता, पर 'क्यामखौरासा', छंदराजजयसिंह की रचिता 'टॉड राजस्थान' और दयालदास की रचिता 'से अल्पमात्रिक जाटवंश का परिचय पाया जाता है। अतः बीकानेर क्षेत्र में जाट वंश के सत्य तथ्य गत पांच सौ वर्षों से पहले के अनुपलब्ध अप्राप्य हो जाते हैं।

वि० स० 1400 के पास गण वातावरण पूर्णरूप से अज्ञात हो चुका था। सभी के मन में पृथ्वीपति बन जाने की भूल उमड़ आई थी। जितनी भी जमीन जिसके हाथ आई, वही उस हिस्से का पूरा मालिक बन गया। किसी ने उस अपने नाम पर गाँव का नाम दिया और किसी ने अपने नाम जहोड़े कूए खुदवाकर प्रमाणिक बज्ज कर लिए। जो आदमी जितना ताकतवर था उमने अपना उतना ही बड़ा गणराज्य (जनपद) कायम कर लिया। दयालदास ने जाटों के सात राज्यों की मुख्य राजधानियाँ नाम लिखे अनुसार मानी हैं—

ठिकानाधारी	उपवंश	राजधानियाँ	अधीनस्थ गांव
1 पंडू	गोदारा	शेठमर और लाधडिया	360
2 चौहान	सीहाग	सूई	140
3 जमरा	सोटुवा	धाणसिया	84
4 पूसा	सारण	भादग	360
5 रायसल	बेणीवाल	रायसलाणा	360
6 कवरपाड़ा	कमवाँ	सिधमुख	360
7 काहा	पुनिया	बडी लूदी	360

साक्ष्य यह है कि बीकानेर राज्य की स्थापना से पूर्व यहाँ तीसरी शताब्दी में बीकानेर राज्य की इतिहास सामग्री में मुख्य सात ठिकानों के ग्राम उल्लेख हैं। पावलेट मु० सोहनलाल, वृ० व० हैयाज आदि के ग्रंथ प्रायः श्री सिद्धामय से मिल जाते हैं।

जाट विरादरी का जातिर्भाव बड़ा विवादास्पद एवं विचित्रतापूर्ण मिलता है। कतिपय विद्वानों का कथन है कि जाट और गूजर, शक (सैषियन), यूची और हूणों के वंशज हैं, अर्थात् अर्ध लोग जाटों को आर्यों की पीढ़ी में मानते हैं। स्वयं कुछ जाट कहते हैं कि हम मनुवंशी हैं। लेकिन इबटसन ने जाटों, गूजरो और राजपूतों को एक ही नृवंश से संबंधित बताया है।¹ डा० देशराज जधीना ने अपने जाट इतिहास में जाटों का सम्बन्ध राजपूतों से होना नहीं माना है। डा० न० राजस्थान के 36 राजवंशों में जाट या जित का स्थान बताया है, कि तु राजपूतों के साथ सामाजिक संबंध कतई स्वीकार नहीं किये।

1 वर्तमान में राजपूतों के बराबर जाट रेजीमट भी है। लेकिन इतिहास में यकीन नहीं माने गये। इनकी नाता प्रथा और उत्तराधिकार की भाँति राजपूतों से पृथक् हैं।

पजाव के जिट ही गया, यमुना के तट से जाट कहलाते हैं। सिन्धु नदी के किनार और समस्त सौराष्ट्र में इनका जट नाम में जानते हैं। टाट न राजकुला की अपनी सूची में इस वंश को जिट जेटो एवं यटु भी लिखा है।

जाटो का सुयशपूर्वक कहना है कि सृष्टि सञ्चना के समय महादेवजी ने अपनी जटा से धूम्र त्र्यम्बक पावतीजी के हाथों पुतला बनवाया। फिर भोलानाथ ने उसमें जान डाल दी। उसी पुतले की वंश परम्परा चली जा जाट जाति कहलाई। पुतले का प्रथम पुत्र गोदारा और दूसरा पूनिया था। उन्हीं खापो से जाट जानि मानी गई है। उन दोनों में फिर अ य मोत्र भी सम्मिलित हो गये।¹

यहाँ जाटों की कतिपय देवलिया सती स्मारक एवं सतरहवीं शताब्दी तथा बाद की छनिया भी मिलती हैं। उनमें कोई विशेष जातियोल्लेख नहीं है। श्री दयालदाम की स्थापत्यशास्त्राचार्य विमल की 16वीं शताब्दी के पूर्वादर्धी वातावरण से संबंधित जाट गणराज्य तथा उनके ठिकानों की मायता है। इ ही गणराज्या के धराधिपति चौधरी (चारों ओर पृथ्वी धारण वाले मुदढ मध्यावस्थित धुरी स्वरूप शासक) कहलाने लग गये। आगे जाट राज्या के चले जाने पर जाट जाति सामारणता को प्राप्त हुई और सारे जाट, चौधरी या पटल नाम से सम्मान्य संबोधन पाने लगे।

1. राजस्थान में जाट, राजपूतों से अधिक आबाद हैं। ये मनुष्य आकृति परिश्रम-शील एवं अभय मित्राज आदमी मान जाते हैं। इनके शरीर की बनावट राजपूतों के समान तगड़ी सखल एवं सुदृढ होती है। ये कृषि कम में मनुष्य कुशल सम्मानित होते हैं और हठी-मजाक में मूढफट तथा स्पष्टवादी कहलाते हैं। अतः जनरल कनिंघम राजपूतों को आधुनिक सत्ता मानते हैं, किन्तु कनल टाड ने जाटों को राजपूतों के एक महान वंश के नाम से संबोधित किया है।²

जो भी हो—किन्तु जाट लोग अपनी उत्पत्ति शिवजी की जटा से मानते हुए अधिष्ठाता शिवभक्त तथा कृष्णभक्त होते हैं और कालिकाजी, सती जी आदि देवियों तथा तेजाजी, जसनाथजी, जाम्भोजी को अपनी जातीय विशेष मायता देते हैं। भक्ति प्रवृत्ति इनकी सदा से देश प्रसिद्ध रही है। बादशाह जहाँगीर के जमान में एक भक्त हृदय जाट वंशी करमाबाई नामक महिला ने अपने मन्त्र स्वभाव से भगवान को खिचड़ी का भोग लगा दिया। तब भक्त धत्तल परम प्रभु जगन्निधता ने उस भक्त की भोली भक्ति से प्रसन्न होकर बाई करमा का वह अलौना मलोना प्रसाद स्वयं पाया था ऐसा

1 रिपोर्ट मुहु मगुमारी मारवाड पृ० 47 48।

2 A राजस्थान की जातियाँ पृष्ठ 22

B भरतपुर के महाराज जवाहरसिंह की प्रशंसा "जाटवीर" मासाहिक पत्र में निकली थी, जिसका प्रकाशन आगरे से होता था।

जाट जोम धारें बढो, आयो देग मषाय।

मिले अगमने जायने, राना कऊ राय ॥

(कहिया गयसी)

आज भी मावाह प्रश्न में जाटों की अनेक समस्याएँ विद्यमान हैं।

भक्तमाल में परमोल्लेख पाया जाता है।¹ इसलिए भक्ता के मुँह परमा जाट कुलधारणी देवी कही जाती है। इस तरह भरतपुर में राजमाता श्री गिरीराजकुमारी (जन्म स० 1926) भी जाट वंशी कृष्ण भक्ता कवयित्री हुई हैं। इनके द्वारा रची गई "वज्रराज विलास" और "पाप शास्त्र" नामकी दो पुस्तकें उपलब्ध होती हैं।

जाट घना, भगवान का एक परम भक्त हुआ है जिसके नाम पर घनावशी वैरागिया का मत प्रचलित हुआ जान पड़ता है। उनके मारण, गोदारा दुर्गेश्वर वामू कसवा, दूडी नण, लेधा मूढ ढाका, बालेरा स्यामोता जादू सिंहाग जैसे सारे गोत्र (उपवर्ग) प्रायः जाटों से मिलते हैं। भादू और जाखड़ आदि जैसे कुछ गोत्र उनके नाथी और नाइयो में भी मिलते हैं। विष्नाई और जसनाथी लोगों के सारे गोत्र जाटों के हैं, क्योंकि ये दोनों सम्प्रदाय जाट जाति से ही बन हैं।

गाँव भोजस (तहसील श्री दुर्गागढ़) का श्री मेहा गोदारा राजस्थानी भक्ति काव्य का एक उज्ज्वल सितारा माना गया है। लगभग सन् 1575 में कवि ने गाँवामी सुलसीदास से पहले राजस्थानी रामायण का सज्जन किया था। राजस्थानी पणितारि के रूप में सीता—
हाथ बटारो सिर घडो सीता पाणी जाय।

चम्पो मरवो क्वचो, सीध छ बजराम ॥"

राजस्थान में फागसी और जेवर का जाट गाय कर्ताका के रूप में विख्यात हुए तथा भरतपुर के राजा अपनी बहादुरी के लिए ससार प्रसिद्ध हैं। भरतपुर का प्रसिद्ध दुर्ग सूरजमल ने अपन प्रथम युद्ध में हमकरण जाट (सभेरिया) से लड़कर लिया था। लेकिन शेखावाटी के सादू जाट ने अग्नेजो की छावनी पर गुरखीरता पूर्ण नतिक, आक्रमण करके अपना नाम अमर किया है। वस भारत के नण नाभा, पटियाला तथा जींद के राजाओं का भी दान मान में पूरा नाम है।

पुराने जाट गण राज्या के सम्बन्ध में यहाँ सात राज्य और सत्तावन छोटे ठिकाने बताये जाते हैं।² श्री दयालदास, पाउलेट और श्री ओझा के लिखे अनुसार जैसे

- 1
हूती एक बाईं ताको करमा सुनाम जानि
बिना रीति भाँति भाग खिचडी लगाव ही।
जग नाथ दव आप भोजन करत नीके,
जित लागे भाग ताम यह अति भाव ही।
गयो ताँह साधु मानि बडो अपराध कर,
भर बहूँ साँस सदाचार, ल सिखाव ही।
भइया अवार देखे खोलि क किवार
जो प जूठनि लगी है मुख डोए बिनु आव ही।

2 'सात पट्टी सत्तावन भाँसरा'

गण शब्द वैदिक साहित्य में प्रयुक्त होने वाला प्राचीन शब्द है। गण पूरक और गण-पति जैसे शब्द वैदिक साहित्य में मिलते हैं। किंतु विदेशियों के व्यवहार तथा पुरानी सेनाओं के सम्पर्क से यह तथ्य प्रामाणिक रूप से सिद्ध होता है कि भारतवर्ष के उत्तर पश्चिम तथा उत्तर पूर्वी भाग में राजाओं के राज्या सहित गणराज्य भी ईस्वी पूर्व 1000 से चौथी शताब्दी तक काफी होते थे। हमारे यहाँ के अनेक गणराज्य यौधेय अजनायन, मालव व उत्तमभद्र आदि अनेक नामों से चले थे। इस क्षेत्र में यौधेय गण राज्य के पश्चात् जाट गणराज्य था।

सूई (त० सूनकरनसर) और पल्लू (जि० श्रीगानगर) दोनों पासपास सिहागा के ठिकाने थे। वैसे गाँव कालू भी शेखसर, गोपल्याण और लाघडिया के बीच गोदारा का निक्कीय ठिकाना रहा है। तत्समय इस क्षेत्र में गोदारा की तेज तर्रार ताकत सभी गणराज्यों से प्रबल एवं सम्प्रदासी थी। इसलिए इस क्षेत्र का नाम गोदारावाटी कहलाने लगा।¹ ठा० देशराज व जाट इतिहास में लिखे गए तथ्यानुसार गोदारा के यहाँ स्वयं के सिक्के चलते थे। बीकानेर का राठीठ राज्य आकर जमा, तब गोदारा ने अपना प्रथम प्रभाव दिखाने हेतु उनका धूर्त भूगर्भ का लगान (टक्का) अपने सिक्कों में दना आरम्भ किया था। परन्तु गोदारा के अपने बढ्पन अपनत्व से अधिक विश्वास प्राप्त करने काही हुआ करते थे तथा सारस्वत ब्राह्मण उनके दादा (गुरु) थे, जो इन यजमानों का रीबन्दा सहित खूजत रहने के सिवाय अपना कोई विशेष धर्म या पारोबार नहीं करते। य जाटों के बल ही साधारण होती तथा पशुपालन का अस्त व्यस्त धर्म किया करते थे। इनके निरुद्योगीपन तथा आनसीपन को यहाँ अनेकश कहावतें चलती हैं।² लेकिन गोदारे जाटों पर इनकी पूरी धाक जमी हुई थी। य दादा लोग बार बार उनको याद दिलाते रहते कि— हमी न तुम्ह यहाँ (इस क्षेत्र में) साकर बचाव-बसाये हैं। कभी काफी दूर से कछे चढाकर लाये थे।” बस इतना कहने से गोदारे जाट फूस जाते और उनका काम चल जाता था। जाट के घर कहीं भी मृत्यु हुई हो, इनके कई ब्रह्म-भाज और दादियों को भी महीने भर तक उस घर पर खिलाया जाता था। यजमान चाह कितना ही मिथन क्यों न हो, मृत्यु भाजता सोहलीक करना पड़ता था। इनके लिए गुरु का कहा हुआ चाक्य आदरजोग रखना पड़ता और सब लेन-देन तथा विवाहादि कार्यों में दादा लागो की सलाह सम्मति बनी रहती थी। यदि कोई असमय गोदारा-जन इनकी बात को पूरी करने में हिचकिचाता तो उसे उनका कोप भाजन बनना पड़ता। उसके घर पर कोई भी ब्राह्मण सूए-सूतक (कमकाठ काय) निकालने तक का काय नहीं कर सकता। गाँव के समस्त सामाजिक कार्यों में उस गोदारा जन का बहिष्कार कर दिया जाता था। राजवी भाई लोग भी इन दादा लागो के भय से उससे किनारा देने लगते थे। इस तरह से—‘आप डूबतो पाडियो ले डूबियो जजमान’ वाली कहावत चरिताय हो गई। मास मदिरा, लड़ाई बगड और मस्ती तथा जबरदस्ती का बिलासी जीवन व्यतीत करने वाले भीमियों (प्रमुखा) ने जटायत (वर्तमान बीकानेर डिवीजन का क्षेत्र) की धुरी, गोदारा राज्य की धरती से इन मालिकों न हाथ धो लिया।

उन गोदारा जाटों के यहाँ अनेक गणराज्य वास थे जिनमें ‘गोपल्याण’ उनका आश (प्रथम) गाँव कहलाता था। शेखसर कपूरीसर, मसकीसर ऊँचाइडो डेलाणो, धीरदाण, पच्छागा, पाण्डुसर, कागासर, छटासर नकोदेशर लाघडियो धोळियो

1 गोदारावाटी की तरह सारणों के क्षेत्र की सारणोटी और सिहागो का स्थान सिहागोटी कहलाय।

2 (क) मूज की म्हीरी डोगिये को तग, ओ है सारसुताँ को डग।

(ख) सारसुत बेसहुरी सग्या गुर गोदारा का हुआ।

नित सिनान को नेम राख, सूतक गिण न सूआ ॥

जसम भोम भडाण जठ कोई ग्होडा न बूआ।

मासर माल आघडा लीज भण गिण न कोई भूआ ॥

रहोडरा, गुमाईसर खारडो, सहजरासर, राजपुरी और रुणिय क वास आदि गाँव गोपत्याण घणी (स्वामी) के छुटभाइयो तथा पुत्र पीत्रो के नाम बसे अनुज रूप असायके मोजीज गाव थे। प्राचीन लिखत तथा श्रुति वार्तानुसार उक्त सब ग्राम गादारा की राजधानी शेखमर¹ के हित अधीनस्थ थे। कालू के बीसा तालाबो एव छोटे नाडों क नाम उ ही भूमियो के है जो यहाँ की भूमि के किसी न किसी बड़े भाग पर काबिज बने हुए रहे थे।

कालू—उस समय चारा आर गोदारा गणराज्य गावा के मध्य एक शीप शिरोमणि उनका गणराज्य पारिवारिक ठिकाना कालू था। यह राजधाना के मालिक गोशारा द्वारा छोटे भाई को बटवारे में दिया हुआ घास सुख निवास स्थान था जो लम्बे समय तक सफलता एवं विभवता सम्पन्न निकटस्थ पाण्डु नातेसो का (राजदियो की भाँति रक्त सम्बन्धित) जनपदीय परगना कहलाता रहा। इसमें गोदारा का अपना कूआ जोहडा ताल पास, छत्री, मंदिर मड, तकिया और जमेनी जसी अनेक सावजनिक संस्थाएँ थी। प्राचीन काल में यहाँ मेया नाम का एक गोदारा चौधरी बड़ा धार्मिक उदार एवं विवेकशील व्यक्ति उत्पन्न हुआ था। जिसके भविष्य भाव भीने विचारो से प्रभावित अपना गणराज्य ही नहीं, पास पड़ोस का तमाम इलाका पुण्य स्थली स्वल्प अनूप स्थान बन गया था। उस चौधरी सद्गुरु की सेवा भावना भरी कथाओं की चाँदनी चारो ओर दूर दूर तक पहुँच गई थी। तब से लेकर अब तक यह गाव द्वारिका तुल्य² (लोक तीर्थ) कहा जाता रहा है।

बसे ता काल में बड़े बड़े गोदारा का नाम चलता है। पर एक बार यह गाँव “कालू भोपत वाला” भी कहलाया था। यहाँ जाणियों के वास में वि० स० 1551 की एक भूमिया की देवली (प्रस्तर भूति) पर अभिलेख है। वह चूहड नाम का व्यक्ति पर बने मड में है सो गोदारा जाट विवाह करके आते हैं तब उस जगह प्रथम गठ जोडे की घाक देने जाते हैं। सभी कहते हैं चूहड भूमिया गादारा जाति का था।³ उसकी पत्नी, जो जाणियों जाटा की बेटी थी, अपने पीहर की भूमि देख म चूहड के साथ सती हुई थी। इसलिए वही उसका स्मारक बना। कि तु जाणी कहते हैं— चूहड हमारा पूज्य था और उसका परिवार भडाण है, गाँव जैसा से आकर यहा आबाद हुआ था।

वि० स० 2038 के जेष्ठ सुदी में लेखक ने स्वयं इस बावत भडाण जाकर चूहड जाणी के विषय में वहा के जुजुग लोपा से जानकारी लेनी चाही। जैसा से पहुँचे निकटीय वास मेहराणा गाँव में चूहडजाणी के लिए वहा एक कहावत की बाय कडी प्रसिद्ध है, जो सुनने को मिली।⁴ परंतु वह कालू के चूहड भूमिये के काफी समय बाद का चूहड

1 शेखसर उस समय जन मन घन सब प्रकार से प्रसिद्ध था कर रहा।

2 “कालू बडी द्वारका मेखो दीनानाथ”

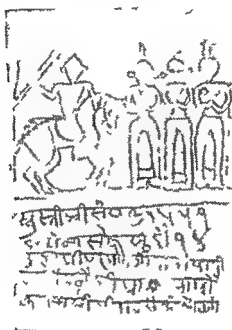
3 चूहड भूमिया की एव देवली गाव कपुरी सर में भी बताते हैं। कहते यह गाँव चूहड ने बसाया था। इसी शताब्दी में चूहड कालेरा ने चूरू नाम का गाँव बसाया था। कलस के वामा में भी चूहड का नाम आता है।

4 मेहराणी गुजरात जठ है चूहड जाणी।

जाणी मालूम हुआ कि उसके नौजवान पर पौत्र न बताया—“मेरे दादा ने भडाण के पाँच गावों (जेसा, साधेरा, धीरेरा, महराणा और दुनमेरा) को जोसर जिमाया और ढाढी को दान दिया। तब उसकी कविता बनी हुई है।

जेसा म बद्धजनों¹ से थोड़ी जानकारी पाकर गाव ऊँचाइडा जानर देखा। तब चूहड भोमिया के ऊँचाइडा से कालू आकर बसन के कुछ सत्य-तथ्य मिले। वहाँ गाव उदेसिया में एक सती देवली देखा। यहाँ जाट जागीरदारी के वक्त की बहुत सी बातें मिली और चूहड भोमिया का गोदारा जाट होना पाया गया।

(देवली घाटे पर पति सामन, तीन सतिया हाथ जोड़े खड़ी है।)



सुस्ती श्री सबतु 1551 (स्वस्ति श्री सबत 1551 वष मास वशाक सुदी 14
 वरसे मासेक (?) सुदी 14 चूहड पिया (पति) गोदारा साथ सती 3
 चूहर पीपापति गोदा नाया थी (?) गति प्राप्त की अग्नि सय खीहरि सती होठ म)
 सती 3 न गति प्राप्त अगनी (?)
 कत्रस (?) सो दूरसतो की ओठ मे

लख अगुद खुदा है तथा नकल करने रग भरने में भी गलती हो सकती है।

कालू चाहे सालमे रहा हो, चाहे पट्टे में, परन्तु गोदारे जाटों के हाल हुक्म काफी समय तक अपने वैसे ही चले रहे। मेत जमीन व रकम माफी आदि के लोक कार्य इन्हीं के हाथ रहे थे। लेखक ने चौधरी हरना गोदारा के हाथ में सरकारी चौधर की रजत बीटी (अगूठी) से राज्य के तथा अन्य महत्वपूर्ण कागज कई बार छपते देखे

1 श्री मानाराम गोदारा, उदाराम खाती ठा० गणेशदान आदि से।

हैं। जीवण और उसके पोने पूरण तक यहाँ राजकीय चौधरी गादारा थे। लेकिन अब वह बात नहीं रही, गोदारा के अपने निजी मस्थानिक स्थान भी वग़ाद हुए जा रहे हैं।¹

अब तो कालू में केवल नाम ही गोदारा है। जमे दिल्ली तख्त में पत्थर फोड़ने, तागा चलाने हुए कुछ भुगतमानों को बादशाही खानदान तथा नवाबी सल्तनत के वग़ज होने के अभिमान में आज भी देव सकते हैं। वने ही कालू के गोदारे 'पथ के बडप्पन एव नेतागिरी के वान में अकड़े हुए चलने पटवान लिए जाते हैं। पूर्वजों के घनाये घर जर व जमीन बेचकर गाँव के सिनार जा बसे हैं। इनका वास अब सब जाति समृद्ध है। स्थिति कसा भी हो, मगर चौगर छाँटने (नेतागिरी) के पेशे से बाज नहीं आत। और नहीं तो किसी का पेट मदन करके अथवा गले के गलगठों पर घोती के पल्ले से झाड़ा (मन्त्र) फूककर अपनी विगिष्टता प्रदर्शन का प्रयास करते हुए फूले नहीं ममाते हैं। इसकी अफ़ड विद्या का मनोस्चारण है—

‘गोदारा गह्लात भाई गळ गळगठा मळ मळ जाई।’

‘गोदारा गहलोत भाई गळ-गळगठा मळ मळ जाई।’

बीकानेर राज्य स्थापन 'गासक' और वतमान रूप—रामायण महाभारत ऐतिहासिक बताते हैं बीकानेर का जामल भू भाग आध्यात्मिक सांस्कृतिक एवं परम पवित्र पौराणिक प्रदेश कहलाता है। पुरातात्विक युगीय शोध के अनुसार मानना पड़ता है कि बीकानेर मडल की सीमा पर सटी हुईं बर्दिक व सिंधु घाटी की सभ्यताओं का मिलाप हुआ था। भारत की प्राचीनतम सरस्वती और दपद्वती नदियों के बीच वाली घाटी अत्यंत आदर्शों युक्त उसकी उत्तम अनुपम तथा समृद्धि का प्रभाव बीकानेर राज्य पर पूर्ण रूपेण पड़ा।

इस 'जामल भागल मरुभूमि में बड़े बड़े विकट राजपूतों का आगमन एवं ज में हुआ, जो अपने देश घम प्रजा रयन वश परम्परा तथा दीन व असहाय जन की रक्षा हित जीवन पथत प्राण प्रण से व्यग्र वीर बन रहे। मारवाड के राव जोधाजी ने जाधपुर बसाया और अपने चौदह बेटों के पृथक् पृथक् राज्य बसाने के प्रयत्न किये। बीकाजी उनके छोटे बेटे थे जिनका जन्म वि.स. 1495 श्रावण सुदी 15 (ई.स. 1438 दि. 5 अगस्त) मणनवार माना जाता है। दिनेर बीका, बल बुद्धि में सबसे तेज थे। एक दिन दरबार में बेटे काका काधल जी के साथ बानाफूसी करते हुए राव जोधाजी के नजर में आ गए। जोधाजी ने (नय रानी के प्रेम हित) 'यंग के साथ बीकाजी को सम्बोधन किया—‘चाचा भतीजा कोई नया प्रदेश जीतना की मलाह कर रहे हो क्या?’

इस पर काधल जी ने विनीत उत्तर दिया कि ‘आपकी मर्जी हो तो नया देश जीतना क्या बड़ी बात है?’ तत्पश्चात् राव बीकाजी तथा काधल जी ने नापा साखला

1 जोहड़ा, कूआ ताल पाल छात्री सहारण रेख गुसाईजी की बणी वह का जोहड़ा मड आदि स्थानों के समाप्त प्राय नाम रहे हैं। मी. दर चूहड भोमिया का मड कूआ वगरह अब ल. य. लोगो ने अधिकार में है।

2 श्री मनु के मत से सरस्वती तथा दपद्वती नदियों के मध्य का भाग ब्रह्मवर्ण का पवित्र देश था।

की राय से जोधपुर से उत्तर दिशा का विस्तृत इलाका अपने कब्जे में करने का विचार किया और महीर में सिवजी के तथा देशनोन में विद्यमान श्री करणी माता के दर्शन कर उत्तरी रेगिस्तान के कम जन समाग राज्य बीकानेर के स्थान पर अधिकार प्राप्त किया। यहां में उत्तर की तरफ भाटी राजपूतों का राज्य था। पूर्व में जाट तथा अन्य छोटे छोटे राज्य थे। इसलिए बीकाजी चांडासर (गजनेर के निकट)¹ जाकर रहने लगे और गढ़ काटमनेसर में किले की स्थापना करते हुए राज्य बढ़ाने लगे। राव बीकाजी ने यहां भरुजी का मंदिर बनवाया और पूंगल के राव शेखाजी की सहायता के साथ अपना पाणिग्रहण सम्पन्न करवा लिया। मगर भाटी उनकी राज्य सख्ति शक्ति को सहन नहीं कर सके। अतः उनका विरोध देखकर बीकाजी ने वहां का किला छोड़कर थोड़े पूर्व की ओर गती घाटी पर आकर विस 1542 (ई स 1485) से गढ़ बनवा लिया। विस 1545 (ई स 1488) में गढ़ के पास अपने नाम एक नगर बसाया जो हमारा जिला बीकानेर है।²

बीकाजी ने भाटियों को हरा कर सुदूर गढ़ बनवाया, बीकानेर नाम से नगर बसाया और नया राज्य स्थापित करके उनकी नीमाओ का बढ़ाने लगे। तब शक्तिशाली जाट भी विरोध करने लगे। किंतु बीकाजी बहुत धनुर थे, वे जाटों की फूट को जान गए और अपने ओज व्यवहार से गोदारे जाटों की अधीन बना लिए। बीकाजी ने गोदारा के सरदार का यह अधिकार दिया कि 'बीकानेर राज्य के नये राजा के राजतिलक समारोह पर सब प्रथम उही के (जाटों के) राजतिलक करेंगे।' तत्पश्चात् अन्य जाटों और राजपूत राजाओं को हराकर बीकाजी ने जयपुर की ओर मोहिलों के राज्य तक तथा उत्तर पूर्व में हिमाचल तक अपने राज्य की सीमाएँ बढ़ा लीं। जाट ही नहीं जोड़िए चौहान, सानले भाटी जादि सगदर भी बीकाजी से बड़े प्रभावित हुए। बीकाजी ने बीकाजी को भी अपने अधीनस्थ कर लिया। बीकाजी राजपूतों के 140 गाँव और बिलोचिया व कायमखानिया के जो मिश्र और शेखावाणी के अनारफ में थे बीकाजी के कब्जे में आ गये।

राव बीकाजी पितृ भक्त भ्रातृ सहायक और माता करणजी के अनन्य भक्त थे। छंद राज जन सी' में 43 44 45 47 संस्कृत छंदों में बाका के अधिकृत स्थान धरावर, मुम्नगवाहन, सिग्मा भटिण्डा भटनेर, नागड नरहड और नगौर आदि

1. दूसरा बाब (तवाराख राज्य श्री बीकानेर)

राघव बाब बीर रो सीधो सरल मुभाव ।

भूपत रीयो भतीज न जाप रह्यो उमराव ॥ (रविमुक्तनदान)

2. पनर में पताछे मुद बशाख मुमेर ।

बाबर बीज धरण्या बीक बीकानेर ।

3. स० 1525 के तीन भाइयों में मंदिर के मेरानुसार पहले यहाँ एक बस्ती थी। उसी का प्रोनाजी ने अपने नाम से बीकानेर बसाकर नवीनीकरण कर दिया। नर नगर का अपभ्रंश ! जने नगर = नहर = नहर + यर = नेर । नर प्रत्यय शहरा के नाम के अंत में संयुक्त होता है कि भटनेर, गजनेर साग नर ! किले के बावत भेडिया व भेड के बच्चे जाती भी मात्र दत्त क्या है। (ऐतिहासिक)

स्थापना का नाम पाय जाते हैं। गीकानर राज्य की स्थापना में जिन ठिकानों को समाप्त किया उनके विषय में अनेक कविता प्रचलित हैं।

रामदा किये कत्तल प्रबल पूनिया पजाये ।
मारण न मियाग, भिड़े रण सोहु भजाये ॥
दणीवाल बागाड जेर कर अमल जमाय ।
मारत नर मोदार भीम ज्यू गदा भमाये ॥



राव बीका जी

राव बीका बि स 1561 (ई स 1504) तक समयोचित शासक रहे। उनके पर शाहवास बाद बड़ा लढवा राव नरा (जन्म 1525 स्वगवास 1561) कुछ महीने ही राज्य भाग सके। फिर राव नरा का अनुज श्री सूरुषण इस राज्य के शासक (बि स 1561 से 1583 ई स 1505 26) हुए। सूरुषण का राज्य बाल में राज्य वैभव बहुत उठा और प्रजाभी सुखी तथा सम्पन्न रही। राव जूणकण ने भाई घटसा को साथ

लेकर बड़ी कौज बनाई जिससे सब शत्रु भयभीत हो गए।¹ नारनोल के नवाब पर उन्होंने बड़ाई की तब उनके घोड़ेवाज सरदार, विपक्षियों से मिल गये। इसलिए राव जूणकण खेत रहे। फिर जतसिंह (बि स 1583 1598 ई स 1526 से 41) बीकानेर के शासक बने। इन्होंने अपने अनुजगणों को साथ लेकर पिता के दुश्मनों को दंड दिया। राव जतसी ने अनेक राज्य अपने अधीनस्थ किये। बाबर का बेटा कामरा युद्ध के लिए बीकानेर की तरफ आया, जतसी ने उसको बुरी तरह हराया। राव जतसी के छोटे भाई करनीसी जिसकी जागीर रेणी की बेटा दानी था। एक चारण के दोहे पर उसने एक करोड़ रुपए का पुरस्कार दिया। कई गाँव और अपने बड़े कीर्त सिंह का भी कवि चारण के सुपुत्र कर दिया। उसने (चारण ने) कीर्त सिंह का विवाह सिरौही के एक ठाकुर की लड़की से करके फारस सिंगात बीका का वंश उजागर किया। उस चारण के वंशज बालू के पास नाथूसर नाम के गाँव का शासन सभालते तथा अन्य गाँवों का भी भागते रहे हैं।

जतसी के दूसरे भाइयों में स प्रताप सिंह के प्रतापसिंगोल बीका कहलाये। वरसी के पुत्र नाराण वंश के नारणोल बीका कहलाए। रतन सिंह के रतनसिंघोल बीको ने महाजन का ठिकाना संचालित किये रखा। तेजसिंह के तेजसिंघान बीके प्रसिद्ध हुए।

- 1 खीची मोयल खरळ, ममर सासला संधार ।
जेर कर जाइया मान भादिया चो मारे ।
पूगळ पर अपणाय, बीर जादवा विमाडे ।
भुरटा हास भजाय च द रजनामो चाड ।

श्री जनसी के उत्तराधिकारी राव कल्याणमल (वि० स० 1598 1630 ई० स० 1542 मे 1574) बने जि होने अपने पुत्र रायसिंह को साथ लेकर ई स 1570 मे नागौर जाकर मुगल बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार की। राव कल्याणमल ने बादशाह से मित्रता करके अपने राज्य को बहुत लाभ पहुँचाया। राव कल्याणमल के बाद उनके बड़े पुत्र रायसिंहजी बीकानेर के शासक (वि० स० 1630 68) बने जिनका शाही दरबार में बड़ा सम्मान रहा। इनको बादशाह द्वारा राम एवं महाराजाधिराम की उपाधि प्रदान की गई। इन्होंने गढ़ बनवाया तथा कवि लेखकों और विद्वानों को मदद सम्मानित किए रखा। मुहम्मद कासिम फरिश्ता ने अपनी किताब तारीख फरिश्ता में लिखी है कि— खिताबी फमान के साथ राव रायसिंहजी को दरबार शाही से 52 पगनात कबजा इक्तदार में दिय गया जिनको ताश्दाद दान मिजान कुल 40206274 (चार करोड़ दो लाख छ हजार दो सौ चौहत्तर) थी। रायसिंह बड़े दानी थे। उनमें 2० गाँव दो हजार हाथी 50 हजार घोड़े और सवा तीन करोड़ रुपया तथा करोड़ के तीन पचास 52 चाग्न भाटों का दिया।¹ इ हान प्रजा के साथ सु दर व्यवहार करके मिरसा हिमर और गुजरात तक अपने परगन कायम किये। बेसि किमन रुक-मणी रो' के रचयिता तथा ओज पून कविना के प्रसिद्ध कवि पृथ्वीराज² इ ही रायसिंह के छोटे भाई थे। बादशाह अकबर ने राव पृथ्वीराज कल्याणमलों को गुरु गुरुन वन्शा था।³

फिर श्री रायसिंह के जेष्ठ आत्मज श्री दलपतसिंह (स० 1668 70 ई 1612-14) ने बीकानेर का राज्य मभाला। दा माल बाँट इनके छोटे भाई सूरसिंह ने जहागीर की मदद से बीकानेर के राज्य (वि० स० 1670 88 ई० स 1614 31) पर कब्जा पाया। सूरसिंह के राज्यनाम में चून् मडल के सरदारों ने महाराजा का बहुत विरोध करवाया था। सूरसिंह का देहावसान हो जाने पर इनके बड़े कुवर कणसिंह बीकानेर के उत्तरी अधिकारी (वि स 1688 1726 ई स 1631 69) बने। राजा कणसिंह के वक्त में कुछ घानेल (घटनाएँ) हुए बादशाह आलमगोर (ओरंगजेब) ने मदिरा व तीर्थों की मूर्तियाँ तुड़वाई और हिंदुस्तान के सब राजपूतों का दारा का मुसलमान बनाने की तजवीज की। बाबुन लड़ाई की मदद के बहाने एक बड़ी सना व साथ बादशाह ने तमाम राजपूत राजाओं का दरिया अटक पर इकट्ठे कर लिए। उस समय श्री कणसिंह को एक मध्यम जीवनशाह मित्र ने बताया कि बादशाह ओरंगजेब बहुत मुत्तमान है। वह आपका अटक पार लेजाकर सब राजाओं का जबरन मुसलमान बनावेगा।⁴ इस पर राजपूत राजाओं ने मलाह करके अत्यंत चतुराई के साथ फौज में घोषणा फिरवादी कि—‘कल मागे नावें मुर्गलिन रखी जाँवें। पहले हम (राजपूत राजा) पार हाँवेंगे।’ इस पर मुसलमान अधिकारी होकर अपने बहप्पन के साथ नावों में बठार पार चले गये। नावें

1 तवारीख बीकानेर राज० पृ० 132

2 बाबा० नरेश भ० भाग मूल ले० मेजर के एम पत्रिका मिनिस्टर एडवार्ड्स प्रसिद्ध

3 मुहम्मद नवासी की रयान प्रथम भाग पृ० 188

4 जहागीर का बा II पत्रिका पृ० 287

महाराजा श्री डूंगर सिंह जी भी नि स तान परलाव गामी हुए । तब पुन ठिकाना श्री छत्रगढ़ से उनके अनुज श्री गंगासिंह जी (वि स 1944 भाद्र पद सुदी 13 अगस्त 1887 ई०) को बीकानेर राज्य गद्दी पर बिठाव गए । तत्समय श्री गंगासिंह जी फक्त सात बष के होनहार बालक थे और राजमहला में इनका सालन पानन हा रहा था । पर तु इस सुख-सुविधा के समय बालक गंगा सिंह जी का राजतिलक से प्रथम शोक वस्त्र पहन कर भ्रातृ दुःख भी भोगना पडा था ।

अगस्त का महीना गढ़ का छायादार भदान, सायकाल बालक गंगासिंह जी अपने माथियों के साथ खेल रहे थे । उस समय महाराजा डूंगर सिंह जी का देहा त हुआ । दो बड़ सरदार गभीरता पूर्वक बालक गंगा सिंह जी तथा उनके साथियों के पास पहुँचे । सरदारा की उदाम मुख मुद्राएँ देखकर सीध बुद्धिमान श्री गंगा सिंह जी तत्काल समझ गये कि कोई अशुभ समाचार है । बड़ सभासद छाटे बालक महाराजा गंगासिंह जी को महला में ले गए और गाँव की स्थिति में गाँसक बनाकर बठा दिया । तेरह दिन समाप्त हो जाने पर 31 अगस्त सन् 1887 ई० को बालक गंगासिंह जी ने बड़े बड़े सरदारा और अफसरों के समक्ष अपने पूर्वजों को राज्य गद्दी सम्भाली । प्रतिष्ठित जन दसनाथ आय खम्मा बोली । बालक महाराजा ने हाथ उठाकर खुशी ला (खुशी रहो) खुशी लो छन्द कहे ।



सात बष के महाराजा

राजा ईश्वरावतार और राज्य सिंहासन ग्रहण करना एक धार्मिक कृत्य के रूप में अत्यन्त समारोह के साथ सम्पन्न किया गया । तब प्रथम गणेश पूजन हुआ और फिर राजसी वस्त्राभूषण पहिनाकर महाराजा श्री गंगासिंह जी को सिंहासन के पास खडा किया । महाराजा गंगासिंह जी ने तीन बार सिंहासन को प्रणाम किया, जिसके दायें बायें बीकानेर राज्य के प्रधान राजपूत सरदार बड़े खडे थे । इसके बाद महाराजा ने सरदारों की ओर देखा, तब उन सरदारा न महाराजा से प्रायना री । आप पर भगवान की महत्ती कृपा है और राज्य कुल के देवताओं का असीम अनुग्रह भी है ।

इसलिए आप सिंहासन पर विराजिये।' सिंहासन पर बैठते ही 121 तोपों की सलामी हुई, नौबतघान में बाजे बजे और राज्याभिषेक संस्कार शुरू हुआ। मुख्य तीर से शेर सर के गोदारा जाट ने महाराजा के मस्तक पर तिलक चढ़ाया। फिर बीकाजी के वंशज राज्य के बड़े सरदार महाजन के राजा न महाराजा के मस्तक पर तिलक लगाया। सरदारों में द्वितीय तिलक कता राव बीकाजी के अनुज बीदा के वंशज बीदामर के ठाकुर थे। तृतीय तिलक कता रावतसर के सरदार बाधलजी (काकाबाद) के वंशज थे। चतुर्थवार में बीकाजी के वंशज ठाकुर भूकरका न महाराजा के मस्तक पर तिलक लगाया। तत्पश्चात् बिलासपुर के शानी पंडिहार गुसाईजी धादि न तिलक किय और राज्य के टीकाई पुरोहित न आग्नी की। इस समय छत्र चंवर सिंहासनादि राज्य चिह्न तथा क्षत्रियोचित सभी गहनों एवं बाहुना की पूजा की गई। उपस्थित अफसरों और सरदारों ने महाराजा से मुजरा किया और भेंट उपहार दिए। 15 दिन बाद 19 सितम्बर 1887 ई० को महाराजा के पिता श्री लालसिंह जी का परलोक वास हो गया। श्री गंगा सिंह जी को सिंहासनारूढ हान के समय पहले भ्राता का एवं बाद में पिता का (दानो जार) वियोग भागना पड़ा था।

सिंहासन आसीन हान के समय महाराजा गंगामिह जी की आयु कम थी। अतः एव गामन प्रबंध रिजेंसी काउंसिल को सौंपा गया। राय साहब प० रामचंद्र दुध द्वारा महाराजा न दो वर्षों तक बीकानेर रहकर ही शिक्षा पाई। 9 वर्ष की अवस्था में महाराजा अजमेर में कांसेज के विद्यार्थी बन जो 14 वर्ष की उम्र में वहाँ की मपूर्ण पढ़ाई करके सन 1895 ई० में आप सनिक शिक्षार्थी कहलाय। साथ साथ शासन प्रबंध का ज्ञान दफतरी के कार्यों की जानकारी, घाटे की मवारा और रिजेंसी काउंसिल का कार्याध्ययन भी किया। इन सबके लिए सर ग्रायन हजरटन, के सा आई ई जस जादश अध्यापक महानुभाव इनके साथ रहे। श्री गंगामिह जी 14 वर्ष की अवस्था में आश्चर्यजनक निपुणता के साथ अच्छी अंग्रेजी बोलने लग गे।

महाराजा श्री गंगामिह जी के लिए राजसी सिद्धांता के अनुसार इन समय राज्य के भिन्न भिन्न भागों में दौग करना शासकीय कामों का अनुभव करना सेना की आर ध्यान रखना सरदारों तथा जागीरदारों से मिलना तथा धार्मिक एवं राजकीय उत्सवों में सम्मिलित हाना भी आवश्यक समझा गया था। ई स 1896 में बायसराय लाड एलगिन बीकानेर आय और इनके राज्योचित गुणों से बहुत प्रभावित हुए। फिर य उत्तरी भारत की शिक्षानिति हेतु अनवर सज्जनों का साथ लेकर लाहौर दिल्ली, आगरा, अमृतसर वानपुर लखनऊ बनारस और दार्जिलिंग गये। इस यात्रा में बहुत से राजा महाराजाओं तथा साहूकारों ने आपना स्वागत किया था। तब राज्य मसनद हाने के 11 वर्ष बाद आप अठारह वर्ष के हुए और बायसराय ने अपने एजेंट सर आयर मार्शडेल के हाथ मगीता भेजकर 16 दिसम्बर सन 1898 ई० को पूर्ण शासनाधिकार सौंप दिये। सर आयर मार्शडेल ने बायसराय का सलाहात्मक व प्रशंसात्मक खरीता पढ़कर सुनाया। गंगामिह जी ने भला भाँति जान लिया था कि राजा का काम पोलो

1. नावालिग शासक की रियासत का राज्य प्रबंध भारत सरकार एक शासन-समिति बनाकर करती। वह समिति राज काय समानती वालक नप का गिला प्रबंध करती तथा रिजेंसी समित्त कहलाती थी।

और आखेट के खेल तथा दानता के मनाविनाद ही नहीं, प्रजाहित के मनन चि तन भी बहुत जरूरी बात हैं। तब वे प्रजा के कष्ट निवारण में लग गये।

वि.स. 1956 ई. स. 1899 के समय देश में भीषण अकाल पड़ा। चारे, पानी और अन्न की कमी के कारण स्थान स्थान पर पशु एवं मनुष्य मरने लगे। रिजेंसी—कौमिल न पहले के अकालों में इस फुड का द्रव्य शेष कर रखा था। फिर भी महाराजा तन मन धन में जा जाकर जनता से मिलने लगे तथा स्वयं कष्ट उठाकर प्रजा सहायता के कार्यों में जुट गए। 18 वर्ष के महाराजा न अनेक कष्टों एवं स्थानों पर अकाल पीड़िता की सहायता के समितियाँ नियुक्त कर द्या। मेला द्वारा गाँवों में अनाज भिजवाया और राहत कार्य भी सौले। हैजा और चेचक आदि रोग फैल गए। तब महाराजा न अदम्य उत्साह के साथ चूल्ह, सुजान गट तथा श्री मंगानगर (जो पहले राम नगर कहलाता) के गाँवों तक कम्पाउंडर भेजे और दवाइयाँ बँटवाई। स्वयं विभिन्न तहसीलों में गये और प्रजा के दुर्भिक्ष जनित दुःख का दूर करने के प्रयत्न किए। जनता की मराहता से खुश होकर महारानी विक्टोरिया ने श्री गंगासिंह जी के लिए कसर हिंद का स्वर्ण पदक भेजा। आगामी अकालों के भविष्यगत मन भय से महाराजा ने रेल एवं नहर की योजनाएँ बना डाली। ब्रिटिश अधिकारियों ने चीन विजय में सहयोग पाकर श्री गंगासिंह जी का अच्छा स्वागत किया और सम्राट एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक पर जतिवि स्वरूप सदन पहुँचने के लिए निमन्त्रण पत्र भेजा। वहाँ जाने पर सम्राट तथा सम्राज्ञी बहुत प्रसन्न हुए और अपने राज्य कुटुम्ब के सदस्यों के साथ इनको बैठक दी।

श्री गंगासिंह जी इंग्लैंड यात्रा से जब आये, तब साथ में काफी अनुभव भी लाए। वहाँ की शासन प्रणाली तथा सुव्यवस्था से वे बड़े प्रभावित हुए थे। उन्होंने अपनी राजधानी को सुदूर बनाने के लिए चौड़ी सड़कें और उनका दोनों ओर छायादार वृक्ष मनोहर सुधान तथा उल्लामक महाना का निर्माण करवाया। रिजेंसी का स्टेट कौमिल बनाया। प्रत्येक महकमा एक सेक्रेटरी की अध्यक्षता अधीनस्थ किया तथा स्वयं प्रजा हित की योजनाएँ सफल करने एवं राज्य व्यवस्था व नीति निर्धारित करने के लिए उत्साहित हुए। वे प्रत्येक विभाग के लिए एक निरीक्षक शासक एवं सबके महान नियंत्रक रूप, अभिनव भूत बन गए। पुरानी प्रणाली की कठिनाइयाँ को मिटाने के लिए समयानुसार महकमा खान की स्थापना करके प्रधान मंत्री का पद ही उठा दिया। पोलिटिकल एजेंट को भी महाराजा से सहमत होना पड़ा और नये सुधारों की घोषणा कर दी गई। सन 1902 में मंत्री मंडल की स्थापना हुई, जिसमें महाराजा भूरु सिंह, ठाकुर रघुवीर सिंह महाराजा हरि सिंह, मिस्टर हस्तम जी कूपर तथा कुवर पृथ्वी सिंह थे। पोलिटिकल एजेंट हा नहीं, यहाँ के बड़े बड़े अफसर भी इन सुधारों की सफलता को सन्नेह की दृष्टि से देखने लगे। लेकिन महाराजा साहब ने बीकानेर राज्य को हर तरह से सुखी, प्रगतिशील एवं सुव्यवस्थित बनाने के लिए प्राचीन नीति

1. कुवर कहेयालू ने बीकानेर राज्य का इतिहास पृ० 160 पर यथा व यगाचे में कनेर और मेनार के वक्ष बताये हैं।

परम्परा का कतई अ धानुमरण नहीं किया। महाराजा ने अपनी रियासत का जाधुनिक ढंग से बदलने का लिए अनेक राज्य कार्यों को नूतन पंक्तिगत क साथ सकल करवाये। प्रथम पुलिस तथा अर्थ विभाग का नव्य गठन करने अफसरा के काम की जांच का प्रबंध किया। द्वितीय नई पगस पैदा करने के उपाय प्रचलित करने सेती के नवीन तरीका से कायनकारा की दंगा सुधारने का वातावरण तयार किया गया। तृतीय राज्य में रत्ने चाने और मछलें बनवाने का कार्यारम्भ हुआ।¹

महाराजा के नय गामन-सुधार काय हात देखकर कुछ बड़े राजपूत सरदार इनके विरोधी बन गये। ये जान गये कि इस गामन प्रवध में हमारी मनमानी नहीं चलेगी। उनीमर्षी गतांगा के प्रारम्भ में ही कुछ मरदार धीरागर शासका क विरोधी बन रहे थे। इन लोगा में पाम पडोम के भ्यानों में डाक गलवान योग डाकुओं का गरण देन और आपसी लडाई झगडो के काय अपना रसे थे। य मोलो जनता का मारपीट कर बलपूवक घन लूट ले जाते और कभी कभास राज्य की भूमि पर भी कब्जा करने का प्रयत्न किया करते थे। ऐस विराध कर्ताओं में चूर के ठाकुर और वहाँ के अर्थ लोग अधिक् थे। अजीतपुरा के ठाकुर भट मिन् बीगासर के ठाकुर हुकमगिह और गोपालपुरा के ठाकुर रामगिह इन विरोधी आन्दोलन के अगुआ थे। अजीतपुरा का ठाकुर युव/वस्था म श्री हुगरमिह के यवन भी विद्रोह म भाग ले चुका था। तत्समय से यह दडित एव क्षम्य था। रि कौसिल इसके व्यवहार से नाराज थी। पोलिटिकल एजेण्ट ने चाल चवन बावत जमानत से रखी थी। हिगार जिल की ब्रिटिश पुलिस न इसकी गिकायत की थी। धीदासर का ठाकुर और उसका पिता विद्रोह में भाग लेने के कारण थी हुगरमिह क राज्य-कात में अपनी जागीर जउन करवा घडे थे। गोपालपुरा का ठाकुर सदब चार-ठाकुओं के साथ रहकर घन कमाया करना था। जोधपुर के रचिडे ट न सिखा था कि एक प्रगिद्ध रल की डकती क वारे म गोपालपुरा के ठाकुर पर उनम भाग लेने का मदह किया जाता है।

1904 ई० में इन जागीरदारों न गगासिह के विरुद्ध जनता का भडकाना आरम्भ किया। भय और लाजब द दिलाकर अर्थ लागों का अपनी तरफ करना चाहता। इन लागों ने सेना को मुसलमाना की घनी व्यापागिया और सेठों का भी भडकाने का प्रयत्न किया। इन जागीरदारों के मकानों पर शासन के विरुद्ध समाए जुडने लगी थी। खात गगासिहजी तक गई। उ होन तब अपने ज मोत्सव के दरबार अवपर पर भाषण द्वारा चैतावनी दी। परंतु पडयत्र के अगुए तो नहीं माने। तब 29 अक्टूबर को जरूरी काय-चाही हेतु इनके कामा की जांच के लिए महाराजा ने एक कमेटी को हुकम दिया। कमेटी ने पाया कि विगाधियों को कुछ समय और मिल जाता तो राज्य म भारी विद्रोह फल जाता। तब इनके अपराध की जांच हेतु एक कमीशन बठा। कमीशन के समक्ष भी इन अभियुक्तों का राजद्रोह अभियोग स्पष्ट प्रमाणित हो गया। इसलिए 1905 ई० में महा राजा का दरबार लगा। उसमें पोलिटिकल एजेण्ट सम्मिलित हुआ था। महाराजा न कहा जागीरदारों की जागीर तथा मान मर्यादा की साधिकार रक्षा की जाएगी किन्तु उन्हें नी राजभवन बनकर रहना चाहिए। फिर कमीशन की रिपोर्ट पढ़ी गई जिसमें उन लोगों के भीषण अपराध थे।

1. उक्त समय से पहले यहाँ केवल एक जोधपुर वीकानेर रेन्वे लाइन (1880-01 थी)।

महाराजा उ हें अधिक सजा देना नही चाहते थे । इसलिए अजीतपुरा के ठाकुर जी आधी जागीर तथा गोपातपुरा और बीदासर के ठाकुरों के सभा स्थान घटाकर एक एक गांव जब्त कर लिए । विद्रोही ठाकुरों को विश्वास था कि ब्रिटिश सरकार उनका पक्ष लेगी । जांच बग्वाई, तब लाड कजन ने महाराजा गंगासिंह के निश्चय का समर्थन किया । फिर भी बीदासर के ठाकुर ने गांव देने में विरोध किया । इसलिए एक सेना भेजी गई, जिसने मोमासर को अपने अधिकार में ले लिया । छ वर्ष के शासन प्रबंध से प्रसन्न 1904 ई० में ब्रिटिश सरकार ने गंगासिंह को के सी एस आई की पदवी प्रदान की तथा सर आर्थर माटिंहेल ने इनकी प्रशंसा की ।

शासन सुधार के लिए महाराजा साहब प्रति वर्ष शासन समिति (एडमिनिस्ट्रेटिव काँफ़ेंस) की सभा करने लगे । ये नीति निर्धारित करके ही सन्तुष्ट नहीं हुए वरन् 1903 ई० से 1907 तक राज्य के अन्तर्गत भूमि भागी का दौरा करते हुए नये सुधारों के अनुसार काम होते देखे । राज्य के ठाकुर भूमि में और प्रजा को चोरी-छकती द्वारा तंग करें, वे कद में धर दिये गये । राजाओं के दोगा में हाथी घोड़े तम्बू, शिकार एवं अन्य वस्तुओं तथा बेगारों का दबाव जनता पर पड़ता था । परन्तु श्री गंगासिंहजी के दौरे, प्रजा या रियाया के कष्ट एवं शिकायतें सुनने तथा उनकी निवारण करने के हित में हुए थे । आप ता ऊँट या घोड़े से ही यात्रा कर लिया करते थे ।

भारतीय नरेश अपने निजी खर्च का राजकोष से अलग नहीं रखते । वे राजकोष का अपना ही धन समझते और मनमाना व्यय करते थे । यह प्रथा प्रायः छोटी रियासतों में प्रचलित थी, जो हिंदू राज्य प्रणाली के स्वभाव विपरीत थी । फिर भी आखेट घुड़दौड़ तथा पोलो आदि के खेलों में राजा लोग राजकोष से धन खर्चते रहते थे । महाराजा गंगासिंह ने इसे गलत समझा और अपना निश्चय किया कि निजी कोष राज्य कोष से पृथक् होना चाहिए । इसलिए सन् 1902 में ही गंगासिंह ने अपना निजी कोष राज्य की साधारण आय का 5 प्रतिशत तक कर लिया था । उ हाने अन्य विभागों के व्यय हेतु भी नियम बना दिये थे । इसलिए वार्षिक बजट में सरसता तथा अन्य विभाग का आधुनिक संगठन बन गया था । फिर माय विभाग का संगठन करते समय महाराजा को नये कानून और नियम भी बनाने पड़े । अतः 1908 से 1931 के मध्य जी साहब द्वारा सत्तर (70) नये नियम बनाये गए । श्री गंगासिंह जी ने राजपूताने में मनप्रथम चीफ कोर्ट की स्थापना की तथा जज के पद पर अनुभवा अफसर नियुक्त किये । भविष्य में यह चीफ कोर्ट बदलकर हाई कोर्ट बना दिया ।

फिर महाराजा ने एक रक्खू बाढ़ खोला, जिसमें मासुगुजारी का सारा प्रबंध होता था । महकमा खास का पुन संगठन हुआ जिसमें सेक्रेटारियों के अधिकार बढ़े । अब तो महाराजा साहब भारतीय नरेशों के संगठन की ओर भी ध्यान देने लगे थे । लाड कजन गंगासिंह जी के इस व्यक्तित्व दृग्दक्षिता एवं राज्य प्रबंध से बहुत प्रसन्न थे । सन् 1905 में प्रिंस तथा प्रिंसस ऑफ वेस, बीनानर आये और महाराजा से जीवन पर्यंत की मित्रता स्थापित करके गये । सन् 1908 में राड मिंटो ने दूसरी बार बीनानर आकर एक नई मायता उत्पन्न कर दी थी ।¹

1 प्रिन्सी पस ।

2 वायसराय किसी रियासत में एक बार से अधिक नहीं जाता । अतः दूसरी बार आने से नात हुआ कि बीका नरेश के सुधारों एवं सुप्रबंध से ब्रिटिश सरकार प्रसन्न है ।

मई ई म 1910 मे सम्राट एडवर्ड सपनम का देहात हुआ उनके पुत्र प्रिंस आफ वेल्स, पंचम जाज सम्राट बन । श्री गंगासिंह जी उनके एडीकाग घोषित हुए और कनल की उपाधि पाई । उक्त राज्याभिषेक मे आप महाराजकुमार सहित सनिमन्त्रण लदने पधार । केम्ब्रिज वि वि न आपको वहा एल एल डी (डॉक्टर आव ला) की उपाधि दी और अनेक सभा असभो म सम्मान पाया । आगे जानर सम्राट भारत आय, तब लाइ हाडिंग द्वारा श्री गंगासिंह जी राजपूताना के प्रतिनिधि रूप, दाही दरबार म प्रवचक समिति के सम्म्य बनाये गय । वहाँ श्री गोपाल कृष्ण गोसले जैसे गव प्रसिद्ध नेताओ से आपका मित्रता हा गई ।

ई० सं० 1912 म श्री गंगासिंह जी को नामन करन पक्कीम वप हा गये थे । यद्यपि पूणाधिकार प्राप्त किये हुए केवल तेरह वष हीं हुए थे तथापि तेरह वर्षों म ही इतना अधिक काय हुआ कि बीकानेर, वतनान समय का मुख्यस्थित राज्य बन गया था । प्रजा का दशा सुधार उनति काश्तकारा को रबी की फसल हेतु प्रोत्साहन, रुई की खेती जानवरी की नस्ल सुधार सिचाई के लिए लगभग 600 कूप खनिज एष कोल (कोयले) की खोन तथा 400 मोल लम्बी रेलवे लाइन निराल दी गई थी । इस तरह से राज्य की उन्नति एव प्रजा भलाई के लिए महाराजा ने जो जान से प्रयत्न किय । स्कूल, अस्पताल बीकानेर मे एफ ए कानज नोबु म स्कूल की स्थापना लडकियों की पढाई वाले प्रवधिन स्कूल स्थापित हुए । महाराजा को यही मे अपने सभी महकमो म योग्यतम एव अनुभवी प्रमारी रखने लाने का नीस पड गया था । अत एव सफरता एव सुधार के इन अववकालिक मुखों म यूमने जन मामास्य को भी राज्य रजत त्रयती मनाने का मौका मिला था ।

मितिम्बर ८० म० 1912 का राज्य म त्रयती भलाई गई । पहले पूजा पाठ दान-दक्षिणा एव दव दशनादि धार्मिक कृत्य हुए । प्रजा के स्वामी भक्ति पूण प्रेम भरे अभि-नन्दन व वधाइ पत्र स्वीकृत किये और कदी छोडे गये । सितम्बर 20 व 21 को फौजी तथा बडे अफसरों को दावतें दी गई । महाराजा 22 तारीख को श्री लक्ष्मानाथ जी के मंदिर गये और 23 को फौज मे फौजी मड भेंट किय । 24 का सत्य उत्सव मनाया गया तथा 101 तीथी की सलामी हुई । इसके बाद महाराजा ने गंगा निवास हॉल म दरबार किया । कनल विम मे श्रीगंगासिंहजी साहब को वधाई दी और अपने भाषण मे कहा कि 'बीकानेर के अतिरिक्त अय किसी भी भारतीय राज्य म प्राचीन सम्पत्ता एव राजा तथा राज परिवार की प्रथाओ का पारश्चात विधान, शक्ति एव कायकुशलता के साथ इतना सुंदर सम्मिश्रण नही मिलता ।”

महाराजा न उस समय अपने भाषण मे एक व्यवस्थापिका सभा (लेजिस्लेटिव-असम्बली बाकानेर) स्थापित करन की घोषणा की जो अत्यंत साहस भरी बात थी ।

द्राविणकार, मैसूर और बड़ौदा मे गत बीस वर्षों स ऐसी समाएँ थी । परंतु उन बडे राज्या की तथा बीकानेर की स्थिति म बडा अंतर था । वहाँ की प्रजा शिक्षित थी और ब्रिटिश शासता की भाति शासन काय प्रचलित था । बीकानेर की दशा इनसे विपरीत थी, पर महाराजा साहब ने तो व्यवस्थापिका सभा की घोषणा कर ही दी । प्रजाहित का अय घोषणाएँ भी की, जिनम भाषा की, कई कर उठान की, शिक्षा विभाग संगठन और छात्रवृत्ति एव छात्रावास तथा पदों म रहने वाली बालिकाओ के

लिए शिक्षा आदि की मुख्य घोषणाएँ थी। बीकानेर में स्त्रियाँ के लिए अलग अस्पताल अथवा स्थानों में नए अस्पताल तथा “एक्सरे” मशीन भी मँगवाई गई। चाँद कुवर बाई अनाथाश्रम और किंग जाज अपाहिज आश्रम स्थापित कर इन लोगों के दर्जों का उपकार किया किमानों के शेष रहे लगान माफ, सरदारों के अनेक कर माफ तथा राज्य के सर्वे विभागों में योरोपीय अफसर नियुक्त किये गए। महाराजकुमार के अध्यापक बनल बेक ने अपने मापण में श्री गंगासिंह जी के सद् व्यवहार और कृपा की प्रशंसा की। इस समय अनेक भारतीय नरेश बीकानेर आये और महाराजा के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित किया।

जय शी के बाद महाराजा न भारतवर्ष एक साम्राज्य के कार्यों में भाग लेना आरम्भ किया और थोड़े ही समय में बीकानेर को जगत विख्यात बना दिया। वे सैनिक सेवा को स्वयं राठीड राजपूत राजा की सबसे बड़ी अभिलाषा बताते। महाराजा श्री गंगासिंह जी बीकानेर के अत्यन्त प्रभावशाली एवं विशेष समझदार भूपति थे। इनका शासन समय बीकानेर राज्य का स्वर्ण युग माना जाता है।¹

विस 1994 भाद्रपद (ई स 1937 सितम्बर) मास में श्री गंगा सिंह जी को सिंहासनारूढ हुए पूरे पचास वर्ष हो गये थे। इतनी अवधि तक बीकानेर के राज्य सिंहासन पर किसी राजा ने शासन नहीं किया। इसलिए श्री गंगा सिंह जी की स्वर्ण जयन्ती व स्वर्ण तुलादान के वृहत् आयोजन हुए। सामगढ की यज्ञशाला में प्रात आठ बजे गणेश पूजन, स्वस्तिवाचन और नवग्रहा व पूजन अचन हुए। तुला के एक पल्ले में गद्दी तर्कित के सहारे श्री गंगासिंह जी विराजे, दूसरे में आठ हजार छ सौ तोला सोना उनके वजन से भी अधिक चढ़ाकर तुलादान किया गया। उस समय यह स्वर्ण तीन लाख रुपये का माना गया था, जो अनेक यूरोपियन वासिया वायसराय साहब लिनलियमों तथा बहुत से नरेशों एवं बड़े बड़े अफसरों के समस्त घोषणा के अनुसार “पीपल्स गाल्डेन जुबली कमेटी” द्वारा वितरित करवाया गया। शास्त्रोक्त विधि से तुलादान हुआ 101 तापा की सलामी हुई और 106 कदी छोड़ गए। महाराजा मंदिर गए, नगर में सोने चाँदी के काम सहित दरवाजे एवं तोरण देखे। लोहारों ने अपने माहुरत में बड़ी कारीगरी के साथ एक शृंगनीय लोह दरवाजा बनाया था। बीकानेर इस पुरी बन गया था।

स्थान स्थान पर भाज व राज्य भर के स्कूलों में बच्चों को मिठाइयाँ बटवाई गई। अनेक सस्थाओं और शहरों से अभिनंदन डेपुटेशन बघाई पत्र तार और कविताओं के तालि लग गये। महाराजा न प्रजा का सदेश दिया और लाला रूपमा के मावर्जनिक कार्यों की घोषणाएँ की। सरदारों अफसरों एवं अन्य कमचारियों का पदविवी, गाँव ताजीम तरक्कियाँ प्रदान की। इस अवसर पर महाराजा ग्वासिधर कपूरपला जयपुर जोधपुर पटियाला दतिया बनारस और दरभंगा के महाराजाधिराज आये। उज्जपुर

- 1 ई स 1916 में हरिद्वार से गंगा की एक शाखा निवासन के लिए अंग्रेज सरकार ने विचार लिया तब भारतीय जनता ने उसका पूरा विरोध किया। सरकार ने इसकी जाँच कमेटी में श्री गंगा सिंह जी को भी नियुक्त किया। इन्होंने निष्पत्ती के साथ सरकार को बताया कि इस काम से हिंदू जनता के हृदय पर चाट लगेगी और परिणाम अच्छा न होगा। सरकार ने महाराजा के विचारों का मान्यता दी और शाखा निवासन का काम स्थगित कर दिया।

के महाराणा, दाता तथा बाकानेर के महाराणा, कोटा व बच्छ व महाराज प्रतापगढ़ के महाराज और बूंदी नरसिंहगढ़, सीतामऊ और बेगमगढ़ के राजा भी इस मौके सम्मिलित हुए थे। पालनपुर व नवाब सर तले मुहम्मदशाह तथा पालीताना के ठाकुर एवं अनन्य स्थानों में दीवान राज कुटुम्बी व प्रतिष्ठित सरदारों के ठिकानेदार आये थे।

राज्या के अनेक शासकों तथा भारत के बहुत से नरगों से इनकी (गंगासिंह जी की) पूरा मित्रता थी। राजपूताना के समस्त राज्यों के शासकों व साथ अच्छे सम्बन्ध थे। ये घम सम्बन्धी बायों में पूरा रूप से भाग लिया करते और शासन की ईश्वर वरदान मानते थे। वे भारतीय सम्मता के अनुसार राजा और प्रजा के बीच उस पवित्र सम्बन्ध को, जो यहाँ की परिस्थिति के अनुसार एवं प्राकृतिक था दखना चाहते थे। इनके शासन समय में जनता की पाक, डाक तार, बिजली, टेलीफोन वगैरे, स्वास्थ्य, यातायात, पुस्तकालय, म्यूजियम, शिक्षा, मिनेमादि की अनेक आधुनिक सुविधाएँ प्राप्त हुई। जमींदार परामर्शणी सभा, म्यूनिसिपैलिटीयाँ, सहकारी समितियाँ, ग्राम पंचायतें आदि संस्थाओं के कार्यालय भी स्थापित किये गए। चारों इकातियाँ प्रायः सत्तम एवं आवागमन के रास्ते सुरक्षित बन गए थे। इसीलिए बायसराय साइ बेन्स फोड, रीडिंग इविन और बिलिंगडन ने बार बार से महाराजा गंगासिंह जी का प्रशंसाएँ की थी।

महाराजा श्री गंगासिंह जी ने राजधानी में बड़े बड़े भवन बनवाकर सर्वाधिक नगर विकास किया और फिरोजपुर कटानमेंट के पास सतसज नदी से एक जलधारा (नहर) पृथक् कर बाकानेर राज्य का निजल पड़ा बहुत बड़ा क्षेत्र सरसज बना दिया था। जलागमन फलस्वरूप उस एरिया में बड़ी बड़ी मकियाँ स्थापित हो गई, जिनसे किसानों, व्यापारियों एवं राज्य की अर्थशास्त्र लाभ होने लगा। प्रजा, सुखहित वाह-वाह करते लगी थी: 'राज-काज में सबका नागरी लिपि में उद्गू एवं अंग्रेजी, किंतु प्रजा व साथ भाषण तथा वार्तालाप के समय था गंगा सिंह राजस्थानी से बड़ा प्रेम और लगाव रखते थे। हिंदी का इनको समुचित ज्ञान था, परंतु अंग्रेजी भाषा पर पूरा अधिकार था। श्री गंगासिंह जी के साथ अंग्रेज सरकार के अच्छे तालुकात थे। उनसे इन्हें काफी खिताब उपाधियाँ मिली थी। भारत के सार बायसराय महाराजा व यहाँ बड़ी खुशी के साथ आया था। बायसराय ही नहीं प्रिंस आफ वेल्स, भारत के सर्वोच्च सेनापति आदि उच्चाधिकारी भी इनके समय में सत्प्रेम कीकानर पधारें थे।

श्री गंगा सिंह जी ने अनेक बार सदन की यात्राएँ की और इम्पारियल बार कनिट एवं बार काफ्रेज में भी शामिल हुए थे। लीग आफ नेशंस तथा गोलमेन काफ्रेस में भारतीय नरेशों की ओर से भाग लिया था। ये दोनों विश्व युद्धों में सम्मिलित हुए और वर्सेल्ले के संधि पत्र पर भारतीय प्रतिनिधि की हैसियत से हस्ताक्षर किए। ये २० स० १९२१ में नरे ड्र मडल के प्रथम वा सलर नियुक्त हुए और भारत के दशवी नरेशों द्वारा सम्मान पाया। हिंदू विश्व विद्यालय के कुलपति रहें और कम्ब्रिज वि०वि० तथा एनिडबरा विश्व विद्यालय से उपाधियाँ पाई थी। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से इन्हें

१. कर सभ स्थापना तू बठण धीरा मज गन धार ।

भागीरथ मन् भोगा, जोधा तन जुहार ॥ चतुरदान मामोर

डी०सी०एल० (डॉक्टर आव सिविल जा) की उपाधि मिली और सम्मिट एडवड मन्त्रम द्वारा इनको जी सी आई इ (नाइट ग्रड कमा डर ऑव दि इण्डियन गम्पायर) की उपाधि मिली। महात्मा श्री गांधी, गोखले और मालवीय इत्यादि नेताओं से इनकी मित्रता थी। ये अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नेता थे, जो 2 फरवरी 1943 ई० को बम्बई में प्रातःकाल अपनी कीर्ति अवशेष छोड़कर स्वगवासी बन गए। वायुयान द्वारा बीकानेर लाये जाने पर देखी कुंड सागर स्थान में इनके पार्थिव शव का मंगोक दाह मस्कार किया गया। दश वर्ष और इहलोक में रह लेते तो जरूर प्रजा श्री गान्धि महाराज की डायमंड जुबली (हीरक जयंती) मनाती। किंतु कान भगवान की सीला। इनके पालन महाराजा शाहू ल सिंह जी ने (सन् 1943-49 तक) बीकानेर राज्य का सिंहासन संभाला। इस समय स्वयं प्रतापी लड़ाई चल रहा थी। 14 अगस्त 1947 की रात को भारत स्वतंत्र हो गया। तब श्री शाहू ल सिंह जी ने भारतीय रियासतों के भारतीय संघ में सम्मिलित होने के समझौते पर सर्वप्रथम हस्ताक्षर करके दूसरे राज्यों को उत्साहित किया। इस कार्य हेतु उस समय सरदार बल्लभ भाई पटेल ने महाराजा श्री शाहू ल सिंह जी की पर्याप्त प्रशंसा की थी। अपने राज्य में पूर्ण उत्तरदायी सरकार बनाने की पहल भी इन्हीं द्वारा हुई थी। आने जाकर 30 मार्च सन् 1949 ई० को श्री सरदार बल्लभ भाई पटेल के द्वारा बहदुर राजस्थान का उद्घाटन हुआ और बीकानेर राज्य उसमें विलय हो गया। किंतु भारत सरकार ने महाराजा शाहू ल सिंह को सवधानिक महाराजा के रूप में बाहुजगत मायना प्रदान की थी। श्री शाहू ल सिंह जी के परलोक गमन पश्चात् महामहिम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद द्वारा उनके बड़े कुंवर श्री करणी सिंह (जन्म 1924 ई०) को बीकानेर राज्य धराने का राजकीय सम्मान मिला और वे महाराजा के नाम से सम्बोधित होते रहे हैं। ये ई० सन् 1952 से इस बीकानेर क्षेत्र के प्रतिनिधि निम्नोक्त मन्त्रालय के रूप में समये समय तक लोक सभा में मन्त्र्य बने। लोक सभा में लिफ्ट सिस्टम द्वारा राजस्थान नहर के पानी का ऊपर उठाकर लूनकरणसर क्षेत्र के लोगों के लिए लाये जाने के बार-बार प्रस्ताव रहे। 1959 में एक सिनेमा फिल्म बनाकर क्षेत्र के जलभाव का दिल्ली में प्रदर्शन करवाया था। तब सिंचाई और विद्युत मंत्री डा० क० एल० राव ने इस प्रोजेक्ट की प्राथमिकता देने का वादा किया था। डा० श्री करणी सिंह के अथक प्रयास से 5 जुलाई 1968 के दिन लूनकरणसर बीकानेर सिंचाई का शुभारम्भ राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री माहनलाल सुखाड़िया द्वारा हुआ। मातृ भाषा राजस्थानी को गौरवपूर्ण स्थान दिलवाने और महत्त्वपूर्ण हस्त-लिखित ग्रंथों का संरक्षण करवाने का कार्य भी आपने किया है। आप बले पीजन तथा स्कीट शूटिंग में भारत के राष्ट्रीय चम्पियन और निजी वायुयान चालक का लाइसेंस प्राप्त करने वाले प्रथम बीकानेरी हैं।

महा० श्री करणी सिंह बम्बई विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० का उपाधि प्राप्त एवं सम्म्य रहते हैं। वे अन्तराष्ट्रीय निगान बाजी में सतत भाग लेने वाले मशहूर सज्जन कहलाते हैं। अब श्री करणी सिंह जी के महाराज कुमार श्री नरेन्द्र सिंह बीकानेर के राजघराने में जन्मे (1946 ई०) एवं सावजनिक कार्यकर्ता व नौजवान संगठक हैं। आप अपने पूज्य की कीर्ति का बड़ा गौरव रखते हैं।

लोक कथन

प्रजा मे गंगासिंह जी के जीवन की अनेक घटनाएँ रामायण महाभारत की कथाओं की भांति प्रचलित हैं जो इतिहासों में नहीं मिलती। वे जन सेवक भावुक तथा परम उदार थे। उनका व्यक्तित्व रोबोता था। वे बंद गल का कोट पहनते और ब्रिचस तथा मोसम के अनुसार रंगों साफा बौधा करते थे। स्वयं काम करना और दूसरों से बरवाना उनका मित्रा तथा। महाराज अशोक के बाद हिंदुस्तान से सेना सहित काबुल की सीमा के उम पार जाने वाले श्री गंगासिंह ही थे। सर ब्राचन जट के सी आई ई, जो श्री गंगा सिंह के सहायिग होने तक शिक्षक थे ने महाराजा का दैनिक काम क्रम बताया है। उसम उन्होंने जल पान से पहल धाँडे की सवारी ब निसाने बाजी का हाल लिखा है। ई स 1999 के पास शेल और निसाने बाजी के अलावा श्री गंगासिंह प्रात काल जल पान से पहले घोड़े की सवारी भी किया करत थे। कभी कभी आप 18 मील गजनेर तक जा आते और उस समय साधारण वेश मे रहा करते थे।

1 एक दिन वापिस आते बचत रास्ते मे उनके घोड़े के पेट मे पीडा खटी हो गई, घोड़ा गिर गया और देर तक छटपटाने लगा। पीछे से एक आदमी लकडिया का लादा लिए बीकानेर आता दिखाई दिया। महाराजा ने बीकानेर पहुँचा देने के लिए उससे कहा। लादे वाला गिड़गिड़ाया कि 'पहले शहर लादो बेच आऊँ पछ धान पीहुँवा देसू।' तब महाराजा ने कहा—'अरे भाई मैं बेगार म नहीं ले जाता, पाँच रुपया भाड़ा दूँगा। अपना फौज मे ल जाकर छोड़ देना।' बात का विश्वास हो गया और लादा छाड़कर महाराजा को ऊँट चढ़ा कर बीकानेर ले चला। आग के आसन महाराजा एव पीछे लादे वाला बठा था। महाराजा ने पूछा—'और क्या हाल चाल है चौधरी? ज़रे भाई तुम लाग राज्य के आदमियो स इतना क्यों डरत हो?' लादे वाले ने कहा—'ब धिगण बगार म पकड़ लेव अर पइसा पूरा देव नहीं।' इस पर महाराजा बोले—'तुम बेगार की दरवास्त क्यों नहीं करते?' चौधरी—'कुण सुणसा? धणी गंगा सिंह महा०, सुणा हम्म मोटा हुया है जका घणा आछा बताइज। पण उणा तक या बात पुगाव कुण? महा० ने कहा—'मैं कहूँगा, तुम्ह अब जबरनस्ती और बिना पसे कोई बगार म नहीं ले जायेगा।' बातों बातों मे बीकानेर आ गया, लाग आते जात दिखाई देने लगे। वे महा० को ऊँट चढ़े देखकर—'धणी खम्मा। धणी खम्मा।' बोलने लगे। जाट देचारा डर गया कि—'तु महा० उसकी पाँच रुपए देकर रिसाल की सवारी से किते म पघार गय। चौधरी को खाना खिसाने के लिए भा कहन गए। बगार के उचित आदेश हो गये।

2 फाल्गुन का महीना भजे का निन, कचहरी मे एक कदी की पेशी थी। उसको दो सिपाइया द्वारा हाथों परा में बेडी लगाए हुए तारीख भुगत कर वापिस जेल ले जाया जा रहा था। रास्ते मे गढ के पास रसिए डफ चजा रहे थे। कदी ने कहा—'मुझे डफ पर एक घमाल बोलने दो।' लेकिन सिपाई नहीं माने। तब किसी अन्य व्यक्ति ने सिपाइयों से कदी की सिफारिश करके डफ दिलवा दिया। कदी घमाल का गायक था। उसने बहुत ऊँचे स्वर से बीकानेर राज्य और महाराजा गंगासिंह के नाम पर चनाई हुई घमाल गायी—'गहरो तपिया जो राज गंगासिंह का गहरो तपिया।'

महाराजा वही महलो म बठे थे। घमाल की स्वर लहरी से प्रभावित हुए। उ होनि अपन अर्द्धद्वी से कहा—“इम घमाल बोलने वाले रसिये को लाओ।” मुरय लोग न अज की ‘यमा अन दाता’ एक कोई कैदी था। जेन ने सिपाई कचहरी उसको पेणी करवाकर बापिम लिए जा रहे थे। रास्ते मे डफ बजने देखकर उस कदी ने भी डफ बजा गा लेन की अनुनय की। उपस्थित लोग के कहने पर सिपाई मान गय और वह डफ बजा कर घमाल बोलने लगा। अब जेल पहुँच गया।” महाराजा न कहा “कदी को छोड़ दो।”

3 महाराजा गंगा सिंह गगानगर जा रहे थे। मान मे व विश्राम कर रहे थे। चारा ओर कड़ा पहरा था। कोई विश्राम मे बाधा नहीं डाल सकता। एक व्यक्ति को रोने की आवाज आई। महाराजा ने तत्काल उस व्यक्ति को हाज़िर करन का हुक्म दिया। वह एक गरीब चमार था। काई दुष्ट उसकी पत्नी का छीन ले गया था और सरकारी अफसर सहायता नहीं कर रहे थे। महाराजा ने तत्काल उसकी औरत और दुष्ट को खोजकर लान का हुक्म दिया। एक ही घण्टे में अपराधी गिरफ्तार कर लिया गया। औरत चमार को पुन मौपी गई।

4 श्री गंगा सिंह राजा भोज और विक्रमादित्य की तरह रात्रि के समय सादी पोशाक पहन कर निकलने और अपनी प्रजा के सुख दुख का जान किया करते थे। एक बार रास्ते में कहा सिपाइयों की रात्रि ड्यूटी निरीक्षण का अचानक विचार हो गया। ड्यूटी पर खड़े एक सिपाई को नींद में ऊधते देखकर उसने हाथ से धीरे से बड़ूफ निवाल ली और उसकी जगह ठुहरी के नीचे लाठी ठहरा कर पकड़ा दी। दूसर गोज गिडगिडाते सिपाई को मुस्कराते हुए महाराजा ने पर्याप्त नसीहत के साथ बड़ूफ सम्मला दी।

5 मिय से श्री गंगा सिंह नई स 1915 फरवरी को नेपटेनट जनरल सर जान मक्सवेल कमांडर इन चाफ की सलाह से स्थान कतीबा एस खेल के पास बहद शाहु सेना के साथ लड़ाई मे अपनी सेना का स्वय संचालन किया। तब शाहु सेना के छक्के छूट गये। वे रात को अंग्रेजी छपबरा से (शत्रु के दो सैनिक) शिविर मे महाराजा की खाट के निकट घुस गए। माता करणी ने उठ उठ के सम्बाधन से बीतानेर नरेश को उठाकर एक कोने में खड़ा किया और बिजली चली गई थी। वे सैनिक खाट के कमल पर दो फायर करके लौट पडे। विजयी आई। महाराजा न उन दोनों के वही डेर कर दिये।

6 रात्रि भ्रमण— गंगा सिंह के व्यक्ति सम्ब धी अनेक विचित्र वाने घटित हो जाती थी। एक बार रात्रि भ्रमणाथ नगर में प्रवेगित हुए। तब एक सेठानी का गहनों से लदी देखकर पूछा—‘बाला गहना घणो पहर्यो है ? काई चार डाकू खोस लेचला ?’

सेठानी ने कहा—‘राज्य गंगा सिंह कर।’ सुन कर नप तो आगे निकल गय। उस जमाने में गंगा सिंह की भागी कीर्ति प्रसिद्ध हुई थी।

7 बीकानेर का कोई ग्रामीण किसी के साथ कलकत्ता चला गया। वहाँ हवड़ा का पुल देखकर आश्चर्यावित हो उठा। और महाराजा गंगा सिंह की वाह बाही करने लगा कि ‘वाह ! गंगा जावा वाह ! भग्न बणाया है।’

8 महाराजा गंगा सिंह अपनी निज स्पेशल (रेल) में यात्रा किया करते थे। एक बार कलकत्ता रास्ते में एक अग्रेज स्टेशन मास्टर ने उनकी गाड़ी को पहले लाइन बिलयर नहीं दिया। महाराजा ने उमका बुलवाकर कारण पूछा। टालमटाल की कोशिश पर श्री गंगा सिंह जी ने गुस्से में आकर उसके थप्पड़ जमा दिए। ऐसी दूसरी घटना है—इलाहबाद क्षेत्र के स्टेशन मास्टर के हाजिर न होने पर तत्काल घरस्वास्त कर देने के लिए ऑर्डर कम्बा दिए थे और उसके विनय पूर्वक टिड मिडानें पर वे ऑर्डर वापिस कसिल (रद्द) भी करवा लिए। इस तरह से वे बड़ी सजगता के साथ यात्रा किया करते थे। मुख्य स्टेशनों पर डिब्बे की सीट पर बैठे ही खिड़की में झाँक कर प्रजा जना से कुशल समाचार पूछा करते थे। पर लोग उनसे डरते डरते ही बात किया करते।

9 ई स 1939 की बात—महाराजा की स्पेशल भटिण्डा से बीकानेर जा रही थी। रास्ते के ग्राम महाजन स्टेशन पर—महाजन रो कोई देवा, हरिसिंह नी रया कहकर आपने अपने डिब्बे की खिड़कियाँ बंद करवाली। वहाँ के लोग उनके दशना की तरफ लिए ही रहे। आग लूणकरणसर स्टेशन पर गाड़ी ठहराई तब वहाँ के प्रमुख जन स्पेशल से दूर खड़े की घणी रम्मा स्टारा अनदाता न !' बोल रहे थे, उनकी पास बुलवाकर सुभिक्ष मुवाल और दुब मुल आदि के समाचार पूछे। वहाँ सामूहिक परिचय के साथ गाटा के राजवी केशरीमिह (नायब तहसीलदार) ने नाम पूछा और उनके बताने पर मुस्कराये। बोले—म्हार राज्य में ही केशरीसिंह है कोई ?" इस पर वह भयभीत केशरीमिह धीरे से मुह मुका कर गायब हो गया। तब स्थानीय सेठ श्री जेठमल बोधरा ने क्षेत्रीय सागा व नेतृत्व में महाराजा के पास जानकर विनीत भाव से पानी आदि के अमावों को अज रूप ध्यान किए। फिर सब मुल्लो की रग बड़ ही भरते हुए दूर से आये ग्राम धामिया ने घणी खमा !" के उदघाप से स्पेशल को विना (रवाना) किया।

10 महाराजा गंगा सिंह का आज विजय बीकानेर रियासत में ही नहीं बाहर भी दूर दूर तक प्रसारित श्रेय दाव था। वे जहाँ कहीं जात, साथ भयभीत हो दूर खड़े ही देखा करते थे। उनकी सवारी निरन्तर पुनिस की सीटी बजती तब नगर नगरियों के समूह में रहन हुए भी प्रायः अल्प सग्यायित अपसरों को छाड़ कर तत्कालीन तमाम जन उनके दशना में वचित रहने। किसी भी गव राजा को उतने सम्बोधित काय भीग दिया जाता, वह काय बटा महान माना जाता था।

स्वण जयता महा मव पर कुछ चर्चिदा स्थानों के स्कूला से माव पास्ट हैनु छात्र उपस्थित होने अच्छी ममने गए। पर उनके साथ एक एक मास्टर जाने के लिए आवश्यक हुए। यन्त्र में अध्यापका ने प्रतिपादिया स्वस्थ ले ली। सबिन कुछ उत्साही

1. तममय महाराजा गंगामिह बीकानेर राज्य स्थली के वस्वर क्षेत्र। उनका मापने किसी अ य केशरी सिंह का नाम बताया जाना उचित नहीं जचता। केशरी सिंह वन का राजा सबसे नाकतवर व निर्भीक प्राणी होता है। वह अपनी स्थली में अय सिंग का प्रवण नहीं जाने देता।

गौरवान् में उस समय केहरी सिंह यादव (नगरनाल) नाम के एक कस्टम यानेदार थे। उसने इस घटना के पश्चात अपने हस्ताक्षर केहरी सिंह की वजह वक्त्र कहन नाम में करना आरम्भ कर दिया था, क्योंकि केहरी सिंह गंगरी सिंह होता है।

खेल मास्टरों में छात्रों के साथ सज धज कर गए। छात्रों ने यथा समय अपने झण्डे लहराये मात्र पास्ट किया और 'Long Live our Maharaja' के नारे लगाए। आयोजन विसर्जन होने के बाद महाराजा गंगा सिंह सबका अभिवादन स्वीकार करते हुए मेहमानों के साथ निवास स्थान पधार गए। तब जाकर छात्र और अध्यापक भी फेरिग हुए। तत्समय किसी मजाकिये साथी ने एक छात्रा के साथ जाए सरल सीधे मास्टर से मजाक कर लिया कि—'आपके छात्रों का वायन्म अनुनदाता को विलकुल पसंद नहीं आया। वह नाराज हो गए हैं।' बस! इतना सुनते ही वह मास्टर शाने लग गया। घुरी तरह से पछाड़ें साने सगा और जमीन पर गिर पड़ा। होश चमा गया और प्रलाप करने लगा। तब अन्य लोगों ने उसको समझाया कि आपके छात्रों की परेड से साहब बहादुर बड़े खुश हुए हैं और सबका आपक लिए इनाम दियेगा।' लेकिन वह तो पागल हो गया और अपने को गालियाँ बकता रहा। आखिर बात को गामनीय रखते हुए उसको हास्पिटल में भर्ती करवाया गया और वहाँ उपस्थित अध्यापकों ने तीन माह तक उसका वहाँ पूरी देखभाल रखी।

गगनहर, अनिवाय शिक्षा पंचायत राज्य हिंदा राज भाषा बनाना विधान सभा कायम करना—यादतिया के नारण जागीरदारों के अधिकार छीनना आदि काब वीकानेर में होने उस समय आन्ध्र जन्म गिने जात थे। लेकिन प्रजा मुख की प्रक्रिया गंगा सिंह की अपनी थी। वह आखिरी समय तक भाखरा का "द उच्छ्वास" करते रहे। परिजनों ने आश्वासन दिया कि आपकी भाखरा का योजना अवश्य पूरी हागा। तब उनकी आत्मा इहलोक का छाड सगी थी।

श्री गंगासिंह जी के युग में मारे ससार में अज्ञेयो की धाक थी। सब राजा महाराजा उनके सेवक थे। ऐसे समय में गंगासिंह अकेले अपने राज्य में आंदोलन कर्त्ताओं को मन मानी करने दें? कैसे हो सकता था। तत्समय के शासन कानून एवं प्रबंध का तकाजा था। गंगा सिंह ने आंदोलन कर्त्ताओं पर मुद्दम चलाये। फिर भी सच्चे देश भक्त व्यक्ति का पहचान ने की उनमें प्रखर प्रजा थी। श्री जयनारायण व्यास की सिफारिश करत हुए उ होने जाधपुर के तत्कालीन अग्रज दीवान सर डोनाल्ड एम किल्ड को एक पत्र 21 फरवरी 1937 ई का लिखा था। उसमें थी व्यास का एक चरित्रवान, दश सेवक तथा जिम्मेदार व्यक्ति बताया था और लिखा कि अपने हट जाने पर शासन की बागडोर ऐसे ईमानदार व्यक्ति के हाथों में ही सौंपी जानी चाहिए।

21 फरवरी सन 1937 की प्रमुख नेता श्री जयनारायण व्यास के सम्बंध में जाधपुर के तत्कालीन प्रधान मंत्री को भेजे गये गोपनीय पत्र में देश की भावी राजनीतिक स्थिति के विषय में जा बातें उस समय लिखी थी, वे 10 वर्षों बाद अक्षरशः सत्य हुई।

वीको 1 नरो 2 सूणसी 3 जतो 4 कल्लो 5 राय 6
दल्पत 7 सूरु 8 करणमी 9, अनुपम 10 सरूप 11 गुजाय 12 । एक ।
जोरो 13 गज्जा 14 राजसी 15 परतापो 16 सूरत 17
रतन मिध 18 सरदार सिध 19 डूग 20 गगमहिपत 21 । दा ।
प्रज पात्रक सादूख सिध 22 करणी मिध कुळ मोड 23
जगलधर वीकानपत्त रण बका राठीड । तीन ।

आज बीकानेर राज्य की 'गासक' प्रथा समाप्त है पर तु बीकानेर मडल सांस्कृतिक दृष्टि से भी न कोटि का स्थान माना जाता है। वह अपनी मात्र महत्वपूर्ण गाथाओं से ही नहीं, स्थापत्य कला कुशलता परिपूर्ण गढ़ों, महलों, कोठियों उद्यानों पार्कों, भव्य स्मारकों पथ त्योहारों, धूरवीरता तथा विभिन्न लोक प्रथाओं में अपने पुनीत प्रवेश का प्रयास जिला कहलाता है। प्राच्य स्थल, देवप्रासाद, नगर द्वार, भित्ति चित्र, सुसज्जित बेंगले, हवेलिया और तीर्थ तालाबों सब स्थान बहु शानागार हैं।

बीकानेर वसुधरा ऐतिहासिक दृष्टि से सतत परम पवित्र रही है। यह मनस्वी श्रद्धा मुनियों की चरणरज से गौरवशालिनी बनी है। बीकानेर नगर से पचास कि० मी० पश्चिम में श्री कालायत सांख्य दशन के प्रणेता कपिल मुनि का आश्रम रहा है। मुनि श्री ने अपनी माता देवहूती को यहीं पर सारय योग-दशन का नानोपदेश दिया था। शान्दक्य, क्यबन एवं गुरुदत्ताश्रय भी इसी पुण्य स्थली में तप साधना रत रहे थे जिनकी साख में क्रमशः 'जागीरी तालाब', 'चिमन गुफा' और दियातरा नाम का ग्राम विद्यमान है। बीकानेर की दक्षिण दिशा में तीन कि० मी० दूर देगोक स्थित माता करणी का दानवीय मंदिर छोड़ा आगे जाओगी या 'मुकाम' पूव में शिववाडी की मंदिर महिमाओं से काफी उच्चर जसनाथ जी का कतरियासर (बाबा का) पूनरासर, कस्बा कालू में कालिका जी का धाम और गाँव गारबदेश में मुरलीधरजी का चमत्कारी मंदिर है। तहसील लूनकरनगर नाम में भडान की पावन भावना पूजित श्री बजरगवली का नव्य भव्य देव द्वार है।

ठिकाना छत्रगढ़ के विस्तृत सूबे बजर रेगिस्तान के पुराने पड़े नर्सिंग भू भाग को लहलाते खेतों में परिवर्तित कर देने वाली राजस्थान नहर परियोजना का विषय की विनालसम सिंचाई योजनाओं में बीकानेर का प्रमुख स्थान है। नगर से अठारह कि० मी० दूर उक्त नहर की अंतिम लिफ्ट पम्पिंग स्टेशन गाँव हुसगसर के स्वर्णिम टिला की गिराव कतार चोटियों पर बदले बीकानेर के अरुणस्थलीय गौरव को हरे भरे पेड़ों की पन्नावली-पताका गगन छींच गजना में मिलाती हुई मालूम होती है।

बीकानेर से पत्तीस कि० मी० पश्चिम गजनर क्षेत्र में पशु पक्षियों का एक विशेष रमणीय अभयारण्य है। यह निम्न विचरण करने वाले जानवरों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण एवं मनभावना स्थान है जो तमाम जीवों के लिए लगभग बीस कि० मी० प्रसरित अभयारण्य है। यहाँ की झील का प्राकृतिक सौंदर्य श्री गयासिंह जा ने बड़ा मनोहारी बना दिया है। इसलिए यहाँ के पशु पक्षा सदैव जल तृप्त रहते हैं। पशु पक्षियों का नदत पानन यह अभयारण्य अब तारबदी में वन विभाग द्वारा सुगठित रहता है। यहाँ मूअर, रोम (नील गाय) आतल, चिकारे एवं कृष्णमृग जैसे पशु और हंस, मुर्गाबी, सारस चणुन बनस घटर बुलबुल बाज, मोरिया, पपया प्रभृति अनेक पक्षी रहते हैं। गीतकाव्य में साइबेरिया, यूरोप तथा मंगोलिया जैसे दूरस्थ देशों से सेकड़ा तरह के प्रवासी पक्षी यहाँ आते हैं। गोडावण तिलौर, मोर और बटबट यहाँ के विशेष माय पक्षी हैं। विदेशों से आने वाले विचित्र पक्षियों में इम्पीरियल सैंड घाउज ऊँची टीगों वाला घाली कानी स्ट्रिप्ट चिडिया पडीवड यला बटरड प्लोवर क्रीटइयर तथा स्थानीय चोडे डना वाली पीस है। इम्पीरियल मजेस्टा अर्थात् चिडिया टोनों में साईबेरिया के लार्स मारस यहाँ आते हैं।

गजनेर, जस अंतराष्ट्रीय जीवों का संगम स्थल, वस ही हिंदू मुस्लिम एकता का धार्मिक स्थान भी है। यहाँ अनक सम्प्रदायों के अनक मंदिर, मस्जिदें और पीरजी की बड़ी दरगाह है। बीकानेर महाराजाभा के महल एव उपवन, 5 कला कारीगरी के विशिष्ट नमून हैं। गजनेर के बाग में खजूर, नीम्बू अनार, जामुन और दित्व के पेड़ यथा समय से अच्छे फल देते हैं। वच्ची फुलवाद की यहाँ भारी बहार है। पयटन की दृष्टि से गजनेर सदा से विदेशियों का आनंददायक स्थान रहा है वसे ही गोधार्थी विद्याधिया के लिए अभिनव बीकानेर विश्व का छात्रपक नगर बन गया है।



गजनेर पलेस

सुना है इस समय दूसरा अभयारण्य छत्रगढ़ क्षेत्र के समारवेश्वर में (बहुत विस्तृत जगह में फला राजस्थान नहर का पानी) घाता पक्षी अभयारण्य स्थान बनाने के लिए उपयुक्त सरोवर माना गया है। पानी बढ रहा है और पक्षियों के बच्चों का भोजन 'बाई' बन रही है। दिनांक 12.2.81 के युगपक्ष के अनुसार बीकानेर के जिलाधीश तथा अन्य बड़े अफसरों ने इसका निणय लेकर उस एरिया के धारों और बस संगवान आरम्भ करवा दिये हैं। पचास वगमील में यह जलशलाकार क्षेत्र मछली पालन पशु पक्षा प्रजनन तथा विदेशी पक्षियों के विचरण बिहार एव हरिण नील गायें आदि पशुओं के विचरण के मुख्य स्थान के रूप में विकसित किया जा रहा है। इससे हमारा (कालू का) पुराना ठिकाना छत्रगढ़ क्षेत्र भी अब देश विदेश की रंग विरंगी, तरह तरह के कद और किस्म की पृथक पृथक चोच वाली चिड़िया का अद्भुत चित्ताकषक बसेरा बन जायेगा।

जागीरदार, बीकानेर राज्य और कालू —

राजपूताने में अभिहस्ताकित प्रथा—प्राचीनकाल के सम्राट आमतौर पर अपने सामंतों सेनापतियों एव उच्च कर्मचारियों को सरकारी खजाने से वेतन भुगतान की अपेक्षा भूमि के भूखंडों को भूमिकर अभिहस्ताकित कर दिया करते थे। प्राचीन नीतिकार श्री मनुजी का भी कहना है कि—'सौ गावों का कर सप्तरह कर देन वाले राज्य उच्चाधिकारी का एक गाव का भूमि कर अभिहस्ताकित किया जाना उचित होता है और संगठन प्रबल बना रहता है।'

राजस्थान के राजपूत चन्द्रगिरी और सूर्यवंशी हैं, जो सब क्षत्रिय कुलान हैं। य भूमि, गौ माता जनता और सस्टुति के रक्षक एवं गुरवीर मन्त्राले थे। उनका जीवन सत्तम्व सनिक जीवन था। राजपूतान की ग्यत का सुणी बनाय रसन क लिए इहोन मदव थपना गौरव समझा और दद प्रतिन तथा परमार्थी गिवन जीते रह।

राजस्थान क जातीय सगठन म पहले राजपूत राजा, अपन राजपूत सरदारो क मध्य अपन आपनो सब शिरामणि पृथ्वीपत थ्रेणी का म्मान गाहशाह बनाय गयने के लिए सप्रयत्न रहा करते थे। पर ऐस राज्य का राजनतिक आधार विशेषताएँ एवं व्यवस्थाएँ मात्र जमींदारी प्रथा द्वारा ही पूण नहीं होती थी। राज्य के महान सग्नार्गों का भू धारण विधान सनिक सेवा तथा कर देने म ही नहीं अपितु नातगारी व्यवहार क अनुसार राजा महाराजाओं के मौलिक भूमि उपभोग म उन सबका महकागी अधिनाी रूप, उन उपभावना पदीय विजेताओ से रबत सबधित माना जाता था।

राजपूताने की रियासतों म भूमि का विभाजन खालसा और जागीरदार का विभागो द्वारा व्यवस्थित रहता था। खालसा ता रियासती राज्य ही होना था। मगर जागीर भू धारण प्रणाली कई थ्रेणियो म विभक्त हुआ करती थी। उनम से प्रथम थ्रेणी की जागीरें ऐसी हुआ करती थी कि जिनके धारण कता सरदार उस भू खण्ड विशेष क प्रथम शासक या विजेता से सबधित रहते थे। अत ऐसे सदीने आधिपत्य तथा सबध के कारण ही धारण इनका भोगते थे। ये जागीरें अनुदान की सी हुई नहीं होती और न ही व्यवस्था के सदस्य होने का कारण थी। परंतु दूसरी थ्रेणी का मामती सेवा तथा लगान मुक्त मानो अनुदान होता था। ये शासक के कुटुम्बिया क जाति व धुआ द्वारा भोग जात थे। राजा के छोटे पुत्रों के पालनाथ तरीके भी यही थे।

राजपूतान की अ य रियास्ता की भाँति बीकानेर राज्य की भा काफी भूमि सग्नारा म बटी हुई थी। यह प्रथा राज्य स्थापना के साथ ही उत्प न हुई थी। कुछ पुराने ठिकान जिनकी महत्वपूर्ण सेवाएँ राज्य की मिली हो कई रिश्तगारी के कारण जमी हुई जागीरें थी और कतिपय अच्छी सेवाओ के उपलब्ध म सबद्धिग जागीरें थी। इन सग्नारो म ज्यादा राठौड ही थे जो बीका बीदावत और बाँधलान कहलाते थे। दूसरी गालाओ म सीसोदिया कछवाहा चौहान भाटिया तवर परमार व पडिहार प्रभति राजपूता ठिकान थे। दूसरी शाखा म भाटिया के ठिकाने अधिक थे। इन सबकी जागीरदार थ्रेणियो म राजवियो की दो कोटियाँ उच्च एवं मुख्य मानी जाती थी जो कि हथोडी वाले राजवी तथा हवेली वाले राजवी के सबोधन स पुकारा जाती थी। प्रथम काटि के राजवी सरदार बीकानेर महाराजा क निकट सबधी होन थे। इनका सम्मान भाइया के बराबर प्रतिष्ठित रहता था। महाराजा के पूवज श्री गजसिंहो राजवी कह लाते और दो परमाच्च थ्रेणिया म समा य थे। प्रथम थ्रेणी म जो राजवा व के डपोगा वालो के नाम से प्रसिद्ध थे और द्वितीय थ्रेणी के राजवी हवेली वाले राजवी कहलाते थे। ये दोनों ही शाखाएँ महाराजा गजसिंह के पुत्रो पीत्रा की थी। इनके जलावा गजसिंह के छोटे भाई तीन अमरसिंह तारामिह और गूदरसिंह के वशधरो की गिनता भी राजवी सरदारो म होती थी। किंतु पीढी दूर पड जाने के कारण ये ताजीमी एवं गर ताजीमी सरदार के नाम से सबोधित किय जान लग थे। ये लोग धीरे धीरे म्म से बाहर होन गय

और अपने ढेर (काठियाँ) बनाकर असंग रहने लगे। जिन्हें पहले हवेलियाँ कहा लग थे। इनके निर्वाह हेतु जागीरों भी और यथा समय राज्य से नकद रकम भी मिल जाया करती थी। बीकानेर राज्य में एक सौ तीस तजीमी सरदार थे जा तीन श्रेणियों में बंटे हुए आनन्दप्रद जीवन-यतीत किया करते थे। प्रथम वर्ग के 33 ठिकानों में से महाजन बीदा सर, रावतसर और भूखरवा के महाराज प्रमुख माने जाते थे। ये चारों रियासत कहलाते थे। ये राजा स मिलन जाते तब हजूर स्वयं इ हे हाथ मिलाकर अन्दर लेते और ससम्मान वापिस बाहर पहुँचाते थे। अतः ये दोलडी ताजीम और हाथ-कुरब वाले ताजीम कहलाते थे। द्वितीय वर्ग में 28 ठिकाने थे। इनके ताजीमदार मिलन जाते तब महाराजा फक्त बाँह पसार कर हाथ मिलाते थे। य इकोलडी ताजीम तथा बाँह पमाव की कुरब में प्रसिद्ध थे। तृतीय वर्ग के जागीरी ठिकानों वाले ताजीमदारों को केवल ताजीम वाले मानते थे। ये गठ में जाते तब महाराजा के सामन खड़े रहकर दूर से अभिवादन करते थे। इनके 69 ठिकाने थे। इस तरह से गजसिंह के तीन भाइयों की सत्तानों के अतिरिक्त 33 + 28 + 69 = नये पुराने 130 ठिकाने थे।

यह ताजीमी जागीरदारों के ठिकाने भी बीकानेर राज्य में सतोपप्रद वर्ग में व्यवस्थित थे। इसमें कुछ नये तथा कई पुराने सम्मान घटा बढ़ी के जरिये राज्य की उत्तम सेवाओं के कारण जागीरें भोगते थे। इन कुछ को अपनी शादी गभी के समय महाराजा को मजराणा भेंट करना पड़ता था। लेकिन रक्त संबंधित ठिकानेदार इस रूम से मुक्त रहते थे। ऐसे मौकों पर महाराजा साहब इनकी हवेलियों पर जाया करते थे। इनकी सिरापाव नक्काश निधान, घाड़ें, सोने चाँदी की छद्दा तथा अपरास आदि के सम्मान भी प्राप्त थे। कह्या को मुकदमे के समय बचहरी जाना भी माफ रहता। इनके लिए राज्य से नियमित शराय मिलने का प्रवच था। लेकिन जागीरों के गाँवा में खनिज जादि पर बड़े राज्य का सतत स्वाभित्व रहता था। कजदारी तथा नावास्तिग बगरह क भीने ऐसे ठिकानों पर कोट ऑव बाइस के द्वारा शासन व्यवस्था हो जाया करती थी। बीकानेर महाराजा द्वारा सनिक शिक्षा के सिवाय इनका पढ़ाने लिखान तथा उच्च पद दिलाने का भी पूरा प्रवच था और सरनारी की लटकियों का पढ़ाने की व्यवस्था भी अच्छी थी। इन सरदारों में विशेष सुधार ता नहीं हो पाय, मगर प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध में बीकानेर राज्य के सनिकों ने राजपूती क्षाय प्रकट करके बेजाड यश प्राप्त किया था।

राजवी सरदार (ड्योडी वाले राजवी) — महाराजा गजसिंह के कई पुत्रों में से छत्रसिंहजी दूसरे पुत्र थे। वे अपन पिता की मौजूदगी (वि स 1836 भादवा सुदी 2, ता० 12 सितम्बर 1773) में ही परलोकगामी बन गये। छत्रसिंह अपने पीछे दलेलसिंह नाम का एक गिगु पुत्र छोड़ गये थे। बालक दलेलसिंह के पितामह (दादाजी) गजसिंह भी वि स 1844 (सन 1787) को परलोकगामी जा बसे। उनके पश्चात् गजसिंह के

1 सन् 1836 वर्ष तक 1701 भाद्रपदमासे मुक्ले तिथी दितायायाँ रविवार घ० 5। 29 हस्तनक्षत्रे घ० 9/46 भूमयाग (मे) घ० 2/8 बालवर्ण ए० पचागिमुद्धी महाराजा-धिराज श्रीगजसिंहजी—तत्पत्र महाराज श्री छत्रसिंहजी थी परमेश्वर परम भक्ति ससर्वविषय परमधाममुक्तिपद प्राप्त । (स्मारक का सख)

मुल्तानसिंह अजयमिह महोक्मसिंह देवोसिंह और कुमालसिंह आदि सब पुत्र बाहर चले गये, क्योंकि राजा के एक कुंवर और बकरी के दो बच्चे तक ही ठीक हैं, अधिक होन पर निराश्रय तथा अपने बलबूत पर जीना पड़ता है।

गजसिंहजी के पुत्र राजसिंह तथा पौत्र प्रतापसिंह भी छ माह के अंदर ही स्वयं मिथार गये, तब उनके पुत्र सूरतसिंहजी राजा बने।

वैसे तो 'दयालदास की रयात', वे 'मुहताबा का लिप्ता देश दण', कंष्टेन पाठलेट के 'गजेटियर आब रि बीकानेर स्टेट' भूशी साहनलाल कृत 'तवारिख राज्य श्री बीकानेर' श्रीराममीर भूशी की ताजीमी गजबीज, ठाकुरम एण्ड 'ववासवाल्स आब बीकानेर' और सिस्ट ऑफ रूलिंग प्रिंसेज बीकस एण्ड बीटिंग परमानजिज मे दिव हवालाता क अनुसार छोटे बड़ा की कई भ्रांतियाँ हैं। रि तु बीकानेर राज्य की रयाता क अनुसार छत्रसिंह सूरतसिंह की अपेक्षा आयु मे जेष्ठ था। आचार्य आरयान कल्पद्रुम" आदि कतिपय रयातो के आधार पर डा० जोषा न भी सूरतसिंहजी से छत्रसिंह को बड़ा बताया है। इसलिये उनका कवर दलेलसिंह गद्दी का वास्तविक अधिकारी था। मगर उसकी अस्पष्टता को देखते हुए सूरतसिंहजी ही गजा बनाये गए। उस समय बीकानेर राज्य की स्थिति अच्छी नहीं थी। पड़ोसी राजा भी दुबलता का दृश्य देखते हुए छपर लपकने लगे थे। मरहटे ठग पिण्डारी तथा कुल्ल विरोधी सरदार भी भेद बताते हुए स्वच्छदता का व्यवहार करने लगे थे। इसलिये राज्य के शासक सरदारों ने सूरतसिंह को राज्य गद्दी पर बिठाना उचित समझा। फिर तो सरदार कमचारी और पौत्र वगैरह सूरतसिंह के साथ ही गये। तब दलेलसिंह ने अपनी मातृ शिक्षानुसार महाराजा सूरतसिंह के प्रति अत्यंत आदरभाव ही बनाए रखा। सूरतसिंहजी न भी कुनता पूवक प्रिय दलेलसिंह की बड़ी वद्व की और बीकानेर दुग म उनके रत्न के लिए एक अलग भवन बना दिया था। राज्य सिंहासन के प्रति गाढी भक्ति देखकर बीकानेर महाराजा ने अजीज दलेलसिंहजी के लिए हाथ खच बाबत छगड जा उनके पिता छत्रसिंहजी का नाम पर रमाया गया था कुछ और गावों से मिलाकर यह ठिकाना महाराजा की उपाधि सेना अता कर दिया।

श्री दलेलसिंह का वि० स० 1895 बाला मुदी 7 (1 मई 1838 ई०) को परलाक-घाम हुआ गया। तब प्रचलित राज्य रीति अनुसार उनके जेष्ठ पुत्र सवितसिंह पिता की संपत्ति के स्वामी हुए। क्योंकि मदनसिंह खड्गसिंह और सुभाषसिंह उनसे छाटे थे तथा सदमणसिंह पहले ही चल बसे थे। वि० स० 1905 के फाल्गुन मास (फरवरी 1849) में श्री गजसिंह का देहावसान होने पर उनके मात्र एक पुत्र श्री लालसिंहजी उत्तराधिकारी बने। लालसिंह ने जम से बीकानेर नरेश श्री रत्नसिंह और बाद में सरदारसिंह जी, दोनों से बड़ा राज्य प्रेम बना रखा था। बीकानेर महाराजा सरदारसिंह क केवल एक ही पुत्र तम्नसिंह था जो वि० स० 1924 पौष सुदी 9 (4 जनवरी 1868) का पगलाक गमन कर गया। तब उक्त महाराजा सरदारसिंह को अपने डायोनी वाले राजकी श्रीनारसिंहजी की सत्ता पर ही मन रचना पटा।

छत्रगढाधीश महाराजा लालसिंह (ज० वि० स० 1888 अगहन शुक्ला 12 दिस 1831 ई०) राजा और प्रजा के बड़े गुणवि तक थे, इसलिये राजा प्रजा दोनों ही उन पर

गहरी श्रद्धा मेहरवानी रहती थी। लालमिह के तीन पुत्र गुलाममिह, डूगरसिंह और गमामिह हुए। गुलाममिह बाल्यावस्था में ही स्वर्ग सिंघार गये, किन्तु डूगरसिंह की शिक्षा-दीक्षा बीकानेर महाराजा सरदारसिंह द्वारा गोद लेने के दम से हुई। सरदारसिंह का देहावसान वि० सं० 1929 (सन 1872 ई०) में हो गया। तब उनकी राजमहिषी और सब प्रमुख सरदार वय तथा अग्रज मरकार ने पूरी जानकारी लेकर डूगरमिह को नरेश सरदारसिंह का उत्तराधिकारी बना दिया।

डूगरसिंह का गेहूँवा रंग सुन्दर चेहरा और शरीर लम्बा तथा बलिष्ठ था। वे निराला लगाने में सिद्धहस्त और अश्वारोहण में निपुण थे। महाराजा डूगरसिंह दृढ-चित्त, माहसी, 'यायी' विचारशील, ईश्वरभक्त और निराभिमानी शासक थे। कष्टव्य-परायणता, सहानुभूति आदि गुणों के कारण बीकानेर राज्य के इतिहास में उसका नाम चिर स्मरणीय रहेगा। वह उदार गुणग्राहक शासन सुधारक, विद्यानुरागी राजा था। महाराजा सूरतसिंह रतनसिंह और सरदारसिंह के समय से ही राज्य ऋण ग्रस्त और सजाना लासी था। डूगरसिंह ने पुराना सब ऋण चुकाकर राज्य के बम्ब धो बढ़ाया। शाखा रुपये इमारतों, देव स्थानों, यात्रा तथा अ्य कार्यों में व्यय करने पर भी परलोक-वास के समय उसने पर्याप्त निजी धन छोड़ा था, जिससे राज्य का रेलवे आदि के कार्यों में बड़ी सहायता मिली। पन्द्रह वर्ष राज्य करने के बाद वि० सं० 1944 (सन 1887 ई०) में महाराजा डूगरसिंह का नि० मतान स्वगमन हो गया। तब डयोडी वाले राजवी लालसिंह के द्वितीय पुत्र एव इनके अपने भाई गगामिहजी (जन्म वि० सं० 1937 आश्विन सुदी 10 15 अक्टूबर 1880) का बीकानेर राज्य सिंहासन पर 31 अगस्त 1887 ई० को राज-तिलक हुआ। गगामिह जी को सिंहासनालङ्कृत हुए सत्रह दिन ही हुए थे कि उनके पिता पद्मगण महाराज लालमिह जी का 56 वर्ष की उम्र में परलोकवास हो गया। परन्तु बालक महाराजा ने धैर्य रखकर राज्य काय में किसी प्रकार की नुटित न आने दी और शासन काय सुचारु रूप से होता रहा। महाराजा की छोटी आयु और प्रत्यक्ष अभिभावक के अभाव में शासन काय रीजेंसी कौंसिल द्वारा हीना निश्चित हुआ। राज कौंसिल, रीजेंसी कौंसिल के रूप में परिवर्तित कर दी गई। आगे चलकर रीजेंसी कौंसिल में कई परिवर्तन हुए तथा कौंसिल द्वारा राज्य में अनेक सुधार काय किए गए। वि० सं० 1946 (ई० सं० 1889) से वि० सं० 1951 (ई० सं० 1894) तक महाराजा गगामिह ने मेयो कॉलेज में रहकर शिक्षा प्राप्त की, जिससे शासन काय का शीघ्र ही पर्याप्त अनुभव हो गया। वि० सं० 1955 (ई० सं० 1898) में महाराजा ने देवली की छावनी में रहकर सैनिक शिक्षा प्राप्त की। इसी वर्ष इनकी आयु 18 वर्ष की होने पर राजपूताना के एजेन्ट गवर्नर-जनरल सर आर्थर माटिहिल ने बीकानेर में अग्रजों सरकार की तरफ से इनका मागशीप सुदि 3 (दिनांक 16 दिसम्बर) को एक बड़े दरबार में बीकानेर राज्य का संपूर्ण अधिकार सौंप दिया। इस अवसर पर महाराजा गगामिह ने अपनी भावी शासन-नीति प्रकट की। वि० सं० 1956 में बीकानेर राज्य में जीपण अकान पड़ा तथा उसी वर्ष विधुविज्ञा (हैज) की मयक 'याधि' ने भी बड़े वेग से आक्रमण कर दिया। महाराजा गगामिह ने उस समय जिम नत्परता से सबन दोना सबटा का मामना किया, उसकी मयक बड़ी प्रशंसा हुई।

महाराजा गगामिह का शिक्षानुराग प्रशमनीय था। इनके समय में शिक्षा की बड़ी

उन्नति हुई। चिकित्सा के क्षेत्र में भी बहुत विकास हुआ। रेल मार और डाक के महत्त्वों का विस्तार किया गया तथा सड़कों द्वारा गमनागमन की सुविधाएँ दूर की गईं। वि. स. 1982 पीप बदी 5 (ता० 5 दिसम्बर 1925 ई०) का बीकानेर राज्य की सीमा में महाराजा ने गमनहर्ष लाने का फैलायास करने बहुत बड़ा व्यय साध्य काय किया। ये बड़े उदारचिन्त, दण्डप्रतिष्ठ एवं सस्त्र तथा अश्व संचालन आदि क्षत्रियाचित गुणा स सम्पन्न थे। इनको स्वदेश और निज धर्म पर पूर्ण श्रद्धा थी। राज्य में प्रचलित कुुरीतियों को मिटाने में ये सत्त्व प्रयत्नशील रहे। महाराजा दण्डनी और निर्भीक व्यक्ति थे। लोक हितकारी कार्यों कला कौशल और औद्योगिक उन्नति का तरफ इनकी गहरी रुचि थी। उनके कठोर परिश्रम और बुद्धिमत्तापूर्ण शासन प्रणाली से राज्य की वार्षिक आय एक करोड़ तत्तीस लाख रुपये तक पहुँच गई थी तथा राज्य कोष घन में परिपूर्ण था। महा० के 50 वर्ष के शासन काल में बीकानेर राज्य उन्नति के चरम शिखर पर पहुँच गया।

छत्रगढ़ के महाराजा लालसिंह के दानो पुत्र (महा० डूंगरसिंह और गंगासिंह) गोद चले गये, इसलिए छत्रगढ़ का कोई वारिस नहीं रहा। उस ठिकान को सही सलामत रखने के लिए लालसिंह जी की धर्मपत्नी चन्द्रावत (जा तत्कालीन बीकानेर नरेश की समी माता थी) के स्नेहाग्रहवशात् महाराजा सर गंगासिंहजी ने अपने छोटे महा० कुमार विजयसिंह को (जिसका ज. म. वि० स० 1966 चत्र पुवला 8 दिनांक 29 मार्च 1909 ई० को हुआ था) उसी साल महा० लालसिंह के नाम पर माता चन्द्रावत का गोद (दत्तक) दे दिया। चन्द्रावत अपनी अंतिम अभिलाषा सफल देखकर वि. स. 1966 मार्ग शीप सुदी 1 (ता० 13 दिसम्बर 1909 ई०) को परलोकगमन कर गईं। श्री गंगासिंह को इसका शोक हुआ और राज्य के मुखिया लोग उनसे सवेदनापूर्वक मिले। सम्राट् जॉर्ज पञ्चम तक ने (जा उस समय युवराज था) सवेदना पत्रिका भेजी थी।

श्री ओम्पा ने बीकानेर राज्य के इतिहास के दूसरे भाग के 11वें अध्याय में लिखा है कि स्व० महा० डूंगरसिंह के समय में महा० लालसिंह (जा छत्रगढ़ जागीर से उ. ही के पिता थे) की जागीर आदि में बढ़ि हो गई थी, परन्तु फिर भी वह उनके पद के योग्य नहीं थी। अतः एव श्री गंगासिंह जी ने महा० कुमार विजयसिंह के पद के योग्य तत्कालीन लगभग एक लाख रुपये वार्षिक आय की जागीर बढ़ि कर दी जिसमें अनूपगढ़ मुख्य रहा। सम्भवतः कालू भा इसी समय छत्रगढ़ अधीनस्थ हुआ था। वहाँ का स्वामी श्री विजयसिंह अनूपगढ़ का महाराजा कहलाया तथा बीकानेर में लालगढ़ के महलों के समीप ही विजयभवन नामक उनका नूँ दर महल बना।

जूनियर महा० कुमार विजयसिंह जा बड़े पितृ भक्त, दण्ड चिन्त काय-कुशल और होनहार थे। वे राज्य के गाढ़ी चमक को छोटी उम्र तक ही भोग सके। विजयसिंह बड़े शासकीय कुशल नप थे। वे उदात्त हृदया थे, पर नीति व काय पर कठोर भी कम नहीं थे। इसलिए इनके पास रहने वाले व्यक्ति बड़े सावधान होकर रहते थे। इनके स्वभाव पर ये कहावत चल गई थी कि— बिसा को अच्छा खाना पीना व भ्रमण करना हो तो गंगासिंह जी के पास रहो और बफित्री बरारामदारी चाहने वाले व्यक्ति को श्री गानू ल सिंह की नौकरी में रहना चाहिए। किसी को मार या जूत खाने हाँ तो विजयसिंह के पास जाकर रहो। विजयसिंह हर सात (एक दो साल) वार्षिक के महोत्सव में गाँव कालू के तालाबों वाले मदान में कुरजों की भृगया (शिकार) के लिए बापडियाँ बनवाते थे।

ठिनाने से आत्मी भेजकर ताल में बैठती और उड़ती उतरती कुरजा की राजाना गिनती करवाकर मगवाते थे। तत्काल अफवाह हो जाती थी कि विजयसिंहजी शिकार करने आयेगे। पर आखिरी बार बि स 1988 के कांतिव शुक्ल पक्ष में रोलस कां द्वारा 'अचानक कुरजा की शिकार घाबत कालू आये। गिहार के लिए लगी हुई मोपड़िया देखी और अनाणा के ताल से ही वापिस चले गये। गांव का बड़ा एवं मध्य देख सुनकर गिहार करने का विचार बदल दिया।¹

महाराज कुमार श्री विजयसिंह बहादुर बि स 1988 माघ सुनी 5 तारीख 11 फरवरी 1932 ई को परलोक सिधार गये। महा गंगासिंह का बड़ा दुख हुआ। वे दो रोज तक खाना खाने थाल नहीं बिराजे। तब महाराज राजा हरिसिंह जो बड़े समझदार एवं बुद्धिमान थे गंगासिंह को सात्वना देकर व सासारिक रास्ते पर लाये थे। तैकि मन का दुख कम करने के लिए महा गंगासिंह ने स्व० महा० कुमार विजयसिंह के नाम पर एक बड़ा हॉस्पिटल बनवाया, जो प्रिंस विजय मेमोरियल हॉस्पिटल (बीकानेर) के नाम में दूर-दूर तक मशहूर है। इसका उद्घाटन बि स 1993 (सन 1937) में उदयपुर में श्री भूपालसिंह के हाथों से हुआ। महाराणा भूपालसिंह की कार हॉस्पिटल से सटकर ठहरी और महाराणा न नय्य स्वर्ण निमित्त ताले खोले। श्री गंगासिंहजी का गला भंग आया। इसी सुमय उदयपुर के महाराजकुमार भगवानसिंह से बीकानेर की भवरा-बाई मुशील कुवरी का सन्ध सुनिश्चित हुआ था।

इस हॉस्पिटल में गंगासिंह जी ने दोनों विभागों के मुख्य द्वारों पर श्री विजय सिंह जी के स्टेच्यु (मूर्तियाँ) लगाकर मतोष प्राप्त किया था। अब इस चिकित्सालय से सम्बद्ध सरदार पटेल मेडिकल कालेज भी चलता है। इस अस्पताल में छनगढ ठिकाने की भी अशत राशि लगी हुई है, अत कालू गांव को भी इसका मव है।

महाराज कुमार विजयसिंह जी के तीन पुत्रियाँ हुई थी, पुत्र नहीं हुआ। इस दगा में गंगासिंह जी ने अपने छोटे पीत्र भवर श्री अमरसिंह (युवराज शाहू लसिंह जी के दूसरे कबर) को श्री विजयसिंह के खोले (दस्तक) नाम कर दिया। विजयसिंह जी की बड़ी लडकी का विवाह वि० स० 2001 में जसपुर (मध्य प्रदेश) महाराज कुमार के साथ सम्पन्न हुआ। तब पट्टे के सारे कमचारिया को विजय भवन से केशरिया साफे और मिष्ठान भिजवाये जो अध्यापक होने के नाते लेखक ने भी प्राप्त किये थे।

अमरसिंह जी का जन्म वि० स० 1982 पीप बदी 11 (ता० 11 12 1925) शुक्रवार का है। वह सुशील, चतुर, मृदुभाषी, हममुख और अच्छे स्वभाव वाले हैं। आपका साहित्य प्रेम सराहनीय है जा माता बाघेली के उदर से अवतरित है। लेखक की पुस्तक 'कलायण' पर एक हजार का पुरस्कार देना इसका प्रमाण है। इनके स्वभाव में हास्य एवं विनोद भी मिलते हैं। आपकी धर्म में पूरी रुचि है तथा घुडसवार एवं टेनिंग के भी शौकीन हैं। वि० स० 2000 में श्री शाहू ल सिंह जी के साथ द्वितीय विश्वयुद्ध के मोर्चे पर यूरोप जा आये हैं।

1 उन निता में अपने नये बने भवन में रहने लगे थे। उस समय विजय भवन का मु दरता एवं सजावट की तारीफ होने लगी थी। वक्त की बात एकीकरण के बाद वही विजय भवन अमरसिंहजी द्वारा सन 1950-51 में राज्य सरकार को विमय कर दिया गया।

गंगासिंह जी ने मवर श्री अमरसिंह जी बीकानेर में ही रखकर करणीसिंह जी के साथ लघु प्रतिष्ठित विद्वान डॉ० दशरथ गमा एवं ठाकुर रामसिंह जी जैसे योग्य शिक्षकों के द्वारा शिक्षा दिलवाई थी। इसलिए इनमें किसी प्रकार का राजपूती दुश्मन नहीं पनपे। यं गिना भ उनति कग्के गडे ठाठ बाट स चालू पधार। सप्ताह भर पहले गांव का बाजार घरो एवं दुकानों पर मक्के की तथा रंगीन पोताई आरम्भ हो गई। लूनक नमर से चालू तक का रास्ता साफ करवाया गया था। दस दिन पहले ही उक्त रास्ते के दोनों किनारों पर सड़े फोग, चाड़िया एवं बोचे आदि काटकर मांग गुला एवं विस्तृत घना दिया गया और बीच रास्ते के गड्ढे ककर पत्थर तथा बूज भी निकाल कर धरती की समतल व साफ सुथरी बना दी थी। गड के लोग उतावले हो गए। बहुत सारा सामान एकत्रित करते हुए चौधरी कमचारी एवं मुखिये लोग भय तथा हृष विभार, फूटे नहीं समा रहें थे। लेकिन अंग सजावट तथा आरामदायक सारा सामान बीकानेर से राज्य द्वारा सीधा चालू आ गया था।

युवा छतरगढाघोस श्री अमरसिंह जी बहादुर दिनांक 31 3 46 को प्रातः 9 बजे सबप्रथम अपनी गियासत के गांव चालू को देखने आए। तब ठिकाने से राज्य सम्मान आवत चालू में जनमोहक ॥ गेट बीकानेर गवनमेट द्वारा भिजवाय गए। उनको बनाने सजाने वाले मिस्त्री मजदूर भी चार रोज पहले राज्य से आये थे। इनके अलावा कतिपय स्थानीय घनी मानी व्यक्तियों ने अपने अपने माहस्तो में पथक पथक दरवाजे बनवाये थे। सुन्दर सरकारी बड़बाजा स्टाफ (गंगा रिसाले का मजिद बड) भी राज्य की ओर से आया था। गड के कसो के अनिरिक्त अनेक अला अलग कम्प भी लगे थे।

ग्राम प्रवेश के समय बन्दूकें छुड़ाई और खमा लमा की जय ध्वनिमें उमड़ पड़ी। अत्यंत दरवाजे पर भेंट नजराना, आरती तिलक और हार पहनाये गए। प्रथम आगमन पट्टा स्कूल (धर्मशाला भवन) में हुआ। छात्री ने स्वागत गान गाया। हम अध्यापकों (श्री पुष्करदत्त शर्मा नानूराम सस्करी और नाथूराम शर्मा) से हाथ मिलायें बच्चा को सहबू बैटवाय और फिर ठहरने के अने स्थान गड का चले गये। वहां गांव की एकदिल औरतों ने बेहउले (कलंग) बनाय। गीतरणा तथा उत्सर्ग का समायाजन आरम्भ हुए और प्रवचनों की भाग दोड़ में बढ़ि हुई। उनक इ नजामिया पुलिस आफिसरान मल्हूट लिए अंग कमचारियों न सिर मुकाय बड का मधुर ध्वनि न गाव के प्रत्येक घर को रस जाप्लावित कर दिया तथा लागे के तत्प्राप्तियम मन मधुर नाच उठे। सभ्या-सामूहिक सादर भेंट नजराना हुआ।

श्री अमरसिंह जी के साथ उनके ठिकान के तत्कालीन सुपरवाइजर ठा० श्री श्यामनसिंह थे। निजी सचिव ठा० श्री निहालसिंह जी सेंगर, ए० डी० सी० अणदसिंह रामपुरा (चुरू) और एकाउटेन्ट सुब्रह्मण्यम साथ आये थे। विशेष अधिकारोगण एकाउटेन्ट तथा उनके हाजरिय खाने पिलाने, नहलाने और कपड़े जूते आदि पहनाने बात अनेक व्यक्ति थे। रसोइया श्री बंगा महाराज (जो अब बीकानेर में पेड्राल पम्प का मालिक हैं।) उनके साथ था। वह उनके लिए गुष्क फूलके एवं साधारण दाल सब्जी तथा गुद्ध पवित्र एवं विविष्ट शाकाहार भोजन बनाने में नामी रसोइया था।

इस अवसर पर चालू सक्ति के सार चौधरी मुखिये कमचारी एवं आस पान के मांग महानुभाव सह्य नप दशनाथ चालू आकर समायाजन में सम्मिलित हुए थे। गड

के कम्प, चौधरिया के घर और मन्दिर धमाला भी भरी पूरी हो गई थी। तीन दिन तक सामूहिक भोजन में खीर और हनुवे के बड़े बड़े कढ़ाहे तथा जय पदार्थ बनते रह। श्री अमरसिंह जी ने स्थानीय राज्य वमचारियों, सम्म्य नागरिका व जय महामुभावा के बीच पवित्र व साथ उठकर भोजन किया था। दो दिन कालू में ठहरे, प्रजा की दाद परियादे मुना और दिनाक 2 अप्रैल को अपनी प्यारी जनता से विदा मांगी। तब गांव कालू के लोगों ने स्कूल भवा बनवान के लिए द्रव्य एकत्रित करन हेतु श्री अमरसिंह जी का एक रात और ठहराना चाहा, क्योंकि गांव में स्कूल का अपना भवन नहीं था। परंतु साथ जाय हुए मन्नेटरी एवं सुपरवाइजर ने गांव के धनी मानी लोगों के साथ बैठकर तत्काल पन्ध्रस हजार रुपये का चेन्दा एकत्रित कर दिया। श्री अमरसिंह जी व नजरान में आय हुए दस हजार रुपये श्री कन्हलचंद बाथरा कालू के हनपावन सो रुपये तथा सब श्री चबर, डूडानी, नाहटा साठ, गुराजी, ब्राह्मण समाज आदि सज्जना व दो हजार रुपये भी तुरंत इकट्ठे हो गए। इन पवित्या के लेखक की कलम से उक्त चन्दे राशि की लिस्ट बनी और लेखक द्वारा श्री सरस्वती पुस्तकालय में महाराज कुमार श्री अमरसिंह जी को "बलायण" नाम की एक पुस्तक भी भेंट की गई, जिसकी पाहुल्लिपि के जाते समय अपने माथ से गए। उस अगले वर्ष डॉ० दगर्थ शर्मा एवं प्रोफेसर श्री नरोत्तमदास जी स्वामी की सम्मति से प्रकाशित करा दी गई।

इस पट्टे का प्राचीन कालू—कालू पर महाराजा गंगासिंह जी बहादुर की नजर अच्छी तरह अवस्थित हुई और उनकी दृष्टि इस गांव पर पड़ गई थी। महाराजा गंगा सिंह बड़े बुद्धिमान एवं दूरदर्शी थे, इसलिए कालू के असाधारण महत्व पर उनका ध्यान जाना स्वाभाविक था। उन्होंने इस गांव को वि० सं० 1966 में अपने प्रिय शिषु महाराज कुमार विजय सिंह की ईस्टेट में चयन करके पृथक प्रशासन में एक सकल कार्यालय के अधिकार उपलब्ध करवा दिये और गांव के किनारे एक रमणीक टीले पर गढ़ बनवा दिया था।

श्री गंगामिह जी द्वारा कालू के अधीन चार तहसीलों व 18 ग्राम छाने गए थे, जिनकी रकम, लगान तथा सागी-याय व्यवस्था कालू व गढ़ से ही होती थी। शेष बीकानेर राज्य की सारी तहसीलों में इस समेत इनके छोटे बड़े 6 सकल और 84 ग्राम दिये हुए थे। कालू का अभिनव अध्याय यही से आरम्भ हुआ है। इस अवधि में कालू की बड़ी उन्नति हुई। आज के इस सुन्दर सुमत्त गत दिग्वादे देने वाले कस्बे की सुरचना उसी समय से आरम्भ हुई है। यहां व गढ़ में पट्टे के सुनिश्चित गिरदावर पटवारी और हवलदार आदि वमचारी रहने लगे थे। तब उन्होंने कालू गांव के एक देवी प्रकाश वाले अथ विश्वास का समाप्त करके पक्के मकान बनाने में बड़ा योग्य सुझाव दिया, जिससे गांव के जावास निर्माण इतिहास में आश्चर्य जनक परिवर्तन हुआ।

पहले पहल जूनियर महा० कुमार श्री विजयसिंह जी बहादुर की नाबालगी के समय इस गढ़ के बड़े आफिसर श्री अमरनाथ जी गिरदावर को अटलाधिकार देकर कालू भेजा गया था। उन्होंने यहां कालिका जी की मायता देखी और मन्दिर जाकर दर्शन किया। उस समय यहाँ के लोग बमाल, आसामादि जानें जग गए थे और अपनी विलक्षण बुद्धि से नय-नय व्यवसायों द्वारा धन कमाकर लाने लगे थे। 'वर्णिक का रोड (पत्थर) में राजपूत का घोड़ा और जाट का लपौड़ा (फिमाद) में धन लगता है' कि

बहावत के अनुसार बणिये लाभ अपने मकानों को पक्का (घूने में) बनवाना चाहते थे। मगर मकानों पर चूना फिरवाने के लिए ग्राम देवी कालिका जी ने मनाही कर रखी थी। क्योंकि गाँव के बीच पनेचंद डागा के मकान (जो आजकल नयूमेन पंगतिया का है) की जगह पहले एक साल (मकान) के किसी ने चूना लगवा लिया था। इस काय बाबत कारीगर की कम जानकारी के लिए वह मकान अपनी आद्रता के कारण उड़ पड़ा और देवी का प्रकोप प्रकट हो गया। बास जाणियान की बुढ़िया के मुँह देवी का उच्चारण हुआ कि—'मेरे मंदिर के सिवाय इस गांव में कोई भी आदमी अपना मकान पक्का नहीं बना सकता।' यह बात गाँव के गिरदावर थी अमरनाथ तक पहुँच गई। गिरदावर गाँव बरनाला जिला हिमालय का रहने वाला आयसमाजी पंडित था, उस पंडी बुढ़िया को गढ़ बुलाकर "बुढ़िया व पक्के मकान न बनाने के कालिका के नाम से परचे प्रसारित करने के आरोप से लेकर खूब डाटा फटकारा।' और कहा कि— "आइंदा ऐसी असत्य अफवाह कभी गांव में फला दी तो तुम्हें पूरा दोषी जानकर तुरंत ठिकाना उत्तरगढ़ से बाहर करने की कायबाही कर दी जायेगी।

उक्त घटना के बाद तत्समय इस विषय में देवी का परचा फिर कभी किसी के मुँह नहीं हुआ और गाँव कालू में काफी पक्के मकान मंदिर घमसाना तथा हवेलियाँ बनने लगी। पहले देवी का भवन ही गाँव में दशनीय व पक्का मकान था। फिर तो उसने लगकर ही तत्काल ब्रह्माणी देवी का मंदिर और अग्रे भगवान का मंदिर राम देव जी, शिवजी एवं गुराजी की दो सालों (मकान) आदि छोटे मोटे अनेक नावजनिक पक्के स्थान बन गये थे। पास में एक त्रिषाट बना बड़ा तालाब भी पक्का बनाया गया।¹

कालू के गढ़ में पहले हर वक्त एक दो सिपाही तनात रहते थे। यदि कभी गाँव के किसी आदमी को दूध की गिरावट पर गिरदावर द्वारा गढ़ बुला लिया जाता तो उन व्यक्ति के होश उड़ जाया करते थे। काट के नाम से बड़े बड़ों के घरों (पर) कापन लगते थे। मांग में मिलने वाले सब लोग आश्चर्य चकित हुए उसमें पूछते थे— गढ़ क्यों बुलाया है?" गढ़ के डर और शिखर की चढ़ाई से तो प्रत्येक "यक्ति का दम फूल जाया करता था। प्राल में पर घरते ही वह अपराधी आदमी तुरंत माफी माँग लिया करता अथवा हाँ भर लिया करता था। कसूर बक्सा नहीं जाता, सखपति "यक्ति सब के दम ले लिए (अपमानित कर दिए) जाते थे। चौधरी चौकीदार चपरासी आदि लोगों अफमग की हाँ में हाँ मिलाते वाला का जमघट भी वहाँ सब मौजूद रहता था। वे भी बुलाए हुए आदमी को शांति दान करन में पूरा सहयोग करते और फसन के बाद वे वहाँ के अपन काम उसको सौंप दिया करते थे। किसी की भी बदनीयत उल्लेख के लिए कालू और उसके आस पास के गाँवों में बहावत चल गई थी कि— 'छत्रगढ़' वाले जूते याद नहीं है क्या? दंड जुर्माना बेगार, बन्नेवस्त आदि से ठिकाना छत्रगढ़ का पूरा शासन चलता था।

गाँव वाले अपने विवाह आदियों, ओसरा मोसरा अथ उत्सवा आदि के भोज्य अवसरों पर गढ़ का पातिया (जीमणवार) करवाया करते थे। तब भी वे हज़ूरिंग गढ़

1 अब यहाँ हनुमानजी तथा हरिरामजी के भवन भी बन गए हैं। उत्तरगढ़ यह गाँव, कच्चा और नगर का रूप लेता जा रहा है।

वालों के साथ रहते थे और गढ़ यदि थानियाँ (भोजन भेंट) भिजवाई जाती तो उसमें भी इन लोगों की हिंसा पाँती रहती थी। वैसे विवाहोत्सव पर गाँव का कार्ड भी व्यक्ति अपनी हैसियत के अनुसार घर के लिए सजाई समेत छोड़ी गढ़ से ही मगवाया करता था। घर विवाहित होकर पहले गढ़ जाता। इन्हीं बहुत सी बातों के लिए गढ़ का पूरा सम्मान था। कोई कमचारी कभी कमर गाँव में अपना आगमन करता तो सब लोग उससे जयरामजी की बग्न में नुक्ते हुए से मिलते थे। गढ़ की धाक थी, पट्टे का हादिक गौरव तथा गुमान भी था। चार जार का वसर होना यहाँ बड़ा मुश्किल था। ऐसी घटनाएँ अप्रत्याशित ही हुआ करती थी। कालू का गया हुआ धन ढाकुआ से भी राज्य प्रबन्ध पड़ता तो सब वापिस मगवा लिया जाता करता था।

कालू सक्किल की तरह ही गाँव करवाना (तहसील भादरा), श्री विजय नगर (तह०—अनूपगढ़), छतरगढ़ (तह०—बीकानेर), श्री विजय भवन (तह०—बीकानेर), लालगढ़ (तहसील-मोवा मंडो) धरहर गाँव भी पट्टे के बड़े सक्किल थे। प्रत्येक के नीचे लगभग 16 ग्राम लगाए हुए थे। छतरगढ़ के नीचे 22 ग्राम और कालू के 18 गाँव थे। जागीर महकम का नाम छतरगढ़ चलता रहा। मगर विजयसिंह जी के पट्टे में कालू ही मायता प्राप्त बड़ा गाँव था। पट्टायत श्री विजयसिंह जूनियर महाराज कुमार बीकानेर के नाम पर महाराजा था मगासिंह साहब ने मा बाता सिंह की शिवपुरी और बुगिया बलौचिया की कीमत लगी लालसा की जमीन में श्री विजयनगर नाम का गाँव बसा कर भगनहर की जी बी टेल गाला द्वारा सुरत पानी पहुँचा दिया था। वहाँ से अनूप गढ़ के निकट की कामयाब धरती वाले अनोखे उपनिवेश विस्तृत क्षेत्र घडसाना छतरगढ़ और उसके अधीनस्थ मुत्ताई, राममल वाली, करणीसर ससार देगर, मम्मेंवाला, गोमे वाली, जंगडो फूलेजी, महादेव वाली देसली, हिसाम्मकी आदि पुराने वास श्री विजयसिंह जी के पट्टे में ही थे। सरावगियो वाला लालगढ़, ऊपनी कल्याणसर बापक राजेडू, मडसर गाडवाला, अवम्मासर कनरियासर, पेमासर नौरगदेशर प्रभृति गाँव श्री विजयसिंह जी के पट्टे धरित अधीनस्थ सम्मिलित रहे। यह गडरिय की गल नही, एक सक्किल, कालू की देग रेल अधीनस्थ गाँवों के पुराने नक्शे सहित एतिहासिक नाम दृश्य हैं।

छतरगढ़ इस्टेट के एक सक्किल कालू के देहात 18 गाँवों का विवरण—

1 तहसील नूनकरनगर में श्री महाराज कुमार साहब के पट्टे के दो (2) गाँव शेरपुरा और कालू।

2 तहसील या डूंगरगढ़ में पट्टे के पाँच (5) ग्राम, लोडेरा, गुमाईसर, उदरासर छाटा, बडा, (बास दो) और बिम्बा।

3 तहसील मुजानगढ़ में पट्टे का एक (1) ग्राम जेतासर।

4 तहसील सरदारगढ़ में पट्टे के दस (10) ग्राम, बुननसर रगाईसर मेहरासर, भादासर (छाटा, बडा दो बास) जेसगसर ढाणी पाचेरी, मिर्गिचिया खेजडा (दो बास)।

कालू सक्किल के गाँवों की आपसी दूरी—शेरपुरा अपने सक्किल कालू से 32 मील

1 मुत्ताई आदि 34 गाँव फौज की छावनी बनाने बावत खाली करवाये जा रहे हैं।

बहावत के अनुसार बणिये लोग अपने मकानों को पक्का (चूने में) बनवाना चाहते थे। मगर मकानों पर चूना फिरवाने के लिए ग्राम देवी कासिका जी ने मनाही कर रखी थी। क्योंकि गाँव के बीच पंचेद डागा के मकान (जो आजकल नथूमन पालिया का है) की जगह पहले एक साल (मकान) के किमी ने चूना लगवा लिया था। इस कार्य काबन कारीगर की कम जानकारी के लिए बड़ मकान अपनी आदतों के कारण डह पड़ा और देवी का प्रकोप प्रकट हो गया। बास जाणियान की बुढ़िया व मुँह देवी का सञ्चारण हुआ कि— 'मेरे मंदिर के मिवाय इस गाँव में कोई भी आत्मी अपना मकान पक्का नहीं बना सकता।' यह बात गाँव के गिरदावर श्री अमरनाथ तक पहुँच गई। गिरदावर गंधि बरनाला जिला हिमालय के रहने वाला जायसमाजी पंडित था, उस पंडी धुनिया का गन् बुलाकर 'बुढ़िया व पक्के मकान न बनाने के कासिका के नाम से परचे प्रसारित करने के आरोप में लेकर खून डौटा फटकारा।' और कहा कि— 'आइदा ऐसी असत्य अफवाह बनी गाँव में फला दी तो तुम्हें पूरा दोषी जानकर तुरंत ठिपाना छत्रगढ़ से बाहर करने की कार्यवाही कर दी जायेगी।

उक्त घटना के बाद तत्समय इस विषय में देवी का पन्था फिर कभी किसी के मुँह नहीं हुआ और गाँव वालों में काफी पक्के मकान मंदिर धर्मशाला तथा हवेलियाँ बनने लगीं। पहले देवी का भवन ही गाँव में दशनीय व पक्का मकान था। फिर ता उसमें लगकर ही तत्काल ब्रह्माणी देवी का मंदिर और आगे भगवान का मंदिर राम देव जी, शिवजी एवं गुराजी की दो सालों (मकान) आदि छोटे मोटे आँक सावजनिक पक्के स्थान बन गये थे। पास में एक निघाट वाला बड़ा तालाब भी पक्का बनाया गया।¹

बालू के गड में पहले हर वक्त एक दो सिपाही तनात रहते थे। यदि कभी गाँव के किसी आदमी को दुमर की शिकायत पर गिरदावर द्वारा गड बुलवा लिया जाता तो, उस व्यक्ति के होश उठ जाया करते थे। कोट के नाम से बड़े बड़े के घराने (पर) काफ़े लगते थे। माग में मिलने वाले सब लोग आश्चर्य चकित हुए उमने पूछते थे— 'गड क्या बुलाया है?' गड के डर और शिवर की चढाई से तो प्रत्येक व्यक्ति का दम फूल जाया करता था। प्राल में पग भरते ही वह अपराधी आदमी तुरंत नाफी माँग लिया करता अथवा हा भर लिया करता था। कन्नू बक्सा नहीं जाता, सख्तपति 'यक्ति तक के बल्ले से लिए (अपमानित पर दिए) जाते थे। चौधरी, चौकीदार खपगामी आदि लोगो, अफमरा की हाँ में हाँ मिलाने वाला का जमघट भी वहाँ सदब भोजूद रहता था। वे भी बुलाए हुए आदमी को सम्मिदा करन में पूरा सहयोग करते और फसन के बाद वे वहाँ के अपराध काम उसको सौंप दिया करते थे। किसी की भी बदनीयत बालने के लिए बालू और उसके आस पास के गाँवों में कहावत चल गई थी कि— 'छत्रगढ़ वाले जूते याद नहीं है क्या?' दंड जुमाना, बेगार, नदोवस्त आदि से ठिकाना छत्रगढ़ का पूरा शासन चलता था।

गाँव वाले अपने विवाह शादियों, ओसरो मोसरो व य उत्सवा आदि के भोज्य अवसरा पर गड का पातिया (जीमणवार) करवाया करते थे। तब भी वे हज़ूरिण गड

1 अब यहाँ नथुमानजी तथा हरिरामजी के भवन भी बन गए हैं। उत्तगानर यह गाँव, कस्बा और नगर का रूप देता जा रहा है।

वालों के साथ रहते थे और गड यदि थानियाँ (भोजन भेंट) भिजवाई जाती तो उसमें भी इन लोगो की हिस्सा पाँती रहती थी। वैसे विवाहोत्सव पर गाँव का बाढ़ भी व्यक्ति अपनी हैसियत के अनुसार वर के लिए सजाई समेत घोड़ी गड से ही मगवाया करता था। वर विवाहित होकर पहले गड जाता। इहीं बहुत सी बाता के लिए गड का पूरा सम्मान था। कोई कमचारी कभी कभार गाँव में अपना आगमन करता तो सब लोग उससे जयरामजी की जगह में झुकते हुए से मिलते थे। गड की घाव पी, पट्टे का हादिक गौरव तथा गुमान भी था। चोर चार का बसर हाना यहाँ बड़ा मुश्किल था। ऐसी घटनाएँ अप्रत्याशित ही हुआ करती थी। कालू का गया हुआ धन डाकुआ से भी राज्य प्रबंध पडताले में वापिस भगवा लिया जाया करता था।

कालू सक्किल की तरह ही गाँव बह्याना (तहसील भादरा), श्री विजय नगर (तह०—अनूपगड), छतरगड (तह०—बीकानेर), श्री विजय भवन (तह०—बीकानेर), लालगड (तहसील-नोखा मंडी) वगैरह गाँव भी पट्टे के बड़े सक्किल थे। प्रत्येक के नीचे लगभग 16 ग्राम लगाए हुए थे। छतरगड के नीचे 22 ग्राम और कालू के 18 गाँव थे। जागीर महकमे का नाम छतरगड बसता रहा। मगर विजयसिंह जी के पट्टे में कालू ही मायता प्राप्त बड़ा गाँव था। पट्टायत श्री विजयसिंह जूनियर महाराज कुमार बीकानेर के नाम पर महाराजा श्री गंगासिंह साहब ने मा घाता सिंह की गिबपुरी और बुगिया बलोचिया की कीमतन लगी छालसा की जमीन में श्री विजयनगर नाम का गाँव बसा कर मगनहर की जी डी टेल साखा द्वारा सुरत पानी पहुँचा दिया था। वहाँ से अनूप गड के निकट की कामवाव घरती वाले अनोखे उपनिवेश विस्तृत क्षेत्र घटसाना, छतरगड और उसके अधीनस्थ मुटलाई, रावमल बानी बरणीसर, ससार देगर मम्मैवाला गोमे वाली, जामंडो फूलेजी, महादेव वाली, देसली, हिसाम्मकी आदि पुरान वास श्री विजयसिंह जी के पट्टे में ही थे। सरावगियो वाला लालगड, ऊपनी बह्याणसर बापक, राजेडू, मडमर गान्वाला, अबलासर, बनरियासर, पेमासर, नीरगदेसर प्रभृति गाँव श्री विजयसिंह जी के पट्टे परानित अधीनस्थ सम्मिलित रहे। यह गडरिय की गल्ल नहीं, एक सक्किल कालू की देल रेख अधीनस्थ गाँवों के पुरान नक्शे सहित ऐतिहासिक नाम दृष्टव्य हैं।

छतरगड इस्टेट के एक सक्किल कालू के देहात 18 गाँवों का विवरण—

1 तहसील नूनरनरनर में श्री महाराज कुमार साहब के पट्टे के दो (2) गाँव शेरपुरा और कालू।

2 तहसील श्री ह्यरगड में पट्टे के पाँच (5) ग्राम, लोडेरा, गुसाईसर उदरासर छोटा बडा, (गस दो) और बिम्बा।

3 तहसील सुजानगड में पट्टे का एक (1) ग्राम जेतासर।

4 तहसील सरदारगड में पट्टे के दस (10) ग्राम बुनसर, रगाईसर, मेहरासर, भादासर (छाटा बडा दो वास) जेसगसर, डाणी पाचेरी, मिडगिचिया, खेजडा (दो वास)।

कालू सक्किल के गाँवों की आपसी दूरी—शेरपुरा अपन सक्किल कालू से 32 माल

1 मुटलाई आदि 34 गाँव पौज की छावनी बनाने वाकत लाली करवाये जा रहे हैं।

उत्तर में और तहसील लूनकरनसर से कालू 12 मील दक्षिण की तरफ बच्चे रास्ते रहे हैं। तहसील श्री डूंगरगढ़ से गुसाईसर 15 मील और वहाँ से लोडेरा 3 मील तथा लोडेरा से पट्टा सक्लि कालू 8 मील, ये सब श्री डूंगरगढ़ से उत्तर की तरफ रहते हैं। श्री डूंगरगढ़ से उदारासर के दोनों गांव 16 मील हैं गुसाईसर से 10 मील, बिग्गा से 16 मील और भादासर से भी 16 मील हैं। डूंगरगढ़ से बिग्गा केवल 10 मील ही है। बिग्गा में तहसील सुजानगढ़ का पुराना हमारा जेठासर 24 मील और भादासर से 32 मील पड़ता है। सरदार शहर से भादासर के हर दोनों बांस 16 मील रगाईसर से 18 मील और रगाईसर से मेहरासर 6 मील, मेहरासर से गिडमिचिया 10 मील और उससे बुकनसर 8 मील तथा खेजडा के दानो बांस 10 मील हैं। खेजडा से ठाणी पाखेरी 11 मील है और वहाँ से जेसगसर 10 मील तथा सरदारशहर भी 10 मील है। गिडमिचिया सरदार शहर से सिर्फ 6 मील है। कालू से रगाईसर पूर्व में (अपने पट्टे का गाँव) 24 मील रहता है और रगाईसर से बुकनसर 20 मील है। इस तरह से जूनियर महाराजकुमार श्री विजयसिंह जी ने पट्टे में कालू के अधीनस्थ राज्य की केवल चार तहसीलों के 18 अनोखे गाँव छंटकर आये थे। इसी भाँति से आठो सक्लिो मल्लासे के खूबसूरत चुनिंदे कुछ बड़े और छोटे चौरासी (84) ग्राम महाराजा माहब ने अपन लाडेसर अजीज जूनियर महाराजकुमार को गद्दी का हकदार न होने के कारण परवरिश और प्यार के नाते पृथक् इस्टेट बनाकर अता फरमाय थे।

महाराजकुमार विजयसिंहजी पर गंगामिहजी का अत्याधिक प्यार था। उनकी असामयिक मृत्यु से महा० का मन भुरझा सा गया। वे हर समय विजयसिंह के नाम का उल्लेख देखने के लिए इच्छित मिल रहते थे। इस कारुणिक प्रसंग पर हर समय महाजन राजा हरिमिह ने मलाह होनी रहनी थी। बि स 1990 (ई० सन् 1933) में हरिमिह महाजन का नि मतान देहा त हो गया। महाजन बीकानेर राज्य के चार बड़े ठिकानों में (जो सिरायन कहलाते थे) सबसे बड़ा ठिकाना था। गंगामिह ने इसे छत्रगढ़ ठिकाने में मिन्नाने का पहले से ही निश्चय कर रखा था। मगर महा हरिमिह के चाचा दूदेर के ठाकुर भूपालमिह उस समय मौजूद थे। इसलिए गंगामिह ने दूदेर वाले बड़ ठाकुर को भी खुश करना चाहा। 57 गांव उस वाले भी छत्रगढ़ के ठिकाने से पृथक् न हो, ऐसा सोचकर भूपालमिह को महाजन के ठिकाने का स्वामी बना दिया। भूपालमिह भी नि मतान और बढ़े था।

ठिकाने छत्रगढ़ का लगभग 50 वर्ष सह्य शासन चलता रहा और मन 1951 के बाद यह एकीकरण की उनकी लू सपटा से खुलसा जाकर राजस्थान राज्य सरकार के शासन में मिल गया। स्टेट से दूसरे मम्बर में एमी बड़ी जागीरें खत्म हुई हैं।

वने बीकानेर राज्य की नली खली मगरा वाली तीन प्रकार की जमीन से ही उक्त पट्टे की भूमि विशेषता रही है। मगर श्री विजयनगर के अलावा पट्टे का अधिक भाग खली प्रदेश से ही सम्बन्धित रहा। श्री विजयनगर, घडसाना की जमीन नाली वाला और शेष सारे गांव घुमावदार घोरा पहाला से घिरे पाय जाते हैं। य गर्मो ब दिनों में तपते हैं और रात का ठंड से सोतल रहते हैं। सूर्योदय भी य ठंडे और गरम रहते हैं। वर्षा की हरियाली से सहलहा जाते हैं। कहीं कहीं ताल नालावा की वाकिया भी मिलती है, जो वर्षा के जल में भरी पूरी हाक बड़ा आकषक लगती है। वान के सक्लि ब

गांवों में कुएँ 30 पुरस से 60 पुरस (3। हाथ का पुरस) तक के गहरे हैं। पानी कहीं सारा कहीं मोठा पर स्वास्थ्यप्रद मिलता है। साठोंके कुओं में लूनी (जोड़) सग लान (पानी निकालने की मोटी चम रस्सी) से पानी निकाला जाता है। खान खदेष्टो के अलावा खेजड़े (शमी), नीम पीपल और जाल के पेड़ होने हैं तथा मोठ बाजरे के अनाज उपजने आये हैं। यहाँ मतीरा नाम का फल बड़ा श्रेष्ठ समझा जाता है। पशुपालन में गाय भैंस ऊँट घोड़े और भेड़ बकरियों के ठाट लगे रहते हैं। शुष्क आर हवा के कारण पुरुष स्त्री, तकड़े अथवा जकड़े जुड़े मन से, आलस मुड़े प्रसिद्ध मा यता, परम प्राणी रहे हैं। अब नई सभ्यता ने उन्हें अमीरी-आसन पर बैठ जाने का संकेत दे दिया है।

मूलतः जब हम कालू के पुरानेपन की बात करते हैं तो मन में तत्काल उसके घासकी का जमीनी स्थान छत्रगढ़ स्मरण आ जाता है। उस छत्रगढ़ के ठाटबाट अभी हाल ही में बड़े बड़े चढ़े हैं। नहर के आ जाने से वहाँ का क्षेत्र बड़ा हरा भरा, उपजाऊ और सजल सफल मूल्यवान महिमावान बन गया है। अतः एक कालू के इतिहास की सोलने ही छत्रगढ़ का नाम आलों के सामने आ खड़ा हो तो आश्चर्य की बात नहीं है।

छत्रगढ़ की नहरी इलाका कहना दूरस्थ बुजुर्गों को बड़ा विचित्र महसूस होता होगा ? किंतु ज्ञातदर्शी सर गगामिहजी बहदुर की आज से 75 वर्ष पहले ही बात हो गया था कि यहाँ की भूमि पानी लेकर रहेगी। बीकानेर राज्य के इतिहास लिखने वाली के मतानुसार यह छत्रगढ़ इथोड़ी बाने राजबिया का ठिकाना रहा, जिसकी महाराजा गगामिह ने अनूपगढ़ इस्टेट तक का नाम दे दिया था।

छत्रगढ़ इस्टेट के मॉकिल कालू में स 1975-85 के दरमियान गिरदावर श्री अमरनाथजी थे। उस समय बालकराम पटवारी, चन्द्रहाम घेंब रावलपिंडी, अमरजी-बीकानेर पटवारी आसारामजी शर्मा हैडमास्टर, दीपजी, मंगलजी हवलदार मेघाराम जाणी लोकल सिपाही, रावतराम बीराराम रसाइया आदि का सारा स्टाफ कालू के गढ़ में रहा करता था। गढ़ के मुख्य दरवाजे के भीतर सामने बड़े अफसरों के आगमन पर ठहरने वाले व गिरदावर के रहने हेतु एक बड़े चौक पर विस्तृत बरामदा था। उसके मसलत पीछे चिकने कसीदार अनेक वक्त थे। सोने रहने और नहाने के भी उसके अंदर अलग से स्थान थे। आगे पानी का हौज मंत्री की क्यादिया लगी हुई थी। गिरदावर हर रोज चौक एवं अपने बरामदे में अभिन सोंगो के साथ बैठते थे। गढ़ में ठिकाने के अथवा कमचारी भी रहते थे। अथवा लोगों के लिए दूसरे उतरादे चौक में पृथक् पृथक् कमरे बने हुए थे। दो गहरी के लिए अंदर कवाटर भी बने हुए थे। एक पूरा भवान गिरदावर के भोजन आदि की व्यवस्था हेतु हर समय रोका हुआ रहता था। ऊँट, टोरडे घोड़ी कछेरी के भी गढ़ में स्थान बने हुए थे। सन् 1992 में गिरदावर खेमचंद एवं पटवारी हसराम ने गढ़ में एक बड़ा कुंड ग्राम वरजागसर से बारीगर बुलवा कर बनवाया था जो आज भी छात्रावास की जलपूर्ति के लिए दबता के साथ विद्यमान है।

गांव कालू के इस प्रसिद्ध गढ़ या कोट की अब बात करें तो वहाँ केवल लघु सड़क सड़क है। गांव के लापरवाह अंगुली, वहाँ के पडोसिया एवं कुछेक रा० उ० मा० विद्यालय के प्रधान अध्यापक ने गढ़ की सुविधाओं पर पूरे तीस वर्षों तक चाँदनी रातें मनाई हैं। सारा सामान छात्रावास का सामान, चौखटे, कपाट एवं भाँटे ईंटी तक के

पारकर ले गए। जाजादी के बाद गांव के दो सार्वजनिक स्थान (गढ जीर लाईब्रेरी) इस गांव के कुछ लोग के पारिवारिक स्थान पान का रमोवडा तथा ऐशोआराम के स्थान बन गये। किंतु गांव के वतमान नेताओ, लोगों तथा बाहर से आये हुए व्यक्तियों का इस गढ के ऐतिहासिक महत्व का कतई ध्यान नहीं रहा।

गढ कभी बड़ा रमणीय एवं महत्वपूर्ण कोट रह चुका है। यह गांव से अलग एक ऊँचे धार (टोल) पर तीन तरफ से ताल तालाबों के बीच में है। स्थान ऊँचा और खुला वर्षा व दिना में हरियाली एवं जलाशयों से भर जाने पर बड़ा मनभावना तथा लुभावना लगता है। उस समय (आजादी से पहले) गढ के संचालित गामन से यहाँ की प्रजा सतोंप और भय से अनुशामन घट रही थी। चारों ओर जंगल (व्यभिचारिया) के लिए यह गढ प्रथम भयावता स्थान था। उक्त सागरे के लिए यहां शारीरिक दंड जुमान हेतु विस्तृत मोटा परकोटा बना था और समय समय पर ऐसे सागा को धूप में लटका करके बतों की पिटाई से सुधारा जाता था। सन् 1950 और 1951 तक इसका पूरा प्रभुत्व चलता रहा। देश आजाद होने के बाद, गांव के हम कार्यकर्ता लोग इस्टेट कायकारी ऑफिस बीकानेर श्री विजय भवन गये और कालू के बोर्डिंग के लिए इस स्थान को वहाँ की सारी जरूरी सामग्री समेत माँग कर प्राप्त कर लाए। बाद में इसा के बल पर हम लोग राज्य सरकार से बारम्बार कालू में हाई स्कूल खुलवाने की माँग लेकर जयपुर के चक्कर लगाने लगे। मगर हायर सपेण्डरी खुलने तक इसके एक तरफ के मकानों में राजस्व विभाग के क्षेत्रीय गिरदावर और पटवारी आकर रहने लगे थे और दूसरी तरफ के सामने वाले बड़े छाश महल में सरपंच श्री गिरधारीलाल खवर न कई माह तक पचा यत कार्यालय लगाय रखा था। सन् 1956 के जुलाई मास में हायर सपेण्डरी स्कूल खुला और गढ का स्थान बोर्डिंग (छात्रावास) में परिवर्तित हो गया। बाहर से आने वाले छात्रों तथा अध्यापकों के लिए यह ठहरने का स्थानाश्रय बन गया। पर शिक्षित लोगो ने अपनी मधुमक्खी बत से इसे उजाड़ दिया। यहां रहने वाले अध्यापकों एवं छात्रों ने ई धन की जगह गढ की पुरानी खालें ही तोड़ ताड़कर जला डाली। सरकारी भय मिट जाने के बाद कुछ ऐसे बेईमान और असामाजिक लोग जाकर बसे एवं हम ऐतिहासिक इमारत के पत्थर और खोलटे तक चुरा ल गये। प्रजातंत्र राज्य का उदय हुआ पर राजाजी के राज्य समाप्ति के साथ ही गढ खत्म प्राय खडहर बन गया।

पहले यहाँ गिरदावर श्री अमरनाथ जी एक उत्साही आफिसर, निडर निर्णायक तथा पट्टे के शासन कार्यों के नीतिग अचिारी थे। उन्होंने विजयसिंहजी के नाबासिग ठिकाने की उन्नति ही नहीं की कई काम खालसे की भाँति अल्प त सुदृढ बनाकर उत्कृष्ट की चरम सीमा तक पहुँचा दिये। क्योंकि कालू से ये महाराजा गंगासिंह जी बहादुर के हाथ अपने सिर रखे कामदार बनकर सारे पट्टे (आठों सक्लो) की देख-रेख हेतु विजय भवन (बीकानेर) बुलवा लिए गये थे। वहाँ आकर इ हॉन पट्टे के सुपरवाइजर श्री हरि सिंह जी (उतासर) और बड़े कामदार श्रीकृष्णजी के साथ अच्छी योग्यता से काम सभाला। पट्टे के अतिमकाल (सन् 1951) में भी महाराज अमरसिंह के ठिकाने की जमीनें बेचने के लिए बड़े कामदार श्रीकृष्णजी और सुपरवाइजर श्री गिरधारीलाल व्यास के साथ बड़-और बख्श होने हुए भी इ होने अपने अनुमवाधार पर इस राज्य के खजान को पूरित करने के भारी प्रयत्न किय और कालू के लोगो को वास्तव में पुरानी प्रीति पर लाभान्वित

करने का अपनत्व दिखाया। वे पट्टे के केवल कमचारी ही नहीं बल्कि लोकप्रिय कमावनी (कामदनी) वृत्ति के व्यक्ति थे। सन 1951 में गावों के बीच की जमीन के पट्टे सस्ते में बना देने लगे और घटसाने की कामयाब होने वाली जमीन को भी एक आन बोधे के हिसाब से, दो बघ की रकम देने वाले व्यक्ति को देत गये। मगर उस समय घटसाने की जमीन लेने वाला कौन था? अमरनाथजी ने लोगों से अपनत्व बना बनाकर पट्टे बनवाये। दिनांक 15-10-51 को उन पट्टा स्टॉफ कालू भी आया और लाख कहन पर भी घटसाने की जमीन तो एक ही व्यक्ति को दे दी थी पर गाँव के बीच मोहल्ला में मजहबाला खाली जमीन के नई आबादी के लिए लोगों ने पट्टे बनवाए। य पट्टे दिनांक 30-10-51 को तुरत तयार होकर आ गए। जिनमें इन पत्रियों के सेल्फ के भी दो पट्टे हैं। तत्कालीन कालू सक्ल के गड में एक गिरदावर ने ठिकाना छनरगढ़ की रमीद बुक्क अपने पास रखकर, राज्य का यह ठिकाना चले जाने के बाद नहर के निगान लगने तक ब्लक में घेचकर काफी हथका कमाया।

छनरगढ़ ठिकाने का विलीनीकरण—इस तरह से छनरगढ़ इस्टेट का पुरातन आधिपत्य अपने रक्त सवध के कारण छनरगढ़ के गजसिंहान राजकी वि० सं० 1836 (ई० सन 1779) से वि० सं० 2007 (ई० सं० 1951) तक बीकानेर राज्याधिकारी नरैणों के साथ परम सम्मान्यता के साथ बमब भोगमान सिहासनारुढ़ रहे। फिर भी इन जागीरदारों के अधिकारों को बधानिक मान्यता प्राप्त नहीं थी। बीकानेर के महाराजा गगामिह अपने प्रजा राज्य के आधिक विकास के प्रति सदैव सचेष्ट रहते थे और इस मामले में वे किसी भी निजी सबधी को, नातेदार या भाई-बन्धु नहीं मानते थे। गगनहर साने के समय की उनकी प्रगामन व्यवस्था का खुस्त असर अपन राजकी भाइयो पर भी पया। लालगढ जाटान (या गगानगर) के पास के 11 गाँव पहले से ही छनरगढ़ ठिकान के अधीनस्थ आ रहे थे। नहर योजना बनने से वे खालसा में लेकर उनकी अ य स्थानों में पूर्ति कर दी गई। महाराज श्री जैरू सिंह तवर रिहो, जो इनके प्रिय जागीरदारों में थे, के लिए भी उक्त समय उनका गाँव मुवन (श्री गगानगर) छोड़कर चौबीस घण्टों के अन्तर बीकानेर रियासत से बाहर चले जाने का जयादती पूर्ण आदज कर दिया था। न भाई सुनवाई न कोई सिफारिश, ऐसे मौका पर व कानून को अपनी एही तले या जूनी में बसा दिया करते थे। श्री तवर बड़े योग्य जागीरदार थे उनका परिवार को लेने के लिए जयपुर से तत्काल स्पेगन ट्रेन आई थी। प्रजा में कई दिन तक इस घटना का अफसोस बना रहा।

राजस्थान के एस बड़े जागीरदार जोधपुर में ईटर ठिकाना, बीकानेर में छनरगढ़ गारहा और रिहो तथा जयपुर के सीकर शेखावटी में अनेक बड़े जागीरदार माने जाते थे।

इयोरी वाले राजवियों में छनरगढ़ (नवीन नाम अनूपगढ़) के बाद “खारग और रिहो” के नाम लिए जाते थे। य भी महाराज श्री -- और बहादुर सिंघे जाते थे। महाराज गजसिंह व छत्रसिंह और उसके दत्तेसिंह हुआ। दत्तेसिंह के शक्ति सिंग मदनसिंह गगमिह और गुमानसिंह नाम के चार पुत्र हुए। बीकानेर महाराजा मरदारमिह के देहानापरान्त गजसिंह के बगधर राज्याधिकारी बनाए गए और छनर-

गढ के जागीरदारों को भी उ होने सम्मानित किए गये।¹ किन्तु दलेलसिंह के दूसरे पुत्र मदनसिंह ने सुत सेतसिंह को अनेक गव दिए। सेतसिंह के पुत्र भरुसिंह बहादुर ने पारडे के समूह ठिकाने को पूरी तरह भोगा। महा० गंगासिंह ने भरुसिंह को दो गांव भी दिए थे।

दयोदी वाले राजबिया में भरुसिंह के बाद सलाना राज्य के राजा जसवतसिंह के द्वितीय पुत्र महा० माघातसिंह भी छतरगढ सारडा एवं रिडी के बराबर ही सम्माननीय मान जाते थे। ये विद्वान, इतिहास प्रेमी, प्रबोधकुशल गुणवाही और पूण राज नीतिज्ञ श्रीमान बीकानेर राज्य की कौंसिल के वाइस प्रेसीडेण्ट थे। इनकी घमपत्नी भी महाजन, बीदासर भाँवा की रानियों की भाँति राणी गढ से संबोधित की जाती थी।

दलसिंह के तीसरे पुत्र खगसिंह के मुकनसिंह और सरतसिंह नाम के दो पुत्र हुए। तर्गतसिंह ता नि सतान भर गए किन्तु मुकनसिंह के वंशजा ने रिडी की जागीर प्राप्त की। इसका तीसरा बेटा नाहरसिंह था। जिसके जगमालसिंह नारायणसिंह और पृथ्वीसिंह हुए। पहले ये खिलेरिया गाँव के जागीरदार थे। फिर गंगासिंह ने उठाकर रिडी गाँव प्रदान कर दिया।

हवेली वाले राजबी—इन राजबिया में महा० गजसिंह के पुत्र सुल्तानसिंह महोक्मसिंह और देवीसिंह के पुत्र हवेली वाले राजबी कहलाते थे। बनीसर, नापासर आलसर, साईसर, सलुडिया, कुरणडी, बिसनियासर एवं धरनाक आदि ठिकाने उक्त हवेली वाले राजबियों के थे।

इन सब राजबी सरदारों का व्यवितगत जीवन भी महाराजाओं के समान ही बिलासी और रहीसो ठाट में रहता था। क्योंकि ज्यादातर राजबी राज्य के राजवंश से भाई तथा सबंधी होते थे। किन्तु उस समय तो साधारण राजपूत भी अपने को अत्यंत योगी से उच्चतम मानता था। उसका जीवन भी अधिकतर सेना में नौकरी करने के शायत महत्वशाली समझा जाता था। पुलिस मंडल में उस समय उहो का बोलबाला था। सेना में भर्ती के समय राजपूतों का स्थान देना अधिक महत्वपूर्ण माना जाता था।

कालू और पट्टे का आपसो संबंध—कालू का ऐतिहासिक महत्व ठिकाना छत्रगढ के साथ बीकानेर राज्य के इतिहास में उन्नी विशिष्टता प्राप्त रहा है। यहाँ कालिकाजी, भानीनाथजी एवं जन मंदिर आदि प्राचीन स्थानों के कारण ठिकाने के चौरासी गाँवों में जसा सम्मान कालू को मिला तत्कालीन समय में नभइत बसा सम्मान अन्य किसी गाँव का नहीं मिला होगा। राज्य में कालू की उदा विष्ठा, निरासी थी। चत्र और आमोज के नवरत्नों में सदैव बड़े राज्य से कालिकाजी का पूजापा अया करता था। भानीनाथजी के शिवद्वारे में भी राज्य से चढ़ावे का नियमित विधान था। गाँव कालू के धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थान बड़े तथा छोटे दोनों, द्वय राज्य द्वारा पूजन रहते थे। ठाकुरजी के मंदिर (स्वामीजी वाला) सत्यनारायणजी के मंदिर और प्याऊ के पीछे काफी खेत एवं जमीनें थी। छत्रगढ ठिकान के आफिसर लोग तो इनका हर समय विकास चाहते थे। वे देवस्थानों के लिए जनता की मांग मनसा (इच्छा) की

1 वंशक्रम—(1) खगसिंह (2) दलेलसिंह (3) शक्तिसिंह (4) सारलसिंह (5) विजयसिंह और (6) अमरसिंह (7) रा कु चंद्रशेखरसिंह।

तत्काल संपूर्ति करवा दिया करते थे। इसकी धार्मिक महत्ता का पूण ध्यान रखते हुए वे ठिकाने का अप्रुव शासन प्रेम दर्शाया करते थे। उनका यह चढप्पन था, धार्मिक नीति एवं प्रजा प्रीति की महानता थी। इसलिए कालू के मुखिये लोग गाँव विकास की कित्ती भी बात को नि सक्ताच पट्टे वाला के सामने रख दिया करते थे। वे भी प्रायः सावजनिक कार्यों में कभी बाधा उपस्थित करने में नजर नहीं चढते थे। जब तक छत्रगढ का ठिकाना कायम रहा तब तक राजा प्रजा का विशेष आदर-प्यार निरंतर सुकालवत बना रहा।

शासन प्रबन्ध के ढंग से ठिकाना छत्रगढ के मुख्य तीन पद विशेष जागरूक रहने थे—सुपरवाइजर, कामदार और गिरदावर। ये तीनों पद पट्टे में सबदा माय कायकारी अधिकारी कहलाते थे। इन तीनों पदों के लिए ठिकाने का शासन-सुप्रबन्ध आज भी कालू आदि बड़े गाँवों में मूलरहित है। इन्हीं अधिकारियों ने ठिकाने के गाँवों का भूमि बन्दोबस्त करवाकर कृषकों को खेत दिए और नई भूदत्त में साधारण सरकारी सहयोग दिलवाकर गाँवों के निवास-गृहा की संख्या बढाई है तथा जनता से अच्छा व्यवहार बनाकर अपने नाम को हमेशा के लिए रोशन किया है।

एकीकरण के समय महाराजकुमार श्री अमर सिंह के अनेक गाँवों में राज्य कर्मचारियों के रहने बाबत जो गड एवं कमरे बने हुए थे। उन्होंने वे सब, गड और कमरे उही गाँवों में सावजनिक सस्थाओं को भेंट कर दिए। छत्रगढ का गड देने के बाद सकल कालू का सामान से भरा पूरा बड़ा गड छात्रावास के लिए दे दिया। धैरपुरा और भादासर के गड वहाँ की पाठशालाओं के लिए गाँव को सौंप दिए। इस तरह से 84 गाँवों ने धार्मिक मंदिरों एवं अन्य देवस्थानों के पीछे ठिकाने से ढालिया (जमीनें) आदि पाँच सौ पाँच सौ हजार-हजार बीघा के खेत दिए हुए थे। वे सब श्री ठाकुर जी के नाम छातेदारी कर दिए। गाँव कालू के बीच बाजार में श्री सेवा सदन संस्मृती पुस्तकालय का भवन बनाने हेतु 1250 गज जमीन का पट्टा और राजकीय मिडिल स्कूल भवन के पीछे 75000 (पचहत्तर हजार) गज जमीन का पट्टा (छात्रा के खेल मदान हेतु) दोनों सस्थाओं का दो पट्टे बनाकर दे दिए। इस तरह से उनका अपन सार मकिला के 84 गाँवों में मंदिरों, स्कूलों एवं अन्य धार्मिक स्थानों के लिए नि शुल्क पट्टे बनाकर दे दिए थे, जो हजारों विद्यार्थियों अध्यापकों तथा पढित पुजारिया एवं अन्य सस्था प्रधानों के काय मचालन में सहायक हुए हैं। उन्होंने ठिकाने से प्याऊओं, धमघालाओं के पीछे भी पर्याप्त जमाने छातदारिया बरके सावजनिक कार्यों के लिए धममादे नाम से दी थी, जिससे स्वयं महाराजा अमरसिंह अश्वत्थ प्रभूत होकर अपने कारबार में लग गये हैं। इनके ठिकाने छत्रगढ से भी श्री एम हॉस्पिटल बीकानेर में भी राशि लग चुकी थी और जो भी (श्री विजयनगर अनूपगढ) नहर में भी काफी द्रव्य व्यय हुआ था।

राजस्थान नहर विभाग में अनेक तहसीला उप तहसीलों (उपनिवेगन) का निमाण हुआ, वहाँ छत्रगढ न एक या दो तहसील कार्यालय भी बने हैं। उन की विन्डिंग, हैडक्वाटर और छत्रगढ मंडी का भी सुंदर निर्माण हुआ है। लेकिन पूरी तहसील न०

- 1 भावलपुर जमी गियास्तों की सीमा पास हान व वाष्ण उक्त गड में गम्नागार हेतु एक बड़ा तहसाना बना है। अब सारा भवन समाज बन्ध्याण छात्रावास के नाम आता है।

एक का 90 प्रतिशत क्षेत्र, छत्रगढ़ नरेश अमरसिंह जी द्वारा भूदान में दी हुई भूमि का भाग है। वर्तमान सरकार ने भयंकर अवास्तविक समय भारतवर्ष के सबसे अधिक पशु बाहुल्य राजस्थान के लिए इस क्षेत्र में चारा (घास) उपजान की योजना चालू कर रखी है।¹ क्योंकि यह भूमि एक लाख बीघा तीस हजार बीघा का बहुत बड़ा क्षेत्र है। मगर राजस्थान नहर का जान के बाद बेरोजगार नौजवानों, मेहनतकश मजदूरों छोटे दुकानदारों, कारीगरों तथा समस्त किसानों ने छत्रगढ़ को अपना निवास स्थान बना रखा है और इस तिल तिल सरस धरा के अहसान में हैं।

छत्रगढ़ाधीशों के चिरस्थायी नाम—यदि छत्रगढ़ नरेशों की विकास भावना का पूरा अव्ययण किया जाये तो क्षेत्रीय इतिहास को एक अनूठा मोड़ मिल सकता है। इस ठिकाने के राजवियों ने स्वयं एक गुणा से प्रेरित, उनकी प्रजा तथा उनकी वीरान की गद्दी पर बैठने वाले महाराजाओं ने अपने राज्य की स्मृति नूतन बनाय रखने के लिए बड़े बड़े तीर्थों तक जाकर अपने व पूर्वजों के नाम से अनेक देव स्थान व धार्मिक स्थान बनवाने का अपना परंपरित पुण्य समझा है। ऐसे धार्मिक अनुष्ठानों से छत्रगढ़ का नाम श्री कीर्तिमान हुआ है। इन तत्कालीन धार्मिक विकास कार्यों में छत्रगढ़ के राजाओं व उनके पुत्रों के नाम पर आज भी ग्राम-वास मंदिर महल छत्रिणी प्रतिमाएँ इत्यादि अनेक दशनीय स्थान और कला विशेष संस्था सामग्रियाँ मिलती हैं।

शाव—छत्रगढ़ ठिकान के महाराज गजसिंह जी के वंशज होने के कारण सनत गजसिंहों कहलाय। श्री गजसिंह ने अपने समय में ही गजनेर बसाकर ग्रामवास की परम्परा प्रसूत की थी। फिर उनके कुवर छत्रसिंह के नाम से स 1833 35 में छत्रगढ़ बसाया गया। इनके बाद श्री लालसिंह ने अपने नाम पहला लालगढ़ बसाया। श्री दूंगरसिंह जो लालसिंह के कुवर व स 1937 (ई स 1880) में श्री दूंगरगढ़ बसाया। श्री गंगा सिंह ने अपने पूर्वजों और पुत्रों के नाम पर अनेक नगर बसाये। जिनमें अपने मन वंश के बुजुर्गों का भी विस्मरण नहीं किया। श्री गजसिंह के नाम श्री गजसिंहपुर और अपने पिता श्री लालसिंह के नाम जय लालगढ़ तथा अपने कुवर विजय सिंह जी के नाम विजय नगर बसा कर छत्रगढ़ के राज्य वंश का नाम नामून बनाय रखा। छत्रगढ़ाधीश श्री अमरसिंह के नाम पर भी अमरपुर अमरगढ़ आदि गाँव बसाए गये हैं। श्री गंगासिंह ने इस नगर एवं ग्राम बसान की परम्परा में अपने नाम श्री गंगा मगर, गंगासह गंगापुर आदि गाँव बसाय जो आज भी उनके विकास कार्यों की याद दिलाने हैं।

महल एवं मन्दिर—विकास कार्यों की शक्ति कोशुली में श्री छत्रसिंह के कुवर दलेन सिंह के लिए किले में स 1844 50 में बना हुआ "लेल निवास" छत्रगढ़ ठिकाने का प्रथम मुख्य महल है। महाराजा श्री दूंगरसिंह को भी इसीमें बनाने का बहुत शौक था। उन्होंने अपने पिता छत्रगढ़ के महाराज श्री लालसिंह के नाम लाल निवास, पितामह शक्तिरसिंह के नाम शक्ति निवास और अनुज के नाम गंगा निवास आदि अनेक सुन्दर महल अपने वंश के गत ठिकान छत्रगढ़ नरेशों के नाम बनवाकर उनकी प्रतिष्ठा कायम की।

1 इसकी संस्था का नाम कृषि गौ सेवा ग्राम सुगन्ध शोध संस्थान छत्रगढ़ है जिसमें दो ढाई बीघ जमीन गौशाला के नाम स्थापित है।

महाराजा गंगासिंह ने अपन पिता छत्रगढ़ नरेश श्री लालसिंह के नाम नूतन गिल्फविला स लालगढ़ पलेस, सुन्दर एव भव्य महत्ता से युक्त निर्मित करवाया। राज्य की नई इमारतों के साथ अपन सगे भाई श्री डूंगर सिंह के नाम डूंगर मेमोरियल कलेज, छत्रगढ़ाधीन जूनियर महाराज कुमार श्री विजयसिंह के लिए जनत कलाकौशल पून विजय भवन विजयसिंह मेमोरियल हास्पिटल आदि अनेक स्थान बनवाय जा छत्रगढ़ ठिकाने से सम्बन्धित हैं। नवीन गिल्फविला के नमून स्वरूप गंगा निवास दरबार हाँत भी देखन योग्य है।

श्री डूंगर सिंह न धार्मिक परम्परा में हार्दिक मे गंगा और काशी म डूंगरेश्वर मन्दिर भी बनवा दिय। देवी कुंड सागर की छत्रिया पर डूंगर सिंह जी न छत्रगढ़ के महाराज छत्रसिंह के नाम पर गिरिधर, दत्तसिंह के नाम पर ब्रह्मनागयण, शक्तिसिंह के नाम पर गोपाल, अपनी माता जुहार कुवरी के नाम पर गणेश, विमाता प्रताप कुवरी के नाम पर भूम और अपने ज्येष्ठ भ्राता गुलाबसिंह की यादगार में गुलाबेश्वर का मन्दिर बनवाया। महाराज डूंगरसिंह ने अपन पिता लालसिंह के नाम शिववाटी म लालेश्वर का सुन्दर शिव मन्दिर भी बनवाया।

प्रतिमाएँ और छत्रियाँ—लालगढ़ पलेस के विद्यालय एव सुन्दर महलो तथा उद्यान से सुसज्जित होने हुए भी श्री गंगासिंह जी ने अपने पिता छत्रगढ़ के महाराज श्री लालसिंह जी की सफेद संगमरमर का सुन्दर प्रतिमा स्थापित करवाई जिसका उद्घाटन वि स 1972 माघ शीप बने 3 (ई स 1915 ता० 24 नवम्बर) को लाह हाईजि ने किया।

बीकानेर म मुख्य गार्डि व्यवस्था की नींव छत्रगढ़ के महाराज लालसिंहजी के पुत्र महा० श्री डूंगरसिंहजी ने लगाई थी। अत एव वहाँ के नागरिकों न डूंगरसिंह की स्मृति विरुद्धाधी रखन के अपने वक्तव्य पालन के माध्यम से घन स्रष्टृ किया और जूनागढ़ के मुख्य द्वार (करणपोल) के सामान गंगानिवास पब्लिक पार्क के किनारे शिखर बंद छत्री म संगमरमर की प्रशस्त बेनी पर उनकी उज्ज्वल प्रतिमा स्थापित करवाई। प्रतिमा का उद्घाटन वि स 1973 वामोज सुदी 9 (ई स 1916 ता० 5 अक्टूबर) को वहीं क सगे भाई बीकानेर महा० श्री गंगासिंहजी बहादुर के हाथों से हुआ। गंगासिंहजी न जब विजय मेमोरियल हाँस्पिटल बनवाया तब उसके जनाना एव मर्दाना दोनों दरवाजों में छत्रगढ़ नरेश श्री विजयसिंहजी के दिव्य स्टेच्यु (प्रतिमा) स्थापित करवा दिए और गंगा निवास पब्लिक पार्क म घाटे पर सवार अपनी स्टेच्यु भी बनवादी।

छत्रगढ़ नरेश की गिनती सदैव राजपरिवार म होती रही है। इसलिए बीकानेर महाराजाजा और छत्रगढ़ ठिकाने के भूवर्ति वीरोदात्त भावनाओं से आत प्रात रह। इन्होंने अपना फौज के माथ बीसवीं शताब्दी के दो विश्वयुद्धों म स्वेच्छया सम्मिलित होकर तेज तत्परता और वक्तव्य परायणता के कीर्तिमान स्थापित किये हैं।¹

वि० स० 1971 (ई० स० 1915 ता० 29 जनवरी) म जब तुर्की सेना बड़ी तेजी

- 1 बीकानेर की प्रसिद्ध कैंट सेना—गंगा रिसाला—ममवत जसलमेर रिसाले का छोड़ कर जो गंगासिंहजी के काफ़ी बाद में बना अपनी तरह की एक ही सेना थी जो बीकानेर रियासत क बाहर सेवा के लिए भुनी हुई थी।

चतुर नरेश लालसिंहजी की सलाह, उत्साहपूर्वक ग्रहण किया करते थे। सन् 1868 जनवरी में सरदारसिंहजी के इकलौते महाराजकुमार इहलाक त्याग चले। तब महाराजा न थी लालसिंह के कुंवर डूंगरसिंह को अपन पास रखकर पढ़ाया लिखाया। ई० स० 1872 में महाराजा सरदारसिंह बैकुण्ठबास चल बसे। तब पीछे कई सरदार हकदार बने। परन्तु राजमहिषी और राज्य के प्रमुख सरदारों की सत्य राय से अंग्रेज सरकार ने छत्रगढ़ नरेश श्रीलालसिंहजी के पुत्र श्री डूंगरसिंह जी का बीकानेर का महाराजा घोषित कर दिया।

छत्रगढ़ महोपाल महाराजा श्रीलालसिंहजी बड़े बुद्धिमान तथा गुणज्ञ थे। उनके धार्मिक जीवन तथा दयालुता के कारण लोग उनका बड़ा सम्मान करते थे। अपन बड़े पुत्र महाराजा डूंगरसिंहजी के राजत्वकाल के प्रारम्भ में इनका शासन प्रवच से घनिष्ठ सम्बन्ध था। आप चार वर्षों तक स्टेट कौंसिल के समापति रह चुके थे। महा० डूंगरसिंह के सत्तान में होने पर आपका (लालसिंहजी का) छोटा बेटा श्री गंगासिंह जी उनके उत्तराधिकारी बनाये गये।

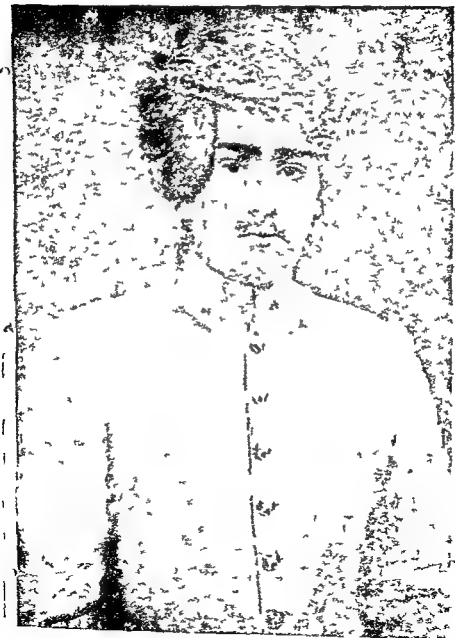
छत्रगढ़ महाराजा लालसिंहजी ने अपने द्वितीय पुत्र श्री गंगासिंह का सिंहासनाङ्कुश होते देखा। किन्तु अस्वस्थता के कारण अधिक दिन जीवित नहीं रहे। 15 दिन बाद 16 सितम्बर सन् 1887 ई० को वह ससार छोड़कर चल बसे। शासन के आरम्भ में श्रीलाल सिंहजी अपने सप्त वर्षीय बालक तरेश का प्रेम पूरा सलाह नहीं दे सके। परन्तु उनकी रानी चन्द्रावतजी साहिबा, जो गंगासिंह की सखी माजी थी। महाराजा की शिक्षा तथा सन्नति के लिए निरन्तर उत्सुक बना रही।

श्री गंगासिंह जी की माता चन्द्रावतजी साहिबा—श्री लालसिंह के देहा तापरात श्री चन्द्रावतजी के पास उनके अपन ठिकाने छत्रगढ़ जागीर की आय के 9 लाख रुपये थे। रिजि-सी कौंसिल ने वे रुपये चन्द्रावतजी से लेने चाहे, जा उनके पति द्वारा मिला। राज्य का नहीं, स्वयं का दाय था। कौंसिल ने माँगा तब चन्द्रावतजी ने इसे अनधिकार चिन्ता बतलाई। तब रिजि-सी कौंसिल ने स्पष्ट कहा—'यदि माँजी साहिबा यह राशि कौंसिल को न देंगी तो कौंसिल उनके पुत्र महाराजा गंगासिंह को उनसे पृथक् रखेगी।' इस पर माँजी साहिबा ने समस्त संपत्ति कौंसिल को सौंप दी।

भारतीय माताओं की भाँति आप महाराजा का आदर्श नरेश बनाने की योजनाओं में पूरा भाग लेती थीं। महाराजा के अभिभावक एवं अध्यापक का आप—साहिबा का सदैव सहयोग रहता था। आपकी उदात्त भावना तथा उच्चविचार सब प्रसिद्ध थे। विवाहयोग हो जाने पर रिजि-सी कौंसिल ने राजमाता की सलाह में ही प्रतापगढ़ की राजकुमारी के साथ 7 जुलाई सन् 1897 ई० को बड़ी धूम धाम से महाराजा का प्रथम विवाह किया था। महाराजा ने भी रिजि-सी कौंसिल से लिए गये छत्रगढ़ स्टेट के रुपये माताजी को लौटा दिये तथा छोटे महाराजकुमार विजयसिंह को सम राजपरिवार में जोड़ दे दिया था। 13 दिसम्बर सन् 1909 को चन्द्रावतजी का अमासमयिक स्वर्गवास हो गया। दया उपहार जैसे गुणों के कारण सारी प्रजा में शोक छा गया। गवर्नर जनरल के एजेंट सर इलियट कामब्रिज ने समवेतता का तार भेजा और उनकी प्रजा हिन भावना की प्रशंसा की। प्रिंस आफ वेल्स (बाद में सम्राट पंचम जाज) भी इस दुःखद समाचार से दुःखी हुए और महाराजा के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट की थी।

महाराजकुमार विजयसिंह—बीकानेर महाराजा डूंगरसिंह जी और गंगासिंह

छत्रगढ़ महा० सासलसिंह ने पुत्र थे। इसलिए उन्होंने पिता के ठिकान की सु-व्यवस्था बनाये रखा। श्री यशसिंह ने अपने पुत्र विजयसिंह को छत्रगढ़ का नरेश नियुक्त करके वडा मर्यादा पालन का सुझाव किया। श्री विजयसिंह बड़े अच्छे प्रजा हित रखने वाले वीर भूपति थे। उनकी शौर्य भावना से प्रेरित होकर महाराजा ने उसे फौज में पद दिये। परन्तु सत्वर मसार छोड़ जाने के बाद महाराजा ने अपने पौत्र श्री अमरसिंहजी को छत्रगढ़ का राज्य दिया।



श्री अमरसिंहजी नरेश—छत्रगढ़

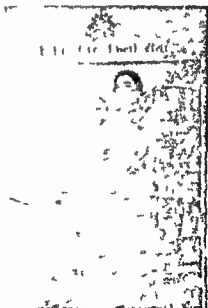
श्री अमरसिंह जी—श्री अमरसिंह जी निर्लोभी सरल एवं समझदार सरदार, उ हनि एकीकरण के समय छत्रगढ़ ठिकान की काफी जमीन, गढ़ और महल जनता हित सावजनिक कार्यों के लिए दान में दिये हैं। भूदान में दी हुई उनकी वामयाव जमीन उनके नाम को सदैव रोशन किये रखेगी। श्री अमरसिंह जी फौज में पहले कपटिन और फिर कप्तान के पद पर रह चुके हैं। वह दूसरी सड़ाई में अपने पिता महाराजा श्री शादूलसिंह के साथ विदेश भी गये हुए हैं। अब अपना व्यवसाय करते हैं।

श्री अमरसिंह जी का व्यक्तित्व सदा से सादा एवं सरल रहा है। उनकी न्याय प्रकृति ने अपने नौकरों तक के घरों की समाल तथा देख भाल की है। वे अपने कमचा रियों की दवा दारू तक का ध्यान रखते हैं। आपका सासन पासन एवं प्रारम्भिक शिक्षा पितामह श्री गंगासिंहजी बहादुर (बीकानेर महाराजा) की देख रेख में हुई है। डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने सन् 1941 में अपने बीकानेर के इतिहास लेख में भवर श्री अमरसिंह को एक सभ्य एवं होनहार नरेश लिखा है। आपका विवाह जामनगर (काठियावाड़) के राजघराने में हुआ। आपका जीवन सब प्रकार सुख सतोपमय समृद्ध है। आपका बड़ा पुत्र राजकुमार चन्द्रशेखरसिंह एक होनहार युवक है।

आदर्श राजमाता—श्रीमती सुदशना कुमारी जी साहिबा रीवा के महाराजा चैकटरमणसिंह जी की सुपुत्री थी। आपका विवाह वि० सं० 1979 (1922) में बीकानेर के महाराजकुमार श्री शादूल सिंहजी के साथ हुआ था। आपको दम तरफ से पूवजी की आदर्श पुण्य परम्परा प्राप्त हुई था। धार्मिक भावों के साथ आप प्रसिद्ध कवि कुल की पावन प्रतिभा पीटूर से लाई थी। इसलिए समय समय साहित्यिक जगत को आपकी कारुणिक कविताएँ शानोपदेश से साभावित किया करती थी। ई० सन 1932 में छत्रगढ़ नरेश जूनि महाराज कुमार विजयसिंह का असामयिक निधन हो गया। उस समय बड़ी धार्मिक कविताएँ प्रवाहित हुई थी। तब आपने दुःख को प्रकट करते हुए आपन अपना हृदय हल्का ही नहीं किया, अपितु जनता के समक्ष उसका सत्य स्वरूप स्पष्ट खड़ा कर दिया था।

आपके सौम्य सताने वाली सुदशना कुमारी जिसका विवाह महाराजकुमार भगवतसिंह जी उदयपुर के साथ (वि स 1996) में हुआ। मझले भू० पू० बीकानेर महाराजा डॉ० करणीसिंह,

चतुर्थी श्री अमरसिंह हैं। श्रीसुदशनाकुमारीजी ने कालू नरेश की राजमाता वाघसा जी सतत सेवा पूजा, शिक्षा दान एवं सदगुणी धर्म प्रसार में अपना जीवन बिताया। आज भी बीकानेर में छात्राओं का आदर्श नामकर्त्ता 'सुदर्शना महाविद्यालय' ज्ञान स्तम्भ रूप उजागर है। श्रीमती सुदशना कुमारी जी अब इस असार ससार में नहीं हैं, परन्तु आपका पुत्रवधू भू पू महारानी (डॉ० करणीसिंहजी की धर्मपत्नी) सुधीलाकुमारी जी क



धार्मिक एवं दातम ट्रस्ट से अनेक सांविजनिक पुण्य काम पूरित होने हैं। सबमुख धार्मिकता का प्रसार महान महिलाओं द्वारा ही होता है।

कालू क्षेत्र में विरोध और धरना—यैसे तो विरोध, नाथ, धरना मरना सब एक स्वभाव के ही अंग होते हैं। परन्तु धरना प्रयास हठधर्मी है। उसमें समुदाय, निमयता, स्पष्टता तथा दृढ़ता की सत्य प्रवृत्ति बड़ी बलवती होती है। इसलिए प्रशासकीय कमी पडने पर भी मनुष्य सीना तानकर बड़ी से बड़ी शक्ति विभूतियों का सामना करने के लिए तैयार हो जाता है। धरना, हड़ताल, घेराबंदी तथा काम रोको आदि के हुल्लाह आंदोलन जिले और तहसील में सभी जगह होने लगे हैं। गाँव कालू में भी लड़ाई, डेप एवं गुटबंदी के कारण 21 जनवरी 1981 का ग्राम पंचायत कालू के विरोध में श्री सरस्वती पुस्तकालय कालू भवन के आगे कुछ लोगों ने गवन के नाम पर धरना शुरू कर दिया। इसमें जनता पार्टी, कांग्रेस पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी और लोकदल वाले अनेक लोग सम्मिलित हुए थे। मोपड़ी बनी, माइक लगा तथा धूना जलाकर काफी साग प्रदर्शन पर बैठ गए। सहायक लोग शीत का वजह से भूखे सबकड़ लाकर धून के पास गिराने लगे। एक साथी रामदास, याचक के रूप में आटा लाकर अंग साधियों को रोटियाँ पका कर खिलाते लगा। वे दिन भर पंचायत और सरपंच के विरुद्ध में असह्य नारे तथा गानियों जैसे झुरापाती गान गाते थे।¹ अनेक शत्रु के सामूहिक विरोध की हुरकत से गाव भर में पर्याप्त चर्चा व्याप्त हो गई। मगर सरपंच धर्म का साथ सब कुछ देखता सुनता रहा और वह अपने सिद्धांत तथा विधान से टस से मस नहीं हटा। विरोधी बल दिखाकर बहुत सारी भूमि कम पसा में लेना चाहत और पट्ट वितरण का अपना तरीका बता रहे थे। आखिर जिले के एस० डी० एम० (श्री वृद्धिचंद्र जी) ने आकर मध्यस्थ रूप में वाजिब मार्ग मनवा देने का आश्वासन देकर दिनांक 15 फरवरी 1981 को धरना उठवा दिया। ग्राम पंचायत के सदस्यों की धर्मशीलता के कारण शांतिपूर्ण ढंग से सबका सब सन्तुष्ट हो गया। कालू का यह धरना कतई सफलता असफलता का निर्णायक नहीं बना। धरन की परम्परा प्राचीन समय से पाई जाती है। पहले यह आयोजन एक तरह से सक्त्प या प्रतिष्ठा का माति प्रचलित था। समुद्र की पसा में करन के लिए श्री रामचंद्र जी ने भी धरना दिया था।² कहा जाता है—धरना किसी देवता या राजा से अपना सत्य काम छाती ठोककर पुण करवा लेने का कष्टकारी प्रण माना जाता था। किंतु मध्यकाल में इस धरने रूपी धर्म ने कई हलके स्वरूप धारण कर लिए, जो भागा, तागा त्याग, सघारा, तलिया, अवधारा, गुह्य बापना और खड कर लेन आदि व अनेक नामा से प्रसिद्ध हुए हैं। कुछ लोग जूते पहनने छोड़ देते और कई किसी पर कथ बद्ध कर लिया करते थे।³ अधिकतर

1 इस धरन में रोटियाँ पकड़ा और भूमि देने के नारे थे जो वर्तमान काल में किसी मार्ग की अनुचित दबाव से प्राप्ति की प्रेरणा के होन पाठ थे।

2 बाल्मीकि रामायण, युद्ध, 21.8.9

3 बाढ़ी-ढोसा नाराज होकर गुह्य बनाते और उसे तूतों से पीटा करते थे। ये अपमान के काय होते थे। कालू में वि० सं० 1981 के समय हनुमदीन डाढ़ी ने गाव के बीच केला की डाल पर चौ० हुरखाराम के गुह्य के बाधकर जूते मारे थे।

4 भूतकरनगर के हुक्मराम गौड ने सरकार से अपनी मांगें मंजूर करवाने के लिए सन् 1960 में 1973 तक अपने भस्वक व बाल (विष) बढ़ाए रखे थे।

य घर्घे हठ या क्रोधावशात साधु भिक्षु पुराहित, चारण, ब्राह्मण और उद्योगिणी रुठ कर किया कर्म ये । परन्तु इसने पश्चात तो इस प्रथा में भोपे, सरगडे ममी, ढोला तथा सत्यानासी एवं हिंजे इत्यादि माँगणहार लोग भी अपने किसी यजमान व घर अथवा राजदरबार के आगे जीभ लिप्ता तथा नर्प दिखणा हनु घरना देन लगे । इनमें से कई विशेषकर याचक अपने यजमान की इज्जत हतक सम्बन्धी साखी तथा भाड़ी के गीत बनाकर भी प्रचलित कर दिया करते थे ।¹ गत शताब्दी में धनवान या किसी मेठ के घर अथवा तथा विवाह के समय पूरा नेग न मिलन पर हिंजे भी घरने का रूप बनाने लगे । ऐसे अवसरों पर कतिपय काने (चाकूमार) घरना देते हुए अपने धन पर छुरा भाँक किया करते थे । तब कम काय के गुरु होने में पहले ही घर के सम्मान एवं साहूकार बदमासी से डरकर घरनाधारी को भेंट चढावा देकर बना लिया करते थे । इस तरह के घरनाधारी मनुष्य अपना मिठ खाना पीतान और रुपय लेकर राजी खुशी घरना स्थान छोड़ दिया करते और उन दोनों (याचक यजमान) का आपसी सुख प्रेम का पूव व्यवहार वापिस बिदवस्त बन जाया करना था । हेमासर वास के ब्राह्मणों का एक गढ़ था । बल्लिये राजपूतों ने विवाह के अवसर पर भाग लिया, पर वापिस नहीं दिया । तब उनको सारंग्वो ब्राह्मणों ने उसके विरोध में घरना दिया और अनजल त्याग कर मर गए ।

हमारे यहाँ सत्ता के सामने बीकानेर महाराजा सूरसिंह के समय (सन् 1914) में दिये गए एक घग्ने की असफलता के कारण किले के सामने ही दो व्यक्ति बिना जलाकर मर गये । महाराजा ने उस स्थान पर सूरसागर तालाब बना दिया । पुलसाद के निवासी पानिया (ब्राह्मणों की एक पारोक उपजाति) की विचित्र कथा भी यहाँ प्रचलित है कि एक व्यक्ति तुम्बे (इन्द्रायण) की बेस से उलझ कर गिर पड़ा और उस पर तागा बन्ने वही बठ बन प्राण दे दिये । कालू में बाप, बटे पर कुपित होकर लवपरा करते हैं, तब मस्तक में दाढ़ी भूँछ के बाल (केग) बढा लेते हैं । मद्यार और त्याग के समय अनजल तन का त्याग कर देते हैं । पुराने समय में घरने का रूप बनाने समय प्रथम एक आदमा अपना शरीर छेदन कर खन से विछायात रग देता । तब उस पर दूर दूर से बुनाय हुए घरनाधारी आकर बठने और भूँछे-भूँछे से रहकर पाँच सान दिन तक द्वाट पूजन किया करते थे । इसी मध्य, सामने बाल प्रतिष्ठित जन उनको मना लेते ता घरना सफल माना जाता, नहीं तो वे फिर पुन तयार होकर घरने का उग्र रूप बनाते । उस उग्र रूप की चौड़ी कर्ता बढा जाता था । चाने का मतलब किसी एक पृथ्व या स्त्री को तेल लगाकर जला देना होता था । इसमें एक गाय को भी साथ जलाते थे । कतिपय घरनाधारी हाथ पर जीभ तथा गले पर बटारी चला लिया करते थे । उनमें से मग्ने वाले मर जाते किन्तु असफल घग्ने से बच्चे-सुबे लोग घायनाबस्था में अथ दृश्य स्थान पर जानकर पराक्रमी जावन यावन किया करते थे । यह प्राचीन प्रथा कृत्य, नायित एवं विकराल बने ब्राह्मणों से दवाव रूपी गग्ने व रूप में सुन्द

1 वि० सं० 1960 के लगभग स्थानीय भादणियों की माता का बडा मत्सु भाज (मरे मारणी) नहीं हुआ । तब ब्राह्मण ने उनकी बदमासी करन व सिए माता बनवाकर प्रसारित करवा दी थी । 'मादाणी रे । तर लाग्या जलम न पाणी ' माऊ अे । तन, सर सारणी काऊ ।' व अपमान महन नहीं कर सके और अथ स्थान पर जाकर बस गए । इस तरह में यहाँ किसी भाई न एक द्वाट बन का गीत भी प्रसिद्ध करवा दिया था ।

हुआ जान पड़ता है। परगुराम श्रेण और चाणाय जैसे गुरुओं को इस परम्परा का प्रथम कडिया कही जा सकती हैं। मध्यकाल के बाद चारणा और पुराहिती का धरन हुए अधिक प्रचलित हैं।

कालू में कालिका जी के भापे अपनी लाग लूण (मैंट राशि) लेन "लिए जीभ का खड कर लिया करते और दीश राड करने की धमकी भी लिया करते थे। अगस्त ई स 1955 में रा० मिडिल स्कूल कालू के छात्रों ने माता जी के मंदिर में जाकर बिना आपा कु ड का पानी पी लिया, भक्त राधाकिशन ने उसने विरोध में अपनी जीभ का खड (छेदन) कर लिया था। गाँव में किसी के अनतिक्रम कार्य कर लेने पर श्री भूता-राम, भक्तदान प्रभति कुछ सज्जन उसका पश्चाताप करवा कर ही उस स्थान से हटते थे।

कालू और उसके निकटीय गाँवों में सती प्रथा प्रचलित थी। अज्ञानता वग इन सतिया का स्मरण कराने वाले स्मारवादि को यहाँ के लोग नहीं बचा सक। पर तु जूनकरनसर तहसील के क्षेत्र में देवसी रूप काफी सती स्मारक मिलते हैं। सती देवतियों की भाँति इस क्षेत्र में बीर, जुझारों के बहुत से चबूतरे भी पाए जाते हैं। कालू में भानीनाथ की जगह में और हसेरा में जमनाथ जी की बाड़ी में जीवित समाधियाँ भी हैं। गाँव जूनकरनसर में खरथ जी बूचा और धतजी चौहान धम-भाई थे। खरथजी यह लोक स बूँचकर रहे थे। उस समय अखजी चौहान मुसाफिरी स पाड़े चढे हुए जूनकरनसर में प्रवर्णित हुए और सीधे खरथ जी के पास पहुँचे। खरथजी के साथ धतजी का बड़ा प्रेम था और जूनकरनसर के कुछ लोगों ने खरथजी की ल्हास (शव) को दमशानी की अपनी रेलगाड़ी में जलान नहीं दिया। वे कहते थे—“ल्हास को अपने गाँव ले जाकर जलाओ।” अखजी जो बीर पुरुष थे वे अपने धम भाई की रात की अटक ल्हास को अपने खोने में लेकर बिता पर बठ गए और अपने पक्ष के लोगो को कह दिया—“आग लगा दो।” ल्हास को रोकन वाले लोगों की अखजी की वीरता के सामने हिम्मत नहीं बनी और अखजी खरथजी एक साथ जल गए। जूनकरनसर में बुजुर्गों की छत्री सम्भवत इही पर है।

कालू में फाँसी—अफीम के आत्मघात तो कम, किंतु बूँआ में गिरकर मरने जाने के हर साल एक ही पुरुष स्त्रियों के भूखु मामले हो जाया करते थे। आखिर गत दशक में सूत पड़े बूँआ का पचायत ने लोहे की मजबूत आसी से बंद करवा दिये। तब जाकर ये आत्मघातें बंद हुई हैं।



1 वि०स० 1971 में राधाकिशन के दादा माता जी के भक्त भोमा ने किसी स अडकर अपनी जीभ पकड़ कर कटारी से काट ली थी। वि० स० 2039 के ब्रासाज के नव-रात्रों में राधाकिशन के मन्त्रले वेने न चमत्कार बतान के लिए अपनी जीभ का खड कर लिया।

नवम प्रकरण

(नमो मात्रे पृथिव्यै ॥२ अथर्व०)

ऐतिहासिक परिपाद्य—राजस्थान और काल

इतिहास का स्वरूप—जिसी भी राष्ट्र अथवा समाज के इतिहास से हम उसके अतीत समय की सृष्टि एवं उत्थान पतन स्वरूप जमिन कहानी भिन्नती है। यह पूर्वजों की बल बुद्धि एवं प्रगति का चिन्त्यायी यशस्वी स्तम्भ होता है। उस भूतकालिक ज्ञान से वर्तमान समृद्ध बनता है और भविष्य भव्य प्रकाश पाता ॥ जो देश और जाति उन्नत होते हैं, वे बारम्बार अपने इतिहास की उज्ज्वलता का पथ प्रदर्शन लेते रहते हैं। अंग्रेज यहाँ आये तब उन्होंने पहले पहल भाषा एवं इतिहास का पता किया था। डॉ० श्री ओमा के शब्दों में—

‘इतिहास जीवन और जागृति का प्रमाण है।’¹

इतिहास शब्द की बनी महत्ता है। भारतीय परम्परा में इतिहास चतुर्वर्ग विद्याओं में एक विद्या है। पुराण शब्द भी इतिहास का उपलक्षण है। इतिहास नाम का प्रयोग अथर्व वेद, सप्तम्य ब्राह्मण महाभारत, निरुक्त भाष्यवृत्ति, कौटिल्य अर्थशास्त्र और शुक्रनीति आदि अनेकों ग्रन्थों में हुआ है। इतिहास की महिमा का वर्णन मनुस्मृति और बृहद्देवता में ‘इतिहास पुरावत् ऋषिभिः परिकीर्त्यते’ लिखा हुआ मिलता है। अमर के ग्रन्थ में भी ‘इतिहास पुरावत्तम’ इतिहास और पुरावत्त का नाम साथ है।² भरत मुनि ने इतिहास को नाटक का सारोप माना है— इतिवत् हि नाट्यस्य गरीर’ अथर्व वेद में तो पुराण का स्पष्ट अर्थ इतिहास है—

इतिहास पुराण पञ्चम वेदाना वे इति’—(याग भाष्य 462) वेद पुराण और रामायण, महाभारत ही इतिहास के लक्षण हैं। इनके सिवाय अवदान (बौद्ध साहित्य) खरित अशुखरित (रामायण) तथा (भामह) परिक्या (हेम चन्द्र), परकृति (राजशेखर), अनुवगदलोक (बामपुराण) आदि अनेकों शब्द इतिहास विद्या के वाचक रूप मिलते हैं।

इतिहास की व्याख्या—इति का अर्थ है ममाम्नि और हास का अभिप्राय घटित घटना वर्णन है। पर दूसरा साहित्यिक अर्थ— इति=ऐसा, हास=हुआ। ‘मानि ऐसा हुआ। ऐसा हुआ।’ इस पर प्रत्यक्ष व्यक्त की जिज्ञासा जाग्रत हो जाती है कि— ‘कब हुआ? कसा हुआ? क्यों हुआ?’ अतः एवं इतिहास पढ़ने की उत्तुक्ता मन में लिए ही प्राचीन ग्रन्थ पढ़े जाते हैं।

राजस्थान में इतिहास गत दो ढाई शताब्दों से निखने के प्रयत्न पाये जाते हैं। दयालदास की रूपात और डब्लू० पी० पॉवलेट, सर विलियम हटन जैसे लोगों ने गज टियरस लिखने की गति प्रथा चलाई। बनल टाड तथा जनरल कनिंघम राजस्थान की

विचित्र वास्तुशिल्प से सजाया हुआ इतिहास निर्माता बन। वि. स. 1942 में मु. मीहनलाल ने 'तयारीख राज श्री बीकानेर' तथा कुवर कहेयानू देव का 'बीकानेर राज्य का इतिहास' सन 1912 में छपा। बीकानेर की स्थिति (उत्तर) में सब राजाओं की भाँय कुटुंबियाँ बनी हुई हैं।

कालू राजस्थान के उत्तरी भाग में बसने वाला एक गोरवाँ बन गाँव है। आयुष्मणि न यहाँ की निकटस्थ बहन वाली मरस्वती नदी के किनारे की बंदी कच्चाओं का सज्जन किया था तथा श्रद्धा विश्व भायम के सदेन में उठाने जानी आयुष्मणि का उदघाटन प्रमाण किया था। इसके पश्चात् ब्राह्मण काल में मरस्वती ध्वस्त इतिहास के द्वारा इसी सग्स भूमि पर वस्तु से अवधारण यहाँ भी मिल गयी।

भूतपूर्व बीकानेर राज्य का कुछ भाग बागल नाम का विशाल भूभाग कहलाता है।¹ श. १००० ई. में २ पृष्ठ 229 में उक्त राज्य का पुराना नाम जागल देना बताया है—

स्वर्गात्तृणायस्तु प्रवात प्रचुराणप ।
मत्तो जागला देना बन्धा यदि मयुन ॥'

यहाँ में वर्णित आर्यों की महान उत्तम नदी मरस्वती' इसी भूमि का परित्र करना हुई एवं रगमहन के पाम मरुपद्धति का अपन वक्ष स्थल में ममेदती हुई आग चलकर मिथ नदी के पाम समुद्र में गमा जाती थी। इन मरु जीर जागल भू भाग की सम्पत्ति बड़ी अनुठी है।

(भूमि जन और जन की सम्पत्ति इन तीनों की सम्मिलित सजा गयी है।)

पूर्व मध्यकालीन इतिहास जनसंज्ञा है कि राजस्थान प्राचीन काल से ही स्वाभिमानों व वीर लोग का उम क्षेत्र और भारतीय इतिहास का क्षेत्र विद्यमान है। डॉ० श्री आभा के अनुसार— प्राचीन काल से लगाकर वि. स. 1249 (ई. स. 1192) अर्थात् अजमेर में मुसलमानों का राज्य स्थापित होने तक इतिहास के साक्ष्य उस काल के गितालेख, ताम्रपत्र और सिक्के आदि हैं। 'गुह्य' के सङ्कोच शिनायेय त राजीन, राजस्थान के आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक तथा राजनीति जीवन पर काफी प्रकाश डालते हैं। मान चान्नी तथे और मिथिन साधुना के उन सिक्के पर विपुल छत्र हाथी घाँटे चक्र पेड़ देवी शक्तिओं की आकृतियाँ तथा सुवर्ण नक्षत्राणि खुद हुए मिले हैं। यहाँ स्मारक मंदिरों के खड्डों और अन्य शिल्पकला सम्बन्धी वस्तुएँ व ऐतिहासिक साहित्य (प्राचीन काल, रामो, वधावलि) आदि सामग्री भी प्राप्त हुई है। उपरोक्त प्राचीन सामग्री कालू और उम्मेद काकड़ सीमादी गाँवों में भी पाई जाती है।

आइए अवधारी के रचयिता अबुलफजल के अनुसार उक्त समय प्राचीन गाँवों की अर्थ व्यवस्था वण आश्रम धर्म पर आधारित था। निम्न सेवा कार्यों का करने वाले धूर्त कलाते थे। डा० जी० एन० शर्मा ने लिखा है कि ये लोग अपने कामों से उत्तर पोषण नहीं कर पाते थे उन्हें खेती और पत्थर ढोने की छूट थी। जन साधारण का भोजन रावण राटा था। राव प्रातः केवल रावड़ी और मध्याह्न रोटी या खीर खाकर दिन

1 बीकानेर राज्य का इतिहास—प्रथम भाग पृष्ठ 5

2 मरु जागल (पत्रिका) सन 1979 स. श्री भूगर्भ राठी ।

व्यतीत करते थे। दाल लापसी की दावतें हुमा करती थी। गरीब अमीर के जीवन में बड़ा अंतर था। कृषक की हालत से तोषजनक नहीं थी। शासन व जनता के बीच आपस में तुमका' सम्बन्ध चलता था। जनता के भौतिक एवं धार्मिक सुखों की ओर राज्य का पूरा ध्यान रहता था। ब्राह्मण तथा व्यापारी लोग शासन के सहारे अच्छी दशा में रहते, लेकिन अकाल आदि के समय गरीबों पर बड़ी भारी मुश्किल बन आया करती थी। वस्तुओं के भाव सस्ते होने पर भी दुर्भिक्ष के समय लाकड़ें स्वयं हालाँ भीग लिये रह जाते या बच्चे तक बँच दिया करते थे। किसान को अपनी पदावार का बीड़ा और पाँचवा हिस्सा राज्य की मालगुजारी में देना पड़ता था। कभी कदा कूत, लाठा बटाई आदि पुराने तरीका को भी राजस्व वसूली के लिए अपनाया जाता था। किंतु मुसलमानों के भारत प्रवेश तक चार सुटेरो का भय अधिक नहीं था। क्योंकि अपराधियों को सख्त सजायें दी जाती थी। उस वक़्त चोरी के हाथ और झूठे व्यक्ति की जीभ तक काटली जाती थी। भय वगैरा समाज में ईमानदारी व धर्मप्रियता का प्रचलन अधिक था।

बौद्ध धर्म राजस्थान से उठ चुका था, मगर हिंदुओं की जाति प्रथा उस समय बड़ी कट्टर बन गई थी। ये लोग गंगा हूणों व विदेशी सारी जंगली जातियों को मलेच्छ कहन लगे थे और छुआछूत का बालबाला हा गया था। धनी लोगों के लिए बहु विवाह की छूट थी। लड़की का वारह वष और लड़के का सोलह वष में विवाह कर देना धर्म माना जाता था। स्त्रियों की पुनीत भावना स्थापनीय थी। सती प्रथा में पूर्ण विश्वास था।

बारहवीं शताब्दी से राजस्थानी जनता में मुसलमानों का मिश्रण हो गया। दोनों जातियों में आपसी घणा के भाव थे। इसलिए हिंदू औरतों पर बुराई थी। वे अपने बचाव के लिए अनूठा जीहरसत अपनाते लगी। चित्रकला गान विद्या और नृत्य का अधिक प्रचार होने लगा था। मुसलमान धार्मिक जोग के साथ स्वाभिमानों नरेशों को पराजित करने पर उत्तारु हो गए थे। ई. स. 1336 के पास सिसोया के हम्मीर ने आगे मुहम्मद तुगलक की बुरी तरह हरा कर सदा के लिए राजस्थान से निकाल दिया था। ई. स. 1459 में जोधपुर और सन् 1485 में बीकानेर गहर भी बस गये थे।

सोलहवीं शताब्दी के मध्य राजस्थान के राजपूत नरेश आपस में झगड़ते हुए कमजोर हो गये थे। इसलिए राजस्थान परतंत्र हो गया था। जनता धर्म की ओर जा रही थी। जन मंदिरों शिलालेखों तथा हस्तलिखित ग्रन्थों से मालूम होता है कि इस समय जन धर्म का प्रचलन अधिक हो गया था। भीरा दादूदयाल तथा सुन्दरदास आदि भक्त कवियों की रचनाओं से भक्ति मार्ग द्वारा भी ब्रह्मण्य धर्म का प्रचार हो रहा था।

ई. स. 1556 से मुगलों व राजपूतों के ब्याहिक सम्बन्ध बनने लग गये। सन 1559 में चित्तौड़ के महाराणा उदयसिंह ने अकबर से उदासीन रहकर राज्य एवं धर्म की सुरक्षा हेतु उदयपुर बसाया था। ई. स. 1572 में उनकी मृत्यु हो गई तब उनके पुत्र प्रतापसिंह ने राज्य गद्दी सम्भाली। जोधपुर में राव चन्द्रसेन और आमेर के मानसिंह उस समय यादगाह के साथ थे। आगे चलकर राजस्थान के राजाओं को औरंगजेब भी अपने पक्ष में करना चाहता था, पर सन 1657 में औरंगजेब से बिना अनुमति लिए ही बीकानेर नरेश

वरणसिंह उसे दक्षिण में छोड़कर बीकानेर चला आया था। इससे पश्चात मुगल साम्राज्य का पतन होने का समय आ गया। बादशाह औरंगजेब की हिंदू धर्म विरोधी नीति के कारण राजपूत सिक्ख, मराठा एवं जाट भी बादशाह के विरोधी बन गये। राजस्थान ही नहीं, आगरा मथुरा अलीगढ़, मेवात मेरठ आदि स्थानों के जाट मालगुजारी वृद्धि के सवाल को लेकर काफी उग्र हो गये थे। मंदिर मिराने के प्रश्न पर मथुरा के जाटों ने मुसलमान फौजदार को मार ही डाला। बादशाह ने जाटों का दमन करवाना चाहा। हिंदुओं पर ज़िज़्याकर लगाया। लेकिन सन् 1685 से लेकर 1695 ई० तक जाटों ने बहुत सी ज़िदियों पर जाट राज्य की बड़ी घुमा दी थी।

मुगल साम्राज्य के नासबंदी में अकबर चतुर्थ बादशाह था। उसने राजपूतों के साथ विवाह परम्परा की नीति अपनाकर एक बहुत बड़े सपप को टाल दिया। बादशाह साम्राज्य का सर्वोच्च शक्ति था। उसने नीचे अमीर उमराव भी पर्याप्त समृद्ध थे। उस समय मध्यम श्रेणी के लोग कमचारी व्यापारी एवं कलाकार सम्पन्न समझे जाते थे। हिंदुओं में ऊँच नीच का भेद भाव बना हुआ था। राजपूत, ब्राह्मण, वश्य, कायस्थ आदि लोग अपने को बड़ा समझते थे। साधारण वगैरे किसान मजदूर और औरतों की हालत बर्तार थी। सती होना अफीम खाना, फाँसी खाकर मर जाना आदि आत्म घात चलते थे। दुर्मिष्ट, महामारी आदि आपत्ति के समय जन साधारण का जीवन व्यतीत करना मुश्किल हो जाता था। ई० सन 1578 में एक भीषण अकाल और व्यापक पड़ा था। जिसमें बीकानेर के राजा रायसिंह न प्रजा के सुख दुख का ध्यान रखकर राज्य की ओर से तेरह महीनों तक अन्न भंडारों से भूखी जनता को अनाज दिनबाने की गाँवों तक के सुन्दर व्यवस्था करवाँटी थी। देवालयों की श्रृंगार के अनुमार उस समय वह अपने राज्य में महामारी के समय दवाइयों का प्रबंध भी करता था। कालू का प्रबंध राज्य के पटवारी तथा गाँव के मुखिया द्वारा संचालित होता था। पटवारी भूमि के मोटे कामजात रखकर उनके मुताबिक राजस्व वसूल करता था। स्थानीय व्यवस्था हेतु गाँव की पंचायत में एक मुखिया और अन्य पुल्लता पुरुष होते थे। ये सब गाय तय करने, धार्मिक, सामाजिक कार्यों पर भिन्न जुलकर विचार विमर्श करते थे। गाँव की स्थिति सुलगातिग्य थी। डॉ० गापीनाथ तमा के अनुसार हर गाँव के लोग किसी भी जाति के होने हुए एक दूसरे के सुख दुख में साथ बँटाते थे। हर मौके पर एक परिवार के होकर रहने थे। छोटा या बड़ा कोई भी उत्सव राजस्थानी काव्य व उद्धरणों के दोहराने से ही सफल माना जाता था। कालू में जन उपासक रामस्नेही सम्प्रदाय एवं नाथ महत शिष्या को बड़ाका देन में प्रयत्नशील थे। वे अपने शिष्या का धार्मिक ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ तैयार करके पढ़ाते थे। ये पुस्तकें हस्तलिखित होती थी। गाँव के साधु सत अपने व्याख्यानो तथा शिक्षा की कथा वार्ताओं से प्रौढ़ों को भी आकर्षित करने में बड़े पटु थे। स्थानीय शिक्षक, पेड़ या फूस के छाटे छप्पर के नीचे खुले मदान में बैठकर बालकों को शिक्षा देते थे। उस समय कालू के कुछ लोग बाहर पढ़ने भी जाया करते थे। गाँव की आर्थिक स्थिति अच्छी थी, गाय भेड़ के दूध व उसके पदार्थों का उत्पादन था। भेड़ वक़रियों की उत भी गाँव के लोगों की जीविका का साधन थी। कालू गाँव के अधिस्तन लोग उस समय कृषि पर आधारित रहते तथा मात्र धर्मविलम्बी थे।

हिंदुओं को जबरन या पदसाध से मुसलमान बनाया जान लगा। तब से हिंदुओं ने अपना देव पूजन, शिक्षा, साहित्य और सृष्टि तथा धार्मिक जीवन बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया। समय के बहिःसेवक इसी भावना से धार्मिक साहित्य की रचना करने लगे। गाँवों में अनेक तरह की धार्मिक एवं 'याय' व्यवस्थाएँ शुरू हो गई। इस समय बीकानेर के पृथ्वीराज बड़ी जागरूक कविता किया करते थे। बालू में कालिकाजी का प्राचीन समय में विश्वास था। मध्यकाल की एक धार्मिक कथा यहाँ प्रचलित है कि अहिच्छत्रपुर (नागौर) के शासक ने एक ब्राह्मण को वचन दिये—'तुम जितनी दूर की एक दिन में अपनी स्थाई (जेटनी) पर यात्रा कर भूमि तप कर आओ, उतना राज्य तुम्हारा होगा।' ब्राह्मण अपनी स्थाई पर बहुत दूर की यात्रा करके वापिस अहिच्छत्रपुर की तरफ जा रहा था, तब दिन ढल रहा था और ब्राह्मण गाँव कालू से होकर कालिकाजी के मढ़ के पास से निकल रहा था कि अचानक उसकी स्थाई गिरकर टूट गई। ब्राह्मण ने घोष दी, 'देवी का परमा हुआ—'क्यों रे ब्राह्मण! मेरे स्थान को नहीं जाना?' फिर देवी ने ब्राह्मण की प्रार्थना पर स्थाई को टूटी। हिंदुओं में गोपनीय ढंग से चौकी की मेल जोड़कर पड़ी कर दी और कहा—'चला जा। मगर राजा के शहर के बाहरी दरवाजे पर पहुँचकर स्थाई गिर जायेगी।' वसा ही हुआ। मध्या स्थाई कहा पहुँचकर गिर पड़ी। उसकी हिंदुओं में कीर्ति ठोकी जुड़ी हुई मिला।

इसी तरह मुगल काल में भी कालू की कालिकाजी की अनेक धर्मकारिक घटनाओं के साथ गीत मिलते हैं जो देवी ने अपने भक्त राजाओं को मुगलों की कद से मुक्त करवाये हैं। जैसे राजपूताने के एक राजा को मुगल बादशाह ने बंद कर लिया था। तब राजा ने कालू की कालिका का स्मरण किया। इस पर देवी ने जेल के बगल खोलकर भक्त महाराजा को स्वतंत्र करवा दिया। बादशाह और उसकी हरेम पदर कर देवी की शरण में गाँव कालू की यात्रा कालिकाजी का धाक पूजना करने आये।

सिंह बड़ी माता हावत मार मेरो भक्त नप बार आव ।

हाया पगा री बड़ी बटाई गळ सू तोष बडाई ।

पद पछाड मो तेर बाग्याह न अठ हुरमा अस्ला जप ।

आगे सूब चीक धाली तेर भवा म उजियाळो ॥

इस तरह कालू की कालिकाजी के तत्कालीन धर्मकारिक काफी गीत मिलते हैं। औरंगजेब मरा मुगलों का बन्धन गया। सन् 1612 में बराकुरसाह भी नहीं रहा। जजिया कर हटा और साथ ही डेढ़ सौ वर्षों के मुगल राज्य का अंत हुआ गया। पर मारवाड़ प्रदेश अजीतसिंह अपनी पुत्री का विवाह बादशाह के साथ करके बीकानेर राज्य का फौजदार बना।

अबबर के समय से अब तक प्रांतिय संगठन वसा ही चलता था। अंग्रेजों ने इस भक्त इस प्रांत का नाम राजपूताना ऐजसी रखा। मगर अब इसमें चारों ओर मरहठे घुसने लगे। जगह जगह भयकर विरोध और सघष चले। कई राजाओं ने उनसे संधिया भी की और कई अंग्रेजों से मिलने लगे। मार्च 1818 ई० में बीकानेर महाराजा श्री सूरतसिंह ने मरहठों के कारण अंग्रेजों से संधि करली।¹

1 लगभग सत्तर बर तक मरहठों और पिडाहियों से प्रताडित रह लेने के पश्चात् राजस्थान की रियासतों ने अंग्रेजों के संरक्षण में पहली बार शांति की स्वास ली। इस दासता को उन राजाओं ने वरदान के रूप में माना और अंग्रेजों की सहायता करने में ही अपना हित समझा है।

खालसा की रकम रीति—

बीकानेर जिले के जागीदार अपने क्षेत्र का भू राजस्व, जो निश्चित द्रव्य था, यथा समय राज्य में दाखिल करवा देते थे। घोषणा, चारणा, देवस्थाना तथा काम करन वाला के लिए भूमि की रकम प्रायः माफ रहती। खालसा ने काश्तकारों से हंसल (लगान) अथ बहुतेरी लागो के साथ लिया जाता था। इस तरह से बीकानेर का भू-राजस्व लगभग लाय रूप्य जनता था।

काश्त के साथ किसान पशु पालन अधिक मात्रा में करते थे। बीकानेर में रजा, ऊन की कम्बलें हथियार आदि बनते थे। बड़िया कपड़े हाथी दास चावल मेवा नारियल, मिच मसाले आदि पदार्थ बाहर से मंगाए जाते थे। किंतु दुर्भाग्य के कारण बहुत से लोग जानवरों के साथ घघर उधर भटकने में मर जाया करते थे। घान (अन्न) अधिक महंगा हो जाता तब लोग अपने परिवार तक को छोड़ दिया करते थे। इ. स. 1764-94 1804-12 में भयंकर अकाल पड़े थे। कालू गांव भी इनसे उजड़ा बना है।

राज समाज और कालू—राजस्थान में इस समय शिक्षा व कला की तब छानति हुई, पर सामंतशाही सम्बन्ध काफी ढीले पड़ने लग। राजा भाग राजपूता के सिवाय अन्य जातियां के भाड़े सैनिक रखने लग गये थे। क्योंकि राजपूतों को सेवा के बदले जागीरें देना पड़ती थी। इसलिए वे कभी भी गद्दी छीनने को उत्तारक हो जाया करते थे। तब राजा लोग मलाह तथा नासन व्यवस्था हेतु ब्राह्मणों महाजन एवं कायस्थ लोगों को रखने लग गये। विषय शासना तथा चरित्र हीनता बढ़ गई थी। सुरा-सुंदरी का प्रचलन मनोरंजन का प्रमुख साधन बन गया था। शराब और अफीम का जोर राजपूता में और उनके साथ रहने वाले अन्य लोगों में भी फैल चुका था। स्त्रियां विलास की वस्तु समझी जान लगी, तब महिलाओं में सती प्रथा का उत्साह भी बढ़ने लग गया था। कई स्त्रियों को मजबूरन इस प्रथा का पालन करना पड़ता तथा त्याग, बलिदान और सम्मान के लिए ससार के अद्वितीय जोहर व्रत द्वारा भी सतीत्व की रक्षा होती थी। हजारों रमणियां प्रिय पुत्रों को गोद में लिए मृत्यु का आलीगन कर लिया करती थी। सदगुणों के विकास का इससे अधिक भागवत रूप प्राचीन एवं अवाचान समयों में और क्या हो सकता है ?

इसलिए कालू गांव के निकटीय अनेक गांवों और जायितों में सतिया हुई है तथा सभी परिवारों की अपनी सतिया गार्ई जाती हैं। यहां की जनता में सदक सती और व्रतगान भाग रहा है। कालू गांव में अभी एक महासती आलेख की प्राप्ति हुई है, जिसको नीचे लिखा जा रहा है।

सन 1973 के जून मास में गांव कालू के घनाथ तालाब की पाल खोदते समय जमीन में दबी हुई एक महासती की देवली (प्रस्तर अभिलिपि) प्राप्त हुई। देवली की गांव के लोग ने बड़े उत्साह पूर्वक देखा। इन पवित्रता के लेखक ने भी देवली का अवलोकन किया तथा प्रस्तर अभिलेख को लिख लिया। सूचना मिलते ही इसे तत्कालीन जिलाधीश बीकानेर ने मंगवा लिया। पता नहीं उक्त देवली अब कहाँ है ?

यह प्रस्तर अभिलेख खण्ड 1.24 मीटर ऊंचा 0.31 मीटर लम्बा एवं 0.08 मीटर चौड़ा है। इसके ऊपर के भाग में एक स्त्री एक पुरुषाकृति को गोद में लिए बठी

है। वह स्त्री की आकृति से छाटा है एवं उसका पुत्र प्रतीत होता है। स्त्री आकृति कदाहिने हाथ में माला एवं बाया हाथ उगने वक्ष पर है, जिसमें वह कुछ लिए है जो स्पष्ट नहीं है। पीछे अग्नि शिखा दिखाई दे रही है। इस आकृति के ऊपर मूय एवं चंद्र चित्रांकित हैं। लेख का पाठ निम्नानुसार है—

समत्त 1798 मती च
त वद 11 वर आदत व
र माहसना वठ ट 2) सुज
गार माय सती हुई गा
व बालू मुहूत ध्रुव रूप म
गिगना (?) देवली चडा
ह महाराज श्री श्री ज
रावर सघ जी मुहता
श्री वपतावर सघ

[संवत् 1798 की तिथि चतुर्थी 11 दिन आदितवार (रविवार) का कालू गाव में महा मुहूत में अपने बेटे एवं स्वजना के साथ देवली चडकर महासती हुई। इस अवसर पर महाराज श्री श्री जोरावर मिश्र जी² एवं मुहता (दीवान) श्री वपतावर सिंघ जी वपस्थित थे]

प्रसंगोक्त लेख में लिपि सभ्य थी जनेका अनुदिष्टा है। फिर भी महाराज श्री जोरावर सिंह जी के राज्य काल में अपने बेटे के साथ महासती होने का यह प्रथम अभिलेख प्रकाश में आया है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेख की 6 से 9 पंक्ति में महाराज श्री श्री जोरावर मिश्र एवं मुहता (दीवान) श्री वपतावर सिंघ जी का नाम महासती होने के अवसर पर उनकी उपस्थिति का प्रमाण है।¹

उदात्त भावनाओं में आया कालू—इस समय यहां के हिंदू राजा और अंग्रेज लोग धर्म के लिए काफी लचीले तथा सहिष्णु भावना कर रहे। मुसलमान शासकों ने बहुत से मंदिर तोड़कर उनकी जाहो पर मस्जिदें बनवा दी थीं। परंतु अब उन मुसलमानों का शासनाधिकार बिल्कुल समाप्त हो चुका था। अतः यह 'के राजा-महाराजा मंदिरों के साथ अंग्रेज धार्मिक संस्थाओं को भी खर्च बाबत काफी जमीन माफी में देत रहे। धर्म गुस्सा का भी राजा लोग खूब सम्मान करते थे। वे परम्परा का निर्वाह करके संस्कृति को सवारते निवारते थे तथापि रुढ़िगत विचारों को पनपा कर सदामत का बुरा कर रहे थे। वे देवी देवताओं की पूजा, जाति-पाति छुआछूत, ओसर मासर के भोज्य आदि कार्यों में पूरी निष्ठा का पालन करते करवाने थे। बीकानेर महाराजा श्री सूरतसिंहजी ने ऐसे मंदिरों आदि के लिए बहुत से दान व ताम्र पत्र प्रदान किये थे। कालू के कान्हरीमाटी गांव गारवदेगर के महंत को दिये गये ताम्रपत्रों में से एक आलेख देते हैं जिसमें कालू का उल्लेख दृष्ट-य है —

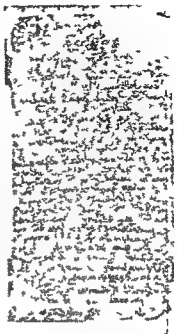
1 श्री गौ० हा० रा० का इति० पृष्ठ 307 एवं 321 पृष्ठ 322 है

2 राजस्थान भारती सप्ताहिक जुलाई-दिसम्बर 1974 भाग 16 एवं 34 सादुल राजस्थानी रिमच स्टोर्ट्यू बीकानेर।

सही

॥ श्री लिछमीनारायणजी ॥

॥ स्वस्ति श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा शिरोमणि महाराजा जी श्री सूरतसिंहजी वचनामनु श्री जी साहब मेहरबानी करके स्वामी हरिदास मोहनदास के शिष्य को इतनी जमीन ताम्रपत्र करके दे दी है। ताम्रपत्र पर अमल किया जायेगा तथा इसके अनुसार गांव गारबदेशर में असतम के पीछे 300 बीघा जमीन अक्षरे तीन सौ डोरी बीस के हिसाब से मापकर दी है। पश्चिम उत्तर दक्षिण दिशा में गारबदेशर के गुवाड़े आगे वामिन्द हैं और उसी जगह निवास करेंगे। जगात की तरफ से नई माप गारबदेशर के पीछे दी जायेगी। पांच पचास बघ बाद स्वामी जी अथवा स्वामीजी के शिष्य गुवाड़ा उठाना चाहेंगे तो उठा नहीं सकेंगे। इस जमीन में गारबदेशर की गुवाड़ी नहीं बसाई जा सकेगी बाहर से आई हुई राजपूत व ब्राह्मण जाति की गुवाड़ी (घर) निवास करेंगे। खेत चार (4) जमीन बीघा 975 अक्षरे बीघा नौ सौ पचहत्तर, डारी बीम के हिमाव से आगे पट्टे की तरफ से दी गई थी। उनके अनुसार दी गई है और इस पर अमल किया जायेगा।

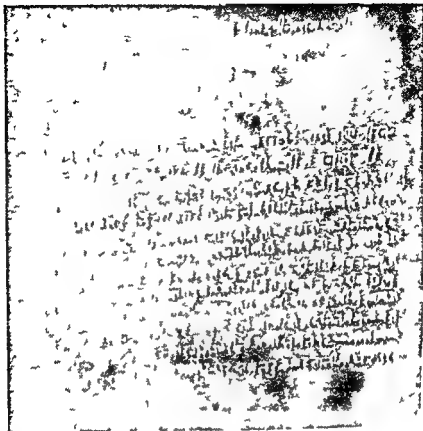


ताम्र पत्र

जगल के खेतों में पशु जैसे चरते आये हैं जैसे ही चरेंगे। गांव कालू में खेत पांच (5) छाटा मोटा, जमीन बीघा 750 अक्षरे साढ़े सात सौ डोरी बीस के हिसाब से आगे जाटो की दी हुई है। इसी के अनुसार अमल किया जायेगा। सारी जमीन बीघा 2025 अक्षरे बीघा दो हजार पच्चीस डोरी बीस के हिसाब से है। बाहर तालाब गारब-देशर के पीछे है जिसमें पशु सदा की भांति पानी पियेंगे। श्री जी का पुण्य बढ़ावेंगे। सबत् 1852 मोति दूजा भादवा वदी 5 मुकाम पायतस्त श्री बीकानेर कोटदाखल। कुआ 1 करमाणो तथा तालाब 1 नडकी। श्री ठाकुरजी भगवान की सेवा भाव में।

श्री लक्ष्मीनारायणजी

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज राजराजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि श्री रतनसिंहजी महाराज कुवार श्री श्रीराम सोहजी वचना तू श्री जी साहब कीरपाकर गांव गारब-देशर र महल बदरीदाम अमरनाथ र चेल हरीदास र पोता चेल बरामी न वा गारबदेशर र मडल र बरामी या न ईया बरसा में भाछ वा नतो वा डगरा भाडो लागो सु हम श्री जी सायबा कीरपा कर छोड़िया छे मु भाछ वा नतो वा नीजराणो वा डगरो भाडो वा गढ़ सु रकम उत्तर सु सरब माफ कीवी छ सु खेचल न हुसी श्री जी सायबा रो पुन बघार-सो तरा तावा पत्र कर दोयो छ सु माहारो पुत पोतो पालीया जा सो माहारा साम थरमी धाकर हुआ मुद या कन लवण री अरज न बरसी वही म चुन गुनो आसी तो



साम्राज्य

अदालत में बुलाया तपास कर गुन साहू घर साहू गुन गारी लीज सी समन 1900 मासी बमाल बना 7 मु । पाय तबन थी बीकानेर कोट दासल हवो मोहतो सासाधर ।

गाँव कालू और बीकानेर राज्य के शासक—राजस्थान में मरहटा शक्ति का प्रवेश ई० सन् 1726 के लगभग हुआ और इनने हान वाला सचय ई सन् 1818 में समाप्त हुआ । जब यहाँ के अधिकांश नरेशों ने अंग्रेजों के साथ सहायक संधियाँ कर लीं । इस समय के बीच यहाँ के नरेशों की बड़ी दयनीय स्थिति थी । सम्पूर्ण राजपूताने के नरेशों में एक विवशता घर कर गई थी । "मराठों ने राजपूताने के कई राज्यों पर चोप लगा ली थी, पर तु बराबर उनके पास नहीं पहुँचती थी । जब उन्हें फौज का खेतन चुकाने के लिए बठिनाई पड़ती थी तब उन्हें अलग अलग राज्यों अथवा प्रजा से जसे भी बन पड़े उसी प्रकार रुपया वसूल करना पड़ता था । इस तरह मरहटा उत्पात का मदद भय बना रहता था । जयपुर में मरहटा ने कई बार आक्रमण कर क्षति पहुँचाई थी । बीकानेर राज्य की कई रियासतें जयपुर की मरहद पर होने से मरहटों का डर होना स्वभाविक था ।

बीकानेर महाराजा सूरतसिंह ने वी स 1850 में एक परवाना ठा० ईसरोसिंह को दिया कि चुरू में दक्षिणिया की फौज लगी हुई है ।¹ अच्छे आदमी लेकर परवाना

1 राजस्थान भारता भाग 6, अंक 12 नवम्बर 1958—पृष्ठ 48—सगनसिंह ।

पहुँचते ही आधी मजल तय करने के बाद पानी पीना (शीघ्रातिशीघ्र पहुँचन)। धरती का मामला है। दरबार की धाम धर्मी होगी। अतः घड़ी एक का विलम्ब मत करना।

परवाना इस प्रकार है —

श्री लक्ष्मीनारायण जी

श्री लक्ष्मीनारायणजी भक्तगज

राजेश्वर महाराजाधिराज

गिरोमणि महाराजा श्री सुरत

सिंहजी ना मुद्राया विजयते ॥१॥

स्वस्ति श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा गिरोमणी महाराज श्री सुरतसिंहजी बचनायलु राठोर ईसरोसिध जालमसियोत जोग याँ सू सुपरसाद बचीजो। अपरब धुरु दिलगियारी फोज लागी छै। दरबार रो सामधरम होंसी सु घड़ी। रो डील न करसी हुकम छ। सबत् 1850 मिति माह मुदी 2 मु० गांव कालू।¹ (यो कागज कालिकाजी र मंदिर कालू में विराज महाराजा सुरतसिंहजी लिख्यो।)

बीकानेर महाराजा श्री मूरतसिंह जी ने ई० सन् 1808 में अंग्रेजों का सरक्षण चाहा और उसके लिये भाग की। इस समय तक अंग्रेजों की नीति यमुना नदी के पश्चिम के राज्यों में सम्बन्ध स्थापित करने की नहीं थी। इसलिए बीकानेर राज्य को अंग्रेजों की ओर से कोई सरक्षण प्राप्त नहीं हो सका। ई० स० 1812 में पुनः मूरतसिंह ने अंग्रेजों से समझौता करना चाहा, लेकिन इस बात भी उसे सफलता नहीं मिली। ई० स० 1818 मार्च में अंग्रेजों ने अपने हिंदू में बीकानेर राज्य में संधि स्थापित की। इस संधि में बीकानेर को अंग्रेजों की आवश्यकतानुसार सैनिक सहायता देने की गत मजूर करनी पड़ी। लेकिन बीकानेर राज्य में कोई सिराज सेन की छत नहीं रखी गई क्योंकि यह राज्य इस संधि के पहले, किसी राज्य को खिराज नहीं देता था। सन् 1818 की संधि बहुत महत्वपूर्ण संधि थी। जिसे आगे चलकर बीकानेर राज्य एक उसकी रियासत पर राजनैतिक आधिक एव सैनिक प्रभाव पड़े।

अंग्रेजों राज्य की सुदृढ़ता—ई० सन् 1819 से पहले ही राजपूताने के सब राज्यों ने अधीनता के साथ अंग्रेजों से संधियाँ स्वीकार कर ली थी। अंग्रेजों को उस समय बड़ी सफलता के साथ अजमेर का परगना मिला और वे व्यापारी बग से गानक-शाहशाह तक पहुँच गये थे। उनका कोठियाँ, किले सेनाएँ और विजय पर विजय आदि की उपलब्धियों से 139 वर्ष तक भारत का राज्य-शानन हाथ लगा रहा। इसलिए राजस्थान में धार्मिक सामाजिक साहित्यिक, आर्थिक एवं राजनैतिक आदि सब विषयों में बड़ा भारी बदलाव आ गया जो सन् 1947 ई० तक चलता रहा।

राजपूताने के बचे राजा महाराजाओं को एक ओर मरहठे और पिण्डारी परेशान कर रहे थे तथा दूसरी ओर अपने राज्यों के जागीरदार जूतियाँ खोलकर पीछे पड़ रहे थे। अंग्रेजों ने सन् 1810 से 1857 तक इन राजाओं को पूर्णरूप से क्षात्रित सहयोग दिया। प्रत्येक राज्य दरबार में एक अंग्रेज रेजीडेंट (राजदूत) रहता और वह

1 राजस्थान भारती, भाग 16 अंक 34 जुलाई दिसम्बर 1974 पृष्ठ 72-73—“मह लावत राठोड और सारू डा।”

सहायता के साथ भिटान, अपना प्रभुत्व जमान तथा पूरा शासन वायम करने के लिए जोरा से प्रयत्नगति कायकर रहा करता था। इस प्रकार राजपूतान में अंग्रेज अपनी सेनाएँ रखते कि राजाओं पर पूरा नियंत्रण रखा जा सके तथा राजाओं का रहा सहा हाल-हुकूम भी छीन लिया जाये।

बीकानेर राज्य के 40 गाँवा (टोबी और बेनीवाला नगर सहित) पर अंग्रेजी इशारे से सिक्खों ने अधिकार जमा लिया। सन् 1827 में अंग्रेजों ने ये गाँव पंजाब में मिलाकर बीकानेर राज्य से अलग भोजपट्ट व भारोठ उत्तर पश्चिमी क्षेत्र के अनेक गाँव फिर बहावलपुर के नवाब को दिसवा दिये।

इस समय अंग्रेज अधिकारी देशी राजवाडों से सैनिक सहायता भी लाने लग गये। सन् 1941 45 48 के युद्ध में सिक्खों के विरुद्ध लड़ने और काबुल युद्ध के समय उन्होंने बीकानेर राज्य से ऊँटों की सेना का पूरा सहयोग लिया था। अंग्रेज यहाँ के राजाओं का शासन आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर बनाना चाहते थे। निर्धारित बिराज समय पर न पहुँचने पर अंग्रेजी सरकार बज्र चढ़ाय रणतों और राजाओं से अपनी शर्तें मनवाती रहती थी। अपने हित के लिए अंग्रेजों ने यहाँ की प्राचीन शिक्षा प्रणाली को भी बदलना चाहा। इसलिए ई० सन् 1832 में राजपूताने के राजाओं को एक प्रस्ताव भेजा कि—'अंग्रेजी सरकार से अपने भारे पर व्यवहार अंग्रेजी भाषा में ही किया जाय।' इसलिए कोटा और जसलमेर के राजाओं ने अपने दरबार में अंग्रेजी सचिव रखे थे। गवर्नर जनरल की कायवारिशा के शिक्षा सदस्य लार्ड मेकाल भारत में सत्र सत्र अंग्रेजी शिक्षा संस्कृति की स्थिति सुदृढ़ करने का बड़ा इच्छुक था। ई० सन् 1819 से अंग्रेजी के स्कूल खोले और सन् 1835 में 2 फरवरी को मेकाल ने भारत में शिक्षा का माध्यम पूर्वी भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी को लागू करवा दिया। वह प्राचीन भारतीय शिक्षा साहित्य के विरुद्ध था। वह अंग्रेजी भाषा, साहित्य और विज्ञान का प्रचार प्रसार करवाता था। वह राष्ट्रियता के भावों को नष्ट करके अंग्रेजी सत्ता चलाने के लिए भारतीयों का यंत्रवत् बना देना चाहता था। राजा महाराजा इस कूटनीति से बच नहीं सके और उनकी स्वीकृति से ई० सन् 1842 1843 1844 में अंग्रेजी शिक्षा के लिए जमशद अलवर भरतपुर तथा जयपुर आदि स्थानों में अंग्रेजी पढ़ाई का पूरा प्रबंध कर दिया गया। अंग्रेजी सरकार ने उन पढ़े लिखे लोगों का भोजन देने का भी वादा किया था। राज्य से सम्बंधित लोग अंग्रेज पाठशालाओं से अपने बच्चों को उठाकर अंग्रेजी स्कूलों में भर्ती करवाने लगे।

शिक्षा के साथ समाज-सुधार की अपनी शृंखला बना लेने के लिए अंग्रेजों ने सन् 1929 में कानून द्वारा सती प्रथा पर रोक लगवा दी और राजपूतों में जो कन्या मार डालने की प्रथा थी उस पर रोक करवाया। सन् 1837 में बीकानेर के महाराजा श्री रतनसिंह तीस यात्रा हेतु 'गया धाम' गये थे। तब वहाँ सारे राजपूतों से कन्याएँ न मारने की प्रतिज्ञाएँ करवाई थी।

सत्वासीन सामाजिक स्थिति में गरीब लोग अपने बच्चा को बेच दिया करते थे। जागीरदार तथा धनवान लोग उन्हें खरीदकर घर में खेत का काम करवाया करते थे या बच्चे (पुरुष) गोला-भाला, चाकर-खवास तथा हाजरिये-नाजरिय आदि नामों से सम्बोधित किए जाते थे। लड़कियाँ होती, तब सारे कामों में छाकरी हावडी गोली,

माणस, बडेरण वगैरह नामों से पुकारी तथा मारी पीटी जाती थी। ये वच्चे पशुओं की भाँति आगे से और आगे भी बेच दिए जाते तथा बदल भी लेते थे। सन् 1847 में इस प्रथा को भी अवध घोषित करार की गई।

अंग्रेजी सरकार ने राजपूतान के लिए सन् 1849 में यायालय सन् 1889 में रेलगाड़ी, सन् 1848 में जनगणना तथा सन् 1853 में डाक वितरण की पूर्ण व्यवस्था कर दी। चैचक के टोके भी इसी समय से लगाने चालू कर दिये थे। घम भीरू लोग इन कार्यों के बादत घम समाप्त कर देने की बात का सोचने लगे। मई सन 1857 में घम रक्षा के चास्ते सनिकों ने स्वतंत्रता-संग्राम मचा दिया। उस समय मुगल बाग़शाह बहादुरशाह ने राजाओं की लिखा कि—“मैं अंग्रेजों को देख मे बाहर निवासन में सहायता देवे ताकि हिन्दुस्तान की स्वतंत्र करवाया जा सके।” लेकिन राजा लोग तो अंग्रेजों के भक्त बन गये थे। इसीलिए यह भारतीय आन्दोलन, करीब 90 वर्ष तक चल कर ई सन् 1947 में भारत को आजाद करवा सका।

जनरल सार्ल्स का इतिहास में उल्लेख है कि—“विद्रोह के कारण भागे हुए अंग्रेजों का पता करो व उनकी सुरक्षा रखने में जसी सहायता बीकानेर नृप न दी वसी अयत्न नहीं मिली। बीकानेर की सीमा के समीप हासी हिमाल तथा हरियाणा क्षेत्र के विद्रोह को दबाने के लिए बीकानेर महारानी सरदारसिंह अपनी सेना लेकर पानिपत एलेण्ड पॉलरिज के साथ गये थे। विद्रोह में हिन्दू व मुसलमान इमतिह दधिमार लिए लड़े थे कि उनका घम खतरे में था।

ई स 1858 के बाद अंग्रेजों की ओर से राजाओं के कार्यों में हस्तक्षेप हान लगे। राजा भवन बन गये पर अंग्रेज अन्दर ही अन्दर इन्हें शक्तिहीन करना चाहते थे। इसी वर्ष के नवम्बर माह में इंग्लण्ड की महारानी विक्टोरिया का आदेश प्रकाशित हुआ कि—“हिन्दुस्तान पर शासन करने का अधिकार ईस्ट इण्डिया कम्पनी से इंग्लण्ड की महारानी अपने हाथ में लेती है। अब भारत स्थित गवर्नर जनरल बाइमगय (महारानी का प्रतिनिधि) कहलायेगा।” फिर ई सन् 1884 में अंग्रेज सरकार ने घोषणा की—“किमी देशी राज्य का उत्तराधिकार वंश नहीं माना जायेगा जब तक कि अंग्रेज सरकार स्वीकृति नहीं देगा।” ऊपर उदारना दिखाने के लिए अंग्रेजों ने ई स 1861 में ‘स्टार ऑफ इंडिया’ (सितारे हिन्द) आदि की उपाधियाँ राजाओं का बाँटनी आरम्भ की। हिन्दुओं के सूर्य महाराणा उदयपुर को सितारे हिन्द का किताब देकर सूरज में सितारा बना दिया। किन्तु देशी राज्या में गाँति सुरक्षा, कुशल व्यवस्था एवं अंग्रेजी शासन की सुन्दर बनाने के लिए कुछ सुधार कार्य भी किये। इस समय भारत के मुख्य नगरों की रेल से जोड़ा गया जो यहाँ के राज्या से लाइनें निकली। जोधपुर एवं बीकानेर राज्यों ने ई स 1889 में अपनी रेल लाइनें चलाई जो भारतवाड जक्शन से जोधपुर-मेढता, बीकानेर भटिण्डा (पंजाब) तक पहुँची।¹

वसे तो यहाँ ई स 1860 से महारानी विक्टोरिया के सिक्के भी चलन लग गये थे। लेकिन बाद में उन्होंने राजाओं को समझाकर उनकी टक्कानें बंद करवायी और उनके सारे सिक्के खरीद लिए गये। अंग्रेजी सरकार यह भी नहीं चाहती थी कि देशी

1 बीकानेर से भटिण्डा लाइन कालू के तहसील मुख्यालय गाँव खूनवरनसर से होनी हुई निकली।

राज्या की सैनिक शक्ति बढ़ी रहे। ई स 1889 में जयपुर, जाधपुर, बीकानेर एवं अलवर आदि राज्यों में नई सेनाएँ संगठित करवाई जा 'इम्पीरियल सर्विस ट्रूप्स' के नाम से प्रसिद्ध हुई। अब तो अंग्रेजी प्रा तों की तरह दीवानी एवं फौजदारी कानून भी आवश्यक परिवर्तन के ढग से लागू कर दिये थे। इस वकत डाकुओं का खात्मा तथा विद्रोही जागीरदारों का दमन, सेना से अलग पुलिस व्यवस्था करने किये गये और जेलों का सुप्रबन्ध हुआ।

ई सन् 1879 (वि स 1936) में अंग्रेज सरकार क साथ बीकानेर राज्य का समझौता हुआ।¹ जिसमें हमारे तहसील मुरयाल लूनकरनसर में बनाये जाने वाले नमक का तोल निर्धारित करके इसकी खपत के लिए कानून निर्धारित किए गये। लिखित दस शर्तों का इकरारनामा बीकानेर महाराजा दुर्गरसिंह ने स्वीकार किया। पहली शर्त थी कि लूनकरनसर और छापर के सिवाय कहीं नमक कारखाना नहीं चलाया जायेगा। दूसरी—उक्त दोनों कारखानों में नमक की कुल पदावार एक वष में 30 000 अंग्रेजी मा से अधिक नहीं होगी जो उसका ब्यौरा प्रति वष अंग्रेज सरकार को प्रस्तुत कर दिया जायेगा। तीसरी—बीकानेर महाराजा ने स्वीकार किया कि नमक का आयात और निर्यात बन्द रहेगा। चौथी—नमक पर अंग्रेज सरकार से चुकी है, बीकानेर राज्य नहीं लेगा। पाचवी—किसी नवीसे पदाय या वस्तु के निर्यात को रोकने का महाराजा ने इक्कार किया था। छठी—महाराजा का शत एक दो शीन का पूरा पालन करते हुए अंग्रेजी सरकार से प्रतिवष 6000 रुपये लेने का इक्कार था। सातवी—महाराजा को फलीदी व डीहवाना का नमक अपने राज्य के खान पान वास्त बीस हजार मन हर साल खरीदना होगा, जिसका मूल्य प्रति मन, आठ आने से अधिक नहीं हो, यह अंग्रेज सरकार का इक्कार था। आठवी—नमक के पुरान सग्रह और "कर" के बाबत थी। बायसराय के निर्धारण करन पर यह कर दो रुपए आठ आने तक अव्यता था, अधिक नहीं। नवी शर्त थी कि यह इक्कारनामा अंग्रेजी सरकार की आमदनी की रक्षा है सो शर्तें पमाप्त न होने पर पलटा जा सकता है। दसवी शर्त—इक्कारनामा अंग्रेज सरकार द्वारा निश्चित की हुई तारीख से काय में लाया जायगा। यह शर्तनामा 24 जनवरी ई स 1879 (फाल्गुन वदी 30 वि स 1935) को लिखा गया और 8 मई को मजूर हुआ।² लूनकरनसर के नमक का निर्यात रोकन क लिए अंग्रेज सरकार ने चोरी लगा दी। इस तरह सन् 1879 व 82 के बीच नमक बनाने पर रोक और किसी प्रकार चुगी न लेने पर पाचवी लगाकर राजाओं को काफी मुकसान पहुँचाया तथा अनेक लोग को बेकार बना दिया। आगे जाकर केन्द्रीय सरकार के नमक विभाग की सही आमदनी ई स 1903 के अ त तक एक करोड़ ग्यारह लाख हो गई।³ बीकानेर राज्य की अंग्रेजों के साथ ऐसी संधिया पहले और बाद में भी हुई।

वि स 1८50 (ई स 1893) में भारत सरकार और बीकानेर दरबार में मुद्रा प्रचलन सम्बन्धी अह्मनाम की शर्तें निश्चित हुई। जिसमें 30 वष के लिए बाकानर की

1 ट्राटीज एगजमेन्ट्स एण्ड सनदज वि० 3 पृ० 293 95 बीका० रा० का इति० भा० दू० के पृ० 477

2 बीका० रा० का इति० 2 पृ० 479 (श्री ओझा)

3 राजस्थान का मक्षिप्त इतिहास, पृ० 203, डॉ० सुमवीर सिंह।

टकसाल स रूप्य बदलना ब द हाकर अंग्रेजी टकसाल स महाराजा ने नाम का चादी का सिक्का 'जिसकी एक तरफ सम्राज्ञी विक्टोरिया का चेहरा और नाम तथा दूसरी तरफ हिंदी और उर्दू में महाराजा गंगासिंह बहादुर, सन तथा बीकानेर राज्य का नाम एवं मारछलें हैं'—बनकर प्रचलित हुआ। फिर रेल यातायात सम्बन्धी सन्धि 15 दिसम्बर 1899 को बीकानेर दरबार और ब्रिटिश सरकार के मध्य हुई जिसका अह्दनामा महाराजा बीकानेर की ओर से किया गया।

सन 1882 में वास्तुकारों का सुन्दर व्यवस्था के लिए बीकानेर महाराजा श्री डूंगरसिंह न जमीन की पमाइश करवाकर उचित मालगुजारी निर्धारित करवादी। पहले पमाइश हनुमानगढ़ की करवाई गई। इसके बाद सारे राजपूताने में कई प्रकार के 'यायिक' सुधार हुए। बीकानेर का भी उसके फायदे मिल। बीकानेर राज्य में उस समय प्रशासनिक सुधार और सुव्यवस्था के कार्य भी हुए। जयपुर के राजा रामसिंह को ई सन् 1851 में शासन करने के पूरा अधिकार मिल चुके थे। उसने अपने राज्य में काफी उन्नति के कार्य करवाये। कॉलेज, पुस्तकालय, वाचनालय और सन् 1875 में 33 राजकीय प्राथमिक पाठशालाएँ खुलवाई। उस राज्य में 379 सहायता प्राप्त पाठशालाएँ भी इस समय थी। जिनमें करीब दस हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। सन् 1878 में यहाँ गुरु प्रकाश का प्रवच हुआ। नगर पालिकाएँ आदि अनेक संस्था कार्यालय कायम हुए। ई सन् 1876 में जयपुर का अजायबघर भवन बना, जो अब राजस्थान का केन्द्रीय संग्रहालय है।

जोधपुर में महाराजा तक्षसिंह के राज्यकाल में, शासन-व्यवस्था बिगड़ चुकी थी, सो आगे जाकर ठीक हुई। जागीरदारों का दमन और डाकुओं की समाप्ति में अंग्रेजी राज्य का अधिक सहयोग प्रयत्न रहा। पुलिस व 'याय-व्यवस्था' में भी अच्छे सुधार हुए। सन् 1884 में नगरपालिका तथा 1894 में कॉलेज व अस्पताल खुले। स 1956 में अकाल में यहाँ की स्थिति एक बार फिर गड़बड़ गई थी।

उदयपुर में महाराजा सज्जनसिंह न जनता की भलाई के लिए सिंचाई के निर्माण कार्य तथा भूमि बंद्दोस्त करवाया। फिर उनकी जगह महाराणा पतहसिंह न अपने नाम पतहसागर जैसे तालाब बनवाकर जनयस लाभ लिए। महाराणा की पहुँच बायसराय लाठ वजन तक थी। इसी समय चित्तौड़ गढ़ से उदयपुर तक रेल लाइन बनी।

बीकानेर महाराजा गंगासिंह ई स 1886 में राज्य गद्दी पर बैठे। 87 स 1898 तक अल्प वयस्क होने के कारण रोजेसी रही। लेकिन इस समय से नगरपालिका, भूमि बंद्दोस्त के बाद स्थिर लगान, वास्तुकारों की स्थिति पर पूरा विचार, धंधर की नहरी से उत्तरी भाग की सिंचाई एवं 1930 में नए तरीके से सचिवालय की व्यवस्था हुई।

पारश्चात्य शिक्षा समृद्धि हेतु अजमेर में (सन् 1875 में) बायसराय लाठ मेया ने अपने नाम कॉलेज खोला। इसके द्वारा राजाओं का आधुनिक ढंग की शिक्षा मिली और वे अंग्रेज भक्त बनते रहे। आगे चलकर राजा महाराजा तथा राजवंश के ज्यादातर सरदार राजपूताने में निरक्रुध व विलासी बन गये। इन्होंने अपने राज्या में केन्द्रीय सरकार से कमजोर दीवान रख लिए और केन्द्रीय शासन के अनुकरण पर जनतान्त्रिक संस्थाओं की स्थापना आरम्भ की। किन्तु ये राजा लोग अपनी प्रजा का दवान में

निरकुल ही बने रहे। उनके रनवासो में मक्का सुन्दर स्त्रियाँ रहती थी और वहाँ अपने विलास हेतु वेश्याओं को भी रखने लगे थे। वि.म. 1954 के लगभग गाँव वालों के ठाकुर मेधासिंह ने भी गाँव की जनता को बुरी तरह से तंग कर रखा था। वह शर्माजी और विलामी था।

जोधपुर के द्वितीय नथ जसवंत सिंह के अंतर्पुर में एक "नही जान" नामक वेश्या का आवागमन था। इसके लिए गुरु, स्वामी दयानंद सरस्वती ने महाराजा को खूब समझाया। महाराजा तो नहीं माने, मगर उस वेश्या ने एसोइये से मिलकर स्वामीजी का विष खिन्ता दिया। जिससे सन 1883 में उनकी मृत्यु हो गई।

पश्चिमी शिक्षा से भारतीयों में राजनैतिक चेतना आई। मग प्रांतों में राजनैतिक संस्थाएँ स्थापित हुईं। इनमें इण्डियन एसोसियेशन, ब्रह्मसमाज एवं आम समाज प्रमुख हैं। वेग में स्वतंत्रता तथा समानता की भावना का विकास हुआ। स्वामी दयानंद सरस्वती ने अछूतोंद्वारा, राष्ट्रीय शिक्षा तथा स्त्री शिक्षा आदि के लिए खूब प्रचार किया जिसका प्रभाव सारे देश पर पड़ा। उनका कहना था—

‘कोई कितना भी करे, परंतु स्वदेशी राज्य सयोज्य होना है। माता पिता के समान हूँ, माय और भव्य भाव रखते हुए भी विदेशिया का राज्य सुखदाई नहीं हो सकता।’ इसी समय सन 1885 में अंग्रेजी साम्राज्य के नीचे भारत के लिए औपनिवेशिक स्वराज्य की प्राप्ति हेतु अवकाश प्राप्त अंग्रेज ए. ओ. ह्यूमन इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की। तत्कालीन वायसराय लार्ड डफरीन ने अपने गाँवों में इन गिण्टु संस्था



विधपाने अमृतदान



की मंगल कामना करत हुए उनका अधिकारियों के समक्ष आशीर्वादन वह। इसके प्रथम अध्यक्ष डबल्यू सी बार्जी बने और इसमें 70 हिंदू तथा 2 मुसलमान प्रतिनिधियाँ ने भाग लिया। यद्यपि इन्होंने अंग्रेज सरकार के प्रति पूरा शान धर्मी के भावण दिये, तथापि इंग्लण्ड की जनता ने इस संस्था का अंग्रेजी सरकार के लिए बड़ी खतरनाक होना बताया। किंतु भारतीय जनता में कांग्रेस की स्थापना से राजनैतिक चेतना की पूरा बल मिला। स. 1898 में बालगंगाधर तिलक ने कांग्रेस में प्रवेश ले करके भारत को पिछड़ा देश बतलाने वाले नये वायसराय लार्ड बर्जिस से मोर्चा लेते हुए काष शुरू किया। इन्हीं से प्रभावित होकर पूना के वापेकर भाइयों ने अपने वहाँ के कलेक्टर रैण्ड को भार डाला। उस समय राजद्रोह के अपराध में तिलक को 18 माह की कड़ी कद हुई। इस पर जनता अधिक भड़क उठी थी।

सन 1905-14 में राजनैतिक जन-जागृति—देश में राष्ट्रीयता देशभक्ति और राजनैतिक अधिकार प्राप्त करने के लिए जागृति उत्पन्न हुई। स्वामी दयानंद और स्वामी विवेकानंद ने राजस्थान में रहकर धर्म और समाज सुधार के माध्यम से वहाँ के लोगो में चेतना पैदा की। उन्होंने हिंदू धर्म की श्रेष्ठता बतलाकर जनता का आत्म विश्वास जगा दिया। स्वामी दयानंद प्रथम सत थे जो भारत को जनत, स्वतंत्र, स्वावलम्बी तथा गतिशाली बनाना चाहते थे। इसलिए स्वामीजी न धर्म और

समाज सुधार को प्राथमिकता दी। कांग्रेस की स्थापना हा चुकी थी और उसका काम जोरो शोरो पर था। तिलक ने भी 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' का नारा दे दिया था। इसी समय जापान ने रूस को पराजित करके दुनिया को दिखा दिया था कि पश्चिमी राष्ट्र अजेय नहीं हैं।

निभयता, स्वाभिमान, स्वतंत्रता एवं स्वराज्य भावना से भीत प्रीत सन 1906 में राष्ट्र प्रेम की धुन लिए पुर जोर शब्दों में गीत गान वाला तरुण स्वामी श्री केशवानंद भी आगे आय—“उठ चक्के फिरगिया डेरा, राज नहीं रहता वे तेरा।”

उस समय राजस्थान में रहकर श्री श्याम जी कृष्ण बर्मा, सिरौही में श्री गाविंद स्वामी, व्यावर-अजमेर में दामोदरदाम गाठी, जयपुर में अजु नखाल सेठी, शाहपुरा में केशरी सिंह बारहठ, खर्वा का मापालसिंह, गुजर नवयुवक भोपसिंह (शस्त्र सप्रहो) आदि ने राजस्थान में आतंकपूर्ण कायबाहिया आरम्भ कर रखी थी। इन्होंने ई स 1913 में “वीर भारत समाज” नाम की सत्या त्रासिकारियों की क्रांति का प्रशिक्षण देने के लिए स्थापित की। बम्बई प्रांत में “अभिनव भारत” मध्य भारत में ‘आर्य बाघव समाज’, बंगाल में अनुशीलन समाज” आदि सत्याएँ भी इस समय (अथ प्रा तो में) कायशील थी। बीकानेर के महाराजा गंगासिंह उदयपुर एवं कोटा के क्रम से श्री फतहसिंह, उम्मेद सिंह आदि कुछ नरेश राजस्थान के इस गुप्त सैनिक संगठन से छिपे तौर पर सहानुभूति पूर्वक प्रेम बनाये रखत थे। य सब इनकी सफलता अंग्रेजों की वापसी और अपनी स्वतंत्रता की अदर ही अदर आगा लगाये हुए थे। इस समय राजस्थान में भारी क्रांतिकारी कायबाहियाँ चल रही थी।

प्रथम विश्वयुद्ध में कालू से भी सैनिक गये—वि स 1971-72 (ई, स 1914 15) का यूरोप में इगलण्ड का जमनी से युद्ध छिड़ गया। लेकिन उस समय भारतीयों ने अंग्रेजों के प्रति एक तरह की स्वामी भक्ति दितलाई। वचार जमन वासी चाहते थे कि भारत अंग्रेजों से विरोध करेगा किन्तु उनके लिए सार काय उल्टे हो गये। ई स 1914 की 3 अगस्त (श्रावण सुदी 12, वि स 1971) का बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने भारत के वाइसराय गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिज और सम्राट पंचम जाज को तार भेजकर युद्ध में सम्मिलित होने की इच्छा प्रकट की। अंग्रेज तो यही चाहते थे, अत एव ता० 26, 27, 28 अगस्त 1914 (भाद्रपद सुदी 6 7, 8 वि स 1971) बीकानेर की सत्याएँ युद्ध क्षेत्र के लिए अथ राठियों की सेनाया के साथ रवाना हुईं। गंगा रिसाला और गादूल लाइट इन्फंट्री के सैनिक भी सम्मिलित थे जो मेजर जीवराज सिंह बीदावत, लाखणसर और मेजर जनरल राजा जीवराज सिंह साठवा की अध्यक्षता में मिश्र (Egypt) तथा पलेस्टाइन में नियुक्त किये गये। ऊँट सेना की बड़ी मांग-बृद्धि हुई, बीकानेर के वीर सैनिक पूर्व में पलेस्टाइन से लेकर पश्चिम में सालम (Sollum) एवं दक्षिण में सारगा तक गन्तु दल की तुरत निगह दास्ती में लग गये। बीकानेर के गंगा रिसाले के बीस सैनिकों ने कटारा से 20 मील पूर्व विर एल-नस में बड़े वीरोचित काय किये। दा सौ बट्टनी शत्रुआ से घिर जाने पर बीस सैनिकों ने बड़े जोर से मुकाबला किया। इनकी वीरता का उल्लेख ‘आफिगियल हिस्ट्री ऑफ दि ग्रेट बार, मिलिटरी ऑपरेशंस इव इजिप्ट एंड पलेस्टाइन नामक ग्रंथ की पहली जिस्त में मिलता है।

पृथक् ह। इस पर साठ नजन ने सर्वाधिक जागरूक प्रात बगाल का विभाजित कर दिया था। यह पहला उकसाव था। अनक विगधो न बावजू मा 13 अक्टूबर 1905 म बग-भग की योजना बन गई थी। विभाजन के बाद ना अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध आंदोलन और भी तीव्र रूप म शुरू हो गया था। माल शिक्षा एवं सम्मान का सवत्र बहिष्कार होने लगा था और जिनमे फिरोजगढ़ मेहता, गोपालकृष्ण गोखले जैसे नम दलीय नेताओं को भी सम्मिलित हाना पड़ा।

जन-क्रांति का शुभारंभ—अंग्रेजी प्राता म उनके शासन क प्रति विराध का प्रवृद्ध बढकर चलने लगा। साठ न धबरा कर स्थानीय नरदा से प्रेम सम्पक बढा लिया। सन् 1911 में सम्राट पचम जाज न दिल्ली मे दरबार किया। चतुर राजा लोग भी समझ गये कि जनता अब किसी का नही बरेशगी। इसलिये महाराजा गगामिह ने अपनी रजत जयंती के समय सन 1912 मे प्रतिनिधि सभा" खोलने का कम्मान कर दिया। यह एक दोहरी चाल थी। लेकिन क्रांति समयाचित एव उत्ततिप्रद सकेत था। जिसके कारण गाँवो मे स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए लोक ललक उठे। सुचेतना की यह लहर सन 1913 में साधु सीताराम को साथ लेकर उन्मपुर के वांश्तकारो ने ठिकानो की बढी लाग बागी तथा अत्याचारा क विरुद्ध, क्रांति प्रवत कर दी थी। चलते मुद्ध क समय श्री महेन्द्रप्रताप हरदयाल आदि क्रांतिकारियों न जमन सम्राट से मिलकर सशस्त्र क्रांति की योजना बना ली और उसकी निश्चित तारीख 21 फरवरी 1915 रखी। फिर तो राजस्थान म स्थान स्थान पर क्रांति के कार्यालय बन गये थे। मगर किसी द्रोही ने भेद बताकर सभी को गिरफ्तार करवा दिय। भूपसिंह विजयसिंह पथिक, जयसिंह धाकड़, धनश्याम जोशी आदि नेताओं न सन 1916 म जनता की पुगी सहायता की थी। ग्रामीणा पर पुलिस के अत्याचार हुए, मगर उन्होंने पचासती राज्य कायम करके चरखे व करके के प्रचार से जनता को जागरूक किया।

राजपूताना के कई व्यक्ति सन 1918 के दिल्ली कांग्रेस अधिवेशन म गये। फिर गणेशशंकर विद्यार्थी, चाँदकरण शारदा जमनालाल बजाज गिरधर शर्मा स्वामी नरसिंह देव सरस्वती आदि न राजपूताना मध्य भारत" सभा खाली। प्रताप' नाम का साप्ताहिक पत्र निवासना शुरू किया और मुद्ध समाप्ति क बाद अहिंसात्मक असह योग आंदोलन चलाया। 6 अप्रैल 1919 म दंग व्यापी हडताल और प्रदर्शन तथा गिरफ्तारियों भी। जलियाँवाल बाग की घटना के बाद ना राजपूतान के राजाओं पर भी जनता के असंतोष, आराप तथा विराध चलन लगे। सन 1920 म कशरसिंह बाहरठ अजुनलाल सेठी गोपालसिंह आदि छोड दिय गये। इस समय राजस्थान केशरी" तथा नवीन राजस्थान नाम के पत्र बजाज और पथिक क द्वारा निवान गये। तब कालू के लोगो पर भी इसका प्रभाव पडे बिना नही रहा। वे भी उन नेताओं की बातें समाचार पत्रो मे पढ पढ कर खूब प्रचार करने लगे। जा शक्ति का प्रयास कर अंग्रेजी को दंग स बाहर निवासना चाहत थे। ऐसे लोगों म यहाँ वानू म मुख्य समाचार पत्र प्रेमी पंडित श्री चेताराम पारीक गांव क पहले कांग्रेसी थे।

कानू म प्रथम जाय समाज का उन्म हुआ, जिसक साथ राष्ट्रीयता भी पनपन लगी। बाहर क लोग आय समाज के जरिये भाषण देने आया करते थे। तब कालू क नवयुवक शांतिपूर्वक सुनकर काफी प्रभावित हान। वस तो कालू के युवक धार्मिक चर्चाएँ

ही करते थे, किन्तु महात्मा गांधी ने बढ़ते हुए प्रभाव की बातों से जनता का निरंतर समझाते रहते थे। लेखक के बच्चे भाई पूज्य श्री बालुराम सुस्वर्ता गाँव के ऐसे नवयुवका में अग्रणी थे। वि. स. 1984 की सरीदी हुई उनकी सत्याग्रहवागी गांधीजी के नाटस और उनके अग्र बागजान अभी तक सुगम हैं। वे बालू गाँव में राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम ध्वनी मन्त्र्य थे। यहाँ के स्वामी श्री गांधाराम (भाट), उमराराम सारस्वत, काशी राम (बुधरदास) मुगनाराम सुनार, रामशरलाल गोठ (रतनगढ़) गणेशागम गोदारा गोपालदास बानेरा आदि संगठित कांग्रेस कार्यकर्ता थे। गाँव के लोग इनमें बातें करना अपना अहित समझते थे। वि. स. 1987 (ई. स. 1931) के बाद हम मध के काफी जन घीरे घीरे परलाकवासी हान गये। मगर राष्ट्रीयता की आदश लहर बाग के प्रामीण युवकों एवं विद्याधियों में पूर्ण व्याप्त रही। यहाँ पर राष्ट्रीय भावना का जागत करने के कारण बालू के पटवारी हंमराज आग्र की त्याग पत्र देना पड़ा। उस समय बालू रूपचंद नाहण (जो आगे जाकर नेपाल के उत्तरदाया नामन की माग में दो दशक तक काठमांडू जेल में रहा) साहनलान, बुधमल भोजक, इन पवित्रता का लेखक आदि कांग्रेस के सदस्य रहे। घीरे घीरे गाँव में पर्याप्त प्रचार पत्रपत्र लगा और जनक व्यक्ति कांग्रेसी बन गये।

असहयोग आन्दोलन में टाक व मुसतमाना न पूरा भाग लिया तथा बंजारा व अतिरिक्त बहुत से भारवाडी व्यापारियों ने भी कांग्रेस को खूब आर्थिक सत्याग दिया। स्वदेशी वस्त्र धारण करने पर बोनानेरे के महागजा गंगासिंह ने गिवमूर्तिसिंह और सम्पूर्णनव तथा आनन्द वर्मा की नीकरी में निराला दिया। दंग की जाति के-साम राजस्थान के गाँवों में भी स्वदेशी वस्तु प्रचलन, आली का पहनावा और राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना होने लगी थी। गांधीजी नता नहीं जब महात्मा बन गये थे। सन् 1922 में उद्धान नगरिक आदालत चलाने की सरकार की सूचना दी। गांधीजी गिरफ्तार कर लिए गये और छ साल की सजा बोली गई। लेकिन फरवरी 1924 में अस्वस्थता के कारण छोड़ दिया गया।



महात्मा गांधी

11 फरवरी 1921 में राष्ट्रीयता के भावों की वृद्धि तथा संगठन राजनसिक कार्य-कलापों की बढ़ावा देने के लिए विजयसिंह पथिक, रामनारायण चौधरी तथा हरि भाई निकरने राजस्थान सेवा मध की स्थापना की। श्री भाणकलाल वर्मा, नानूराम दास शोभालाल गुप्त, लामूराम जोशी और श्रीमती अजना देवी इसका कार्यकर्ता मन्त्र्य बने। जोधपुर में इसमें पहले भारवाड डिप्टारिपा सभा चाँदमल सुराणा श्री. फिर जयनारायण व्यास द्वारा संचालित थी। इसका 10000 सदस्य बना लेने पर श्री व्यास लोक नायक कहलाय। लगान न देने पर उदयपुर जोधपुर सिराहा पीता पालनपुर, ईडर आदि राज्यों ने भीला गंगासिंहो आदि पर गान्धा चलाकर मध से दकारनामे करा लिया। देशी राज्यों में वह गाँव कई बार नला दिया गया और मकड़ों व्यक्तियों को मोन

व घाट उतार कर लगान बसूल किया गया। नेताओं को बहुत दूर व अज्ञातवास दे दिये गये। इनके बाद किसानों पर अत्याचार के विरुद्ध जन आंदोलन छिड़ गया। जनता की दृष्टि हुई। समाचार पत्रों में शासन की अमानुषिकता का पूरा विवरण छपने लगा। सन 25 में जयपुर राज्य ने भी निंदयता पूर्ण दमन किया। सन 1926 में असतोष के कारण जयपुर राज्य में पाँच दिन की पूर्ण हड़ताल रही जिसके विरुद्ध हड़तालियों पर लाठियाँ चलाई गईं और गिरफ्तारियाँ भी हुईं। सन 1929 में राजस्थान व सारे नेता राज्य शासन के दमन चक्र में पीड़ित किये गये। नरेंद्र मडल बटलर जाँच समिति, सार्दमन कमिशन आदि सब बायबाहियाँ जनता के बढ़ते असतोष को मिटाने के लिये अंग्रेजी सरकार द्वारा की गईं। मगर जनता का विरोध इन सबके विरुद्ध भड़कता गया। उस समय राजस्थान में सरयाग्रह का क्रंद अजमेर था। अजुनसाल सेठी, जीतमल लूणिया अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, हरिभाऊ उपाध्याय आदि अनेक नेता बार बार गिरफ्तार हुए और सत्याग्रह करते रहे।

सर्वमन्य समिति की रिपोर्ट पर ब्रिटिश सरकार ने भारत के प्रतिनिधि नरेशों सहित सन 1930-31 में शासन की भावी योजना हेतु करीब दो माह तक गोलमेज सम्मेलन चलाया। जिसका नतीजा प्रांतीय शासन के आंतरिक मामलों में स्वतंत्रता देने के हक में हाँ दिखाई दिया। महात्मा गांधी ने वायसरॉय लार्ड इविंस से मुलाकात करके समझौता किया। इसके बाद 23 मार्च स. 31 को भगतसिंह राजगुरु व सुखदेव का फाँसी देकर उनकी लाशें नष्ट कर दी गईं। इससे जनता में बड़ा रोष व्याप्त हुआ। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में महागजा गंगासिंह न सच पालिका में जनता प्रतिनिधियों को लेने की मांग को ठुकरा दिया। चार माह तक सम्मेलन चला और गांधी जी के भारत आ जाने पर कांग्रेस को घर बानूनी घोषित करके गांधी जी सहित सब नेता गिरफ्तार कर लिये गये। राजस्थान में भी कांग्रेस से सम्बद्ध एवं अन्य संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं को पकड़ लिये। सन 32 में तीसरा गोलमेज सम्मेलन हुआ, मगर राजाओं ने भारतीय सच में सम्मिलित हान का सम्मेलन में उत्साह नहीं दिखाया। इन सबके बावजूद अगस्त स. 35 में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने भारत के लिए एक नया संविधान बनाया। इसके बाद द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया और रियामन्ता राज्या व जनता के बीच बसे ही पगडा के रूप में अम्बार झुके रहे।

आगे चल कर द्वितीय महायुद्ध शुरू हुआ। 3 सितम्बर 1939 में अंग्रेजों का जर्मनी से युद्ध शुरू हो गया, वायसरॉय ने भारत का भी युद्धरत घोषित कर दिया। कांग्रेस ने उक्त घोषणा का विरोध किया और राज्यों के कांग्रेसी मंत्री मदना (आठ) ने नवम्बर 39 में अपना इस्तीफा दे दिया। कांग्रेस का विरोध होत हुए भी भारतीय राजाओं ने युद्ध आरम्भ होते ही भ्रष्ट सहायता देने के लिए वायसरॉय का तार दे दिया। महागजा गंगासिंह ने 6 सितम्बर को तार दिया तथा टेन लाख रुपये और 1000 पौंड भी भेंट किए। सेना, पुर्तुर सेना (गंगा रिमाला) सादूस इकेट्टा विजय बटरी आदि सेनाओं का लड़न के लिए यूरोप भेजा गया। बाकानूर में एक युद्ध बंदी निविर और युद्ध में घायल तथा बामारी के लिए दो मिनिक मफालान भी खाले। वायुयान तथा टैंक के अथ बावत, भारतीय और अंग्रेज सैनिकों की सुविधा हेतु तथा लड़न जनता की सहायता एवं रडरॉस आदि अन्य सहायता कार्यों के लिए श्री गंगासिंह

ने अपन खजान और रियासत का स्थिति से 15 19063 रुपय, छ आने, दा पाई की अधिक सहायता भी पहुँचाई। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सन् 1942 में ब्रिटिश सरकार की ओर से कुछ प्रस्ताव लेकर शांति बनाये रखने हेतु सर स्टफर्ड क्रिप्स भारत आया। राजाआ न उसको पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। मगर कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के नेता बिल्कुल इकार हो गए। क्रिप्स बचारा दोहरी वार्ने लेकर वापिस लौट गया।

जून 42 में भारत के प्रसिद्ध आतंकवादी रामबिहारी वास का प्रेरणा से बंदी कप्तान माहनसिंह न 16000 सनिको का आजाद हिंद फौज का संगठन बना लिया था। जमना पहुँचे हुए सुभाष चंद्र वास न 5 जुलाई 43 का सिंगापुर में भारतीयों का नेतृत्व एक आजाद हिंद फौज की अगुआई का काय हाथ में ले लिया। तब 21 अक्टूबर 43 को अस्थायी आजाद हिंद सरकार का स्थापना हुई, जिसका जापान जमना इटली आदि देश ने प्रामाणिकता प्रदान की। कांग्रेस न गांधी जी की गरिमा के साथ 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पारित कर दिया। इस पर देश के बड़े बड़े नेता गिरफ्तार कर लिये गए। तब भारतीयों ने ऐसी-एसा गामन विरोध कायवाहिया आरम्भ की जिससे अंग्रेजों सरकार के नाक में दम आ गया। अंत आन्तान हुए, गोलिया बली और जेलें भरी गईं। सन् 1945 में अमेरिका की महायत्ता से महायुद्ध में अंग्रेजों का विजय हुई। किंतु वे भारत का गामन जनता के सहयोग बिना चलाना कठिन समझने लगे। इसलिए 14 जनवरी 45 का कांग्रेस कार्यकारिणी का मदस्य जला से मुक्त कर दिये और तत्कालीन वायसराय लार्ड वेवेल न अपना कार्यकारिणी के गठन हेतु भारतीय नेताओं का एक सम्मेलन (हिंदू मुस्लिम सहित) गिमला में बुलाया, उस समय फरवरी 46 में बम्बई का तो सेना का मनिका ने विद्रोह कर दिया और बिहार में पुलिस न हड़ताल कर दी। इसलिए मार्च 46 में पुन शांति की बातों हेतु लंदन से अंग्रेज मंत्रीमंडल मिशन (अंग्रेज भारतीयों तथा कांग्रेस एक साथ का) भारतीय गतिराय को कूटनीति पूर्वक मिटान के लिए आया। 16 अगस्त 46 का सीधी कारबाई करने के दिन कलकत्ता में हिंदुओं का बहुत बड़ी सभ्या में कत्ल कर दिया गया। अगले माल साला स्त्री पुरुष एक बच्चे बचता के साथ सांप्रदायिक क्रूरता का शिकार हो गया।

भारत का वादस्तव्य लार्ड वेवेल ने गिमला में देश का राजनीति का एक सम्मेलन बुलाया, किंतु वह जिन्ना माह्व की जिद के कारण असफल रहा। श्री गांधी प्रसाद व्यास न लिखा—

सूर सूर, तुलसी गति उदगन कशवदास,
पत निराला बल्ब हैं सालटेन है व्यास
सालटेन है व्यास कि जिसमें तल नहीं है
वत्ती बिगड़ी हुई कि जलना खल नहीं है
(मॉडल उनतालीस का, बनना मल नहीं है)
छद, रस अनकार से यद्यपि नासो दूर है
फिर भी इमका क्या करे? आदत से मजबूर है
आदत से मजबूर जिस तरह मिस्टर जिन्ना
बैठे किमला गिर, बजाव ता घा घिन्ना
सब के सही मिजाज मगर वे ऐचक तिन्ना

यद्यपि पाकिस्तान में, य भी वासा दूर है
फिर भी इसका क्या करें ? आदत से मजबूर हैं

16 अगस्त 1946 का मुस्लिम लीग न 'मौधा कायवाही दिवस' मनाया जिससे देश का एक भाग में उबाला घषक उठा और अपार जन घन की हानि हुई। स्मरण है दिल दहना दे, ऐसे काण्ड हुए। घर जला दिये कमरे जल भी गई मंदिर नष्ट किए गए औरता पा उठा ले गया। नाआखानी के हिंदुआ पर जान जाने अत्याचारों का दस्ताविहार से मुसलमानों की भुगतना पड़ा। मने 1947 माघ में साठ माठणवन्त, साठ वेयल के स्थान पर आये। गांधीजी का बिना कांग्रेस का नताआ और कांग्रेस काय समिति ने राष्ट्र में होने वाला दंगा सूटवाए आदि कामोंकागी घटनाओं के दशका में विविध होकर विभाजन की भाग की मायता द दी। 15 अगस्त 1947 का विभाजन का माघ भारत स्वतंत्र हो गया।

पाकिस्तानाएँ पनप उठा आगे नरमघ हुए और अमर्य बेवसूर जानें गई। घर घर धुती जायदाद और ताखा का कागेवार छोड़कर भिखारी के रूप में पलायन व सिंध के लोहा का अनिश्चितता की राह भागना पड़ा। महा भयकर उपद्रव हुए। बीकानर के महाराजा ने मुसलमानों से भरी रेल् गांधिया सुरक्षित पाकिस्तान पहुँचा देने का प्रयत्न किए मगर कई रेलें बीच में ही रोक कर उपद्रवियों के हाथों से ध्वस्त कर दी गई। लोहा के इस तरह की रेलगाडियाँ राजगढ़ नौहर आरंग होती हुई तथा कई गगनगर द्वारा पाकिस्तान पहुँच गई। किंतु पीछे कई ट्रेनों दुर्घति के गत में घिर कर सहन नहम हो गई। बीकानर श्रीगंगागर और खूँ के मुसलमान भी घर घर माल असबाब सब छोड़कर भाग निकले। उनकी गाय नसें आदि पशुओं के समूह भटक गये। इन पशुओं के समूह का गाँवा में न जाकर सरकार द्वारा भीताम किए गये। गाँव कातू में भी ऐसी गाया भसा के बाग (झुण्ड) आय व जो जनता ने याती देकर एक-दो एक की सहवा में खरीद लिए। लेखक ने तीस तीस रुपया में तीन बिना ब्याई पाटियाँ (भस्से) खरीदी थी।

इस भयकर अन्ता बदली में यहाँ के मुसलमान पाकिस्तान गये वने ही वहाँ के हिंदू भी यहाँ आकर निर्वासित हुए। 6 लाख भरे 3 करोड़ 40 लाख अपन घरों से निकाले गये। दोना ओर से एक लाख जवान लड़कियों का अपहरण किया गया जिनके जबरदस्ती से धम परिवर्तन और भोलाभा में बेचे जाने के काण्ड भी हुए। नम बने राष्ट्र पाकिस्तान का साथ नगमग दा सौ मील तक बीकानेर की भीमा थी। इसलिए उस समय बीकानेर का बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा। एक देश से दूसरे देश आने जाने वाला लोगो को बीकानेर राज्य से विभिन्न सहायनाएँ मिलीं। राज्य का दल निश्चय य रहा कि जाति और धर्म का ध्यान रहे बिना अधिक से अधिक लोगों का बचाकर मानवीय काय को हर प्रकार से पूरा किया जाय। मुसलमानों का रहना असम्भव जानकर उ ह रिया रात की सेना का सरभण में सुरक्षित पहुँचाय। दोना तरफ में आने जाने वाले पारणारिया को स्थान, भोजन और हावि पूर्ति सहित उनके जागू पीछे (सुरक्षा का प्रबंध किया)।

सरणाधिया के लिए भारत में कहीं भी ऐसी आर्थिक महायन्त्रा नहीं हुई।¹ लेकिन बीकानेर ने अपनी धार्मिक, सहिष्णुता और धर्म निरपेक्षता की परम्परा रखी। चूड़, राजगढ़ और सुजानगढ़ में भी राज्य ने ऐसे ही प्रबंध करवा दिये। (भगामिह जी जैसे अपने को राज्य और प्रजा का सबसे बड़ा सेवक कहते, वैसे ही महाराजा शादू लाल सिंह 'प्रजा हित अतिनोबियम' के जीवन आदर्श नियमों पर चले। उनकी नगर निर्माण योजना में महरी रुचि थी। राज्य के कस्बों में तेल कष्ट निवारण में उनका यह सफल सबूत है।

ब्रिटिश सरकार ने 20 फरवरी 1947 का घोषणा की थी कि वह जून 48 तक भारतीयों का सत्ता सौंप देगी। मात्र में लाट वेवल्स का जगह लाह माउंटबेटन आया, तब सौंपदायिक दण्ड बढ़ रहा था। उसने ब्रिटिश सरकार से सलाह मांगी करके कूट

- 1 शरणार्थी बनकर आये और पुरुषार्थी बनकर बस गये। ऐसी घबरायी स्थिति से एक रास्ता बतियाया जा पड़ा—जयपुरी राज्य के सिंध प्रांत से भागते हुए जान बचाकर कालू का वासिदगान बना। यह दश तालुका (तहसील) सकद, जिला—नवाबगढ़ का रहने वाला तीन भाइयों का एक घराना—सावलराम, ब्रह्मराम, आसनराम, पिसराम (मानचंद) मिथी गांव कालू में रहने लगे। इस परिवार ने अगस्त 1947 में अपनी जमीन भूमि छाड़कर हिंदुस्तान में प्रवेश पाया था। किन्तु अंग्रेजों भाषा दश और कठोर आवाजों के सकटा के कारण वे लागू शीघ्र किता एक जगह आवास बनाकर नहीं बैठ सके और कुछ समय के लिए (दिसम्बर 1947) श्री डूंगरगढ़ में किरामेदार बनकर रहे।

इनमें साधारण व्यापार का व्यवसाय और व्यवहार चातुरी थी। सन् 49 में इन्होंने कालू में आकर बीस माखार में परबून की दुकान खोली। दूसरी दुकान सजी मिठाई और चाय का बसाई कि कालू के मध्य मंदा में—स्टण्ड पर एक दाटा में उपस्थित हो गया। सावल में सहनशीलता बढ़ाकर में मिलनसार। इन्होंने अपने भापे के, लकड़ी का, मिठाईया बनाने और खेती काम के काम करने में बड़ी मुश्तदी से जल्दी सफलता मिल गई। पछे का एवज में जमींदार, व्यापार माल-असबाब और पशुधन पुरुषार्थ से पुन बना लिए। दाटा दुकानें खोलकर बैठ तथा घागीरक मेहनत और कायकुशलता में भटके जावन का स्वयं साधक कर लिया।

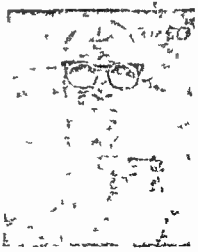
इन्होंने सुना—बम्बई हुई पिछला सम्पत्ति के लिए भारत सरकार सहायता राशि देती है। इन्होंने भी लाख रुपया के लिए आवेदन पत्र भरे। मगर यहाँ की सरकार से पूरी जानकारी के पत्रों ने हान के कारण वे फॉर्म अधूरे रह गये और सहायता नहीं मिली।

य सनातन धर्मों हैं शरणार्थी रहने हैं। आपस में सब सम्बन्धिया से मिलते हैं—तब जयराम जयराम का अभिवादन करते हैं। जयपुर जायपुर, बीकानेर आदि नगरी में इस विगदरा वाला के जनक भक्ति बन हुए हैं। इनकी भाषा सिधी है, जो आपस में बोलते हैं, लेकिन अंग्रेजों के साथ राजस्थानी का प्रयोग करना सीखा लिया है। इनके बड़े-छोटे लहदा लिपि में हिसाब-किताब लिखते, किन्तु नई पीढ़ी में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचलन हो गया है। वे अभी भी उस खण्डित राष्ट्र स्वतन्त्रता की घटना को स्मरण करते बीकानेर राज्य और उसके तत्कालीन मूला का गुणगान करते हैं।

नीतिपूर्ण योजना में भारत का नए राष्ट्र में विभाजन करने की घोषणा कर दो, जिस दोनो वर्गों के राजनितिक दला न मान लिया। ब्रिटिश पार्लियामेंट के प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा करके भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित कर दिया। 15 अगस्त 1947 से हिन्दुस्तान के दो भाग—भारत और पाकिस्तान बन गए। इस अवसर पर डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने अंग्रेजों की उदारता प्रशंसित हुए कहा—'यह स्वतंत्रता हमारे बलिदान कष्ट महिषुता, मसार की घटना परिस्थितिया तथा अंग्रेज जाति की ऐतिहासिक परम्परा व प्रजातांत्रिक भावना के कारण मिली है।' इस वचन के बाद डॉ० के० एम० मुन्शी ने भारत और ब्रिटेन दोनों का प्रशंसा की था। भारतीय स्वतंत्रता के लिए महात्मा गांधी, रासबिहारी बोस, सुभाषचन्द्र बोस और माधवकर जैसे मशहूर प्रांतिकाशियों ने इसके लिए एक सन से अपने आपका निम्नकरण कर दिया। तब कही देश का भागों में खटिन स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

ब्रिटेन, रियासतों को भारत का ही एक भाग मानती थी। इसलिए राज्यों में प्रजामंडल आदि संस्थाएँ कायम हुईं और जनता में विशेष जागृति आ गई। राजाओं ने इस जागृति का पट्ट करन के लिए जाना फौजदारी मशौघन कानून तथा जन सुरक्षा कानून बनाकर सब राजनितिक संस्थाओं का सरकारी मान्यता प्राप्त करने के लिए बाध्य किया। तबिन उनकी कठोर नीतियों के बावजूद जन नेताओं ने अपने स्वेच्छाचारी राजाओं के विरुद्ध संघर्ष प्रारम्भ कर दिया। ऐसे संघर्ष सन 1939 के 48 तक निरंतर चले थे। जन नेताओं पर पुलिस अत्याचार तथा कठोर कागजात आदि की यातनाएँ हुईं। जनता का द्रव्य लालच और स्त्री नरनाजा की हउत हनक। क-यकिनया को अपनी जान से भी हाथ धोने पड़े। जोधपुर का बालमुकुन्द बिस्मल जीवानर का बीरबल असनमेर रा सागरमल गोपा भरतपुर का रमेश श्यामी, धोसपुर का पचम और कोटा का मनूराम शर्मा बगरह अपन राज्या के नामन सुधार आन्दोलन में मारे गए।

किसान आन्दोलन और कालू के व्यक्ति—कालू के अधिकतर व्यक्ति का मुख्य धंधा खेती का था पर तु खेती की यहाँ हालत खराब थी। गरीबों की जमीन का अधिक क्षेत्र बंजर आराजी पर मकबूजा और भूला था। इसलिए अकाल अधिक पड़त थे। अकाल के कारण मनुष्यों एवं जानवरों की मौत भी हो जाया करती थी। जिससे जन साधारण का काफी कष्ट सहने पड़त थे। बि० स० 1956 और 1996 (ई० सन 1899 व 1939) के अकाल महाभयकर दुर्लक्ष थे जो अभी भी लोगो को याद है। ऐसे समय में लोग बड़ा मुश्किल से गुजर कर पान थे। यहाँ के खेती के ढंग भी पुराने चलते थे। इसलिए ठिकाने की रकम देन में भी कठिनाई होती थी। जिस पर बठ बेगा साग बाग भा मिर चनी रहती। इसलिए साम तलाही के विरुद्ध किसानों ने जो भी आंदोलन हुए कालू के नना लोग उनका साथ रहे। पटवारी श्री हसराम बाय नौकरी से स्वीका कर किसान आन्दोलन में मदद पड़े।



श्री हसराम बाय

जनता को उत्तरदायी शासन देने का रियासती जिफ़—देश का राष्ट्रीय आन्दोलन का संगठन बन रहा था। देशी रजवाड़े भी संगठित होने लगे थे। हरिपुर कांग्रेस के बाद देशी गज्या में राजनीतिक वायु हेतु “अ० भा० देशी राज्य प्रजा परिषद्” की स्थापना हुई। उसी दिन मंसूर के राजा ने जन जागृति के विरुद्ध दमन चक्र चला दिया। राजपूताना की अन्य रियासतें जयपुर, जोधपुर बीकानेर एवं जैसलमेर में भी वहाँ की जनता अधिकारों के लिए अपने-अपने ढंग से आन्दोलन करने लगी थी। जयपुर का जनता का सत्याग्रह कांग्रेस ने सम्माननीय नेता एवं कायाध्याय श्री जमनालाल बजाज के नेतृत्व में संगठित होकर चलाया। उस समय मेवाड़ प्रजा मंडल को गरकानूनी घोषित करके वहाँ के नेता जेल में डूब दिए गए। क्योंकि हैदराबाद त्रावणकोर तथा कोचीन में सरकारी दमन वायु चल रहा था। सारे देश में विद्रोह की आग भुग्न रही थी। तब राजपूताना भीतल कैसे रहता ?

तत्कालीन समय में भारत की 562 रियासतों में से केवल एक रियासत “औध” ऐसी निकली, जिसने महात्मा गांधी के विचारानुकूल सबसे प्रथम अंग्रेजों के शासनकाल में ही जनता को पूरी तरह उत्तरदायी शासन दे दिया था। गांधीजी से अपनी रियासत के लिए निमित्त विधान की स्वीकृत करवाया और अपने स्वयं हेतु छत्तीस हजार (तीन लाख की आमदनी में से) रुपये के बजट से काम चला लेने का पत्र प्रदर्शित किया। गांधीजी ने 19 नवम्बर 1939 के “हरिजन” में “औध” राज्य के बारे में लिखा था “औध में शासन मुखार, के काय हो रहे हैं तो दूसरी तरफ कई देशी रियासतों में दमनचक्र के अण्ड चल रहे हैं।” मतलब—सत्याग्रह स्वर्गित कर दिये जान पर भी राज्य में प्रजाकीय संगठित मध्यामों को कानूनी रूप नहीं दिया जा रहा था।

उत्तरदायी सरकार बनाने के लिए आन्दोलन—ई स 1920 के कांग्रेस (नागपुर) अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित था कि “सभी नरेश अपने राज्य में तुरन्त उत्तरदायी सरकार स्थापित कर दें” 5 मास सन 1938 को कांग्रेस ने हरिपुर अधिवेशन का प्रस्ताव था कि कांग्रेस, रियासतों को भारत का ही एक भाग मानती है, जिसे कभी अलग नहीं किया जा सकता।

बीकानेर राज्य में जनता हेतु राजनतिक चेतना का आविर्भाव होना जरूरी था। इसलिए ‘प्रजा परिषद्’ की स्थापना सन 1942 में रघुवरदास गोयल ने की। किंतु राज्य ने इसे गैर कानूनी घोषित करके खत्म कर देने के आसार प्रकट किये। गोयल का राज्य से निर्वासित कर दिया। छ महीनो बाद बीकानेर में आया। तब पुन गंगादास दाऊददास आचार्य के माध्यमिपरसार कर लिया गया। 26 जनवरी 1943 को स्वतंत्रता दिवस मनाने पर वंश मधाराय, भीखालाल, रामनाथायण आदि भी गिरफ्तार किये गये जो गंगासिंह जी के जीवन काल में नहीं छूट सके। 2 फरवरी 1943 को महाराजा का देहा त हुआ तब इ ई छोड़ने का नम्बर आया।

बीकानेर की भौतिक रूप सम्बद्धि गंगासिंह जी ने की। उत्तरी भाग में गगनह्लाकर सर सग्न क्षेत्र बना दिया। जिसके लिए न केवल बीकानेर वलिक राजस्थान भी कुछ हद तक ऋणी है। परम प्रतापी श्री गंगासिंह राजस्थान के महान प्रभावशाली शासन ही नहीं, अपितु भारत के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ तथा अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र के रचाति प्राप्त

व्यक्तित्व वाले भूपति थे। महाराजा का घाघणार्हे "मरी प्यारी प्रजा" के सम्बोधन से राजस्थानी नायण व्यक्तव्य तथा अंग्रेजी स्पीच दन के तरीके बड़े मधुर एवं मिराले थे। उनके शासनकाल में प्रगतिशील राज्या की भाति न केवल धार्मिक, तथापि नगर पालिकाएँ जिलाबोर्ड व पंचायतें भी स्थापित थी। महाराजा अपने निजी खर्च की सीमा बँधी, राज्य का आय, व्यय का हिसाब धारा सभा में पेश करन लगे थे। शहर में प्राथमिक शिक्षा का अनिवार्य करन जैसे अनवर गौरवपूर्ण सुधार काय, श्री गंगासिंह जी ने कर रखे थे। भर्गे राजनितिक दृष्टि में बीकानेर राज्य अथ राज्यों से आगे नहीं निकल सका। महाराजा ने अपने शासन के अन्तिम 20 वर्षों में भारत में अपूर्व जन जागृति की लहरें उठती देखी, लेकिन बीकानेर में एक तरह से दमन, उत्पीड़न व नायण ही प्रकट होता रहा। महाराजा गंगासिंह का ई स 1943 में दो फरवरी को देहावसान हुआ गया। उनके उत्तराधिकारी श्री सादूलसिंह भी पितृ परम्परा नीति लिये रहे। 1945 और 46 में जागीरदारी के अत्याचारा के विरुद्ध दुधवाखारा, बीकानेर राजगढ़ के किसानों द्वारा किया गया। तत्पश्चात् राज्य न कड़ाई के साथ दबा दिया। श्री कुम्भाराम धाय पुत्रिम इ स्पेक्टर की मौकरी छोड़कर प्रजा परिषद में आ गया। किन्तु रघुवरदास गोयल, गणपतिसिंह हीरालाल शर्मा और कुम्भाराम वगैरह परिषद के सब कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिए गये। इससे पश्चात् 30 जून को राय सिंह नगर में बीकानेर राज्य का प्रथम राजनितिक सम्मेलन किया गया। इसका सभापति रामचन्द्र जन, स्वायत्ताध्यक्ष चौ० ग्यालिसिंह रहे। बीकानेर से महाराजा सहित राजकीय अधिकार शामिल हुए। वहाँ साठियाँ चली, कई नती गिरफ्तार कर लिये गये। इसमें बीरबल जीणगर शहीद हुआ। यह जाग्रति देखकर महाराजा ने 26 जुलाई को उत्तरदायी सरकार स्थापित करने की घोषणा कर दी। राजनितिक बँदी छोड़ दिए। 13 सितम्बर 1946 को बीकानेर में कार्यकर्ता सम्मेलन हुआ। उसमें रामचन्द्र जन, रामलाल, मालचन्द्र बिसारिया आदि की कड़ी पर फिर गिरफ्तार कर लिया। कुम्भाराम पर वारंट निवाला गया। अक्टूबर 29 को प्रजा परिषद ने पुन कार्यकर्ता सम्मेलन बुलाया। उस समय चौ० हर्दत्तसिंह मुक्ति पद छोड़कर प्रजा परिषद का सदस्य बना था, पर रघुवरदाससिंह आदि के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। तत्कालीन समय में बीकानेर राज्य के जागीरी गौव काँगड के किसानों ने अनुचित लागू वार एवं लगाने के लिए जागीरदारों को विराध किया उसके आदिमार्थों ने गौव में लूट मार वैद्दज्जा एवं किसानों के घर नष्ट किये। इसलिए महाराजा के सामने जाने पर भी उनकी सुनी अनसुनी कर दा गई। तब प्रजा परिषद ने अपने सात व्यक्तियों को जाच के लिए कागड भेजा। जागीरदार ने इन सातों को अपने गढ़ में बुलवाया और तम करवाकर बुरी तरह से पीटा। इनमें से एक दो आदमी तो बेहोश हो गए। फिर श्री हसराम धाय की हिम्मत एवं बुद्धिमानी से ये स्वामी सच्चिदानन्द, वेदारनाथ दीपचंद मौजीराम रणा 'रूपगम और स्वयं सहित सातों गौव में बाहर निकल पाये। इतिहास में यह कागड काण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। ई स 1947 में दश स्रस्तयता के समय भी यहाँ राष्ट्रीय ध्वज का जपमान किया गया।

कालू के पास गाव करणोसर में उस समय जागीरदारों द्वारा एक काप्रेतो नती श्री जगरामदास स्वामी को मरवा दिया गया। गारवदेशर के ठाकुरों की लडाई में

अपने गाँव बीकमसर में श्री अलानीन खतम हुआ।¹ श्री दुलागम नाई और वाघेरी नेता तेजमाल बागडीवा गारब देना छोड़ना पड़ा। महाजन के राजा में बहुत से लोगो को इस समय गांव से निकाल दिए। बाउसर के ठाकुर ने गुलागम का गिरफ्तार करवान की बड़ी कोशिश की। सहजरासर के ठाकुर ने भी भोपालाराम को डाणी बसाने के लिए बाध्य किया था।²

कांग्रेस प्रतिष्ठान और राज्य परिवर्तन—वेसे तो बीकानेर राज्य में प्रतिनिधि सभा 1913 से स्थापित थी और उसमें 35 सदस्य बनते थे। किंतु स० 17 में यह विधान सभा बहलाने लगी। 1937 में इसकी सदस्य संख्या 45 हो गई। 6 कायदागिणी परिषद के 20 चुनिंदे और 19 मनोनीत। विधान सभा को लाक प्रिय बनाने हेतु इसके पुरागठन की घोषणा महाराजा ने 1946 में की और 47 में बीकानेर संविधान अधिनियम लागू किया। 4 अप्रैल में महाराजा ने उत्तरदायी सरकार बना देने की घोषणा की। तब तक के लिए एक अंतरिम मंत्री मण्डल 18 मार्च 1948 का बनाया गया था इसमें 9 में श्री, एक प्रधान मंत्री, चार प्रजापरिषद से, शेष विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि मनोनीत किए। प्रजापरिषद से हरदत्त सिंह उप प्रधानमंत्री तथा गौरीशङ्कर मस्तानसिंह व कुम्भाराम को मंत्री बनाया। लेकिन यह नग हो गई और हमारे वष 'बीकानेर' राज्य राजस्थान संघ में मिल गया।

जोधपुर राज्य में स्थापित 'मारवाड़ लोक परिषद' महाराजा की ठुपा पात्र बन कर स० 1938 में स्थापित हुई थी, पर इसके विरोध में राज्य सरकार के सकेत से खुली श्री 'राजसूत देशहित कारिणी सभा' सही मानी गई। दिसम्बर 38 में तत्कालीन का० अध्यक्ष श्री सुभाषचंद्र बोस जोधपुर आये। उन्होंने ऐसी परिस्थितियाँ देखकर कहा था कि 'जोधपुर राज्य में नागरिक स्वतंत्रता तथा उत्तरदायी सरकार स्थापित करने के लिए स्थिति गड़बड़ है।' स० 38 में जोधपुर राज्य में सत्ताहकार थोड़ा घना, लेकिन दिलावा मात्र कामशील रहा। श्री जयनारायण व्यास उनके सदस्य बने। मगर सुपारा के प्रति वे निराश होकर वापस निकल गये। 'लोक परिषद' से सन 1940 में फिर उत्तरदायी शासन की लड़ाई शुरू की। तब श्री व्यास, जलेश्वरप्रसाद शर्मा, विश्वरमल मेहता आदि को अच्छे व्यवहार से गिरफ्तार करने परिषद को अवैध आदेशित कर दिया। आखिरी आंदोलन के सामने महाराजा ने घुटने टिके गये। परिषद से समझौता हुआ, सब राजनतिक बायकर्त्ताओं को छोड़ा। राज्य की आखें स० 1941 में खुली जबकि गगनपालिकाओं के चुनाव में लोक परिषद का लोकप्रियता के साथ भारी बहुमत रहा। फिर सन् 42 में किसानों व जागीरदारों के मध्य जागवाग लगानादि के विषय में झगडे बडे। लोक परिषद की प्रेरणा से लाडनू, नीमाच, चाहावल आदि जागीरी गावों के किसानों में खूब जागति आई, लेकिन जागीरदारों द्वारा कई स्थानों में किसान डुरी तरह पीटे गये। लोक परिषद को पुन सत्याग्रह करना पड़ा। तब था व्यास, बालमुकुंद

1. क्या मुत्त कर गीरवो, वम बीका र बास, तीनू नेता लामसी, मोर फोट सावास।
2. श्री गिरधारीलाल जयनारायण और दुर्गादत्त भाव के काम विजय नवन गये। भारी मटकार मिछी। लेखक का भी बाल अमर के कामगार ने धमकी दी।

मथुरादाम माथुर, छगनराज, मीठालाल त्रिवेदी, अचलेश्वरप्रसाद वगैरह को गिरफ्तार करके जेल भेज दिए। जिसमें पिटाई से बालमुकुन्द की मृत्यु हो गई। जनता में राग फला, बम तक गिराने के प्रयास हुए। आगे जाकर 1944 में यह राजनितिक वातावरण सुधरा। सन् 45 में देश राज्य लोक परिषद के अध्यक्ष ५० जवाहरलाल नेहरू जोधपुर आये। महाराजा ने मिलकर जनहित सम्भावना नसीहत मानी। किन्तु सन् 1947 में काश्तकारों का जागीरदारा के साथ भारी विवाद बढ़ गया। डाकू-गैब के किसान सम्मेलन में नेताओं पर गोशियाँ बतलवाई गई, जिनमें नरसिंह बछवाहा, राधा किशोरान, मथुरादास द्वारकाप्रसाद पुराहित, छगनराज प्रभृति लोग घायल हुए। फिर इसी साल जोधपुर राज्य ने अपन प्रतिनिधि, कृषि मन्त्रिालय सभा में भेजे। पर जोधपुर प्रदेश सम्मेलन 47 में स्व. वासी हो गया। तब उसके मौजवान महाराजकुमार हुडबन्ग सिंह जोधपुर राज्य को पाकिस्तान में मिलाव को तयार हो गया। फिर उसे अपना राज्य भारत में सम्मिलित करना पड़ा। अतः महाराजा ने 31 अगस्त 1948 में राज्य के शासन संबंधी कामों के प्रति जिम्मेदार मंत्री मंडल की स्थापना कर दी। मुख्यमंत्री श्री व्याम दीवान श्री एस. राव, मंत्री द्वारकाप्रसाद, मथुरादास, नाथूराम मिश्रा, हनुत, सिंह व बहादुरसिंह हुए। यह मंत्री मंडल राजस्थान के निर्माण (30 मार्च 1949) तक चला और फिर जोधपुर राज्य बहुत राजस्थान में विलीन हो गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अथ राज्य की तुलना में जोधपुर राज्य को कम समय करन पड़े। उसके शेखावटी क्षेत्र में किसानों जागीरदारों का बगड़ा द्वितीय महायुद्ध के समय से ही चलता था। फिर हरलालसिंह नेतराम व नरोत्तमलाल जोशी के नेतृत्व में आंदोलन चला। किन्तु जोधपुर राज्य, प्रजामंडल के किसानों की सहायता में रहा। जून 1942 में प्र० मंत्री मिर्जा स्यादरा ने उदारतापूर्वक किसानों की माँगें मान ली। अगस्त 1946 में आंदोलन (भारत छोड़ो) के समय यहाँ प्रजामंडल दो दल में बंट गया था। 44 में जोधपुर में नगरपालिकाएँ बनी। उस समय विधान सभा तथा प्रतिनिधि सभा के चुनाव हुए। भारत स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 27 मार्च 1948 को जोधपुर में अंतरिम सरकार की स्थापना हुई। दीवान की टी. कृष्णमचारी मंत्री मंडल का अध्यक्ष, प्रजा मंडल दल के नेता हीरालाल शास्त्री मुख्यमंत्री व टी. नारायण पासीवाल को राजस्व मंत्री का पद मिला। यह मंत्रीमंडल समुक्त दायित्व का आधार पर कार्य करने लगा। 1949 की 30 मार्च को जब समुक्त राजस्थान बना, तब यह मंडल समाप्त हो गया तथा जोधपुर राज्य का विलयन राजस्थान में हो गया।

उदयपुर में प्रजा मंडल से राज्य प्रतिबंध 1941 में हटा। भारत छोड़ो आंदोलन के समय कतिपय कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारियाँ हुई। जिनमें माणकलाल वर्मा, मोहनलाल सुखाडिया नरेन्द्रपालसिंह चौधरी, रूपलाल सोमानी आदि का योगदान रहा। 1945 में उदयपुर में अखिल भारतीय देशी राज्य परिषद का अधिवेशन ५० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ। 47 में राज्य कमचारियों ने वेतन की माँगों के लिए आंदोलन किया। इस समय वधानिक सुधारों के लिए बहुमत से एक समिति बनी। पर स्वतंत्रता के बाद महाराणा ने उदयपुर को भारतीय संघ में मिलने की घोषणा कर दी। फिर 48 में यह बहुत राजस्थान में सम्मिलित हो गया।

बूंदी में ई० स० 1944 में लोक परिवर्तन बनी। इसके अध्यक्ष हरिमोहन माथुर

तथा सचिव बृजसुन्दर शर्मा हुए। इनकी बातें महाराज न मानी। मार्च 1948 में बृन्दी राज्य राजस्थान संधि में मिल गया।

वालावाड राज्य में रामनिवास, गिरधर शर्मा जस लागा ने राजनतिक जागृति फलाई। प्रजा मंडल में भरू लाल, बालाबादस, पाणीलाल मेवा, मास्टर रामचंद्र आदि को राज्याधिकारियों द्वारा सहयोग ही मिला। मार्च 48 में यह राज्य राजस्थान संधि में सम्मिलित हो गया।

कोटा में राजनतिक चेतना उ पति के अग्रदूत नयनूराम गमा, अभि नहरि, इन्द्र-दत्त, नायूलाल आदि सज्जन रहे। 1938 में यहां प्रजा मंडल बना। 42 के भारत छोड़ो आन्दोलन में तीन दिन यहाँ का प्रजा न शासन समाता। जनता ने पुलिस को बद करके नगरीय दरवाजो, कोतवाली और सरकारी भवनो पर कब्जा कर लिया एवं तिरंगा फहरा दिया। बाटा महाराज के शासनासन पर राज्य वापिस सौंपा। 45 में पुन भयंकर आन्दोलन एवं गिरफ्तारियाँ हुई। स्वन प्रता के समय चारर यह राज्य समुक्त राजस्थान में शामिल हुआ।

नरनपुर में स 1939 में प्रजा मंडल की स्थापना हुई और 40 में प्रजा मंडल और राज्य शासन के मध्य समय छिड गया। सन् 42 के आन्दोलन में युगमकिशोर चतुर्वेदी, आदित्यद्र वगैरह गिरफ्तार किये गये। बाड आ जान के कारण शांति समझौता हुआ और 1943 में प्रजा मंडल ने व्यवस्थापक सभा में काफी स्थान जीते। 1947 में बंगार को लेकर आन्दोलन चला। उसे निममता से दबा दिया गया। इसमें रमेश स्वामी की मौत हो गई। महाराजा ने 47 में अपनी अनन्ति सरकार में चार लोकप्रिय मंत्री लिए, किंतु तब तक ना यहाँ का शासन केंद्रीय सरकार ने ले लिया था।

अलवर राज्य में सन 1933 में 'कांग्रेस समिति' का गठन हुआ, अनेक लोग बचनी सदस्य बन। उह राजद्रोह मानकर सजाये दी। 1938 में कांग्रेस समिति प्रजा मंडल में परिवर्तित हो गई। 42 के भारत छोड़ो आन्दोलन में राज्यादस का अवहेलना करके प्रजामंडल के गोभाराम, रामचंद्र उपाध्याय कृपादयाल ने बकानत छाड दी। गोभाराम ने अदालत एक पक्ष अनशन रखा। 43 में रामजीलाल अग्रवाल के प्रजामंडल सभा में काय रपतार पकड गया। प्रजामंडल में मास्टर मोलानाथ की काय गति भी श्लाघनीय रही। 1946 फरवरी में प्रजामंडल के सारे सन्ध्य-गिरस्तार कर लिये गये। जनता ने इनके लिए एक सप्ताह हड़ताल रखी एवं दमन विरोधी दिवस मनाया। मंडल और महाराजा में हीरालाल बास्ना द्वारा समझौता करवा दिया गया। उत्तरदायी शासन के लिए फिर आन्दोलन हुआ। राज्य भर में हड़तालें हुई। सौ व्यक्तियों ने अपनी गिरफ्तारियाँ दी। अक्टूबर 1947 में महाराजा ने म प्रामंडल में तीन लोकप्रिय मंत्री लेने की छप ढग से घोषणा की। नेता लोग इ चार रहे और साम्प्रदायिक दंगे हुए। तब के द्रीय सरकार ने यहाँ का शासनाधिकार अपन हाथ में कर लिया। बाद में यह राज्य मत्स्य संधि में शामिल हो गया।

धालपुर में भगल सिंह जस कमठ 'सोना के बने पर' रामचंद्रगोड के हैयालाल आदि ने प्रजामंडल की गतिमान किया। राष्ट्रीय ध्वज फहराने के प्रयत्न में प्रजामंडल के कायकता पंचम पुलिस की गोली से मरे। एक सभा में लाठी प्रहार भी हुआ और स्थिति बिगड गई यह राज्य मत्स्य संधि में जा मिला।

फरीली राज्य भी ई स 1948 म भत्स्य सभ म सम्मिलित हो गया था। यहाँ राजनतिक चेतना जगाने का श्रेय मदन मिह आकार मिह चिरजीवास समा प्रमति सज्जना को है प्रजामन्त्र के प्रमुख वक्ता म सपासरा जस स्थाना म जागीरा जुमा के विरुद्ध सम्मेलन म जन सगठन शुरू जूझे।

विशनगर (अजमेर के कावड़ सींगानी) राज्य की राजनतिक जागति भी प्रजा मंडल म नायकांगी आतिचंद्र व पुरुषोत्तमलाल समा द्वारा शुरू हुई था।

टोंक मुसलमानी राज्य, धार्मिक आ गोलन हान ही थे। यहाँ क नावा ठिकाना मे महद्रुमार जन म बड़े उत्साह म राष्ट्रीय कायकता को प्रगतिवान बनाया।

बाहपुरा राज्य म प्रजामंडल मन् 1938 म खना। नगरपालिका चानू गव बेगार बंद के आदेश प्रपत्त प्राप्त म हुए। 42 क आ दालन म यहाँ क कायकता पक्के जाकर अजमेर जैन भेजे गये जो गोकुलनाथ आसावा नाहूराम व्यास सहमीदत थ। 47 में गोकुलनाथ के प्रधानमंत्रीत्व म नौर प्रिय सरकार और विधान निमात्रा पण्डित बनी। तब उसे विधान बनान का अधिकार मिला। इसलिए यह रियासत पगनिनीन कर्म उठाने वाली कही गई। फिर 1948 म यह मयुक्त राजस्थान सभ म विलय हो गई।

सिराही राज्य म प्रजामंडल मन् 1939 म स्थापित एव उसका पनीयन 1940 की मर्म् म हुआ और 41 म फिर गडबडी और कायकता आ जो जैन। 42 के अगस्त आंदोलन के समय वहा बडा आ दालन हुआ। प्रमुख कायकर्ता गोकुल भाई भद्र राजपूताना प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का पहला समापति बना। भारत स्वतंत्रता क बाद सिराही राज्य का आधू पक्तीय भाग बम्बई म मिला दिया। इसके लिए राजस्थान से भारी विरोध होने पर पुन मही स्थान पर ला दिया गया।

प्रतापगढ़ राज्य समापता क कारण उदयपुर की हलचल मे प्रभावित हुआ। अमृतलाल यादव जमे लोगान पिछड़ वग तथा भीला का यहा समय संचेत किया।

भूगरपुर राज्य म रामनारायण चौधरी न भील सेवा सभ नाम की संस्था स्थापित की और उसने द्वारा शिक्षा सेवा तथा सुधार काय शुरू किया। इसलिए बड़ी जागति हुई सभय चला श्री कायकर्ता जैन गय। मन् 1945 म प्रजामंडल लोक प्रिय मनी मंडल बने और फिर मयुक्त राजस्थान सभ म डगरपुर राज्य भी ममा गया। भोगीलाल पाटवा यहाँ के काष्ठी जुलम महिष्ण नेता प्रसिद्ध हुए।

बाँसवाडा राज्य मे श्री गुजरात एव उदयपुर का जन जागति स प्रभावित भीन जांग समय पर चले। पन्नालाल भूतेन्द्रनाथ त्रिवेणी आदि यहाँ के अग्रणी कार्यकारी थे। भारत स्वतंत्र होन के बाद लोक प्रिय म श्री मध्य बना और उसका मुख्य म श्री त्रिवेदी हुआ। आबिरकार य गियास भी मयुक्त राजस्थान सभ म मिल गई।

अजमेर मेरवाहा 1938 के गगडों से दव गया था। उस समय बंजार मे एक राजनतिक सम्मेलन भूला भाई देसाई जैसे देश के कानूनी नरनाहर के समापितत्व म सम्पन्न हुआ। इसे यू० पी० राज्य म मिला देने की बात चली। यहाँ के हरिभाऊ उपाध्याय, डामनानगण चौधरी, गोकुलचंद्र व्यास, जवाना प्रसाद, रघुगजमिह दुर्गा प्रसाद स्वाभी कुमारानंद आदि 85 नेता, गिरफ्तार किए गये, जो 1945 म छाड़ दिए गये। 50 म इसे उप मूबा बनाया तथा 52 म हरिभाऊ उपाध्याय के मुख्य म नीत्व म

कांग्रेसी मन्त्री मडल बना। 1956 का प्रथम नवम्बर का यह सूबा राजस्थान राज्य में सम्मिलित कर लिया गया। इस तरह से राजस्थान के राज्या का एकीकरण हो गया।

1 आजादी की भावना में न्यायसी लड़ाई और न ही अपने स्फूर्ति एवं उत्साह तथा प्रेम पूर्वक कार्य करते थे। स्वतंत्रता हेतु राजस्थान के सभी जिला में प्रजा मंडल सभ, आंदोलन और अपने अपने अलग सगठन बन। इ ही सगठनों के द्वारा ऊपर तक जातियां हुई तथा अंग्रेजी प्रशासन की प्रगतिशील कांग्रेसी कमेटियों का राजस्थान से स्वतंत्र भारी बन मिला। फलस्वरूप वर्तमान राजस्थान का विकास बनाना तथा सुख सुविधा का उत्कर्ष हुआ।

कालू की पुरानी दशा परिवर्तित—हर स्थान के व्यक्तियों का प्रबुद्ध चरित्र कष्टमय व्यवहार और राजनैतिक उत्साह आदि के सिद्धांत सामाजिक स्थिति सुधारन में प्रमुख साधन होते हैं। जैसे देश की स्वाधीनता का शीघ्र भी राष्ट्र की कामना कल्प कर देता है। कांग्रेस के राष्ट्र मायको न जवा भारत को स्वतंत्र करवाना का मकल्प लिया तो उनका उस समय उद्देश्य नै राजस्थान को भी अनोखा बना दिया। यह था 'सामंती शासन हटाना वगैरह को मिटाना और समता के भावों से पिछड़े हुए इस प्रदेश की खूब सूरत बनाना। कांग्रेस के नेताओं ने प्रत्येक गाँव की प्लान में उसके विकास, निर्माण एवं सजावट में व्यक्तिगत दिव्यत्वा से कार्य किया। महात्मा गाँधी के 'रामराज्य' का साकार स्वप्न उ होने गाँवों से सुनिश्चित किया। जिसे शिक्षा कहीं स्वास्थ्य और किस स्थान पर सड़क तथा बिजली पहले पहुँचाई जाय और किस क्षेत्र को सिंचित करके अधिक जनहितकारी भूमि में परिवर्तित करें? ऐसी ऐसी बातें उनके मस्तिष्क में लहना गई। तब तत्काल कालू के जन मुख, इतिवृत्त एवं संस्कृति के सजीव चित्र खिल गये। गुलामी की गम से मुक्त हुई यह वाटिका बसती स्वाधीनता की त्रिविध समीर से लहलाह उठी।

कालू में हिंदुओं की पचास जातियाँ उपजातियाँ, जिनमें मुख्य पंडित¹, राजपूत वश्य एवं जाट वगैरह थे। इनका सामाजिक जीवन विविध प्रकार से अहंभावी था। गाँव में इ हाँ के द्वारा सारे कार्य सम्पन्न किये जाते थे। अन्य जाति के लोगों को इनके किये हुए कार्यों को मानना पड़ता था।

1 ब्राह्मणों की चार जातियाँ, जिनमें परीव और सारस्वत मुख्य एवं अधिक संख्या वाले रहे। पारिवारिक कार्यों के सिवाय सामाजिक तथा यापिक कार्यों में भी भाग लेते थे। ब्राह्मण यहाँ पंडित और पुजारी महाराज भुक्त एवं दान पग लागू के शब्द से सम्बोधित किया जाता। उनको बढ़ो की सभा में भी ऊपर बैठन का वश क्रमानुसार अधिकार था। पांच वर्ष का ब्राह्मण-बालक पचास वर्ष के आयु व्यक्ति का रूप कहकर पुकारता। किंतु उसे यापिस में या जी का ही सम्बोधन मिलता। यथा उसका मृत्यु आज खाना दान दसिणा नैना रसाई बनाना माला फेंकी फेरना फिराना आदि कार्यों का था वैसे पूरी छूटा छूत, परंतु मृत्यु भोज के समय अशुद्ध स्थान को भी दस्तेमाल कर नेता। ब्राह्मण राजपूत से जबर भय खाता। अब ब्राह्मण पढ़ लिखकर व्यापार नौकरी तथा उच्च पद भी पाने लगे हैं और पुरानी वृत्ति से नफरत करते हैं।

1 पण्डितारतु वसत्रण रमते महिषा इव।

पुनस्पोतपादने दशा अदक्षा मुक्तिं धामने ॥— श्री मद्भगवत् महात्म्यम्

राजपूत कानू में नहीं के बराबर, एक दा धर ही रहे। नरेश यहाँ के बीकानेर महाराजा, जागीरदार या भूमिपति उ ही के भाई बेटे वही (बीकानेर) रहते थे। यहाँ की जनता भी जागीरदार की द्वितीय भगवान या माँ बाप के नाम से सम्बोधित करती थी। राजा के बराबर तो क्या जनता के लोग इनके सामने तक बठ नहीं सकते। कालू में इनके आनदोत्सव पर दिवाली मनाई जाती थी। खोज के पर में सोना पहनना नाम के आये मिहू लगाना तथा विवाह में नगागा निधान चढ़ाना आदि काम राज्यानुमति से ही हुआ करते थे। प्रजा के लिए राजा का दशन दुलभ था। वह अपने महलों की राग तरंग में रहता अनेक रानिया में रहने हुए भी परिया के परिस जाकर रात्रि-यात्र में रथ की गाड़ी कमाई का पानी की भाति बहा देता था। जिस लकड़ी अरब के जमीर और ईरान के पादा तेल की राखण्डो प्राप्त घन की दोन। प्राया में लुटाते हैं, वैसे ही राजस्थान में राजा महाराजा, रईस और अमीर परिस का आनद लुटने जाया करते थे। इनका वहाँ एक रात का विलासित खर्चा लाख तक हो जाता। राजा महाराजाओं के महल मानो एक सजी प्रदर्शनी इनकी भाति भाति की ऊँचे कालर वाली भंडकीसी पोशाकें, उठी हुई नदनें और तने सीरे देख कर आदमी अचभित हो जाया करते थे। मौज के नव साधन, कानून की बोद पाबंदी नहीं, पत्थर की प्रतिमाएँ ? मनुष्य उनसे बोलन में अपने को असमय पाता। महल मौसम मुताबिक प्राय—ताप-निमग्नित और शीत निमग्नित रहते थे। अधिक प्यासी के कारण जनता बल गई।

बीकानेर के नाबो में राजपूत ठाकुरा की भी यही धान थी। पर आय कम और व्यय अधिक होने के कारण वे बजदार बने रहते थे। उनकी औरतों परदा में रहती। अतः वे काश्त आदि के कामों में अपने पतिर्यों की मन्त्र नहीं कर पाती। अब य सारी बातें मुधार पर आ गई हैं। कानू ठिकाने का विषय भवन बीकानेर के गढ़ ठिकानों का प्रतीक माना जाता था। विजयसिंह के ठिकाने में चोगामी बुनिया उम्दा गाँव रहे। अब—“राजमहल गया ने रोड़ा रूखा।” है।

दरोगा जाति के राजपूत भूमिहीन होते और राजपूतों के राखला में नीवरी किया करते थे। वहाँ इनकी सरदार अनेक हीन नामों से संबोधित करते। जोधपुर राज्य में तो प्रथम विश्वयुद्ध के समय दरोगा जाति के लोगों की सेना में भर्ती करने से भी रोक् दिया था। इस राज्य में 11 जुलाई 1916 में दरोगों और उनके स्वामी सरदारों के संबंध में विद्रोह जारी की थी, जिनके अनुसार—

मालिक (राजपूत) की ज़रूरत के अनुसार दरोगा, काम से हट नहीं सकता, मालिक कानूनन उससे नौकरी करा सकता था।

‘मालिक’ की हैसियत से अधिक नौकरों की सख्या वृद्धि हो जाए तो वह अपनी आवश्यकता से अतिरिक्त और दरोगों को दूसरे स्थान जाने की आज्ञा दे दें। मगर मालिक के महा शादी में सबको हाजिर होना पड़ना था तथा जब तक वह आज्ञा न दे तब तक वे जा नहीं सकते।

जिनके घर पत्ते हुए दरोगे हाने उनकी लड़कियाँ को राजपूत अपनी लड़कियों के साथ शादी के समय दहेज में दे सकते थे। हैसियत वाले राजपूत, दरोगों के घर के घर दहेज में दे दिया करते थे।

मालिक की हैसियत दुबल हो जाने अबका दरोगों की सख्या वृद्धि होने पर उस

घर का कोई दरंगा कहीं दूसरे के साथ काम कर लेता, मगर मालिक उसकी लड़की को देहेज में दे सकता था। दरंगे की स्त्रियाँ सौमनों की विलास सामग्री में एक मनमानी वस्तु रहती थी। इस तरह से राजपूतानादि राज्य इन्हें दाम मानते एवं वे भी गुनाहों वधन में बंधे रहते थे। 26 सितम्बर ई० म० 1920 में बौटा राज्य ने दरंगों की दामता के बावत एक आदेश जारी किया था कि 'किसी जागीरदार के दरंगे को पुलिस, सना तथा किसी राजकीय विभाग में भौकरी नहीं दी जावे।' स्वतंत्रता के बाद राजा महा-राजाशा की स्थिति गिरी, तब दरंगे भी इनसे हटकर निश्चित बन गये—

‘वायरा बाज ठाकुर-राव नरेन्द्र बाप्पा

वेगम हुम राणियाँ वजीर वणसिणियामा उड

आला वायरा बाजें ।’ (समय वायरा)

वैश्य—रालू में इस जाति के दो वन बसते आये हैं। एक आसवाल, दूसरा माहेश्वरी। दोनों का घघा व्यापार, व्याज सौदा सपट्टा, दुकानदारी के कारण समाज में पूरा सम्मान और चार था। ये गाँव की प्रत्येक मस्था तथा धार्मिक कार्यों में यथेष्ट तनु-मन धन देते थे। यहाँ के काफी व्यापारी राजस्थान से बाजार कारबार करके भी कानू में आकर द्रव्य खचते और सामाजिक राजनैतिक तथा जन जागृति का वातावरण बनाते थे। जन नेताओं के राजनैतिक या दोलन बावत इन्हीं से आर्थिक सहायता मिलती थी।

व्यापार में इनकी एक अपनी अलग रहस्यमयी (मुडिया) लिपि चलती, उमी के द्वारा ये लोग कारबारिक हिसाब किताब लिखते थे। कि तु लिपि बिना मात्रा किमी कवि गगामे लिखी जाती इसलिए कभी कभी उमका उमटा प्रभाव भी हाँ जाया करता था। न इसके लिए कहा है—

वणिक पुन बागद लिखे, बाना मान न लेत ।

हींग, मिरच, जीरो लिख, हेग, मर, जर कर देत ॥

एक बार किसी ने अपने एक निकट सबंधी को अपनी लिपि में पत्र लिखा। उसका कुछ अंग दृष्ट्य है—‘बाकोजी अजमेर गया छ हम रयी लिवा तुमा भी रद लीगयो ।’ पत्र पढ़ने वाले ने समाचार पत्र—बाकोजी आज मर गया छ हम रो लिए हैं मम भो रो-नेना ।

वस्त्यां म वणिया रोपव रुडो हाटा

गाहक जठ किसान, जवा—री कूट टाटी

घाटू बाटी घाल लय जद बाधू बाटा

छोटा गाँवा माय मा' घनी मा'जन माटा

जाट एवं किसान—खेती का मुख्य धंधा करने वाले लोगों को किसान या वाशतकार कहते हैं। रालू में ऐसे जन जाट ब्राह्मण, वरागी भाट नाट्टे खाती, नाथ कुम्हार, लुहार और हरिजन आदि लोग खेतीकर हैं। ये साथ में पशु पालन का पेशा भी करते हैं। किंतु यहाँ तो कभी कभी ही पीली बिजली चमकती है। विशेष तो सदा सफेद विद्युत ही कलकती हुई दुग्ध का भयावना दृश्य उत्पन्न करती है।

वाताय वपिता विद्यु नतपायातिलाहिनी ।

। पीता वर्षाय विनेया दुग्धाय सित भवेत् ॥ (यन् नरी बिजली, से पवन, गहरी, साल बिजली से धूप पीली बिजला से वष्टि और सफेद से दुग्ध की सूचना मानी जाती है।)

यहाँ की भूमि के धूलि कण भी साल और लघु रूप नहीं। किसानों का अधिकतर परिश्रम विफल हो जाता रहता। दुर्गम के समय पशु भी मरते चुकते थे। इसलिए अथ और अभिधा से कालू के किसान दबे ही रह। बीकानेर में सहकारी समिति थी, मगर किसानों की आर्थिक दशा नहीं सुधारी। अथ होने का समाज में आदर नहीं।

लाग-बाग, बंठ-बेगार से कालू के किसान सतप्त थे। रुढ़िवादिता के कारण कम काण्ड वाले भी उसे हर अवसर पर घुसते और मोठ बाजरी के रुखे सूने खाने में भी बाधा उत्पन्न कर दिया करते थे। जाटों के सिवाय अन्य जाति के किसान भी अपने-अपने बायों से बने निपुण थे। बीकानेर राज्य में ये भी बंठ-बेगार के शिकार थे।

नायो,	खाती	नाथ,	सुनारा	और	सुहारा
अपणा	अपणा	बाम,	जिसका	सू	यारा
दरजी,	झीपा,	भाट,	गुसाया,	जोम्पा,	माम्पा
बूमारां,	माक्याह	बळाय,	बोरया,	वांभ्यां	

कालू के हरिजन—मेधवाल धोरी (नायक), सती, भगी बांभी आदि लोग जलूतता के दृग से रहते थे। इन सबके पास (माहल्ले) गाँव से बाहर की तरफ बसते थे। वे लोग मरे हुए पशुओं की चाम निकालते, सफाई करते, मोटे कपड़े धुनते और चमड़े के सार काय किया करते थे। हिंदू धर्मावलम्बी होने पर भी वे सावजनिक कुओं कुड़ी एवं मन्दिरों के दशना तक से बचित रहे जाते। ये सबकों के साथ उत्तमों एवं त्योहारों में भी शामिल नहीं हो सकते। समाज में इनका पूरा अनावर था। अधविश्वास एवं रुढ़ियों के कारण हरिजन अपने अधिकारों को भी भूल चुके थे। कालू में राजकमचारियों तथा जमींदार के अधिकारियों की सेवा करने में ही हरिजन अपना रहता समझते थे। बोहरा भी हरिजनों के लिए एक अभिधाप था। आय समाज वाला ने इनकी दशा सुधारने में प्रयत्न किया। स्वतंत्रता से बीसो वर्ष पहले महात्मा गाँधी के प्रभाव से देश में हरिजन सेवा संघ स्थापित हुआ। इस संस्था ने देश के हरिजनों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति सुधारने की पहल की। तब कालू के हरिजन भी सुख की प्रदाम लेकर कुछ आग बढ सके। कालू में उस समय कविता नहीं थी। उसका थोड़ा अंश—

हरिजन आखा बघ डाक्टर
रोग में रोक-कर भसाई
रख सफाई गंदगी में
कत्तब डटै - दिनुंग सू पसी आब
जन हितकारी तन मन धारी
जीवन दाता - येन काट कर
हरिजन आवा - बघ डाक्टर (समय बायरो)

फिर तो जून सन 1948 की रात कालू क्षेत्र के गाँव गारबदेगर में दूरदर्शी ठाकुर पतेहसिंह ने मुरलीधर जी के सावजनिक मंदिर में हरिजनों का प्रवेश करवा दिया। तब गाँव में एक बबडर खड़ा हो गया। ठाकुर के भाई बंधुओं ने मंदिर बंद करके चारों ओर तार दे दिये। बहुत से लोग ठाकुर को समझाने के लिए बाहर से आये। एक सम्मेलन रखा और उसमें एक बार मंदिर प्रवेश को रोकने का निश्चय हुआ। बाहर से आये हुए लोगों में श्री जानकी प्रसाद बगरहट्टा, ईश्वरदयाल गोयल तथा धमपाल

(हरिजन नेता), पनालाल बारूपाल आदि थे। इन लोगों को सारी धार्मिक स्थिति समझाने के लिए मेजर उदयसिंह के घर तत्कालीन विचार विमर्श हुआ। उस अवसर पर किसी सज्जन न थी पनालाल बारूपाल को जाये विठाने की बात कही। तब मधु लाग बारूपाल पर अस्पृश्य ढग से हँस पड़े। वही श्री बारूपाल थोड़े ही समय बाद आग जाकर उन्हे समय तक ससद सदस्य बनता रहा।

एक जन हित सघषकर्ता—कालू के नाहुटा परिवार में श्री मुगनमल नाहुटा के आत्मज श्री रूपचंद का जन्म अपनी जनिहाल, श्री हूगरण्ड में तोलाचंदजी मानू के घर ई० सन 1914 में हुआ था। एक माह पश्चात वह गिरुंग बड़े उत्साह आयोजना के साथ कालू लाया गया और नाहुटा घराने में बड़ी खुशियाँ मनीतियाँ मनाई गई।

लालित्य लाड़ प्यार भरी लीलाभा के साथ बालक बड़ा होकर गांव के मंदिर में विद्याध्ययन को भेजा गया। प्रवेश के समय गुरुजी ने बालक की उच्च ढग की स्वच्छता (बाल दाँत, आँख पान नाखून कपड़े और जूते) देखी। वह गारीरिक स्फूर्ति, प्रत्युत्पन्न मति तथा सत्वर निष्पत्ति लेने की क्षमता रखने वाला बालक पाया गया। कक्षा में गदगी न करना, स्लेट को धून से बचाना तथा सफाई के साथ साफ़र का भोजन ठीक स्थान पर बठकर करने जैसी अनन्य अच्छी आदतें उमरे, सहपाठी छात्रा ने सीखी।

श्री रूपचंद क्षीत्र ही स्कूल की शिक्षा समाप्त करके अपने पाय गुरुजों के पास पढ़े और किशोरावस्था से ही मना-सासाइंटियों में जाने लगे। वे अधिकारों की भाग करने वाली राजनैतिक सभाओं में भी भाग लिया करते थे। दि० स० 1987 में श्री रूपचंद नाहुटा का विवाह अबोहर के गोतछा परिवार में धार्मिक महिला श्रीमती चौबी देवी (ज०स० 1975) के साथ हुआ। जो यह समाज तथा मा महिला सुधार आदि कार्यों में उच्च कोटि की देवियों में गणना करने के योग्य है। ऐसी सुमस्कृत सहर्षामणी के मयोग से गांव के राजनैतिक रूप श्री रूपचंद को बड़ा बनावा मिला।

जवान होकर रूपचंद अपने घरेलू व्यापारों के संबंध में नेपाल के प्रसिद्ध व्यवसायिक शहर, बिराटनगर में गये तथा वही कोइरासा परिवार के नेतृत्व से प्रभावित हुए। इस तरह से कालू और बिराटनगर दोनों स्थानों पर सेवा-सुधार की भावना बरतते रहे। ई० सन् 1933 में वे कांग्रेस के सम्मेलन में गये और बगबर अपने सिद्धांत का निमाये चले। ई० सन् 1938 में वे श्री मेवासदन सरस्वती पुस्तकालय कालू के वायवर्ताभा में अग्रणी होकर पुस्तक तथा द्रव्य संग्रह करते रहे। तब सन 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सामंती सरकार ने उन पर सी आई डी की कड़ी निगरानी लगा दी थी। क्योंकि वे इस क्षेत्र में प्रमुख कांग्रेसी कहलाते थे।

श्री रूपचंद नाहुटा ई० सन् 1947 में अपने गांव के मावजनिक निर्माण कार्यों में आगे आय और 1948 में एक ट्रक खरीदकर उसमें पट्टियाँ आदि का पूरी रिहायत के साथ सामान भगवान् विद्यालयी नवन पूरा करवाने में पर्याप्त योगदान किया। ई० स 1952 के आम चुनावों की स्थिति के मध्य रणकर भी वे पीछे रह गये। विपरीत परिस्थितियों ने उनसे साथ भारी अयाय किया। पर नाहुटा घट्ट की स्थापना 'न हुटना' के अनुसार श्री रूपचंद ने डट कर देखा माया। उन्होंने घर की नहीं, पीड़ित जनता की दुविधाओं को मिटाने का भरसक प्रयत्न किया। ई० सन् 1953 में किसान जनता की उसका हक दिलाने के लिए जिला स्तर पर अन्य नेताओं के साथ मधु किया।

येहूँ निकाही आ दोलन म भरी गोदामा का प्रकटीकरण बरन हेतु सत्याग्रह म भाग लिया । आतिर सरकार के विरोध के फलस्वरूप पुन नपाल जाकर अपने काराबार के साथ ही कोइराला परिवार की राजनीति मे हाथ बटाने लग । श्री मातृकाप्रसाद कोइराला आदि से उनका घरेलू सम्पर्क था । मातृकाप्रसाद के अनुज श्री बी०पी०, श्री के०व, तारिणी और गिरिजाप्रसाद आदि अनेक बार श्री नाहुटा के साथ कालू आकर रहे थे । वस कभी इनके (कोइराला के) पिता स्व० श्री कृष्णप्रसाद ज्यू खरदार ने भी अपन राजकीय प्रवास (दश निकाला) के समय सपरिवार काल आकर इही क घर विधाम लिया था ।

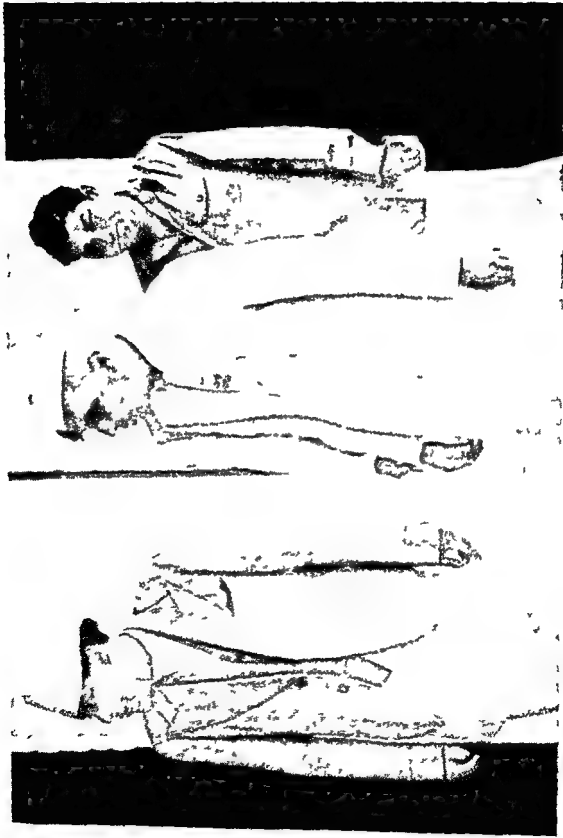
ई० स० 1954 मे श्री रूपचंद ने अपन गाँव कालू म जनता के स्वास्थ्य हिताय । अपना एक निज पत्तूक भवन पारिवारिक स्वीकृति के साथ पूणरूप से मेडिकल विभाग बीकानेर को प्रदान करवा दिया । तत्समय बीकानेर पी बी एम हास्पिटल के पी एम ओ श्री के० मेहता एफ० आर० सी० एस० (Eng) ने दि० 23 2 54 को गाँव कालू मे अस्पताल का उदघाटन करत हुए श्री रूपचंद को बहुत बहुत धन्यवाद दिया था । फिर ग्राम सेवा सघ कालू के अध्यक्ष न गाव के प्रमुख व्यक्तिनो की मिटिंग बुलवाकर श्री नाहुटा का पुन आभाष माना । जायें चलकर सचमुच गाव म ही नहीं, यह एक क्षेत्रीय विशिष्ट सस्था काय सिद्ध हुआ है । रूपचंद न इम अत्युत्तम सेवा काय का श्रीगणेश—फलन की अपेक्षा करके दिखा दिया । गाव के एक भारी चिन्तित्ता अभाव की मिटाकर श्री रूपचंद नाहुटा फिर नेपाल के प्रवासा बन गय । और अपने उद्देश्यानुसार बीकानेर की तरह नेपाल म भी जनता की माँग की सरकार के सामने प्रस्तुत करने का कार्य आरम्भ कर दिया । भारत के प्रधानमंत्री स्व० श्री जवाहरलाल नेहरू 1952 में नेपाल पधार, तब महाराजा त्रिभुवन स प्रथम श्री नाहुटा का अभिवादन स्वीकारा था । 1960 मे नेपाल महाराजा क अनुज वसुधराशाह और छोरेन्द्रशाह मटना मे नाहुटा रूपचंद के घर आये थे । किन्तु वहा के कुछ असामाजिक व्यापारियां ने मालामाल होने की अपनी कल्पना योजना को, मूर्छित हति देखकर श्री नाहुटा के विरुद्ध नेपाल सरकार को भडकाया । जत अधिकार चाहन वाले ऐसे धेर दिल कायभावी व्यक्ति के सत्य सिद्धांत को भी बिद्रोहात्मक अपराध मानकर नेपाल सरकार न इनको अक्टूबर 1962 म नजरबंद कर लिया । थोडे समय पश्चात रूपचंद नाहुटा स्वतंत्र रूप होकर रात्रस्थान आये, परंतु राजनीति एवं सेवा कार्यों म स्वास्थ्य न साथ नहीं दिया । वे अस्वस्थ रहने लग गये और असमय मे ही (ई० स० 1978 नवम्बर मे) इस असार-भसार से चल दिए ।

श्री रूपचंद नाहुटा हसमुख मुस्करित राजनीतिज्ञ पुरुष थे, जो अपने लोगो के दिलो पर ही नहीं, विरोधी जनों के हृदय को भी समय समय पर प्रभावित कर दिया करते थे । श्री नाहुटा के जग सहयोगालेख, लेखनी से शब्दो मे नहीं बाँधे जा सकते । उनके स्वगवास से कालू गाव को जरूर अपना एक आदर्श सेवामावी सपूत सा देना पडा है । अब तो मात्र यही लिखा जा सकता है कि बड़े राजनतिको क मंडल मे प्रवेश पान वाले कालू के देश नेता का सतत् उत्तन वाला अभाव हो गया है ।

कामा अमर न कोय, धिर माया थोड़ी रह ।

जग मे बाताँ दोय, नामा कामा नोपला ॥

कालू मे मुसलमान—कालू म पहले मुसलमान तेसी पदमे का एक घर था । वि स 1954 55 मे ठाकुर मेघसिंह ने गाँव कालू म लागे (बर) बढाई । तब नदाराम



नेपाल महाराजा श्री निम्बुन, स्व० प० श्री उवाहर लाल नेहरू, स्व० श्री रुपन व गहुडा

जाणी आदि के साथ पदमा तली भा शामिल रहा। फिर उसकी औरत गुजर गई। नूर मोहम्मद नाम का पढ़ा लिखा एक लड़का, वह भी खुदा के घर गया। इस समय पदम का वहनोई अनाख्व यहाँ आकर बस गया था।

इसके घर के पास दूसरा मुसलमान मौला रगारा सरदारसहर आ आकर और घर (जो अब माना नाई का है) बनाकर बस गया था। थोड़े दिन बाद धुरु से फाजिल खा बाजी भी कालू आकर चूने भाटे का काम करने लगा। वी 1990 तक फकत इतने ही मुसलमान कालू के वासि-दगान थे जो हिंदू रीति रिवाज का भी मानते थे। मौला के वापिस चल जाने पर आलम नाम का रगारा बीकानेर से आकर बस गया।

यहाँ हिंदू मुसलमानों में प्रायः प्रेम ही रहा। धीरे धीरे आबादी के साथ साथ मुसलमान भी घटने लगे। ई स 1947 में भारत विभाजन के समय इनके करीब पश्चिम तीस घर थे। मगर उस समय सब के लिये काप गये। वातावरण खराब था। गाँव के भुठिये सिंगे लाग इनके सामने गड़बड़ बानें बनाते थे। सोहारा से पाकिस्तान जाती हुई मुसलमानों से भरी ट्रेन में कतला की निमम हत्यायें हुई—सुनी। तब कालू के मुसलमान, अगस्त की एक संध्या को बिना साथे पकड़े ही बुपचाप बूट ही ओर चौड़ खोड़ (जंगलीय अमाग) चले गए। जाति होने पर वापिस आये। लेकिन कई लोग पाकिस्तान जाकर बस गए।

वर्तमान समय में मुसलमानों के यहाँ साठ सत्तर घर हैं। इ होंने अपना धार्मिक संस्थान मस्जिद भी बनवा लिया है। उसमें अपने त्यौहार पर सब एकजिंत होते हैं और प्रेम से रहते हैं। कई लोग अच्छे कारोबारी तथा शरीफ इमान के रूप में कालू के नागरिक कहलाते हैं। गाँव में इनका एक अपना अलग ही मोहल्ला है। इस समय फकीरा मोहल्ले का मुलिया माना जाता है।

जातियों के आपसी सम्बन्ध—कालू में सब बिरादरी के लोग प्रेम व्यवहार के साथ रहते। इसका कारण एक दूसरे के बिना किमा का काय नहीं चल सकता था। यहाँ मनुष्य ज म से ही ऐसी रीति रिवाजें लागू थीं जो जम विवाह और मृत्यु पय त शु कलित रूप से क्रियाशील रहता। यहाँ ज म के समय ब्राह्मण, ज्योतिषी दर्जी, नाई बघ, हलवाई, ढाढी, ढोसी आदि की जरूरत पड़ती। इसलिए सामाजिक तौर पर सब जातियाँ एक-दूसरे के आश्रित थीं। कालू में आर्थिक ढंग से भी सब जातियाँ सम्बन्धित रहती। गांव के खाती सुधार, कुम्हार तथा सुहार, मेथवा नायक, ससी आदि से किसानों का पूरा वास्ता रहता था। खेती के बीजार बनाने सुधारने में उक्त लोग किसान का काम करते थे। उन दिना कालू में उच्च जातीय ईर्ष्याएँ मान अपमान का अधिक त्याग नहीं किया जाता। पर दुनिया स्वार्थी बनती जा रही थी। जिस जाति के लोग जहा-उच्च पद पर होत—अपने ही आदिमियों को बर्हा रखते थे। गरीब और अमार का भेद-भाव प्रचलित हुआ तथा किसान गरीब, और धनी मालदार बनने लगे। इस तरह में

- 1 उनके काम के पीछे नाम पड़े थे, जो आगे जाकर सुच्छता प्रकट करते हुए उपेक्षित रूप में काम आने लगे। जैसे—खाती काटी। यानि लकड़ी काटने वाला। फकण मुनार। अग्नि में फूँक मारने वाला। मुडी नाई। मुडन सस्कार करने वाला। गरडा ब्राह्मण। गरुड पुराण बाँचने वाला। मोडा बरागी। मोह को ढाहने वाला। कुम्हार टिपला। टिपटिप करके बर्तन बनाने वाला। सेवग सरडा। भोजक भग्ना आदि प्रतिष्ठ हुए।

कालू में अनक वग एव लाग विभिन्न जातियो में बटे हुए थे। उनके धर्म भी अपने पृथक पृथक प्रचलित थे। जातियाँ ने अधिकारानुसार नौकरियों और व्यापार में जातिगत वर्गीकरण से प्राथमिकता दी जाती। फिर भी निम्न वर्ग की जातियाँ बाध्य, वर्गीकृत सतोषित रहती थी। किंतु दूसरे महायुद्ध के बाद यह सतोषावस्था उग्र हो उठी और आन्दोलन छिड़ गए। इसी असन्तोष के कारण राजशाही और सामन्तशाही प्रायः अब समाप्त हो गई है।

कालू में नान पान एव वग भूषा अपनी अपनी रीत्यानुसार समय तक चलती रही। विभिन्न जातियो के धर्मों के लोग अपनी जाति या धर्म के लोगों से ही वैवाहिक सम्बन्ध करते। यहाँ अपनी जातियो के अधिक घर हान के कारण कई समाजा में गाँव के गाँव में ही सम्बन्ध हो जाया करते। ये सम्बन्ध जोसवालों में अधिक होते रहे हैं। जाटा, माहेश्वरियों और ब्राह्मणों में भी ऐसे सम्बन्ध हुए हैं। अन्य लोग भी स्वयं के गोत्र छोड़ कर गाँव के गाँव में ही अपने पुत्र पुत्रियों का सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। ये वैवाहिक विवाह शुभ मुहूर्त में सम्पन्न होते हैं।

मुसलमानी आक्रमणों से आन्तर्गत देश में बाल विवाह का प्रचलन था। छोटी बच्चियों को बाली में बठाकर विवाह किया जाता था। कालू में भी ऐसे एक दो विवाह देखे गए। प्रायः सारी जातियाँ में यहाँ बाल विवाह होते थे। सन् 1931 में शारदा कानून द्वारा ऐसे बाल विवाहों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया था, पर इस सामाजिक प्रथा में पूर्ण सुधार नहीं हो पाया। फलस्वरूप विधवाओं की संख्या में वृद्धि होने लगी। तब पुनर्विवाह की आवश्यकता से कुछ वास्तविक जातियाँ में नाता या चूड़ी पहनना के नाम से विधवा विवाह होने लगे। नाता कर लेने पर विधवा का मृतक पति के परिवार में सम्बन्ध विच्छेद हो जाता। उसे अपनी सत्तान को वही (मृतक पति के घर) छाड़ना पड़ता था। अब ब्राह्मण वर्णियों में भी ऐसी विवाह प्रथा चल गई है।

राजस्थान की बेगार प्रथा—गत युग में राजाओं तथा पामतों ने बेगार लेन का एक अनोखा अधिकार बना लिया था। कुछ राज्यों में ब्राह्मणों तथा राजपूतों से भी बेगार ली जाती थी। शेष सरकारी अधिकारी एवं रावणा में ब्राह्मणों का भोजन बनाने और पाठ पूजा करने, नायका का पहरा देना नाइया का बतन बनाने, दापक जलाना, किसानों का लकड़ी व चांग पाला देना, कुम्हारों को मिट्टी के बतन पहुँचाना, सुहारों को लाहे का सामान बना देना आदि काम करना पड़ता। हरिजननों को खेत और सामतों के घर का काम भी करना पड़ता था। इस बेगार का आदमी आधी पानी कमी भी टाल नहीं सकता। बेगारी अपना हल चलाना, फसल काटना, घर की बीमारी के समय, मरण पर स्वयं नुकसान उठाकर राज्य की बेगार जाता था। विलम्ब से पहुँचने पर बेगारी की पिटाई भी हो जाया करती थी और अधिक धर्म के कारण मृत्यु भी। गंगासिंहजी के समय एक बार बीकानेर में बायसराय आया, तब राज्य के प्रत्येक साठ व्यक्ति के पीछे एक बतनिक बेगार ली और रत्न पथ के दोनों ओर मणालें जलाकर हर खेमे पर एक आदमी नियुक्त किया गया था। इतना सन्त राज्यदेश था कि कई बेगारी सर्दों में ठिठुर कर मर गये। राजस्थान की यह प्रथा भारत स्वतन्त्र होने तक थी। इससे सामाजिक हीनता के साथ लोगों में आर्थिक कठिनाई भी व्याप्त हुई। बेगार लेने वालों का नैतिक स्तर गिर गया था। बेगारी अपने बाल-बच्चों की सम्भाल भूलकर सामतों को

बगार देता रहा। वह ईश्वर की भरजी समझ कर पशु रूप काय करता था। उसने बच्चे बीमार हो चाहें भूखे मर गये हो, पर वह तो भूखा प्यासा बेगार में मरता रहता। कालू म ब्राह्मणों ने तो नहीं पर अब लोगो से यथायोग्य बेगार ली जाती थी।

स्वास्थ्य तथा इलाज—घुष्क आब हवा के कारण यहाँ का घामीण इलाका बीमारियों के बचाव का बाधा। फला फूलों और एंशा आराम के साधना वाले प्राता-देशों में जितने भयंकर रोग फैलते, वे यहाँ के कठोर शीत घामों की वजह से तोड़ कर हजिज अंदर नहीं आ सकते थे। पास के नगरों वाली बीमारियाँ भी कालू में कटई कम मरणा में मिलती थी। नह्कवा—जिसे बाला भी कहते हैं वर्षा के दिनों में कट लागो के हाथ परो में निकल आया करता था। वारा पर का खाला कोई खतरा नहीं। घर पर पड़े रहा, आदमी खेत का काय नहीं कर सकता। इक्यातरा, तजरा चौघइया जैसे साधारण बुखार चलते थे। बसे तो खण घासी (सपेदिक) और टाइफाइड (घामीहरा) राज रोग कहलाते। किंतु कभी कभास घाड (सीमा) तोड़कर आ जाते और गाँवों में काफी गडबड फैला दिया करने थे। चेचक आदि रोग भयंकर, बच्चों के प्राण ले लिया करते और उनके शरीर पर कुप्रभाव छोड़ जाते थे। किंतु कोई राज्य इनकी रोकने में समर्थ नहीं हो सका। बीकानेर राज्य में चिकित्सक आये, मगर राजधानी तक ही रहे। इसलिए जनता बच्चों, स्त्रियों को बड़ों बीच हकीमा पर ही निर्भर रहती थी। कालू में कुछ हद तक पड़े लिखे बच मिलते मगर ज्यादातर कुटकी चिरायतो दिलवाने वाले झाड़ू बच ही होते थे। कई लोग बिना निदान किए, कुलडिये घासी उकानी दिलवा दिया करते। ये लोग संघ में घाड फूँक भी कर देते। ऐसे आगा में यहाँ गाम दज्जी नाई और अमरदास बरागी प्रमुख स्थाने थे।

सन् 1953 में कालू में क्षेत्रीय चिकित्सालय खुला। भारत सरकार ने उमी बप स राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम प्रारम्भ करके मलेरिया कम किया है तथा चेचक का भी गाँवों में भगा दिया।

क्षेत्रीय भाषा—भट्टाण की मुख्य भाषा राजस्थानी जो माना अक्खड़ मारवाडी थी। गाँवों में क को घ और त को द बोला जाता था। जैसे—केष ? (क्या कहता है?) जीवसे ही जीवसे ही। झडता—अडता। कानूनी कारवाइयाँ उडू शब्दा से सजाई जाती। लिपि अधिकतर उडू मयी नागरी चलती थी। कानूनी के लिए कुछ समय तक उडू फारसी का चलन रहा। पर स्वामी दयानंद सरस्वती ने राजस्थान के कई राज्यों में 1884 ई० से हिंदी तथा फारसी लिपि का स्थान बनाने हेतु आदेश जारी करवा दिये थे। इसलिए हिंदी के लिए यहाँ स्वामी दयानंद बरदान स्वरूप सिद्ध हुए। धीरे धीरे अंग्रेजी का भी प्रभाव प्रकट होने लगा और साधारण जनता में उनकी मातृ भाषा अपनी राजस्थानी ही बनी रही।

विद्या प्रसार—इस समय पुरुष स्त्रियों में बिना भेदभाव के शिक्षा प्रचार दिलाई देने लगा। राजस्थान में बीकानेर सब रियास्तों में अग्रणीय बिना जाने लगा। बीकानेर राज्य में स० 28 से प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर दी थी। किंतु विशेष जोर न लगने के कारण दूर गाँवों के बच्चे वास्त तथा पशु पालन में ही कायरत रहते। हालाँकि गाँवों में कई बार चिट्ठी बचान के लिए निकटीय नगरों में जाना पड़ता था और नूतों व चिट्ठी लिखने के समय पढ़े लिखे व्यक्ति की बड़ी कठिनाई रहती तथा बद्र की जाती थी।

अर्जी निस्तवाने या तारा पड़वाने के लिए तो गाँवों का क्या ? वस्त्रा का भी किसी अंग के समक्ष लालायित होना पड़ता था । तत्समय कालू में पट्टा स्कूल था । लेखक का यात्र है—पाटी (पट्टी) मोटी लकड़ी की तेल में चिकनी की हुई भारी त्रुती होती थी । छात्र उस पर राख लगाकर भकड़ी के बगने में खक त्रिवा करत थे । बादामी रंग के मोटे कागज और ढोके (ढठल) के डक.को चाकू से छील बनाकर वस्त्र बगने कापी का काय किया करते । बादाम के छिलकों को आग में जलाकर महीन पीम छान कर उसमें थोड़ा गोद मिला करके काली स्याही बनाया करते थे । सध्या छुट्टी से प्रथम नित्य एका बड़ा तथा डूँबों पौचा की मुहालनी हुआ करनी थी । प्रायना करने समय छात्रा का महागजा की मंगल कामना करनी पड़ती । जमे—

छात्र करत यह विनय हैं, मुनिय दीन दयान

अमर अकटक मित रहे श्री गंगासिंह नेपाल

गंगासिंहजी के देहावसान के बाद मादू लसिंहजी का नाम चसन लगा, जो अगस्त 1947 के बाद जाकर नीचे लिखे अनुसार हिंदी के लिए परिवर्तित हो गया ।

छात्र करत हैं विनय यह मुनिये श्री भगवान ।

नित नूतन उन्नति करे हिंदी, हिंद महान ॥

बीकानेर राज्य की स्कूला में बीकानेर के भूगोल इतिहास की पुस्तकें हुआ करती थी । इससे पहले (सन् 1928 के पाम) यहाँ इलाहाबाद अनीगढ आदि के शिक्षा विभागों से पुस्तकें आया करती । वहीं कही सम्बृत्त भी पढ़ाई जाती थी ।

16 नवम्बर स० 37 में महाराजा श्री गंगामिह की स्वर्णजयंती महोत्सव मनाया गया । उसके बाद राज्य की नारी स्कूलों में (कक्षा 1 से 8 तक) "स्वर्ण महोत्सव पाठ माला" पुस्तक के भाग 1 से 8 तक पढ़ाये जाने लगे । इस समय सरकारी तथा सरकारी, राज्य में काफी प्राथमिक पाठशालाएँ थी । राजधानी बीकानेर में हाई स्कूल और कॉलेज भी खुल चुके थे । इनमें मोहता व रामपुरियों की हाई स्कूल अग्रणी थी । राज्य के विभिन्न युवक, बकार बने हुए राजनैतिक आन्दोलनों में भाग लेने लगे थे । सगरिया जाट हाई स्कूल के स्नातक द्वारा भी राजनैतिक जागृति में अच्छा ज्वमर बन आया था ।

इस समय कॉलेज अजमेर जयपुर जाधपुर उदयपुर कोटा अलवर आदि राज्या में स्थापित हो गये थे । पिलानी में विहला कॉलेज काफी प्रसिद्धि पा चुका था । राजस्थान के कॉलेज, हाई स्कूल प्रारम्भ में इलाहाबाद विश्व विद्यालय से संबद्ध थे । फिर कॉलेज, आगरा विश्वविद्यालय से तथा हाईस्कूल समुक्त प्रात (वर्तमान उत्तरप्रदेश) के बाड से संबद्ध हो गये । स० 29 में अजमेर में अलग बाड ऑफ हाईस्कूल, एण्ड टचर मिजियेट एजुकेशन स्थापित हुआ । यह बोड भारत सरकार के तत्वाधान में राजस्थान मध्यभारत अजमेर मेरवाडा, स्वासियर, के हाईस्कूलों व इंटर कॉलेजों की मद्विक व इंटरमिजियेट परीक्षाओं का संचालन करता । राजस्थान का प्रमुख विश्वविद्यालय स० 1947 जयपुर में स्थापित हुआ । सर सरकारा संस्थाओं में विद्यामवन (उदयपुर) - ग्रामोथान विद्यापीठ मंगरिया (1917) भारतीय विद्या मंदिर बीकानेर (1947) विहला गिथा ट्रस्ट (पिलानी) वनस्थला विद्यापीठ कालू के पास गांधी विद्या मंदिर (1950 मरणा सहर) और वस्तूरबा ग्रामोथान विद्यापीठ (1955 महाजन) आदि मस्थाएँ शिक्षा

क्षेत्र में कार्य करने लगी। उस समय भारत में उभरने वाले विद्यापीठों में शांति निवेदन, डॉ. कर्वे का महिला आश्रम, आय कर्मा गुरुकुल बड़ौदा, आय कर्मा महाविद्यालय पोर्णबंदर, महिला विद्यापीठ प्रयाग आदि उल्लेखनीय हैं।

ग्रामोत्थान विद्यापीठ सगरिया (राज०) स्वामी केशवानंदजी के जीवन की कम-स्मृति हो गई। उनके व्यक्त विचार थे— जिस स्वराज्य के लिए हम प्राण दें, परिवार बर्बाद हो और देश स्वराज्य का अर्थ भी न समझें, हमें बिना प्रतीक्षा किये वालकों के लिए स्कूल और प्रौढों के लिए पुस्तकालय, भाष्यरत्ना शिविर एवं स्त्रियों के लिए पढ़ाई के अतिरिक्त घरलू कार्यों की शिक्षा की व्यवस्था भी करनी चाहिए। यदि यह नहीं हुआ तो कौम आजादों जैसी भूल्यवान वस्तु का सभाल नहीं सकेगी। यही से स्वामीजी ने अपने प्रत्येक विषय पर भरपूर कार्य किया। उन्होंने भारवाडी रिलीफ सोसाइटी कलकत्ता के सहयोग से सुनिश्चित शिक्षा योजना का निर्माण किया। इसमें निम्नलिखित कार्यक्रम थे —

- 1 पंचवर्षीय मरुभूमि सेवा कार्य योजना सन 1944-49 तक
- 2 ग्रामोत्थान पाठशालाएँ 1949 से 1953 तक
- 3 त्रित्रिंश विद्या योजना 1954 से 57 तक

निम्नलिखित प्रांतों में 290 गाँवों में लगभग बिना भेदभाव के पाठशालाएँ चली। इनका सगरिया (राज०) के द्वारा। इसके तहत लखन में अपने गाँव कालू के कुछ युवकों की अध्यापक पदा (कुचौर, शेरपुरा आदि गाँवों में) पर नियुक्तियाँ करवाई थी। उस समय ग्रामोत्थान सगरिया में राजस्थानी के उप निरीक्षक श्री भोमराज बभेरू थे। तब सन् 1928 के अनिवार्य शिक्षा अधिनियम के अंतर्गत नगरपालिकाएँ व रियासत भी अपनी पृथक् पृथक् पाठशालाएँ चलाती।

बीकानेर राज्य में रतनगढ़ के सेठ मूरजमल नागरमल जालान द्वारा भी आबसर, पूनरासर, सूडसर आदि अनेक गाँवों में बहुत सी पाठशालाएँ शिक्षा कार्य संचालित थी। ठिकाना छतरगढ़ में भी अपनी पाठशालाएँ विद्या प्रसार में पूरी व्यवस्था पूरक चलती थी। इनमें कालू, कल्याणा, छतरगढ़, सालगढ़ और विजयनगर की स्कूलें प्रमुख थी। इस तरह से भूकरवा, साँखू, रावतसर, बीदासर, महाजन आदि के ठिकानों में भी अपनी अपनी स्कूलें शिक्षा-कार्य संचालित थी। बीदासर की स्कूल में श्री मांघीलाल याचित और महाजन की स्कूल में श्री ग्मुनाथदास जी स्वामी, बीसो वर्षों तक आदर्श अध्यापन कार्य करते रहे।

इसी भाँति बीकानेर डि० वाड की तरफ से भी भैरसर, रुनिया आदि गाँवों में स्कूलें थी। भैरसर की स्कूल में टीकमनास एक अच्छे अध्यापक थे।

सन 59 में लोकतांत्रिक विवेकीकरण अधिनियम योजना के अंतर्गत पंचायत समितियों का गठन हुआ। तब ग्रामीण क्षेत्रों का सारा शिक्षा दायित्व पंचायत समितियों के अधीन आ गया। अब इन सार सेमी-गवर्नमेंट गाला शिक्षकों को अर्द्ध राज्य कर्मचारी माना जाता है। किंतु शिक्षकों को उनके द्वारा की गई प्रशंसनीय सेवाओं के लिए हर साल (5 सितम्बर को) राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित करने का अवसर प्रावधान है।

क्षेत्रीय साहित्य—इस क्षेत्र में साहित्य रचना की प्रवृत्ति बहुत पहले से पाई जाती है। दण्डि की नदी के तट पर ऋषियों ने ऋग्वेद की रचनाएँ लिखीं। वहाँ अब भी वही साहित्य परम्परा स्वरूप विद्यमान है। 19वीं शताब्दी में यहाँ के चारणों में न्याल-दास—साहित्यकार, रघुनाथ काव्य सजना में विख्यात हैं। अन्य चारणा में भी साहित्य को व्यापक बनाया। तत्समय बीकानेर में आकर इटनो के विद्वान् डा. एल० पी० टमीटोरी ने शोध एवं साहित्य का सुन्दर सृजन किया। कालू के पाम—नरत कवि श्री किमनमिन् हिमतराश, रयालीराम, गोविन्ददान, पुगलाराम जैसे साहित्यकार हुए हैं।

भारत की राजादों की लड़ाई के माथे यहाँ के साहित्यकार भी अग्रसर हुए। उन्होंने दुश्मन, असहाय व पीड़ित जन सामान्य का राजा महाराजाओं एवं ठाकुर जागीर-दारा के खूनी हाथों से बचाने के लिए क्रांतिकारी साहित्य लिखा, जिससे जन जीवन को नया मोड़ मिला।

पद्य-साहित्य—कालू में सन् 36 से दुर्गावत सारस्वत और लेखक, पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से सामयिक कविताएँ लिखते। सन् 49-50 में राजस्थानी की चाह हो जाने से चारों ओर प्रगतिशाल साहित्य लिखा जाने लगा। कविता में नई चेतना स्वरूप राष्ट्रीय भावना आई। बीकानेर से श्री ब्रह्मसिंह, देवावत, सेठिया आदि लोग लिखने लगे।

राजस्थान से भारहूट कैप्टरीसिंह उदयरार्ज उज्ज्वल नाथूदान महियागिया चतरसिंह आदि की कविताएँ अच्छी बनीं। गीत गजानन मुकुल राजावत जमन, भरत व्यास भीम पाटिया, बेकारो, बुद्धिप्रकाश पारीक आदि ने लिखे।

निबन्ध, कहानी, उपन्यास, नाटक—कालू में संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में श्री मुखलीधर व्यास श्री विद्याधर शास्त्री, लक्ष्मी कुमारी बूढ़ावत, श्री जोशी, नाहटा, ओझा सुकिरियाजी आदि लोग लिखने लगे। राजस्थान में विजयदान देवा, माधवेंद्र चन्द्र शर्मा, किनार कल्पनाकांत, मनाहर गोरी, रामस्वरूप परेश, प्रमति लेखक कहानियाँ लिखने लगे। नाटक स्वरूप गोभाचंद जम्मड, निरजन् नाथ आचार्य, रावत सारस्वत, श्री गुलाबचंद निर्वाण, गणपति चन्द्र भट्टारी आदि ने लिखे हैं। निबन्ध में श्री कोमल काठारी कहैयालाल सहल रामनारायण व्यास, शक्तिदान कविता माधवन रामा आदि लेखक लोग हैं। इनके निबन्ध साहित्य समाज और राजनीति जैसे विषयों पर लिखे हुए हैं। आर्य साहित्य श्री नरोत्तमदास स्वामी नारायणसिंह भाटी, रामप्रसाद दाधीच, संस्कृति आदि ने लिखा है।

पत्र-पत्रिकाएँ—मरुवाणी आलमा, लादेमरे हरावडे, कुरजा, विशाल मरघर आदि राजस्थानी साहित्य की तत्कालीन सामयिक पत्रिकाएँ रही हैं।

विश्वम्भरा, प्रेरणा, प्रजा सेवक भधुमती, गोप पत्रिका नवज्योति, मरुभारती लोकवाणी, वरदा, त्यागभूमि तथा तरुण राजस्थान आदि ने भी राजस्थान में सामाजिक व साहित्यिक स्तर का विकास किया है। श्री नरोत्तमदास, अमरचंद नाथू रामजी खडगावत आदि बीकानेर राज्य के इतिहास लेखक हुए। राजस्थान में श्री देवीप्रसाद

1. 16वीं शताब्दी में बीकानेर के पृथ्वीराज जी गठीह प्रसिद्ध विद्वान् और साहित्यकार थे। उनकी रचित राजस्थानी की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है, उन्होंने एक जागीला पत्र लिखकर राणा प्रताप को अकबर की अधीनता स्वीकार करने में बचाया।

हरविलास, डॉ दशरथ शर्मा रामनारायण दूगड, श्री गहलात भुनिजिन विजय, ओझा आदि राजनतिक इतिहास लेखक बनकर ऊँचे पहुँचे ।

मेले—बानू म कालिकाजी का नवरात्रि मेला, लियेरा म रामदेवजी का, पूनरासर मे हनुमान्जी का श्री कोलायसजी का मेला, गोभा मेडी का मेला आदि हमारे राज्य म मेले लगते रहे हैं । राजस्थान मे परबतसर, पुष्कर नागौर नापद्वारा, तिल वाडा तथा अजमेर मे रवाज साहव आदि के मेले सदा से प्रसिद्ध हैं ।

कला—भारतीय कला का सार-रस है । कला जिस भूमि म उत्पन्न हुई है तथा जहा वह पनपी है वह घरा वास्तव म धमनिष्ट है । तलित कलाओं म राजस्थान की चित्रकला की गहनता सर्वाधिक है । चित्रकला, नृत्यकला व संगीतकला म प्राचीन समय स विशिष्टता रखने वाला प्रदेश राजस्थान ही है । यहा राजा महाराजाओं ने चित्रकारों नृत्यकारों एवं नगोतका को सदब आश्रय दिया है ।

अद्वेता के सम्पर्क से वास्तुशिल्प एवं भित्ति चित्रकला में नई शक्ती पनपन लगी थी । जा आगे जाकर गावों तक प्रचारित हो गई । बीकानेर म खालगढ़ महल, जयपुर मे मान गाहन क भवन और जोधपुर का उम्मेद भवनादि हमके प्रमाण हैं । इनम राजस्थानी और मुगल चित्र शली का मिश्रण पाया जाता है । यहा के कल्याणसिंह शेखावत गोवर्धनलाल जासी आदि प्रसिद्ध कलम चित्रकारों का नाम है ।

प्राचीन कालू जात्याज्जिवन, वर्तमान म प्रगति पथ पर संचरत हुआ । वह बहुमुखी सफलताओं की आवसति लिए हृषमन्न सस्थिति निवासित, जिले का कुशल कस्बा, स्वास्थ्य शिक्षा धार्मिक सहिष्णुता, सुधरी सांस्कृतिक अवस्था, साहित्यिक विधियो, राजनतिक चेतनाओं तथा सामाजिक जन हियाय सस्थाओं की गति प्रगतियों की पावन विचारधाराओं का बनाय रखन म अपन लघु रूप म सदियो से उत्पन्न है । इस छाटे से कस्ब की गिनती की हवेलिया, मंदिरों, धर्मशालाया, छतरियो आदि म स्थापत्य कला क आदम नमूने दिखाई देते हैं । उनमे पुरानी भित्ति चित्रकारी के चित्र समोजन, विषय वस्तु रंग योजना तथा कथावस्तु के महत्वपूर्ण प्रकटीकरण दृष्टिगोचर होते हैं । इसका कारण कालू के लग बीकानेर महाराजाओं के राज दरबार, दुर्गों गढ़ों, पलेस तथा नगर का अ य हवेलियो आदि के मकानों का दख देखकर प्रभावित हुए । तभी ता उ हान अपन इस कस्बे म काफी समय गृहले एसी सुन्दर और गाँव क स्तर से बहुत ऊँचे दर्जे की हवेलिया बनान की परम्परा प्रारम्भ कर ली थी । कालू की इन प्राचीन हवेलियो के मानिक सेठ वगरह जिनका आना जाना प्राय बीकानेर और राज्य म था । इनमे नाहटा, कोठारी शहर बंद और गुराँजी अग्रणी रहे । उन्ही के हवेलियो और उपासरे म उत्कृष्ट भित्ति चित्र मिलते हैं । जन के अठिठे तीथकर चन्द्रप्रभु के मंदिर और मेला की छतरी मे इनस भी पुरानी चित्रकारी पाई जाती है । माताजी के मंदिर और सत्यनारायणजी के मंदिर मे भी घोटवी कली पर प्राचीन शली के भित्ति चित्र जत्य त व्यापक एवं कलात्मक दृष्टिगोचर होते हैं । इनम एक अनुकरणीय भावना ज्ञात होती है कि बीकानेर के अ य बड़े बड़े नगरो क जनपति परिवारो मे यह परम्परा प्रचलित थी । वे उस समय राजा महाराजाओं की भाँति अपन विशाल भवनो में भित्ति चित्र, चित्रित करवाने में बहष्पन का अनुभव करते थे । उनम अभिजातीय भावना और शाही स्तरीय जीवन बनाने की सोचकठा, होड रहती । क्योंकि उनका बीकानेर के राज दरबार स गहरा संबंध था । तब कालू के महा जन कसे पीछे रह सकते ।

वि० स० 1972 के सगुमग सट सुगनमत नाहुटा और उनका अनुज पदमचंद तथा तोलाचंद जोठारी और आसकरण चंद का बोरपोदार हवेलिया बनी। बरणीदान पनेहचंद बोपरा में उस समय के बन मयान में एक चित्रकार के हाथों बन भोटे चित्रों के नीचे छाट्टु कुम्हार के हस्ताक्षर हैं। सन् 1939-40 में सरदारगढ़ का मोहम्मद कारीगर राठय परिपद बालू के पदों बनाने के लिए आया था। उसने पदों के साथ रंगमच पर सुंदर चित्र बनाकर बालू के लोग को आश्चर्यावित्त कर दिया। उसी वर्ष उदयचंद भरदान सोड में मोहम्मद में एक दो मजिस्ता सुंदर बमरा बनवाया। इसका बाद सरदारगढ़ में आया हुआ एक अथवा मोहम्मद भी मकानों के साथ चित्र बनाता था। अलमूखी कारीगर न थी इन्द्रचंद्र राठो के मकान भवन में अच्छी चित्रकारी की है। उसने बालू में अनेक मकान बनवाये हैं। बालू में श्री डूंगरराम ग्रासी वास्तुशला एवं काष्ठकला में बड़ा प्रवीण कलाकार है। आधुनिक उग के बगले और भवनोदि के चित्र बनाने में यहाँ अलमू का नाम है। डूंगरगढ़ के कतिपय कारीगरों में श्री इन्द्रचंद्र नाहुटा और शिवनारायण कुठारी के भवनो में नई चित्रकारी स्थापित की है। पर देवालय में प्राचीन शैली के धार्मिक चित्र परिशोधित हात हैं।

संगीतकला एवं नृत्यकला—संगीतकारों में पहल जयपुर के गायक बड़े प्रसिद्ध थे। बीकानेर में भी कई अच्छे संगीतकार हुए। अनूप सरस्वत पुस्तकालय बीकानेर में उनके द्वारा लिख संगीत के अनेक ग्रंथ उपलब्ध हैं। अब श्री जयश्रुत शर्मा इस विषय पर अच्छा काम संचालन कर रहे हैं। जिन में यहाँ अनेक संगीतकार प्रसिद्धि प्राप्त हैं तथा कल्पक, गिव लोडव और रमन में बड़े सुंदर नृत्य किए जाते हैं। बालू में सावित्री गणेशा मिरासी बड़े लुभावन कल्पकादि नृत्य किया करता था। सन् 1946 में महाराज कुमार श्री अमरसिंह जी गहापुर बालू आये। तब उनके समक्ष गणेशा के कई प्रकार के नृत्य प्रदर्शन करके पुरस्कार प्राप्त किये थे।

इस क्षेत्र में पुरुषों द्वारा धौन्ड (डौन्डिया नृत्य) डफ और भोपा नृत्य बड़े आनंद दायक होते थे। बधूना के धान (म्यान) पर लाइ की सौकसा से अपने सिर पर चोटें लेते हुए भापे नाचते। गर्मोजा और केनराजा बुंदर के स्थान पर भी भापे/सौकसा से नाचते थे। बालिकाओं के भापे लाल बागा पहनकर नृत्य के साथ गोल निवालन और घाली का उछालकर डमरू के डके पर लेते तथा जमान में त्रिशूल गाड़कर कर्तब दिखाते। रात्रि जागरण में भी एस करतब दिखाय जाते।

लूनकरनसर तहसीन के गांव हसेरा तथा बालू के कौकड़-सीमाड़ी आडसर में जसनाथजी के जागरण अवसर पर सिद्ध सम्प्रदाय का दक्षनीय अग्नि नृत्य, दण्ड-नृत्य एवं भुद्रा का तात्रमेल से बड़ा विस्मय जनक होता है। गण गौर तथा अथ उत्सवों पर पुरुष तलवार का नृत्य भी किया जाता है। बालू में पहले स्व० बालूराम और अब उसका लड़का तलवार नृत्यकार हैं।

पहले विवाह आदि के समय बालू में अच्छी घाटी का सुंदर नृत्य हुआ करता था और चारणों के याचक लोग कठपुतलियाँ भी नचाया करते थे। -

हाली गौर जैसे विशेष त्योहार पर स्त्रियों द्वारा नृत्य एवं घूमर नृत्य का विशेष प्रचलन था। पहले के इन नृत्यों की यह विशेषता थी कि किसी भी नृत्य में पुरुष और स्त्री एक साथ मिलकर भाग नहीं लेते। राजा महाराजाओं की महफिलों में पेशेवर

महिनाए चीरे बान य भी नाचा करती थी। ऐसे लोक नृत्यों में राजस्थान के तेंगताली रणनृत्य, पांचपदा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

नाट्य कला—राजस्थान में महत्वपूर्ण कलात्मक उपलब्धि लोकनाट्य की रचना है। यहाँ के रयाल, माच, तुरा, कलगी, रासधारी, गमलीला, गसलीला भवाई एवं रम्मत कुछ विविध नाट्य प्रकार हैं।

बालू में पहले नाटक प्रदर्शन बला, रासलीला, रामलीला एवं हातो व स्वर्ग की परम्परा से शुरू हुई थी। उस समय बीकानेर के श्री जीतमल भाजक आदि की रमते भी व्याप्ति प्राप्त थी। यहाँ व निरुपवर्ती नगर सरदार गहर में स्व० शोभाच द जम्मड के नाटक (अभिनय) बड़े प्रसिद्ध होत। बालू में तुलसी नाट्य परिपद तथा अ य गहरा के नाटक मडला और रगमचा की व्यवस्थाएँ देख मुन नर कालू में लाधूराम नाहटा (वि न 1986) और उसके बाद श्री गिरधारी लाल भेंबर (वि म 1994) व नेतृत्व में भवत मूरदास की अभिनय ध्वज कुमार आदि नाटक खेले गए। नाटक का पहला रगमच बालू में राजलदेसर की एक नाट्य मडली ने वि स 1985 में बनाया था। फिर बनेच नाहटा की दुकान के बरामदे में और इनक बाद चेंबरो की धमनाली में बना जो आज तक चलता है।

आर्थिक परिस्थिति—उनीसवीं शताब्दी से जो आर्थिक स्थिति चल रही थी, 1937 व 1947 ईस्वी तक वही बनी रही। धीरे धीरे जनता का अप्रयय बचने लगा और बेराजगारी में कतई कमी नहीं आई। जीवन की जटिल समस्याएँ घटने के बजाय बढ़ने लगी। हजारों बेकार शिक्षित राजनतिक आन्दोलनों में भाग लेने लग। तब राजस्थान, साम तयाही में मुक्त हुआ। बीकानेर में तत्समय चार हजार आठ सौ अडसठ बकार थे। यहाँ का मुख्य धंधा खेती का था, मगर पड़े लिखे लोग खेती से विनारा करने लगे। तब कृषि की दशा भी कैसे सुधरती! बचिताएँ बनने लगी—

शिक्षा समाप्त हुई, आफन में जान आई
नौकरी व लिए कही अर्जी लिखायेंगे (हिंदी की एक हास्य पत्रिका से)
नौकरी मिल गई तो हैट बूट डट व
होटलों में जाकर हिस्की उठाएंगे
नहीं तो कृषि का नाय नहीं करेंगे हम
जंगल में जाकर घूनी रमायेंगे ॥

राजस्थान की भूमि बजट और सूखे से सीधे प्रभावित होने वाला तथा सिंचाई के माधन बिलकुल नहीं के समान। अतः अन्न उत्पादन में कमी और धिनमा जैसे अकाला की चपेट के कारण जनता की आर्थिक स्थिति भद्दा दुबल होती गई। लूनकरनसर तहसील सा सदा से पिछड़ी हुई थी। क्षेत्र के बहुत स गँवों की खारे पानी वाली कम क्षारीय जमीन में ग्वार मोठ और बाजरे के अतिरिक्त अ य चीजों का बाना असम्भव था। इस फसल उत्पादन की अयोग्य जमीन को पशुओं का चारागाह ही जाना जाता था। इसलिए सब्जी और फला की अभाव पूर्ति केवल मतीरे काकड़िया से की जाती थी। यहाँ के किसान परम्परागत पुराने औजारा से हा काम चलाते रहते। अतः कृषि में बालू को भी यही दशा बनी रही।

लूनकरणसर के पड़ोसी क्षेत्र श्री गंगानगर में इस समय जखर सिंचाई के माध्यम से अन्न खेती एवं समृद्धि निमान है। इसलिए हमारी नहसील में भी कुछ मुहाला है।

गई थी। किंतु यहाँ के काश्तकार को बजदार हाते हुए भी बठ बेगार तथा जागीरदारों की लाग लूण में पिसना पड़ता था। अतः कांग्रेस अध्यक्ष स्वामी वर्मानन्द आदि ने काश्तकारों के लिए राज्य से लड़ाई लड़नी शुरू की। सामंतशाही व खिलाफ आंदोलन हुए। तत्कालीन जोधपुर के किसानों को राहत पहुँचाने हेतु श्री नाथूराम मिर्धा ने काश्तकारों को 'बानून' बनाकर काश्तकार को खातदार तथा मातृकाना अधिकार दिलवा दिए। 1950 तक बानून के लिए ऋण, कुएँ और सिंचाई के साधन मुलभ करवाये गये। 1953 के बाद तो सूनकरनसर तहसील के कूओ, जोहड़ों की मरम्मत-खुदाई, नये ओजार, उन्नत बीज और सिंचाई की योजनाएँ, पंचवर्षीय योजनाओं के अंदर स्वीकृत होकर काश्तकारों को क्रम क्रम से लाभान्वित करने लगी। इस रेगिस्तानी खेती के साथ काश्तकार लोग पशुपालन में भी भाग लेते रहे। बीकानेर की भेड़ें ऊँट और पुंगल छत्रगढ़ तथा महाजन के पास की राठी गायें देश के दूर दूर कोना तक प्रसिद्ध थी। इस जागत्य प्रदेश की स्वास्थ्य कर धास के कारण किसान लाग खेती की बजाय पशुओं से अधिक फायदा उठाते।

कालू के काश्तकार अधिक पशु पालन कर्त्ता, इनमें जेबड़ (जेबड़) बाला की सख्या ज्यादा थी। वैसे अच्छी नस्ल की गायें भैसे और ऊँट भी रखते थे। जेबड़ वाले घर तो दिनां दिन बढ़ते ही गये। मगर द्वितीय महायुद्ध के बाद जन की कीमते बढ़ गई, तब कालू में भी खेती पर जोर दिया जान लगा। इसलिए चरागाह कम पड़ गए और कालू जैसे उन्नि शील गाँव में कुछ अग्रणी लोगों को राजनैतिक आंदोलनों में भाग लेकर गोचर भूमि की जगह निश्चित करवानी पड़ी। यह गोचर भूमि गाँव के पास उत्तर की ओर थी। इसके बीड़ रूप से हर बर वर्षा का आह्वान होता और दुग्ध के समय पशुओं का अनायास मरने के लिए विवश नहीं होना पड़ता। इससे हजारों पशु-पक्षियों का पापण संरक्षण होता रहता था। वड़ एक अनुपपुक्त (सूले-लगाये) त्यागे हुए पशुओं के स्वच्छ निचरण तथा उदर भरण का एकमात्र बीड़ ही स्थान था। बर पशु जहाँ खुले खेलते, वहाँ असह्य पक्षी भी पड़ों पर बसरा लेते थे। यह बीड़ अपने कम्ब की दूषित वायु का पीकर जनता की प्राण दायक अमृत वायु भी प्रदान करता था। भ्रमण-शील जन स्वास्थ्य के लिए गोचर भूमि की हरिमाली एक अनात बर स्वरूप हितविधा थी। परंतु अफसोस है कि कालू की यह गोचर भूमि कभी की अलौट कर दी गई। इसके लिए बेचार किसान पार्टी वाले अभी तक सत्य वार्ता बताते हुए विरोध प्रकट करते हैं कि आगे पास क शहर में पशुओं के लिये अच्छे बीहड़ हैं, किंतु गांव कालू का चारा गाह खत्म कर दिया गया है। लोग खेत बेचते हैं पचाविया से पस लेकर खा जाते हैं, पर पशुओं की जानमारी पर ध्यान नहीं।

यातायात—राजस्थान के विभिन्न राज्या में यातायात तथा संचार व्यवस्था का बड़ा अभाव चलता था। जोधपुर बीकानेर, बाड़मेर, जसलमेर आदि जिलों में यातायात के लिए भारी आवश्यकता के साथ इसकी प्रतीक्षा थी। जयपुर अलवर, भरतपुर में सड़कें थी। बीकानेर, जोधपुर, घोलपुर जयपुर, उदयपुर के पृथक् पृथक् रेल रास्ते थे। जोधपुर व बीकानेर रेलवे पहले सम्मिलित थी। किंतु स० 1924 से अलग हो गई। हवाई यातायात प्रथम जोधपुर में था। मगर द्वितीय महायुद्ध के समय वहाँ हवाई सैनिक प्रशिक्षण महाविद्यालय भी स्थापित हो गया। जयपुर और बीकानेर में भी हवाई मदान रहे हैं।

। १२० कालू म पहने बीकानेर या मटिण्डा से रेल द्वारा लाग आते जाते थे एवं लून वरन्मिन् स्टेशन पर उतरते। तब बस्ती जोगियान या वास तेलियान मे ऊँट की खोज करने मुह माँगा बिगया देकर कालू पहुँच पात। पन्त यत्रियो की तो सिर पर पाना का बनने लेकर यात्रा मे निरलना पडता था। ऊँट की यात्रा म साग, आधी रात के बाद घी म प्रस्थान किया करने थे। सम्बो यात्रा मे उनका रात्रि के प्रथम पहर म ही चलना पन्ता था तथा रात दिन एव करने दूर की यात्रा तय किया पन्त थे। किन्तु छोटी यात्रा म चार गजे व आम पाम घ से निरन्ते। प्राचानकाल म गाय बहुत दूर-दूर हुआ करते और यात्रिया का रास्ते का बडा पान रहता था। गत-य स्थान से पहल रास्ते मे जान वाले गाँवों मे बाहर निकलते हुए तुरन्त रास्ता पूछ लिया करते थे। प्रथम गाय के कूए रात को चलने रहते, यात्री साग बडा ठहरकर होया पानी करते तथा आखिरी घर पर बिलम नम्बालू करके रास्ते लगत थे। वभी कदा ऊँट पर चढ़े चढ़े ही आवाज देकर चौकस रास्ता बगरह की जानकारी कर लिया करते थे।^१ इम तरह से यहा के लोगो की एकाकी या सामूहिक यात्राएँ हुआ करती थी। आजकल रोड पथ के अतिरिक्त कालू से चारा ओर बस सविये नव और कारें चलती हैं।

सहकारिता और उद्योग—नवसे पहले भरतपुर राज्य ने वि स 1915 म वायनकारों एव लघु औद्योगिक का महायता देने के लिए सहकारी सस्थाएँ स्थापित की थी। बीकानेर राज्य ने म० 1926 म सहकारी समितिया खाली। इसका एक्ट बीकानेर राज्य में 1920 म पारित हो गया था, जिसका मन् 1953 म नवीनीकरण किया गया। सन 1929 म केन्द्रीय सहकारी भूमि बंधन बंध थी गंगानगर म स्थापित हुआ था। बूह जिले मे सब प्रथम अप्रैल 1945 म सहकारी ऋणदात्री समिति का गठन हुआ और अब जिले की शिता तहसील तथा प्राथमिक स्तरीय सहकारी सस्थाएँ सबय कायशील हैं। राजस्थान निर्माण तब 2676 सहकारी समितिया बने गई थी। वतमान मे हमारे केन्द्रीय सहकारी बंध गाँवा लूनकरनसर" अपनी तहसील लूनकरनसर म कायरत है। बंध प्राथमिक स्तर की सन्कारी समितिया का अल्पकालीन तथा मध्यकालीन ऋण की सुविधा प्रदान करता है। तय विश्व सहकारी समिति लि० लूनकरनसर अपन गठन के समय म ही सफलता पूर्वक अपन उद्देश्या की पूर्ति की ओर अग्रसर है। तहसील की दुग्ध उत्पादक सहकारी समितिया लूनकरनसर बिलिम से टर (अवशीतन केन्द्र) से सम्बन्धित है। तहसील मे भेड पालन सहकारी समिति और गह निर्माण सहकारी समिति तथा अन्य सहकारी समितिया भी कायशील हैं।

उद्योग किसी भी देश या जाति के सुख समृद्धि का स्रोतक, आज के वैज्ञानिक साधनों द्वारा भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करवाने मे समर्थ है। राजस्थान के उद्योगपति भारत के हर स्थान में बडे उद्योगपति के नाम से सन्नायित होते हैं। स्वतंत्रता से पहले यहाँ उद्योग घटो, की कमी थी। राजनतिक, प्रशासनिक आर्थिक एव प्राकृतिक परिस्थितियाँ ही अनुकूल नहीं पडती। तब यहाँ के व्यापारियों को बाहर जाकर अपने उद्योग स्थापित करने पडे। दूसरी बात, बिजली, कच्चे माल, कुशल श्रमिक राज्य

1. यात्रि के समय चूष आने या रास्ता भूल जाने पर ध्रुव तारा तथा मन्त्रपि मंडल से सही दिशा मालूम करने यात्रापूर्ण किया करते थे।

सहायता व सुरक्षा के अभाव में यहाँ कोई विशेष उद्योग या बड़ा काम नहीं खोल सका। वैसे कपड़े के कारखाने ब्यावर, किशनगढ़, जयपुर, पाली, श्रीगंगानगर में स्थापित थे। श्री गंगानगर, बीकानेर तथा भोपालसागर (उदयपुर) में चीनी के कारखाने भी चल रहे थे। सीमेंट व धातु के उद्योग भी यहाँ सवाई माधोपुर और जयपुर में थे। किंतु लघु उद्योग यहाँ के सदैव प्रसिद्ध रहे। जैसे—चमड़े, जस्ते, मकराना व हाथी दात के, रंगाई के मूर्तियाँ के, बतनों की खुदाई, नगदे कम्बलें, दरिये, सक्की आदि के खिलौने, अस्त्र-शस्त्र औजार और बाघ यंत्र राजस्थान के दूर-दूर तक प्रख्यात थे। बीकानेर के नमदे-गलीचे आदि दूर-दूर जाया करते थे। गंगासिंहजी ने खादी उद्योग को भी अच्छा प्रोत्साहन दिया था। बीकानेर में ऊन का उद्योग तो सर्वोपरि कहलाता था। यहाँ की जेल में बन गलीचे दूर-दूर तक प्रदर्शित होते थे। उस समय जयपुर, जोधपुर तो जवाहरातों के उद्योग में भी प्रसिद्ध थे। गाँवा में खादी आदि कपड़ों का उत्पादन होता था। कालू के परंपरित जुलाहे खाँगी और ऊन के कम्बल तथा शाल बनाने में अपने क्षेत्र के कुशल श्रीमं थे।

राजस्थान में उद्योग और व्यापार का सदीना सम्बन्ध चलता आया है। ऐसे उद्योग व्यापारी में अनाज-म्याज, पत्थर सक्का-बगडा, चमड़ा-कपड़ा बगैरह के बाय बडे इलाधनीय करीने से सम्पन्न होते थे। यहाँ के बडे लोग बगाल, बिहार, आसाम, नेपाल, बम्बई, मद्रास मैसूर तथा कानपुर, अहमदाबाद आदि नगरों तक कामगील व्यापारी रहे हैं। मगर साधारण व्यापारी तो प्रत्येक गाँव में जरूरी दैनिक वस्तुओं द्वारा लेन देन करते हुए जनता से संबंधित रहते। कुछ लोग मनिहारी, साग-सब्जियों का विक्रय गाँवों में घूम घूम कर किया करते थे। कालू में भी ऐसे व्यापारों का पूरा प्रभाव था। गंगनहर के आगमन से अथ-व्यवस्था सुघर गई थी और इस पुराने पिछड़े हुए क्षेत्र में औद्योगिक प्रवृत्ति भी अकुरित होने लगी। इसलिए वे प्राचीन भूतमौकन बदल गये। कालू के लोगों ने भी श्री गंगानगर से सम्पर्क बना लिया था।

न्याय-कार्य और शासन—राजपूताना में सर्वोच्च न्याय काय रियासत व महाराजा में निहित रहता था। यद्यपि प्रत्येक राज्य में स्वयं न्यायालय हुआ करता था। तथापि कतिपय मामलों की शाही अपीलें महाराजाओं के ड्राग ही नियम संपन्न की जाती थी। विशेष मामलों की अपीलें सध-न्यायानय (दिल्ली) एवं प्रिवी काउंसिल (लंदन) तक चली जाया करती थी। प्रत्येक राज्य के नीचे जिला एवं सत्र न्यायालय तथा दीवानी व अतिरिक्त सत्र न्यायालय और मुंसिफ न्यायालय भी हुआ करने थे। यायाधोश प्रायः राजाओं के बिरादरी सबंधी तथा सम्माननीय लोग नियुक्त हुआ करते। राज्यो में कई जामीरदारों को यायिक अधिकार प्राप्त थे। ईमान व शिदा की कमी में राज्य भय अधिक होता था। बीकानेर महाराजा श्री गंगासिंह जी तो न्याय दिलवान हेतु कानून का अपने पैर तले बतला दिया करते थे। तत्पश्चात् यह है कि शासन प्रायः राजाओं की इच्छा पर व्यवस्थित रहता था। वही वंश शासन में अंग्रेजों की मनमानी भी (देशी रजवाड़ा में) प्रवेश कर लिया करती थी। दोबान, सेनाध्यक्ष व तथा विभागाध्यक्ष तक अपन अलग वेतन और अलग पद योग्यताएँ चलती थी। बीकानेर और जयपुर, जोधपुर के पड़ोसी राज्यो में प्रशासन अंग्रेजी प्रांतों के मुवाफिक बन गया था। नवयुग की माँग—व्यवस्थानुसार बीकानेर में योग्यता के, मुताबिक नियुक्ति देने के लिए लोक आयोग भी स्थापित हो गया था।

जन-संरक्षण—यहाँ पर जन रक्षाय पुलिस दल हुआ करते थे। किन्तु दलता एव संगठनात्मक पक्ष में प्रत्येक राज्य की अपनी विशेषता तथा कुरूपता स्पष्ट दिखाई दिया करती थी। बीकानेर में पुलिस दल व्यवस्था सुन्दर थी। यहाँ अपराधों की खोज बाबत बनानिक एवं आधुनिक साधन सब प्रथम लाय गये थे। रसायनिक जाँच, छाया चित्र और अगुली छाप के कार्य साधन थे। कुछ कजर, ससी और बाबरियो जैसी जातियाँ, जरायम पेशा तथा खानाबदोश जातियाँ पुलिस की बड़ी निगरानी में हाजिरी पाबंद रहती थी। बालू का भागू बाबरी हाजिरी में ही मर गया, लेकिन अजुन बाबरी बाकी समय तक हाजिरी देता रहा। लूनकरनसर थान के थानदार श्री सात्मसिंह (सन् 1939), करणीसिंह (1942) जगमालसिंह (1944), हमीरसिंह (1947) के समय बालू के इन जरायम पेशा लोगों की उपस्थिति सन वाला रजिस्टर इन साहनों के लेखक को सौंप रखा था। आखिर 1946 में महाराज कुमार साहब बालू पधारे सब प्रायना पत्र देकर अजुन बाबरी की हाजिरी माफ करवाई गई। अजुन ने हाजिरी के दुख से भगवे कपड़े पहनने छुट कर दिये थे। उस समय राजनतिक जामूति तथा वक्तव्य देने वाले लोगों को भी परेशान रखा जाता था। इस समय रावत जाट का नाम भी स्पष्ट सूची में दर्ज था।

पंचायत एवं स्वायत्त शासन—सामन्तशाही के युग में स्वायत्त शासन संस्थाओं की तरफ राज्य और ममाज दाना का कम ध्यान था। ये नाम मात्र की स्थापित हुई कि पूरे अधिकार भी नहीं दिये। स 28 से बीकानेर राज्य ग्राम पंचायतें भी स्थापित हुई। सर्वप्रथम बीकानेर राज्य में पंचायत नियम बनाकर 25 गाँवों में पंचायतें खोली। दीवानी एवं फौजदारी के अधिकार केवल कागजों में ही दिये थे। ये लोकहितकारी कार्य नहीं कर पाती। लूनकरनसर में उसी समय से पंचायत कायम थी, मगर अपठ जनता से वैपत्ता।

फौज—प्रत्येक राज्य अपना-अपनी सेनाएँ रखते थे। ये अंग्रेजी साम्राज्य की सहायता में अधिक तत्पर रहती। प्रथम महायुद्ध के समय अंग्रेजों को राजपूताना से अनेक फौजों का सहयोग मिला। इन सन्ध्या न वहाँ बेजोड़ बीरता दिखाई। चीन के युद्ध में बीकानेर के गगारिमाले और जोधपुर के धुडसवार रिसाली का उल्लेख सैनिक खराबों में किया गया। अलवर का विजयवेदरी व बीकानेर तथा जयपुर की लखनर सेना में भी जापानियों के विशद बड़े बीरतापूर्वक युद्ध लड़े थे। इन रियासतों के महाराजाओं का अंग्रेजी शासन में बड़ा नाम हुआ।

राजपूताने के आय व्यय के साधन—भू राजस्व, आवकारी जमात, द्रव्युद्द आदि आय के स्रोत विभाग थे। व्यय के मुख्य नाले राजमहल, सेना, सामान्य प्रशासन, शिक्षा, सावजनिक निमाण, चिकित्सा एवं जन सुरक्षा आदि थे। ये सब अधिकतर राजधानियों में ही होते थे। गाँवों के सावजनिक विकास कार्यों में अधिक व्यय नहीं होता। राजाओं के पारिवारिक देश विदेश भ्रमण और विदेशी मेहमान तथा राजमहलों के अधिक खर्चे थे। अतः राजस्थान निमाण के वक्त (1949) में 166 करोड़ का घाटा था। फिर भी जयपुर, बीकानेर जस कई राज्य जन कल्याणकारी कार्यों पर दिल खोलकर खर्च करते थे। किन्तु इस ओर जागीरदारों का ध्यान मलिन रहता था। वे मान मानी लागू बाये 'कर' की तरह वसूल किया करते। उनके घर खर्च बाबत अनेक फल साग धी, दूध, लकड़ी जैसे पदार्थ ग्रामीण किसान सम्मान-स्वरूप पहुँचा

दिया करते थे। फिर भी मलवा, नानवा, बाईजी का हाथ खच माताजी की भेंट, जाजम खच डोल खच, धूआ, हस, बठिया, पान चराई व खुट व दी, कासा, कलेवा¹, कारज खच, पटडा मेख, दाना घास, नेवता (निमन्त्रण) आदि 'कर' के रूप में लिए जाते थे। वहीं कहीं लिलाई की, कामदार की और वजावे की लाग भी ली जाती थी। खालसा के गांवों में भी रूपोटा, खोला चौथ धूआ, भाछ नजराना और राज्यतिलक जैसे भेंट 'कर' वसूल किये जाते थे।

राजस्थान का बन जाना—रही घणा दिन राजर बेदरज बरती।

जाती कर जुहार यनिया सू धरती ॥

'माता पृथ्वी महीयम।' यह विनाश पृथ्वी हमारी माता है। यहा कितने पृथ्वीपति बने और गये? 'अति चिर निवानेन, पिया भवति अप्पियो। (जातक—18।528।136) सम्बे सहवास से प्रिय भी अप्रिय हो जाता है। सन् 1947 तीन जन के दिन अंग्रेजी लोनसभा में वहाँ के प्रधानमन्त्री श्री एटली द्वारा आगामी 15 अगस्त 47 के दिन विभाजित भारत को स्वतन्त्रता देने की घोषणा कर दी गई। केन्द्रीय सरकार ने हाथ पर सभाले, क्योंकि अंग्रेजी सरकार ने रियास्तों वाला स्वतन्त्र बखेडा भी बड़ा रखा था। मुस्लिम लीग वाले इसे चाहते थे, मगर कांग्रेस हस्तांतरण के विरुद्ध थी। फिर भी बायसराय ने शासकों को समझाया कि—'वे किसी भी एक राष्ट्र से अपना सम्बन्ध स्थापित कर लें।' उसी जुलाई में एक नया विभाग बना जिसके मंत्री श्री बल्लभ भाई पटेल और सचिव श्री पी मेनन नियुक्त हुए। सरदार पटेल ने राजाजा को विश्वास दिलाया कि रियास्तों के घरलू मामला में किसी प्रकार से हस्तक्षेप नहीं होगा। उन्होंने सामा य हित के सब विषयों में 'यया पूव समशीता' करने को भी कहा। राजाओं ने विचार करके भारतीय सच में सम्मिलित होने के लिए अधिकार पत्र तथा 'यया पूव समशीता' तैयार किया। 25 जुलाई को लाम्हाउण्टबटन ने मरेड्र मडल के अधिवेशन में राजाजा को बड़ा बात कही कि आप भारत या पाकिस्तान जिसे उचित समझे, साथ मिल लीजें। तत्काल बीकानेर महाराजा श्री सादूल सिंह ने राष्ट्र हिताथ सबसे पहले 7 अगस्त को सविनयन व अधिकार पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। 'यया पूव समशीता' पर भी समस्त राजाजा के हस्ताक्षर हुए कि उस बाबत रियास्त और स्वराज्य के सामा य हिताथ कुछ समय शासन प्रबंध को बनाये रखना आवश्यक था। उपरोक्त ढंग से भारत स्वतन्त्र हो गया। सब रियास्तें भारतीय स्वाधीनता अधिनियम 1947 के अनुसार सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न तथा स्वतन्त्र हो गईं। जयपुर जोधपुर, बीकानेर बाकीन,



बीकानेर महाराजा श्री सादूल सिंह

1 किसान अपने विवाह और आदि के समय मिष्ठान की 15 20 घालियाँ परोसकर जागीरदार के गढ़ में भेजते।

भावनकौर, भोपान, मंसूर, इंदौर जादि भारत की 18 रियास्तो को नई सरकार न स्वतंत्र इकाई में रखना चाहें। किंतु ऐसा न होकर, प्रशासन का आधुनिकरण हो गया इस तरह स चार बार में राजस्थान के राज्यों का एकीकरण पूरा हो सका है।

जयपुर, जोधपुर और बीकानेर के नरेशों की इच्छा रही कि वे अपनी रियास्तो का अलग रख लें। किंतु बड़ी बड़ी रियास्तो का सघ में न ली गई थी तब वैसा नहीं हो सका। इसलिए काफी विचार विमर्श करके 30 मार्च 1949 में सरदार पटेल द्वारा एक साथ बृहद् राजस्थान सघ का उद्घाटन कर दिया गया। उदयपुर महाराणा की महाराज प्रमुख और जयपुर महाराजा सवाई मानसिंह राजप्रमुख बनाये गये। इस संयुक्त राजस्थान की राजधानी जयपुर बनाई गई। प्रथम नवम्बर 1956 को अजमेर राज्य, बावू रोड तथा देतवाड़ा सहसिलों राजस्थान में मिलाई गई। इसी दिन राजस्थान को भारत के दूसरे राज्यों की भांति प्रमाणित माना गया। फिर राजप्रमुख पद की समाप्ति करके राज्यपाल की नियुक्ति की गई जो प्रथम राज्यपाल सरदार गुरुमुख निहालसिंह (1957-62) तथा फिर डॉ॰ सम्पूर्णानन्द (1962-67), सरदार हुकमसिंह (1967-72) सरदार जोगेंद्रसिंह (1972-77) श्री वेदपाल त्यागी (1977) फिर श्री रघुकुल तिलक रहे।

स्वतंत्र राजस्थान—राजस्थान का निर्माण एक नये राज्य के रूप में 1949 ई 30 मार्च को हुआ। रियास्ती राजाओं ने अपनी सत्ता सत्ता (शासन सम्पत्ति) सहर्ष भारत सरकार के हवाले कर दी। इस प्रकार की सौंपी गई सम्पत्ति में सब राज्यों से बीकानेर राज्य अग्रणी रहा। बीकानेर राज्य ने भारत सरकार को उच्चतम सहाय 4,87,00,000 की नकदी भेंट की। इसके पीछे जोधपुर राज्य ने 4,75,00,000, तथा जयपुर राज्य ने 4,58,00,000 की नगद रकम राजस्थान के सब राजाओं के साथ भारत सरकार को जमा करवाई थी। इस सत्ता त्याग के उदात्त आदर्श बाबत राजाओं की प्रीतिपस एवं कतिपय अन्य अधिकार मिले। राजाओं की निजी सम्पत्ति जो रियास्ती द्रव्य से पक्की थी, वह उन्हीं के पास रही।

प्रिवीपस—बीकानेर नरेश ने भारत सरकार को सबसे अधिक सम्पत्ति सौंपकर, प्रिवीपस में लिए ही सन्तोष रखा। जहाँ उदयपुर महाराणा को वार्षिक बीस लाख रुपये, जयपुर महाराजा को अठ्ठारह लाख रुपये, जोधपुर का साठे सत्रहलाख रुपये के प्रिवीपस मिले, वहाँ बीकानेर महाराजा ने सत्रह लाख रुपये का प्रिवीपस लेकर अपनी सरल एवं उदात्त भावना का उदाहरण प्रस्तुत किया। इनके बाद कोटा को सात लाख रुपये अलवर को पाँच लाख बीस हजार रुपये भरतपुर को 5,02,000 रुपये बूंदी का 2,81,000 रुपये जसलमेर को 2,80,000 रुपये टाक को 2,78,000 रुपये डूंगरपुर 1,96,000 रुपये धौलपुर किसानगढ़ व झालावाड़ को बराबर 1,36,000 रुपये तथा करौली और प्रतापगढ़ को भी प्रिवीपस मिले। लावा को मात्र 12,500 रुपये लघु रूप प्रिवीपस मिला। लेकिन इतना कुछ और विशेषाधिकारों के बावजूद भी राजा लोग अपने की शक्तिहीन जानकर सन्तुष्ट नहीं हो सके। अतः कतिपय नरेश नये युग के राज० न० रमण योगी बनन लग और कुछ नए पुन बलधारण अभिसाया से राजनीति के मदान में आ खड़े हुए। ऐसे चुनाव सडाक जोधपुर नरेश श्री हनुवर्तसिंह, बीकानेर महाराजा करणो

सिंह, डूंगरपुर नय लक्ष्मणसिंह प्रभृति सङ्गे होकर 1952 के चुनाव सङ्गे । लक्ष्मण सिंह हार गये, किंतु करणीसिंह लोकसभा के लिए चुने गये । जोधपुर महाराजा ने जयनारायण व्यास से चुनाव जीता मगर उसी वक़्त एक हवाई दुर्घटना से नरेश का निधन हो गया । कांग्रेस का बहुमत 4-त्री महल बना, इसलिए जयनारायण व्यास का सामर्थ्य से मेल हुआ और कतिपय राजपूत कांग्रेसी बन गये । कुंभाराम आदि किसान दलीय नेताओं ने व्यास के विचारों का विरोध किया और सुल्हाडिया पक्ष से इसी मत पर अलग रहे । तब राजा एवं जागीरदार कांग्रेस में प्रवेश नहीं पा सके ।

भारतीय संविधान सभाधन 56 के अनुसार राजप्रमुखों के पद-अस्तित्व समाप्त हुए, पर जयपुर नरेश मानसिंह ने राजप्रमुख पद छोड़कर भी चुनाव नहीं लड़ा । वैसे 1957 के चुनाव बावत कांग्रेस ने जयपुर एवं बीकानेर महाराजाओं को कांग्रेस दल से सङ्गे करना चाहा भी, किंतु दोनों ही दूर रहे । झालावाड़ का हरिश्चंद्र चुनाव लड़ा और विधानसभा में जीतकर पहुँचा । इस बार करणीसिंह लोकसभा में तथा करीला का म० कु० ब्रजेन्द्रपालसिंह (निदलीय) विधानसभा में गये और लक्ष्मणसिंह पुनः हार गये ।



चुनाव के समय भूतपूर्व महाराजा करणी सिंह गुराजी और लेखक

सन् 1959 में स्वतंत्र पार्टी की स्थापना द्वारा कतिपय रानी राजा आगे आये । 1962 के चुनावों में जयपुर की गायत्री देवी दीसा से म० कु० पृथ्वीराजसिंह बीकानेर के करणीसिंह झालावाड़ से नाटा का म० कु० ब्रजराजसिंह लोकसभा के लिए व जयपुर म० कु० जयसिंह और डूंगरपुर के लक्ष्मणसिंह विधानसभा के लिए चुनाव जीत गये । हरिश्चंद्र ब्रजेन्द्रपालसिंह कांग्रेस दल से विधानसभा में चुने गये । मानसिंह भी स्वतंत्र पार्टी व जनसंघ के सहयोग से राज्य सभा के लिए चुना गया । भरतपुर राजा का अनुज मानसिंह डीप से लोकसभा का चुनाव हार गया । सन् 1967 के चतुर्थ आम चुनाव में राजा सींग कांग्रेस विरोधी अखाड़ेबाज उम्मीदवार बनकर चुनाव सङ्गे । झालावाड़ का राजा कांग्रेस से अलग चुनाव जीता । तब ब्रजेन्द्रपालसिंह कांग्रेस से जीत करके विरोधी

दल में गया। जिसनगढ़ के सुमेरसिंह और झुगपुर के लक्ष्मणसिंह ने स्वतंत्र दल से चुनाव जीते। जयपुर की महागनी गायत्री देवी भी लोकसभा के लिए स्वतंत्र दल से चुनाव जीत गई। भरतपुर नरेश कृष्णसिंह काँग्रेसी राजबहादुर से चुनाव जीता। बीकानेर महाराजा निदलीय चुनाव लड़े और जीत गये। तोहार का नवाब कांग्रेस पार्टी से चुनाव जीतकर विधायक बन गया। हरिश्चंद्र की मृत्यु हो जान के बाद बोटा की महारानी उपचुनाव जीत गई। इस चुनाव में कांग्रेस का 184 स्थानों में से केवल 88 स्थान मिले। पर सरकार कांग्रेस पार्टी की ही बनी। राजा लोग नवीन हवा से प्रभावित होकर जनता में मिलते रहे और नई व्यवस्थानुसार राजस्थान एक मुक्त समृद्ध तथा सुप्रबद्ध राज्य बनता रहा है। उदाहरणतः जालौर और भीम के उपचुनावों में कांग्रेस बहुमत से जीती, भीम निर्वाचन क्षेत्र से भू० पू० मुख्यमंत्री टीकागम पालीवाल काँग्रेसी रामकिशोर व्यास से चुनाव हार गया।

स्वतंत्र जनता ने अपने राज्य अधिकार सभाले—राजस्थान में उत्तरदायी सरकार की स्थापना के लिए सघर्षशील व्यक्ति जयनारायण व्यास, हीरालाल शास्त्री, गोकुलभाई मट्ट, माणकलाल वर्मा कुम्भाराम आदि लोग कांग्रेसी जन-नेता थे। राजस्थान में जनतांत्रिक सरकार के लिए मुख्यमंत्री बनाने का सवाल आया, तब तत्कालीन केन्द्रीय सरकार के रियासती विभाग के मंत्री मरदार पटेल ने इन्हीं कांग्रेसियों को दिल्ली बुलाकर अपना नेता चुनने की बात कही। इस पर जयनारायण व्यास ने हीरालाल शास्त्री का प्रस्ताव रखा। गोकुलभाई ने अनुमति देकर दिया और तय हुआ कि गोकुलभाई या तीस कांग्रेस के अध्यक्ष रहें तथा वर्मा और व्यास राजस्थान के मंत्रीमंडल में लिए जायेंगे। श्री शास्त्री को इनकी राय लेकर के मंत्री मण्डल का गठन करना होगा। लेकिन शास्त्री ने मंत्री मण्डल बनाने समय वर्मा और व्यास दोनों की राय को विस्मरण कर दिया। तब ये लोग भी मंत्री मण्डल में सम्मिलित होने से इन्कार कर गये।

हीरालाल शास्त्री ने 7 अप्रैल 1949 के दिन स्वेच्छा पूर्वक मंत्री मंडल बनाया जिसमें चौभाराम, रघुवरदयाल, भुरेलाल, सिद्धराज, वेदपाल त्यागी, फूलचंद बाफना, प्रेमनारायण माथुर, हनुवतसिंह और नरसिंह बख्खवाह को लिए। इसका जयपुर जोधपुर, बीकानेर और समुक्त राजस्थान की जिला कांग्रेस समितियां ने समर्थन नहीं दिया। प्रदेश कांग्रेस समिति ने व्यास का अध्यक्ष चुनकर हीरालाल मंत्रीमंडल को स्वीकार देने के लिए बाध्य किया। किंतु मरदार पटेल ने ऐसा करने से मना कर दिया। 1950 में पटेल का देहावसान हो गया शास्त्री को रियासती विभागीय समर्थन मिलता बढ़। इस मंत्रीमंडल ने 4 जनवरी को इस्तीफा दे दिया।

26 अप्रैल 1950 का जयनारायण व्यास के नेतृत्व में नया मंत्रीमंडल बना जिसमें मथुरादास, कुम्भाराम बृजसुंदर, मोहनलाल सुखाडिया नरोत्तम जोशी असरतसिंह, जुगलकिशोर टीकाराम और बलवतसिंह मेहता को लिया गया। अनुसूचित जाति के प्रतिनिधि स्वरूप अमृतलाल उपमंत्री बनाया गया। सन् 52 के चुनावों में जयनारायण व्यास हार गया और कांग्रेस को 160 में से 82 स्थान मिले। कांग्रेस का बहुमत होने से दल का विधानसभाध्यक्ष नरोत्तम जोशी और नेता टीकाराम पालीवाल चुने गये। इन्होंने सात माह मंत्री मण्डल चलाया। फिर एक उप चुनाव से जयनारायण व्यास जीत कर कांग्रेस दल का नेता बना और उसने टीकाराम मोहनलाल सु०, रामकिशोर

भोगीलाल, रामकरण, भोलानाथ, नाथूराम मिधा, अमृतलाल, कुम्भाराम प्रभृति से अपना नव मंत्रीमण्डल सजाया। नरसिंह कछावा और चंदनमल बंद उपमंत्री बन।

राजस्थान के विराधी दल में मुख्यतः जागीरदार थे और कांग्रेस की नाति जागीरी प्रथा को खत्म करने की थी। व्यास ईमानदार तथा सत्यनिष्ठ था, परंतु दख का सतुष्ट नहीं कर सका। ठाकुरों एवं जागीरदारों की समस्या बन रही थी। अतः उसने राम राज्य परिषद् के 22 ठाकुर (भरोंसिंह सहित) राजपूतों का कांग्रेस में मिला लिया। तब कांग्रेस का किसान दल व्यास से नाराज हो गया। मतभेद बढ़ जाने के कारण 13 नवम्बर 54 में दलित परीक्षण हुआ। तब व्यास श्री सुल्ताडिया से हार गया। जागीरदार दल ने व्यास को और किसानों ने सुल्ताडिया को मत दिये। सुल्ताडिया ने मंत्रीमण्डल बनाया जिसमें रामकिशोर दामोदरलाल, कुम्भाराम भोगीलाल, बट्टीप्रसाद, बूजसुंदर, रामनिवास अमृतलाल को लिए। शाहअलमुद्दीन, सम्पतराम और कमला बेनीवाल को उपमंत्री का पद मिला। सुल्ताडिया ने आखिर राजपूतों का समर्थन प्राप्त कर लिया और छेतसिंह को 56 में उपमंत्री बना दिया। अतः 1957 के चुनावों में जागीरदारों ने हार्दिकता के साथ कांग्रेस का सहयोग दिया।¹ तब उसे 176 में से 119 स्थान प्राप्त हुए। कांग्रेस दल ने विधान सभाध्यक्ष रामनिवास मिर्षा और अपना नेता मोहनलाल सुल्ताडिया को चुना।

सुल्ताडिया ने पहला बार मंत्रीमण्डल में एक राजपूत नेता शालाबाइ नरेन हरिश्चंद्र को सह्य प्रवेश करवाया और किसान व राजपूतों में शांति-मुलह रखने का प्रयत्न किया। किन्तु इस बात पर किसान नेता कुम्भाराम और सुल्ताडिया का विवाद हो गया। प्रांतीय कांग्रेस समिति के चुनाव में सुल्ताडिया ने हरदेव जोशी को खड़ा किया, तब आय ने मथुरादास का खड़ा कर दिया और उसे अध्यक्ष बना दिया। परसराम मदरेणा सचिव बना जो आगे जाकर 1962 में उपमंत्री तथा 66 में मंत्री पद पा गया। इस दलबंदी के कारण स० 62 के चुनावों में कांग्रेस को 176 में से 88 स्थान मिले। निंदनीय विधायक कांग्रेस पार्टी के हाँ गए, इसलिए विधानसभा में बहुमत बन गया। अतः अध्यक्ष मिर्षा और नेता सुल्ताडिया बन। फिर तो सुल्ताडिया ने कुम्भाराम को एक उप चुनाव जीताकर 1964 में मंत्री मण्डल में ले लिया था। दामोदरलाल को भी उप चुनाव जीत लने पर मंत्रीमण्डल में लिया। आय और सुल्ताडिया का प्रेम फिर भी नहीं जमा। सुल्ताडिया ने आय से आगे मिधा का कांग्रेस दल का उप-नेता बना दिया और किसान दल को गठबन्ध देते हेतु परसराम का मंत्री तथा मनफूलसिंह, पासीराम, रामदेवसिंह का उप मंत्री बना दिया। आय व तत्कालीन मित्र हरिश्चंद्र और आय ने मिलकर जाट गजपूत 'माइ भाई' का नारा गुरू किया। रामकरण, गोमाराम आदि भी इनके साथ मिले।

सुल्ताडिया ने हरिदेव जोशी का कांग्रेस अध्यक्ष पद से मंत्री मण्डल में लेकर राम किशोर व्यास को अध्यक्ष पद हेतु खड़ा किया। किन्तु कुम्भाराम ने उसने सामन चुनाव

1 इसमें लून्करनसर क्षेत्र से श्री रामचंद्र बिहानी (जतपुर) और प० सोहनलाल शर्मा (पालू) पराजित तथा भीमसेन विजयी रहे। श्री बिहानी ने 1962 में भी यहीं से चुनाव खड़ा।

लड़ा और झगड़ा बढ़ता रहा। सितम्बर 1966 की विधानसभा में छीटाकसी हो गई। अक्टूबर में फिर किसान दल निर्वाचन समिति में हार गया। तब आर्य ने किसान दल का त्याग कर 'जनता दल' की स्थापना की जिसका अध्यक्ष रामवरण जोशी चुना गया और सुल्हाडिया सरकार हटाने का मकसद प्रकट किया।

फरवरी 1967 में आम चुनाव हुए।¹ राजस्थान कांग्रेस को अविश्वास के साथ से जूझना पड़ा। कतिपय दलों ने 25 विधायकों ने 'संयुक्त दल' बनाकर राज्यपाल से सरकार बनाने की अनुमति चाही। दल का नेता महारावल लक्ष्मणसिंह बना। किंतु राज्यपाल ने उक्त कार्य कांग्रेस को ही सौंपा। तब संयुक्त दल ने आन्दोलन करने शुरू किये और जयपुर में भारी अशांति फैली। अनेक व्यक्ति पुलिस की गोली के शिकार हुए। परिस्थितिवशात् 14 मार्च को राष्ट्रपति शासन लागू हुआ। राजस्थान का शासन भार राज्यपाल के हाथों में हो गया। तब केन्द्र ने उसकी सहायता में दो सलाहकार नियुक्त किये।

राज्यपाल के कार्यकाल समाप्ति पर 15 अगस्त को नये राज्यपाल सरदार हनुमंतसिंह आये। उसने स्थिति की समझकर 24 अप्रैल को कांग्रेस दल द्वारा सरकार बनवाई और 25 अप्रैल को प्रदेश में राष्ट्रपति शासन का विसर्जन कर दिया। उसी दिन मुख्य मंत्री पद हेतु सुल्हाडिया ने मरण्य ली तथा कांग्रेस की नई सरकार गठित हुई। इसमें पहले आठ मंत्री एवं 3 उपमंत्री लिये। फिर सितम्बर व अक्टूबर में इसका विस्तार हुआ और 1967 में सुल्हाडिया मंत्री मंडल बना।

मुख्य मंत्री मोहनलाल सुल्हाडिया एवं मंत्री मथुरादास, दामोदरलाल, बजसुगर परसराम, रामप्रसाद लढावा गोमाराम हरिदेव जोशी, शिवचरण अमृतलाल बरकुतल्लाखी भीलाभाई नारायणसिंह मसूदा और अमीनुद्दीन अहमद हुए। उपमंत्री, रामदेवसिंह खेतसिंह गगाराम गाय धीरसिंह हरिसिंह माधोसिंह, भीमसेन। (लूनकरनसर निर्वाचन क्षेत्र से) रामवरण, प्रद्युम्नसिंह, शिवचरणसिंह कहेयालाल, बजरप्रकाश जसराज, मुल्कराज तथा समयलाल आदि बने। राज्यमंत्री विश्वम्भरनाथ मनकूसिंह जयदृष्ण, हीरालाल देवपुरा और श्रीमती सुमित्रासिंह चुने गये। राजस्थान विधानसभा के लिए कांग्रेस दलीय निरंजन नाथ आचार्य को अध्यक्ष तथा पूनमचंद विशनोई उपाध्यक्ष बनाये गये। भू पू विधान सभाध्यक्ष राम निवास मिर्धा राज्य सभा का सदस्य चुना गया। उस समय में जनता न भी शासन में समाजवाद का प्रकाश निहार।

सन् 1972 का चुनाव और मंत्री मंडल—मुख्यमंत्री बरकुतल्लाखा (प्रथम) और हरिदेव जोशी (द्वितीय) बने। मंत्री खेतसिंह, हीरालाल देवीपुरा चन्दनमल शिव चरण, मोहन छगाणी रामनारायण चौधरी परमराम मदेरणा बन तथा राज्यमंत्री श्रीमती कमला जुझारसिंह मूलचंद मीणा, फकरुद्दीन मुन्शीलाल, गुलार्थसिंह और बनवारीलाल आदि बने। कालू के गोपालचंद डूढाणी न जनसंघ पार्टी का तरफ से लूनकरनसर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ा।

ई स 1977 के चुनाव में कांग्रेस पार्टी के पीछे रह जाने पर जनता पार्टी की सरकार बनी। मुख्यमंत्री थी भैरू सिंह शेखावत तथा मंत्री प्रो० केदार शर्मा मानिकद सुराना, कल्याण सिंह कालवी आदि बने। इस मंत्री मंडल का समय से पहले ही पासा

पलट गया और सन 1980 में भवभावधि चुनाव कराये गए। जिसमें कांग्रेस का विजय हुई और सरकार कांग्रेस पार्टी की ही बनी। मुख्यमंत्री जगन्नाथ पहाडिया तथा मंत्री बन्नी प्रसाद गुप्ता (स्वास्थ्य) हनुमान प्रभाकर (शिक्षा) श्रीमती कमला (केबिनेट) और जूनियर मंत्री नरे द्रसिंह भाटी, रामपाल उपाध्याय मामीलाल आर्य अब्दुलरहमान बने। बीकानेर क्षेत्र से प्रा० श्री बूलाकी दास कल्ला विजयी हुए और उनके पत्नी पर मंत्री बन गए हैं। सहस्रों के गाँव छापी का मामराज गोदारा लोकदल में शामिल। उनके विपक्ष में लूनकरनसर का मालूराम सेधा अपने क्षेत्र से विधायक बन गया।

स्वतंत्रता के पश्चात् राजस्थान—आज के राजस्थान में पहले यह प्रदेश पिछड़ा हुआ क्षेत्र था। यद्यपि यहाँ की घरातलोय मरचनाएँ प्रायः इसके पिछड़ेपन का कारण थीं तथापि पश्चिमी और उत्तरी क्षेत्रों में तो यह प्रत्येक काम में पूर्ण रूप में बाधक रही। राजस्थान के उक्त गुल्फ भाग, रेगिस्तान में पानी और हरियाली के दशान ही शुभकारी माने जाते। आधिया के अम्बार और वर्षा की बेहद कमी तिस पर अकाल (त्रिकाली मतकाली छाया) का हमले रहना, जनसाधारण की अनेक प्रकार के संकटों व व्याधियाँ से जूझता रहता पड़ता था। यानी जंगलों में भटक जाते और बीमार कुत्ते की भीत मरते थे। भीरु अनपढ़ जन दुहरे गुलाम बने जिंदगी बिताते रहते। प्रजा पर राजा महाराजा और सामंतों के बड़े अत्याचार होते रहते थे। जागीरदारों के गाँवों में तो यहाँ जनहित के बढने अधिकांश भयावने जुलूम एवं जन अहितकारी धारदारों ही जाया करती थी। वे फक्त एक बसूली से ही राजी रहते थे। परंतु खेती की खाद पानी का उन्हें कोई मतलब नहीं था। काश्तकार प्रायः दुबले परिस्थिति में होते और उदरपूर्ति के अभाव में उद्योग धंधों की बात ही कम सोच सकने। ऐसे मामलों में जनता का जीवन अनेक दुविधाओं से घेरित रहता था।

वर्तमान में गत दशकों में राजस्थान का जनजीवन पूर्ण रूप से परिवर्तित हो रहा है। वे सारी सामंती स्वच्छाचारी तथा एकतंत्रीय संपत्ताएँ अभिनव लोकतांत्रिक तथा कल्याणकारी राज्य के रूप में जनता को सामाजिक योगदान करती हैं। शिक्षा स्वास्थ्य कृषि, उद्योग एवं अन्य सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र में अपूर्व उन्नति की अवस्था बन आई है। अब राजस्थान अब प्रगतिशील राज्या की श्रेष्ठ में मुख्य सम्पन्नता रूपी स्तम्भ की भाँति स्वयं योग्य बन गया है। जनता का उच्च स्तरीय रहन सहन अभ्युदय तक पहुँचने के लिए बसमतः रहा है।

गांव पहचान नहीं जात, उनका विकास द्रुतगति में हुआ है। साहस बगन कोठियों जैसे स्थान गाँवों में सड़क सुंदर भवन बन गए हैं, जिनमें जनता अपने भविष्य की पूर्वपिक्षा अधिक गौरवमय बनाने में व्यस्त मस्त मुद्रा है। उनकी दाम भावनाएँ भी बाफूर बन चुकी हैं। भूमि वाशना की है और उनको स्वाधीनता भी प्राप्त हो गया है। जागीरदार भी बस गए हैं उनकी जमीनें लेने की एवज में मुआवजा चुकाया जा चुका है। उन सबको खुश वास्त बोलकर काफी भूमि भी दी गई है, ताकि सम्पन्न वाशना की तरह सुखी जीवन बीता सकें। राजाओं का स्वत्व त्याग तथा भूमि छोड़ने के लिए प्रिवीपस व विशेषाधिकार के अभाव में कुछ भूमियाँ भी छोड़ी हैं, वे भी राज्य की जनता हैं।

राज्य विकास अभिकरण द्वारा संगठित परिभाषा के किय गये सर्वेक्षण के अनुसार प्रत्येक जिले में लघु कृषक सीमांत कृषक तथा खेतीदर मजदूर हैं। राज्य

सरकार द्वारा इस वग के व्यक्तियों को अनुदान देने की योजना स्वीकृत है। इसके क्रिया-व्ययन में जिले की जनसंख्या जहाँ अकाल की विभीषिका से मुक्त होगी वहाँ सर्वांगीण विकास का फायदा भी उठा सकेगी।

भारत 26 जनवरी 1950 से गणतन्त्र राज्य घोषित किया हुआ है और उसी दिन स नूतन संविधान लागू है। यह संविधान सबको अपने ढंग से जीवन व्यतीत करने की स्वतन्त्रता प्रदान करता है। सभी नागरिकों के अधिकार—बोलने, धर्म पालन करने तथा समानता में कानूनन स्वतन्त्र हैं। छोटे बड़े धनी निधन, शिक्षित अशिक्षित के नागरिक अधिकार सुरक्षित हैं। धर्म जाति, लिंग तथा जन्म स्थान के लिए कोई अधिकारोपेक्षा नहीं होती। रोजगार सम्पत्ति, रीति रिवाज और शिक्षा में भी किसी की स्वतन्त्रता तथा समानता का हनन नहीं किया जा सकता। यायानय में इन सबकी अधिकार-भुरखा उपलब्ध है। सरकार के विरुद्ध भी व्यक्ति अपने अधिकार निर्धारित कराने में स्वतन्त्र है। याय प्रशासन की दृष्टि से प्रत्येक जिला अपराधिन दंड प्रक्रिया संहिता के प्रावधानों के अनुसार शासित होता है।

राजस्थान प्रदेश जनता द्वारा जनता के लिए जनता का राज्य है। सभी व्यक्तियों को मताधिकार तथा प्रतिनिधि चुनने का अधिकार है। क्षेत्र प्रतिनिधि सदन और विधान सभाओं में जाकर सरकारी नीति तथा कार्यवाही चलाते हैं। ग्राम पंचायत से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक प्रजातान्त्रिक व्यवस्था चलती है।

स्वतन्त्र भारत में प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू बने थे। उनके देहवसान के बाद दूसरे प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री तृतीय श्रीमती इंदिरा गांधी, चतुर्थ श्री मोरारजीभाई देसाई और अब पुनः श्रीमती इंदिरा गांधी प्रधान मंत्री पद पर आसीत हैं। अब तक के राजस्थान के मुख्यमंत्री भी इस जनतन्त्रीय शासन में पूर्ण विश्वास रखते रहे हैं—1 श्री लाल शास्त्री (मार्च 49 से 1950 तक) 2 श्री जयनारायण व्यास (फरवरी 50 से फरवरी 52 तक) 3 श्री टीकागम पालीवाल (मार्च 1952 से अक्टूबर 1952 तक) 4 श्री जयनारायण व्यास (पुनः नवम्बर 52 से नवम्बर 54 तक) 5 श्री मोहनलाल मुल्हाडिया (नवम्बर 54 से जुलाई 1971 तक) 6 श्री बरकतुल्ला खाँ (जुलाई 71 से अक्टूबर 73 तक) 7 श्री हरिद्वज जासी (अक्टूबर 73 से 77 तक) 8 श्री भैरोसिंह शेखावत (77 मार्च से 80 तक) 9 जयनाथ पहाडिया (अप्रैल 80 से जुलाई 81 तक) फिर श्री शिवचरण माथुर बने हैं।

देश के आम चुनाव सन 1952 57 62 67 72 77 और 1980 में हुए। इस प्रकार प्रजातन्त्र शासन का भार सभालते हुए इन लोगों ने पिछले बत्तीस वर्षों में अनेक दिशाओं में प्रगति की है। अपने अस्तित्व पर आने वाले संकट का सामना दृढ़ निश्चय साहस और दूरदर्शिता से किया है। सदियों से आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में जो गतिरोध पड़ा हा गया था उसमें राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजनाया ने नये प्राण जागृत कर दिये हैं। इनके द्वारा कृषि उद्योग ही नहीं राजस्थान का चतुर्मुखी विकास हुआ है। ई० स० 1950 में योजना आयोग का स्थापना हुई थी। अब प्रथम पंचवर्षीय योजना सन 51 से प्रारम्भ हुई। मार्च 66 तक एमी तीन पंचवर्षीय योजनाएँ पूरी हुई। फिर चौथी योजना में सर्वोच्च प्राथमिकता सिंचाई एवं बिजली के उत्पादन तथा विस्तार कार्यक्रम का मिली। फिर पाचवी व छठी योजना भी चली हैं जो जन सहयोग द्वारा कार्यान्वित हुई हैं।

राजस्थान के गाव—स्वतन्त्रता से पूर्व यहाँ के गावा की गंगा अत्यंत खराब थी। इनमें बड़ी कष्टनायक असुविधाएँ थी। अब इन्हीं काफ़ी सीमा तक सुख मुधार हुए हैं। हमारे गावा में नव जीवन और नई आशाएँ लहलहा रही हैं। पंचायती राज और सामुदायिक विकास कार्यक्रम ने ग्रामवामिया के लिए उन्नति के नये अवसर प्रदान कर दिये हैं। पंचायता को प्रशासनिक, नागरिक और यायिक अधिकार मिले हैं। फौजदारी और माल के मामूली मुकदम भी याय पंचायता द्वारा गावा में ही निपटा दिये जाते हैं।

ग्राम पंचायता के अन्तर्गत कूबो, तालाबा का निर्माण व मरम्मत सफाई रोगनी, जन्म मृत्यु व विवाह का पंजीकरण, शिक्षा अनास सहायता बाचनालय सचासन आदि हैं। याय में सौ रुपये तक के मुकदम सुनना तथा तृतीय श्रेणी दंडाधिकारी के अधिकारा तक का (यथा योग्य) उपयोग करना है।

पंचा की महत्ता सरपंच के अलावा अब 15 होती है। सहवत मनानयन से प्रत्येक पंचायत में दो महिला प्रतिनिधि एवं अनुसूचित जाति व एक अनुसूचित जन जाति के प्रतिनिधि का प्रावधान रखा गया है।

पहले राजस्थान पंचायत अधिनियम, 1953 के अंतर्गत लूनकरणसर तहसील में भी तहसील पंचायत का गठन था। तहसील की सभी पंचायतों के सरपंच व पंच मिल कर तहसील पंचायत के सरपंच तथा 6 से 8 तक पंचा का निर्वाचन करत थे। तहसील पंचायत ग्राम पंचायता के आदेशों एवं निणया के विरुद्ध अपील सुनती थी। एक बार सन 1955 में कालू गाव का श्री रामलाल सोनी तहसील पंचायत लूनकरणसर में पंच चुना गया था। उस निर्वाचन में महाजन राजा रघुबीरसिंह सरपंच बना था। वह मस्या अब पंचायत समिति लूनकरणसर है।

लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण—राजस्थान पंचायत समितिया एवं जिन्ना पन्थिद अधिनियम 1959 लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण योजना के तहत लागू हुआ है। प० जवाहरलाल नेहरू द्वारा 2 अक्टूबर 59 को नागौर में इसका उद्घाटन हुआ। इनके अंतर्गत त्रिपक्षीय स्थानीय सस्याओं की शुरुआत हुई है। इस समय 202 पंचायत समितिया तथा 26 जिला परिषदा का गठन हुआ। इन याजना में ग्रामीण स्वायत्त गामन मस्याओं का कायशील सहयोग स्वरूप जनता के लिय बड़ा लाभकारी है।

याय पंचायतें—पहले पाँच मान ग्राम पंचायता पर एक याय पंचायत की व्यवस्था बनी थी। इसका गठन प्रत्येक ग्राम पंचायत से एक एक पंच का निर्वाचन होता था और पाँच सात याय पंचों से याय पंचायत का जाती। याय सरपंच का चुनाव ये मदस्य स्वयं करने। अब याय पंचायत का काय क्षेत्र फौजदारी एवं दीवानी दोनों प्रकार के मुकदमों की सुनवाई से संबंधित है। फौजदारी में 50 रुपये तक जुर्माना करना और वह वसूल न होने की स्थिति में उपखण्ड अधिकारी का सूचित कर देन का प्रावधान है। उपरांत अधिकारी इस वसूली के लिए अधिकृत है, वह अपनी अधिकार गवित स वसूली कर लेता है। दीवानी मुकदमों में 250 रु० तक मातियत के मुकदम सुनने का अधिकार उक्त पंचायता को है। इनक फसला की अपील नहीं सुनी जा सकती ग्वीजन होता है। दीवानी का मसिफ कोट में और फौजदारी मुकदमा का प्रथम श्रेणी नडाधिकारी के पास रियोजन होता है। कालू में भी याय पंचायत का कार्यालय था, जिसके नीचे चार पंचायतें कुजटी, गारबदेगर रावामर कालू थी। इन याय पंचायत के

अध्यक्ष क्रम से चूनाराम और बनाराम गादारा रहे। 1977 स माय पचायतें भग कर दी गई हैं।

पचायत समितियाँ—ग्राम पचायतों का दूसरा स्तर पचायत समितियाँ हैं। यह सांस्कृतिक विके दीकरण योजना का सुंदर गठन है। ग्राम पचायतों के सरपंच एवं पंच, पचायत समिति को साधारण सभा या निर्वाचक मंडल का काम करते हैं। प्रधान का निर्वाचन सभी पचायतों के पंच व सरपंच करते हैं। प्रधान के साथ पचायत समिति की कार्य समिति का गठन सभी पचायतों के सरपंचों व प्रधान द्वारा होता है। इसके अलावा एक कृषि कार्य कुशल सदस्य होता है। अब सदस्या में महिला सदस्य दो अनुसूचित जाति व जन जाति के दो और सह सदस्य प्रशासनिक अनुभवों दो, साधजनिक या ग्राम विकास कार्यकर्ता का सहकारा समितियाँ का प्रतिनिधि एक, ग्राम दान ग्राम का प्रतिनिधि एक आदि होते हैं तथा पचायत समिति क्षेत्र का विधायक एवं सांसद भी पचायत समिति की बैठकों में भाग ले सकते हैं। समिति बजट बनाने तथा राज्य सरकार की योजनातहत अपने क्षेत्र की वार्षिक योजना बना देने में पूर्ण स्वतंत्र है। कृषि पशुपालन प्राथमिक शिक्षा, स्थानीय आवागमन व साधन स्वास्थ्य सफाई आदि समिति की कार्य योजना के मुख्य मुद्दे हैं। इसकी आय का मुख्य स्रोत राज्य सरकार का अनुदान है। दूसर—यमितया का धर्मदान मेलों का कर, व्यवसाय उद्योग, मनोरंजन आदि की आमद और हट्टियों के ठेके बगरह की कई आमदनियाँ होती हैं। लूनकरनसर पचायत समिति के प्रधान पद पर महाजन गजा रघुवीरसिंह तथा मामराज गोदारा रहे हैं। गोपालचंद डूढाणी पचायत समिति का प्राय सदस्य रहा।

सांस्कृतिक विके दीकरण योजना की समस्याओं की अंतिम कड़ी, जिला परिषद् है। इसका मुख्य कार्यालय बीकानेर है। प्रमुख उपप्रमुख, जिले का सांसद, विधायक, समितियाँ के प्रधान जिलाधीश आदि जिला परिषद् के सदस्य होते हैं। राज्य में प्रगतिशील कार्यकारी कानून लागू है अतः कृषि विकास के लिए नवीनतम तरीके अपनाये जाते हैं। भूमि हानों को भूमि का आवंटन, जोतो का एकीकरण और भूमि विकास तथा उसकी व्यवस्था व समाजीकरण को आगे बढ़ाया जा रहा है। अधिक जन उपजाओ योजना की सफलता हेतु अब खेती मात्र मौसमी वर्षा पर निर्भर नहीं रही।

पश्चिमी पाकिस्तान से लगा हुई श्री गगानगर, बीकानेर एवं लूनकरनसर की इस रेतीली रेगिस्तानी भूमि में राजस्थान नहर और उसकी शाखाएँ इस क्षेत्र की अब व्यवस्था विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण सफल योजनाएँ हैं। खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने हेतु हमारे लक्ष्य की सम्पूर्ति एवं हमारी सीमा सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने में भारी सहायता मिली है। रेगिस्तान के इस विस्तृत निजन जंगलों की दृश्य श्यामल प्रदेश में परिणत कर दिया है।

राज्य सरकार ने गावों का बिजली सुलभ करवाने हेतु भी पूरे प्रयत्न किये हैं। कालू के निकटोय नाथूसर रावांसर आडसर जैसे छोटे गाँवों में भी बिजलीकरण हा गया है। भूमिगत जल निकालन के लिए अब ऊँटों बलों तथा जन शक्ति की बजाय, बिजली की लागत बिलकुल कम आती है। हर गाँव में इससे अनाज, सब्जियाँ और पेड़ उगाने में नारी सुविधा हुई है। कृषि और ग्रामीण उद्योग के विकास के सिवाय बिजली विस्तार से जन-जीवन का शारीरिक तथा मानसिक स्वभाव बदल रहा है। गाँवों में

नगर औद्योगिक रूप में विकसित हो गये हैं। बीकानेर तो ऊन व्यवसाय में सदा से प्रगतिशील शहर रहा है वहाँ अब 1200 तख्तों की ऊनी मिल में वर्षों से उत्पादन आरम्भ किया हुआ है। श्रीदयाना में मोडियम मन्फेस्ट माडोकीपाल (डगरपुर) में फ्लोराइट शोधन यंत्र चूल्हों में स्वारगम, एल्युमीनियम व स्टीलनस्टील व बतन होजरी हैण्डलूम गुलाबपुरा (भीलवाड़ा) में सूती सहकारी मिल, बेगोरायपाटन (बूंदी) में सहकारी चीनी मिल, टाक में चमड़े का कारखाना उदयपुर में जस्ता शोधन यंत्रों में ताम्बा शोधन, तूनाकरनगर में तेल दाल स्वारगम एवं जिप्सम शोधन के मयत्र चल रहे हैं। राज्य में सीमेंट के कारखाने भी बढ़ाये जा रहे हैं।

खनिज उत्पादन—राजस्थान में अनेक प्रकार के खनिज पाये जाते हैं जस्ता बेटोनाइट बराइट्स फ्लोसफार बेल्साइट और गैन्गाइसफाइट व अनुसंधान काय अनेक जगह होते हैं। फ्लोराइट चुनल पत्थर खनिज मैंगनीज, काच मिट्टी जस्ता तथा बाल फ्राम के उत्पादन यहाँ तरबरी पर हैं। बराइट्स लोहा भूरा कोयला अभ्रक, पीया पत्थर जैसे खनिज भी खूब निकलते हैं। कालू और उसकी तहसील के कई गाँवों में पोटाश अनुसंधान बाबत शीघ्र समय चलाये जा रहे हैं।

शिक्षा के मनोरम मौके—जिला केन्द्र पर राज्य के तीन विश्वविद्यालयों द्वारा अनेक कॉलेज संचालित हैं। राज्य का सबसे बड़ी शिक्षा पर काफी ध्यान है। पिलानी में मिडल इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नालाजी भी विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा प्रणाली एवं काय शील मर्यादा है। यहाँ का वनस्पति विद्यापीठ तो महिलाओं की शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान बन गई है। पश्चिमी व उत्तरी रेगिस्तान के गाँवों में भी प्राथमिक शिक्षा सुलभ हो रही है। डार्क जगहों तक की जनसंख्या वाले गाँवों में माध्यमिक शालाएँ और प्रत्येक पंचायत समिति में एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चलता है। इनमें हरेक व्यक्ति अपनी योग्यतानुसार उन्नति का अवसर प्राप्त कर सकता है।

चिकित्सा सुविधाएँ—गत बत्तीस वर्षों में लाख स्वास्थ्य का काफी अभ्युदय व सुधार हुआ है। मलेरिया चेचक यक्ष्मा आदि बीमारियाँ, जिनसे हजारों माले हजारों आदमी मरते थे अब उठ चुकी हैं। नागरिक स्वास्थ्य अभियानों में अस्पताल औपचारिकता, डाक्टरों और नर्सों की पूर्ण संख्या वृद्धि भी पर्याप्त उन्नतिकर हैं। आयु विज्ञान तथा एलोपैथिक महाविद्यालयों से निकले दोनों चिकित्सकों की अब गाँवों तक पहुँच हो गई है। तहसील स्तरीकरणसंघ में अनेक अस्पताल एवं औपचारिक स्थापित हो चुके हैं। कालू में तहसील का प्राथमिक स्वास्थ्य चिकित्सा केंद्र चालू है। अतः अब अब लोगों की आयु का मानदण्ड बढ़ रहा है। जनमर्यादा वृद्धि हो रही है इसलिए इस तेजी से होने वाली जनवृद्धि को रोकने के लिए हर गाँव में समाज कल्याण के कार्यक्रम भी चलाये जाते हैं।

उन्नति और समाज सुधार—जन साधारण में बालक वृद्ध एवं स्त्रियों तथा हरिजन आदि कमजोर वर्गों और श्रमिक वर्गों को समुचित उन्नति व सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध हुई है। पहले विवाह उत्तराधिकार और दत्तकान्ति मामलों में हिंदू महिलाओं पर प्रतिबंध था तथा उन्हें जनन बाधाएँ घरेलू दुराचारों में हिंदू कोड के माध्यम से हरेक स्त्री पुरुष को उपयुक्त अधिकारों में समानता उपलब्धि मिल गई है। पाप और

समभाव का शासन चलता है। दहेज मागना व देना अवश्य है, लेकिन जनता अपनी ज्यादाती से कदापि पेश नहीं आ रही है। भारतीय संविधानानुसार हरिजन वर्ग अब अस्पृश्य नहीं, अनुसूचित जातियाँ तथा जन जातियों के छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने, छात्रवृत्तियाँ लेने और सरकारी नौकरियों तथा विधान सभा, लोकसभा तक स्थान सुरक्षित हैं। इनके परिवारों का नहरी क्षेत्र में जमीन, सिंचाई की सुविधाएँ एवं श्रृणोप-लब्धि वरदान स्वरूप है। राजस्थान के इन पूर्वोपक्षित लोगों का उन्नति की दशा में पर्याप्त सहायता मिलती है। कालू में अब औद्योगिक भजदूरी राजकीय कर्मचारियों, स्त्रियों, बच्चों के कल्याणार्थ काफी सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ लागू हैं। कमधारी राज्य बीमा योजना कमधारी निर्वाह निधि योजना में कारखानों एवं खानों के श्रमिकों का आर्थिक सहायता मिलती है जा बकारा वृद्धावस्था बीमारी या किसी भी दुबल दशा में पीड़ित हान पर दी जाती है। महिला कर्मचारियों को प्रसवकालीन सहायता मिलती है। इस क्षेत्र में समाज कल्याण बाड़ महिलाओं का सहायताय सामुदायिक केन्द्र और बालिका की सुशिक्षा हेतु बाल बालिका चलाता है। हर वर्ष 14 नवम्बर को शिशु कल्याणाय बालदिन मनाया जाता है। वेष्यावृत्ति तथा दारोगा की कल्याण को दहेज में देने सम्बन्धी पाबंदी है। कालू में अस्पृश्यता रूढ़िवादिता के रूप में मानी जाने लगी है। पुराने जरायम पशा लोग न भी कृपि जादि के धवे अपना लिए हैं।

ग्रामीर प्रमोदमय जीवन—आजादी से पहले के लोग नृत्य नाट्य को हेय दृष्टि से देखते थे। नाटक खेलने वाले पात्रों से लोग मजाक किया करते थे। कहते 'जोटी जवगी रे भाया, मागा'र खाया।' अतः कतिपय अभिजात्य वर्ग के लोगों को नाटक में शामिल करना मुश्किल रहता था। आजकल तो लड़कियाँ भी स्टज पर खेलने में उत्सुक दिखाई देती हैं। अतः एवं नृत्य नाट्य, संगीत एवं कला क्षेत्र की महान सांस्कृतिक परम्परा का काफी विकास हो गया है। राजस्थान में संगीत नाटक एवं कलित कला आदि अकादमियाँ स्थापित हो गई हैं। इनमें और राजस्थानी लोक साहित्य तथा लोक नृत्य में भी शाव बाय होते हैं। चित्रकला, मूर्तिकला एवं स्थापत्य कला का विकास अपनी स्थिति पर है। भाषा साहित्य की उन्नति के लिए राजस्थानी भाषा साहित्य सम्मिति मगम बीकानेर स्थापित है। शिक्षण मस्याजा की आरंभ ग्रामीण क्षेत्रों में भी खेलकूद हान है। इसके लिए राजस्थान खेलकूद परिषद् की स्थापना की गई है।



प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी

राजस्थान की प्रगति में गतिशील कालू गत बीस वर्षों में राजस्थान में जा

प्रगति की है उसमें गांव कानू (वीकानर) का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इस प्रगति का ध्येय भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू की जीवनी या पीढ़ी से समारम्भ होता है। इसी आत्मजा विभव य देवी श्रीमती इन्दिरा गांधी के कार्यकाल में राष्ट्रीय उन्नति हुई है। राजस्थान में चतुर्मुखी विकास के लाभ का अधिनाश श्रेय जनता की गहन आस्था से श्री माहनलाल सुखानिया के पक्ष में पड़ता है।

गाँव कालू में आजादी में पहले स्थानीय महानुभाव कुमाराम ने निजन जंगल में प्याऊ बनाकर तथा 50 वर्ष तक अपनी घमशावा स्कूल भवन के नितात अभाव में स्कूल चलाने के लिए देकर गाँव के लागा को शिक्षित बनाने में सहयोग किया। २० 1935 में श्री मेवासदन सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना करवा कर था। गुरजमल में कानू में अपना नाम चमकाया। स्वतंत्रता के पश्चात् शेरमल ने राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कानू का भवन प्रदान कर क्षेत्रीय जनता को स्वास्थ्य लाभ दिलाया है। नाहटा परिवार में अपना भवन देकर कालू में डिस्पेंसरी का कार्य चालू करवाया जिसके लिए जन विकासाय इनका भी श्रेय मिलता है। नत्कालीन महाराज कुमार अमरसिंह ने अपना गन्, छात्रावास के लिए प्रदान करके पुरानी जन प्रीति का पालन किया। जिसके लिए अनन्य विद्यार्थी उपकृत हैं। शिक्षा बद्धि का लाभ दिलाने वाले श्रेयार्थी कु भाराम आय स० 56 में मा य हैं तथा स्थानीय जल समस्या को राजकीय जल प्रणाली विभाग से सम्बन्धित करवाकर गाँव को निश्चित बनाने में चौधरी रामचन्द्र ने 1973 में पूरा योगदान देकर श्रेय प्राप्त किया है। कालू में विद्युत्करण और टेलीफोन के विस्तार कार्य जनता सरकार द्वारा नवम्बर 1978 में पूरा हुए। दिसम्बर 78 में प्र० अ० बानसिंह भागव ने कोशिश करके राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का परीक्षा केंद्र स्थापित करवाया है।

मदय हृदय यस्य भाषित सत्यभूषितम् ।

काय परहिते यस्य क्लिप्तस्य करोति किम् ॥

—मुभाषितरत्नभाण्डागार प० 163

(जिसका मन दयायुक्त है वाणी मत्स्य से अनकृत है और गरीर परहित में लगा हुआ है—ऐसे व्यक्ति का कलियुग कर ही क्या सकता है ?)

कालू का वर्तमान वरदीय वर्ष 2035—इस वर्ष गाँव कालू का जन-सामान्य जितना हर्षित हुआ उतना आजादी के गत 30 वर्षों में कभी भी प्रभुदित नहीं हो सगा। यह महान् उपलब्धियाँ का एक ऐतिहासिक वर्ष था जिसने जन साधारण के लिए अधिकाधिक सुख साधनों के पन् प्राप्त कर दिए हैं। युगो से चल आ रहा अभावों को पूरा करने के जो अवसर इस साल में बरसे व जन मानस को मनन प्रफुल्लित करने तथा सुख दान के लिए बड़े वर्गनायक सिद्ध हुए हैं। इससे गाँव की सघन प्रगति तथा परिपूर्णता वृद्धि हुई है। बहुत से कामों का पिछड़ापन हट जान में अब हमारा यह कानू, पूरा रूपेण गाँव स कस्बा बन गया है।

जनता भाग्य विद्युत् उपलब्धि—कालू में नगर विकास कार्यों की आयोजना हेतु 2035 की प्रकाश प्रति बड़ी सामग्रद हुई। नवमुच विजली की कुलबुलाहट एवं कुलबुली माग यहाँ दा दशक से पहले ही प्रारम्भ हो गई थी। सा गाँव कानू में यह महत्वपूर्ण कार्य जनता राज्य का विशेष कीर्तिमान बना जा सकता है।

टेलीफोन की उमर—द्रुत गति में सूचना एवं समाचार लेन-देन की दिशा में टेलीफोन का स्थापित हो जाना—गाँव कालू के व्यापारी वर्ग को यथायथ सुविधा की उत्तम उपलब्धि हुई है।

दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति का भवन—इस सहकारी के अपने भवन की कमी गाँव की योग्यता में एक छटकने वाली बात थी। गुम भवन 2035 में अब गाँव के बीच इस समिति का सुन्दर भवन बना है।

स्टेट बैंक ऑफ़ बीकानेर एण्ड जयपुर फुल ब्रांच—पहले कालू में यह बक बैंक मैन के रूप में कार्यशील था। बि.स. 2035 में उसके पदोन्नत होने के आदेश आये हैं।

मेडिकल बोर्डिंग—जिले के मेडिकल विभाग ने कालू में शान्तीय ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केंद्र भवन बनाने के लिए दो साल रुपये मंजूर किये। इसके लिए श्री लालचंद राठी ने अपनी पुरानी जमीन प्रदान की, जिस पर इसी साल छकन भवन बना है।

संवत् 2035 में बीकानेर जिलाधीश श्री दीपद्रनाथ न. कालू से बीदासर तक सड़क काय कालू करने की सरकारी योजना बताई और गाँव कालू में अप्रोच रोड बनी।

नये प्रावधान और प्रगति—इस साल की प्राप्तियाँ में कृष्ण विद्युत से चने छीस परा की 'दुर्गा कालोनी' बसी गाँव का राष्ट्रीय जल पक्षी नाला द्वारा और भी आगे निकलने हेतु बड़ा तालाब बना तथा पीने के पानी की समस्या हित प्रत्येक वाह में पाव भी बहों का होज एवं पास में पशुओं के पान खावत क्षेत्रों भी बनी। गाँव के समस्त पशुओं के लिए मस्जिद के पास पानी का एक विशिष्ट बड़ा कोठा और खेल (नाला) बनाये गए हैं। ये सब काय साल भर के अंदर परिपूर्ण हुए हैं।

धार्मिक रुहर—राजस्थान बीर भूमि पर यह धर्म भूमि भी है। यह प्रदेश धर्म और सस्कृति के लिए लम्ब समय तक संघर्ष करता रहा है तथा यहाँ के निवासी धर्म भावना के साथ बीर भावना के उज्ज्वल रूप का प्रकट कर सके हैं। यहाँ के बहादुरों की बीर भावना की मूल प्रेरणा, धर्म भावना से प्राप्त हुई है और उन्होंने अपने जीवन में त्याग तथा आज के अनुपम आदर्श उपस्थित किये हैं।

देश में शहरों में बहुत से लोग बड़ा सम्पन्न जीवन उत्तीर्ण करते हैं और उन पर धार्मिक सत्त भी कृपावत बन जाये रहते हैं। किन्तु वहाँ के अर्थ अजीब हुए लोगों का उन आध्यात्मिक साधुओं का समता पान विशेष प्रभावित नहीं कर सकता पर सत्य बार-बार वही आते हैं। तब वहाँ के कुछ लोग अपने द्रव्य बन्ध से जल्द महात्मा की सेवा कर लेते हैं। संवत् 2035 में कस्बा कालू की भी सत्त सेवाओं का मौका मिला। गरीब सबके के लोगों तक में आध्यात्मिक भावनाएँ जाग्रत हुई और वे सब धर्म लाभ प्राप्त कर सके। जन तेरापथ के आचार्य श्री तुलसी महाराज के आगमन हेतु कालू के लोग पंद्रह दिना से लालायित उपस्थित हो रहे थे। दिनांक 22 दिसम्बर की संध्या एक जन साध्वी समूह, अपनी सध प्रमुखता का प्रभाजी के सानिध्य में लूनकरन सत्र में कालू आकर बमला भवन में ठहरा। उधर श्री दूगरमह से पशुसूदन नाम के एक वृष्णव सत्त भी माता जी के मंदिर में आ उतरा। दूसरे रोज प्रातः काल दिनांक 23 12 78 को आचार्य श्री तुलसी का आगमन हुआ। तत्समय कालू के कण कण में आनंद व्याप्त हो गया था। तत्काल "आचार्य श्री तुलसी स्वागत समिति कालू" के निम्न-लिखित पदाधिकारी नियुक्त हुए। अध्यक्ष श्री भरू दान गाड बनाय गये और अर्थ में प्रा०

जोराराम गया स्वागत समिति, डॉ० निरण प्रायाम सयोजक, श्री जवरीमल व्यवस्थापक, श्री गोपालचंद डूढ़ानी आवास भाजन व्यवस्था समिति और सब व्यय नियंत्रण समिति में श्री जवरीमल और गोपाल चंद नियुक्त हुए।

आचार्य श्री तुलसी जैसे क्रांतिकारी महापुरुष का अंतर चेतन्य, ओज एव जीवन सत्य का तप पूत व्यक्तित्व की प्रेरणा विरिण स ग्राम कालू के समस्त लोगो ने अपनी आत्म चेतना का विरसित वर्णन का आनापदेश प्राप्त किया। उन्होंने आचार्य श्री के अध्यात्म प्रधान व्यक्तित्व एवं चारित्र्य मूलक सस्कृति का एक जीता-जागता निदर्शन अवलोका तथा उनका अणुव्रत आदालन धर्म, भौतिकता पर जाध्यात्मिकता की विजय का कीर्ति स्तम्भ का भारत की एकता का प्रतीक माना। आसवास भवन के मध्य विस्तृत मदान में सफाई व्यक्तित्वान सत्य-अहिंसा ईमानदारी और ब्रह्मचर्य व्रत की छाता ठाक कर प्रतिज्ञाएँ ली तो कालू हो नहा आस पास के जनक गाँव की जनता में भी दशना की शुधा समझ आई। बहुत से दर्शकान श्री तुलसा के उपदेशो से तामसिक बलियो का त्याग कर दिया। अत एव ग्राम कालू एक निवर्तीय ग्रामो की जनता ने आचार्यश्री के धार्मिक आदालन में अच्छा सहयोग बनाया। अन्तर्गतत्वा—आचार्य श्री तुलसी का अयस्थानो के लिए कालू से बिहार हो गया। वे यहाँ सप्ताह भर ही ठहर सके। तब इस कस्बे के कायकता साग मत श्री मधुसूदन का सानिध्य में श्री विष्णु महामय 'समिति का गठन करके सत्ताईस कुण्ड्रीय महायन का मठ बनाने लगे।

अदभुत जुलूस—मैं हद्दाग पीडित—भर भला म भला। बाहर जान की आदत भूले रगराज की तरह फोकी पड़ गई। सुन रखा था गाँव में इन दिनों एक तपस्वी सत आये हुये हैं और दिनांक 21 1 79 से 1 2 79 तक विष्णु महायन होने वाला है। पर स० 2035 भाग महीने की वृष्ण पक्षीय एकादशी के दिन घर बैठे ही गंगा आ गई। कालू गाँव, जिसकी जनसंख्या साधारणतया दस हजार से अधिक नहीं होती, पर लगभग 20 25 सहस्र नर नारियाँ की सम्मिलन भूमि बन गया। 20 हजार मनुष्य कितने होते हैं? यह भी अनुभव करन की बात है। गाँव से तिरुन अधिक नर नारी इस छोटे से कस्बे कालू में सहस्र रोजाना एकत्रित होते रहें। यहाँ सत्ताईस कुण्डिये विष्णु महायन होने वाला था, जिसका जुलूम 24 जनवरी का मैं अपने घर द्वार आगे से निकलते हुए लोक विद एक प्रत्यक्षदर्शी होकर देखा। जुलूस का पद यात्रा ग्राम परिक्रमा हेतु हा रही थी। मेरे माहूले की लम्बी विस्तृत समस्त गलियाँ गाँव के और बाहर के आये हुए भक्त लोगो से तत्काल खचाखच भर गई। मैं अपनी कुटिया के एक किनारे ही खड़े होकर देखा—भारी भीड़, भगवान की आँकी निकाली गई है। सो उसके बीच घुसकर यन के जनक उस सत के दर्शन कर लेना खतरे से खाली नहीं दिखाई दिया। बीकानेर ही नहीं, चूरू और श्री गंगानगर जिले तक के लोग भी आये थे। नर नारी, बच्चे-बूढ़े युवक युवतियाँ सब इस महान यन के दशनाय गाँव कालू में सत बाबा के साथ जुलूस की शाना बढ़ा रहे थे।

मैंने पहर भर एक ही जगह खबड़ी के सहारे खड़े रहकर हजारो स्त्रियाँ के मुखो पर वास्तविक एक अद्विजित श्रद्धाभाव के स्पष्ट चिह्न देखे। वे सब इस बहुद् जुलूस में सम्मिलित होकर वस्तुतः अपन जन्म को सफल अनुभव कर रहे थे। जुलूस के आगे प्रथम दल श्री डगरगढ से सम्मिलित आया हुआ 'माणक ब्रैण्ड' बाजे का बतक रथ एवं

कलाकार समूह बड़ी शान से सुंदर 'टुइन' बजाते चल रहा था। उसने पीछे मरदारगह्वर से आया हुआ 'रमजान बण्ड' का दल अपने 'हंसयान' सहित सुंदर पोशाक में मनमोहक रागें बजाता चलता था। तीसरे नम्बर में बाबा की 'कार' के आगे छात्रों का दल और मिरासा मुलतान परिवार के लोग ढोल घुरा रहे थे। कार पर बहुमूल्य ध्वज, मालायें एवं श्री भगवान की मुगल मूर्ति स्वर्ण प्रतिमूर्तियाँ विराजमान थी। उस मुगल रूप के चरणा में गाड़ी ठाठ से बड़े हुये वे बाबा भी दशका का दृष्टिगोचर हो रहे थे। उनकी कार गाड़ी से लगने हुये पण्डिता, उनके यजमानों, यात्री विप्रों एवं सम्भ्रांत नागरिकों के समूह चल रहे थे। यात्रा ऋषि की भाँति पीत वस्त्र धारण किये हुये यन्त्र वाद्यकर्त्ता लोग अपनी सौम्य मुद्रा में प्रमुदित एवं प्रमनचित्त नजर आ रहे थे। देखा कि हजारों की सट्या में कुमारियों की टोली अपने मस्तक पर नागियल में ढके कोरे कलश (छोटे घट) लिये हुये चार पक्तियों में चल रही थी। अपनी अपनी अवस्थानुसार की पवित्र पोशाकों में महिलाओं की अनेक सुश्रूषित टुकड़ियाँ हरि कीर्तन की हृषित मुद्राओं में तन मन प्रफुल्लित हुई चल रही थी। देवा तो यन्त्र के दशनाथ बालू में बीस हजार से ऊपर का विशाल समुदाय समुद्र की तरह जुलूस में लहरें ले रहा था और इतने मनुष्यों का कोलाहल भी सागर के गजन से कम न था। पुनीत नारा तथा तुरही के तुमुल नाद से खैसुर व अन्य खगधर भी मानो हरिहर हरिहर की ध्वनि उच्चरित कर रहे थे।

देवा श्री विष्णु महायज्ञ के लिए बालू तथा उससे मिले हुये स्थानों—करणीसर, छटामर, कामासर गारवदेशर, लापरसर, गवाँसर, नाथूसर आडसर, बीपासर, लारका सहजरासर लूनकरणसर, बस्ती जोगियान कातवास, नाथयाणा, राजपुरी, विसनासर आदि गांवों के लोग ऊँट गाड़ा तथा मोटरों से प्रातः सत्वर यन्त्र स्थल पर उपस्थित होते और सध्या वापिस अपने घरों व गाँवों में चले जाते थे। कानून में दूरस्थ के सगे-सम्बन्धीयों से सारे मकान भर गये। सम्बन्ध के अभाव में अधिकांश यात्री अस्माई रूप से बनाये कम्पों, सापडियों और देवस्थान या वक्षा के नीचे तथा किसी इमारत के नीचे गलियों के किनारे ही ठहरे थे।

इस छोटे से कम्बे में हजारों मनुष्यों का एकत्रित हो जाना वास्तव में एक दृश्य बन गया था। पहल पहल आना जाना, सवत्र मनुष्य ही मनुष्य दिखाई देते थे। ऊँट-गाड़ी तथा मोटरों से प्रातः सत्वर यन्त्र स्थल पर उपस्थित और सध्या वापिस अपने घरों व गाँवों में चले जाते हैं। इस यन्त्र सम्मेलन में आये लोगों की चार विभागों में बांट कर देखिए। प्रथम तो वे नर नारी जो पूषण श्रद्धा के साथ यन्त्र स्थल पर भजन कीर्तन तथा बंदावन की रासलीला को देखकर सचमुच अपने को धन्य मानते, इनकी सरया हजारों की थी। गाँव के और आम पास के गाँवों से ये आय तथा नियमित रूप से प्रत्येक धार्मिक कार्यक्रम में सम्मिलित होकर पुण्य लाभ लेते गये। दूसरे वे लोग जो मेला देखने के उद्देश्य से आय। लोगों की भीड़ भाड़ मित्रों भवविद्या का मिलना जुलना, चमत्कारिक सतों के दर्शन, यन्त्र स्थल का अद्वितीय मठप, देवी दर्शन रासलीला और मौलामर की रामलीला आदि का देखकर अपनी उत्सुकता तृप्ति के उद्देश्य को सफल कर गये। तीसरे वे जो घन कमान के उद्देश्य से सब प्रथम सम्मिलित हुए। सूत और जूते से लेकर हाड़ी मटकों तक के दुबानदार आय थे। इनमें यापारी ठेकेदार, फल बेचने वाले हलवाई, चाय के होटला वाले, विसाती गम मगफनी बेचने वाले वस्त्रा, पुस्तका, घनना

के एजेंट दलाल तथा खिसधारी जस अथ दुकानदारों की भारी उपस्थिति रही। इन घनेच्छुकों में कतिपय लघु भिखारी भी दखे। इनके एक अवांतर भेद में चोर उचक्के, ठग, दुराचारी, जेब चतुरने वाले लोग भी होंगे, पर कालू के मन-सम्मेलन में अप्रकट रहे। इस धार्मिक मन में गाँव से बड़ी निगरानी एवं चौकीदारी का इतनाम किया गया था।

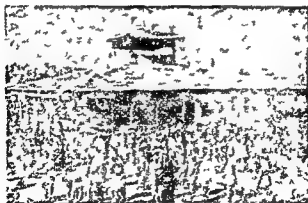
चौधे के लोग हैं जिनका सबध भेले के प्रबध से था। स्वयं सबक, सेवा समितिवा, पुलिस वाल डाक-तार व सरकारी कमचारी और माटर स्टाफ वाले, मठप भिखीबूद पानी बिजली वाले, फाटा तथा लाऊम्पीकर वाले आदि 2 महानुभाव थे। इनकी भी एक सुसभ्य सख्या बढ गई था।

साहस बढा मैं भी यन्तारज के अवसर पर पहुँच गया। बढ मन्ना के साथ पीपल आदि की लकड़िया से अग्नि उत्पन्न की गई। पहिला द्वारा 27 हवन कुंडों के निकट सत्ताईस जोडे (सपत्नीक) यजमान बिठाय गये। एक एक हवन कुंड के लिए 33 माजी नियुक्त किये गये। यह यज्ञ १० दुर्गादत्त जी सारस्वत के आचार्यत्व में हुआ।

यज्ञ दान तप पूजादिक् शुभ कर्म जो करना मन धारो,
तो आगे पीछे ऊँ तत् सन मही शब्द गुम उच्चारो।

(गीता, 17 अध्या, 362 श्लोक)

कालू गांव का कितना सुहावना समय था वह कि 24 जनवरी से 1 फरवरी 1979 तक के लिये यहाँ एक धार्मिक आयोजन हुआ था। इस बृहद् एवं पावन कार्यक्रम में 27 कुण्ड का श्री विष्णु महायन्त्र हुआ सो मैंने युगपथ जनवरी 25 के अंक में उसका वृणन प्रथम प्रबध द्वारा प्रकाशित करवाया था। गांव के लोग उस समय उक्त आदर्श एवं सुकाय में तन मन धन में व्यस्त थे और उनके पड़ोसी गाँव वाले तथा सबंधी श्रीमान भी सहयोग एवं पुण्य लाभ क लेन देन में परमानंद साक्षात्पित हुए बेहूद हर्षित थे। अधकार प्रकाश की आर चला, हर मनुष्य पुलकित हुआ बढा तथा सभी मन प्राण, भक्ति नदी में डुबकी लगा लगाकर अपन जीवन की सफल बना रहे थे।



कालू में महायज्ञ

कालू गांव में महायज्ञ का कारण एक सत (पगला बाबा) का आगमन रहा। य महापुरुष 22 दिसम्बर सन 1978 की दोपहर की अचानक एक जीप से गांव कालू

मे आ उतरे। स्थानीय लोगो न तत्काल माताजी के मंदिर मे इनका आसन लगा दिया। बाबा यज्ञ करवाने मे बड़े माहिर पाय गये। पीढियो का अनलिखा इतिहास, कालिका और कालू के सम्बन्ध की बहुत पुरानी दंत कथाएँ तुरंत सामने आ गई। चंदा चिन्ता शून्य हो गया और माता जी के मंदिर मे गाँव के मन की तरह ही विशाल मंडप बना दिया गया।

सब दिन एक जसे नही होते। सप्ताह मे पाप और पुण्य दोनों अपन समय पर काय करवात रहते हैं। ये सब भगवान की मर्जी से ही होते हैं। यज्ञ की जगह का ही उदय हो गया। मोहरा और मंदान सदिया से बसहुरा धूरा, गोबर मंदगी का घर, बेकसूर बलि दिय गये पशुओं की हड्डियों का स्थान बने रहते थे साफ सफाई, धूप दीप खुदाई छिड़काव से परम पवित्र बन कि—

पण करतारी करणी यारी कुण समझ समभाव।

ऊँधी भर, ऊँचाव सूई पाछा मळे-भगव ॥ (मम काव्य)

परम पिता परमेश्वर की महती अनुकम्पा हुई कि वही जगह श्री विष्णु महायन्त्र हिन मंडप बनाने के काम आई। यन्त्र चाल हुआ, 27 कुण्डो पर पीत वस्त्रधारी पंडित अग्निदेव के सुगंधित सामग्री हाथन लगे। उनके अपने अपने यजमान गठजोडा जोड़े सपत्नी सामन बैठे उक्त काय में सहयोग करते थे। वे अपन गुरुओं की रोजाना भेंट-दक्षिणा भी चढाते। जनता माला हाथ लिए यन्त्र के विशाल मंडप की फेरी फिरती और पुरुष हरि कीर्तन करत मग्न भागे फेरी मे चलते थे तथा औरतें अपनी पृथक टोलियों मे सुंदर भजन गाती हुई भागती चाल मे चक्राकार दिन भर मंडप परिभ्रमा करती रहती। सकंठो आदमी अपनी दैनिक ह्यूटी देत। कुछ औरतें माताजी के मंदिर के चौक मे बठी भजन गाती। एक महिला टापी तिलो से भरी बोरियो के पास भजन घुन के साथ ही छलनी से तिल साफ किया करती थी। कई जी साफ करती, कुछ चावल और कद्दि चिड़किया बनाती थी कि यज्ञ मे एक लाख साठ हजार आहुतिया लगी। छड़छड़ीला, नागरमोथा, बपूरकावरी, चंदन का घुरादा, अगरतगर बपूर, धूप आदि सुगंधित पदार्थों को प्रोल मे बैठे प्रौढ पुरुष मिलाते रहते। घूत भंडार वाले व्यक्तियों को दानी समय हवन के लिए तावे की कुंडो से बाल्टियाँ भर भर कर दी देना पडता था। पाँच सात छाती सुधार, मंदिर के पीछे पीपल की शुष्क लकड़ी पर आरा चलाते हुए अपने सामन पड़े काटे हुए सामान पर फूले जात थे। कुछेक उनमे से बड़ी कुवाड (कुल्हाट) से सत्तो के धूँगी मे रात दिन जलने हेतु बने ठूंड (सक्कड) काटकर सर्दा मे स्वेद टपकाते थे। मंदिर के आगे क बमरा की चौकी पर सत बाबा के दशनाथ हर समय भक्तों की भीड लगी रहती। बाबा हर समय फूल मालाआ से लदे नजर आते। विद्यालय के पीछे वृंदावन से आई हुई रासलीला दोनों समय चलती थी। इस लीला के लिए बड़ा विस्मन एवं ऊँचा भव बना हुआ था। व्यवस्थापक एवं स्वयंसेवक अपन कोट के गले तीचे बज लगाय हुए हाफने फिरते प्रबन्ध को पार लगा रहे थे। सध्या छ बजे से रासलीला स्थल पर ५० पारसनाथ जी त्रिपाठी (काशी कोविन्द) श्री रामचरित मानस का प्रवचन करते।

यात्री खूब जोरों से आत। उनका ट्रको पर ऊट गाडो पर, ट्रक्टरों की ट्रालियो पर, मोटरकारो एवं स्कूटर साईकिलो पर आगमन होता था। फूट की बसो मे तो

तिल रखन की जगह नहीं मिलती। दिन भर विशेष मोटर गाड़ियाँ यात्रिया से लदी भरी चलती। यातायात से बचिit हुए यात्री इस भयंकर सर्दी में गठडी का भार लादे कबल ओढे तन ठिठुराये पन्न भी आने थे। दल पर दल टिठ्ठो नल ! सब सस्था भवन भर गये। नत्समय जप तप और यज्ञ का कार्यक्रम 'सत्य व्रता युग' का दश्य त्रिवार्द देता था और हजारों नर नागी एवं अवाल वद्ध इस ममाग्राह में सम्मिलित होते थे।

धी के बड़े टीन तिला एवं नारियल-खापरों की बोरियाँ खाइ गताशा लाडू-पेडो, रपये पसा तथा फूला के धना सलद हुए लोग आन और बाबा के चरणों में अर्पित करके अपन का घ य घाय मानत थे। माना इस सुनाय में स्वर्ग की राज्य लूट लूटते थे। मन्दिर के भण्डार कक्षा की धी के टीना एवं हवन सामग्री की बारियों से अजीण हो रहा था। कायकत्ताआ माधुआ पड़िनो एर पुजागिया आदि के लिए हर रोज सामूहिक तथा परिवर्तित मिष्ठा न (महाभोज) बनने का यही पर आदश इ तजाम था। मैंने बीमार होते हुए भी इस सत्यायोजन की बार बार मड़प निकट जाकर देखा था।

रात के 12 बजे तब सर्वाँ बेहद, कान ही नहीं—हृदय और फेफड़े तब ठंडे हो गये। दात बोल गये और पैरों में नूयना चारण कर ली। लेकिन इस भयंकर जाड़े में भी हजारों लोग पत्थर की मूर्तिवत बड़े गमलोला देखत रहते थे। भगवान की श्रांती दिलान के समय रपयों की बोछार बरस जाती और पड़ितत्री से रामायण का प्रवचन सुनकर भी जनता मुग्ध हो जाया करती थी। पगला बाब तो यहाँ की जनता के लिए जादू बनकर आया था। हर समय हजारों नर नारियों की अटूट एवं अगाध निष्ठा के साथ भीड़ लगी रहती थी। नोटा की झडी लगाने वाले दूसरे गाँव के लोग भी माताजी के मंदिर में बाबा से बार बार मिलते थे। यहाँ के कई लोग बाबा के हाजरिये और कई पैसे सभालने वाले दिन गान भक्त बन रहते। ये लोग केगरिया साफा झुकाये पेडे पतासे तथा मुपितया माल खा खाकर मस्त मुसटड़े बन गये। कई लोग बाबा आये तब से ही मनघाछित फल पा लेने के लिए चिपके रह। गाव का राजनतिक नेता तो अपने हृदय में शासन विधायक का उच्चासन पा लेने की उम्मीद बसाय हुए था। बाबा के दशानों से सब खुश, क्योंकि यहाँ के कायकत्ताआ की काफी माल एवं मान मिलता और अ य लोगों की उनकी आकाक्षाएँ फलीभूत होने का आशीर्वाद मिलता। माताजी के मंदिर का मन्तन, बिजली की ट्यूब लाइटा से जगमगाता रहना और मंदिर की विद्युती सजावट ग्रामीण यात्रियों का मन माहे प्रकाशित होती थी। चहल पहल भरा रात का दश्य तो बेहद अकरपनीय बन जाता। तत्समय लोग अनेक स्थानों पर ठहरे हुए अय सत्तो के भी दर्शन करते थे। भुदय स्थाना में सत्ता के शिविर पचायत भवन के अंदर और इद-गिद थे। मगर शिवालय, जगेरी और रामदेवरा में भी सत्तो के घूमे लगे थे। खेजड़े के बड़े लकड़ जलते और भजन वाणी तथा शब्द विचार क माध्यम से चारों ओर सत्सगर्त चलती रहती थी। होटला वाला ने मजदूर छोकर थरथरात हुए फिरते और एक दो बजे तब खडखडाने हुए लग अपने अपन घर डेरो पर आकर सोते थे।

रासलीला होन का समय दिन में 12 से 5 बजे तक और रात्रि का 9 बजे से आरम्भ होती थी। इसके दशक जन की मड़प का दृश्य बडा सुहावना एवं विचित्र लगता था। प्रेम टेट हाऊस बीकानेर के पर्दे और नीचे बटी दरिया बिछी थी। सामने ऊँचा मंच और उसकी चमकीली शलरिया तथा विनो बधी हुं थी। श्री कृष्ण और राधा का

पाट करन वाले पात्रा को जनता साक्षात् भगवान समझती। उनकी जरी की पोशाको पर बिजली के बड़े पाँवर वाले बल्ब गजब ढा रहे थे। बीच बीच में बिजली अपने नये आगमन का अनुभव कराने के लिए आँखें भी मीच (बंद कर) लेती थी। तब पेट्रोमेक्स एव चौकी तरफ के खुले मदान में खड़े ट्रको की बत्तिया से प्रकाश को कायम रखा जाता था। कुछ लोग वहाँ के सिबिरो में बड़े ही रासलीला देख लिया करते। कई ग्रामीण अपने ऊँट वाले बड़े गाढा के नीचे निवास स्थान बनाये 'गुदड़-गुडवान' के साथ लालानद ले लेते थे। महिलाएँ बातों में बाबा की बडाई करती और रोटियाँ पकाती हुई भी भजन कीर्तन कर लेती थी। सध्या बदन भी वही हाता। पंडितजी का प्रवचन भी सम्यक् परिवर्तन से लीला मंच पर ही हाता था और इसे पचायत भवन के मैदान में ठहर हुए लोगो का अपन स्थान से दखन का दुहरा लाभ मिल जाया करता था।

बाबा के आगमन से यहाँ सब तरह से लगभग चार लाख रुपये की यज्ञार्थ आमद हुई तथा प्रत्येक दिन तीस-तीस, पत्तीस पत्तीस हजार रुपये आये। तभी ता बार-बार बाबा की हजारों कठा से एक साथ गगनभेदी जय जयकार हुई।

यसे तो जसासय पास ही है मगर ऊँटों की कोठियों द्वारा पार्सि के पानी से डूब भरवाये जाते थे। डॉक्टर अस्पताल स्त्रिक्ल नजदीक एव पुलिस चौकी भी लगी हुई एकदम निकट तथा डाक तार विभाग की पूरा सवाएँ तत्समय उपलब्ध रही। परंतु प्राकृतिक प्रकोप का पूरा भय बना रहा कि आकाश में बादल मड़राते थे और यात्रियों से खुला मदान ठसाठस भरा हुआ था। श्री कोलायनजी तथा रामदेवजी के ऐसे क्षेत्रीय मेला के ढग पर कालू में यह मनीष तथा पगला बाबा के दशना हित मेला लगा था।

असत्य तथ्य एवं अफवाह—पगला बाबा के चमत्कारों विषय में जनको असत्य बातें एवं अफवाहें दूर दूर तक फैलती चली गई। उसके प्रभाव से ही गाँवों के लोग जाड़े की इस ठिठुरती ऋतु में बाबा के दशनाथ आ जा रहे थे। एक गप्प यह भी उड़ाई गई कि बाबा जब श्री डूंगरगढ में कालू के लिए एक जीप माटर में बैठकर चले ता थोड़ी दूर का रास्ता तय करने पर जाप बास ड्राईवर ने देखा कि बाबा का सीट खासी पड़ी है। वह घबराकर जीप रोकन लगा। तब साथ बैठ किसान संजजन ने बताया कि—“डरो मत। यह बाब का चमत्कार है।” ठीक वसा ही हुआ। जीप ने कालू गांव में प्रवेश किया, उससे पाँच मिनट पूर्व ही पीछे की सीट पर बाबा बठा दिखाई दिया।

दूसरी-बाबा आम उस दिन श्री डूंगरगढ कालू रूट की मोटर गाडी अपनी सबक से भीड़ भरी जा रही थी। उसके ड्राईवर आदि को बाबा के यहाँ आने का मालूम ही नहीं था। क्योंकि बस, बाबा के गांव में जान के बाद अभी अभी लूनकरनसर से आई थी। दोनों के अलग अलग रास्ते, परंतु माताजी के मंदिर में बैठ ही बाबा ने देखा कि मोटर गाडी गांव से निकल गई है। तब उन्होंने हाथ का इशारा किया और बोले 'वापिस जाओ!' बस तुरंत मुड़कर मंदिर के आगे आकर खड़ी हो गई। बस स्टॉप वाले बाबा के धरौ में गिर पड़े। ऐसी-ऐसी अनक अलौकिक बातें जन-समूह में चल गई।

यह मैदान के चारों ओर चार सुंदर दरवाजे तथा आन जान के रास्तों पर फरिया टगी हुई थी। दोनों किनारों पर दुकानें, ताल के बीच की पाल पर यात्रियों के अनेक गाड़े, ट्रक एवं जीपें खड़ी रहती। जगह जगह गाँव गाँव के डेरा में आग जल रही

तिल रखन की जगह नहीं मिलती। दिन भर विशेष मोटर गाड़ियाँ यात्रियों से लदी भरी चलती। यातायात से वंचित हुए यात्री इस भयंकर सर्दी में गठडी का भार लादे कबल बोले तन ठिठुराय पदन भी आते थे। दल पर दल टिहो नल। सब संस्था भवन भर गये। तत्समय जय तप और यज्ञ का वाद्यक्रम 'सत्यत्रेना युग' का दृश्य दिखा देता था और हजारों नर नागी एवं अवाल उड़ इस ममारोह में सम्मिलित होते थे।

घी के बड़े टीन तिला एवं नारियल-खोपरा की बारियाँ छाड़ पटागा लाड-पेडा, रुपये पसा तथा फूला के थला स लद हुए लोग आने और बाबा के चरणों में अर्पित करके अपने का घ य घ य मानते थे। मानो इस सुवाय में वे स्वर्ग की राज्य लूट लूटते थे। मंदिर के भण्डार कक्षा की घी के टीना एवं हवन सामग्री की बोरिया से अजीर्ण हो रहा था। कायकलात्रा माधुओ पडिना एर पुजागिया आदि के लिए हर रोज सामूहिक तथा परिवर्तित मिष्ठान (महाभाज) बनन का यही पर आदश इ तजाम था। मैंने बीमार होते हुए भी इस सत्यायोजन की बार बार मंडप निकट जाकर देखा था।

रात के 12 बजे तक सर्दी बेहद कान ही नहीं—हृदय और फेफड़े तप ठंडे हो गये। नान बोल गये और परो न ध्यता चारण कर नी। लकिन इस भयंकर जाड़े में भी हजारों लोग परवर की भूतिवत बड़े गमलीला देखते रहते थे। भगवान की झाँकी दिखान के समय रुपये की चौछार बरस जानी और पडितजी से रात्रायण का प्रवचन सुनकर भी जनता मुग्ध हो जाया करती थी। पगला बाव तो यहाँ की जनता के लिए जादू बनकर आया था। हर समय हजारों नर नारियों की अटूट एवं अगाध निष्ठा के साथ भीड़ लगी रहती थी। नोटों की षड़ी लगाने वाले दूसरे गाँव के लोग भी माताजी के मंदिर में बाबा से बार बार मिलते थे। यहाँ के कई लोग बाबा के हाजरिये और कई पैसे सभालन वाले दिन रात भक्त बन रहते। ये लोग कैरिया माफा झुकाये पैडे पतासे तथा मुषितया माल खा खाकर मस्त मुसटड़े बन गये। कई लोग बाबा आये तब से ही मनवाछित फल पा लेने के लिए चिपके रहे। गाँव का राजनतिक नेता तो अपने हृदय में शासन विधायक का उच्चासन पा लेने की उम्मीद बसाये हुए था। बाबा के दशनो से सब खुश क्योंकि यहाँ का कायकलात्रा की काफी माल एवं मान मिलता और अंग लोको को उनकी आकांक्षाएँ फलीभूत होने का आशीर्वाद मिलता। माताजी के मंदिर का मैदान, बिजली की ट्यूब लाइटों से जगमगाता रहता और मंदिर की बिछूती सजा-वट ग्रामीण यात्रियों का मन मोहे प्रकाशित होती थी। वहल पहल भरा रात का दृश्य तो बेहद अकल्पनीय बन जाता। तत्समय लोग अनेक स्थाना पर ठहरे हुए अंग सत्ता के भी दशन करते थे। मुख्य स्थाना में सत्ता के शिविर पचायत भवन के अंदर और इद-गिद थे। मगर शिवालय, जगेरी और रामदेवरा में भी सत्ता के घूणे लगे थे। खेजड़े के बड़े लकड़ जलते और भजन वाणी तथा शब्द विचार के माध्यम से चारों ओर सत्संगतें चलती रहती थी। होटला वाला के मजदूर छोरर बरबरात हुए फिरत और एक दो बजे तक खडखडाते हुए लोग अपने अपने घर डेरो पर आकर सोते थे।

रासलीला होने का समय दिन में 12 से 5 बजे तक और रात्रि का 9 बजे से आरम्भ होती थी। इसके दशक जन की मंडप का दृश्य बड़ा सुहावना एवं विचित्र लगता था। प्रेम टेंट हाऊस वीकानेर के पर्दे और नीचे बड़ी दरिया बिछी थी। सामने ऊँचा मंच और उसकी चमकीली झलरिया तथा विंगें बची हुई थी। श्री कृष्ण और राधा का

पाट करन वाले पार्था का जनता साक्षात् भगवान समझती। उनकी जरी की पोशाक पर बिजली के बड़े पावर वाले बल्ब गजब ढा रहे थे। बीच-बीच में बिजली अपने नये आगमन का अनुभव कराने के लिए आँतें भी बीच-बीच (बंद कर) लेती थी। तब पट्रोमक्स एव चौथी तरफ के खुले मदान में खड़े ट्रकों की बलियो से प्रकाश को कायम रखा जाता था। कुछ लोग वहाँ के शिविर में बड़े ही रासलौला देख लिया करते। नई ग्रामीण अपने ऊँट वाले बड़े गाँडा के नीचे निवास स्थान बनाये 'गुदह-गुदकान' के साथ लीलानंद ले लेते थे। महिलाएँ बाता में बाबा की बड़ाई करती और राटियाँ पकाता हुई भी भजन-कीर्तन कर लेती थी। सध्या बदन भी वही हाता। पंडितजी का प्रवचन भी समय परिवर्तन से सीला मच पर ही होता था और इस पचायत भवन के मदान में ठहर हुए लोग को अपने स्थान से दखन का दुहरा लाभ मिल जाया करता था।

बाबा के आगमन से यहाँ सत्र तरह से लगभग चार लाख रुपये की यज्ञाय आमद हुई तथा प्रत्येक दिन तीस तीस, पत्तीस पत्तीस हजार रुपये आये। तभी तो बार-बार बाबा की हजारों कठा से एक साथ मगनभेदी जय जयकार हुई।

बसे तो जलाशय पास ही है मगर ऊँटों की कोठिया द्वारा पाईप के पानी से ड्रम भरवाये जाते थे। डाक्टर अस्पताल बिल्कुल नजदीक एव पुलिस चौकी भी लगी हुई एकदम निकट तथा डाक तार विभाग की पूर्ण सवाएँ तत्समय उपलब्ध रही। परंतु प्राकृतिक प्रकाश का पूर्ण भय बना रहा कि आकाश में बादल मड़राते थे और यात्रियों से खुला मैदान ठसाठस भरा हुआ था। श्री कोलायनजी तथा रामदेवजी के ऐसे क्षेत्रीय भेलों के ढग पर कालू में यह यज्ञीय तथा पगला बाबा के दशनो हित भेला लगा था।

असत्य तथ्य एव अफवाह—पगला बाबा के चमत्कारी विषय में अनको असत्य बातें एव अफवाह दूर-दूर तक फलती चला गई। उसके प्रभाव से ही गाँवों के लोग जाड़े की इस ठिठुरती श्रुति में बाबा के दशनाथ आ जा रहे थे। एक गप्प यह भी उठाई गई कि बाबा जब श्री डूंगरगढ़ में कालू के लिए एक जीप माटर में बैठकर चले ता घोड़ी दूर का रास्ता तय करने पर जाप वाले टाईवर ने देखा कि बाबा की सीट खाली पड़ी है। वह घबराकर जीप रोकने लगा। तब साथ बैठे किसी सज्जन ने बताया कि—'डरो मत। यह बाब का चमत्कार है।' ठीक वसा ही हुआ। जीप ने कालू गांव में प्रवेश किया, उससे पाँच मिनट पूर्व ही पीछे की सीट पर बाबा बठा दिखाई दिया।

दूसरी बाबा जाये उस दिन श्री डूंगरगढ़ कालू कूट की मोटर गाड़ी अपनी सड़क से भीड़ भरी जा रही थी। उसके डाईवर आदि को बाबा के यहाँ आने का मालूम ही नहीं था। क्योंकि बस, बाबा के गांव में आने के बाद अभी अभी लूनकरनसर से आई थी। दोनों के अलग अलग रास्ते, परंतु गाताजी के मंदिर में बैठे ही बाबा ने देखा कि मोटर गाड़ी गाँव से निकल गई है। तब उन्होंने हाथ का इशारा किया और बोले 'वापिस जाओ।' बस तुरंत मुटकर मंदिर के आगे आकर खड़ी हो गई। बस स्टाफ वाले बाबा ने परी में गिर पड़े। ऐसी ऐसी अनेक अबौतिक बातें जन समूह में चल गई।

यंग मदान के चारा ओर चार सुंदर दरवाजे तथा आने-जान के रास्ता पर फरिया टगी हुई थी। दोनों किनारों पर दुकानें, ताल के बीच की पाल पर यात्रियों के अनेक गाँडे, ट्रक एव जीपें खड़ी रहती। जगह-जगह गाँव गांव के डेरा में आग जल रही

थी। वरुँ तो लकड़िया भी लादकर साथ लाये थे। मौमम खगब हुआ कि तु वर्पा का किसी को भय नहीं लगा। बीच मदान विशाल यन्त्रशाला जिसके ऊपर बड़ी बड़ी मरफिया से बना टीनो की गोतामनुमा देखन योग्य छपर था। छपरे के ऊपर मड़ी माने की तरह छोटा सा छप्पर मचान। गगनस्पर्शी यनीय बड़े इस मचान पर लगे हुए धार्मिक कीर्ति कौमुदी को लहरा रहे थे। दूर-दूर तक ताड़ की बन्निया बाघ बाघक-बड़ उपपड़ बनाये गये जोर मुरय खर्चों पर ट्यूब लाइट का प्रकाश तथा कुछ पर लगे नाऊडम्पीकर हर समय गगन गुजाते रहते। पीछे के दोनो नोहरों में बनते हुए भारी मिठान की महक तो परिश्रमा करने वाले बके मादे यात्रिया का मन चुरा लेती थी। पविता सतो बायकताजो तथा बाबा के हजूरिया का विविध भाति मनो, मिठान गोजाना यही बनता। किसी का क्या लगता? उचा खुचा शेष मान इन सेवकों के महयोगी सेवकों का भी भरपेट प्रसाद प्राप्ति हेतु खिला दिया जाता करना था।

देवी मंदिर के आगे एक तरफ बाबा का पूजा लगा रहता। बड़ी भारी भीड़, मंदिर रोशनी से जगमगाता रहता व छोटे बत्ता के जाल से तान दिये गये थे। इधर इधर पर लोटिय और हरिण-खरगोश की शक्त्तें विद्युत प्रकाश में चौकड़ी भर रहे थे। उधर रामलीला चलती। एक रात तबला की तान के साथ आकाश में बादला न गड़गड़ाहट और बिजली ने अपना नृत्यारंभ कर दिया। इस मंदिर की बिजली की बकाची में आकाशीय बिजली भी आल मिचीनी का खेल खेलन लगी। जनवरी 79 के मिनिक 28 का समय समाप्त हुआ और दिनांक 29 की 1 बजे रात्रि का समय आ गया। बपा गुह हो गई। विद्यालय सफाखाने जसे अनव सस्था भवनो को यात्रियों के लिए खोल दिये गये। आधी रात्रि के वन भाग दौडकर हजारा अजनबी आदमी गांव के घरा तक में जाकर वर्पा के पानी से बचे। एक यात्री परिवार ने मेरे घर आकर शरण ली। मैं उनमे दस वर्पा मे यन के आयोजन की व्यवस्था बिखर जान सम्बन्धी बातचीत की ता उस परिवार के मुखिया ने इस गीतवालीन असमय की वर्पा के बाबत मुझे सुनाया—

खड खूटा माणस भूवा, बाला गया विदेस।

मोसर बूको मेण्डा, बरसर काह करेस॥

कालू में सत्ताईस कुण्डिया विष्णु महायन्त्र हुआ, उसमे नीचे लिखी जातिया के व्यक्ति यजमान बन थे तथा महायन्त्र के पूण होन में अपनी श्रद्धा एवं सामर्थ्यानुसार सहयोग दिया—

ब्राह्मण—हजारीराम सारस्वत, जगदीश ठिवाड़ी, चूनाराम पारीक, गोरधन राम खडेलवाल श्रीराम खडेलवाल सुगनाराम खडेलवाल हरिकिशन खडेलवाल, रूपाराम गौड पोकरराम। (9)

जाट—आमूराम नण हीराराम डागवाल कुम्भाराम लेधा परमाराम सऊ नारायण शोरड, विस्तूराम मामराज। (7)

सुनार—जवरीसाल मोहनलाल। (2)

माहेश्वरी—रामचंद्र राठी जेठमल गठी, गणालचंद डूडानी भीताराम शवर। (4)

श्रोतवाल—पूनमचंद नाहटा। (1)

बरागी—जीवनदास, नानूदास। (2)

सेवक—सोहनलाल, गोपालराम। (2)

कालू गांव में सम्पन्न हुए इस सत्ताईस कुण्डीय विष्णु महायन में 110 पंडित उपस्थित थे। जिनका पारिवर्त्मिक स्वरूप प्रत्येक को 171 रु० न्यिये गये थे। विष्णु महायन में उपस्थित 17 साधु थे, प्रत्येक को दक्षिणा रूप में 51 रु० प्रदान किये गये थे। जब कि कालू के चोतरफा निकटीय क्षेत्र में सम्पन्न हुए विष्णु महायनों में साधुओं को दक्षिणा स्वरूप इससे कम राशि दी गई थी। नोखा के इक्कीस कुण्डीय महायन में साधुओं को 11 रुपये तथा एक चादर दी गई थी। श्री झूमरगढ में सम्पन्न इक्कीस कुण्डीय महायन में भी 21 रुपये तथा एक चादर दी गई थी। बीकानेर में हुए सत्रह कुण्डीय महायन में भी साधुओं को 35 रुपये तथा एक चादर प्रदान की गई थी। नापा सर के महायन में साधुओं को 11 रु० की दक्षिणा दी गई। इससे पता चलता है कि सत्ताईस कुण्डीय महायन में उपस्थित हुए साधुओं का दक्षिणा स्वरूप समान सर्वाधिक विभा गया।

- उपलब्धियाँ उपसहार—ग्राम के हर नागरिक का यह कर्तव्य होता है कि क्लीष्ट के सन्देश में जनमानस का पर्यवेक्षण करें और जहाँ उसे बाँझिन निगा में महत्वपूर्ण अवस्था उपयोगी परिवर्तन दिखाई दे तो उन्हें अपनी उपलब्धि मानें। इस दृष्टिकोण से यदि हम कि स 2035 के मय को कस्बा कालू के लिए एक बरदायक, प्रभावशाली वस्तु एवं युग निगायक बत्तर कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

अगला वष कि स 2036—कि स 1956 के भयंकर अकाल में स 1996 वाला चालीस वष का समय लेकर वसा ही तृणाशय पड़ा था और उसी चालीस साल की अवधि में कि स 2036 में दुमिल की दगा घूम आई। बड़े झूला से सुना था कि पूर्व में स 1916 का दुकाल था। कि स 1915 55 95 और 2035 के सम्बन्ध अकाल थे।

इस वष गांव कालू में श्रावण कृष्ण एकादशी को एक बषा हुई थी जिससे सारे तालाब भर गये और पशुओं के लिये हरा चारा उग आया। तुरंत घूसे प्यासे निश्चिन्त श्री झूमरगढ तहसील के गांव गुसाईसर और स्तोहोरी का बहुत सा पशुधन लेकर वहाँ के लोग कालू के जलानियों पर आ गये। फिर वहाँ के डेलवाँ, घोळिया, ममदसर, माणकरासर, लिजमीदेसर, आहसर, मोमासर, तोलियासर, ठुकरियासर, जेतासर, साछडसर, मुरजनसर, रिडी बिग्गा हेमासर, जेसलसर, धीरदेसर, धीरमसर, जाळबसर, लाधडियो, उदरासर और श्री झूमरगढ आदि के बहुत से घर वहाँ आ बसे। चारे पानी की सुविधा के कारण सरदारगढ़ तहसील के गांव पातलीसर, भादासर, बनडाऊ, सोमासर, पनपालियो सोनपाससर, गोमटियो, रगाईसर, कबलासर, अमीसर, घडसी मर बगरह अनेक गाँवों के सम्बन्धी लोग तथा अ य निरोह लोग पशु लेकर कालू आ गये। गाँव कालू के लोगों ने अपना सत्य धर्म बनाए रखा। आने वाला का खूब स्वागत सहयोग किया। जब तक वन पड़ा कालू का जन उनकी सेवा में खड़ा रहा। महीन भर इतने परिवार पशु धन लेकर आये कि गाँव में समाने दुश्वार हो गये। गाँव, ज्वाड, घर नोहरे खेत बजड और पारो-डरी में सब जगह उनके पशु फल गये। जगह जगह डेरे डाल दिये, पर रखने तक की जगह नहीं रही। वहाँ तम्बू झोंपडिया और कहीं गाड़ी की ओट में घर बर लिए गोली लाय आ बडे। गाँव में आदमियों की टोलियाँ रोही में सब जगह झिलमिल प्रकाश, रास्तों गलियों में गाय भनों का बाग (समूह) हर समय चलते

गहल । भेड़ बकरियाँ के खवट एव ऊँटों के टालों ने कालू ग्राम सीमा की सारी जमीन को घुरी तरह से रौंद कर रख दिया । गाँव कालू का जन एव पशुधन पानी में पतासों की तरह मिल गया । फसल का नाश, वन बजड़ बिनाश, रात दिन जबरदस्ता से कालू को उजाड़ डाला । क्योंकि गाँव के पशुओं से अधिक पशु, बाहर के आकर कालू की रोही पर छा गया । गारबदेशर, छटासर, कागामर व करनीसर के कुछ लोग कालू के खेतों से रातों रात सुबह शाम घास काटकर गाँवों भर भर से गये । गाँव कालू के कुओं में ही सदा से पर्याप्त पानी रहता है । गर्मी के दिनों में गाँव गारबदेशर और आडसर के हजारों पशुधन और मनुष्य यहाँ से पानी प्राप्त करते रहे हैं । मगर उक्त समय तो गाँव कालू के निवासी बड़ी दुविधा में पड़ गये थे । वर्षा होने से प्रसन्नतापूर्वक फसल बीज दी थी । उसे आये पशुओं द्वारा खा डाली गई । अवशेष रही खेती पानी के बिना शुष्क होकर मुरझा गयी । बजड़ के घास एव तालाबों का पानी भी खुरकत हो गया । आये हुए लोगों और अकाल दोनो के प्रकोप से उस वर्ष (स 2036) सबाही हो गई । फिर तो दो हजार पसीस में पगलाबाबा के बताये मुकालिफ परचे का भी लोग प्रत्यक्ष ठगी-पावड' कहने लगे थे ।



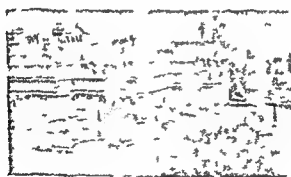
लिपट पवित्र व जल से क्षेत्र में खजूर

दशम प्रकरण

कालू का जिला एव तहसील

जिला—हिबीजन का मुख्य, बेजोड, भय एव विशाल नगर नगीना बीकानेर हमारा सदीना जिला है। यह नगर बहुत सुंदर है और इसके घेरे में सात किलोमीटर करीब पत्थर की बनी पच्चीस-तीस फुट तक ऊँची और छ फुट चौड़ी चारों ओर बाहरदीवारी है। इसमें बाटगेट सहित पांच दरवाजे और आठ बारिया हैं।¹ शहर में लाल पत्थर की असरय बारणीदार पुरानी हवेलिया हैं जो दशक का मन कुभाती रहती हैं। यहाँ का असल सागर तथा चौतीना बूझा का जल, जन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद माना जाता है। अब यहाँ नहर का पानी भी पहुँच गया है।

बीकानेर में अनेक जन मंदिर हैं। राजा प्रजा की श्रद्धा के स्थान अ प धार्मिक मंदिरों में लक्ष्मीनाथ जी रतनबिहारी जी सरस्वती मंदिर (नागरी भटार), नागनेची जी तथा रसिकशिरोमणि जी आदि के मंदिर देखने योग्य हैं। यहाँ का जूनागढ़ अत्यंत आकर्षक तथा नयाभि राम है। महला में काच की पच्चीकारी व स्वर्ण पल्लम का काम बड़ा उम्दा तरीके से किया हुआ है। गंगासिंह जी ने इसमें गंगा निवास जैसे भव्य भवन बनाकर गढ़ की अधिक सोमा बढ़ाई है। इसका करणी म्युजियम देखन योग्य है। इसमें अंदर दो बगीचे, एक घटाघर और चार कुए हैं। सामने के पब्लिक पार्क में श्री ब्रूगरसिंह जी की सगमरमर मूर्ति है और बोड़ी आगे अश्वाश्वट श्री गंगासिंह जी की बाने की बनी मूर्ति (Bronze Statue) है।



लालगढ़ महल

छत्रगंगापीठ महागजा लालसिंह जी की स्मृति में बनाया हुआ महल लालगढ़, लाल पत्थर पर खुदाई का उत्कृष्ट नमूना है। इसमें अंदर सगमरमर के सुंदर फश बने हुए हैं। यह भय दुग बड़ा विशाल, सुंदर बगीचा, सघन वृक्षा, लता कुर्जों रंग रंगीले पुष्पा और हरियाली से समयासमय क्षमायमान बना रहता है। इसमें तैरने का स्थान

1. अब लोगो ने अपनी सुविधा के लिए शहरपनाह (दीवार) में अनेक बारियाँ निकाल ली हैं। 2. लालगढ़ के महल का नक्का सर स्विटन जेम्स ने बनाया था।

साल मिट्टी एवं कंकड़ की बहुतायत है, जो सारे देश में भेजे जाते हैं। बीकानेर के नागरिकों में बहुत से ब्राह्मण बहुश्रुत एवं आदश आदमी तथा ढागा, दम्माणी, मूषडा, रामपुरिया और मोहता आदि महाजन भी देश प्रसिद्ध रहें हैं। सेठ खुशालचंद ढागा ई० सन् 1947 में बीकानेर चेम्बर के प्रेसीडेन्ट रहे थे।

बीकानेर मण्डल (जिले) में पौन सात सौ गांव हैं। सांख्यिकी 1975 में ई० सन् 1971 की गणनानुसार औरत 2 लाख, 71 हजार, 710 और आदमी 3 लाख 1 हजार 439, कुल आबादी 5 लाख 73 हजार 149 हैं। यह आबादी बीकानेर जिले की सन् 1961 की जनगणना के मुताबिक 444 515 थी।¹ इस मंडल में 1 लाखसभा क्षेत्र 4 विधानसभा क्षेत्र और चार पंचायत समितियाँ हैं। समितियों के अधीनस्थ 133 ग्राम पंचायतें हैं। पंचायत समिति कोलायत में 23, नोखा में 51, बीकानेर में 33 और लूनकरनसर में 26 ग्राम पंचायतें हैं। जिले में लगभग 12 लाख पशुधन हैं।

राजस्व व्यवस्था के दृष्टि से बीकानेर जिले का सुप्रबन्ध तहसीलद्वारा होता है। प्रत्येक तहसील में एक तहसीलदार नामक तहसीलदार कानूनगो, पेशकार गिरदावर आदि कायकारी रहते हैं। ये जमीन, लगान—व्यापार, लेन देन, पजीयन चुनाव जन गणना वगैरह राज्य काय संबंधी सब कार्यों की व्यवस्था जिलाधीनशासन पर करत हैं। इस जिले की नीचे लिखी चार तहसीलें हैं—

1 **सदर तहसील**—यह बीकानेर नगर में है। इसके द्वारा अपन अधीनस्थ गावों का राजस्व प्रबन्ध होता है।

2 **श्री कोलायत तहसील**—यह बीकानेर नगर से करीब 50 कि० मी० दक्षिण-पश्चिम में है। यहाँ इसका अपना रेलवे स्टेशन और एक प्रसिद्ध तालाब है। जिले की मगरा नामक भूमि का सारा राजस्व प्रबन्ध कोलायत तहसील के अधीनस्थ है।

3 **नोखा तहसील**—नोखा मड़ी रेलवे स्टेशन बीकानेर से लगभग अस्सी किलोमीटर दक्षिण में है। यह अन आवक मड़ी है। नाखा कस्बा बड़ी उन्नति कर रहा है। राजस्व प्रबन्ध इसकी तहसील द्वारा होता है।

4 **लूनकरनसर तहसील**—प्राचीन समय में यह तहसील एरिया जल आदि के लिए सदैव अभावग्रस्त रहा हुआ है, किंतु अब नहर आ जाने के कारण सब सुख सम्पन्न मंडी मुक्त है। इसकी जनमग्या देखते-देखते दुगुनी हो गयी है। इसका भूमि बंदोबस्त दो तहसीलों द्वारा होता है। लूनकरनसर रेल्व और 'राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम' द्वारा अन्य मगरा एवं गावां से सम्बंधित है। यह कस्बा अपने जिले से लगभग 81 कि मी पून में प्रसा है। इस तहसील में अनेक विभाग एवं संस्थाएँ हैं और 210 गाँव (आबाद गर जाबात एवं नष्ट हुए नाम) हैं। पहले इस गाँव का नाम केवल 'सर' था और इससे पहले एक बास का नाम जोरावरपुरा बतलाया जाता है।

1 तहसील बीकानेर सदर की आबादी सन् 1961 के अनुसार 251 781 रही।

2 ई० सन् 1940 तक यह नोखा, तहसील बनने के सायक आबाद नहीं था। तब तहसील कार्यालय सूरपुरा गाँव में नियुक्त कार्यरत था। उस समय राज्य में सदर (बीकानेर) राजगढ़ मुजानगढ़, सूरतगढ़, गगानगर और रायसिंह नगर जैसे छ जिले अथवा निजामत कार्यालय भी थे।

तहसील भवन

लूनकरनसर



तहसील क्षेत्र का नक्शा

तहसील—कालू का तहसील लूनकरनसर है। इसमें एक राजस्व और एक उपनिवेशन दो पथक पथक कार्यालय हैं। यहाँ पर विकास अधिकारी कार्यालय भी सु-पबन्धित एवं सुशामित है। इसका भवन तहसील कार्यालय के पास ही है। ग्राम पञ्चायत भवन और वज्रग भवन भी इनसे दूर नहीं हैं। राजस्व तहसील कार्यालय के पास विश्राम गृह है। इस क्षेत्र की शिक्षा तथा स्वास्थ्य मन्त्री परमोच्च व्यवस्थाएँ तहसील के प्रमुख गांव कालू से पूर्ण होती हैं।

शिक्षा—कालू में ई० स० 1956 से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय और छात्रावास हैं। यह विद्यालय सन् 1978-79 से माध्यमिक शिक्षा बाड राजस्थान की परीक्षाओं का केन्द्र बन गया है। अतः तहसील क्षेत्रीय गांवों के बालक प्रालिकाएँ इससे दूर माल पूर्ण लाभ उठाते हैं। राजकीय माध्यमिक विद्यालय इस क्षेत्र में चार हैं महानन,

शेल्सर, जीर लूनकरनसर । लूनकरनसर में राजकीय माध्यमिक विद्यालय दो (छात्र विद्यालय स्थापित दि० 24 7 61 और दूसरा राज० नया मा० विद्यालय स्थापित सन् 1966) हैं । राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय—भारवदेशर राजकीय उच्च प्राथमिक (क या) विद्यालय कालू सहजारामर घोररा मोटोलाई, कुभाणा शेरपुरा, जतपुर कपूरीसर बमरपुरा, मोहल्ला कुम्हारान लूनकरनसर, राजासर भाटियान फूलदेशर आदि गावा में हैं । इस तहसील में नटके लड़कियों के एक सौ करीब प्राथमिक विद्यालय भी शिक्षा प्रसार सलग्न हैं ।

लूनकरनसर तहसील के गाव महाजन से करीब 2 कि० मी० पूव ठठ जरण्य मदान स्थित एक 'महिला विद्यापीठ' है जिसका नाम 'कस्तूरबा ग्रामोत्थान महिला विद्यापीठ महाजन है ।'



कस्तूरबा महिला विद्यापीठ महाजन

इस संस्था की स्थापना स्वामी श्री केशवानंदजी एक चौधरी कुम्हाराम जाय के प्रयत्ना से ई० स० 1955 में हुई थी । नारी समाज के आध्यात्मिक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक विकासार्थ स्वामीजी ने इस क्षेत्र में महिला सम्पा स्थापित करने का विचार किया । महिलाओं का शिक्षा के साथ साथ इस संस्था द्वारा गौ नस्ल सुधार दुग्धशाला, भेडपालन, पुस्तकालय औषधालय, कनाई, बुनाई, रंगाई सिलाई कला, कृषिकाय आदि के कार्यक्रम चलाने का निणय लिया गया । इन विषयों में स्वामी केशवानंदजी, श्री० कुम्हाराम आय तथा चन्द्रनाथ यागी ने बलकर विचार विमर्श किया । इस सम्पा की स्थापना एवं सहायता महाजन ठिकाना के भू० पू० राजा रघुवारसिंह से भी सलाह का । तब राजा रघुवारसिंह ने मंत्रप्रथम इस आन्ध्र कार्य के बाबत 501 बीघा भूमि तथा 1001 रुपये नगद प्रदान किये । दिनांक 16 5 55 को संस्था का भवन बनना प्रारम्भ हुआ जो दिनांक 16 8 55 को अस्थाई मकान बनकर तयार हो गया । संस्था का उद्घाटन दिनांक 23 10-55 को महात्मा गांधी की मुख्य शिष्या देहली राज्य विधान सभा की अध्यक्ष तथा अनेक प्रौढा में होने वाले रचनात्मक कार्यों की मर्यादिका सुश्री डॉ० सुनीता नयर द्वारा किया गया । स्वामी केशवानंदजी उद्घाटन समारोह में स्वागत-व्यय से तथा तत्कालीन प्रदेश उपनिष्ठा मंत्री श्रीमती कमला बनीवाल की अध्यक्षता में कस्तूरबा ग्रामोत्थान महिला विद्यापीठ महाजन का सह्य उद्घाटन संपन्न हुआ । समा रोह में श्री० कुम्हाराम आय, मनफूलसिंह भादू श्री० जीवणराम और हमराज आय,

चन्द्रनाथ योगी, रामरतन कोचर तथा क्षेत्र के अनेक गणमाय व्यक्ति उपस्थित थे। समारोह में कृषि विकास की ध्यान में रखते हुए संस्था के अधीनस्थ कृषि फार्म चलाने का निणय लिया गया। कृषि फार्म हेतु राजा रघुवीरसिंह से फिर जमीन मांगी गई। उ होने सदारतापूर्वक माजी साहब मटियाणी जी के नाम की 3000 बीघा भूमि, चक भवरिया रोही में से 1500 बीघा भूमि और संस्था को वंशीस नामा लिख दी, जो वर्तमान समय में भी संस्था के अधिकांश में है। अब उम जमीन पर मिर्चाई के लिए पानी का माघा खुलता है और वह कृषि हेतु अच्छी उत्पादक भूमि क्षेत्र प्रगतिष्ठित बननी जा रही है।

पस्तूरबा ग्रामोत्थान मण्डला विद्यापीठ महाजन की स्थापना दंग के महान शिक्षा शास्त्री मन श्री केदावानंदजी स्वामी के पावन उद्देश्य को लेकर गुड स्वच्छ खान-पान एकांत वातावरण तथा साधारण व्यय बर्तित कर रहने रहने द्वारा आदर्श शिक्षा सुलभ करवाने की योजना-वर्तित से की गई। यह महिलापीठ, वनस्पती विद्यापीठ के अनुकरण पर बनी। मगर ५० हीरालाल शास्त्री की भक्ति मुख्यमंत्री का स्वयं सहयोग न मिलने पर इसके अग्रजों का हिसाब अस्वीकृत हो गया कि प्रयुक्त जन भी इस संस्था को नहीं पहचान सके। मगर यह संस्था अपने स्थापनाकाल से वर्तमान समय तक अनेक क्षेत्रों में अमूल्य कार्य करने में प्रयत्नशील है। यहाँ नारी शिक्षा की सेवा और कृषि कार्य से संबंधित अन्य सकार्य भी स्वीकृत हुए थे। संस्था का मंत्री पद श्री चन्द्रनाथ योगी संभालते हैं।

क्षेत्र का एक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय—यह विद्यालय ई० सं० 1950 में लोअर मिडिल (छठी श्रेणी) बना और सन् 1952 में मिडिल हो गया। तब श्री गिरधारीलाल खर ने इस क्षेत्र में विज्ञप्ति प्रसारित करवा दी थी कि किसी भी गांव से आकर कोई भी वही का बालक गांव कालू की मिडिल कक्षाओं में पढ़ेगा तो उसे छात्रवर्ति दी जायेगी तथा परीक्षा पास कर लेने के पश्चात् पुरस्कार भी दिया जायेगा। तब बाहर के पर्याप्त बालक विद्यार्थी, छठी से आठवी तक कालू पढ़ने आए। श्री खर ने चार वर्ष (सन् 1952 से 1955) तक यथोचित छात्रवर्ति तथा पुरस्कारों का सुप्रबंध बनाये रखा। अतः छात्र वर्द्धि के कारण ई० सं० 1956 के जुलाई मास में कालू का राजकीय मिडिल स्कूल उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में परिवर्तित हो गया। ई० सं० 1954-55 के मध्य सीमा मधि के समय मिडिल स्कूल कालू में तहसील टूनमेंट भी बनवाय गया थे। उसकी सफलता के उपलक्ष्य में लिनाडी छात्रों तथा उनकी शालाओं से साथ आये शिक्षकों एवं मित्रजनों को गांव कालू के शाला भवन (घमगाला) में बड़ा मुद्र एव सुस्वादु सहभोज दिया गया और प्रत्येक विजयी टीम को पुरस्कार। कालू में उसी परम्परा में हर वर्ष अनेक भक्ति के पुरस्कार दिये जाते हैं। केवल वर्ष 1981 की बोट की परीक्षा प्रतिभा के लिए पचायन पुरस्कार का एक विवरण यहां प्रस्तुत है।

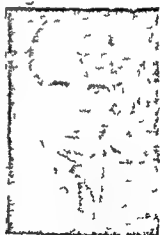
15 अगस्त 1981 के स्वतंत्रता दिवस समारोह पर रा० उ० मा० विद्यालय के निम्नांकित छात्र एवं छात्राओं को प्रतिभा पारितोषिक वितरण किया गया। यह ईनाम पचायत बैठक सं० 33 प्रस्ताव संस्था 3, दिनांक 7 8 81 के अनुमरण में किया गया, जो समुचित राशि 1212 रुपये अपने एक हजार दो सौ चारह दिये गए—

क्रमन०	नाम	कक्षा	पूर्णांक	प्राप्तांक	चैक न०	पारितोषिक राशि
1	श्री भवरलाल खीचड	11	400	316	909001	₹० 151)
2	, दीनदयाल माहेश्वरी			294	909002	₹० 101)
3	, भवरलाल जाणी			264	909003	₹० 51)
4	, किशनलाल बोयगा			262	नगदी रुपये	₹० 51)
5	, शिवनारायण सेवण			255	909004	₹० 151)
6	, निवदत्त मिश्रा	10		—	909095	₹० 151)
7	मालचंद नीलगा		—	—	909006	₹० 151)
8	महेशकुमार बिहानी		—	—	909007	₹० 151)
9	„ कु० प्रेम नाहुटा		—	—	909008	₹० 101)
10	प्रकाशवीर नाहुटा		—	—	909090	₹० 101)
11	, नंदराम भादू		—	—	909010	₹० 101)
12	„ राजेन्द्रप्रसाद सेठिया		—	—	नगदी रुपये	₹० 51)

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा—नहमीन स्वास्थ्य तथा चिकित्सा के लिए सुप्रसार राजकीय दूडानी चिकित्सालय एवं स्वास्थ्य केंद्र कालू से होता है। इस संस्थान के साथ ग्रामीण परिवार कल्याण केंद्र कालू और ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केंद्र कालू भी सम्मिलित हैं। वैसे तो चिकित्सा एवं स्वास्थ्य केंद्र कालू के अधीनस्थ तहसील का सारा क्षेत्र है, किंतु घीरेरा, कुभाणा और कानोलाई आदि कई गाँवों में विशेष 'राजकीय उप-स्वास्थ्य केंद्र' भी चलते हैं। कानोलाई केंद्र का अभी अपना राजकीय भवन नहीं बना है। ग्रामीण परिवार कल्याण केंद्र कालू के नीचे जतपुर मोटोलाई, कैला और शेखसर परिवार कल्याण उपकेंद्र हैं। शेखसर में अभी उसका भवन अनिर्मित है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य केंद्र कालू के अधीनस्थ कुछ टीकावार केंद्र भी सम्मिलित हैं। इनमें कालू, लूनकरनसर, महाजन तथा मोटोलाई मुख्य हैं। मलेरिया सर्वेक्षण निरीक्षक केंद्र कालू महाजन लूनकरनसर तथा कुम्भाणा है। कालू का मलेरिया सर्वेक्षण कार्यकर्ता गारबदेशर और घीरेरा, लूनकरनसर का खियेरा, मोटोलाई महाजन का शेखसर, खानीसर रामबाग और महादेववाली का कानोलाई राजासर से कार्यशील है।

राजकीय चिकित्सालय—लूनकरनसर में एक एकसरे प्लाट राजकीय चिकित्सालय है। महाजन में भी राजकीय चिकित्सालय है, भगर वहाँ उसका अपना भवन नहीं है। लूनकरनसर में राजकीय नहर परियोजना चल (भ्रमणशील) चिकित्सालय भवन एवं निवासगृह सहित है। एडमोन्स (स्वास्थ्य सहायता चौकी) केवल कुभाणा में है किंतु उसका भी अपना भवन नहीं है।



डा० ज० सांथला

1. इसमें डा० जगदीश सायरा (ज म 7 जुलाई 1943) छोट्टे कठवर में कनिष्ठक काल में हृदयस्थ धारण करने वाले विमल व्यक्ति हैं। श्रीजगन्नाथ सायरा नाम लेते हुए मिष्ठ वचन सोलते हुए प्रतिपन्न सामाजिक तथा मे नि स्वाध भावना गहन लूनकरनसर क्षेत्र में लोक विमान चिकित्सक हैं। बोधानर मंडिकल कॉलेज में एम बी बी एस

राज० आयुर्वेदिक औषधालय—लूनकरनसर तहसील में आयुर्वेदिक औषधालय काफी हैं। इनमें से जतपुर, महाजन और शेखसर के औषधालय बहुत पहले से ही जन स्वास्थ्य सेवा सलमन तथा क्रियाशील हैं। अब नूतन—मलकीसर, करणीसर, महादेववाली और सहजरासर आदि स्थानों में स्थापित होकर चिकित्सा काम से सुप्रसिद्ध हैं। ये प्रायः न० सी० हैं।

पशु चिकित्सा प्रसार केन्द्र—पशु चिकित्सालय का मुख्य केंद्र लूनकरनसर है, जिसका अधीनस्थ कई उपकेन्द्र भी चलते हैं। कृत्रिम गर्भाधान प्रसार अधिकारी महाजन का अधीनस्थ भी पांच उपकेन्द्र हैं। पशुवैद्यक भेड व ऊन प्रसार केन्द्र लूनकरनसर और इसके नीचे कालू गारबदेशर सुरनाणा धीरेरा और खोखराना आदि गांवों में पांच उपकेन्द्र भी चलते हैं। इनके अलावा स्वास्थ्य चिकित्सा हेतु महाजन, लूनकरनसर और जतपुर कालू में अनेक वध गव डक्टर अपन निज्जु आरोग्य प्रदाय काम करते हैं।

बक बग तहसील लूनकरनसर—(अ) स्टेट बक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर (दि० 16-2-62) की शाखा लूनकरनसर में है। इसमें अच्छा लेन-देन होता है। ऐसी शाखाएँ कालू, महाजन और शेखसर में भी हैं। स्टेट बक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर शाखा का संबंध ता भारत ही नहीं सम्पूर्ण संसार तक का है। इसलिए यहाँ तहसील भर का भरपूर लेन देन होता है। आपसी सलम है पूरा विश्वास है। इसकी कालू शाखा का प्रतियोगिता (1979) में राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिकता मिली है।

(ब) स्टेट बक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर कृषि विकास शाखा (ए डी बी) लूनकरनसर दिसम्बर 1976 से है जो किसानों को खेती एवं पशुओं के लिए ऋण देता है। इससे तहसील के सारे किसान प्रफुल्लित मन से लेन देन करते हैं। सन 1981 से कृषि विकास शाखा कालू में भी स्थापित हो चुकी है।

(स) केंद्रीय सहकारी बक शाखा लूनकरनसर द्वारा भी तहसील के गांवों में काफी सहायता स्वरूप रुपय दिये जाते हैं।

लूनकरनसर राजस्व तहसील में उप कोषागार भी सहायता, स्वीकृति पेंशन आदि के लेन देन का अच्छा कार्य करता है।

जल प्रदाय विभाग—कार्यालय जन स्वास्थ्य अभियानिक विभाग (सहायक अभियता सेक्टर (डी पी ए पी) का तहसील मुख्यालय लूनकरनसर में है। पहले इसका मुख्य कार्यालय कालू में था। लेकिन बाद में अब गांवों के जल प्रदाय संबंधी प्रबंध की सुविधापूर्ण कार्यवाही के लिए इसका मुख्यालय लूनकरनसर स्थानांतरित कर दिया गया। अब वर्तमान में तहसील के गांवों का जल प्रदाय प्रबंध यहीं से होता है।

बिजली विभाग—कार्यालय सहायक अभियता बिजली विभाग बोंड भी लूनकरनसर में विद्यमान है। बोंड तहसील के अनेक गांवों में विद्युतीकरण एवं प्रसारण की व्यवस्था करता है। इसकी छोटी कार्यवाही तथा उचित देख रेख से विद्युत प्रसारण सुव्यवस्थित ढंग से होता है।

(1968) और डी आ एम एस (1975) में का। गांवों के इलाज का आत्मिक इच्छा से प्रशिक्षण लिया और डा० सूरवीर सिंह आपरेसन एंडाई (1976 में) प्राप्त किया। ये नव्य सर्जरी में श्रेष्ठ मानव का दीदार लिए हुए साधारण-जन से उत्तम व्यवहार करते हैं एवं मानव मात्र के साथ अत्यंत सरलता विनम्रता सहित मतलब सेवक रूप ज्योति रक्षा गांवों में सिविल लगाते रहते हैं।

विश्रामगृह लूनकरनसर—पी० डब्ल्यू० डी० (P W D) रेस्ट हाऊस लूनकरनसर में राज्य के सार आन बाने बडे आफिसर मेहमान स्वरूप यही ठहरते हैं ।

ग्रार० सी० पी० रेस्ट हाऊस लूनकरनसर—ग्रार० भी० पी० के विभागीय रेस्ट हाऊस प्रथम श्रेणी एव द्वितीय श्रेणी लूनकरनसर म स्थित हैं । ये दाना पास ही व्यवस्थित हैं ।

लिफ्ट केनाल लूनकरनसर—यह सब सान इतिवारी एव सर्वोपरि सिचाई के उत्तम साधन युक्त है ।

लिफ्ट पंपिंग स्टेशन मलकीसर—यह भव्य एव जल प्रसारण की उत्तम व्यवस्था है । राजस्थान नहर परियोजना की पंपिंग स्टेशन योजना म मलकीसर का लिफ्ट पंपिंग स्टेशन भी (नून० में) सुचारु रूप से कार्यशील है ।

तहसील के सिंचित गाव—लूनकरनसर सुरनाणा, दुसमेरा, हंमेरा रोवा, फूलदेशर सिणियाला उप्पणा काकडवाला, लिछमोनारायणसर, हरियामर, मलकीसर, छाना बडा पीपरा, कपू गीम गापलान, नाथवाणा, अरजुनसर फूलजी आदि 27 ग्राम हैं । विद्यमान में सब सुत्तान काय संचालित हैं ।

मैन केनाल (फलाएरिया) के गाव—खारवारा दवासर राणेर गेघडा, समारदेगर लालनसर तलतपुरा आदि अनेक गाव हैं ।

लूनकरनसर लिफ्ट केनाल कालोनो के गाव—लूनकरनसर, महाजन, मलकीसर और अरजुनसर लिफ्ट केनाल बालानी के गाव हैं ।

राज्य कृषि अनुसंधान फार्म—लूनकरनसर कृषि फार्म, भडाण भूमि का मानो एव लहलहाता नवयुगीय नदन कानन घरदान है । जहा सम्बी मोटी पाडियाँ, बुई, सीणिये और बावलिये के पेज तथा टीबा बाने जलविहीन इस क्षेत्र म बम्बी प्याम के कारण रास्त चलते यात्री मर जाया करते थे । आज उसी कठोर रेगिस्तान का यह भू-भाग केवल गेहूँ ही नहीं, म न तब की उपज घरा में बदल गया है और भूगर्भी उत्पादन का नेट्र बहलाने लगा है । यह कृषि फार्म लूनकरनसर बस्वे से उत्तर पूव मलकीसर की तरफ है । यह काफी राज्य कमचारियों की कार्यशीलता सहित क्षेत्रीय आन उत्पादन की वृद्धि कर रहा है ।

पचायत क्षेत्र—लूनकरनसर तहसील में 26 पचायतें हैं । जिनके नाम निम्न-लिखित हैं—1 लूनकरनसर, 2 कालू, 3 कुजटी 4 घीरेरा, 5 हंसेरा, 6 खोखराणा 7 सोडवाली, 8 केला, 9 मोटासर, 10 महादेववाली, 11 कानोलाई, 12 कुभाणा, 13 रोसा, 14 काकडवाला, 15 जागीर, 16 खारवारा, 17 महाजन 18 रामबाग 19 खानीसर, 20 जेतपुर 21 सूई, 22 शेखसर 23 करणीसर 24 कपुरीसर 25 गारवदेशर, और 26 रावईसर । इनमें से कालू को छोडकर शेष समस्त पचायतो के साथ अन्य गाव भी जुडे हुए हैं ।

ग्राम सेवक सेटर—इस तहसील में ग्राम सेवक सेटर 8 हैं । अब ये ग्राम पचायतो के नीचे माने जायेंगे ।

उपनिवेशन तहसील लूनकरनसर में गिरदावर सफिल—गिरदावर सफिल चार हैं और बीस पटवारी हलके हैं । राजस्व तहसील में गिरदावर सफिल चार और पटवार मडल 33 स्थायी एव 13 अतिरिक्त, कुल 46 हैं ।

मुंसिफ कोर्ट लूनकरनसर—यह मायालय वि० स० 1936 (ई० सन् 1980) के आरम्भ से ही स्थापित हुआ है। इसका कार्यालय पहले लूनकरनसर सरदारशहर रोड पर स्थित श्री डूढानी परिवार कालू के मकान में स्थित था। फिर आर० सी० पी० के मकान में चला गया। तहसील के कतिपय विधि स्नातकों को प्रेक्टिस करने का अवसर मिला तथा इस कोर्ट से तहसील की जनता को गीघ माय मिलना सुलभ हुआ है। अब इसका अपना भवन भी बन गया है।

बॉर रूम (Bar Room)—लूनकरनसर में मुंसिफ कोर्ट स्थापित हो जाने के बाद वकीलों के बैठने के स्थान की आवश्यकता महसूस हुई। तब वकीलों ने इसके लिए द्रव्य संग्रह करना चाहा। क्षेत्र के बड़े ग्राम कालू से करीब सात हजार की सुरुआत मई 1983 में हुई। मू० पू० सम्पन्न श्री डूढानी के परिवार ने अच्छी कलम चलाई।

तहसील लूनकरनसर क्षेत्र में पक्की सड़कें—पहली बाकानेर से श्री गगानगर बाया लूनकरनसर, जो जोधपुर मारवाड संबंधित है। दूसरी लूनकरनसर से सरदारशहर राह बाया कालू (राजमाग सबंध दिल्ली) है। तृतीय लूनकरनसर से शेलसर होती हुई पल्लू सड़क में मिल जाती है। चतुर्थ घीरेरा से सियरा, माटोबाई होती हुई श्री विजय-नगर जाती है। अब काळबास बिशनासर और गजपुरिया की ओर भी सड़कें बन गई हैं।

महावीर आँटो ऑयल (पेट्रोल पम्प) लूनकरनसर—यहाँ से चारों ओर बसें, ट्रक, ट्रैक्टर तथा जोंगा, जीप, कार आती जाती हैं। यह तेल प्रदायक स्थान अच्छे मीके पर अवस्थित है। अतः महावीर आँटो ऑयल द्वारा खूब डीजल, पेट्रोल, मोबाइल आदि बेचा जाता है।

लूनकरनसर में दो छात्रावास भवन—प्रथम, समाज कल्याण छात्रावास है। यह अपने नाम से ही नाम होता है, समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित है। इसमें करीबन तीस-चालीस छात्र रहते हैं। द्वितीय साक कल्याण, छात्रावास है। इसमें बाह्य के पच्चीस तीस छात्र रहकर कस्बे के विद्यार्थियों में अध्ययन करते हैं।¹

सब-पोस्ट आफिस लूनकरनसर—इसके अधीनस्थ गावों के अनेक ग्राम पोस्ट-ऑफिस हैं और यहाँ बाबू जमादार, पोस्टमन मेलपिऑन आदि अनेक पद हैं। इसमें टेलीफोन टेलीग्राफ भी आते जाते हैं और सेविंग बैंक के कार्य होते हैं। इस बैंक में रुपये की रक्षाय जिम्मेवारी गवर्नमेंट पर होती है और जमा कराने वाला व्यक्ति जब चाहे अपना रुपया ब्याज सहित वापिस ले सकता है। अतः सब पोस्टऑफिस लूनकरनसर में तहसील के मारे कस्बों के लोग, ग्रामीण लोग और अन्य जन भी सुगमता से अपने रुपये जमा करवा सकते हैं। सब पोस्टऑफिस लूनकरनसर का अपना भवन नहीं है।

टेलीफोन एक्सचेंज लूनकरनसर—इस विभाग में सात-आठ आदमी कार्यकारी हैं जो कि तहसील की जनता की आवश्यक दूरभाष चार्ज सुलभ करवाते हैं।

रेल्वे स्टेशन—तहसील लूनकरनसर क्षेत्र में स्वयं सहित सात रेल्वे स्टेशन हैं। इनमें लूनकरनसर से पश्चिम में बाकानेर की ओर घीरेरा और दुलमेरा दो रेल्वे स्टेशन हैं तथा पूर्व में (सूरतगढ की तरफ) नाथवाणा, मलकीसर, महाजन व बरजुनसर, चार

1 तीसरा छात्रावास राज० माध्य० विद्यालय के पास आम जनता के छात्रों की सुरक्षा हेतु राजकीय द्रव्य से बना है।

रेल्वे स्टेशन हैं। पहले उत्तम देगर रेल्वे स्टेशन था जो नहीं रहा, अब नाथवाना बन गया है।

प्रथम विक्रय सहकारी समिति लि० लूनकरनसर—यह समिति तहसील के क्षेत्र-वासियों को सस्ते दामों पर सामान उपलब्ध करवाती है।

कृषि उपज मंडी लूनकरनसर—राजस्थान नहर उपनिवेशन विभाग (कृषि उपज) मंडी लूनकरनसर क्वालिटी 'सी' है जो रावला, रामसिंहपुर, घडसाना, टी० बी०, बेरियावाली, दतौर आदि मंडियों की श्रेणी में दर्ज है।¹

क्षेत्र के सम्पूर्ण विकास हेतु लूनकरनसर में नहर निर्माण के साथ किसानों के लिए बरदान स्वरूप मंडी विकास हो रहा है। मंडी नियमन का वास्तविक उद्देश्य उत्पादक और उपभोक्ता के मध्य की खाई को पाटना है। जब तक यह दूरी बरकरार रहती है तब तक न तो उचित मूल्य पर कोई वस्तु मिल सकती है, न मुनाफाखोरी पर अकुशल लग सकता है और न ही उत्पादक और उपभोक्ता दोनों को सतोष होता है।

मंडी नियमन के अनुसार मंडी खर्चा अब काफी कम कर दिया जायेगा। पूर्व में प्रचलित अनधिकृत बटौतिया, राज्य मण्डिया में कर्दा, छीजत, कबूतर घमांदा, भूरीमी मुद्दत आदि खर्चें अब समाप्त कर दिये गये हैं। वर्तमान नियमों के अनुसार मण्डियों में विक्रेता किसानों का कोई खर्चा नहीं होता। बाजिब आठत, मजदूरी व तुलाई आदि के निर्धारित खर्चें भी फ्रेता द्वारा दिये जाते हैं। विक्रेता किसान अपने माल की पूरी रकम लेकर घर लौटेगा।

राजस्थान कृषि उपज मंडी अधिनियम 38 नवम्बर 1961 में राज्य विधान सभा द्वारा पारित है। इसके अंतर्गत 1963 में विस्तृत नियमों का निर्माण हुआ, जिनका प्रकाशन फरवरी 1964 में हुआ है। इससे उत्पादक किसानों के अर्थकारण में जीवन के सुयोधन हुआ है और मंडी नियमन योजना, ग्रामीण समृद्धि हेतु नातिकारी कदम है।

मंडी नियमन योजना जहां किसानों की उसकी उपज का उचित मूल्य दिलवाने की व्यवस्था करती है, वहीं आधुनिक सुविधाएँ जैसे बीसाल भाले चबूतरे गोदामयुक्त दुकान, गोदाम वर्गीकरण, प्रयागशाला, पशु विश्रामगृह, विश्रामालय फुटकर दुकानें, जलपानगृह वक, डाकघर व शौचालय आदि भी उपलब्ध होंगे। मंडी शिल्प लूनकरनसर, पयटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनेगी। गांव स्तर पर भण्डार की सुविधा, किसानों को उबरक व बीज दिलाने में सहयोग सल्लिहान में मंडी तक उपज पहुँचाने के लिए बाहन सहायता आदि सुविधाएँ भी किसानों के हक में बढ़ी अच्छी रहनी।

लूनकरनसर तहसील में पुलिस थाने और चौकिया—पुलिस थाना (S H O) लूनकरनसर वायरलेस सहित है जोकि तहसील का मुख्य थाना है। दूसरा वायरलेस में पुलिस थाना महाजन में है।

पुलिस चौकिया—चौकिया कालू, शहसर और कुम्भाणा में हैं जो कि तहसील के मुख्य पुलिस थाना लूनकरनसर की सुरक्षा व्यवस्था में सहायक होती है।

डिलिंग सेक्टर (उरमूल डेपरी इकाई) लूनकरनसर—लूनकरनसर में अवशीतन उरमूल डेपरी है। सारी तहसील के गांवों से दूध आकर यहां ठंडा होकर (बाहर) जाता है।

जिप्सम कार्यालय लूनकरनसर—लूनकरनसर में वर्षों से काफी बढ़िया जिप्सम निकलता है। कई लोग इसे अन्नक कह देते हैं। यह लूनकरनसर और घोरग दो जगह अच्छी मात्रा में निकलता है।

पोटाश रिसच स्थान—भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा लूनकरनसर तहसील के कुछ गांवों में पोटाश आदि अलभ्य पदार्थों की खोज की जा रही है। यहाँ बहुमूल्य पोटाश केमिकल खनिज मिलने के सम्भाव्यता हैं। यह खोज सोवियत रूस की मशीन के सहयोग में होती है। इन मशीनों से इस रेगिस्तानी भू-भाग में हजार मीटर नीचे तक पोटाश खोज लिया जाता है। जमीन में नीचे निकले हुए पदार्थों को ज्यों-ज्यों निकालते हैं जांच हेतु ऊपर (देग क वैज्ञानिक संस्थान में) भेजते रहते हैं। कालू¹ हेंमग और मलनीसर में वर्षों से पर्याप्त व्यय पूर्वक यह कार्य चला रहा है।

लोकेस्ट (टिड्डी फाका) कार्यालय लूनकरनसर—जब कभी लूनकरनसर तहसील के गांवों में टिड्डी फाका आदि फसल के बीड़े उत्पन्न हो जाते हैं, तब इस कार्यालय द्वारा उनको नष्ट करके फसल बचाने का सम्पूर्ण प्रबंध किया जाता है। छोटे वायुयानों से जहर छिड़क कर बीड़ों को नष्ट करते हैं। अन्य साधनों से भी फसल को बचाया जाता है।

क्षेत्रीय वन विभाग कार्यालय—लूनकरनसर में तहसील क्षेत्रीय वनों के संरक्षण हेतु क्षेत्रीय वन विभाग कार्यालय स्थापित है। वनों में वृक्षारोपण वन संपत्ति की देखभाल करना तथा वन के जीव जंतुओं की सुरक्षा करना इस विभाग के मुख्य कार्य हैं।

सावजनिक बाबड़ी—राजकीय माध्यमिक विद्यालय लूनकरनसर के पास श्री जेठमल बोधरा की ओर से जल कठिनाई के समय (वि० सं० 1995) में बनाई हुई एक सावजनिक बाबड़ी बाबड़ी है जो समय समय पर पीने के पानी के काम आती रहती है।

औद्योगिक संस्थान—लूनकरनसर में वैसे तो अनेक औद्योगिक संस्थाएँ हैं पर कालू जाने वाली सड़क पर एक फैक्ट्री भवन स्थित है। डूबाणी, श्री गोपालचंद बगरह इसके मालिक हैं। यह लघुस्तरीय शिल्प बाहुल्य का समुचित उपयुक्त संस्थान है। अब इसमें लक्ष्मीनारायण टाकीज नाम से सिनेमा हाल है। दूसरा यहाँ जयश्री सिनेमा गृह भी चलता है।

नाटकीय मंच लूनकरनसर—नाटक सभा भवन कीमन तथा किसी विद्वान पंडित का कथा वाचन कथा-पारयाता का भाषण का आयोजन होता है तब यही स्थान उपयुक्त माना जाता है। सुना है यहाँ कवि सम्मेलन के कार्यक्रम भी रहे जाते हैं। यह बजरग भवन के मैदान में बना हुआ है।

विभिन्न प्रकार की मिलें—तहसील लूनकरनसर क्षेत्र में नहर आ जाने के बाद तेल, दाल और रुई की मिलें भी लग गई हैं। यहाँ समय समय पर आयाल व पलोर मिलें पूरा काम देती हैं।

लूनकरनसर कस्बे में पीजरे—बजरग भवन के सामने ही पक्षियों के चुंगे के रक्षाय लोहे का एक पीजरा है। गांव में ऐसे चार पीजरे और हैं।

1 कालू में अब लेखक के जेष्ठ आत्मज श्री जुमराज सक्ती के खातेदारी खेत में पोटाश रिसच कार्यकर्त्तों ने अपने आप स्थान स्थापित किया है।

2 पर गांव कालू के पास जन साधारण द्वारा वन के हरे वृक्ष अभी काटे जा रहे हैं।

तहसील क्षेत्र के ऐतिहासिक देव स्थान—इस तहसील में कालू, महाजन और लूनकरनसर तीन जगह खरतरमच्छीम जन मंदिर हैं। कालू में आठवें तीथवर जैन धर्म के श्री चंद्रप्रभु का मंदिर है और लूनकरनसर में सुवास्यनाथजी का मंदिर बहुत पुराना है। महाजन का जन मंदिर (सं० 1961) भी दशनीय है, पर गारवदेशर का जन मंदिर दह चुका है। इन सब की प्राचीनता के पूरे वस्तात जन प्रयो में जगह-जगह मिलते हैं।

लूनकरनसर में अनक आरामदायक कमरा सहित हनुमानजी का मंदिर बड़ा भव्य एवं मनोहर है।¹ इसका नाम श्री बजरंग भवन लूनकरनसर है। इसकी स्थापना वि० सं० 2007 बशाल युक्ता एकादशी सूर्यवार को हुई थी। कस्बे में यह पहली आदश सस्था है जो भारतीय सस्कृति (भगवान की भक्ति एवं अतिथि सत्कार) की रक्षाय उत्तरोत्तर अभ्युदय पथ पर अग्रसर है। वधों से चले आ रहे यात्रियों के सकट को इस सस्था न अवश्य दूर कर दिया है। श्री विरघोचद अग्रवाल जैसे अनेक भक्तजन इस बजरंग भवन की देखभाल रखते हैं। श्री रामकिशन खत्री और श्री भराराम अध्यापक इसकी सच्ची सेवा भक्ति करके अपना जीवन सायक बनाते हैं। भजन, कीर्तन में गौड स्व० ब्रहीनारामण पंडा का नाम यहाँ अविस्मरणीय है। श्री फूसराज बुच्चा ने भी इसमें अच्छा काय किया था। सस्था में राज्य कमचारियों का भारी योगदान रहा है। अब श्री भगवानाराम गौड और श्री जयचंदलाल खीची बजरंग भवन के नियमित भजनीक भक्त हैं। कस्बे में महा दा शिवजी के मंदिर, ठाकुरजी का मंदिर जम्भेश्वर मंदिर, वणापीरजी का मंदिर एवं बणी गोगामेडी आदि अनेक देवस्थान हैं। मस्जिद भवन भी महा का प्राचीन धार्मिक स्थान है। परंतु यहाँ अति पुरातन मंदिर गाव के मध्य 'श्री लक्ष्मीनारायण जी' का है, जिसके पूजाकारी निरंतर, स्थानीय गौड ब्राह्मण (पंडे) रहे हैं। तहसील के गावों में खियरा रामदेवजी उदेसिया सतीदादो, कालू में कालिकाजी, गारव-देशर में मुरलीधर जी प्रभृति के प्रसिद्ध प्राचीन देव मंदिर हैं। कालू, महाजन, कालवास तथा हंसरा में हरिरामजी के अच्छे आधुनिक डिजाइन के मंदिर बन हैं। सूई कुम्भाणा, जनपुर, कालू एवं लूनकरनसर महाजन में प्राचीन छतरियाँ भी दखन योग्य हैं।

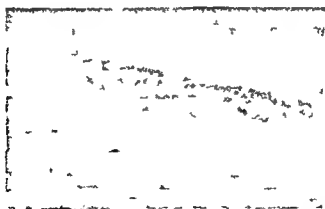
श्री महावीर शुभचिंतक पुस्तकालय लूनकरनसर—इस पुस्तकालय की स्थापना वि०—1 4 45 ई० में हुई थी। इस साहित्यिक चेतना का आविर्भाव सबप्रथम स्व० श्री गुमानमल बापरा स्व० था युधिष्ठिर शर्मा ठाकुरसिंह राखेवा मंगतूराम अग्रवाल फूसराज बुच्चा आदि सज्जना में हुआ था। श्री भराराम अध्यापक श्री उदयचंद व करणीदान बीयर जोधराज वध, गुमानमल बाफना तथा बनवारीलाल शर्मा वगैरह

- 1 स्मरण आता है—वि० सं० 2006 में स्थापत्य कलाविद् श्री बालूराम प्रजापत गाव मामासर से आकर लूनकरनसर रहने लग थे। वे यहाँ के कमठाणों पर करणी का काय किया करते थे। भजनी हाने के नाते मम मातुलश्री के मित्र थे। घमशाला में उनके होटल पर पानी का एक होज बनाने का काय किया था। प्रभु भक्तवध श्री बालूराम ने इन पबितयों के लेखक को साथ लिये जाकर उक्त बजरंग भवन के लिए पुनीत धरा का सन् 1949 में चयन किया था तथा फिर श्रीरामजा का ध्यान करके इस भवन की नींव छोटा धान स्थापित करके अपनी आदश भावना का परिचय दिया।

संरक्षण इसके प्रमुख सन्देश एवं प्राचीन कायकर्ता रहे हैं। यह पुस्तकालय बीकानेर राज० शिक्षा विभाग द्वारा प्रमाणित भी हो गया था। तहसील के गांव कालू में ऐसा साव-जनिम पुस्तकालय पहले से भी विद्यमान है। महाजन और जंतपुर में भी पुस्तकालय स्थित हैं।

सूनकरनसर तहसील के राजनतिक नेता—श्रीमालूराम लेखा भुटलाइ, मामराज गादारा पांडुसर ढाणी, गावानचंद डूढाणी कालू, रामचंद्र बिहाणी जंतपुर, राजुराम जोषरी गान्धेश्वर रेंवनगाम रामा भकडासर, चंद्रनाथ योगी रामवाग (महाजन) हृवमाराम गौड एवं श्यामदीन पंडिहार सूनकरनसर हरिराम विश्वाई हरियासर आदि क्षेत्रीय मुख्य कायकर्ता हैं।

तहसील सूनकरनसर क्षेत्र के गांव व जनसंख्या—पहले इस तहसील में 210 गांव आबाद थे, जिनकी बहावतें घातते हैं। अब राजस्व विभाग के कागजों में 141 गांव आबाद रहे हैं और 30 गांव ग़र आबाद¹। कुल 171 गांव लिखित रूप देता सहित शेष हैं। उजड़ हो जाने पर अब 39 गांवों के नाम राजकीय रजिस्ट्रारों, सातो एवं मप नक्शा में भी हटा दिए हैं।² क्षेत्र के आबाद गांवों में सलग्न 16000 घर भवान हैं और 114130 निवासिन जन (पुरुष—59873 एवं स्त्री 54257) हैं। जिनमें अनुसूचित जाति के 22775 (पुरुष—11871 एवं स्त्री 10904) व्यक्ति, अनुसूचित जन-जाति के 176 (पुरुष—99 एवं स्त्री 77) व्यक्ति, साक्षर 14986 (पुरुष—12696 एवं स्त्री 2290) व्यक्ति, वास्तुकार 31773 (पुरुष—27513 एवं स्त्री 4260), अब कायकारी 4902 (पुरुष—4623 एवं स्त्री 279), तथा निजी व्यवसायी 494 (पुरुष—454 एवं स्त्री 40) हैं।³



जिप्सम

भौगोलिक स्थिति—यह तहसील सदा से अग्रणी रही है। पहले सूनकरनसर का सूप (नगर), मनुष्य जीवन तथा मजीबन प्रदायक था। अब घोररा महित यहाँ का जिप्सम अलग उपयोगी औषधियाँ में मिश्रण प्रचलित है। दुसभरा का सास पत्थर ता

1. सलग्न में 39 गांवों के नाम साक्षर नष्ट हुए मन्थानों व परिशिष्ट प्रमग में दिये हैं मा दृश्य है। 2. २० मय 1981 की जागना के अनुसार।

दूर-दूर नगरों में बड़े बड़े भवन बनाता आया है। उत्तम देसर घेड़ के पाम पक्की ककर है। कई बार सुना कि 'यहां महामारत कालीन चंदेरी व शिशुपाल का एक गढ़ था।' क्षेत्र में कालू का चूना एवं विशेष पदार्थ है, अब इटें भी प्रसिद्धि पा रही हैं। तहसील गावों के घी, गोद और मत्तोर तो अवर्णनीय एवं अमृतोपम पदार्थ हैं।

लूनकरनगर कस्बे में सरदारनगर के वरनाणियों द्वारा रेलवे लाइन आने के समय से एक बड़ी घमशाला बनाई हुई है। कालू के रास्ते वहाँ के झोंवरों की बनाई हुई पुरानी प्याऊ और रत्ने स्टेशन पर सुरतगढ़ के पेड़ीवालों की प्याऊ है। इस बीच कस्बे में ओसवाल भवन एक अतिथि सत्कार का स्थान है जो पहले गुराजी का जन उपाध्य था। जवात विभाग के पुराने कार्यालय (सायर) की जगह अब व या विद्यालय भवन लड़कियों का माध्यमिक शिक्षा स्तर स्थान है। जवात के घाने की भूमि छिन भिन वितरण हो चुकी है। तहसील के गावों में महाजन, सूर, जतपुर, कुमाणा और कालू के गढ़ राजाजी के सराहनीय एवं दशनीय अवशेष हैं। इस तरह ऐतिहासिक ढग से भी लूनकरनगर बहुत पुराना कस्बा है। यह चौहान राजपूत ओसवाल और अप्पवाल महाजनों आदि की बस्ती है तथा यहाँ की एक विशेष जाति खरवाल (नमक निकालने वाले) हैं। धिरमेचा राखेचा बुन्ना और बोधरा यहाँ के पुराने महाजन हैं। अब लागू में पहले श्री कुसलराम रावतराम पट्टा ह्यासीराम सारस्वत, जेठमल, ठाकरसीदास देशरीचंद बोधरा, नेमचंद राखेचा प्रभृति मान्य महाजन थे। राजूराम सेवग, दुगाराम डेलू, जेठाराम पट्टा, मोखेला पट्टिहार बीषाराम सुनार भराराम नारई आदि भी कस्बे के मुखिये एवं कमठ लोकप्रिय व्यक्ति माने जाते थे। यहाँ के श्री नधूराम पुत्र श्री इंदाराम कुम्हार पहले जवात में आफिमर थे। प्रो० चतुभुज, डा० मेघराज तथा जोगेंद्र पँवार आदि अनेक महत्त्व सिद्धिजन हैं। अब अनेक कायकता तथा कमचारी हैं। किंतु ग्राम पंचायत लूनकरनगर का वर्तमान सरपंच श्री चम्पालाल चौपटा एक नौजवान कायकता व्यक्ति है। यहाँ का प्रथम सरपंच स्व० श्री गुमानमस बोधरा ममाज सेवी, सभ्य व रचनात्मक कायकता था।

कालू और क्षेत्र के प्राचीन प्रतिष्ठित गाव—सम्माननीय ऐतिहासिक गावों में कालू राजासर, गारवदेशर कुबियों, बडेगण, सुरनाणी, सहजगसर खियरा, ऊँचाइही, खारवारा, खारी आदि गाव प्राचीन बीकानेर राज्य से सदैव प्रतिष्ठित रहे हैं। राज्य के प्रथम ठिकानों (महाजन, बीदासर, रावतसर व भूबरका) में से लूनकरनगर तहसील का गाव महाजन सब में मुख्य माना जाता रहा है। फिर कुमाणा सूर, जतपुर और केली आदि गाव भी राज्य के ठिकानों में बड़े माने जाते। कालू की तरफ मोनपालसर घीरासर और घडसीसर भी बीकानेर राज्य के मानीते गाव रहे हैं।

1. राव घडसी के वंश में महत्वपूर्ण व्यक्तियों में मेजर दीपसिंह घडसीसर जो चीन युद्ध सन 1900 में गये थे। उनके पुत्र जनरल सिधदत्त सिंह को सेनहस्ट (इंग्लैंड) की किंग्स कमीशन मिला था तथा भारतीय सेना में अडज्यूटेंट जनरल के पद से सेवानिवृत्त हुए। दीपसिंह के दूसरे पुत्र श्री विशनसिंह का काश्मीर क्षेत्र में भारत-पाक युद्ध 1947 में वीरतापूर्वक लड़ने के कारण 'महावीर चक्र' प्राप्त हुआ। वे वनल के पद से सेवा निवृत्त हुए।

कस्बा कालू एक श्रेष्ठतम स्थान

कालू गाव की स्थापना के विषय में महा सम्भवत बना दना तो मुश्किल जान पड़ता है—कि तु सदियों तथा युगों से जावाग्न ज्ञान का धारणा सत्य है। इस प्राचीनता के लिए पन्द्रवीं शताब्दी से तो कालू का नामान्वित स्थान स्थान पर पाया जाता है। अतः इससे बहुत पुरानेपन की सम्भावनाएँ प्रकट हैं और कालू ग्राम नाम के पास पास प्राचीन वास भी अनेक ज्ञात होते हैं। यहाँ कालिकाजी की स्वयम्भू देवली (मूर्ति) अवतारणा हुई तब से यह देवी घाम एवं कालू नाम मध्य कोसा तक कीर्तिमान हुआ है। यह स्थान शक्ति का पावन पीठ ही नहीं, उसकी कृपा उपकरण का विविध सुख प्रदायक कस्बा है। यह गाव पानी की बृहद् कक्षा बाल क्षेत्र में पानी की बहुतायत वाला अनेक ताल तालाबों और खोलों के नामा सम्पन्नता का मनोहारी स्थान रहा है। वर्तमान कालू वास के कुछ बहुत जून (प्राचीन) हैं जिनकी मृन्मय विमानों मुचड नालें राजा सगर के पुत्रों द्वारा खोदी हुई बताई जाती हैं। बीकानेर के थली प्रदेश में ऐसे कूओं के बहुत से प्रसिद्ध गाँव हैं जो पुराने कूओं के निकट स्थित हैं। भारत के प्रख्यात पुरातत्त्व वेत्ता टी० बामुदवकारण अमरवात का मत अक्षरों में सम्भव ज्ञान पड़ता है कि "कालू से लगे बीकानेर डिवीजन के पूर्वी भाग तक प्रागैतिहासिक स्थल हैं।"

कालू अपने लोचनीय जीवन में इसी आस पास की घम रमा पर वासा के लघुरूप नामा द्वारा हरा भरा उठता घमना रहा है। तत्समय ऐसा विश्वास था कि—
 यो घम एक जगह रह लेने वाला ग्राम परिवार हर तरह से फूलता फलता नहीं। इसलिए पुरातन समय में कालू के अनेक समथ गुवाड़े (बड़े घर) गाव के इधर उधर टापी स्वरूप उठते बसते रहे हैं। इससे एक वास का नाम बीदासर भी था। शासन-बला भी अनेक रह चुका। पर वर्तमान मुख्य वास इन सदीयों कूओं के सुख लाभ सदबन्धनी बना रहा जिसका वही वही कालू पुरे भी लिखा मिलता है।

बहुत से लोग का कहना है—कालू के वासा को मखा चौधरी ने एक किया बसाया। कुछ लोग एक प्राचीन दत्त कथा के आधार पर सरसजी का नाम लेते हैं।¹ इनके अतिरिक्त अन्य लोग कालिकाजी की सहस्र युगीय मूर्ति के निकट, अपनी रक्षा हेतु कालू नामाश्रय सुसंगठित आ वसन का लौकिक कारण बताते हैं जो ढाई सौ वर्ष पुराने इस गाव के निकटीय उत्तराद थेह के प्रत्यक्ष देखे प्रमाणों में मरण जान पड़ता है। जो भी हो पर आज हम इस गोष्ठि रूप में यह एक दिव्य कस्बे को, पीढ़ियों से कालू कह कर पुकारते पहचानते हैं।

आभूषणों में जैसे हार या माला की महत्ता विशेष मानी जाती है वैसे ही इस तहसील के सब गावों में कालू कलगी स्वरूप शोभनीय तथा सम्माननीय सर्वाङ्ग अलंकार हैं। इसमें नगर के समान कितने ही सावजनिक नयन मनोहर एवं दशनीय स्थान हैं, जिनका स्वाभाविक स्नेह पूरित अवलोकन करवा सगो का परमाधिकार है। यहाँ की किंवदन्ती है कि कालिका के मंदिर की मूर्ति किसी आदमी द्वारा स्थापित की हुई नहीं जमीन में बराह (दरार) करके निकली हुई है। अतः यह जागत दबी होने की बहुत बड़ी रसाति है। यहाँ के नागरिक देवी की दयानुकम्पा में ही अपने को सुख

1 पर सरसजी ने तो सारस्वत नगर (सिरमा) को समृद्ध किया था।

सानंद सम्पन्न मानत हैं, जा गोस्वामी तुलसीदासजी के नीचे लिखे शब्दों के अनुसार सही है।

जगन्मबा जहँ अवनरी, सो पुन वरनि की आय।

रिदि मिदि सपत्ति सुख, नित नूतन अधिकाय ॥

ममस्त सत्य गकिन शासन भक्ति भावना का दैविक वातावरण, आदरणीय आभा आपूरित, गहरी शोभा विलास, विमलपवित्र जेब चाणी के वरद सपूनों का कल्पनावत, परतु उच्च अंतरंग भावों से आप्लावित बड़ा बज्जूवा गांव काल है। यह घरा बसुधरा माता कालिका की स्वयम्भू मूर्ति उत्पत्ति की खान, मधु-सलिल मुखदात्री श्री सरस महाराज की पूज्य विचरण स्थली, श्याम पांडिया से वसन्तकृत पृथ्वी बूहड़ भूमिपति की चतुर्दिश पान चादनी, मेले की क्या कीर्ति कारिणी, मामीनाथ की भोग बिहीन भूमि गोदारों की गौरवशालिनी गांधित गंगा भोपत की भाग्य विधात्री राव बीका की अमर यश ज्यात्मना मेघसिंह की माय महतारी, महाराज कुमार विनयसिंह की अनुठी सतत स्मृति स्वरूपा भवत अमरसिंह की परमपूज्य दर्शिनी रसा पूज्य वमा कमचारी वग का मनाहारी विमात्र वास कालू है। इसमें बाबा मामीनाथ की अमर समाधि तथा जैन धर्म के आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु का मंदिर व प्राचीन शिक्षा स्थान उपाध्य है। रामस्नेहियों का ऊँचा रमणीय एकांतिक सत्संगति स्थान जगेरी और अनारण, धनान, भूरजान के धर्म भाग्य से यहां के सराकी जीवन का दिगद गग-अनुराग पोषित हुआ है। होली के डफ और डांडिया नृत्य, गण गौरा की ऊँठ दौड़ प्रति-योगिता, धूमर तथा उत्सवी लोक गीता की गरिमा व खेलों एवं अखाड़े वाला रंगीला-जुना उदास मानवी जीवन, अमिबादन का वेजोड तमूना कोई भी कालू आकर अवलोकन करे। माताजी की कार भगवान का अनकूद भोग और पृथ्वी परिभ्रमा (वातिक पूणिमा की रात को भवतजन गांव की फेरी फिरते हैं), डोल टामकी और बांसुरी वादन के सांस्कृतिक लोकासख तथा सम्बन्धी पुस्तकानय का हुआ कमचारी गान 'प्रसार, कालू भाग्योन्मति के विगिष्ट कारण हैं। दबासदास की जागीर भूमि 'वासा' का शीत छत्र, भक्त किशनसिंह का काकड़ सीमाडी मुख्य कस्बा कालू धर्म प्राण जनता का सुंदर साधानाधार है। न भूतो न भविष्यति-ग्राम सेवा सच की समाज सेवा के कारण यहाँ प्रत्येक दबाद का दुकान का नाम ही "सध चल पडा है।

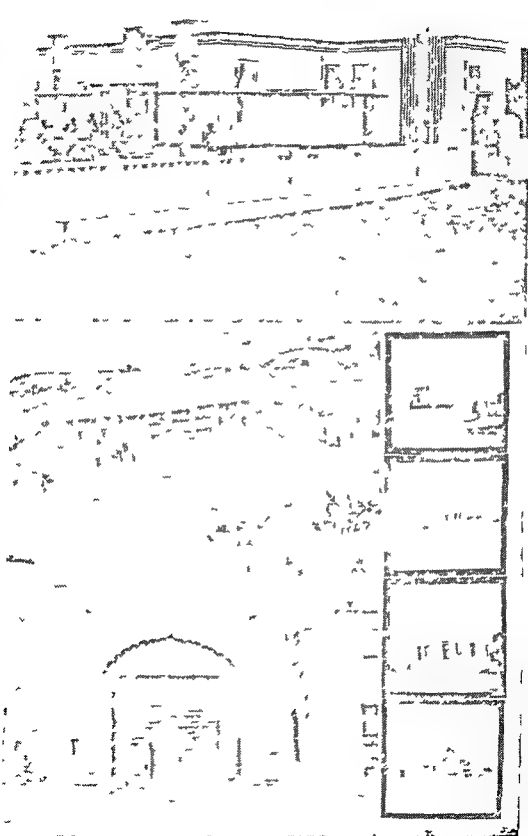
कालू बाक पट्टों का पावन स्थली रजक विगाल टाढा रम मध रंगीला जन्मानस, विचित्र वर प्रदात्री विमल वसावट, अंधेरा उजाला-भारत का प्रकाशमान सितारा राजस्थानी धरती की धरोहर गांव कालू है। यहां प्राकृतिक दृश्यों में बंधी रंगार की अधिया जेठ की लूण और सर्दी की लूण, पूरी शान से आता जाता है। जगमग जगज मोठे जैन कूप सरोवर, क्षितिज विस्तृत मेन, समतल भूमि मृग भ्रम सरिता ताला पाना की सुन्दर स्वच्छ तथा बलिन बटी गनिया यही है बाप के राज्य वाले धनी विजय का गजबी गांव कालू। बल बुद्धि के आवरण में धारों का धनी, रैगिस्थानो रूप, पर अव रबी का रमशाला वनन लगा है। इसका पाम पवत नहीं मगर शयन भर मतीरे होत है। अनेक जुगारों और मतियों का अहाभाग्य मत्ता महता का मेजबान मह्य श्रद्धालु का मुवास, जनता की प्रमुद मुद मुद भावनाओं एवं मात पूजा का गावन उपना उत्साह लिए बहु रम्याय मालायित अद्वितीय गरिमा वाला गांव कालू है। इसका तन मना तसहील, वयका जिला और जन प्रनिषय राजस्थान प्रणे है। इस कालिका धाम कालू के पास

नाथूसर म विष्णुई सम्प्रदाय के आदि गुरु जम्भेश्वर नाथ का साथरा वाला जाम्भा घारा परम सुख प्रदायक मुरलीधर जी के श्री मुख दशनाथ गारबदेशर और इसी के पास राज-स्थान के प्रख्यात रयातकार दयालदास का खेडा कुबिया गाँव है। राठीड राज्य क विशिष्ट म्त्तम्भ पुरुष वीरमदेव जी के आथय स्थान कागासर व कँवलासर इसी के पास हैं।

महाभारत के उल्लेखानुसार मरु, गुजरात्रा मेन्पाट, माड आदि प्रदेशों के उत्तर पूर्वी रास्ते इसी के निकटीय जंगल से होकर जात थे। जन साधारण के अतिरिक्त जनक शासकीय लोग, व्यापारी और विद्वान व्यक्ति भी श्री कालिका जी के दशनाथ अपनी यात्रा रास्ते चलकर कालू आते रहते थे। वे भगवती की पूजा-अवना करके व्यापारादि के कार्यों में पूर्ण सफल होने का विश्वास रखते। उस समय कालू या पास के गाँवों में देवी पूजा का भारी प्रचलन था। बनजारे और व्यापारियों ने अपनी निविघ्न यात्रा हेतु कालू का रास्ता ही उत्तम संपन्न लिया था। सिंध प्रदेश वाले भी व्यापारिक ढग से यहाँ आ जाया करते थे। लोक कथाओं के अनुसार सरस जी महाराज ता अपने स्थान से रीताना दानो टाहम देवी की पूजा करन कालू जाया रहते थे। नागवसीय राजाओं के समय में ब्राह्मण की स्टाड कालू के ताल में ही गिरकर दूटी थी। श्याम पांडिय की धोती स्नान क बाद कालू गाव के आकाश पर सूका करती थी, ऐसा कथन है। बीकानेर महाराजा श्री जारावर सिंह जी वि० स० 1798 की चेतवदी एकादशी को बटे के साथ माँ देवनी चढकर सना हूँ उसके सत का देखन कालू आये थे। महाराजा श्री सूरतसिंह जी एक बार अपनी कठिनाई के समय स० 1850 माह सुदी 2 को कालू आये थे।¹

उस समय लाग तीथ यात्रा बहुत किया करते थे। गया स्नान का बडा महत्त्व माना जाता था। तब तमाम मारवाट जसलमेर के लाग इसी देश के कलेजे कालू रास्ते होकर निकलत थ। इसी पथ परम्परा में वि० स० 1889 में बीकानेर के महाराजा श्री ग्लसिंह न हरिद्वार यात्रा क रास्ते में पहले कालू में कालिका जी के पूजनाथ पडाव किया था। दहला और गुजरात का भी रास्ता यही से होकर था। इसी रास्त की उक्त यात्राय वि० स० 1912 में महाराजा सरनार सिंह न कालू की कालिका माता के घोक चढाई थी। वि० स० 1932 में कालू हाते हुए तीथ यात्रा गय थे महागजा श्री डूगर सिंह जी। अतमान समय में ता कालू का द्वारिका नाम सुनकर गहन से मन्त्री, मुख्य मन्त्री, महागजा तथा अन्य महान विद्वान पुरुष इस कालिका क घरा घाम कालू आ चुके हैं।

कालू पर अंतर्राष्ट्रीय हवाई जहाज सेवा (Air Service) रास्ता गतिमान है। पश्चिमी देशों से अरब, पाकीस्तान होकर आने वाले विदेशों के प्लेन ऊपरी आकाशमान से उडते दिल्ली पहुँचते हैं और वापिस जान हैं। लोगों ने काम पर जाने आने का समय हवाई जहाजा के समय से जोट रखा है। प्रात चार बजे से पहले दिल्ली से आने जाने वाले प्लेनों के उडते सारे दिखाई देते हैं और इसके बाद दिनभर आवाज पर आवाजें होती रहती हैं। जल सरावरो के चील काँवले से प्लेन आजकल आकाश उडत आते जाते हैं। हम क्षेत्र में कहीं भी मिसटरी के कप लगते हैं, तब कालू के सूरजाणा सरोवर क ताल में हलीकाप्टरा का बाग (पंगु समूह) सा नहरा जाता है। ऊँचे जाकते बच्चे टाटा करते हैं।



व्यक्तित्व व लोकायोजन—कालू म कभी ५० गणेशाराम जी सरल, गुणवान एवं धार्मिक महानुभाव हुए परंतु फूसारामजी उदार भी रहते थे। श्री गिरधारी लाल उच्च कोटि के सेवा भावी मज्जन, जिनका जीवन सदा बहार पेड़ था। किंतु दुर्गादत्त जी उतने ही स्वाभिमानी विद्वान एवं सद्भातिर पंडित हैं। तपस्वी पंडित लाम्छाराम जी तावनिया सरल व भावुक व्यक्ति हैं। गोपाल चंद पुराना ग्राम काय कर्ता अधिक एवं नता गिरी म कही कम हैं। पर इन्द्रचंद टच सरपंच, कृष्ण कागवारी है। श्री जवरीमल जीवन से जावन जोड़त वाली प्रकृति का सम्य सुधारक है तथा सस्कर्ता की संवेदनशीलता लोक अस्तित्व सम्बंधित प्रचलित है।

मुना है कालू मे अब छूत व नबी मढी के निम्न स्तरीय खेल भी चलना चाहते हैं। कुछ ईर्ष्यालु, कुटिलनीति विध्वंसक व्यक्तित्व उभरते नजर चढ़ते हैं। लोलुप स्वार्थी पाखंडी और पापी लघुरूप भी मिल जाते हैं। राजनीतिक दलीय नकारात्मक निगुणी आचार विचार विहीन और बितडावादी लोगो की भरमार हान लगी है। मगर सत व समयी पुष्टी के जीवन यहाँ सदैव शोध मार्ग प्रतिष्ठित हुए है। मतलब कालू मे प्रमुख रूप से गाँव समाज के सर्वांगीण विकास हेतु आर्थिक संग्रह (चंदा) एवं बहुत से सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन सदैव अपनाय जाते हैं जिनसे नव्यायाम, शुद्धाचार तथा क्षेत्रीय दृष्टिकोण रहन सहनाधार से उत्तम जीवन बना लेने के लिए बहु बधानिक उपलब्धियाँ हुई हैं। सामान्य जनता, सरकार द्वारा उठाये गये कदमों से पूर्ण परिचित होकर लाभान्वित होती जा रही है और कल्याणकारी समाज के निर्माण एवं योजना बद्ध विकास में सबधित जन राजी-खुशी अपना योगदान करने का तैयार रहते हैं।

कालूपुरा परम तीर्थ, कालूपुरा परम तप ।

कालूपुरा परमो भ्रम, कालूपुरा परमा गति ॥

महाजन—महाजन सदा से महा जन वाला गांव है। पहले यह जोड़िया के प्रसिद्ध क्षेत्र सद्वाण मे था तथा इतिहास मे इस गाँव का प्राचीन नाम शाहोर पाया जाता है।¹ राठौड़ों के राज्य मे इसके ठाकुर रत्नसिंह अजु नसिंह भीमसिंह वरिसालसिंह आदि भी बड़े प्रसिद्धि प्राप्त थे। श्री शिवनारायणसिंह के पुत्र ठाकुर हरिसिंह। (ज म वि०स० 1934) बहुश्रुत, बुद्धिमान इतिहास प्रेमा और मिलनसार नृप था। व अपन पास श्री केशरी प्रसाद नाम के एक प्रभावशाली विद्वान घास्त्री रखते थे।

श्री हरिसिंह का गढ़ बड़ा सुंदर एवं सुविधाजनक था। प्रथम द्वय द्वार तथा उन पर दो कक्षा मे ठिकाने के कमचारियों की कतार तथा समय काय लेखन सलान रहा करती थी। तत्समय गढ़ म रत्ने के कूए की शत मुजब पानी की टकिया बनी हुई थी और गाँव म लघु पाइप लाइन का श्रवण प्रसारित था। किले के एक कोन मे छोटी जगह पर पुष्प एवं दूध की छटा भी दिखाई दिया करती थी। वहाँ एक कमरे म श्रीराम सरोवर नाम से पुस्तकालय संचालित था। दो तल्ले के एक बड़े हॉल मे साधारण सभाहलय के ढंग से अनेक दुलभ तथा वैश्वीयमती अजूबी कला कृतियों के दशनीय नमून व्यवस्थित सुमजित थे। उनमे एक विचित्र आइनों से मजा मजाकिया कला था। उसे कोई देखता तो हँसता-हँसता लाठ पीट हो जाता था। आइन के सामने दशक अपन

चेहरे के अजीबोगरीब प्रतिबिम्ब से आश्चर्यावत हाकर हँसता ही रहता। लोगो की आइनें में विभिन्न शकलें बन जाया करती थी। गड की छत में विलायती छाट फानूस थे और दीवारा पर सुनहरी पच्चीकारी तथा सिढकिया पर रश्मी झलरियो के पर्दे लटकते रहते थे। हॉल जगमग ज्यादा बड़े बड़े शीशा तथा चित्ताकपक तलचित्रा में सुशोभित रहा करता था। छत से थोड़े नीचे, दीवारा पर बाघ, नाँमर और अन्य शस्त्रो के वास्तविक स्वरूप भी दिखाई दिया करते थे। गड की छोटी से लेकर बड़ी वस्तु पर भी हरिसिंह का नाम लिखा-खुदा रहना और वे सारी विभिन्न वस्तुएँ रजिष्टर में भी दर्ज की हुई, हुआ करती थी। उत्तरी मैदान में एक चबूतरे पर वर्षा नापन का यन्त्र भी लगा रहता था। महाजन जान वाले मध्य एवं मन्ना त अतिथियो की गड के भीतर प्रवेश करवाया जाता था, जो देखन की भारी उत्सुकना लिए काफी सध्या में पहुँचते रहते। बीकानेर और मृत गङ्गा में भी महाजन नरेश की मनोहारी काठियाँ बनी हुई थी।

राजा हरिसिंह मेयो वालिज के पुरान छात्र थे। श्री गंगासिंह जी ने उह राजकीय कौंसिल में पब्लिक वकस कमेटी का सदस्य और विभाग का मंत्री भी बनाया था। सन 1911 में अंग्रेज सरकार ने उह राव बहादुर की तथा फिर सी० आई० ई० के खिताब से सम्मानित किया था। सन 1912 में बीकानेर महाराजा की रजत जयंती पर हरिसिंह को सदा के वास्ते राजा की उपाधि मिल गई थी। वि० स० 1990 (सन 1933) में राजा हरिसिंह का निमतान देहात हो जाने पर उनका चाचा दुवेर का ठाकुर भोपाल सिंह महाजन का राजा बना, जो हठी, लमाजी और कठोर शासक था। वह गंगासिंह के कमांडिंग आफिसर तथा कनल की उपाधि युक्त था। उसके देहावसान बाद काकड़ वाला के ठाकुर का पुत्र रघुबीर सिंह जो लूनकरनसर पुलिस थाने का एक कमचारी था, महाजन का राजा बना। सन 1948 से 1950 तक लेखक (सब समय लूनकरनसर राजकीय स्कूल में अध्यापक) उस समय वह बार अपन वध उत्तराधिकार के आधार पर महाजन ठिपान की प्राप्ति के लिए अजिया लिखावर दिल्ली भिजवाई थी। सन 1951-52 में रघुबीर सिंह महाजन का राजा बन गया था।

महाजन के अभिलेख

श्री चन्द्रप्रभुजी का जन मंदिर

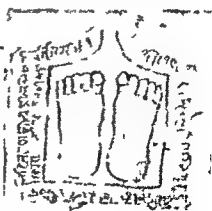
दादाजी के सरणों पर

मवत 1708 वर्ष बैशाख सुदि 7 दिन बुधवार

श्री जिनकुशल सूर्यशर पाहुके प्रतिष्ठित

उपाध्याय श्री ललितकीर्ति गणिमि

परिमित श्री महाजन श्री सधेन



पहले महाजन के कुछ साम गग रागनिया के जानकार, गवय एव कवि कमकारी भी थे। पाम के गाँव घेसूरा म खाली राम नाम क एव कवि थे। उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित था। महाजन राजा हरिसिंह कवि का आदर करता था।

राजा हरिसिंह ने अपनी रानी के गणगौर पूजनोत्सव पर महाजन का सारी विवाहित बहिन बटियो को लाट प्यार सहित ससुराल से पीहर बुलाकर अपन गड मे राज्य आदि से सम्मानित किया, किन्तु राजपूता म प्रचलित टोका मद्यपान और बहु विवाह आदि कुप्रथाओ का वह घोर विरोध था।

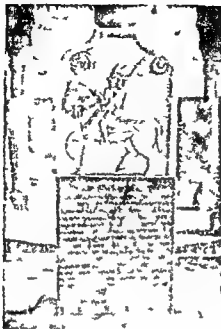
महाजन जब भी शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक समृद्धि म सम्पन्न करता है। इसम सावजनिक स्थान पुरानी धर्मशाला है जो श्री हरिसिंह क समय म दीवानेर क एक सेठ श्री लामूराम ने बनवाई थी। महाजन म माहेश्वरी महाजन कारोबारी महाजन हैं और अन्य जातिया भी वासि दगान हैं। यहाँ का मरपक्ष श्री करनीदान सामाना (जन्म सन 1951 माच) एक व्यवहारी युवक है। अन्य समाज म यहाँ क परशुवती स्वामी बडे मिलनसार हैं। यह सूनकरनसर तहमाल क गाँव म नाम म ही बडा ग्राम गिना जाता है।

गड क सम्मानना मे



श्री की देवली खरी, दाहिन हाथ भाला बाये म पखी। ऊपर चद्र सूरज

॥ श्रीगनस ॥ सम्बत् 1944 शके 1809 व मिति चत्र शु० २६ ७ ठाकुरां राज श्री 107 श्री अमरसिंहजी रा भार्या श्री० मट्याणीजा उदे सिगात पिवर इलाक जेसलमेर ग्राम जिजणवालीरा अस्मिन् दिन वकुण्ठ घाम प्राप्त ० तस्य विधान म० 1960 मितो ज्येष्ठ शुक्ला 5 रवि दिने दिव्य ० रूपस्य इय देहली प्रतिमा छत्रिका शास्त्रोक्त विधिना प्रतिष्ठा स्थापिता सा चिर तिष्ठन् ॥ शुभ भवतु ॥



इमगानों में

देवली अश्वारोही, ठाळ तलवार बघी, दाहिने हाथ में भासा, उपर चढ़मा मूय

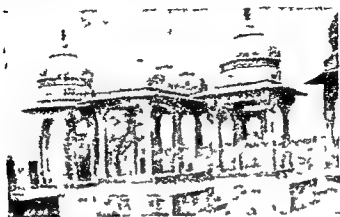
॥ श्रीममहा मङ्गल मूर्तिसे नम ॥ हरि ॐ ॥

१॥ स्वस्ति श्रीगणेश कुल देव्या प्रसादात् ॥ अपास्मिन्धुम^१ सम्बत्सरे श्री
मन्पति विजयसिंह राज्यात्सम्बत् १९०१ शाब्दे १७६६ तत्र पीपधवळ पक्षे तिथी १
तद्दिने शठोड वशीम वि^२का रत्नसिंहोत्त ठाकुरा राज श्री १०८ श्री अमरसिंहजी
तथात्म^३ज ठाकुरा श्री १०८ श्री रामसिंहजी ज मामृत सव सम्बत् १९५८ शाब्दे १८२३
वात्सिक पुन्या ६ रवि दिने श्रीलक्ष्मी नारायणजी प्रसादात् वकुळ घाम गता तस्य
विधान सम्बत् १९६० शाब्दे १८२५ ज्येष्ठ पुन्या ५ रवी घ० २ घ ३० पुष्य भे घ०
२४॥१७ ध्रुव युजि^४ ५२१९ एव पक्षाग शुद्धेहि वय तनु विद्यमान ठाकुरा श्री १०८
^५श्री रामसिंहजी वम्भण दि य रूपस्य इय देहनी प्रतिमा देवकुला^६मनाया छविना
शास्त्रोक्त विधिना प्रतिष्ठापिता सा विरतिष्ठतु ॥^७ शुभ भवतु ॥ श्रीमदश्वामशिरोमणी
महेश्वले श्री महाजनस्य^८प्रभु । धर्म धम सुभोपमा स्व यगसा माक्षात्मनो सस्तुत दान
सूयसु^९ तोपमस्य छतिमासत्यत्व याधाधिप यत्कीर्ति गरिन्दु जीव विधिना^{१०}न्याताहि
लोकत्रय ॥ १ ॥

राजासर उक्त करणीसर—इस तहसील का गाँव करणीसर खूनकरनमग में पूर्व में
है। वि० सं० १९८५ में पूर्व यह गाँव राजामग नाम से आबाद था, जो अब धेह रूप
बना हुआ है। तत्समय इसमें माहेश्वरी अग्रवाल सूनार और पोकरणादि (बोहरा
दिरासरा) विशेष वासि दमान थे। गत दो दशकों से इन सारे उजड़े गाँवों के चेहा को
लागो ने जोतने शुरू कर दिया। अब इन पुराने गाँवों के नामों निशान मिट रहे हैं।

राजासर में अग्रवाल का पूरा पक्का भोंदर था। नीय के बस एव पक्के कुंड थे
और मोठे पानी का बूझा था। राबले के पास की तिलारी (बठक) में सती माता की
रमोन थाप लगाई हुई थी जो ज्वाला में बैठने से पहले सती माना ने अपने हाथ

रोली (कुँ कुँम) लगाकर अंदर की दीवार पर चिपका दी थी। ठाकुर गुनावसिंह ने न मालूम क्यों ? इसे उठाकर लगभग दो किलोमीटर दूर पूव में ले जाकर एक तालाब के किनारे करणीसर नाम से बि० म० 1987 में स्थापित किया है।



महाजन में राजाओं के श्रमणों की उत्तरिया

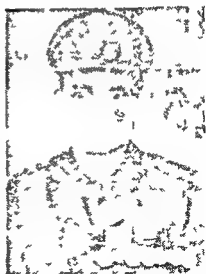
पहले महाराजा अनूप सिंह के छाट पुत्र आनंद सिंह के बेटे अमर सिंह के बग़ायर राजासर के राजमी थे। बोगेरा के राजमी भुमानसिंह के पुत्र गुलाब सिंह को गंगा सिंह जी ने शिक्षा हेतु अजमेर मेयो कॉलेज (बि० स० 1951 म) भिजवाया था। डिप्लोमा परीक्षा पास हुए, तब महाराजा ने अपना प्राइवेट सेक्रेटरी रखा और बि० म० 1969 की राजस जयंती पर तालीम, पर मे स्वर्ण कपड़े का सम्मान किले म चीगान तक सवारी पर जान की प्रतिष्ठा तथा राजासर की ज़मीन दी थी। फिर अब रसवा का कमांडिंग अफसर, इस्पेक्टर जनरल आफ पुलिस, सिरोपाव और रावबहादुर की उपाधि, कटोलर ऑफ दी हाउस हिल्ड आदि अनेक पद उपाधिया अत्ता किये। वर्तमान समय में स्वतंत्र करणीसर अच्छा अन्न उत्पादन बड़ीव गाँव है। यह दूध, दही या घी और मीठे पानी का स्थान है।

गारव देशर—गारव देशर कालू का कौकड़ सीमाही प्राचीन ग्राम है। यह राजपूत सन्तारो, घनावशी बरागियों और महाजनों (ओसवाल माहेश्वरिया) का गाँव रहा है। इसमें 'नाथो और बरागी महंतों' की बड़ी स्थानिक गढ़ियाँ हैं। नाथ गढ़ी क नहग श्री गणेशनाथ और उनके गिष्य श्री बरखानाथ बड़े नामी नाथ हुए हैं। नाथ स्थान के सामने पहले जन मंदिर था और महंत के स्थान अब भी बड़ा ठाकुर डारा है। महंत जा के दो कूप और उनके गुरु हरिरामजी पर एक साल भी बनी हुई है। गारवदेशर म इन नाथो और महंतों की काफी पुरानी जमीनें जायदाद हैं। श्री भुरलीघर का मंदिर, गढ़ रावने के समक्ष है। बि० म० 1921 के पास यहाँ महाजन परिवार म एक महिला, पति भग मती हुई थी समवे बावन वर्षों तक बीकानेर राज्य से मुकदमा चला। बहुत श्रमदान बंधु ता० पेगी जाने रहते थे।

- 1) अठारहवीं शताब्दी में यहाँ नम्भीवल्लभ नाम के एक बड़े जन विद्वान साधू रहे थे। आजकल प्रतिवर्ष यहाँ एक प्राचीन पौर की पूजा होती है।

पहले गारबदेशर घडसीयान बाना का गाँव कहलाता था। राव बीका के एक पुत्र घडसी था। वि० स० 1562 में उस घडसीसर की जागीर मिली। घडसीसिंह के देवी सिंह और डूगर सिंह दो पुत्र हुए। देवी सिंह के वंशधर गारबदेशर के और डूगरसिंह के वंशधर घडसीसर के ठाकुर बन। ये सब घडसीयान बीक कहलाते हैं। गारबदेशर चौरासी गाँव का पट्टा कहलाता था। राव घडसी के वंशजों में देवीसिंह राजसिंह त्रिपाठीसिंह सबलसिंह जगरूपसिंह, इंदरसिंह, छत्रसिंह, रघुनाथसिंह, खुमानसिंह सूरजमाल सिंह तारा सिंह गिरधारी सिंह और तरहवाँ वंशधर एवं आसिरी ठाकुर फतेहसिंह थे। इनके पिता श्री अमर सिंह तहसीलदार थे। स्व० ठाकुर किशनसिंह गारबदेशर के भक्तिमान मुजान रत्न मान जाते हैं। राव घडसी के राजबिरा स संबंधित महा एक और प्रसिद्ध घराना है। ऐसे घराने को पहल छुट भय नाम संबोधित किया करते थे। साम्राज्य सुरक्षा बाबत सतत सहायता पहुँचाने के दृष्टिकोण से गारबदेशर में यह परंपरित बहादुर एवं मिसटरीमन घराना है। इस घराने के प्रथम सैनिक पुरुष श्री जुझारसिंह ई० सन 1900 में चीन के युद्ध में लड़े थे। जुझारसिंह के पुत्र सूबेदार श्री शादूलसिंह ने सोमालीलड (ज) २० सन 1902 से 1904 और फिर (ब) प्रथम विश्व महायुद्ध सन् 1914-18 में अंग्रेज सरकार से जमादार पद से साहसिक काय हेतु 'इंडियन डिस्टिंक्शियड सर्विस पदक' (भारतीय विशेष सेवा मेडल) प्राप्त किया था। फिर उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री उदयसिंह मेजर पद पर सन (1939-45) द्वितीय विश्व युद्ध में मित्र बल क्षेत्र के मोरचे पर साहस रत डटे रहे। अब उदयसिंह के दो पुत्र जगमाल सिंह और लक्ष्मण सिंह लेफ्टीनेंट कर्नल हैं। भारतीय स्पेशल सेना के लेफ्टीनेंट कर्नल श्री जगमाल सिंह राठौड़ भारत चीन युद्ध 1962 में भारत पाक युद्ध 1965 में तथा भारत पाक युद्ध 1971 में बीकानेर क्षेत्रीय सेना महित तीन बार लड़ाई में गये हुए हैं। उन्होंने ई० सन् 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध 'रणिहाल' मार्च पर मेजर पद से दक्षता पूर्वक वीरता दिखाई थी। इसलिए महामहिम राष्ट्रपति श्री बी०बा० गिरी ने वीर चक्र पदक प्रदान किया है। वर्तमान में श्री जगमाल सिंह 8 दिसम्बर 1977 से कमांडिंग ऑफिसर 13 ब्रिगेडियर (गंगा जसलमेर) में मवा रत हैं। श्री लक्ष्मण सिंह ना लेफ्टीनेंट कर्नल के पद पर ब्रिगेड चरम ए० पा० आ० में बही है। इसमें भारत पाक युद्ध 1965 साहौर क्षेत्र में और भारतपाक युद्ध 1971 बाहमेर क्षेत्र के मोर्चे पर भाग लिया था। उनका तृतीय भाई श्री रिसाल सिंह एम०बी०बी०एस० डाक्टर हैं तथा चौथा श्री जुमल सिंह सभ्य नागरिक है।

गारबदेशर का यह घराना शिष्ट, समझदार एवं बड़ा व्यवहारिक है। ऐसी अनेक विभूतियाँ का निवास होने के कारण ही गारबदेशर अधिक प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में अपना क्षेत्र का विकास, सुधार और कष्ट निवारण सहयोग करने वाला गारब देशर का सुदृढ़ हृदयधर डेढ़ दशक पुराना सरपंच श्री राजूराम चौधरी है। पहला सरपंच सेवा निवृत्त मेजर श्री उदयसिंह राठौड़ थे।



ले० कर्नल श्री लक्ष्मणसिंह

गारवदेशर के भक्त किशनसिंह की लोक वार्ताएँ

सौन सैं सतालवे माह सुद नमो प्रमान ।

नागयण के भगत निज, जनमे किसन सुजान ॥

गारवदेशर के ठाकुर श्री किशनसिंह जी की इस खेन म अनेक आध्यात्मिक चमत्कारिक तथा विचित्र भवितमयी कथाएँ जनता के हृदय पर आज भी वंजयति स्वरूप लहरा रही हैं । उममे से चार उज्ज्वल मुक्ता निकालकर अवलोकनाथ नीचे निखे हैं—

कहते हैं—ठाकुर श्री मुरलीधर भगवान के बड़े भक्त थे । व प्रातः काल नित्य उनका भोग लगाया करते थे । एक बार बीकानेर महाराजा के साथ रात भर से यात्रा में चल रहे थे । रास्ते में ब्राह्म मुहूर्त हो गया । तब किशनसिंह जी ने घोड़े पर चलने ही मुरलीधर जी का मानसिक भोग (प्रसाद) लगा दिया । ध्यान मग्न देखकर महाराजा साहब ने पूछा—“किशनसिंह जी नींद लेते हो ?” बोले—“नहीं अनदाता” देखा तो घोड़े पर पंचामृत (दूध, दही, मधु, मिश्री, घतादि से घना पदार्थ) बिलर गया । महाराजा साहब ने भगवान की पूजाथ वही पढाव लगा दिया ।

एक बार महाराजा बीकानेर के समक्ष आलोचना हुई कि ठाकुर किशनसिंह अपन पास साधारण (लकड़ी का) तलवार रखते हैं । महाराजा ने ठाकुर साहब को तनब किया और तलवार को देखा । तब सब ठाकुर उमरावों की तलवारों से उनकी तलवार श्रेष्ठ एवं सुंदर पाई गई ।

एक बार गांव गारवदेशर के ठाकुर किशनसिंह अपनी रकम (चौध या खिराज) निश्चित समय (अक्षय तृतीया) पर राज्य के खजाने में जमा नहीं करवा सके । काफी समय बाद भय तथा सज्जा वश रकम लेकर बीकानेर राज्य के खजाने पर उपस्थित हुए, तब राज्य के खजाने की जमा हुई रकम की पड़त रसीद लिखाया गया— आप तो यथा समय रकम भर चुके हैं ।

गारवदेशर का ठाकुर श्री किशनसिंह प्रातः सायं नित्य प्रति एक प्रहर भगवान श्री मुरलीधर जी की माला फेरा (सध्या वन्दन) करते थे । उस समय वे अथ काई भी काम नहीं करते और बिल्कुल मौन तथा ध्यान मग्न रहते थे । एक बार रात्रि के प्रथम प्रहर में जब वे माला फेंगते बड़े तो उनके घर में घुस कर दो चोर, टोडिया (जवान ऊँट) खोलकर ले गए । चोर जानते थे कि श्री ठाकुर ने तो अब सोलेंगे और न तो प्रह में पहले उठेंगे । तब तब अपन बहुत दूर चले जायेंगे । क्योंकि टोडिया बहुत तेज चाल में चलने वाला है । वसा ही हुआ । ठाकुर ने तो माला से उठे और न ही टोडिये की चोरी की बात किसी को बताई ।

उधर चोरों ने टोडिये का दीड़ाया और एवं प्रहर में काफी यात्रा कर टाली । आगे रास्ते में एक गांव आया । चोरों ने पूछा—“कौन सा गांव है ? किसी ने बताया गारवदेशर ।” चोरों ने टोडिये की फिर गांव से बाहर निकाल कर बड़ी तेज चाल से दीड़ाया । आधी रात के बाद रास्ते में फिर एक गांव आया । चोरों ने पूछा ‘गांव कौन सा ?’ किसी ने कहा— गारवदेशर मान गये ! चोरों ने फिर चढ़कर दूसरे भाग पर टोडिया दीड़ाया । आगे फिर वही गांव गारवदेशर आया । प्रातः ठाकुर माला फेंगते बड़े, चोर उनके घर में टोडिया खूटे बाघकर चुपके से चलते बने ।

सुरी चमक भाग्या तब डकर मरी मृग डीण ।

चूक ध्यान उधरे मचल कूट पश्यो वेदीण ॥

(किशन प्रकाश)

भक्त जन भगवान के भरोसे, उनके घर अन का तो अभाव ही रहता है। क्या हा गई, खेत कैसे बीजाएँ जाय ? ठाकुर प्रात माता फेरकर उठे तब घर पर बाजरी की छाटी आई दिखाई दी। साथ के व्यक्ति न ठाकुर साहब से पूछा—“छाटी कठे खिणावा ?” (बोरा कहाँ गिराये ?) ठाकुर साहब न अपन बोठे की ओर सकेत कर दिया। वह व्यक्ति बाजरी का बोग काठे में डानकर चला गया। उस सुवात की फसल से बाजरी निकाल कर ठाकुर ने एक के बदले दो छाटिया भरवाकर अज्ञात दिशा को भिजवा दी।

कहत हैं—श्री विशनसिंह के समय म मुरलीधर के श्री मुख स नित्य प्रति स्वण उगला जाता था, जिसे ठाकुर दान कर दिया करते थे।

दूर कियो पडयो तभी, भूप किसन कुल भाण ।

मूरत उगळयो सुवरण मुख पासा सवा सुमान ॥

कुबिया—गाव कुबिया बालू स चार कोस पूब में है। यह गारबदेशर स कुछ कास ही रहता है। इस गाव का नाम ठिकाना में नहीं आता। किन्तु यह गाव इतिहास प्रेमी, महान विद्वान साहित्यकार तथा सुकवि श्री दयालदास सिंहायक की ज म भूमि है। इसलिए इस गाव को विशेष माना है। एक बार विपत्तिबशात् गारबदेशर के भक्त कवि किसनसिंह को गाव कुबिया आकर रहना पडा था।¹ क्योंकि उसके बड़े भाई बापसिंह (पुत्र राजसिंह) न इसकी निकाल दिया था।² फिर बापसिंह स्वयं भा विपत्ति विधान में जा गया और कुबिया से ठाकुर किसनसिंह को मना कर वापिस बुलवा लिया। उस समय यह गाव कूबनगर कहलाता था।³ इसके पास जापरसर नाम का एक ग्राम बसता है वह कुबिया और चाँदसर के मध्य में है।⁴

श्री दयालदास का जन्म लगभग वि० स० 1855 और देहावसान वि० स० 1948 का माना जाता है। दयालदास को कुबिया, मानेरा एव वासी आदि अनेक गाव मिले हुए थे। इनके प्रपौत्र ठाकुर आवठवान और पुत्रो ने कुबिया गाव की मान-मर्यादा एक बार रोक दी थी। आखिर उसने वक्षधरो के इधर उधर भटक जाने पर ही कुबिया गाव अब उसी जगह पुन बसा है। श्री दयालदास सबधी एक गीत “पवार-वश-दपण” (संपादक—डा० दशरथ शर्मा एम० ए० डी० लिट०) से उद्धृत है। यथा—
गात—दयालदास सिंहायक रो (मातीसर मिनजी रो कहियो)

- | | |
|---|---------------------------------|
| 1. वसे आय कुबिया बिच, दिन त्रिय किसनदयाल ।
घर कब भीयोल का कमधजराय कृपाल ॥ | } किसन प्रकाश
ले०—गोविन्ददान |
| 2. राय किसन बाहर रहै आत असरच भूप ।
दिल्ली राय सग बाघ रहै, राज सभा का रूप ॥ | |
| 3. सोजन किरण कू सज्यो, ओठी कियो उछाह ।
कूबनगर मिलिया किसन, कही हकीकत साह ॥ | |
| 4. दक शशि के विच बसै, असल चोर अनाण ।
सायर करसी सोचना, अथ न हवै अजाण ॥ (जापरोचोर) | |
- कवि श्री गोविन्ददान ।

गीत साणोर

लगी थूल जरतार हाथ्या कुनण झालरी ताम सिणगार तापर ताजा ।
 तवा वणि भार दातार दयाला तन, रोझ मुज पूज खिरदार राजा ॥ 1 ॥
 ग्रथ पढवेम कुवम कलम रख गुण, भाग वधवेस अब ब्रह्म भाले ।
 पली घर देस राजेस मुरतव थयो, अप गजनेस रतनस वाले ॥ 2 ॥
 हान बज नकीवा बघारे हुवेली, भुयण जस उवारे गुमर भोजा ।
 इण तर तने सुरतेसहर उघार दान वून बघार दान बीजा ॥ 3 ॥
 जाठ ता हस्त श्री हाथ ढोले खबर, दान माती बडा आष बोघो ।
 सिढायष काष थारा वध सिगेमणि खुरब निज नाप दीकाण कीघो ॥ 4 ॥
 जबर सामाज साजा मन जलवा, वाज वातल भडा खेर बहिया ।
 बिद्यासिध राज खेतल तणा बेखता कमधजाधीस नविराज कहियो ॥ 5 ॥

खारडा—यद्यपि खारडा बीकानेर तहसील के पूर्वी किनार का पुराना गांव है, तथापि कालू का काकडसीमाड़ी पंचकोसी पडोसी गांव होने के कारण उसका उल्लेख कर देना आवश्यक समझा है। जसे इसके नाम से ही विदित होता है कि गांव का पानी भीठा नहीं है, पर पृथ्वी माता का मजीठा गुण गौरव है। इसके समीप राजपुरा नाम का ग्राम पहले ओसवाल महाजनो का वास था। वि० सं० 1944 में राजपुरे से सात भाई नाहटा परिवार व वहाँ से उठकर कालू आ बसे हैं। नाहटो के माथ उनका पारिवारिक कार्यकारी भाई भी चला आया। एक रावतमल मालू नाम का बनिया भी उस समय राजपुरे से आकर कालू रहने लगा था। सरगढाहर के प्रसिद्ध सठ भगाली उसी समय राजपुरा गांव छोड़कर वहा गये थे।

खारडे में सारस्वत ब्राह्मण गोदारे जाट राजपूत और राकावत स्वामी आदि जातियां के समाज हैं। यहां की भूमि अच्छी है। खेत उपजाऊ हैं और आदमी आदर्य होते आये हैं। खारडे के कवि प० हिम्मताराम सारस्वत जम्भू शाहीर तक बुलाये जाते थे। उनको कई देगी रजवाडा से भी रयाई जलाऊस (बधा पटिया बगरह) मिलता था। छदों की कविता, बुलंद गूज और कवि रूप में गीवीले रहते थे। सारस्वत समाज में खारडे के पंच सदा से मान्य होते आये हैं। इस समाज में था रामूराम तक्डे व्यापारी हैं।

खारडे के प्राचान ठिकान व राजवी सरदार या मदनसिंह के पुत्र खेतसिंह का हाथ लक्ष के लिए वि० सं० 1905 में महाराजा रतनसिंह ने हाटला, वि० सं० 1912 में महाराजा सरदारसिंह ने खारडा और महाराजा हूगरसिंह ने उसको दोरार गांव बरसा था। गंगासिंहजी ने खेतसिंह के पुत्र भरु सिंह का जयसिंह देशर दिया और फिर तेजरासर गांव भी दिया था। श्री भरु सिंह को ढेंके ढेंके पद तथा सम्मान मिले। ये डयोढो वाले राजवी सरदार थे जिनको महाराज व बहादुर की प्रतिष्ठा प्राप्त थी।

गांव खारडा में शिक्षा सुविधा हेतु अब राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय है। और पंचायत, पटवारी की काय सुविधा भी सुव्यवस्थित प्रसारित होती है। वर्तमान तहसील लूनकरनसर में भरु सिंह के पुत्र अजीतसिंह (हीरोसा) काफी काफी समय तहसीलदार रहे।

सहजरासर—सहजरासर गांव के दो बास हैं। यह कालू से नौ मील पश्चिम में है, जिनमें चारे मीठे पानी के अलग आग बूरे हैं। दोनों बामा की आपसी दूरी एक

किसीमीटर है। यहाँ प्राचीन स्तम्भ और मंदिर है। मण देवता श्री केशवजी कबर का अच्छा स्थान है।

महजरासर के घू० पू० ठाकुर वन् मेहता जासमान थे। उनके पूज्य का मूल निवास भीनमाल बताया जाता है। महोर पर गज चूना का अधिकार हुआ तब वदो ने अधीनता मानी। वि० स० 1522 में जोधाजी की उच्छा में वद महता पीराजी के साथ आये। बीकानेर राज्य स्थापित हुआ, वेद ओहदा पदा पर चढ़े। इनकी बीकानेर पाँचवी पीढ़ी में ठाकुरसिंह, महाराजा रायसिंह का आमात्य था। उसके लड़के मूलचंद ने श्री सूरतसिंह जी से नोरगदेसर गांव पाया था। उसका छोटा भाई अबीरचंद बीकानेर से दिल्ली में राजकीय वकील था। बीकानेर से मूलचंद के बेटे रायसिंह को राजपूताना के एजेंट गवर्नर जनरल के पास वकील काय हित रखा। हिंदुमल चंद मूलचंद का दूसरा पुत्र, बड़ा प्रभावशाली और कुशाग्रबुद्धि का था। मदन 1896 में उदयपुर के महाराणा न हिंदूमल को ताजीम का सम्मान दिया था। उसने उत्तरी निजन जंगल का राज्य में मिलाकर बीकानेर की सीमा कृद्धि करवाई थी।¹ वि० स० 1884 में सूरतसिंह जी ने इनको दिल्ली में वकील नियुक्त किया था। रतनसिंह जी ने अपना मुख्य मंत्री बनाया एवं महाराज की उपाधि दी। वन् को अनेक बार ताजीमाहि सम्मान मिले। सरदारसिंह जी ने इनको मुद्रा लगाने का अधिकार दिया था। इमर सिंह जी ने अमरसर, पलाना गांव दिये। इनके हरिसिंह गुमानसिंह जसवंतसिंह नाम के पुत्र थे। जसवंतसिंह के आदेशानुसार दयालदास न स० 1927 में देशदण की रचना की। हरिसिंह के किशनसिंह सवाई सिंह फिर उम्मेदसिंह हुए। हिंदुमन का दूसरा पुत्र गुमान सिंह था। सवाई सिंह का ज्येष्ठ पुत्र रामसिंह गुमानसिंह के पुत्र जधानीमिह के दत्तप गया। रामसिंह का पुत्र धनपतसिंह सहजरासर का अंतिम ठाकुर रहा।

उस समय महजरासर में गोधूमग पटवारी और मागजी हवलदार यहाँ तक कायशील रहे थे। इस गांव की भूमि सदा से उपजाऊ रही है तथा अब उसका कुछ भाग नहरी क्षेत्र में आ गया है। गांव का एक तालाब 'महजराणा' कालू के पास पर है। वर्तमान समय में सहजरासर का मरपच श्री पनगम गर्मा है जो पहले नौ गाँवों की 'दाय पचायत (कायालय कालू)' का पंच भी रह चुका है।

खारी—नूनकरनसर तहसील में खारी सदा से भीठे पानी वाले गाँवों में गिना जाता रहा है। पहले पहल बीकानेर से भटिण्डा रेलगाड़ी चली तब इन्जन की खारी से पानी प्रदान किया जाता था। रेलवे ने खारी के कुण्ड में मशीन बठाकर पूजा चलाने के लिए अपने कई कमचारी रख दिये थे। खारी में तालाब भी गाँव के पास ही है तथा गाँव

1 प्राचीन समय में बीकानेर राज्य और भावलपुर पञ्जाब की सामाएँ निश्चित नहीं थी। तब हिंदुमल ने ऊँटों द्वारा वहाँ पहुँचकर कमचारियों से दूर-दूर तक कोयलो और राख से भरी हाडियाँ गडवा दी। थोड़े समयोपरगत उन राज्या को बंदोबस्त हई और बीकानेर राज्य का वहाँ सीमाएँ माय रनी। तब वहाँ उसके नाम पर "हिंदूमल कोट" नाम का गाँव आबा करवाया गया (राज्य का सत्य एवं गोपनीय क्या) दयालदास की अय रचनाओं में वद हिंदूमल का पंच गीन है।

2 धनपत सिंह की स्नेह मयी आत्मजा चंदन कुवर का विदाह वि० स० 1991 माघ में कालू के सेठ मुगन मल नाहटा के पुत्र भीखमचन्द के साथहर्षो लाम राज्य गीति से हुआ था।

के बीच प्राचीन पक्का एक मंदिर है। एक साध्वी माई (माया नाथ) का सुन्दर आश्रम धीरेरा के रास्ते पर गाँव के पास स्थित है। खारी के ठाकुर जोधा के पुत्र तथा दूदा के पोत्र प्रसिद्ध राव जयमल मेड़तिया के पुत्र माधवदास के वंशधर रहे हैं। महाराजा झगरसिंह न वि० स० 1934 में चौदमिह मेड़तिया गठौड की तारी की जामोर और ताजीम का सम्मान दिया था। श्री प्रतापसिंह यहाँ का अंतिम ठाकुर था।

चौधरा श्री मंगलाराम के आत्मज भीमसेन (भू० पू० क्षेत्र के विधायक) खारी के धीरेरा स्टेशन के निवासी हैं। 'निर्याम' पत्र के संपादक श्री सूर्यप्रकाश शास्त्री रतनगढ़, उनका भतीजा प्रोफेसर ईश्वरानन्द सारस्वत (जन्म 1985) बीकानेर तथा उनकी पुत्री वाइस प्रिंसिपल डा० पुष्पलता आदि सब सज्जन खारी के इस गिह धीरेरा कण्ठांतर बंधा, मोनानियाँ आदि गाँवों से जन्म प्रतिभा लेकर बाहर गए हैं। धीरेरा स्टेशन पास में एक अमरनाथ नाम का मन्दिर वहीं से योग गिथा (15 वर्ष का उम्र में) लेकर वर्षों से सफल याग साधनाशील है। खारी के साध्वी आश्रम में श्री अनक माधुसूत विश्राम हनु आकर ठहरते हैं। दूसरे इस गाँव में जन्मे और बालू के सत भानीनाथ की जगह में रह सेवानाथ एक योगीराज थे। इन पवित्रियों के ललक की जन्म भूमि खारी है। इस गाँव के गरिमाय पानी की विशेषता है कि निकटोय क्षेत्र में अनक विधूनिया न जन्म लेकर अपनी विशिष्टता दिखाई है।

सुरनाणा—सुरनाणा जिल्ला जाटा का पुराना दलीव गाँव है। यह लूनकरनसर कस्बे से 5 किलोमीटर पश्चिम में जाबाद है। इस गाँव के वासिदगान बड़े पशुपालक एक धनवान हैं। खेती और भेड़ पालन का धंधा करते हैं। पहले सुरनाणा गाँव राठौडों का रणमसोत कमसोत शाखा का बड़ा ठिकाना माना जाता था। यहाँ का भू० पू० ठाकुर झूरसिंह वि० स० 1961 से राज्य सेवा में बड़े बड़े जोहदा पर रहा। उसकी तहसीलदार, इन्स्पेक्टर नाजिम कमिशनर आदि पदों नितियाँ हुईं। ताजीम, राव-बहादुर आदि का जिला सम्मान मिले। वे तीन बार इम्प्लंड गये थे। ठाकुर का पुत्र श्री जुगल सिंह तहसीलदार, बड़ा मिलनसार व्यक्तित्व का धनी था। इन पवित्रियों का लेखक (अध्यापक लूनकरनसर) का मायवर मित्र था। सन् 1948-50 तक श्री जुगल सिंह लूनकरनसर तहसील में तहसीलदार रहे तत्कालीन पट्ट (रणजीत सिंह) नाम का उनका एक लड़का स्कूल में पढ़ा करता था सो अब व्यापार के क्षेत्र में नाम कर रहा है। सुरनाणा गाँव में पहले बूझा नहीं पानी की कुइयाँ थी। अब नहर आ जान से पीने के पानी का तथा अन्य उपजान की अच्छी सुविधा हो गई है। यहाँ के गोठार जाट प्रसिद्ध हैं।

सिपेरा—भडाण (एक जल विहीन क्षेत्र) के मध्य सिपेरा एक बड़ा गाँव है। इसमें प्रतिवर्ष माघ सुदी 10 को श्री राम देवजी का बहुत बड़ा मेला लगता है। इस गाँव में बूझा नहीं पानी की कुइयाँ हैं। कहते हैं—श्री राम देवजी महाराज की श्रृंखला से कुइया का पानी कभी नहीं सूखता। अब नहर के जल की प्रशंसा है।

सिपेरा के भू० पू० ठाकुर पूरसिया नाटी रहे। वहाँ के वनसिंह बीकानेर की पौत्र में लेफ्टीनेंट बनल थे। अजय सरकार ने उन्हें राव बहादुर की उपाधि दी और महाराजा साहब के ए०डी०सी० तथा बीकानेर राज्य के गिलीटिंगे सेक्रेटरी भी बने।

सिपेरा, तहसील लूनकरनसर का सुगहाल गाँव है। इसकी रीतक यहाँ के प्रसिद्ध रामदेवरे के कारण है। यहाँ जानकी नाथ बाबे का बाटी है और अब सक्क बन गई है।

किलोमीटर है। यहाँ प्राचीन स्तम्भ और मंदिर हैं। गण देवता श्री केशराजी कचर का अच्छा स्थान है।

महजरासर के भू० पू० ठाकुर वद मेहता जीमवान थे। उनके पूज्य का मूल निवास भीनमाल बनाया जाता है। मंडोर पर राव चूडा का अधिकार था तब वदों ने अधीनता मानी। वि० स० 1522 में जोधाजी जी इच्छा में वद मेहता बीकाजी के साथ बाये। बीकाजी राज्य स्थापित हुआ, वद ओहदा पदा पर चढ़े। इनकी बीकानेर पाचवी पोली में ठाकुरसी, महाराजा रायसिंह का आमात्य था। उसके लड़क मूलचंद न थी सूरतसिंह जी से नोरमदेसर गाँव पाया था। उसका छोटा भाई अबीरचंद बीकानेर से दिल्ली में राजकीय वकील था। बीकानेर से मूलचंद के बेट रजिंदरसिंह को राजपूताना के एजेन्ट गवर्नर जनरल के पास वकील काय हित रखा। हिंदुमल वद मूलचंद का दूसरा पुत्र, बड़ा प्रभावशाली और कुशाग्रबुद्धि का था। सन् 1896 में उदयपुर के महाराजा ने हिंदुमल को ताजीम का सम्मान दिया था। उसने उत्तरी निजन जंगल को राज्य में मिलाकर बीकानेर की सीमा बढ़ि करवाई थी। वि० स० 1884 में सूरतसिंह जी ने उसको दिल्ली में वकील नियुक्त किया था। रतनसिंह जी ने अपना मुख्य मंत्री बनाया एवं महाराज की उपाधि दी। वदों को अनेक बार ताजीमादि सम्मान मिले। सरदारसिंह जी ने इनको मुद्रा सगान का अधिकार दिया था। इंगर सिंह जी ने अमरसर, पलाना गाँव दिये। इनके हरिसिंह गुमानसिंह जसवंतसिंह नाम के पुत्र थे। जसवंतसिंह के आदेशानुसार दयालदास ने स० 1927 में देश रक्षण की रचना की। हरिसिंह के किशनसिंह, सवाई सिंह फिर उम्मेदसिंह हुए। हिंदुमल का दूसरा पुत्र गुमान सिंह था। सवाई सिंह का ज्येष्ठ पुत्र रामसिंह, गुमानसिंह के पुत्र जधानीसिंह के दत्तक गया। रामसिंह का पुत्र धनपतसिंह सहजरासर का अंतिम ठाकुर रहा।

उस समय सहजरासर में गोधूराम पटवारी और सायजी हवलदार वहाँ तक कायगील रहे थे। इस गाँव की भूमि सदा से उपजाऊ रही है तथा अब उसका कुछ भाग नहरी क्षेत्र में आ गया है। गाँव का एक तालाब 'महजराणा' कालू के गले पर है। वर्तमान समय में सहजरासर का सरपंच श्री पनराम गर्मा है जो पहले नौ गाँवों की माय पचायत (कायालय कालू) का पंच भी रह चुका है।

खारी—नूनकरनसर सहसील में खारी सदा से भीठे पानी वाले गाँवों में गिना जाता रहा है। पहले पहल बीकानेर से भटिण्डा रेलगाड़ी चली तब इजन का खारी से पानी प्रदान किया जाता था। रेलवे ने खारी के कुएँ में मशीन बँटाकर फूँटा पलाने के लिए अपन कई कमचारी रख लिये थे। खारी में तालाब भी गाँव के पास ही है तथा गाँव

1 प्राचीन समय में बीकानेर राज्य और भावलपुर पंजाब की सीमाएँ निश्चित नहीं थी। तब हिंदुमल ने ऊँटा द्वारा वहाँ पहुँचकर कमचारियों से दूर-दूर तक कोयला और राख में भरी हाँडियाँ गडवा दी। बोहे ममयोंपगत उन राज्यों की बदौलत हुई और बीकानेर राज्य की बड़ा सीमाएँ माय रही। तब वहा उसके नाम पर "हिंदुमल कोट" नाम का गाँव आबाद करवाया गया (राज्य की सत्य एवं गोपनीय कथा) दयालदास की अंतिम रचनाओं में वद हिंदुमल का पंच भीत है।

2 धनपत सिंह की स्नेह मयी आत्मजा चंदन कुचर का विवाह वि० स० 1991 माघ में कालू के सेठ मुगन मल नाहटा के पुत्र भीमचंद के साथ हर्षोल्लास राज्य रीति से हुआ था।

के बीच प्राचान पक्का एक मंदिर है। एक साध्वी माई (भाया नाथ) का सुंदर आश्रम धीरेरा के रास्ते पर गाँव के पास स्थित है। खारी के ठाकुर जोधा के पुत्र तथा दूदा के पोत्र प्रसिद्ध राव जयमल मडतिया के पुत्र भाववदास के बसघर रहे हैं। महाराजा डूंगरसिंह न वि० स० 1934 में चौदमिह मेरतिया राठीड को चारी की जागीर और ताजीम का सम्मान दिया था। श्री प्रतापसिंह यहाँ का अंतिम ठाकुर था।

चौवरी श्री मंगलागम के आत्मज भीमसेन (भू० पू० क्षत्र बं विधायक) खारी के धीरेरा स्टेशन के निवासी हैं। 'निर्याम' पथ के मपादक श्री सुयप्रकाश शास्त्री रतनगढ़, उनका भतीजा प्रोफेसर ईश्वरानंद सारस्वत (जन्म 1985) बीकानेर तथा उनकी पुत्री वाइस प्रिंसिपल डा० पुष्पता आदि सब मज्जन खारी के इंदिरा धीरेरा करणासर बंधा, मालानिया आदि गाँवों से जन्म प्रतिभा लेकर बाहर गए हैं। धीरेरा स्टेशन पास में एक अमरनाथ नाम का मठ वही से योग शिक्षा (15 वर्ष की उम्र में) लेकर वर्षों से सफल योग साधनाशील है। खारी के साध्वी आश्रम में भी अनेक माधुसूत विधायक हनु आकर ठहरते हैं। दूसरे इस गाँव में जन्मे और बालू के मठ भानीनाथ की जगह में रह सेवानाथ एक योगीराज थे। इन पण्डितों के लेखक की जन्म भूमि खारी है। इस गाँव के गरिमामय पानी की विशेषता है कि निचटोय क्षेत्र में अनेक विधूनियाँ न जन्म लेकर अपनी विशिष्टता दिखाई है।

सुरनाणा—सुरनाणा बिसान जाटा का पुराना दठीव गाँव है। यह लूनकरनसर कस्बे से 5 किलोमीटर पश्चिम में आबाद है। इस गाँव के वासिंदगान बड़े पशुपालक एवं धनवान हैं। खेती और भेड़ पालन का धंधा करते हैं। पहले सुरनाणा गाँव राठीडा की रणमल्लात कमसोत शाखा का बड़ा ठिकाना माना जाता था। यहाँ का भू० पू० ठाकुर धूरसिंह वि० स० 1961 से राज्य सेवा में बड़े-बड़े आहवा पर रहा। उसकी तहसीलदार, इंसपेक्टर नाजिम, कमिश्नर आदि पदोन्नतियाँ हुईं। ताजीम राव बहादुर आदि के खिताब सम्मान मिले। वे तीन बार इंग्लैंड गए थे। ठाकुर का पुत्र श्री जुगल सिंह तहसीलदार, बड़ा मिलनसार व्यक्तित्व का धनी था। इन पण्डितों के लेखक (अध्यापक लूनकरनसर) का मायवर मित्र था। सन् 1948-50 तक श्री जुगल सिंह लूनकरनसर तहसील में तहसीलदार रहे तत्समय पट्टु (रणजीत सिंह) नाम का उनका एक लटका स्कूल में पढ़ा करता था सो अब व्यापार के क्षेत्र में नाम कर रहा है। सुरनाणा गाँव में पहले कूआ नहीं पानी की कुइया था। अब नहर आ जान से पानी के पानी की तथा अन्न उपजान की अच्छी सुविधा हो गई है। यहां का गादर जाट प्रसिद्ध है।

खियेरा—मडाण (एक जल विहीन क्षेत्र) के मध्य खियेरा एक बड़ा गाव है। इसमें प्रतिवर्ष माघ मुदी 10 को श्री राम देवजी का बहुत बड़ा मेला लगता है। इस गाव में कूआ नहीं पानी की कुइया है। कहते हैं—श्री राम देवजी महाराज की कृपा से कुइयो का पानी कभी नहीं सूखता। अब नहर के जल की प्रतीक्षा है।

खियेरा के भू० पू० ठाकुर भूगलिया भाटी रहे। वहाँ के बंसिंह बीकानेर की पौज में लेफ्टिनेंट कनल थे। अंग्रेज सरकार ने उन्हें राव बहादुर की उपाधि दी और महाराजा साहब के ए०डी०सी० तथा बीकानेर राज्य के मिलाटरी सेक्रेटरी भी बने।

खियेरा तहसील लूनकरनसर का खुन्हाल गाव है। इसकी रौनक यहाँ के प्रसिद्ध रामदेवरे के कारण है। यहाँ जानकी नाथ बाबे की बाड़ी है और अब सड़क बन गई है।

ऊँचाइडा—ऊँचाइडा गाव अपने नामानुरूप वास्तव में एक ऊँचे धोने (टीरे) पर बसा है। यह सुरनाणा और हूँसेरा से सामने दिखाई देता है। यहाँ नीचे नहर का पानी बहा गया है और अच्छी खेती होती है। वि०स० 1918 (ई०स० 1861) में महाराजा सरदार सिंह न तवर लक्ष्मणसिंह के पुत्र देवीसिंह को ऊँचाइडा की जागीर प्रदान की थी। जिसकी बातों परसगियो (समे सम्बन्धियों) में होती थी। इनके आविरी ठाकुर मोहब्बतसिंह रहे। तभी से ऊँचाइडा तहसील का ऊँचा गाव है।

केला—केला पहले पूगलिये कल्हणोत भाटी सरदारों की जागीर थी। वहाँ का एक केलाणिया भूत भी दूर दूर तक प्रसिद्ध था। भूत यात्रियों का दिखाई देता था। लेकिन किसी का डराता घमकाता नहीं, मदद किया करता था। कहते हैं कि भूत लान वाले लोगों को ऊँटों पर छाटी (बारा) लगा दिया करता था।

बडेरण—बडेरण इस क्षेत्र का पुराना ऐतिहासिक गाँव है। राठीड राज्य का श्रेष्ठ सूरवीर स्वामी वीरमदेव (जन्म वि०स० 1400) वि०स० 1437 में दल्ला जोइया के पास आकर यहाँ रहा था। यह बडा वीर, साहसी, दानी परोपकारी और उदार व्यक्तित्व था। वह अपने साथ बहुत सारे राजपूत रखता था। उनके व्यय हित ग्राही काफिले और उनकी पैदाशाला लूट लेता था। जोइया न सत्यमय वीरमदेव को बडेरण गाव रहने को दिया था और अपनी जाय में से कुछ हिस्सा देना भी तय कर रहा था। जोइयो ने अपनी प्रसिद्ध घोड़ी की बछेरी (ममाघ) जो जगमाल को माँगने पर भी नहीं दी थी, वीरमदेव को चढ़ने हेतु दे दी। ऐतिहासिक ग्रंथों और रवायतों में वीरमदेव का काफी बर्णन तब यहाँ रहना पाया जाता है और जोइयो द्वारा उसे सखबेरा देना भी बताया गया है। क्योंकि उस समय सिंध के शासक से जोइयों का मतभेद चलता था। इसलिए जोइयों उसके (सिंध बादशाह के) भय से भयभीत होकर सहवाण क्षेत्र में वीरमदेव जैसे महापुरुष को अपने पास रखकर उसकी निष्ठा एवं निर्भीक क्षमता का सहयोग लेते थे। ये इसके पक्ष में खड़े में आकर लाये थे।

वीरमदेव सुदूर राठीड राज्य के नीतिज्ञ शासक एवं महान वीर मल्लीनाथ का विमाता से जमा छोटा भ्रातृ भक्त भाई था। मल्लीनाथ का बेटा जगमाल¹ वि०स० 1437 का दुर्नीति का व्यक्ति था। उसने सहवाण सगठन के भय से चाचा वीरमदेव के साथ भूटा झगडा शुरू कर लिया और बाप के सहोदर भाई जतमाल को मार भी दिया था। वीरमदेव की पारिवारिक स्थिति बडेरण में जमी हुई देखकर उसने एक घडमन और रच डाला। वीरमदेव जने अल्प राजनीतिज्ञ सत्य वीर को जगमाल ने अपनी कूटनीति का शिकार बना लिया। जगमाल ने जाल फलाया और वीरमदेव उसमें फँस गया। जगमाल ने अपने कुछ कुचाली आदमी वीरमदेव के पास सहवाण भेजे जिन्होंने सरल चित्त वाले वीरमदेव के मृत्यु-यन्त्र बनकर जोइयों की कत्तार से फरार पाटने और राजा का जाने जैसे दुश्मनी वाले अनेक घुरे काम किये। तब दल्ला जोइया के भाई मधू और देपाल, वीरमदेव से नागज हो गये और उस बडेरण से निजाल दिया। दल्ला तो वीरमदेव का बहुमानमद था। पर उसने जोइयो ने साथ लेकर वीरमदेव की गायें छीन लीं। तब वीरमदेव को बडेरण से कागासर, कँवलासर (कालू के नजीदीकी गाव) आकर रहना

1 पग पग नेजा पाडिया पग पग पाडी डाल।

नीची पूछ खान न जग नेता जगमाल ॥

पड़ा था। फिर भी जाइयों से उसका शगटा चलता रहा और इसी जोड़वावाटी के मुड़ में वीरमदेव (वि०स० 1440) का म आया।

बड़ेरण में वीरमदेव के माथ अनक राजपूत रहने थे और बहुत में स्थाना पर उसकी जानीरें थी। वीरमदेव की दो भयानी साखलियाणी, मांगलियाणी रानिया के नाम भी आते हैं।¹ वतमान में बड़ेरण से थोड़ी दूर के येह वाले कूएँ के पास इसका गड था। वहाँ गड का ककरोट वाला मगरा वीरमदेव के गड का येड है। जिसको मोदने में ह्याथी घोड़ा की लोद वाली काली मिट्टी एव अन्य प्राचीन वस्तुनादि पाये जाते हैं।² इस तरह बड़ेरण इस क्षेत्र का प्राचीन गांव है। इसके पास आज भी सात येड मौजूद ह। हम तथा का सरा वषण "कवि बहादुर और उसकी रचनाएँ" में मिलता है कि वीरमदेव के जीवन से राठौड राज्य और राठौर वंश का बित्ती सुखद उपलब्धिया हुई हैं।

सूई—गांव सूई सैंकड़ो घरों की बस्ती है। यहां के कूएँ का पानी भीठा नहीं है, इसलिए गांव में कुँड अधिक हैं। घामिक मंदिर और पानी के पुराने तालाब ह। सूई स्वास्थ्य नर आथ हवा वाला स्थान कहलाता है। यहां की खेती अच्छी है और लोग खुशहाल हैं। पहले इस गांव में महाजन लोग भी रहते थे। वतमान समय में गांव पंचायत कार्यालय, पटवारखाना, प्राथमिक शाला और पुराना गढ़ ह। गांव का भू०पू० ठाकुर हरिसिंह पंचायत के दायों में पूरा भाग लेता है।

जतपुर—जतपुर गांव, अरजुनसर रेल्वे स्टेशन से 16 मील दूर है। माहेश्वरी-महाजन, ब्राह्मण, सेवक नाई आदि अनक जातिया के साथ मिश्रवान एव ब्राह्मण विशेष जाति है। पोस्ट आफिस एव पंचायत कार्यालय के काम यहाँ के सराहनीय हैं। गांव में अब पानी, पाइप लाइन से आता है। जतपुर एक सटन नहीं हैं, लेकिन मोटरों कच्चे रास्त से आती जाता हैं। जतपुर के भूतपूर्व ठाकुर बने बहादुर हुए ह। गांव का प्रथम बी० ए० (सन 1946) जग नाथ शर्मा सकेण्डरी के प्रधानाध्यापक पद से मेवा निवृत्त हुआ है। यहां का श्रीरामचंद्र बिहानी दाई दशकी से 'माहेश्वरी सेवक' नाम का पत्र निकालता ह। जंतपुर से पाँच कोम दूर कालिका रेवी का प्रसिद्ध घास परनु ग्राम है और थोड़ी दूर मोहर तथा सरदारगढ़ की तहसीलों के गांव लगते हैं।

श्री रामचंद्र बिहानी

कुम्भाना—कुम्भाना नूनवरनसर तहसील का एक अच्छा गांव है। यह नूनवरनसर से दस कोस दूर स्थित है। इस गांव का 'पानी (कुइया का) खारा भीठा है। गांव में दशनीय मंदिर के प्राचीन गढ़ पटवार हनका और पंचायत भवन व पाठशाला है।

1 साखलियाणी मांगलियाणी दोनों वषण पल्ल।

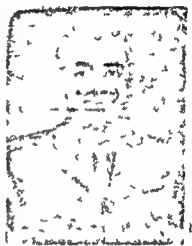
फरास नी वाट ता क७ क्यू चलन ॥

2 बड़ेरण के श्री रामरतन सवागित पुलिस कमचारी दाग।

सरपंच प्रायः महा ईश्वरराम सोनी बना है। कुभाना के भूतपूर्व ठाकुर रत्नसिंहों की कहलाते हैं। यहाँ का अंतिम ठाकुर सम्मान सिरोपाव युक्त ठाकुर मेघसिंह का पुत्र, दीलतसिंह राव बहादुर था। कुभाना में माहेश्वरी महाजन और सारस्वत ब्राह्मण आदि अनेक जातियाँ वासिदगान हैं। यातायात के लिए सड़क बन रही हैं लेकिन प्राइवेट मोटरों के बिना रास्ता से चलती है।

कुभाना के पास मणेर गाँव के मजर वीर पूर्णसिंह पाकिस्तान के युद्ध में सन् 1965 में गहोद हुए हैं। बीकानेर में पी०बी०एम० हास्पिटल और अजायबघर के रास्ते के मध्य चौराहे पर उनका स्टेच्यु लगा है तथा लूनकरनसर ग्राम पंचायत भवन के अहाते में भी स्व० मेजर पूर्णसिंह का परिचय सहित शहीद नाम स्तम्भ है। उपरोक्त युद्ध के वक्त पाकिस्तान के सैनिक इससे बड़ा भय लाते और इसे सूखी बाला शेर कहते थे।

सक्षिप्त जीवन परिचय—मेजर पूर्ण सिंह का जन्म सन् 1927 में हुआ था। माँ की अनुपस्थिति में इनका लालन पालन पिता श्री कान सिंह जी ने किया। प्रारम्भिक शिक्षा अजमेर के किंग जॉर्ज इंडियन स्कूल में हुई। सन् 1945 में बीकानेर ट्रेनिंग सेंटर में कडेट के रूप में उनकी नियुक्ति हुई। इनका विवाह अवकाश प्राप्त सैनिक ठाकुरलाल सिंह की सुपुत्री से हुआ। 1946 में स्टेट आर्मी के सैनिक सलाहकार ने प्रभावित होकर उच्च प्रशिक्षण के लिए सैनिक अकादमी देहरादून भिजवाया जहाँ 1947 में कमीशन मिला। इनकी प्रथम नियुक्ति करणी इफेक्ट्री में हुई। अपने सेवाकाल में बहुत सी मूनिटा एवम पदों पर कार्य किया। 1964 में आपकी पदोन्नति मेजर रक पर हुई और 16 वीं पंजाब रेजीमेन्ट से तेरहवीं ब्रिटेनियर रेजीमेन्ट में तबादला कर दिया गया। वहाँ आप सी'कम्पनी बमार्डर नियुक्त हुए और इसी साथ अनूठी वीरता का परिचय देकर 1965 में भारत-पाक युद्ध में वीर चक्र अर्जित किया। 30 नवम्बर 1965 को दुश्मन से लड़ते हुए यह बहादुर वीर, अमर शहीद हो गया।



अमर शहीद मेजर पूर्णसिंह

चरित्र—मेजर पूर्ण सिंह शीघ्र साहस की मूर्ति थे। जोश में समुद्र सा उफान और ज्वालामुखी सी गर्मी थी। हँसते-हँसते शत्रु से टक्कर लेना उनकी आदत थी। शत्रु उनके नाम से घबराता था। 1950 में उन्होंने सात पाकिस्तानी ढकतों की मौत के घाट उतार दिया। वे अत्यंत लगन से काम करते थे। कुछ सेक्टर में उन्होंने अपनी सूक्ष्मता से आठ पाकिस्तानी जासूसों का गिरफ्तार किया था। इस कार्य की प्रशंसा जनरल बरार ने की थी।

व एक सच्चं कमयोगी, व वफादार सैनिक थे। उनको जो भी कार्य सौंपा जाता उसको वे पूरी ईमानदारी से पूरा करते। उनकी यह इच्छा रहती थी कि अधिक से अधिक शीघ्र प्रदर्शन का अवसर मिले। 24 घंटे के अंदर सादेवाला पोस्ट पर अधिकार

करना तथा एक मजर सहित 22 सनिको की मोत के घाट उतार देना, बीरता की एक अनूठी मिसाल है।

वे बचपन से ही प्रतिभावान, अध्यवसायी व्यक्ति थे। इसी कारण केवल 19 वर्ष की अवस्था में कमीशन प्राप्त करके भारतीय सेना में लेफ्टीनेंट बन गये। जहाँ भी रहते थे, अपने व्यवहार से सब में प्रिय हो जाते थे। 1965 में कच्छ युद्ध के समय वे गडरा गेट पर तैनात थे। वहाँ की जनता और सरपंच ने सम्मान में उन्हें अभिनन्दन पत्र और चादर भेंट की थी।

वे अपने अधीन काम करने वालों के सुख दुःख का ध्यान रखते। उनके घर सुख दुःख में शामिल होते थे। कम्पनी में श्री पूण सिंह का व्यवहार एक परिवार के मुखिया जैसा था।

वे बीर पिता की सत्तान थे। उनके पिता के शब्द—“पूरण ने हमारे कुल का ब्रम्हा दिया। हमारे कुल की यही रीति है”। इनके पिता भी इसी यूनिट 13 ब्रिगेडियर (गंगा रिमाले) में नायब सूबेदार थे।

क्षेत्र विशेष

लूनकरनसर तहसील के इस रेगिस्तानी क्षेत्र के सनिक सुदृढ़ जमकर लड़ने में सदा से प्रख्यात रह रहे हैं। इस तहसील में ठिकाना के पुराने सरदार फौज में अफसर रहा करते थे। अब राजपूत भी फौज में गुरखोर सैनिक माने जाते रहे हैं। यहाँ के बीरों के उष्णामास सदा से ओजपूर्ण रहते आये हैं। खारबारा, कैला, महाजन, जतपुर कुम्भाना, खियेरा और गारयदेशर के ठाकुरों ने युद्ध के समय अपने कीर्तिमान स्थापित किये हैं¹। दोनों महायुद्धों में युद्धरत (बीकानेर फौज में) लूनकरनसर तहसील के गाँवों के बहुतेरे सरदार उमराव साहस एक गुरखोरता में अग्रणी रहे थे और राज्य से ओहदे तथा पद प्राप्त किये। बीकानेर राज्य के अथ उत्तरदायी पूण पदा के लिए भी समय-समय पर इसी घरानों के व्यक्ति नियमित होते रहे हैं। इन तहसील में बालू से दा कीस दूर आडसर गाँव के श्री रघुनाथसिंह फौज में भेजकर रहे। उनके परिवार से डॉ० श्री हिम्मतसिंह सन 1937 से इम्पण्ड रिटन आई सनन थे। डॉ० श्री हिम्मतसिंह का एक पुत्र मानसिंह वर्तमान में मिलटरी कप्तान हैं और दूसरा धनश्यामसिंह एम० बी० बी० एस०, दिल्ली में डॉक्टर है।

लूनकरनसर तहसील के निकटवी गाँव गाटा के राजबी आज में 50 वर्ष पहले बीकानेर राज्य में बड़े ऑफिसर थे। गाटा के राजबी मोनसिंह ब्रम्हादिग बीफ थे। श्री ब्रम्हादिह तहसीलदार और केसरीसिंह नायब तहसीलदार रहे हैं। य घण्णा नाम से संबोधित किये जाने थे। गाटा के महाजन जो लूनकरनसर में आकर बस गये हैं और राजबियों की आज भी ‘घण्णा’ कहकर फूले नहीं समाते हैं।

- 1 यहाँ तो जाट तथा अन्य जातियाँ के लोग भी बड़ी बीरता से फौज में भर्ती होते आये हैं। गाँव बालू का किनाराम गाँवारा प्रथम विश्व महायुद्ध में गया था तथा रामचन्द्र, द्वितीय विश्व महायुद्ध में मदा के लिए चला गया। बालू के पास के कुबिया गाँव का दीपाराम ब्रम्हा जाट (सन् 1922-1945) फौज में लेख नायब रहा हुआ है। वह ई० सन् 1938-45 में ईराक के बसरा नामक स्थान पर तैनात था। दीपाराम का छोटा भाई लिखमणाराम भी फौज में सनिक रह चुका है।

इस क्षेत्र के अग्र्य प्राचीन गाव—तहसील में भटाण व इस निजल, निजन एवं विस्तृत क्षेत्र का आज से बीस वर्ष पहले शायद ही कोई चाहता अपनाता हो। घषकते घोरे, साय साय करती हवा, भयंकर शर्दी, अपार आंधियाँ, ठबड़-सावड़ भूमि तथा तेज लूएँ चलने वाले इस निवास स्थान के प्रति आकर्षण के बजाय आतंक हाना स्वाभाविक ही था। मूल निवासी आदिम अवस्था में ही रह रहे थे। खारा पानी, मोटा थोड़ा अनाज और कपड़े की जगह अधिकतर दिगम्बर जीवन ही व्यतीत करते थे। खेती करना जंगल में पशुओं को चराना और पानी के लिए दस दस कोस दूर तक भटकना तथा एक दो घड़े (पानी के) प्राप्त करके खुश हाना ही उनका दैनिक जीवन था। वहाँ तक लिले ? उनके घरों में पीने का पानी एक या दो भरे घड़ों (मटकों) से कभी अधिक नहीं मिलता। इन घड़ों के पानी को वे अपर्याप्त के भय से ताते भीतर छुपाकर रखते थे। फूस का टप्पर तथा द्वार की दूटी ऊमलाकवाड़ी खिड़कियों पर लम्बा लोहे का मुठिया ताता हर वस्तु लटकता रहता था। व लोग दिन में एक दो बार ताला खोलकर पानी पी लेते और फिर ताला लगा दिया करते थे। उनकी अपनी दुनिया थी और काम बँटे हुए थे। व न तो ससार को जानते और न ससार उन्हें ही। गाव के दो चार आदमी ही वर्ष भर में एक बार क्षिपकते हुए से बाहर जाते थे। कभी कभार कोई बटाऊ अथवा सरकारी आदमी उनके गाव आ जाता तो लोग मीठे पानी के भर अपन छोटे मटके क्षीपणों में छुपा दिया करते थे वहाँ। तत्समय बीमारवाली, सोढवाला, डूबीवाली, सुभलाई, काहोलाई, महादेववाली, रायमलवाला, जेसों, भुसलकी, साधेरा, खियेरा, भादवा, खिलरिया, सादोलाई, बेगवाला, लसाव, मकडासर, हाफासर, करवाली, अजीतपुरा, माना, माटासर, फूलदेशर, कांकडवाला, भाडेरा, बडेरण, हसेरा, उदेसिया, मोहकमपुरा, उदाना, सूलेरा, सूई, भीखणेरा, मनोरिया, मणेरी, खियाणा आदि ऐसे गाव थे।

लूनकरनसर तहसील में कई गाव बहुत दूर, पच्चीस तीस फुट घोरा के पार सन्निवसित थे। इन गावों की यात्रा में लोग ऊँटों का शोडान हुए रात दिन एक कर दिया करते थे। वहाँ के रास्त बड़े विकट हुआ करते और यात्रियों को रास्ते के लिए बड़ा सावधान रहना पड़ता था। रास्ता खो गया मानो जीवन खो गया। बेचारे ऊँट ही अपना रास्ता पकड़े चलते थे। ऐसी दूरस्थ यात्रा के क्षेत्र में लिखमीसर, हिंदौर, जागीर लखौर, कुम्भासर, खानीसर, हापूसर, राणेरा महादेववाली, धेधडा, सारबारा, तरतपुरा, देवासर, भांडासर, ठुईया, नाकरासर, टालीवाला, सावणियाँ, रामपुरा आदि अन्य गाव रह हैं।

परंतु वर्तमान समय में लूनकरनसर तहसील के उपरोक्त गावा में उक्त कठिनाइयाँ नहीं रहें। तहसील क्षेत्र में नहर का जान से पानी की भीषण समस्या हल हो गई है। वर्तमान से गावों की भूमि पूरी सिंचित हो जाने के कारण वहाँ के लोगों की पाँचा अगुलियाँ भी हैं।¹ राज्य सरकार द्वारा उत्तरी राजस्थान सहकारी दुग्ध उत्पादक

1 उदाहरणार्थ—तहसील का छोटा ग्राम मोहकमपुरा जहाँ पानी के अभाव में पहले अपने प्रत्येक घर के पृथक्-पृथक् कूप दृष्टा करते थे। जो अब करीब 35 की संख्या में खहर बन रहे हैं। पम्पिंग नहर में पानी अधिक बढ़ जाने के समय उसका सेमी नाला खोला जाता है। जो मोहकमपुरा के घोरों में सदैव दरियाव रूप लहराता है। बिजली होती है तब नहर के सब पम्पा से एक साथ पानी छोड़ा जाता है और उसके नहर में न समाने पर सब नाला खोल दिया जाता है। माल में बीसों बार

सध लि० की स्थापना से भी तहसील क दूरस्थ गांवों की यात्राएँ मुश्किल नहीं हैं। उरमूल डेगरी बीकानेर के ट्रक तहसील के सभी गांवों से दूध सवकन का कार्य करते हैं, जिनसे यहाँ के निवासियों को यातायात की भी अच्छी सुविधाएँ हाँ गई हैं। राज्य सरकार द्वारा समय समय पर तहसील के गांवों का उपलब्ध करवाइ जान वाली सुविधाएँ ना इनके विकास में सहायक सिद्ध हो रही हैं। अब सूनकरनसर क्षेत्र एवं करवा अपनी वनानिक सुविधाओं और क्षमताओं के लिए प्रसिद्ध हो गया है।

तहसील क्षेत्र के गांवों की नामावली—1 सूनकरनसर मय ढाणी डेलवा, 2 छहरगदसर, 3 जागीआसन, 4 बाबडईच्छा, 5 कलकल मुक्तेरा 6 कालवास, 7 कालू, 8 नानीपुरा, 9 बासी चानान, 10 जेलसर, 11 धीरदाण 12 राँवासर, 13 बास करणीसर (गँवासर) 14 बादसर, 15 नकोदेसर, 16 ताफरसर, 17 नाथूसर, 18 आडसर, 19 राजासर उफ करणीसर, 20 ढाणी पाण्डुसर 21 पन्चारा उफ अमर पुरा, 22 त्रिसनासर, 23 राजपुरा हुडान, 24 मनापरसर 25 गारबदेसर, 26 छदासर, 27 कागामर, 28 बुधिया 29 कपूरीसर, 30 गोपचान, 31 नाथवाणा, 32 मलकासर, 33 भाग मलकोसर 34 पोपेरा, 35 सोझवाली, 36 बीसरवाली, 37 घुमलाई 38 मकडासर 39 मुसलकी, 40 हाफामर, 41 विस्तूरिया, 42 डूडीवाली, 43 राजासर नाटियान 44 बेला 45 सरागपुरा, 46 कुन्दा 47 अम्बाग्न 48 मोटासर 49 अजीतमाना, 50 सखाबर, 51 मोटालाई, 52 बीरमाणा 53 करनाली 54 कुजटी, 55 छारी, 56 सहजरासर 57 धीरेरा 58 बामनवाली 59 उत्तमदेसर, 60 सापेरा 61 मेहराणा, 62 जेसा, 63 दुलमेरा 64 हसेरा, 65 उदेशिया 66 शरह बुधावास, 67 नतावास 68 धीछरवाण, 69 हमीरवास, 70 जाखडवाला, 71 ऊँचाईवा, 72 सुरनाणा, 73 लावराणा 74 मिलेरिया, 75 खिपेरा, 76 रतनपुरा उफ भोबिया, 77 छातीया बास 78 अलौदा, 79 गाटा, 80 मुक्तेरा 81 भादवा, 82 लालेरा पट्टाखिपेरा 83 महाजन, 84 चक बीड सगरेऊ, 85 चक भँवरीया, 86 लालेरा पट्टा महाजन, 87 रामबाग, 88 मिठडिया, 89 राणीसर, 90 घेसूरा 91 चक सुरजपुरा, 92 अरजुनसर, 93 चक अरजुनसर, 94 जैतपुर, 95 नावणिया, 96 टालीवाला, 97 शेरपुरा, 98 रणजीतपुरा 99 भाजरासर 100 दुदेर, 101 गुसाईणा, 102 अतरासर 103 दुदेरिया, 104 जसव तसर, 105 खानीसर, 106, फूलेजी, 107 चक जोड, 108 रामसरा 109 रामपुरा 110 जगतसिंहपुरा, 111 चकअतरासर, 112 कुम्भासर, 113 सूई, 114 दुलवासर 115 बखूसर 116 मनोहरिया, 117 श्योदानपुरा, 118 बडेरण, 119 रतनीसर, 120 बालादेसर, 121 बाखडवाला, 122 भाडेरा, 123 उदाणा 124 तेजाणा 125 ढाणी लक्ष्मीनारायणसर, 126 खियाणा 127 सूलेरा 128 मोहनमपुरा, 129 महादेववाली, 130 सादोलाई, 131 गौरीसर, 132 घेघडा, 133 ससार देसर, 134 कानालाई, 135 रायमलवाला (रेणा) 136 बेरावाला, 137 राणेरा, 138 सारवारा, 139 साखनसर 140 गबना उफ खालावाली 141 शेरपुरा, 142 तस्तपुरा, 143 भाडासर 144 देवासर 145 चौदासर 146 गगौर 147 ठोईया 148 नाकरा

ऐसा होता है। जस बिजली जाने पर राजियासर की सिफ्ट से 45 फुट ऊँचा लेकर पानी छाहते ह। उसी समय मल्लनीसर में 80 फुट ऊँचे से पानी खालते हैं। तब पानी बढ जाता है।

सर, 149 मेऊसर, 150 काकरालिया, 151 हिंदीर, 152 सखीर बड़ी, 153 सखीर छोटी, 154 लिखमीसर 155 हाथूसर, 156 रोर्वा, 157 फूलदेसर, 158 हसनीवाला (सगियाला), 159 डेलाणा बड़ा, 160 डेलाणा छोटा, 161 चक फूसदेसर, 162 भोजा-वास, 163 कुम्भाणा, 164 मणेर 165 भुवाला 166 भोखणेर, 167 लाडेर, 168 रेख चूडान 169 आनावस्ती, 170 मेघाणा, 171 अजातमाना ।

तहसील के कुछ मिले मिटे गाव—उनसवीं शताब्दी के मध्यकाल तक तहसील सूनकरनसर में 210 गांव आबाद थे । उनमें से 39 गांव दान दान भूय हुआ और राजस्व के कागजा में उनके नाम मिटा दिये गये । अब तहसील कार्यालय के कागजा में 141 गांव बसते हैं और 30 नए आबाद थेड़-ग्रामों के नाम दज हैं । किंतु कतिपय ऐसे अभाग्य ऐतिहासिक गांव भी इस तहसील के अधीनस्थ आबाद थे, जिनके अब नामानिधान मिलने दुर्लभ हो रहे हैं । अतः एव लेखक ने सूनकरनसर तहसील में 210 गांवों की प्रचलित प्रसिद्ध कहावत के पीछे बुजुर्ग पटवारिया प्रभृति लोगों से पूछकर उन पुराने ग्राम नामों का पता लगाया है, जो अब ग्रामों में मिले मिटे, नीचे दिये जा रहे हैं—

गांव डूमकी (सहारदेशर में), मलकीसर छोटा व चूडाना (मलकीसर में), ढाणी छौली और पलेर (शेरपुरा में) छिपलाई ढाणी निस्वाड़ी राईकावाड़ी (जतपुरा में) ढाणी तागवाड़ी और ढाणी पूरवाना (भूई में), मिरजावाड़ी और दामौड़ाई (गणेर में) चक रामपुरा वाम (कानोलाई में) घनामरा (कुम्भाणा में) माछरावाड़ी (भोजरासर में), पच्चारा (पाण्डुसर के पास थेट), गवना (सानवाड़ी में) रिणो (रायमल वाड़ी में) राय सिंह वाला (मोटर में), हजूरत पुरा (दुदेर में), करनाणा (दुलचासर में), नापासर (राजामर-भाटियान में) बेरा बाडीया और नाहरवाड़ी (सरगारपुरा में) घूडिया मोडरा (केला में), मिलकर अपना नाम खत्म कर चुके हैं ।

यहाँ एक एक नाम में दो ग्राम बसते हैं—जस सहजरासर अरजुनमरा तथा घीरेरा एक दुलमेरा आदि रेल्वे स्टेशन के पास उन्नी पुराने गांवों के नामों में आश्रित उपेक्षित बसते हैं । बुचावाम, खातीवाम, नेतवाम भिखरवास और भोजेवाम जस गांव भी अभाग्य हैं ।

राजस्थान केनाल

इस नहर का राजस्थान की सीमा में प्रवेश मसातावली हैड (मुख्यालय) से होता है । दूसरा हैड इसका सखीवाला का है । इसके पश्चात् नम्बर तीन पर बिरधवाल हैड अति विस्तृत जल भंडार स्थापित है । यहाँ से अलग अलग तीन चार शाखाएँ निकलती हैं । प्रथम, राजस्थान सूनकरनसर लिफ्ट केनाल शाखा प्रसारित है, जो भंडाण क्षेत्र के कुछ भाग की प्यास मिटाती हुई बीकानेर नगर तक पम्प चढ़े पानी का जल पाकर

- 1 क्षेत्र के अनेक गाँवों में पाइपीय नहर का जल और विद्युत प्रकाश पहुँच चुका है । सूरतगढ से बीकानेर बड़ी लाइन (रेल्वे) फीज छावनी हनु निर्माणाधीन है । तारीख 17.2.1983 ई० को महाजन रेल्वे स्टेशन पर एक बड़े अधिकारी द्वारा बड़ी लाइन बनाने का कार्यारम्भ हुआ । यह सूरतगढ से बीकानेर 182 किलोमीटर होगी और इस पर 43 करोड़ का खर्च बताया गया है । बीच बीच नए स्टेशन भी बनेंगे । छावनी का यहाँ एरोड्राम भी बनेगा सूरतगढ से दूसरी ऐसी बड़ी लाइन अनुपगढ जायेगा ।

पहुँचती है। रास्ते में इसके चार पम्पिंग स्टेशन हैं, वे आगे से आगे पानी का उच्च स्तरीय धल देकर प्रवाहित करते हैं। बिरघवाल से लिए पानी की राजियासर के पम्प से ऊँचा घड़ाकर फका जाता है, फिर मसवीसर का पम्पिंग स्टेशन यह काम करता है। बाद में गाव सारा पम्पिंग स्टेशन। अंतिम स्टेशन हुसगसर के ऊँचे टीबो की बतार पर लगा है जिससे बीकानेर नगर और मडल के बहुत से गावों की नहर का पानी मिलता है।

फिर आप एक बार बिरघवाल जस भंडार की जल प्राधार देखने वापिस विस्तृत वरुण म्यूजियम पहुँचिय। वहाँ से द्वाितीय धात्वा "नॉ लेवल ब्राच" नाम से अनुपगड का सारा हिस्सा सींचती है। यह अनुपगड नगर से दक्षिण की साइड को घेरती है।¹ आगे जाकर छत्रगड का क्षेत्र पडसताना और उससे अनुपगड ब्राच का हैड आर० डी०, बटाने वाली, कोडीबद, फूलसर, भाइनर, रावला हैड, खूनीवाला को बाँटती है। किसनपुरा (रावला से आगे 365 हैड) ग्राइड हैंड की ५०० डी०" कुण्डल 32 हैड पी० एच० एम० पडिहारा, 61 हैड इमस व० डब्ल्यू० कालेवाल भाइनर व० जी० डी० लाजूवाला वगैरह स्याना का बड़ा सम्बा रन लती है।

अब आप बिरघवाल हैड का प्रमुख मेन बनाल एक महान नहर का अवलोकन करें, जिमें बड़ी बड़ा नालें चलाई जा सकती है तथा उसके लिए जसलमेर, बाडमेर तक ले जाने की सक्ता स्वर्ण सिंचित सरकारी आयोजनाएँ आबद हैं। गहगाहती, गजना करती, समुद्र रूप रेगिस्तानी रास्ता सपेट सुपयगा भव्य भागीरथी बनी चलती हैं। रावडी भाइनर छत्रगड के पास सत्तासर 620 हैड स पूगल ब्राच जो ककराला, जडा सियासर चौगान, बस्तासर 682 स आगे दतीर ब्राच आदि सम्बी धात्वाएँ बनाती हैं। बड़ा धरानाम दृश्य है। इस विस्तृत क्षेत्र में नहर का जाल सा बिछ गया है। लेखक ई० धनु 1971 का जनरल चुनाव करवाने के लिए मियासर चौगान (नौमेरेवा) केन्द्र पर बीकानेर जिलाधीश श्री जी० रामचन्द्र भीमा द्वारा नियुक्त किया गया था। तब सत्तासर, कणपुरा, कुडल और लाजूवाला, बेरियावाली आदि गाव देखे थे। किन्तु सारे इलाके का देख नहीं सका। एक बार बीकानेर व श्री गुलसीराम मेहतिया द्वारा उधर का थोडा जबानी नहरी वगन मुना और याद रखा तथा घर आकर उसे यहा लिख दिया। फिर अपन शिष्य श्री दुर्गाराम गर्मा से इसे पुन समझकर सदेह मिटा लिया। परन्तु उधर के क्षेत्र की नहर का मुझे पूरा अनुभव नहीं है। सम्भवत उक्त विवरण में अनेकश कमिया व त्रुटिया हो सकती हैं।

प्रादेशिक समानता—इस मस्त क्षेत्र के विकास हेतु तहसील के गाँवों से कुछ लागा के सराहनीय मल प्रयास रहे हैं। फिर भी अभी इस क्षेत्र में जो काय अधूरे पडे हैं तथा आरम्भ ही नहीं किय गये हैं, उन्हें गतिमान बनाने के लिए सबका सामुदायिक, आत्मिय एवं ईर्ष्या त्याग हो जाना अति अनिवार्य है।

धसे तो इस प्यासे इलाके के लोगों का वर्तमान जीवन बहुत हर्षित हो गया है। पेय जल समस्या के निराकरण से आम जनता हर्षित आनंदित दृष्टिगोचर हो रही है। सब की पात हो गया है कि जमाना बड़ा द्रुतगति से बदलता जा रहा है

- 1 अनुपगड, बिजयनगर आदि के उत्तरीय हिस्से में महाराजा गंगासिंह ने पहले हा नहर निर्माण काम करवा दिया था।

और लोक के भावी जीवन को समृद्ध एवं सुखी बनाने के लिए बड़े बड़े प्रयत्न चालू हैं। पशु आहार उपलब्धिया, दुग्ध परियोजना, मछली-विकास कार्यक्रम, विद्युतीकरण योजना, मछली नियमन राड विस्तार कार्यक्रम आदि के माध्यम से नव वातावरण तैयार बनता दिखाई दे रहा है। मिर्चाई उपलब्धि के द्वारा मगफली और चने के उत्पादन न तो नुक़्क़रणसं क्षेत्र की काया पलट ही कर दी है। विपुल औद्योगिक क्षमताओं के सबब में भी नये ढंग के कार्यक्रम चालू हो रहे हैं। तेल की मीलों, दाल की मीलों, कपास एवं कपड़े की मीलों भी बन गई हैं। अतः एव लूनकरनसर की अति पुरानी क्षेत्रीय असमानता मिटायी जा रही है। तहसील में प्राप्त खनिज जिप्सम बूना पसर की खनन कार्यवाहिया भी प्राचीन की अपेक्षा अर्वाचीन समय में बड़ी द्रुतगति से हान लगी है। इसी प्रकार गांव गांव और खेत खेत के अभ्युदय से समस्त लूनकरनसर तहसील क्षेत्र उजागर होता जा रहा है। आज के इस कस्बे को पुरान लूनकरनसर में मिलाइय तथा तत्समय के स्कूल का हाजिरो रजिस्टर (छाया का) देखिये। यथा—

रजिस्टर हाजिरी बगल विद्यापियान पाठशाला लूनकरनसर

			दिनांक												सं.
क्र.सं.	वर्ग	दिनांक	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	
1	1	1	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	1
2	2	2	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	2
3	3	3	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	3
4	4	4	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	4
5	5	5	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	5
6	6	6	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	6
7	7	7	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	7
8	8	8	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	8
9	9	9	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	9
10	10	10	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	10
11	11	11	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	11
12	12	12	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	12
13	13	13	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	13
14	14	14	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	14
15	15	15	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	15
16	16	16	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	16
17	17	17	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	17
18	18	18	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	18
19	19	19	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	19
20	20	20	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	मनु नारायण	20

एकादश प्रकरण

खारा जल-पुण्य स्थल -

भडाण एव कलण के पास—नूणकरणमर तहमीन का क्षेत्र बीकानेर मडल का महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी सम्यता बहुत पुरानी है। तहसील का पश्चिमोत्तरीय भाग भडाण नाम से जाना जाता है। भडाण में विभिन्न जाति, धर्म और सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। यहाँ की घर घर की कुदिया (छोटे बेरा) को देखकर लगता है कि यह क्षेत्र पहले कम पानी वाला सू-खड था। बीकानेर राज्य के इस पुराने भू भाग पर व्याप्त भडाण एरिया की अपनी एक लम्बी कहानी है, जो उसकी न किसी रूप में सन्धिपति बहिक काल से प्रमाणित पाई जानी है। इसकी प्राचीन परिस्थितियाँ को जानने के लिए दक्षिण में सत्तासर बीकानेर, दक्षिण में श्री डूंगरगढ़, दक्षिण-पूर्व में सरदारगढ़ पूर्व में मोहर, उत्तर-पूर्व में भूतगढ़ एवं हनुमानगढ़, उत्तर में अनूपगढ़ और उत्तर पश्चिम में छत्रगढ़ तथा वर्तमान बेनाम नहर आदि स्थानों को माप के करके मध्य का जीवन्त जन-पद, यह भडाण व कलम का वासा का इलाका है। इसका अधिकांश भू भाग रेत के टीलों से ढका हुआ रहता है।

यह जंगल प्रधान गाँवों का क्षेत्र है। इसमें अब छब्बीस ग्राम पंचायतें, सक्का शिक्षा शालाएँ, अनेक अस्पताल और औषधालय स्थापित हो गये हैं, किन्तु इसके बीच का कुछ हिस्सा समतल मैदान के रूप में सीधा सपाट बसा हुआ नजर आता है। ऐसे तन्व भाग में इन गाँवों की कुदियाँ होती हैं। यह भडाण राजस्थानी मरम्बल¹ का मरम्बल स्वरूप, रंग-बदरंग, आश्चर्यजनित इलाका है। इसका जलवायु गम एवं शुष्कता सम्पन्न है। इस कम गहराई आद्रता वाली नमकीन जमीन के अनोखे आवरण दृष्टव्य है। कृतिपय स्थानों में वर्तमान नहर के कारण तीन-चार हाथ पोली (लोसली) जमीन खोदन पर खलखलाता पानी निकल आता है, कृषि वृद्धि के कारण पुराने बजड बीहड नष्ट हो गए जा रहे हैं। फलतः छोटे वन एवं सीमित चारागाहों से ही चारा, घास उपलब्ध हैं, इसमें अब पशुओं की भी कमी होती जा रही है। पक्षी बड़ी हैं पर जहरीले जानवर घटते घटते नजर आते हैं। इस प्रदेश के उत्तर-पूर्वीय किनारे पर कभी घघर नाम की नदी बहती थी। उसे यहाँ टक्का का बहाण² भी बोलते हैं। उसके स्थान पर अब वहाँ माली आती है।

बैसे तो यहाँ लवणदार मिट्टी की बहुतायत है, पर तु चिकनी मिट्टी मुरड और पोली मिट्टी भी मिलती है। सूरतगढ़ के पास उपजाऊ चिकनी मिट्टी दुनमेरा का लाल

1. जसलमेर लोडवा से जोधपुर के मालानी और नागौर मेडता और फिर आडावळा में शेखावाटी के लड्डेला व टप की पहाडियों से पश्चिमोत्तर मुड़कर लुहारू होते हुए हिसार हाँसी की परिधि छूकर भटनेर या हनुमानगढ़ तक की सीमा रेखाओं में राजस्थानी मरम्बल मानते हैं। इसी क्षेत्र में जोहियावार भटियार जाटायत, शेखावाटी दूनाड आदि महत्त्वपूर्ण भाग हैं।

पत्थर उत्तमदगर व निचट पहाड़ी ककर जामसर का जिप्सम व लूनकरनसर का लवण शारीय खनिज स्थल है। तहसील मुख्यालय के चारों ओर सड़क मार्ग है और एक लम्बी रेलवे लाइन (वि०स० 1961 68) है। इसकी जनसंख्या सन 1981 की जनगणनानुसार एक लाख चौदह हजार एक सौ तीस (114130) है।

वैदिक कालानुसार प्रमाणों से सर्वाधिक इतिहासज्ञा का ध्यान है कि इस भू-भाग पर पहले समुद्र तहोरे सेता था। यद्यपि यह बता देना कठिन है कि समुद्र कब हटा, किन्तु रामायण काल तक समुद्र का वणन मिलता है। रामायणकार पश्चिमी समुद्रीय क्षेत्र में 'मरुध वा' और 'मरुका तार' देशों का विवरण देता है तथा द्रुमकुल्य सागर का भी स्थायीत्व मानता है।¹ पृथ्वी निकल आने का कारण और समय श्रीराम का पुनीतागमन बताया जाता है। श्रीराम के आग्नेयास्त्र से समुद्रीय जल सूख गया और स्थल पर छिद्र रूप जल स्रोत हो गया। उसके चारों ओर मरुप्रदेश या मरुका-तार देश प्रसारित हुए। जिनमें से यह भूभाग प्रदेश श्रीराम के वरदान से पशुधन, दूध, घृत तथा अनेक औषधियों का सुखमय केन्द्र बन गया। पुराणों की सप्तद्वीप कल्पना में पुष्कर के साथ कुरु जांगल का भी पाठ है। श्रीकृष्ण-बलराम की सेना का द्वारिका से इन्द्रप्रस्थ का आना-जाना इसी जांगल प्रदेश के मार्ग पर हुआ करता था। महाभारत काल में यहाँ बसावट हो जाने के पर्याप्त आसार दिखाई देते हैं। उस समय यह प्रदेश गोपालक एवं कुरु जांगल का स्थान जान पड़ता है।² यह पहले बहुत बड़ा भाग था। पर सिन्धु देश के पूर्व में राजपूताने का यह रणिस्तान वतमान में मरुस्थल या मरुभूमि कहलाया है। प्राचीन वरक ग्रन्थ भाव-प्रकाश में भी जांगल देश की ऐसी परिभाषा है।

पहले यहाँ महान सरस्वती नदी प्रवाहित होती थी। इस क्षेत्र में हड़प्पा युग से लेकर मौर्य और गुप्तकाल तक विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं का सगम होता रहा। इस महासभ्यता के तटवर्ती स्थानों पर पुरातत्व वैज्ञानिकों ने ऐसे अवशेष खोज निकाले हैं जो मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की ही सभ्यता के विस्तार हैं। यह भी माना जाता है कि सरस्वती घाटी और सिन्धु घाटी की सभ्यताओं में गहरा सम्बन्ध रहा था।

सरस्वती नदी या सारस्वत प्रदेश—यहाँ का समुद्रीय जल पश्चिम (अरब सागर) की ओर गया, तब सरस्वती दम्पती आदि नदियाँ भी शुष्क बन गईं। धरती ने समुद्र जल विरह में वध्यव्य धारण कर लिया और गहरे जल वाला दुर्लभ भाव बदरग, कुरु पशुवत जीवन स्रोत ही शेष रहे। तब से यहाँ के निवासियों को मोटे मोटे खान पान और पहनावे पर ही अपना जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है।³ गेहूँ चावल के अभाव में मोठ बाजरी के अन्न, सब्जियों के मिष्ठ फलों के स्थान पर स्थलीय सताओं के मत्तीरे और महीन वस्त्रों का बिस्मरण करके इक्पल्ली दोबटी रेज पर सतुष्ट रहकर सात्विक जीवन बनाया है।

सिन्धु सभ्यता के पश्चात् इस क्षेत्र में एक विशेष युग का आना पाया जाता है। उसमें सलेटी रम के विचित्र बतनों के हुए नमूने पाए जाते हैं। इस काल को पे टेड ग्रेवयर्स कल्चर' कहा गया है। फिर 'लेक एण्ड रेडवेयर' का युग माना जाता है। यहाँ बतनों के

1 वाल्मीकि रामायण बुद्ध काण्ड सर्ग 22

2 कच्छा गोपालकसावक जांगला कुरुवणका ॥ —भीष्म पर्व 9 56

3 श्री सरस चरित महाकाव्यम् (दुर्गादत्तजी सारस्वत)

वृद्ध ऐसे टुकड़े भी मिले हैं जो पुरातात्विक भाषा में इ. वॉर्ड कार्मरिंग प्रेशेन से पक्के माने गये हैं जिनके अंदर का सारा हिस्सा स्याह, बाहर का ऊपरी भाग भी काला पर नीचे का हिस्सा लाल होता है। वही स्थान में भौगोलिक कालीन सभ्यता का प्रतीक रंग महसूस है और पास ही का लाखाघोरा हड़प्पन कालीन क्षेत्र है। वालीबगा भी यहाँ का इतिहास पिपासुओं के लिए बड़ा दशनीय स्थान है।

इस क्षेत्र में अनेकानेक राजवंश और मानव जातियों का आविर्भाव निवास हुआ है। संभवतः मेर' लोग आढाबला मेरू की घाटिया से उत्तर कर इस मरुस्थल क्षेत्र में पहले आये होंगे। बाद में मेव और भीना इस क्षेत्र में आकर जमे हैं। कौटिल्य ने राजा की उपाधि धारण करने वाली भलिष्णुविक, घजिक, मल्लिक, मुद्रक, कुकुट, कुरू और पाँचालादि लोगों का बताया है तथा कम्भोज, मुराष्ट्र क्षत्रिय, श्रेण्यादिक का वार्ता-शस्त्रोपजीवी कहा है।¹ इनके बाद यौधेय मालव, सात्व, पादव भाटी सावले और जाटों का वर्णन मिलता है।

वैसे तो यहाँ जाट जनपद के बिह मिलते हैं, किंतु भाटी जाइया आदि के राज्या का भी पूरा पता पाया जाता है। उनके साथ यहाँ के आदि भूपति प्रायः जाट ही थे। संवत् 1545 में बीकानेर नगर स्थापित करके बीकाजी न जाटा से हार्दिक प्रेम बनाना शुरू किया था।² यह राजनतिक कार्य पहले लूनकरणसर के तहसील क्षेत्र से ही धारम्भ हुआ था। अतः यह तथ्य ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी प्रसिद्ध है कि "शेखम" के पाण्डु गोदार और सई के बोखे सियाम" ने बीकाजी का राज्य सौंपने में पहल की थी।

लूनकरणसर गांव का नामकरण—लूनकरणसर का नाम लून (नमक) बनन के कारण पड़ा हो यही समझ जान पड़ता है। पहले इस गांव को केवल "सर" नाम से सम्बोधित किया जाता था। क्योंकि इस घरती के अंतर में खारे पानी के बेटों खोत करते हैं। प्राचीन समय में उन्हीं के जल से नमक बनाया जाता था। तबारीख राज्य श्री बीकानेर के पृष्ठ 245 पर लिखा है—“लूनकरणसर में नमक की आगर हैं और उनमें सारी नमक पैदा होता है।” संवत् 1944 में नमक के सींगे में तीन हजार मन नमक की आमदनी बताई है जो अंग्रेजी इक्वारा नाम के अनुसार उसकी कीमत 69443॥ लिखी है। तत्समय सदर बीकानेर, खूरू राजगढ़ भादरा, हनुमानगढ़, सुजानगढ़, सूरत गढ़ के साथ यहाँ जवात महकमे का सायर कार्यालय भी बताया जाता है। नमक निकालने का व्यवसाय बढ़ हुआ, सायर से एक बीकीदार रखा गया। किन्तु उसकी अनुपस्थिति में स्थानीय औरतें नमक के डगल (पेपटियाँ) घास, लकड़ी एक छानो से ढककर खुरा लाना करती थी।

उस समय पिचोत्तरा चौधरियान, त्रय्यारी मकान व भरममत, जिनवरान देवस्थान पुनन तथा मुलाजिमान, सवारान के वेतन वगैरह तहसीलीय मजूरी खच 6895। =)॥ था। तहसीलदार की तनखाह 50/ रुपये लगभग थी। लेकिन उसके चढ़ने बाबन एक घोड़ा रखा जाता था। तहसीलदार के अधीन दफेदार 1 सवार 15 जमादार 1 सिपाहा 10 व कुल 39 कमचारी रहते थे। तबारीख में लिखा है—“गिरदावर

1 कम्भोज मुराष्ट्र क्षत्रिय श्रेण्यादया वार्ताशस्त्रोपजीवन (111 160) आदि।

2 तबारीख राज्य श्री बीकानेर पृ० 94 (मु० सोहन लाल)

सदर बाबानर व तअल्लुक लोनकरनसर भी है।' यान यहाँ के पटवारियों के काम सदर का गिरदावर जाँचता था। किन्तु अनूपगढ, सरदारगहर- रतनगढ व श्री झुगरगढ के पटवारियों का काम वहाँ के तहसीलदार ही देख लिया करते थे। सिवाय इन तहसीला अय स्थानों में नायब तहसीलदार भी नियुक्त थे।

रजिस्टर देहात वीनानर के पृष्ठ 45 पर गाँव लूनकरनसर का करीब पतागोश पुराना वणन प्रकाशित है। जिसके अनुसार लूनकरनसर का रकबा 63,71 6)। मालसा मतालबा बंदोबस्त 1394 (=) 1, मजबूत (=) पटत और बगड (एक आना) लखा हुआ है। उस समय आबाद घरों की सरया 330 लिखी हैं। उनमें मद 754 और रकबा 708 कुल आबादी 1462 बताई है। सम्भवतः सन् 1941 की जनगणना के ये तहतसूचक आँकड़े हैं। लूनकरनसर तहसील में वि०स० 1940 तक 175 गाँव बसते थे।

इससे पहले लूनकरनसर में प्राचीन कुइयो वाले वास का पुराना नाम जोरावर-पुरा सुनने में आया है। यहाँ 362 कुइया थी। वहाँ का एक बड़ा समी वृक्ष जोरावरपुरे नाम से खेजडा कहलाता है। जिसके पास घोरों से गाँव नाथवाणों का रास्ता निकलता था। वहाँ के क्षेरे (पुराने कुएँ) की अब ग्राम पंचायत में भिड़ बंधवाकर बंद करवा दिया है। पर गणगौर का लोकोत्सव यहीं सम्पन्न होता है। वतमान समय, में मोहल्ले में सरदार गहर राजलदेवार के काजी लोग आकर बस गये हैं।

लूनकरनसर¹ के पास बसते अन्य वास—जोगियान डलुवान, थोरियान और उच्छ गदसार आदि सब अब सम्मिश्रित हो गये हैं। कालवास अभी अछूता है। लेकिन आबादी लूनकरनसर की ट्यूबवेल से आगे तक बढ़ती जा रही है। नगरी की भाँति महाजन लोग यहाँ पुराने वासि-वगान हैं जो नगर वृद्धि में अग्रणी माने जाते हैं।

सांख्यिक स्थान—तहसील कार्यालय से दक्षिण डेढ़ किलोमीटर बस्ती जोगियान में गोगाजी का दशमीय धाम 'गोगा मेडी' मंदिर है। इस वास के पास ही डेलू तथा घोरी जाने की वस्तिर्ग है। यही बणापीर जी का मंदिर है। इन सबके निकट एक कुआ है, जिसका लूनकरनसर के सेठ श्री मूलचंद बोधरा न साठ वर्ष पहले जन हिताथ बनवाया था। फिर इसकी भरम्भत श्री जेठमल बोधरा द्वारा करवाई गई थी। कुएँ का पानी 'बल्लवळा'² है, पर विराइजणा (अस्वास्थ्यकर) नहीं है। यह बरुणाक्षय कालू के पुराने रास्ते पर स्थित है।

तालाब—कालू की तफ इस रास्ते कोई तालाब नहीं है। पहले एक जोगियान बस्ती की काकड पर 'बुझाणी' नाम की जोहडी थी। पर लूनकरनसर के मुख्य तालाब 'रायसर' और उदाणा' है। रायसर पश्चिम में एक उदाणा कृषि फार्म के रास्ते पूर्व में है। यहाँ की स्थलीय मिटटी नमकीन होने के कारण वर्षा का पानी आते ही खारा हो जाता है। उदाणा के अंदर एक कुआ है वह अब नहर के पानी से भरा रहता है। परंतु रायसर पापतण के पास आरसी पी के क्वार्टरस बन गये हैं। यहीं जोगाणो तालाब

1 श्री रामचंद्र बिहानी ने अपनी 'शिव भजनावली' पुस्तक में श्रीकानेर महाराजा द्वारा गाँव लूनकरनसर को जैतपुर के रावत ईश्वरसिंह को देना लिखा है, सो मैंने कहीं इतिहास में नहीं देखा।

2 चम्परा (पटुओं का)

तथा मूलातलाई नाम के छोटे नाडे भी हैं।

जगवणो जगमोतियाँ, रामसरो तासाव । (प्रचलित लोकोक्ति)
फिट रे ऊदाणा तन, अबढ तिस्सो साव ॥

पुराना लोकजीवन—इस क्षेत्र में विभिन्न जाति, धर्म तथा सम्प्रदाय वाले लोग निवासित हैं, जो हिंदू, मुसलमान तथा आदिवासी कहलाते हैं। पहले तहसील क्षेत्र के गांवों में ब्राह्मण, जाट और राजपूता के अनेक राजकीय ठिकाने थे। सारस्वत शासकों का श्री हूगरगढ़ के पास एक किसानुमा गढ़ होने की बड़ी श्रुति ब्याप्य प्रचलित है। ग्राम 'बामणवाली' सारस्वत राज्य का प्राचीन चिह्न है। सारस्वत कुटुंबा समाज में आज भी बिरादरी पंचायती अथवा अ य सम्मेलन के समय, चौक जोड़ने की प्रथा राजा-शाही और सामन्तशाही ढंग पर राज्य परम्परा का आधार लिए चलती है। जाटों के राज्य से राठौड़ राज्य स्थापित हुआ है। कुछ धनिय ठाकुरों के ग्राम ठिकान भी यहाँ थे, पर तु पुनय ठिकाने अधिकतर चारणों के थे। राजपूतों में राठौड़, चौहान साखला, भाटी, पवार, तवर प्रभृति इस क्षेत्रीय गाँवों के शासक जागीरदार रहे। पर राठौड़ इन सब में प्रबल व प्रमुख थे।

ग्राम—इस क्षेत्र के ब्राह्मणों की अनेक उपजातियाँ हैं तथा संहृति और पेशे भी कई तरह के अपना रखे हैं। वे तहसील के सब ग्रामों में बसते हैं। महाजन लाग भी इस क्षेत्र के गाँवों में प्राचीन वासि दे हैं। व अपने-अपने ढंग से गाँवों में खेती के साथ विणज (घोड़ा व्यापार) करते रहे हैं। अब प्राय बहुत से शहरी कस्बों में जा बसे हैं। इसमें अनेक प्रकार की उपजातियों के लोग हैं, जो अपनी सुविधा अनुसार अलग-अलग कस्बों गाँवों में रहते हैं। तहसील के मुख्य ग्राम कालू में आसवाल और माहेरवरी दो प्रकार के महाजन निवासित हैं किन्तु कस्बे लूनकरनसर में आसवाल और अग्रवाल हैं। अ य गाँवों के बहुत से महाजन गत घाती में अपना पूर्व निवास स्थान छोड़कर अ यत्र आबाद हो गये हैं उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है—

प्राचीन निवास स्थान जहाँ निवासित थे।	उपजातियाँ महाजनान	वर्तमान निवास स्थान जिसमें आबाद हैं।
1 गांव कुजडी (तह० लूनकरनसर)	साड (आसवाल)	कालू
2 " खारी ()	बाठिया बुच्छा "	लूनकरनसर
3 " जेसा ()	बाठिया (")	बीकानेर
4 " बीसरवाली (')	डागा (")	मगाशहर
5 ' खियेरा (')	बोधरा (")	लूनकरनसर और कालू
6 " उदेसिया (')	पुगलिया (")	श्री हूगरगढ़
7 ' गोंडा (")	बरडिया (")	कालू अब लूनकरनसर
8 " भांडेरा (')	पारख (")	श्री हूगरगढ़
9 " कौकडवाला (')	चोपडा (")	लूनकरनसर

- 1 खियेरा के कतिपय बोधरा लूनकरनसर आकर बसे, किन्तु एक परिवार (श्री भूर सिंह बोधरा का) वि० स० 1987 के पास कालू का निवासी बना। काशीराम हूगरमल, मंगल चंद चौधमल श्रीचंद आदि सात सन्तानें थी। इनके विवाह यही आय हुए।

प्राचीन निवास स्थान जहाँ निवासित थे।	उप जातियाँ महाजनान	वर्तमान निवास स्थान जिसमें आया हुआ है।
10 गाव महाजन (तह० लूनकरनसर)	रावा (ओस०)	राजसदेगर
"	छाजेट (")	सूरतगढ़
11 ' खोलराणा (")	सेठिया (")	कालू
"	दफ्तरी (')	प्रेम पुर्ग नगासहर एव खोलराणा
12 " गारब देशर (")	बोण्ड (")	कालू, गगानगर, पवरा डूगरगढ़
13 ' घुम्भाणा (")	नवलखा (')	सरदार राहर, पीली बगा सूरतगढ़ श्री डूगरगढ़ कालू
13 " गारबदेशर (')	बाहता बागनी (माहेश्वरी) डूडानी गठी	कालू श्रीडूगरगढ़ महाजन मुरतगढ़।
14 ' चादसर (")	राठी (')	कालू
15 " आडसर (")	पर्वर (')	कालू
16 " जमव तगढ़ (")	कर्वी (')	कालू
17 गाँव घु भाणा (तह० लून०)	लाखोटिया (माहेश्वरी) भूधडा (")	मगरिया पाली बगा अजुनसर अनूपगढ़
"	सेवग, यति	कालू
18 महाजन (')	झवर (माहेश्वरी) मोमानी लडाणी (,)	कानपुर सूरतगढ़ गगानगर
19 " सूई (')	भूधडा (,)	जैतपुर।

तहसील लूनकरनसर क्षेत्र के वर्तमान गावा में महाजन उपजातिया निवासित हैं—

1 गाव डुलमेरा (तह० लूनकरनसर)	वर्वा (माहेश्वरी)
2 गाव शेखमर ()	डामा (ओसवाल)
3 गाव जैतपुर (')	राठी, पेडीवाल
4 महाजन	बिहानी सोमानी (माहेश्वरी)
5 गाव मलकीसर (')	धीधरा (ओसवाल)

पहले राजासर गाव में माहेश्वरी महाजन थे अब कर्णीसर में नहीं हैं। राजपुरा
हुडान में श्री रामचन्द्र अग्रवाल का एक घर था।

तहसील लूनकरनसर का गाव भाडेरा पहले उदयपुर के मेहनाभा की जागीरी
पट्टे में था। फिर गंगासिंह जी के जय ती महोत्सव पर श्री हरिसिंह (सत्तासर) को
भाडेरा जागीर में दिया गया। गाव में पहले कुदिया था जिनमें बल्लबला पानी था।
स० 2010 में गाव के सागो ने चन्दा एकत्रित किया और थोड़ा दूरी पर कुआ बनवाया।
स० 2012 में कुआ बनकर तयार हो गया मगर पानी बसा ही (पशुआ के पीने लायक)
निकला। इस कूबे के बनवाने बाबत श्री डूगरगढ़ के पाण्डवा ने डाई न्जान रूपो का

चंदा दिया। पारख इसी गांव भाडेरा से जाकर श्री दुर्गरगढ़ के निवासी बन हुए हैं।¹

लूनकरनसर मे पहले चादमल, बिरघीचंद विरमेचा का घर नचेडी के आगे था। पानी के बेहद अभाव में उनके घर भीठे पानी का बड़ा कुण्ड² था और एक चौखट सुबह तथा एक शाम को नाथवाण से (मीठा पानी) लोगो को पिलाने हेतु नित्य आया करता था। जेक ऊंट और हानी (नोकर) इसके लिए नियुक्त थे। बाहर बड़ा चौबारा था। गांव के पुजना जन यहां दिन भर ह्याई एव चौपड पासे सेला करते थे। मीठा पानी तम्बाखू और अमल दिए जाने की इस घर परम्परा थी। सेठ अच्छा कारोबारी था। दुमिक्ष के समय सारी भडाण पट्टी को यही ढाबता (रखता) था। दूर-दूर तक उधार चलती थी। मुनीम गुमास्तो के सिवाय चारो आर के लिए तबाजा करने वाले लोग रहते थे। अब उनके वंशज (श्री वृद्धिचंद व श्रीनेम चंद के) कालू में बसते हैं। त्रिनमे श्री लूनकरन ब्रह्मोका मुखिया एव मा य व्यक्ति कहलाता है।

यहां एक कहावत प्रचलित है कि—“शहर बसतो मानवी गांव बस तो डोर।” अत एव इस क्षेत्र के चतुर महाजन लाग अधिकतर गांवो से कस्बो मे पहुँचकर व्यवस्थित हो गये। इन लोगो को अपने छोटे छोटे गांव छोड़कर चले जाने का कारण अपनी और अपने परिवार की जिंदगी बनाने का सवाल ठीक से इनके सिर चढकर जादू की तरह बोलने लगा था। सुविधा वाले स्थाना पर आये, सुरक्षित हो गये। अच्छे विवाह सम्बन्ध होने लगे। आगे कई तरह के बाजार भावाम मिल गए तथा व्यापारिक ढग से भी विडम्बना पूरी तरह से हल हो गई। नये कस्बा मे अब बड़ी जन-संख्या के साथ रहकर बनियो से सेठ एव साहूकार कहलाने लग हैं।

व्यापारीजन—भडाण के गांवो में पानी का सबत्र सर्वोपरि अभाव था, जो नित्य प्रति घूर घूर से लाकर मिटाना पडता था। वणिक् वंश ! विचारशील परम्परा के कारण हर वक्त भयभीत रहना पडता था। फिर भी ये लोग “व्यापारे बघते लक्ष्मी” के अनुसार अंग लोका से कुछ अच्छी स्थिति में हुआ करते थे। तब चोर डाकुओ का डर भी सदब

- 1 लगभग पचास साल पहले पारखो ने श्री दुर्गरगढ़ में अपने सुंदर भवन बनवाय। तब किमी मसखरे ने ईर्ष्याविज्ञात पारखा की साखी जोड़ी थी जो यथा समय बहा अब भी बोली जाती है—

भाडेरा सू पारख आया भला बिनाया बूढ़ा।

गांव साम पूठ राखी, मसाणा दिस मूढ़ा ॥

लेकिन इस कविता के पहल चरण का पहला शब्द मंगलात्मक मंगण (भाडेरा भठारी) है जिसका स्वामी देवता, भूमि और फल “श्री” है। दूसरे चरण का शब्द भी शुभ है। ‘म’ दग्धाक्षर है किंतु ‘मा’ गुरु वाक्कर शुभ हो जाता है तथा दूसरे चरण का मला शब्द भी शुभ है। अतः ‘म’ का दाप परिहार हो गया है। पारख अच्छी स्थिति में निवासित है। इनका गत निवास स्थान भाडेरा अब नये कूबे के पास ‘हरियासर’ नाम से नहर सिंचित हरा भरा मन भावना गांव हो रहा है। राजनतिक नेता श्री हरिराम बिश्नोई ने इसको यहां नये ढग से ला बसाया है।

- 2 हर व्यक्ति मकान बनाते समय वर्षा से छत का पानी उतरने की जगह छोटा बड़ा कुड बनाया करता। वर्षा होती पानी आता उसे सुरक्षित रखते हुए लोटा-लोटा लेकर साल भर काम सेते। गदला तथा वेस्वादु जल भी गोला (आद) जानकर पी जाते थे।

लगा रहता था। इसलिए गांव के ठाकुरा एव अधिकारियों से भी हर समय बायल बना रहना पड़ता। उनके सामने देखने की भी इनकी हिम्मत नहीं होती। यदि थोड़ा बहुत मन मुटाव बन गया तो उनसे आम्ह इशारे से घर फोड़ा (डाका) हो गया। डाकूओं के मुकाबले में इनकी दुबलता कायरता की अनेक हान्य 'अभ्यात्मक' कहावतें प्रसिद्ध थी। यथा—

चार चोर चौरासी वाणियाँ, वे घर बापटा अकला वाणिया।
ठोड कुठोड गांव को गौरवा, बखत, वे बखत मूरज की उगाळा।
मार, कुमार छाणा मे मार गाळ कुगाळ आवो सा सेठा !।

(एक बार पूरे चौरासी (84) ग्रामीण सेठा को चार (4) चोर मिल गये। बेचारे वे अकेले चौरासी बनिये उन चार चारों का सामना कैसे करें? उनको वह स्थान भी गांव का गौरवा (गांव से निकट लगता स्थान) कुस्थान पड़ा और समय भी विपरीत मूर्खोदय का था। उन बनिये महाजना को मारने पीटने के लिए चोरों के पास अग्न्य के छाने (साधारण सूखा गोबर) भयावने हथियार थे तथा लुटरे गलिया भी बड़ी फोस (गद्दी), सेठा के सम्बोधन से सकते निकालते। ऐसी विषम स्थिति में बेचारे चौरासी बनिये चार चोरों का मुकाबला कैसे कर सकते थे।)

राजस्थान में जनी हो अथवा सनातनी, बनिये व्यापारी सब महाजन कहलाते हैं। इनमें मरावगी श्रीमाल, माहेश्वरी, अन्नवाल पोरवाल एवं बीजावगी सब मेठ साहूकार नाम से मवाधित किये जाते हैं। इनकी सहस्र खापें तथा गोत्र हैं। वे बड़े गम्भीर, चतुर एवं व्यवसायी होते हैं। देखिए यहाँ के अथ वग जानीय गहन महन एवं गनि रिवाज भी। यथा—

कुडिया के सारस्वत ब्राह्मण— आद्य सारस्वतो विप्र—नदा चार्या सरस्वता”

यही ब्राह्मणों में सारस्वत आदि ब्राह्मण हैं और नदिया में सरस्वती का स्थान अग्र गण्य माना जाता है। सरस्वती के लिए सारस्वत ब्राह्मण काश्मीर सिंध और पंजाब तक निवासित हुए हैं। वे पंजाब से हरियाणादि प्रदेशों में भी आये हैं। लेकिन हमारा यह क्षेत्र सारस्वत, ब्राह्मणों का पुराना मुख्य स्थान है और सारस्वत प्रदेश कहलाता है। सारस्वती की उत्पत्ति का वर्णन बड़ा विस्तृत है। वर्तमान भारस्वत भद्राण के सिवाम रणिया हृद में गोदारा और उच्छलसदेशर के थोरी आदि अनेक जाटा के साथ मालानी की ओर भी गये हैं तथा वहाँ तमाम जाटा के पुरोहित बने हैं। परंतु यहाँ के गादारी को ये मुख्य यजमान मानते हैं। कृपि करते हैं अतः तम्बाकू भी पीते हैं। परंतु इनकी विरादरी का शासन बंधव बड़ा राजा शाही आदश एवं वैधानिक है। ये अपने पूज्य पूज्य महर्षि सरस महाराज का बड़ा प्रताप बतलाते हैं। सारस्वा गोन इनमें शिरोमणि माना जाता है। बिगदरी में इह राजा की पदवी है।¹

मारस्वा मिरदार क ऊभा बाग म
फड फट तोडें फूल क टाग पाग म
सूमाळी तरवार क, भोगे हाव म
अमलै हान उमाव क, हाकम भाव म

गौड—कुछक द्विज बंधो का विकास के द्र होने हुए भी हमारे आस पास इनकी सख्या वम ही रूप में निवासित है। जनरल कनिंघम ने गौड का पुराना नाम ही गौड

1 पहले इनका एक गढ श्री दुर्गरगढ की जगह स्थापत्य था वही के कलिय राजपूतो ने माँगकर अपने कब्जे कर लिया।

बसाने की चेष्टा की है। आज कम्पवेल ने गौड को मारस्वत शाखा से सिद्ध किया है। इतिहासक, मालव ऋषि की इस सतान गौड को बंगाल से आने का प्रमाण देने हैं। इनकी दूसरी शाखा गुजरगौड है। वे अपनी उत्पत्ति गौतम महर्षि से बताते हैं। गुजर गौड की चार गोत्र और चौरासी खाये हैं। किन्तु यहाँ पवारिया उपाधिया शाखा गोत्र अधिक हैं।

पारीक—पारीक ब्राह्मणों की भी 103 खाये मानी जाती हैं। लकिन य जवटक (पशा) के नाम है। इनकी उत्पत्ति पारंगार ऋषि से सिद्ध होती है। ये उत्तर पश्चिमी भागों से आकर नागरीय क्षेत्र में बसे हैं। ये लोग अधिकतर कृषि करते हैं। हमारे यहाँ इनका कुनबा बड़ा है जा व्यास, बोहरा, जोशी तिवारी आदि उपजातियाँ हैं।

खडेलवाल—खडेलवाल महर्षि जिसके नाम पर जयपुर राज्य में पडेली ग्राम बसा है, सारे खडेलवाल वही के गिने जाते हैं। इनकी 52 शाखाएँ हैं और य भी कृषि एवं महाजन्यों की नौकरी करने हैं। यहाँ पीपळवा चोटिया और जोशी भी अधिक प्रसिद्ध हैं।

पुष्करणा—पुष्करणा शब्द की व्युत्पत्ति पुष्टि से है जिसका जय समर्थन हाता है। ये पहले पड़ोसी देश मिथ से मारवाड में आये, इमनिष् माया में विशेष उल्लास नहीं हुआ। य विशेषकर राज्य सेवा या य नौकरिया करते हैं। कनल टॉड के कथना अनुसार जोधपुर महाराज तर्कसिंह के समय में, यह समाज, उ नति के शिखर पर था। इन्हीं की देश दीवानादि के बड़े बड़े ओहदे मिलते थे। मिस्टर जान विलसन के कथनानुसार इस जाति की उत्पत्ति बड़ी विवादास्पद है। परन्तु 14 गोत्र और चौरासी खापा में इनका समाज प्रसरित है। पुरोहित व्यास कल्ला, बोहरा, रंगा जोशी और उपाध्याय आदि जातियाँ बीकानेर में अधिक हैं। इनके जन्म विवाह और मृत्यु के नेपा-रिवाज अपन अजुबे तथा पथक हैं।

श्रीमाली—श्रीमाली और पुरोहित इस क्षेत्र में ही नहीं, सारे बीकानेर राज्य में भी अ य ब्राह्मणों की अपेक्षा कम हैं। फिर भी पुरोहितों की यजमानी, राजा महाराजाभा तथा ठाकुर जागीरदारों से संबंधित है। अतः यहाँ के पुरोहित ज़र जमीन एवं सम्मान सम्पन्न रहे हैं और राजपूतों की रीति रिवाज मानते हैं तथा राज पुरोहित कहलाते हैं। ये अपने कम-काद, श्रीमाली ब्राह्मणों से करवाते हैं। इनकी खाये भी खूब होती हैं। सनाढ्य और का य कुञ्ज ब्राह्मणों की आबादी भी यहाँ कम है। पर पालीवाल द्विज कहीं कहीं मिल जाते हैं। जोशी अथवा साचोरा ब्राह्मणों के इस क्षेत्र में नाम मात्र ही बाले जाते हैं। कनल वाटर ने कहा है कि ये देशी व्यापार करते हैं और इनके साथ राज्य से रिहायती व्यवहार होता है।

दायमे—छनिगात ब्राह्मणों में दायमे (राज० में) अधिक मर्यादा में पाये जाते हैं। ये लोग अपनी उत्पत्ति दधीचि ऋषि से बताते हैं। इनकी कुलदेवी का नाम दधिमक्षी है जिसके नागौर जिले में मंदिर हैं। वहाँ आसोज महीने में गौठ मागलोन नामक मेला लगता है। इनकी औरता के अपन अलग रिवाज होते हैं। इनमें प्रायः पट्टे लिखे लोग होते हैं जो नौकरी करना पसंद करते हैं। ये वेदपाठी एवं कथावाचक भी होते हैं। इनके अनेक गात्र हैं जा नागौर जिले के गाँवों के नामों पर प्रसिद्ध हैं। जैसे आसोपा, कासेलिया, खोडवातियाँ आदि।

जोतकी—ब्राह्मणों का एक बग पंच गौड ब्राह्मणों के समुदाय से निकला हुआ जायान वावगिया, पानिसरिया, देशा तरी और भड्डसी आदि नामों से पुकारा जाता है। वही वही इनको डकठुपि की सतान भी बताते हैं। ये लोगो को दिनमान बताकर उनके मन को भाय रहते हैं। तीर्थ स्थानों में धार्मिकों के सहायक का काम देने हैं तथा सम्मान पाते हैं। ये शकुन जान एवं व्यातिथि विद्या में निपुण धनि के उपासक होते हैं। जोतकी भयकर दान लेने में अग्रणी कहलाते हैं। इन्का यही पेशा है कि हरेक व्यक्ति पर से अनिष्ट जनक प्रभाव हटाने के लिए धनि महाराज की भासा फेरने हैं और काला क्रूर दान लेते हैं। ओं जनश्वर प्रीतो शांति करोतु सबव सुख।

अचारज—पुरोहिताई करने वालों का एक बग अचारज अथवा तारग कहलाता है। इस यहा काटिया एवं सुरिया भी कहा जाता है। बसे तो आचार्य का अपभ्रंश रूप ही अचारज शब्द बन जान की विकृति जान पड़ती है। कि तु मृतक व्यक्ति का क्रिया-कर्म, भोजन दान और मृतक का सब सामान ग्रहण करने के कारण ही इसे निम्न जान-कर काटिया या चारला कहा जाने लगा है। पादरी शेरिंग का कहना है कि अचारज कानकुन्जों की मूय पारी शाखा की उपशाखा के सवालाली नाम के ब्राह्मण हैं। हमारे यहाँ ये मृतक के क्रिया कर्म घर से बाहर बठकर करवाते हैं। इन्हे यहाँ धूमित मानकर व्यंग में महा-ब्राह्मण बोलते हैं। लेकिन इनकी आबादी बहुत थोड़ी होती है। कालू में इनका एक भी व्यक्ति न होने के कारण हर मृत्यु के समय गाँव गारबदेशर या सहजरासर से बुलाये जाते हैं।

गुरडा—गुरडा जाति के लोग मेघवालों के गुरु एवं ब्राह्मण होते हैं। वे कहते हैं हम ब्राह्मण हैं जो ब्राह्मा के पुत्र बग के बग में उत्पन्न हुए हैं। ये लोग मेघवालों के विवाहादि सब सस्कार करवाते हैं तथा बड़े विद्वान् एवं चतुर माने जाते हैं। इनकी बालीस खापें बोलती हैं। कालू के मेघवाल गारबदेशर के गुरडा को आध्यात्मिक गुरु मानते हैं। क्योंकि यहाँ गुरडों का एक भी घर नहीं है।

ब्राह्मण वेश के सेवक—सेवक मूय के उपासक और पुजारी होते हैं। यहाँ इस जाति में अनेक कवि लेखक हुए हैं। इनको भोजक भी कहा जाता है। जयपुर में ये लोग ब्यास कहलाते हैं। ममवत प्राचीन समय में ये ब्राह्मण थे। इनमें गूजर गौडों, खडेलवालों तथा पुष्करणा के गोत्र सम्मिलित हैं। ये शाक द्वीप के मग ब्राह्मण कहलाते हैं। भोज वश की कथा के साथ इनका बग चला है। प्रथम मूय मंदिर के पुजारी बने और फिर इनके वंशज बराबर पुजारी का काम करते रहे। ये यज्ञोपवीत पहनते हैं पर ब्राह्मण इनको अपन से अलग मानते हैं। कारण—सेवक जैन मंदिरों के पुजारी होते हैं और ओसवाला के हाथ का बना भोजन ग्रहण करते हैं। ये ओसवालों के घर रसोई बनाने तथा निमंत्रण देने जस निम्न काय करते हैं और उन्हीं से दान दक्षिणा लेते हैं। मिस्टर इवटसन के मतानुसार यह ब्राह्मण, राजपूत तथा जोगिया की मिश्रित जाति है। (बसे तो जातियाँ दूसरे देशों में भी मिश्रित होती रही हैं किंतु यह मिश्रण जितनी सीधता विलक्षणता से मध्य एशिया में हाता रहा—वसा शायद ही कही रहा हो —“बौद्ध संस्कृति पृ० 227 रा० साहित्यामन)।

नायो—मारतवष में नायो जाती की सरया करीब एक करोड़ है। नायो शब्द उसी 'णीत्र प्रापणे' (Nā To Lead) धातु से बना है, जिससे नेता और नायक बनने

है और तीना का अर्थ 'साइड' है। प्राचीन काल में क्षीर बम, फलन के लिए नहीं, घामिक, सामाजिक, राजनैतिक और आयुर्वेदिक कृत्यों का अंग था तथा चक्षानिक ढंग से किया जाता था। इसलिए भारतीय जन समाज में नायी को (1) घामिक कार्यों में अथर्व (यज्ञ का नेता) (2) सामाजिक और (3) राजनैतिक कार्यों में ★ सविता (पु-म्रेरणे) धातु से सबको प्रेरणा करने वाला पथ प्रदत्तक) ★ ग्रामणी (ग्राम या ग्राम पंचायत का अग्रणी नेता) वायु (क्षीरमार होने से प्रत्येक के व्यवित्तक सम्पत्ति में आने के कारण सत्त्वा गुणचर, राजदूत और सामान्यदूत) और आयुर्वेदिक रूप में देश का ★ चिकि मन् (भियक और सत्य चिकित्सक) स्वीकार कर लिया था। आयुर्वेद तथा प्रत्येक गहस्थ की आंतरिक परिस्थितियों का विशेषण और विश्वस्ततम व्यक्ति होने से यजमाना न अपनी सतान के विवाह समय और फिर राजपूतों ने अपने ★ सुधार (सूचनार पाचक) तक के काम सौंप दिये थे। इस प्रकार प्राचीन काल में नायी देश और समाज का अत्यंत विश्वस्त एवं आवश्यक व्यक्ति माना जाता था। यहाँ तक कि न * और भीय मन्माटा के रूप में राज्य संचालन भी किया।¹ अथर्व० 6।68।1 में नायियों के आद्य पुरुषा वायु और 'सविता' ऋषि उल्लेख किये हैं। (ओं आयमन्तसविता० ॥) इस वेद मन्त्र में परमेश्वर ने अपना दी है कि 'हे वायो ! य० सविता आ गये ! आप अपने साथ छुग (उत्तरा) और गम जन नैकर आइये और क्षीर बम कोजिये।' इस तरह से अनेक धर्म ग्रन्थों में अनेक जगह नायी को ब्राह्मण कहा है। नायी पथ ब्राह्मणोचित बम है जो महर्षि अगिरा, महर्षि सविता एवं महर्षि वायु तथा ऋषिष्ठ, सुषीव, भारद और हनुमान आदि ने किया है।

विविध-काय व्यस्तता और वायाधिक्य के कारण नायी का विद्याध्ययन के लिए अवकाश कम रहने लगा और विद्या ने अभाव के कारण इसके व्यवसायी की महत्ता और आदर में कमी आने लगी। पीरोहित्य और आयुर्वेद का महत्वपूर्ण भाग इनके हाथ से निकलता गया और अंग्रेजी राज्य के आने पर सांख्यिक व्यवसायिक स्वतन्त्रता एवं सजरी, रेलवे, डाक, तार, टेलीफोन, समाचार पत्र, फोटोग्राफी आदि न मिलकर नायी जाति के रहे सहे जरूरी ही, दूत कार्य, विवाह सम्बन्ध विधान का अंत कर दिया। इसके पास केवल क्षीर बम रह गया था, सो अब उसका भी सेफ्टीनेजर ने मफाया कर दिया है।

वर्तमान में क्षीरबम अल्प लोग भी करते हैं पर तु समाज में ब्राह्मण के पश्चात् नायी की ही प्रधानता है। लोक में नायी का दिखाई देना शुभ माना जाता है। प्रो० विल्सन ने भक्तमाल के आधार से लिखा है कि 'सेन भक्त नायी विष्णु का अनन्य उपासक था और उसके वंशज कुछ काल तक बाघवगढ़ राजाओं के गुरु रहे।'²

बीछरी, राजा, महत्ता एवं याचक—यजाव में नायी उस्ताद व गुरु कहलाता है। वह पश्चिम में ठाकुर महाराष्ट्र में पंडित, कपिला व मेनपुरी में तथा टेरी राज्य में पाण्डे नाम से प्रसिद्ध है। वह पत्रा पचाँग बनाता है और जनेऊ रखता है। पुरोहित के न पहुँचने पर विवाह कम करा देता है। नायी, ब्राह्मण का सहयोगी समान कर्मात्मक पेशा

1 उपरोक्त तारावित्त शब्द धर्म ग्रंथों में सस्कृत साहित्य में तथा लोक में नायी के लिए प्रयुक्त हैं

है। अनेक पूर्वी प्रदेशों में 50 और 50 के हिसाब से ब्राह्मण व साथ जाधी दक्षिणा लेता है।¹ नाथी यजमानों के केशों का प्रसाधन (सस्कार) करता, नाथीनें भी यजमानिन के केशों का प्रसाधन (गुथन) किया करती थी। प्रथा थी कि नाथिन केशों का गुथन कर चुकती, यजमानिन उसके परो सगा करती थी।

राजस्थान में मारु, वद और पुरबिया नाथी है। पर मारु यहाँ का प्रधान रूप से आदि निवामी है और श्रेष्ठ समझा जाता है। नाथी बड़े चालाक माने जाते हैं। "नृत्या बामण जीमय्या नाई" अर्थात् ब्राह्मण के निमंत्रण पर नाथी ने जाकर खाना खा लिया। पर अब तो नाथी हरिजन भाइयों की घमकी से लाचार हैं। वे अपराधी बनाये जा रहे हैं। हिंदू महासभाई (परिपद वाले) लोग प्रस्ताव पास करके नाथियों पर जोर देते हैं कि वे इनकी हजामत बनावें। (यद्यपि साहूकार, ब्राह्मण, क्षत्रिय कहलाने वाले लोग बेरोक टोक हरिजनों के घर खान पीन लग जावें तो अच्छतता एक दम नष्ट हो जाय। तथापि वसा न करके केवल नाथी को दबाया जा रहा है) नाथी लग एव परेधान होकर उन्नत काय करत हैं। सबके खेतों की सींच बँसी की बँसी है सो नाथी के घम खेत की बाड ब मीव तोडकर उसका खेत क्यों उजाडा जा रहा है ? अत्रिस्मृति में लिखा है—

अभीकारेण नातीनां, ब्राह्मणानुग्रहेण च।

पूयते तत्र पापिष्ठा महापात किनोर्ग्रिय ये ॥

(अर्थात् नाति के स्वीकार कर सेन और ब्राह्मणों की कृपा से बड़े बड़े पापी और महापातकी भी पवित्र हो जाते हैं।) इनके 'नाथी ब्राह्मण' 'सविता धधु, 'सेन स'देश' तथा 'सन पुत्र' आदि अनेक पत्र पत्रिकाएँ निकलती हैं।

यति—जन सम्प्रदाय के आध्यात्मिक गुरु विवाहादि के समय पंडितों की तरह कुछेक सस्कार भी करवा दिया करते थे। व्याख्यान देते, ब्रह्मचर्य की महिमा बताते और अहिंसा व्रत ग्रहण करवाने के लिए उपदेश किया करते थे। ये सिर और परा से नगे रहते। एक बड़े झोले में पात्र रखकर जनियों के घरो से गोचरी (भोजन) लाया करते थे। अपन चौबीस तीथकरा को पूजते, परंतु श्री ऋषभनाथ, श्री पाश्वनाथ तथा श्री महावीर स्वामी का अधिक महत्व देते। गुजरात का पालिताना इनका तीथ स्थान है, वहाँ प्रतिवय मेला लगता है। यति लोग हाथ की सफाई जानन व सिवाय शिक्षा तथा चिकित्सा का काम भी किया करते थे। य अविवाहित रहते और पढ़न लिखने के बायों में अग्रणी कहलाते। ये राजपूतों के भी गुरु बन जाया करते थे। इनका आश्रम उपासरा कहलाता। यतियों के यहाँ अनेक गच्छ हुआ करत थे। यहा खरतरगच्छ का अधिक प्रचलता था। पर अब इस क्षेत्र के यतियों की गद्दिदयी ममाप्त है तथा उपाश्रय निराश्रय।

जोगीनाथ—जोगीनाथ भी गुरु कहलाते हैं। ये गोरखनाथ पथ के अनुयायी, शिव पूजक कमंडल स्रपट, चिमटा व गोचरी से काम लेते हैं। जोगीनाथ पातञ्जलि के वेदांत की विचारधारा को मानने वाले होते हैं। कान फडवाते और एक आध ब्रह्मचारी

1 बहुत काल बीते सब भाई बड भये परिजन मुखदाई।

चूडा करण कीह गुरु दाई विप्र दक्षिणा पुनि बहु पाई ॥

(श्री तुलसीदास)

2 नाथी ब्राह्मण का मामा तर है। "वेद-यास नय" ये नाम ब्राह्मण के हैं। नय से नाथ और उससे नाथी बना है। (ब्राह्मण निणय प० 314 315)

वाकी गृहस्थी होते हैं। नेपाल में इनका तीर्थ स्थान है। य शिव का गाढ़ते हैं और उसे समाधि कहते हैं। जोगियों के दो शोक, कनफटे और जोगेश्वर। कनफटे नाथ बड़े सम्मानित होते हैं। इनमें जालधर नाथ के बारहवें शिष्य न जो शाखा चलाई वह कालवेलिया कहलाई है। ये रावल जोगी निम्न स्तर के होते हैं।

गुसाई—गुसाई अष्टाद्य भी सनन कर लेते हैं। शरीर मृत्यापरांत दफनाते हैं। महादेव के उपासक तथा देवी पूजक व घरबारी होते हैं। इनके शिव घर में ही गाढ़े जाते हैं और उस पर चबूतरा बनाकर शिव मूर्ति बठाते हैं। गिरी, पुरी, भारती, वन, अरण्य, पर्वत, सागर, तीर्थ, आश्रम, सरस्वती आदि दस भेदों से ये दसनामी कहलाते हैं।

स्वर्णकार—जैसे साहे की चीजें बनाने वाला सोहार वसे ही सोने चांदी के कारीगर सोनी अथवा सुनार कहलाते हैं। सुनारों की यहा मेड और बामनिया दो उपाशाएँ हैं। मेड सुनार मात पूजक तथा शक्ति धर्मावलम्बी होते हैं। किंतु बामनिया सुनार विष्णु के उपासक कहे जाते हैं। इनमें अनेक लोग जनेऊ पहनते हैं और अपने का उच्च कुलीन बताते हैं। ये अपनी एक अथ माया बोलते हैं। मेडों की कडेल, सोलीवाल तुंगर, अगसइया, मशेन, लुद्र, सुरिया देवल, राडा आदि अनेक उपजातियाँ होती हैं। बामनियाँ सुनारों में भी काला, बदमेरा, जसमतिया, बूचा, खतोर, महेबा बगरह अनेक उपवश होते हैं। ये सब अपने व्यवसाय में बड़े माहिर और पटु हैं। बानिया जसी चतुर और राजपूत जसी कठोर जातियाँ काय ही अपने कर्जों में लेकर कमाते हैं। वर्तमान स्वर्णकार जाति में गाँव काटडी की मावित्री देवी एक प्रसिद्ध सती के रूप में पूजी जाती है।

खाती—उत्तर पश्चिम प्रदेश में बड़ई, पञ्जाब में तरखान तथा गौडवार जिले में सुतार कहलाता है। जालौर जिले में इसको विनामक नाम से पुकारते हैं। खाती शब्द की उत्पत्ति काठ से है कि काठ लकड़ी का नाम है जिसकी विभिन्न वस्तुएँ खाती बनाता है तथा खाती एक सुधार कहलाता है। ये विश्व कर्मों को अपना आदि देव गुरु और सावित्री का कुल देवी मानते हैं। राजस्थानी साहित्य में खाती 'रत्ना' का माहेरा एक अनूठा एवं मनोहारी भविष्य काव्य है। इनमें मेवारा, पुरबिया, डल्ला असालिया आदि उपवश पाये जाते हैं।

यहा के खातियाँ में कुछ लोग जनेऊ पहनते हैं और मास मदिरा से दूर रहते हैं तथा अपने नाम के साथ जागिड ब्राह्मण शब्द का प्रयोग करते हैं। राजस्थान के खाती लकड़ी लोहे और स्थापत्य कला के प्रसिद्ध कारीगर होते हैं। हमारे यहा के खाती गाँवों के लिए बड़े उपयोगी कलाकार एवं मस्तिष्क सम्पन्न व्यक्ति प्रसिद्ध हैं। कुछ खाती पुराना अपना काम छोड़कर नेतागिरी करते हैं। वर्तमान समय में बहुत से शिक्षित, जागिड ब्राह्मण पाये जाते हैं।

कुम्हार—कुम्हार का व्यवसाय हिंदू तथा मुसलमान दोनों करते हैं। लेकिन कुम्हार शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के कुम्भकार शब्द से है। हिंदू कुम्हार अपने को प्रजापत कहते हैं। ये अपनी उत्पत्ति का सम्बन्ध ब्रह्माजी से जोड़ते हैं। कुलालेभ्यो नमो—मनुष्य समाज के लिए इनका बनन बनाने का कार्य बड़ा महत्वपूर्ण है। इनकी

देश वाली, पूरबी, खटेर आदि सात उपजातियां हैं। पर महा के माफ़ कुम्हार अधिक प्रसिद्ध हैं। अब य लोग पढ़ने लिखने भी लगे हैं। कुम्हार शिव, विष्णु और आई माता के उपासक होते हैं। श्री कोलायतजी में इनका एक बड़ा धार्मिक स्थान है। इनकी जातीय पत्रिका 'राजापति जगत' (मासिक) भी निकलती है।

लोहार—राजस्थान में लोहारा का विकास राजपूत जाति से हुआ जान पड़ता है। ये लोह का निमाण व्यवसाय करने से लोहार कहलाते हैं। इनमें हिन्दू तथा मुसलमान दोनों धर्मों के लोग होते हैं। राजस्थान में लोहारों की गाड़िया और मालबिया दो उपजातियां हैं। गाड़िया लाहार पहले एक स्थान पर घर बनाकर नहीं रहते। वे गृहस्थी का सामान अपनी गाड़िया पर नादे एक गाँव से दूसरे गाँव तक आते जाते हुए 'गाड़िया लोहार' कहलाते थे। वे बिसौड़ को अपना पूरा स्थान बतलाते और देश की स्वतंत्र सरकार की रक्षम प्रतिष्ठा से महाराणा प्रताप के साथ से अपने को खानाबदोश जीवन व्यतीत करने की शपथ सिद्ध किए। इसपर उभर धूमते फिरते थे। अब श्री माणबलाल वर्मा ने इनकी उन्नत प्रतिष्ठा का स्वयं प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा समाधान करा दिया है।

मालबिया, मालबा से राजस्थान में आया हुआ मालूम होता है। ये गाड़िया लोहारों से पथक मायता लिए हैं। परन्तु बाली वस्तु का व्यवसाय करने के कारण ये सदा से अस्पृश्य माने गये हैं। जोधपुर, नागौर पाली तथा कुवाहन में अधिक मुसलमान लोहार हैं जो लोहे के अच्छे कारागर कहलाते हैं।

बेतडी के राज बाघसिंह के समयवासीन श्री नाम का कुम्हार एक बड़ा प्रसिद्ध कवि हुआ है। इसका 'जगत विलास' का ये बड़ा मुद्रण एक सालि य पूरा है।

दर्जी—दर्जी जाति नहीं, व्यवसायिक नाम है। बीकानेर जिले में मारे दर्जी हिन्दू हैं और उनका पीपा बशी तथा नामदेव बशी, दो उपजातियाँ हैं। सन् 1475 में पीपा जी नामक एक लीची राजपूत ने पराग्य धारण करके राजपूतों के लीचरों को बपटा मोने की सीख दी था। अतः इनमें पट्टिहार, पधार चौहान सीलखी तेंवर, दया, मन्वाडा, सिसादिया, बछावाह, गहलोतादि वंशों के लोग हैं तथा पीपा बशी कहलाते हैं। बीकानेर से 'सुपयमा' और जोधपुर से श्री पीपा प्रकाश नाम से इनकी पत्रिकाएँ निकलती हैं।

नामदेव बशी अपने को भवन नाम देव के अनुयायी मानते हैं। नामदेव एक साधु ठाक राजपूत थे। इन्होंने परशुराम से बचने के लिए पहले बपटों की छपाई का धंधा धारण किया और फिर सीने का काय करने लगे। ये छीपा दर्जी कहलाते हैं। पर कई बशी बपटा छापते हैं। कालू के तिवामी दर्जी इसी गति में बपटा छापते हुए सीने का काम धारण कर बैठे हैं।

राईका—ऊँटों का टोला चराने वाला को राईका या खरारी कहते हैं।¹ इनके दो भेद हैं—एक माफ़ और दूसरा चलबिया। माफ़ जाति के राईके उच्च मान जाते हैं। ये ऊँटा के साथ भेड़ बकरियाँ भी पालते हैं। ये राजपूतों के साथ रहते हैं तथा उन्हीं के काम आते हैं। पहले ये राज्य का टोला चराने करते थे। अब भावजनिक ढंग से गावों के स्याद ऊँट चरते हैं। हमारे यहाँ गाव माडवाने के राईके प्रसिद्ध हैं। अब कालू टोले में भी दूर दूर के काम अपने स्याद ऊँट लाते हैं।

1 गाव काटासर (तं० डूंगरगढ़) में श्री जोधा राटवा प्राचीन राजस्थानी का प्रसिद्ध भवन कवि हुआ माना जाता है।

मोची—माची पूव म चौहान, मायल और सोलखा तथा पवार राजपूत थे। इनकी चार उप जातियाँ हैं और अलग-अलग काम। ये पक्के चमड़े की वस्तुएँ बनाते हैं। मियागर तलवार बटारो के म्यान, बमरपेटी बनाते हैं। पनीगर सोने चांदी के बर्तन बनाते हैं। जिंगर लोग छोड़े गाहियों के साज, जौन और काठी बनाते हैं। जोडीगर जूते बनाते हैं। इनकी औरतें कढ़ाई का सुंदर काम करती हैं। कालू के मोची अपने को सोनगरा लिखते हैं।

बावरी—इनका प्राचीन इतिहास दस्तुता के कारनामों से पूर्ण है। मु० सोहनलाल कृत तबारीख राज बीकानेर के पृष्ठ 63 पर बावरी मीना और घोरी को जुरायम पेशा लिखा है। यहाँ के बावरी जगसी जाति में आते हैं। मेवाड़ में मीथिया और धार में बोहरा कहलाते हैं। ये अपनी उत्पत्ति राजपूतों से बताते हैं और कुछ लोग एक कथा सहित बावरी नाम की उत्पत्ति बावड़ी से बँठाते हैं। ये वही से दस्यु दृष्टि पर उताऊ हुए हैं। पंजाब में ये लोग बबरिया नाम से प्रसिद्ध हैं और शिकारी कहलाते हैं। इनका प्राचीन निवास राजस्थान है। इनके विवाहादि सत्कार ब्राह्मण करवाते हैं। ये सब देवताओं तथा गौ के भक्त होते हैं। पर मास मदिरा सेवन करते हैं। ये डकैत होते हैं तथा चोर डकैतों के खोज पहचानने का कार्य करते हैं। पहरेदारी का काम भी इन्हीं से लिया जाता है। पहले ये जरायम पेशा कहलाया करते थे। पर अब कृषि पर निर्भर रहने लगे हैं।

घोरी या नायक—घोरी लोग शिकार करने वाली जाति में आते हैं। पहले ये घोरी तथा लट खसोट करने से भी नहीं चूकते। वैसे तो ये अपना राजपूती बश बताते हैं। लेकिन ग्रहण के समय भागने निवस जाते हैं। घोरी आहेडी (अहेरी) कहलाते हैं। प्राचीन काल में बजारों के माल की रक्षा करते हुए उनके साथ रहा करते थे, तब से ये नायक भी कहलान लगे हैं। ये पाबूजी के भक्त होते हैं। पवाबा गाते हैं और फड बाधते हैं। इनके बाघ भाटा और राबण हत्या होता है। ये शराबादि-खान पान एवं नाता प्रथा पालन में प्रथम मनुष्य माने जाते हैं। कनक ढोंड ने इनको शतान ही नहीं उसकी शतान तक कहा है। कालू के घोरी बड़े उत्तमी हैं।

चमार—चमार संस्कृत शब्द चमकार से बना है। इसका अर्थमाय चमड़ा बनाना, पकाना और रंगन का होना है। 'राजस्थान की जातियाँ' नामक ग्रंथ में इसकी आदि उत्पत्ति ब्राह्मण से बताई है। पहले ये जूता बनाते और कपड़ा भी बुना करते थे। रामदेवजा के पूजक हैं और गंगाजी जाते हैं। पर सूजर को छोड़कर प्रत्येक पशु का मांस खान स नहीं चूकते। भाम्बी इन्हीं का एक उपभेद है। गुरडा ब्राह्मण इनका पुरोहित होता है जो सब कामकाज करवाता है। यह चमार, बताई, भेघवाल आदि नामों से पुकारा जाता है तथा बेगार देता है। बीकानेर में इस जाति के लालगिरी नाम के साधु ने एक धार्मिक पथ चलाया था। आजकल हरिजन नाम से इस जाति की बड़ी उन्नति है। चंद्रसूक्त के श्रुति के शब्दों में—'चम कारेभ्यो नमो !'

सासी—सासी को भरतपुर के एक निवासी सासमल की सतान बताते हैं। कई लोग योराप की हूबडी जाति से सासिया का संबंध जाड़ते हैं। पर यहाँ सासा अधिकतर मांगकर खाते हैं। किसी के भा घर भोजन, मांगन चले जाते हैं। बीकानेर जिले के सासी श्रुति भी करते हैं। सासिया की सामाजिक स्थिति निम्न स्तर की होती है। य

लोक, जूठन भी खा लेते हैं। विवाह आदियो में बरातें मांगती हुई इनकी स्त्रिया नाचती जाती हैं। मद काम करते हैं, बदने में किसानों के खलिहानों से अनाज मांग कर लाते हैं। इनका दूसरा बग मदन की मचारी में खानाबदोश जीवन बिताते हैं। जहाँ ठहरते हैं उस स्थान को डेरा कहते हैं। ये अपने साथ कुत्ता बकरी और भुगों भी रखते हैं। कुछ घुमक्कड़, कापटिया सासी, जो सब प्रकार की चोरियाँ कर लेते हैं। इनकी भापा राजस्थानी का एक रूप है जो हरेक व्यक्ति को अटपटी व अम जैसी लगती। मासिया मस्त्री चरित्र का बड़ा महत्व माना जाता है। यदि अ य की स्त्री से दूसरे मद का अवश्य सम्बन्ध पकड़ा गया तो उसे जाति में बाहर करके विरादरी के जूते उठाये जाते हैं। भोज लेते हैं, दंड जुमाना से माफ करते हैं। शेष भारे मृतक मस्कार हि दुआ के होते हैं।

भगी—मल, कुड़ा बरकट की सफाई करने वाली जाति को भगी कहते हैं। सर हैनरी इलिफट के लिखन के अनुसार भगी नाम भाग पीने के कारण रखा है। पजाब में इन्हें चूहड़ा कहते हैं। भगी को हमारे यहाँ मेहतर भी कहा जाता है। मेहतर फारसी में राजकुमार का पर्याय है। बनस टोंड ने इस जाति को निम्न बताया है। य लोग अधिक नगरों में रहते हैं और गावों में कम। सब प्रकार की सफाई का काम करते हैं। पुराणा के आधार पर इनकी उत्पत्ति एक ब्राह्मण विधवा स्त्री और एक अ य मद ग दूई बनाई जाती है। वनमान समय में भगी लोग नगरपालिकाओं की नौकरी करते हैं और गहर सफाई का उत्तरदायित्व सम्भालते हैं। इनके अपने जातीय माघ होने हैं जो पुरोहिताई ढंग में उनमें विवाह और मृत्यु के काम करवाते हैं। राजस्थान में चारोस बग के भगी मान जाते हैं। अब ये पढ़ लिखकर अच्छे पद पान लगे हैं। लूनरगनम के उदा और योला भगी बड़े पांडाग थे। अजमेर में निकलने वाली पालिका कमचारी पत्रिका इनके पक्ष में है।

ढाढ़ी—बसोचारक जातियो में यहाँ मिरासी, ढाढी ढाला भाट चारण रावल, मात्तीसर आदि अनेक जातिया हैं। इनकी अनेक बहिष्म खापें होती हैं। परंतु ढाढी एक गायक जाति, जिसका पेशा उत्सवों पर गाने, ढाल बजाने बदीजन एवं मवेशिवाहक का काम माना जाता है तथा पल्ले बधा चलता है। पहले यह हिंदू ढोली या भाट थे, किंतु बाद में मुसलमान बने जान पड़ते हैं। ये लोग अब तक हिंदू रीति रिवाजों का सम्मान करते हैं। बहिष्म करना इनका बग परम्परित व्यवसाय है और हर बाघ घजाने में निपुण होते हैं। सरस साहित्य के सज्जक तथा सरसक मुख्य रूप से ढाढी ढोली होते हैं। ढाढी बाक् पट्ट पहले बधा वारता भी कहा करते थे। आधुनिक जमाने में इनकी कला का आदर रेडिया सिनमा के कारण कम होता जा रहा है।

हिजडे—हिजडे लोग मद और स्त्री से पृथक् एवं ज म जात एक प्राकृतिक जाति के प्राणी होते हैं। य नपुंसक या नाजिर भी कहलाते हैं। गावों में इनको गतराठा या खोजा कहा जाता है। पुराने ग्रंथों में प्रमग स्थानों पर इन लोगों का पर्याय योग मित्रना है। कोई ना हिजड़ा मान्य जाति में अपन्न श या अपाहिज नमूना होता है।

हिजडे जनान वस्त्र पहनकर खजरी मजीरा पर ताली बजाकर नाचन गान का पेशा करते हैं। हाथों में चूड़िया बाना में बालियाँ और नाक में लौध भी पहनते हैं तथा दाढ़ी मूँछ कतई नहीं रखते। य नपुंसक होते हैं। इसलिए राज्य क अंतपुर में द्वार रख का काम भी देते रहे हैं। बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह स्वरूपसिंह व मुजानसिंह के आनंदगम और सनित नाम के दो नाजिर मुसाहिव थे। नाजिर आनंदराम एक कुशल

राजनतिक होन के साथ माहित्य प्रेमी एव विद्वान या ।¹ उसन गीता का गद्य पद्य म रोचक अनुवाद किया था । वरुण लूनकरनसर म एव ऐसे शोजे का आज भी निवास स्थान हैं ।

इनके अलावा इस एरिया म विभिन्न जातियों के लोग है और उनके उतने ही समाज तथा रीति रिवाज हैं ।

पूर्व काल म गिला प्रसार—120 वर्ष पहले तहमील लूनकरनसर म मदरसा नहीं था । महाजनान व ब्राह्मणान के लड़के हर किसी पढ़े लिखे व्यक्ति के पास हिंदी व शास्त्री पढ़ते थे । मराजनों में लड़का हिसाब व इबारत सिखना सीख लेता उसको वही खाता, हँसी, चिट्ठिया, दफ्तर के कामती हफ्ता लिखन के रखत म डाल देने और अपने कारबार में लगा देने थे । पढ़ाई कम थी बेइल्मी ज्यादाह थी । इसलिए लूनकरनसर, अनूपगढ मिरजाबाबा और श्री इंगरगढ तहसीलात के सिवाय सदर बीकानेर, रानी सुजानगढ, सूरतगढ, धूरू, सरदारसहर, राजगढ, भादरा, नोहर, हनुमानगढ, रतनगढ आदि तहसीलों म मदरसा खोले गये थे । सदर बीकानेर के मदरसह में 7 उस्ताद हैं बि जो अंग्रेजी व फारसी तालीम देते हैं—5 उस्ताद हिंदी की तालीम देन वाले हैं । सिवाय इसके बीकानेर म एव मदरसह निसवा भी खोला गया है उसम लड़कियाँ तालीम पानी हैं—और बोले असे में उनकी काफी तरबकी हो गई ।² 'बेकूजात के मदरस की निगरानी और इम्तिहान के यह सिलसिला तरबकी नहीं पा सकता—इसलिए इसकी तबकरी जरूरी थी ।'³

"अवजुमला मदरिस में—माह दिसम्बर सन् 1889 ईस्वी तक हाजरी तुलबा⁴ 378 तक थी—इस साल में 1037 दाखिल हुए इस पर भी सिहाज होने से शौक तालीम ज्यादाह पाया जाता है तिस सम्बत 1945 में जुमला मदरिस के लिए स्वरजल—

[सदर बीकानेर — रानी — सुजानगढ — सूरतगढ — धूरू — सरदारसहर					
5599)	489)	583)	567)	875)	1061)
राजगढ	बहादरा	नोहर	हनुमानगढ	रतनगढ	मीजान
427)	427)	432)	334)	427)	11221)]

सब की मजूरी हुई है—हर किस्म की तालीम देने वाले 31 उस्ताद हैं ।⁵ इसके अनुसार लूनकरनसर में उस समय मदरसा नहीं था ।

लूनकरनसर तहसील म गांव दूर दूर और छोटे छोटे हुआ करते । पढ़ने वालों की संख्या भी कम रहती । वाफनवार और मवेशी चराने वाले अपनी जगह छोड़कर दूसरी जगह चले जाते थे । गंगासिंह जी ने ई सन 1912 को अपनी रोप्य जयती के अवसर पर तहमील लूनकरनसर म भी गिला वडि की शुभेच्छा प्रकट करते हुए तथा राज्य में

- 1 बीकानेर राज्य के सब इतिहास लेखकों ने इन मुसाहिबों के वणन दिये हैं ।
- 2 तवारीख राज्य श्री बीकानेर म सोहन लान पृ 287 288 (4 5, 6, वही त रा श्री बी)
- 3 क्या विद्यालय (त रा श्री बी)
- 4 तहसील लूनकरनसर के गांव शेखसर निवासित चौधरी गंगाजल व रामरस को श्री आसाहब ने बत्तौर इज्जत कटा व पाग का इनाम दिया था ।
- 5 बी० राज० का इति० बहैयाजू देव चौथा खंड पृ०-145

तालीम का होना जरूरी जानकर गाँवों में मदरसे खोले। इस महकमें तालीम में एक डाइरेक्टर की खास जगह तीन साल के लिए मजूर की। मि० हबर्ट शेरिंग (नायब प्रिंसिपल मेयो कालेज अजमेर) पहले डाइरेक्टर नियुक्त हुए थे। फिर इस पद पर अच्छे अच्छे अंग्रेज आये।

ममस्त भट्टाण व कलस के वासा का तहसील मुख्यालय लूनकरनसर अपन जिले से उत्तरपूर्व में सदा से मड़ी स्वरूप स्थित है। यह खारे पानी की झील के लिए इतिहास प्रसिद्ध गांव रहा है। ई सन् 1879 में हुए अंग्रेजी सरकार के इकरारनामे के अनुसार यहाँ अब नमक निकाला जाना बंद है। पहले नमक निकाला जाता था तब यहाँ बड़ी शर्दी पड़ती और उसके कारण पेड़ पौधे तक सूख जाया करते थे। व्यापारियों की इधर के रास्ते बाबुल जाते समय काफी कष्ट सहन करना पड़ता था। लूनकरनसर के नमकीन आकरा में बर्फ जमी हुई रहती थी। आज उस गिजगिजी सरगल मिट्टी में छपछप भीठा (नहर का) पानी छलछला रहा है। जगह जगह जिप्सम के ढेर दिखाई दे रहे हैं। रेलवे स्टेशन के पास की भूमि को इससे उदर बाफरा चढ़ रहा है। तीन चार दशान्दिया से प्राय जिप्सम मरी गाड़िया जाती हैं। बड़ा कारखाना चलता है। काफी लोग काम करते हैं और देखने वाला की आँखें इस छिलोड़ी नामक पदार्थ की चूना चमक पर आश्चर्यावित होती हैं।

सन् 1808 में मिस्टर एल फिस्टन इस तक स बाबुल गया। उसने लिखा है—
‘राजधानी से थोड़ी दूर का देश अरब के उजाड़ जंगल की भाँति भयावना है। वर्षा के थोड़े पानी ने भूमि मनोहर हो जाती है। सबकु सुंदर पुष्टि कर स्वादिष्ट घास उग आने से यह स्थान उत्तम चारागाह बन जाता है। (वी० रा० इ० पृ० 158 कु० व० जू० दे०)

भट्टाण का फल सरस मतीरा

भारत में राजस्थान प्रदेश फला की दृष्टि से अग्रणी नहीं कहा जा सकता। यहाँ की भूमि में प्रायः जल एवं जलानियों का अभाव है। बस बाटिका फल फूल और हरियाली ये सब दशन मात्र को मिलते हैं। वसंत ऋतु ही महीने मासके लिए उदास रूप में आकर तुरंत प्रौष्ठ में परिवर्तित हो जाती है। परंतु यहाँ के घात गुल्फ रेतीले टीलों पर कोमल वेल का विकास कर मतीरा जसा सुधा तुल्य मिष्ठ फल मनुष्य को लघु थ्रम से प्रदान कर देना देवी प्रकृति की पीयूष वणिणी विचित्र अनुकम्पा का ही अलौकिक परिचय प्रमाण है। मातेश्वरी के प्रसाद स्वरूप इस मतीरे की प्रशमनीय प्रसिद्धि देश के दूरस्थ स्थानों तक प्रसारित है। श्री वियोषी हरि ने सत्सई में लिखा है कि ‘मतीरे वाले राजस्थान प्रदेश से अनभिन्न लोग ही उसे मरुदेश कहते हैं।’

मतीरा मनुष्य का स्वादिष्ट भोजन है और उसके खान से आनंद तथा रस की प्राप्ति होती है। अस्वस्थ आदमी मधुर सरस मतीरो के मिल जाने पर, अप्राकृतिक खाद्य पदार्थों से विनारा बाट लेता है। कारण—इस सुस्वादु तथा तृप्तिकारक फल लाभ की तुलना कृत्रिम भोजन कदापि नहीं कर सकते। मतीरा जीवनदायी सजल फल है और प्रत्येक रोग का नाशक एवं अद्वितीय दवा है।

मतीरे की वेल हृद्रायण फल की वेल जैसी होती है। पत्ते गोल बगूरदार और फूल हल्के पीले रंग के निकलते हैं। बच्चे फल की ‘लोइया’ नाम से खोजी बनाते हैं।

बच्चे मतीरे की गिरी (गूदा) सफे और पकने पर लाल एवं गुलाबी होती है। बीज धवल, लाल तथा भूयागिरी रंग के होते हैं, जिनको त्रय से चामणियाँ, बाणिका एवं जाटूके नाम से बोलते हैं। किसी किसी की गिरी भी उज्ज्वल होती है। यह फल हरा-सफेद, चिकना चित्रित, तरबूज से छोटा सुंदर होता है। इसका बाह्य मजबूत होता है। इसे क्वार कार्तिक से लेकर फाल्गुन चंद्र तक रखा जाता है। इसकी भरपूर उपज दीप-मालिका के आस पास होती है। 'दिवाली का दीया दीठा, काचर घोर मतीरा भीठा।' लेकिन इसकी लता अगहन तक फलित प्रफुल्लित रहती है। पश्चात् पौष का पाला मार जाता है।

भूख मज्जन अर मन रज्जन, तिमिया कर भुवेस ।

श्लो०^१ मत ना लाग्यो, तन मतीरे री बेत ॥

मतीरा ठण्ठा भीठा ग्राही स्निग्ध तारीर है। मूत्राश्रय उपदण, जनन अपस्मार, नाक का रक्तस्राव रक्तविकार, दाह, दवासीर, पेट के रोग, मूहासे मोटापा, क्षय वात श्लेष्मा-तृषा, यक्षान, नेत्र रोग तथा मिर दद का मिटाने वाला होता है। यह वीर्यवद्धक पुष्टिकारक, रुचिकारक तथा राजस्थान का अमृतोपम मन भावना फल कहलाता है। इसका रस मूत्र कारक, स्वभा की चिकना बनाने वाला, वातिदाता स्फूर्तिदाता, कब्ज नाशक और अग्नि मदता को दूर करने वाला होता है। इसको पैरो की धुनमुनाहट तथा पाण्डुरोग में देकर उन से मुक्ति पायी जाती है। कई लोग इसके भूदे के साथ रोटी खाते हैं। मतीरे का सबसे बड़ा लाभ यह है, कि इसके खाने से लोणा का विषला परिणाम दूर हो जाता है, और बाकापन, उदारता सहनशीलता आदि गुण बढ़ने हैं। लोग इसके सामूहिक आनपान में भेदभाव रहित होकर खाते हैं।

जाँती की सफाई अजीर्ण की दफनाई, हृदय रोग की रफू, फेफड़ा और धुक् की सुनायी करके मतीरे का रस जुलाब का काम सफल रूप में करता है। इसे सेवन करने वाला मनुष्य कम बीमार पड़ता है। यह बूढ़ों और बालकों का अत्यंत उपयोगी भोजन है।

राजस्थान में अमीर, किसान बूढ़ एवं रोगिया की मन चाहनुसार मतीरे मिलते हैं। प्रवासी लोग प्रमोद लिए मतीरा की फल पर आ टपकते हैं और अन्य लोगों के साथ बैठकर आनंद मनाते खाते हैं। कृषक बादमी काय के प्रत्येक विधाम पर अपने तन नयी ताकत भरने हेतु दिन भर बेल से तोड़ते फोड़ते हैं। बद्धयण प्रातः साय बीपाल में बैठकर बाँट बाँटकर मतीरे खाते हैं। पति परनी भाई बहन, भाँ बाप बालक बालिकाएँ एवं समस्त परिवार सानद मिलकर खेतों में रहते हैं और बेल से ताजे मतीरे बेल मेल से तोड़कर मनचाहा सुख पाते हैं।

अवस्था जन संध्या समय बेल सलग्न मतीरे में चाकू से छेद करके यादों मिथी भग्वर बंद कर देते हैं और प्रातः काल की गुलाबी ठंडक के साथ, स्वयं के हाथ मतीरा नाल से पथक करके पथ्य लेते हैं। मतीरा खाने का श्रेष्ठ समय खासी पेट होता है। फसल के दिनों में मित्रा की मतीरा सगोष्ठी आयोजित होकर खेती की बहार सेती है और चलते राहगीर भी विधाम के बहाने रास्ते के खेतों में बैठकर मतीरा खाते हैं। विशालय बंद रहने पर मस्त बालक बालिकाओं के झुंड खेतों में मतीरा खान जाते हैं

और मतीर पर पहलियाँ बोलते हैं। जैसे—

“ढोलर पान ढगामग ढाँडी, बिना कुम्हार पढीज हाँडी,
बिना जमावणी जमाइज दही, मद के पेट इस्तरी रही।”

पहले इसकी शरारत बनती थी। यह उत्तम फल, वन्य बालभो का ब्रेकपास्ट, मजदूर मन का शरद पेय एवं हृषिक के लिए शक्तिदायक नेचरल शरबत है। मतीरे का रस आदमी को फीरन ताकत देता है जिससे कमजारी का जड बटकर ताजगा की कापसे फूट निकलती हैं। किसी कवि ने कहा है— घोलाभकभूरा पठाळा, पठेघटटा सर सीकाळा सीकटेका मोठा मोठा सूजी सबकर का सीरा है। मरुधर का मधुर मतीरा है।”

पर, सभी मतीरे मिट्टी की सुराही के पेट की तरह गोख नहीं होते। इनमें से कुछ खड़े घरमस की भाँति लम्बे पतले, बसो म सगे पड़े होते हैं, जिन्हें लोग चाव से खाज कर खाते हैं और आल के नाम से बोलते हैं। शास्त्रोक्त रीति से देवताओं के आगे भी मतीरे की भेंट बढ़ायी जाती है। राजस्थान में दीपावली की रात को मतीरे से लक्ष्मी पूजन करते हैं। दूसरे रोज गाव के लोग मतीरे फोड़कर भगवान का प्रसाद सजाते हैं और धूप-दीप से आरती उतारते हैं। पुजारी के सखोदर बरसा देने के बाद, उपस्थित लोग बड़े हर्षोत्साह से प्रसाद की खपरिया ले लेकर खाने लग जाते हैं। मतीरो के सारे शौकीन इस धार्मिक काय में सम्मिलित होते हैं। यह उत्सव अनकू टका प्रसाद कहलाता है। लोग इस दिन अनकू टका व्रत भी रखते हैं।

मतीरे को आदमी नहीं, सार पशु पक्षी और छोटे बड़े मकोड़े तक जानते हैं। गाय, भस ऊँटादि पशुओं व अतिरिक्त अ य पशु पक्षी भी दूर दूर से खाने चले आते हैं। तीतर (एक चिड़िया) फूल स फल बनते ही चोच मारन लग जाते हैं। कागडोड (पहाड़ी कौवे) इस फल की फसल पर उड़ उड़कर मडराने लगते हैं। सियार, सेही और शूकर जैसे जानवर खेत उजाड़ने पर पूर उतारु हो जाते हैं। बूहे, गिरगिट और छींटणिया सब मतीरे के रस पर मिलकर पलते हैं। फाका टिडडी तथा कातरा इसकी बेल को ही खा जाते हैं।

जैसे ता मतीरे का फल सारे राजस्थान में उत्पन्न होता है, मगर बीकानेर जिले में भडान क्षेत्र का कागजी कापावध मतीरा बहुत मीठा और मन रजन होता है। इस जिले की आस पास वाली सीमा भूमि में बेजोड जायकदार ढेरो मतीरे पैदा होते हैं। यह फल रबी की फसल के साथ नवार मास के आखिरी सप्ताह में अपने कच्चे, अधपके तथा पके हुए रूप में मिलना शुरू हो जाता है। खेत के मालिक हूँट पुँट एवं तगडे मद बनने हेतु सुनियोजित प्रकार से रोजाना नियम पूर्वक मतीरा खाते हैं। वे पहले 15 20 कच्चे अथवा अधपके बाजरे के दूधिये सिटटे (मुटटे) मसलकर उनके दाने (मोरण) करीब ढाई सौ ग्राम तक चबाते हैं और फिर छटपट ताजा मतीरा तोड़कर खा लेते हैं। इसके बाद ककड़ी या खरबूजे की एक दो फाके खा लेते हैं। इस स्वाभाविक शीतल दैनिक भोजन से उसके पिचके हुए गाल साँल हो जाते हैं और महीने भर में व मनुष्य धीरे धीरे एवं मुसटडे बन जाते हैं। कमजोर आदमी भीठे मतीरे का साग वनबाकर रोटी के साथ

मजे से खाते हैं। औरतें छोटी मतीरिया झीलकर घूप में सुखा लेती हैं और वय पयत साग बनाने के काम में लेती रहती हैं। इनको 'सिफलती' कहते हैं। सिफलती की बड़ी एक छाछेती भी स्वादिष्ट होती है। खाने से पहले चाकू या हाथ से मतीर के दो भाग किए जाते हैं, उन्हें 'खपरी' कहते हैं। खपरी का गूदा एवं रस लेकर उन्हें सूखने दिया जाता है। अघसूखी खपरी चलटकर किसानों के घालों का काम देती है। फसल की समाप्ति पर खपरिया कूट उबालकर गाय, भस आदि को खसी बिनीला की जगह खिलाते हैं। खपरी को जलाकर घरू वेंच घृत के साथ खुजसोना मग्हम भी बनाते हैं।

वर्तमान समय में मतीरे के बीज भी बड़े उपयोगी होते जा रहे हैं। बादाम, काजू पिस्ता की कमी महगई में विवाहोत्सव पर मतीरे के बीजों की मिर्गी (गोटे) स चरफा (कतलिया) बनायी जाती हैं। पसानी इन्हें ठंडाई में मिलाते हैं। दुबल परिस्थिति वाले मालखान की प्रवृत्ति पर मतीर के बीजों की खीर बनाया करते हैं। भूजे हुए बीजों पर नमक लगाकर सोय चबणी घाणाकी तरह दोपहरी करते हैं। इनमें बोरियो मिलाकर बालक बड़े चाव से खाते हैं। मताएँ बीज बोरियो को ऊलती में कूटकर बुरादा धूण बना देती हैं। बालक इसको 'खोडी' के नाम से खाते रहते हैं। मतीरे के बीजों की रोटी भी बनती है, जिसे कृष्ण मजदूर भट्टे के साथ बड़ी रुचि से खाते हैं। मतीरे के बीजों का तेल आदमी के चर्म रोग एवं पशुओं के कीड़े मारने में रामाबाण का काम करता है। यह तेल मनीरिया के पुजों में देने के लिए भी काम आता है। इसलिए मतीर के बीज पर्याप्त मात्रा में गाहियों से बाहर भेजे जाते हैं।

मतीरा घों ता हर समय खाया जा सकता है, कोई हानि नहीं करता। किंतु लींग बाग मिलकर भोजनापरात ही मतीरा खाते हैं। तेज घूप में रहा गम तपता मतीरा अधिक पाले में पड़ा ठंडा-ठंडा मतीरा एवं खीर और हलवा खान के बाद खाया हुआ मतीरा, मनुष्य के शरीर में गहबड़ खड़ी कर देता है। इसलिए सदियों में थोड़ा घूप में घरकर गर्मी में से लाया हुआ छामा में रखकर और मामूली रज्ज भोजन में लिया हुआ मतीरे का रस स्वास्म्य के लिए मुफीद होता है। ऐसे रस भरे मतीरे का खलमला और गुष्क गूदे वाले को मूखा-पाका मतीरा कहते हैं। मतीर के विभिन्न भाग गिरी डली और कजा कहलाते हैं। राजस्थान में पृथक् पृथक् रूप के मतीरे होते हैं। इनमें भूरा, पठाला साकाला छिवठकाला, सीकटका कोल्लेघट्टा जालघट्टा, छोटे नकह का, पतले कापका (कागजी) प्रमति मतीर बटे भीठे एवं गुणकारी होते हैं।

मतीरा वषा कासीय मधुर फल है, पर इस मौसम के विपूजिकादि सब दोषों को नष्ट कर देने में पूण समय है। कातिक के अंत में होने वाले मतीरा को 'सीकटका मतीरा' कहते हैं। इसके सेवन करने से साल भर तक लू लगने या हैजा हान का भय नहीं रहता। सुरक्षित रखे मतीरा के अंदर बीजों से फूटे अबुर घाटकर बच्चा की चंचक में धूटिया दिया जाता है। राजस्थानी जन्मा के लोक गीतों में मतीरे के बड़े गीन गाय जाते हैं।

मतीरा माने रोग नाशक, अबूक औषधि एवं अनुपम मज्जूपा है। अतः-एवाधरी में इसका पलाहार होता है और त्यौहरो पर देव पूजन। राजा महाराजाओं, श्रीमती तथा

हाकिमा को जुगों से मतीरे की भेंट चढ़ती आयी है। आयुर्वेद चाली ने राजस्थान में सतरे मौममी के रस स्थान पर मतीरे का रस देकर सैकड़ों को जीवन दान दिया है।

पशु परिचय वृत्त—लूनकरनसर क्षेत्र में पशुओं से काम लेने का पेशा आज भी लोक प्रियता के साथ पनपता पतता है। भले ही यहाँ बसा, मोटरों, ट्रैक्टरों और विभिन्न विद्युत श्रेणियों ने आकर मनुष्य सेवा की सारी समस्याएँ हल कर दी हो तथा तन्नीकी सुविधा बढ़ि में अच्छी तत्पर मदद पहुँच रही हो। पर तु प्राचीन सेवा प्रदायिनी पशु-परम्परा लूनकरनसर तहसील के गाँवों में वर्तमान समय में भी अन्न भावाय विद्यमान है।

काम घणों देवों वृत्त, मिनसा देण अराम।

कहीं जस धारो करा थलवट रा ये धाम ॥ (च० दा० सामीर)

ऊँट महा के किसानों का जीवन साथी है—

ऊँट सवारी देय, ऊँट पानी भर लाव।

लकड़ी ढोव ऊँट ऊँट गाड़ी ले धाव ॥

खेती जोत ऊँट, ऊँट पत्थर भी ढोव।

जो न होय हल ऊँट, लोग कर्मों को रोव ॥

कवि कह घाय तुम साहिबी, जसे को तसो मिले।

बिन जट्ट रु उट्ट भुरट्ट मे, कहो काम कैसे चल ॥

स्थाठ की प्राचीनता—

लका ऊपर धुरया निसाण जद होती हूँ टोड तिहाण।

बीकानेर बसाई बीक, जद हूँती टौलें में टीक।

मालाणी में राबल माली, जद चरती हूँ काचो पासो।

तू काई पूछ चारण जुबा, कीरव पाण्डव कास हुवा।

खोजी—तहसील लूनकरनसर में शेरगढ़ और रामगढ़ नाम के दो व्यक्ति, गत शताब्दी में जबरदस्त खोजी (ऊँटों के पद-चिह्न ज्ञाता) थे। उनकी सरकार में मा यता थी। वे ऊँटों और चोरों के खोज बताया करते थे। कालू में ईसरजी सारण और चाँदसर में मोती बाबरी क्षेत्रीय खोजी थे।

यहाँ घोड़ों का भी महत्व है कि इस क्षेत्र के उत्तरीय किनारे पर पवित्र ब्रह्मावत या आर्यावत जिसे उत्तम क्षेत्र का नाम दिया हुआ है। मनुस्मृति (9/17) में जिसे देव निर्मित देश बताया गया है। वह अश्वमेध यज्ञ स्थल भी बना था। आगे चलकर यहाँ राजपूत काल में घोड़ी घोड़ों ने जो चमत्कार दिखलाय, उनकी बातें तो बच्चे बच्चे की जवान पर हैं। इस क्षेत्र में काबुल और कंधार के घोड़े भी आये हैं। 'मेल सुमरणी जगी घोडा, सोख घणान राख घोडा।'।

गाय माय का दूध तो हमारे क्षेत्र में जन जन की जिह्वा पर मिष्ठ चष्टि करता है। गायें यहाँ दूधार् राठी सिषण भाडेचण नागौरी, मेवाती, ककरेज आदि सब तरह की होती हैं। भसैं तो खादर की प्रसिद्ध है। खादू की भसैं भी बड़ी मस्त होती हैं। यहाँ की भसैं देखकर किसी दुबल चारण ने कहा था—

चारण मत कर चतुरभुज, भस करे भगवान।

खल खावू, पाणी पिवू, बरू ठडी छान ॥

भेड बनरिया के ता यहा सहस्र जानवर रेवड हाते हैं। क्योंकि यह क्षेत्र, पशुआ का चारागाह रहा है। परंतु बनरियो की अपेक्षा यहा भेडो का अधिक महत्व है। इस मडल का ऊनोद्योग राजस्थान म सर्वोपरि माना जाता है।

भेडों की विविधता—यहा मगरा नस्ल की भेडें अधिक होती है। इनकी आंखा के चौतरफा भूरा घेरा, पूरा पूछ और थोड़े भुड़े हुए नान हाते है। मादा भेड तोल म कम और नर भेड का ताल थोड़ा ज्यादा होता है। इनकी ऊन मध्यम दर्जे की मानी जाती है, जो मोटे गलीचे बुनने के काम मे आती हैं। ये भेडे साल मे तान लाण (कत्तर) देती हैं।

विदेशों की 'मेरिनो' जाति—भेडा की जननी चौखला नस्ल की भेडें भी इस क्षेत्र में पाली जाने लगी हैं। इनके चेहरे पर गहरे भूरे या कासे रंग के छिबके होते हैं। किंतु कुछेक भेडें सफेद सादे चेहरे वाली भी यहा मिलती हैं। मादा भेड से नर भेड सुदृढ़तम होता है। फिर भी इसका पूछ व शरीर हलका माना जाता है। वय म दो बार इनसे ऊन के लाण उतरता है, जो सुपरफाइन व अत्य श्रेणी मे मान जात है।

यहा नाली नस्ल की भारी भेडें भी पर्याप्त सरया मे मिलती है। इनके कान लम्बे, पूछ छोटी और ऊन चिकनी होती है। ये हल्दिया रंग के दा लाण देती हैं, जो माटी ऊन कहलाती है। इस ऊन का रेशा लम्बा होता है और सुंदर वस्तुएँ बुनने म काम आता है।

क्षेत्रीय केन्द्र—हमारे तहसील मुख्यालय पर "भेड ऊन प्रसार केन्द्र" स्थापित है। वह प्रशिक्षित प्रभारी अधिकारिया के प्रणामनिक संचालन युक्त सु व्यवस्थित कारखाने चलता है। कृत्रिम गर्भाधान योजना के सघन कार्यक्रम के अ तगत यहाँ 'महाजन म' प्रसार केन्द्र भी है, जिसमे भेडों को सामान्य एव सक्षमक रोगा स संरक्षित रखा जाता है। अगुद्ध नस्ल के नर भेडो का यात्रिक बधियाकरण भी यहा होता है।

हमारे (बीकानेर जिले म) बजर इलाको मे भेड पालन का सघन संरक्षण हाता है। सोवियत ग्रामीण क्षेत्र के स्तानोपोल अंचल से आई हुई भेडा की यहा की जलवायु के अनुकूल बनाया गया है, जिससे पशुआ की बवालिटी उन्नत हुई है। इन भेडो की स्था नीय नस्लो के साथ संकरित किया गया है। चौखला, दिसई सलमेरी और मलपुरा नस्ला को अच्छी तरह संकरित कर दिया है, जिनके सहयोग सु दूर शावक हर साल संबद्ध होते हैं।

भारत कृषि मन्त्रालय के भेड पालक के मुख्य विशेषण श्री तनजा न अपनी जीव से कहा है कि इन विदेशी नर भेडा के कान भाटे और पाव मजबूत होने हैं। इनके बाल नरम सुन्द तथा लम्बाई दस सेंटीमीटर तक हो जाती है। इन नर भेडों के चेहरे पर अधिक बाल नहीं होते। गदन के बाल वाले गुच्छे आसानी म बनर पाते हैं।

इनके अतिरिक्त स्वच्छ, सुंदर एव सम्ब रेशे वाली ऊन का उत्पादन बढ़ाना तथा उन की किस्म में वारीक श्रेणी की ऊन अधिक उत्पादित करवान के कार्यक्रम भी यहा प्रचलित है। विशेष भेड पालकों (रेवड वाली) को श्रृंष उपलब्ध करवान क प्रावधान केन्द्र द्वारा सुरक्षित हैं और इनकी ऊन को अच्छे भावों से बिकवा कर लाभ दिसवाये जाते हैं। बालू म भेड व ऊन का प्रसार केन्द्र सचेष्ट है।

स्टेट ऊन मिल बीकानेर—इसमें कच्चे ऊन की भारी खरीद होती है जिसके कारण सड़का अधिक काम करते हैं। विविध प्रकार का ऊनी धागा बनाया जाता है। यहाँ होजरी का धागा तयार किया जाता है और वाऊट के धागे की कटाई भी होती है। इस मिल में ऊन स्वच्छ करने का सयत और श्रेणी निर्धारण केन्द्र भी है। यहाँ के बने धागे की लुधियाना एवं अमृतसर से काफी माग आती है। इस मिल से धागा दिल्ली, आगरा और वाश्मीर तक विप्रेय किया जाता है तथा सारे देश में माल निर्यात होता है। इस ऊन मिल (बीकानेर) में श्रमिकों को सब प्रकार की सुविधाएँ दी जाती हैं। अब यह स्टेट वूलन मिल जीवनमल जग नाथ (JJ) तापडिया जसवतगढ़ क लीज पर है।

औद्योगिक क्षेत्र में यहाँ का सारा ध्यान ऊनी धागे पर ही केन्द्रित है। भारत वूलन मिल्स स्टेट वूलन मिल्स राजस्थान वूलन मिल्स फ्रण्ड्स वूलन इंडस्ट्रीज गणेश वूलन मिल्स, कमल कारपेंटस जनता काउडिंग एण्ड स्पिनिंग कम्पनी, ओझा वूलन मिल्स, लक्ष्मी वूलन मिल्स एवं छालानी वूलन मिल्स बीकानेर वूलन मिल्स जनरल इंडस्ट्रीज गणपति वूलन मिल्स मोंडन वूलन मिल्स और अलाइड फाइबर्स एण्ड टैक्सटाइल्स कार्पोरेशन आदि में ऊनी धागा बनाया जाता है। इसमें कच्चे माल से ऊन तयार होती है जो व्यापारि पाप्त बीकानेरी ऊन कहलाती है।¹ यहाँ पचामा मिल्स उधन काम मलग्न हैं।

बीकानेर के बने पम्बल तथा दुसूतिया इसी धागे से बनाई जाती हैं। यहाँ का बना ऊन और ऊनी धागा देश तथा राज्य के अथ भागों में भी भेजा जाता है तथा कच्चे माल के लिए बीकानेर की मिला को अपनी चारा तहसीलों के गावों से माल मगवाना पड़ता है। इसमें कोलायत और लूनकरनसर क्षेत्र भरपूर ऊन भेजते हैं।

ऊन उद्योग बहुतायत का कारण—बीकानेर मंडल में पानी का मूल्य मदद ऊँचा रहता आया है और सूखे तथा अकाल के समय तो पानी दूध से भी ऊँचा उठ जाता है। किंतु ऊनी धागे के उद्योगों में पानी की, यूनतम आवश्यकताओं की सपूर्ति हो जाती है इसीलिए जिले के बीकानेर नगर में ऊनी धागे की अनेक बड़ी इकाइयाँ लगी हुई हैं।

डेपरी प्रोडक्टस—दूध की चीजें बनाने वाली उत्तरीय राजस्थान दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड बीकानेर है। यहाँ से दिल्ली तक दूध जाता है। इसकी बड़ी शाखा हमारे क्षेत्र लूनकरनसर में है। यह सहकारी संघ आस पास के स्थानों से दूध इकट्ठा करके दूरस्थ क्षेत्रों तक सप्लाई करता है। कालू महकागी गाँवा भी बड़े पैमाने पर दूध एक्जिट करके बाहर भेजती है।

जहाँ लूनकरनसर क्षेत्र में ऊन दूध की खर्चा है, बड़ी भरपूर मात्रा में आबक उपज होती है। क्योंकि यहाँ के छोटे छोटे गाँवा में पशुओं के अनेक वग पोषित होते हैं व लोगों का मुख्य धंधा ही पशु पालन है और वे अब इस पेशे को व्यापारिक ढंग से चलाने लगे हैं। फिर भी अभी इस व्यवसाय में काफी आधुनिकीकरण की आवश्यकता है।

- 1 ये 60, 70 तथा 80 तक दर्ज के होते हैं, जो केवल कार्पेट के काम आते हैं। विशेषत इसकी मढ़ी भदोही (Bhadohe) है। यह जयपुर, आगरा के अलावा सारा भदोही जाता है। कार्पेट माल विदेशों में अक्सरपोट होता है जिसकी कीमत हजारों रुपये मीटर निर्धारित है। इस काऊट (बीकानेरी धागे) की चमक तथा मुलायमता की मायता इंडिया में प्रथम नम्बर पर है।

खजूर की खोज—लिफ्ट केनाल के जल से लूनकरनसर के आस पास आज हजारों मन मूंगफली पदा हो रही है और इस सिंचाई के बस यहाँ के किसान भाँति भाँति की फसल लगाकर समृद्ध बन रहे हैं। यसे ही ईस्वी सन् 1978-79 में राजस्थान नहर की लिफ्ट परियोजना का पानी बीकानेर पहुँचाया गया जो मध्य प्रदेशीय क्षेत्र की जनता को पीने का भरपूर पानी मिला। लिफ्ट केनाल के जल से यहाँ की जमीन के खेता में सिंचाई शुरू हो गयी। तब यहाँ के कृषि शास्त्रीय वज्ञानिक आचार्यों ने अपनी तीव्र दृष्टि दोड़ाई कि अरब जैसे घुसीय दग भीठे खजूर उपजाते हैं तो राजस्थान केनाल के इस अमृतोपम मिष्ठ जल से खजूर की खेती निपजन म क्या असम्भन्ता हो सकती है ? वस ! लूनकरनसर एष बीकानेर के बीच एरिया के कुछ हैक्टयर क्षेत्र में अच्छी जातियाँ के सक्ड़ों पीये अनुसंधान हित लगा दिय गये। साप्ताभ्यर्थों का व्यय हुआ और पीये विदेशों से आयात किये गये। यहाँ गर्मी के कारण खजूर के पीये अच्छे बड़े फले और चार ही वर्षों में एक एक पीया काफी मात्रा में फल देने लगा। यदि यहाँ के किसानों को खजूर की खेती करने का सुझाव हाथ लग गया तो मान ला के निहाल ही हाँ गये। इससे लोगो को अनेकानेक लाभ हुँगे और प्रोमोद्योग की दृष्टि से गाँवों में उनके अथ अग उपागा से कुटीर उद्योग स्थापित हा जायेंगे।

क्षेत्र का ऐतिहासिक परिशिष्ट—यह भट्टाण भूमि और उसका सहमील इनाका बीर भोग्या वसुधरा" के सिद्धांत से महिमावित क्षेत्र है। असभ्य यादवाओ ने इसी भूमि से प्रेरणा पाकर बीरता पूवक लडते हुए मृत्यु का आसिगन किया है। यहाँ सूरवीरा एव सत यादियों की भरपूर वषाएँ मिलती हैं। यहाँ के भूमिगृह अनेक बीरो के लिए गात, एकात, गम्भीर तथा गायनीय स्थान रहे हैं। यहाँ आये उत्कट बीरो का कभी कभी भडा फोड नहीं हुआ और एमे जागलोय भूमिगृह (भूहर) डके हुए बतना की भाँति बहादुरों के रहस्य पूण कथानक अभी अपने हृदय में बसाये हुए हैं। बतन का अथ भडा भी होता है। अत यह प्राचीन युद्ध प्रतिया कीजल स्थल जाघाण जेसाण के न की भाँति भडा राजधानी भी भट्टाण नाम से प्रसिद्ध हुआ है।

बीरहर्षी शताब्दी की बात—जागलू के एक राजपूत का गाव पल्लू में विवाह मवध हुआ था। उस पल्लू के पास खरला राजपूता का विस्तृत राज्य था, जिसकी चारों तरफ बड़ी धाक व्यवस्था चलती थी। दम क्षेत्र पर बादशाही थाना भटनर लगता था। किन्तु 210 गाँवों की साहिबी खरला के सरदार वेशीदास भागते थे।¹ यह स्थान भट्टाण श्रृंखलित प्राचीन क्षेत्र था। यहाँ भट्टियों के अनेक खाडू ये और दूध दही की प्रचुरता पूण वहाँ बहा करती थी। खरला के घर गाय, भस और ऊँटों के अनन वग - ये। ऊँटों के रबारी बड़े हठीले, रौबोले थे, जहाँ चाह वहाँ जबरदस्ता कर बैठते थे।

गाव जागलू² का यह राजपूत पल्लू अपनी समुराल आया हुआ था। समुराल

1 राजधानी

2 उसके राज्य की सीमा—एक तरफ भाटियों का राज्य, एक तरफ जोड़ियों (योध्येय) का राज्य, एक तरफ सीहावन खीचियों का राज्य और एक तरफ पाहुवों का राज्य लगता था। खरला के स्थान कलस व भट्टाण और सौलनों के जागलू राज्य में अधिक दूरी नहीं थी। सासलों के गाँव सत्तासर तो खरला के कुवर शास्त्रके चढकर सूर्यदिय के समय पहुँच जाया करते थे।

3 जागलू बीकानेर से 28 मील दक्षिण में है। बीकानेर का इतिहास, प्र० भा० प० 55

की स्यारी (गाव की पानी पिलान की पारी) के दिन वह कूए पर पानी की रखवाली पर बठा था। अचानक पल्लू के कूए खरला के पंगु पानी पीन आये और रवारियो ने कोठे का नाला खोल दिया। राजपूत ने मना किया और नहीं मानने पर सग्राम छिड़ गया। खरला के रवारी जबरदस्त थे, उस राजपूत को जान से मार डाला। उसका कूए के पास वही दाह सस्कार कर दिया गया।

इस समाचार से क्रोधित होकर जागलू का राजकुमार कुवरसिंह स्वयं अपनी फौज लेकर खरला के क्षेत्र में बर लेने के लिए जा पहुँचे। बड़ा खरला की भूमि में खिचियों के भी अनेक गाँव थे। पता किया कि खरला के कुवर दलवल से गाव पल्लू माताजी की जात (मनौती की यात्रा) पर है। तब कुवरसी ने वही जाकर पल्लू के कूए पर पानी पीने वाली खरला की करीब एक हजार स्टाइं अपने बच्चे में ले ली और खरला के बेणीदास के बेटे पोते तथा अनक व्यक्ति मार डाले, बचे सो भाग निकले।

खरला बेणीदास को यह खबर मिली, तब उसने कहा— ऐसा कौन है, जो मरी स्टाइं ले जाय और आदमियों को मार डाले? साक्षात् मृत्यु का निमंत्रण दिया है उसने।" तब रवारियो ने बताया कि जागलू के चरसुवाल स्वामी खीवसी का कुवरसी माछला अपन परलू विवाहित राजपूत के मारे जान के समाचार सुनकर आया है। पहले यहाँ अपन रवारियो ने पल्लू के कूए पर पानी की रखवाली करते हुए एक राजपूत को मार डाला था। कुवरसी उसका बर लन के लिए आया और हमारे बहुत से आदमियों को मारकर सारा पशुघन ले गया है।

साँखला का राज्य जबरदस्त था, इसलिए सामी छाती (प्रत्यक्ष में) खरलो का कुछ भी जोर नहीं चला। तब उपाय सोचा कि कुवरसी कभी आय हुए टीके को वापिस नहीं भेजता, ऐसा प्रण किया है। अपन घर विवाह योग्य भारमल (बेणीदास की कुमारी पुत्री) मोतियात्रिद से अभी है। कुवरसी के पास चुपचाप नारियल भेजा जाय। वह प्रतिज्ञा वशात्¹ इ बार नहीं करेगा और विवाह के समय उसका यहा जखे-तसे अत कर देंगे।

कुवरसा न टीका स्वीकार करके अपनी चतुराई से भारमल खरल का उद्धार किया। उसन कु वरमी का देखा और आँखें खुल गई।² कु वरमी सही सलामत वापिस घर जागलू पहुँच गय।

कु वरमी का विवाह तो भारमल के साथ हुआ, मगर बड़ा सजवाज एवं निगरानी के साथ। खरला के आदमी कपट धोखा करने के लिए तनात थे। पर साँखलो के सरदार चवरी के समय खरलो का घर द्वार घेरे में लेकर सारो आग घोड़ो पर चढ़े

1 सिर जावो सो नाक मु, नाक न जाज्यो चख।

पाणी पुटग न जावज्यो लोही जाज्यो लख ॥

2 उठे कु वरसी घाह सू उत्तर चवरी जाय बैठो। हथळेवो जाडियो। इसा मे परमेश्वरजी री असी आग्या हुई, जो भारमल री आरया रा पडल दूर हुया। कु वरसी अर भारमल री निजर असी गडी, ज्यू कामदेव री रत री निजर गड ज्यू गडी। दोनू ऐसा रूपवत, सो सारी प्रथी मे जोया न लाय। तद कु वरसी भारमल री आरया देख दूहो नहयो—“पारेव ज्यू रतीया मद ज्यू भीभळीया।

‘कही उर्जेल क्षतीया, भरमल आँखीया ॥’

ताकते रहे। सामु की करियाद और भारमल की अनुनय पर कु वरसी रात भर जनानी हथोड़ी में रहे। कु वरसी ने नारियल लेने से लेकर ऐसे सारे रस्मी काय अपने ओज विश्वास पर किये जिनके लिए कि उसके पक्ष के तमाम परिजन हर मौके मना करते रहे।

वह रात कु वरसी और भारमल के लिए बड़ी सुभावनी रही। परंतु पहर के झटपटे ही खरना के पांच जवाब पुरुष, वैष्णोदास के हुक्म मुजब कु वरसी का काम तमाम करने के लिए द्वार कपाट के निकट आकर खड़े हो गये। उस समय भारमल ने अपने पिता की चालाकी नास करके कु वरसी को सावधान कर दिया। तब कु वरसी ने अपने जिरह बदन पहन कर हथियार हाथ कर गिर और घर से बाहर खड़ी अपनी फौज में जाने के लिए तैयार हुए। उस समय भारमल ने आज की—‘जो मन वण (वचन) देखो तो यानु छोड़ा पुहचाऊँ।’ कु वरसी ने कहा—‘किसो वण मागो?’ इस पर भारमल ने कहा—‘सावण की तीज के दिन पुन यहा मुखसे मिलने आओ। यहा से नवा कोस पर भस्से खाने का हमारा खाडू स्थान है। तीज के दिन मैं नव सहेलियो सहित अवश्य वहा पहुँच जाऊँगी। आप वहा जरूर पधारना।’ प्रणव कु वरसी ने विकट परिस्थिति में भी भारमल की बात को स्वीकार कर लिया। तब भारमल ने कु वरसी का एक तरफ लेकर, नया दुसासा पहनाकर स्वयं सहली बनकर अत्यंत चतुराई से छुपे रूप बाहर पर दिया। तब वह अपना फौज में मिलकर सत्तामर होते हुए राजधानी चले आय। कु वरसी के बच निकलने की खबर हुई तो खरल वैष्णोदास ने उन लोगों पर भारी क्रोध किया जो कु वरसी को नहीं मार सके।

कु वरसी के राजी-सुगी आ जान पर जागलू ने महीने भर तक बड़े राग रग हुए। कैशरिया किये वेहटा वदाय निछरावले हुई तथा मोठो के ठाठ धुलू हो गये। परंतु राणा खीवसी की मालूम हुआ कि कु वरसी सावण की तीज पर खरल भारमल से मिलने जावेगा। तब खीवसी ने उसकी राणी ने तीज का त्योहार सारे शहर में बढ़ करवा दिया और कु वरसी की सारी कु वराणियों का बुलाकर समझा दिया कि वे सावण की तीज आने का कु वरसी को पत्ता न लगन दे। ऐसा ही हुआ, जिससे कु वरसी दो वष तक सावण की तीज के बायद जो याद ही नहीं कर सका। एक दिन गिरा में गये तब एक अन्य गाव में आँगनो को सावण की तीज का गीत गाते और हीडा हीडते देखा, तब भारमल की बताई जगह और सावण की तीज का बायदा याद आ गया। कु वरसी ने तुरंत साय के मारे सागा की कही, अनकही करके बहादुर राघोदास रवारी से निजु ऊँट सुहो (घघ) जो जमीन का बरवत कहलाता था, मगवा लिया तथा घोड़े से उतर कर रवारी राघोदास के अपने आसन बैठकर बहाण के खाडू स्थान को चल दिए। साय के सारे लोग अकेले जागलू आ गये। सारे शहर में उदासी छा गई। राव खीवसी ने कु वरसी की खर मनाने हेतु पूजा पाठ, जपादि बठा दिए।

उधर कु वरसी ने रवारी राघोदास से कहा कि ऐसा मध्य रास्ता बनाकर खरल के खाडू चला, जिससे रास्ते का गाव छहर-छहर रह जाये। सो वे ऐसे चले कि सर (लूनकरनसर) और कालवास के बीच से होकर निकले। कात्तासर के बड़ (वस) को देखकर कु वरसी ने एक दोहा कहा—

‘सर डाव, बड़ जीवण, दुहु विचाल बट।

तीन्हा लडिया उठीया, कामडोया भुँह फट।’

बस्तिया टालते हुए खाटू की बार उँट को ऐसा दीड़ाया कि छिपते हुए सूय के समय जोइया की जमीन छोड़कर खरसों की सीमा में प्रवेश पा लिया, ऐसा राघं रवारी ने बताया। सध्या, साथ का खाना खा पीकर, कुवरसों खाटू पहुँचा और सहेलियों के साथ आई भारमल से मिला। फिर तो भू गह में काफी समय गोपनीय ढंग से रहे तथा बाद में सब सीख विदाई से जागलू आ गये।

पर तु राजपूत वेणीदास के राज्याधीन कुछ गांव भडाण में थे, जिनकी एक उत्तर दिश सीमा जोइयो (योधेय) के राज्य से सटी हुई लगती थी। जोइयों की राजधानी लखेरा (भावलपुर) सिध के मातहत थी। उन्होंने रास्ता से युद्ध शुरू कर दिया। तब वेणीदास न मदद के लिए कुवरसी का बुलाया। कुवरसी अपनी हजारों की फौज व बेहद शस्त्र सामान के साथ खरसों के यहाँ आया। दूसरे रोज वेणीदास की फौज के साथ अपनी फौज मिलाकर जोइया की राजधानी की तरफ बूच कर दिया।¹ नये बाण, नई बड्कें, जोइया को घुरी तरह परास्त कर दिया। खरस राणा न बड़ा अहसान माना। कुवरसी वापिस अपन राज्य जागलू के लिए रवाना हुए। तब उनके रास्ते में फिर सर (लूनकरनसर) आया था।²

साखला खीवसी³ चरसुवाल⁴ उसका कुवरसी साखला कुवरसी के जेसा, जेसा के मूजा और मूजा के उदा सागला जमा। वि० स० 1437 में उदा ने राठीड बीरमदेव को मुसलमानों से बचाकर जागलू से दखे आगि जोइया के साथ सुरक्षित सहवाण (पास-भडाण) पहुँचाया था। उद साखले के बाद साखले हल्के हो गये, किंतु उनकी पीढी में नापा साखला न बीकानेर राज्य बसाने में राठीडों की मदद की थी। भडाण की उत्तरीय सीमा पर आय दिन जोइयो से झगडे लगे रहते थे। भडाण और उसके सहसील क्षेत्र का यह भव्य गुण है कि युद्ध की तयारी के लिए यह स्थान सब विणिष्ट पूज्यमान रहा है। वतमान में भी यहाँ भारत सरकार का फौज की छावनी बनाने की योजना चल रही है।

यह लूनकरनसर है—याद कीजिए प्रात के इस प्रयात जीवनदाता क्षेत्र को यह लूनकरनसर है। रेल आने के बाद से आज तक भारी अन्न का आदान प्रदान करता है। यहाँ की तिकत सहिष्णु एवं दृढ़ भूमि में अनेक वीर सेवक पदा हुए हैं। ई० सन् 1846 मास में लाहौर के महाराजा और अंग्रेज सरकार के सुलहनामे के समय इस क्षेत्र के सनिक खारवारा व भाटी भूपालसिंह व केला के भाटी मूलसिंह को तथा महाजन एवं कुम्माना के दीधान सरदारा को तत्परता वीरता तथा ममक्षदारी पूण सत्य काय करने के उपलक्ष्य में ब्रिटिश गवर्नमेंट न खिलमर्ते भेजी और खिताब दिये थे। प्रथम महायुद्ध के पश्चात् ई० सन् 1918 में मारवदेशर के श्री साहूलसिंह और सुरनाणा के श्री भूरसिंह आदि को वीरता दिखलाने के लिए सम्मान, पदक एवं राख बहादुर के खिताब मिले थे। भारत व्यापी गंदर के असाधारण प्रलोभन में या परिस्थिति में भी इस क्षेत्र के सनिकों द्वारा किये गये अमूल्य सेवाओं के निस्वाय कार्यों को फ्रेड्रिक कूपर न अपनी ऐतिहासिक

1 कृपा करीज कुवरजी, लीज मौकु सग।

राख चल्या मो मरण है, सग लिया मुख रग ॥ (खरस भारमल)

2 देखिये कुवरसी साखले की बात।

3 इसके सम्मान में जागलू की देवली दृष्ट्य है।

4 जिसका भोजन पात्र सदैव भरा रहने के कारण मुकाल (अक्षय पात्र) कहलाता था।

पुस्तक में एशियाई प्रतिष्ठा के उत्कृष्ट उदाहरण बताय हैं। पाकिस्तान के युद्ध के समय अपने नाम से भयभीत करन वाले स्व० मंजर पूणसिंह की यह बलिदानी घरती है। महामहिम श्री राष्ट्रपति स परम वीरचक्र पाने वाले लेफ्टीनेंट कनल श्री जगमालसिंह राठौड का यह तेज त्याग वाला जुझार भू भाग लूनकरनसर तहसील क्षेत्र है। यहाँ मेहमानों की घी, दूध व दही की भेंट चढ़ाई जाती है, किन्तु बेरिया को यहाँ के वीरों के सामने धूल चाटनी पड़ती है।

यही था कभी प्राचीन जन मन लालसा पूर्ति का लवण भंडार। यही है गारव देश गारव को अपनी तहसील की गोद बसाने वाले सब बातों का सुखीय क्षेत्र। यही हैं कोटि कोटि अद्भुतों की कालिका माता का पुनीत घाम कालू। समस्त जसनाथ संप्रदाय में प्रसिद्ध हुंसेरा गाव और वहाँ की जीवित समाधिषा। नगाडो के साथ 'ओंकार ध्वनि' का आलाप उठन वाली हुंसेरा की सिद्ध साधना बाड़ी। यही है रामदेवजी का खिरा रामदवरा, जहाँ लाखों मनुष्यों का भीड़ भरा वार्षिक माघ मेला लगता है और यही होता है सांस्कृतिक आयोजनों का मन भावना बजरंग भवन का सालाना समारोह। यहाँ क पानी की महता मिष्ठ भूषफली, दूध दही की सरिता, अमृतफल से सरस मतीरे जिहोने छाये पिय हैं वे जानते हैं इस सुधामयी वसुधा का आनंदमय निवास।

इस तहसील क्षेत्र के कावडवाला, बडेरण कुभाणा, महाजन आदि गावों से पश्चिम में गाव हुंसेरा सायेरा, खिरा डूडाली, खिलेरिया उदसिया मूसलकी महादेव-वाली, गांटा, खोखराना धर्मरह भटान म हैं और कुभाणा, मणेर, सुलेरा भीखणेर, भूवालो आदि पास पास के गाव कलस के वास कहलाने हैं। परंतु कालू महाजन, जतपुर, शेखसर, सूई औरपुरा वपूरीसर, गारवदेशर आदि जटायत के गौरवशाली बड़े गाव हैं।

अब राजस्थान केनाल नहर से दक्षिण और राजस्थान लूनकरनसर लिफ्ट केनाल से उत्तर की बीच के गावों के स्थान पर छावनी बनगी। यह महाजन गाव से उत्तर पश्चिम की तरफ बड़े लम्बे एरिया को घरेगी। पहले छावनी एरिया वाले स्थल से कई साव-जनिक सड़कें निकलने वाली थी, अब वे सब बंद कर दी गई हैं।

परिशिष्ट (पूरक प्रकरण)

तहसील के कुछ उपेक्षित ग्राम व सस्थाएँ—

बड़ गया धवत न सस्थाएँ दोखती हैं—

अब तक न उनके काम का साया दोख पाता। (सकलित)

किसी भी सस्था का जन संगठन, व्यवहार स्नह एव शासनप्रबंध वहाँ के नाय-कर्त्ताओं की पावन सेवा भावनाओं पर प्रगतिरूप आधारित रहता है, जिनसे वे स्थान, निवास अथवा नगर, मध्य गिण्ट तथा सुसंस्कृत माने जाते हैं। राज्य एव समाज के प्राचीन नीति नियम, भोक्कम के परम्परित रीति रिवाज तथा सेना समृद्धि वाले व्यव-हृरित अधिकार और उनकी मर्यादित परिपाटी सस्थाओं द्वारा परिशु खलित रहती आई है। वे जनसाधारण में सुखद कार्यों का निर्वाह करती हुई जनजागृति का प्रतीक कहलाती हैं। परंतु हन !! हमारे तहसील क्षेत्र के कस्बा में अनेक पुरानी सस्थाएँ वहाँ के नागरिकों की देखभाल के अभाव में मष्ट प्राय हुई जा रही हैं और कई हो भी चुकी हैं। इन सबके गुणों, उपकारों एव सामा की आधुनिक राजनीतिपरक लोग विस्मरण भिय हुए हैं।

नस्तिथा टालते हुए खाड़ की आर जेंट का ऐसा दीड़ाया कि छिपते हुए सूर्य के समय जोइया की जमीन छोटकर खरलों की सीमा में प्रवेश पा लिया, ऐसा राघ रवारी ने बताया। सध्या, साथ का खाना खा पीकर, कु बरसी खाड़ पहुँचा और सहेलियों के साथ आई भारमल से मिला। फिर तो भू गृह में काफी समय गोपीय ढग से रहे तथा बाद में सब सीख बिदाई से जागलू आ गये।

पर तु राजपूत वेणीदास के राज्याधीन कुछ गांव भडाण में थे, जिनकी एव उत्तर दिश सीमा जोइयो (योधम) के राज्य से सटी हुई लगती थी। जोइयों की राजधानी लखेरा (भावलपुर) सिंध के मातहत थी। उ होने खरला से युद्ध गुरु कर दिया। तब वेणीदास ने मदद के लिए कु बरसी को बुलाया। कु बरसी अपनी हजारों की फौज व बेहद शस्त्र सामान के साथ खरला के यहाँ आया। दूसरे रोज वेणीदास की फौज के साथ अपनी फौज मिलाकर जोइयो की राजधानी की तरफ बूच कर दिया।¹ नये बाण, नई बंदूकें, जोइया को बुरी तरह परास्त कर दिया। खरल राणा ने बड़ा अहसान माना। कु बरसी वापिस अपन राज्य जागलू के लिए रवाना हुए। तब उनके रास्ते में फिर सर (लूनकरनसर) आया था।²

साखली खीवसी³ चरमुकाल³ उसका कु बरसी साँखला, कु बरसी के जेसा, जेसा के मूजा और मूजा के उदा सामन्ता ज मा। वि० स० 1437 में उदा ने राठौड़ बीरमदेव को मुसलमानों से बचाकर जागलू स दल्ले आदि जोइया के साथ सुरक्षित सहवाण (पास भडाण) पहुँचाया था। उद साँखले के बाद साखले हटके हो गये, किंतु उनकी पीढ़ी में नापा साँखला ने बीकानेर राज्य बसाने में राठौड़ों की मदद की थी। भडाण की उत्तरीय सीमा पर आधे दिन जोइयो से झगडे लगे रहते थे। भडाण और उसके तहसील क्षेत्र का यह भव्य गुण है कि युद्ध की तयारी के लिए यह स्थान सब विनिष्ट प्रयमान रहा है। वर्तमान में भी यहाँ भारत सरकार का फौज की छावनी बनाने की योजना चल रही है।

यह लूनकरनसर है—याद कीजिए प्रात के इस प्रग्यात जीवनदाता क्षेत्र को यह लूनकरनसर है। रेल आने के बाद से आज तक भारी अन्न का आदान प्रदान करता है। यहाँ की तिष्ठ सहिष्णु एवं दृढ़ भूमि में अन्न कीर सेबक पदा हुए हैं। ई० सन् 1846 माघ में लाहौर के महाराजा और अंग्रेज सरकार के सुलहनामे के समय इस क्षेत्र के सनिक खारवारा व भाटी भूपालसिंह व केसा के भाटी मूलसिंह को तथा महाजन एवं कुम्माना के दीवान सरदारों की तत्परता वीरता तथा समझदारी पूरा सत्य काय करने के उपलक्ष्य में ब्रिटिश गवर्नमेंट ने खिलअतें भेजी और खिताब दिये थे। प्रथम महायुद्ध के पश्चात ई० सन् 1918 में गारबदेशर के श्री सादूलसिंह और सुरनाणा के श्री भूरसिंह आदि की वीरता दिखलाने के लिए सम्मान पदक एवं राय बहादुर के खिताब मिले थे। भारत व्यापी गंदर के असाधारण प्रलोभन में या परिस्थिति में भी इस क्षेत्र के सनिकों द्वारा किये गये अमूल्य सेवाओं के निस्वाय कार्यों को फ्रेड्रिक कूपर ने अपनी ऐतिहासिक

1 कृपा करीज कुवरजी जीव भोक्क सग।

राख चल्या मो मरण है सग लिया सुख रग ॥ (खरल भारमल)

2 देखिये कु बरसी साखले की बात।

3 इसके सम्मान में जागलू की देवली दृष्टव्य है।

4 जिसका भोजन पात्र सदब भरा रहने के कारण सुकाल (अक्षय पात्र) कहलाता था।

पुस्तक म एशियाई प्रतिष्ठा के उत्कृष्ट उदाहरण बताये हैं। पाकिस्तान के युद्ध के समय अपने नाम से भयभीत करने वाले स्व० मेजर पूर्णसिंह की यह बलिदानी घरती है। महामहिम श्री राष्ट्रपति से परम वीरचक्र पाने वाले लेफ्टीनेंट वनल श्री जगमालसिंह राठी का यह तेज त्याग वाला जुझार भू भाग लूनकरनसर तहसील क्षेत्र है। यहाँ मेहमानों को धी, दूध व दही की भेंट चढाई जाती है, किंतु बेरियो को यहाँ के वीरो के सामने धूल चाटनी पडती है।

यही था कभी प्राचीन जन मन सालसा पूर्ति का लवण भंडार। यही है गारब देशर गाव की अपनी तहसील की गोद बमाने वाले सब वात्तन ना सुखीय क्षेत्र। यही है कोटि कोटि श्रद्धालुओं की कालिका माता का पुनीत घाम कालू। समस्त जसनाथ संप्रदाय में प्रसिद्ध हूँसेरा गाव और वहाँ की जीवित समाधिषा। नगाडो के साथ "आकार ध्वनि" का आलाप उठन वाला हूँसेरा की सिद्ध साधना बाटी। यही है रामदेवजी का खियेरा रामदेवरा, जहाँ साक्षा मनुष्या का भीड भरा वाषिष् माध मेला लगता है और यही होता है सांस्कृतिक आयोजना का मन भावना बजरग भवन का सालाना समारोह। यहाँ व पानी की महत्ता मिष्ठ मूगफली, दूध दही की सरिता, अमृतफल से भरस मनोरे जिह्नि लाय पिय हैं वे जानते हैं इस मुधामयी वसुधा का आनंदमय निवास।

इस तहसील क्षेत्र के काकडवाना, बडेरण, कुभाणा, महाजन आदि गावों से पश्चिम के गाव हूँसेरा, सावेरा, खियेरा डूडाळा, बिलेरिया, उदेसिया, भूसलकी, महादेव-वाली, गाटा खोखराना वगैरह भटाण में हैं और कुभाणा मणोरा सुबेरा भीखनेरा भूवालो आदि पास पास के गाव बळम के वास कहलाते हैं। परंतु कालू महाजन, जतपुर, शेखसर, सूई शेखपुरा, कपूरीसर गारबदेशर आदि जटायत के गौरवशाली बडे गाव हैं।

अब राजस्थान केनाल नहर में दक्षिण और राजस्थान लनकरनसर लिपट केनाल से उत्तर कीच के गावों के स्थान पर छावनी बनगी। यह महाजन गाव से उत्तर पश्चिम की तरफ बडे लम्बे एरिया को घरेगी। पहले छावनी एरिया वाले स्थल से कई साध-जनिक् सडकें निकलने वाली थी अब वे सब बंद कर दी गई हैं।

परिशिष्ट (पूरक प्रकरण)

तहसील के कुछ उपेक्षित ग्राम व सस्थाएँ—

बड गया वनन न सस्थाएँ भीखती हैं—

अब तक न उनके नाम का साया दोख पाता। (सकसित)

किसी भी सस्था का जन सगठन, व्यवहार स्नह एव शासनप्रबंध वहाँ के वाय-वर्त्ताओं की पावन सेवा भावनाओं पर प्रगतिष्प आधारित रहता है, जिनसे वे स्थान, निवास अथवा नगर सम्य सिष्ट तथा सुसंस्कृत माने जाते हैं। राज्य एव समाज के प्राचीन नीति नियम, लोकधर्म के परम्परित रीति रिवाज तथा सेना समृद्धि वाले व्यव-हरित अधिकार और उनकी मर्यादित परिपाटी सस्थाओं द्वारा परिगृह्य कलि रहती आई है। वे जनसाधारण म सुखद कार्यों का निर्वाह करती हुई, जनजागृति का प्रतीक कहलाती है। परंतु हत !! हमारे तहसील क्षेत्र के कस्बा में अनेक पुरानी सस्थाएँ वहाँ के नागरिकों की देयभास के अभाव में बंष्ट प्राय हुई जा रही हैं और कई ही भी धुकी हैं। इन सबके गुणा, उपकारो एव लाभों को आधुनिक राजनीतिपरव लोग विस्मरण किये हुए हैं।

चमन में सी तगह की जग बहारें हमने लूटी हैं,
तो आँखों से न देखा जायेगा जूल्मे तिजो हमसे ।

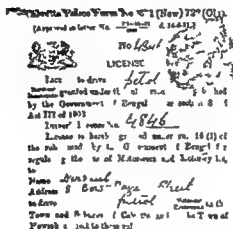
इसलिए मात्र कस्रो, गाँवा और उन संस्थाओं का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। लूनकरनसर—तहसील मुख्यालय के कस्बा लूनकरनसर की सावजनिक संस्थाओं में नव प्राचीन घमशाहा भवन (सरदारशहर के कर्नाणियों द्वारा निर्मित वि० स० 1961) और वहाँ के सब उपकारी बड़े कुण्ड । द्वितीय सब हिनकारिणी 'बावडी' (ई० सन् 1939) एवं महावीर शुभचि तब पुस्तकालय (1445 ई०) जसी अनेक संस्थाओं का आत्मिक उपयोग लेने में लूनकरनसर के निवासियों का नाम आदरणीय रहा है। यद्यपि यहाँ के सागा ने इन संस्थाओं से पर्याप्त लाभ लिये हैं। परंतु मधुमक्खी वृत्ति ने संस्था पुष्पावली का रस चूसकर अब वित्कुल त्याग कर दिया है जो मानव घम न बाहर की बात है।

महाजन—महाजन भी तहसील का प्रसिद्ध गांव है। इसका सुन्दर एवं ऐतिहासिक गढ़ अब असुरक्षित तथा नष्टता के कगार पर कपायमान स्थिति में खड़ा है। पश्चित



[राध लूनकरन के कुमर रत्नसिंह का ई० 1505 में महाजन ठिकाना मिला। रत्नसिंह ने बीकानेर का फौज में सागा (कछवाहा) की सहायता कर सागा-नर बंसाने में प्रमिद्ध पाई। महाराजा जतसिंह के साथ जोधपुर की लड़ाई में नागौर के खान की बरछी का वार दिखाया। उसने पुत्र अजुनसिंह ने मेड़ते की सहायता में बीकानेर की फौज (1545 ई०) में भाग लिया। रत्नसिंह व अजुनसिंह का पुत्र उदयमान बीकानेर महाराजा के आदेश से जोड़्यों से लड़ा। उदयमान के पुत्र जगतसिंह ने लड़ाइया में हाथ दिखाया। प्रतापसिंह (उदयमान के भाई) और उसका पुत्र मोहकमसिंह भी देग भक्त थे। फिर भीम सिंह भगवान सिंह तथा गिबदान सिंह और उसने पुत्र शरसिंह, बेरीनाल सिंह हुए। उसके उत्तराधिकारी अमरसिंह और रामसिंह राज्य के बागी कहलाए। हरिसिंह नीतिवान भापालसिंह कठार पासक और राजा रघुबीर सिंह सम्म मरदार थे। पौकससिंह छुटमाई थे। महाजन का गढ़ सबकी स्मृति लिए खड़ा है। पहले इस गढ़ में उत्तर मुग एक भीम प्रोल था। मगासिंह जी महाजन पधारे, तब 'मगा प्रोल' नाम से उत्तर दरवाजा (जिमकी तस्वीर है) बनाया गया। गढ़ का गौरव और भय था, पर अब इसकी हालत खस्ता है, पशुओं तक के आने जाने का रास्ता है।]

केचरीप्रसादजी गास्त्री जैसे विद्वान इसी सरोवर क ज्ञानामृत पान हतु सदव पिपासु बन रहते थे । मगर वक्त की विकट विपदाओं म उस पुस्तकालय की प्राचीन पुस्तकों के पन्नों मे आजकल रेल्वे स्टेशन एव बस स्टण्ड पर यात्री लाग कचौरियाँ खात दष्टि गोचर होते हैं । इन पन्ना की पुस्तका का सुरक्षित करवा देन वाला कार्य मानविक हृदय महाजन नाम का साधक करेगा, यही आश्वस्ति है । यहा का श्री कस्तूरबा ग्रामोन्धान महिला विद्यापीठ भी शिक्षित सज्जन वग को तरस भरी दृष्टि से ताक कर अपने पास बुसा रहा है कि विद्वानों के काय केन्द्र, सस्यालय ही तो होत हैं ।



गढ़ का लवास श्री रिडमल पेंथार मन 1913 में मोटर हाइवर
(बलवत्ता का लाइसेंस बगाली का लिखा रिडमल = निमल)

राजासर उफ करणीसर—राजासर महाजन राजावा के नातले राजबिया का ठिकाना था। वहाँ के बिगनसिंह जगमालसिंह आदि ठाकुरों ने रहते हुए ही अपनी रजत जयंती के अवसर पर श्री गंगासिंहजी ने यह ठिकाना पुरान ठाकुरों से उतारकर गुलाबसिंह जी को दे दिया। उसन लागी की घाड़ी दूर से जाकर बरणासर बसा लिया। परन्तु वहाँ का पुराना कूबा, मन्दिर सतीजी की देवली और हाथ की छाप वही नष्ट हो गयी।

गारबदेशर—इस गांव में क्षेत्र के प्राचीन थराग मंडल का एक बृहद ठाकुर द्वारा है। जिसके चारों ओर बड़ी दीवार तथा चारों कूटों में बड़े बुज बन हुए थे। यात्रियों के ठहरान हेतु यहाँ बरामदे एवं जल सुविधा के लिए बड़ा कुण्ड था। लेकिन अब वह मंदिर सड़कर तप गटा दिखाई देता है। भगवान की पूजाय नागरिका का अपना मेहनत की महत् प्रमरित करना चाहिए। यहां के जन मंदिर की जगह भी थड तप रह गई है और अभी हरिदासजी की साल पाल तो सही ह।

भानीपुरा—भानीपुरा के घेह में एक बूझा (मिस बोटे सहित) और कण्ड है जो रेत में दबे जा गइ है।

बासी—बासी का पुराना बूझा तो सोमाने धारे की धूल में समा गया है, मगर खिलेरे सायाब बाना भीठे पानी का बूझा अपनी नब्ब दंगा में रहता हुआ भी बर्बादी की स्थिति में जल रहा है।

कालू—कालू में स्थानीय गरजती हुई कारती राजनीति में नागरिका की संस्थाओं के प्रति विस्मरण वृत्ति से यहाँ की कतिपय सुहासनी संस्थाएँ उपेक्षित बनी हुईं सिसकत श्वास ले रही हैं। इनमें सबसे प्रथम रमणीय एवं अत्यंत चित्ताकर्षक रामस्नेहियों की जगेरी (वि० सं० 1815), नेहरू छात्रावास (ई० सन 1953), श्री सरस्वती पुस्तकालय (ई० सन् 1935), जन उपाध्यय (वि० सं० 1905) और जन मंदिर (पद्महवी शती) आदि मुख्य हैं। वैसे श्री भानीनाथजी की समाधि जगह भी अपनी पुगती भव्य व्यवस्था का स्मरण करा रही है। यदि इन ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा नृत्तिक लाभ नान प्रदायक संस्थाओं के बिलखाव में समय पर विनिष्ट संयोजन नहीं हुआ तो समस्त क्षेत्र की विकास प्रविष्टा तथा परम्परित शोचनी सुरभित सेवा क्रिया की भीमल चुक जायेगी।

फरत इस आसरे पे रात नाटी गमा ने रोकर।

कि शायद सुबह तक जिंदा मेरा परवाना हो जाए ॥ (उद्गू काव्य कुमुदायली)

कालू की समाप्त हुई संस्थाएँ—

- 1 मेला गोदारा की छत्री (वि० सं० 1843 में स्थापित, वि० सं० 1990 में समाप्त) तथा गोदारा जाटा का ठाकुर द्वारा (वि० सं० 1855 में स्थापित 1992 में समाप्त)।
- 2 श्री सरस्वती नाट्य परिषद (ई० सन 1936 में स्थापित 1964 में समाप्त)।
- 3 श्री सनातन धर्म समा (ई० सन 1943 में स्थापित सन 1953 में समाप्त)।
- 4 श्री ग्राम मेवा संध (स्थापित ई० सन 1950 में तथा सन् 1960 में समाप्त)।
- 5 श्री गोचर भूमि राही उत्तरादी में (प्राचीन समय से व सन 1951 में स्थापित सन 1962 में समाप्त)।
- 6 श्री स्वामीजी वाला कूआ (निर्माण 1975 76 में तथा 2033 में समाप्त)।
- 7 श्री घनाणा तालाब की पान (प्राचीन समय में स्था०, सन् '73 में समाप्त)।
- 8 श्री अनाणा तालाब के ताल सुरक्षा के तार (1962 64 में सन 1966 में)।
- 9 चारों कूओं के सारण (प्राचीन समय से निर्माणकाल) 1966 में समाप्त)।
- 10 जाहड़े की साल (वि० सं० 1996 में स्थापित वि० सं० 2038 में समाप्त)।

तहसील के उपेक्षित एवं समाप्त धाम एवं संस्थाओं के सबंध में प्रयास—लून कर्मचारी चुनाव क्षेत्र से विजयी होने वाले सामान्य विधायक एवं जिले का राजस्व विभाग बगरह चाहें तो यह अपनत्व प्रयत्न कर सकते हैं कि—हमारे क्षेत्र की कुछ परम्पराएँ लुप्त हो गई हैं उन्हें पुनर्जीवित करें। किंतु विडम्बना यह है कि तहसील के नेता सरपंच तथा राजनैतिक नागरिक तो फरत अथ और निम्न नाम बमाने की दौड़ लगा रहे हैं। अपन इम अचल की संस्थाओं सावजनिक स्थानों एवं गाँवों की सुगंध तक से परहेज करते हैं। वे सब मज्जन, मत के सिवाय अन्य धान की कोर्षी भी सावजनिक सहमति मानन में अपना अपमान समझते हैं। अब उजड़े हुए गाँवों साम्प्रतिक संस्थाओं और सावजनिक स्थानों आदि के लिए जन-साधारण को सचन एवं विद्वान होकर रहना होगा और मृत संस्थाओं का गोक उपनिषद आयोजित करके उन राजनैतिक लोगों से दो मिनट का मौन चिंतन व माला पाठ भी करवाना आत्मिक सतोष प्रदान करेगा।

नोट—स्थानीय विकास कार्यो बाबत जिन संस्थाओं का ह्रास होता है, वह दोष निवृत्ति का उज्जवल हेतु है, किंतु स्वायत्त, कमजोरी तथा उपेक्षावृत्ति धारण करने वाले

लोग सामाजिक अपराध के महाभागी बनते हैं। जैसे तहसील के 171 गावों में से कुभाणा, मुट्लाई, मणेर आदि लगभग 30 गावों को उठाकर फौज की छावनी बनाने की सरकारी योजना है। अतः तहसील के औद्योगिक कार्यों में क्षति होने की संभावना बन गई है। मगर राष्ट्र की यह महत्वपूर्ण काम योजनाएँ सफल होने की खुशी भी कम नहीं है। जैसे राजस्व अधिकारियों द्वारा छत्रगढ़ का 'तहसील स्थापन' चुनाव हो जाने पर लूनकरनगर तहसील के कुछ गाव फिर उसमें मिल जायेंगे, उनमें भी सतोप ही होगा।

लूनकरनगर क्षेत्र के सत और सम्प्रदाय

जसनाथी सम्प्रदाय और हंसैरा—हंसैरा बीकानेर रोड पर पहला मुकाम है। यहाँ जसनाथ सम्प्रदाय की रमणीक एक प्रख्यात नवन निर्णय बाड़ी है। इसके गूदी एक जाल बूझो में मयूरादि पक्षी मस्त विचरण करते हैं। यहाँ पानी के कुण्ड और चूंगे का पूरा प्रबंध रहता है। बाड़ी में मनोहर नाथ आदि तीन मता की जीवित समाधियाँ हैं।¹ यह गाँव, जसनाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सत हासोजी की नाम परम्परा में बसा हुआ जान पड़ता है।

बीचजी भगती करो, बीनादेगर घाम।

मया करी हमराजजी, हमैरा पर नाम ॥²

श्री हासोजी के नाम पर सम्प्रदाय में अनेक विभूतियाँ प्रचलित हैं। किंतु श्री जसनाथजी के समाधिस्थ होन (पि० स० 1563) के बाद सिद्धाचार्य के सेवका में श्री हसनोजी का ही उनका प्रतिनिधि रूप मानकर मेवाराधना की। ये श्री जसनाथजी की सांसारिक वश लता में ही अवतरित हुए थे। इसलिए कहा जाता है—

हियाली शमाजी प्रगटया निखळग रे दिवाण।

हरमल हामा भेठा हुवा, भरिया अथग निवाण ॥³

हासोजी में लोकहित भावना से महल के अंग भागों का भी भ्रमण किया, जिनमें तालियामर, लिखमादंग स्थल बिगा आदि के नाम आते हैं। इनके आध्यात्मिक चमत्कारों से प्रभावित तत्सामयिक लोक, विनीत भाव श्रद्धालु रहें हैं। जसनाथी साहित्य में इनकी प्रशंसा एक प्राधान्य में बहनेरे गद्य उपन्यास हैं और अनेक शिष्यों के नाम भी।

इस तरह तहसील क्षेत्र में गाँव आहमर और हंसैरा के गावों में सिद्ध सम्प्रदाय का जसनाथी लोग बसते हैं। ये अपने मस्तक पर भगवा पहनते हैं और मिट्टी के नियम पालन करते हैं। जसनाथी पर्वों पर सुगणित द्रव्य भुवन धन का हवन करते हैं जसनाथ जी की शेष (ओगरा) बनाते हैं और पत्तियों के लिए चूंगा डाल देते हैं। हवन करने समय एक विशेष प्रकार की राग से उदात्त ध्वनि उच्चरित 'सिमूछटा' तथा 'बोहो' के पाठ बोलते हैं। इनकी जसनाथी बाड़ी में रात्रि जागरण के साथ अग्नि नरय का आश्चर्य जनक वायनम रहता है। जसनाथी सम्प्रदाय के लोग अपने पृथक् संस्कार पालने हैं। ये दाव की जलाते नहीं गाड़ते हैं।

भायूसर का जाम्मा घोर—जम कुवियाँ गाँव, प्रसिद्ध विद्वान पिदायक दयालदास की जम भूमि होने के कारण लूनकरनगर तहसील क्षेत्र का प्राचीन साहित्यिक ग्राम है, जैसे

1 पास के गाँव मसलीसर में भी इस सम्प्रदाय के मनों की समाधियाँ बनाई जाती हैं।

2 सिद्धचरित, पृ० 11 (श्री भूयनकर)

ही उसके नजदीकी ग्राम नाथूसर का 'जाम्भा घोरा' भा यहा का परम पुनीत एव धार्मिक धुर स्थान है। सगभग वि०स० 1565 के पास प्रचलित लोक मुक्खाएँ हैं कि इस जाम्भे घोरे पर कुछ समय के लिए विष्णोई सम्प्रदाय के आदि गुरु जम्भेश्वर महाराज ने अपना धर्म विस्तार प्रवृत्ति हित प्रवास किया था। देश के विभिन्न भागों की यात्राओं के मुकायफारी ज्ञानोपदेश की लोक भगलकारी आत्मिक लहर में भवतजनी की प्राप्ति पर श्रीजाम्भोजी महाराज आकर कुछ समय के लिए यहाँ ठहरे थे। तभी से यह स्थान जाम्भा घोरा' कहलाता है।

श्री जाम्भोजी का भ्रमण, पास पास ही नहीं बहुत दूर-दूर के स्थानों तक हुआ करता था। वे अपने सांगिडक व्यक्तियों सहित जिस स्थान पर कुछ समय ठहरकर जानो पदेन करते, वे साधरी (साथी सत्संगति अथवा सत चर्चा आयोजन) नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। हमारे गांव चाँदसर से आधूण (पश्चिम), नाथूसर येह से दक्षिण और रावासर से पूव में (इन सब ग्रामों के मध्यस्थ) जाम्भे घोरे का स्थान साधरी परम्परा का पावन प्रतीक माना जाता है। उनकी (जाम्भोजी की) जान कहाँ यहा सभी धर्मों, वर्गों एवं व्यवसायों के लोगों के हित हुई थी। उ हने सभी जातियों के लोग का आध्यात्मिक तौर से मार्ग दर्शन किया था ऐसा सुना जाता है।

गाँव नाथूसर एवं चाँदसर रोहडिया गाला के बारठ आमोजा का मिले हुए थे। वे श्री जाम्भोजी की सद्प्रेरणा लेकर बिलिष्ट सत धन और ब्रह्मचारी कहलाते थे। डिगल भाषा के बह्ण रस प्लावित भाषिक दोहे लिखन में सिद्धहस्त कवि थे। जहाँ के वास्तव्य भाव कारण से इस क्षेत्र में श्री जम्भेश्वर भगवान का पदापण हुआ था। आसानंद का अतीजा भवत कवि ईसरदास भी शब्द वाणी से प्रभावित होकर नदी (सूणी) के किनारे कुटिया बनाकर रहने लगा था।

भारत के इतिहास में पन्द्रहवीं शताब्दी का समय यहाँ पाप पुण्य मिश्रण लिचडी कहाओ का विषय नात होता है। राठीठ राज्य से पहले बालू के पास का इलाका गोदारे जाटों के अधिकार में था। उनका जोड़्यों और भाटिया से विरोध रहता था। कुछ स्थानों पर यहा मुसलमानों का अधिकार चलता था। किंतु मारे शासकगण एवं दूसरे से शत्रुभाव पूरा पालने और प्रतिद्वंद्वी के अधिष्ठत क्षेत्रों की प्रजा पर लूट मार लसोट एवं आगजनी जस प्रताडित व्यवहार किया करते थे। ऊपर बादशाही की धार्मिक कट्टरता तथा निरकुशता भी निरीह जनता का भयभीत कर रही थी। तब यहा की जाट राठ और भाटी आदि जातिया जीव हिंसा और मदिरा पीन में प्रवृत्त हो गई थी। धार्मिक सध्दोपासना पर कुटृत्यों का प्रबल और पड रहा था। इन दुव्यसनों में रगे सबल लाग बलात्कार तक की बारदातें कर लिया करते थे। तब बादलों की गजना, आधी में वर्षा की समावना प्रकट हुई और राजस्थान में बहुत से सत्तों ने जनता की भाषा में काव्य रचना रची। वे भगवान की विनय प्राथनाएँ थी, जिनका धार्मिक आयोजना में सुर ताल से उच्चरित कर लोगों का मानव धर्म वचाने की राह दिखाई। दुनिया ऐसे सत्तों के चरणा में डुल पड़ी। सारा इलाका उसट आया। बहुत से समक्षदार, विद्वान एवं असा धारण बुद्धि के लोग भी उनके अलौकिक शिक्षा प्रभाव के सामने झुक गये। तब निभय धमपध, सद्धम तथा समृद्ध मानव सम्प्रदाय बनने लगे। श्री जाम्भोजी का विचरणमय, विचक्षुधर तपस्वी व्यक्तित्व प्रेरणास्पद कमठ जीवन एवं शका समाधान करने की सामयिक ओजाभिब्यक्ति ही विश्वोई सम्प्रदाय की लोक ससिद्धि हुई। गांव नाथूसर प्रवास का समय उनका स्वतोभावेन जानोपदेश काल था, जो सत्संगति, शब्द वाणी तथा हवन-

स्थल के उस उच्च स्थान का नाम ही जाम्भा धारा सस्कारित हो गया। मतो व इन धार्मिक आयोजना से कटक डालुओ की भी रुचि बढ़ती और उन्होंने साधुओं का कहना माना। अतः एव जनता को अपने गाँवों में साधु-माकर बमाने के दोहरे फल मिलने लगे।¹

नायूसर गांव के नवयुवक भोगते कवि आसोजी की थड़ा प्रायना पर कुछ समय के लिए उक्त घोर पर (निकट नायूसर) श्री जानोजी न जानोपदेश किया। उस समय पास बसते चारो जार के गावा से भक्तजनो की भीड़ लगी रहती और वहा आश्रम, कुण्ड तथा चौकियाँ बनादी गई थी। किंतु 'भूखे भजन न होय गोपाला।' बीकानेर के वास प्राय अगालों की भूख प्यास के लिए पुरा प्रसिद्ध हैं। ऐसे समय में उन्होंने यहा बहुत से दुबल स्थितिजनो को पाया ही नहीं अन भी वितरण करवाया था।² किसी को थोड़े मेरे (विवाहादि अवसरों) हेतु रुपयों की जरूरत पड़ती, उही से जा मागने। तब श्री जम्भेश्वर महाराज अपने हाथ के इगारे से दूर दिखाई देता कोई फोग बूजा या बाँठ (बोया) बता दिया करते कि "उमक पाम फला दिग मुडत हाय (अकूणी हाथ के मय्य जोड से मय्यमा अगुली तक) जमीन खोदकर मय्ये निकाल लो और ले जाओ।" भक्त-जनो को बसा उपाय करने पर (ठीक उसी नाप से धरती खोदने पर) अपनी माग के मुताबिक रुपयों का भरा मगनिया कुन्हड़िया या छाटी ढड़िया आदि अथ मिट्टी का द्रव्य भरा घतन मिल जाया करता था।³

श्री जाम्भोजी इस धारे पर यथा समय रह और जाने के पश्चात् पुन लौटकर नहीं आय। पर भक्त लोग काफी समय तक हर अमावस्या के दिन वहा (जाम्भा धारा) पर एकत्रित होकर हवन, पान चचा तथा मय्य नियम पालन के पाठ दुहराते रहे। शमी, फाग वक्षा के अतिरिक्त मय्य बालुगामय उवन जाम्भे धारे पर जाल नीम और कूटे आदि के बडे पड थे। वहाँ एक कुण स्तम्भ और साल (मकान) का होना भी बताया जाता है। परमेश्वर विष्णु के अवतार मानव अभिलाषा पूण करने वाले या जम्भेश्वर नाथ के गुमागमन से पवित्र हुई इस आदेश बसुंधरा के लोग आज भी उनकी वेजोड चमत्कारी बातें श्रुति स्मृति करके सुख दुःख के समय गदगद हा जाते हैं और उनका परम वाक्य बोलत हैं— विष्णु विष्णु तू भगव प्राणी।"

(नोट—चादमर के धार्मिक सज्जन स्व० हरखचंद राठी, नायूसर के भवन कवि स्व० गोविन्दानंद रावठ रावानरक प० था सत्यनारायण सारस्वत प्रभति महान पुरुषा से मैं जाम्भा धारे के विषय में ऐस धार्मिक वतान वषों में सुनता रहा हू। रोहिडा गाँवा की वंश परम्परा में अनेक बडे बारहूठ अवधीन समय में भी अपने गाव की उक्त वार्ता बतलाते हैं।)

1 (क) समय के बाद जाम्भा धारे से बीस मर पश्चिम बसने (स्थित) गांव रावासर व जाटा ने कटक के डर से लूंगरगर नाम के एक माधु को बुलाकर अपने गाव के किनारे बठाया था और उसको हजार विष्णा ढोळी (जमीन) सम्मानाय दी थी। (लिखमणाराम धोरड द्वारा।)

(ख) प्राचीन समय में बालू के पास गाँव बीझार, गुसाईसर और ल्होडेरा के मध्य में खाली बाया नाम के एक बूड सत रहते थे। उसकी जगह बतमान विद्यमान है।

2 बीकानेर इतिहासानुसार, मेहें उस समय 12 मन, चावल 10 मन और दाल 16 मन प्रति रुपय के भाव थे। पर उनके बढोवस्त का रूप परम देविक था।

3 भैंटादि से मिले रुपयो क अलग अलग (20, 30 50 और 100 तक के) बतन निश्चित जगह पर रखवाते थे।

बैराग मण्डल और महत्त

इस क्षेत्र में गांव गारवदेशर के सुप्रसिद्ध महत्त साधुओं की गद्दी बड़ी पुरानी एवं सम्माननीय है। यह घनावसी बरागियों के विस्तृत क्षेत्र में पूजनीय हैं। गद्दी के महत्त घनावसी बरागियों में ता शिरोमणि है ही, पर इनकी गणना पहुँचे हुए पारगत साधुओं में भी हाती रहो है। इस गद्दी की स्थापना का पता बहुत पुराना है।

स्वामी श्री रामानुजाचार्य जी (स 1073 1194) ■ श्री सम्प्रदाय में य शिरोमणि सत होत हुए विष्णु या नारायण की उपासना करते हैं।¹ इसमें अनेक शाखाएँ और अच्छे अच्छे साधु हुए हैं जिनकी शिष्य परम्परा, भक्ति के सम्यक् प्रसार हनु देश में बराबर फलती हुई जनता को भक्ति मार्ग की ओर आकर्षित करती रही है। विष्णु की 14वीं शताब्दी के अंत में काशी के आचार्य श्री राघवानन्द जी इस सम्प्रदाय के प्रधान थे, जिनकी गद्दी के शिष्य भारत के प्रसिद्ध पयटक श्री रामानन्द जी हुए। वे उपासना के क्षेत्र में किसी प्रकार का सौंकिच प्रतिबन्ध (भेदभाव) नहीं मानते थे। उन्होंने विष्णु के अनन्त अय रूपों में से केवल "राम रूप" को ही लोक के लिए अधिक कल्याणकारी मानकर (सं० 1575 80 में) एक सबल सम्प्रदाय का संगठन किया था। उसी से संबंधित यह गारवदेशर के महत्त की गद्दी है। मगर 18वीं शताब्दी में गांव गारवदेशर में इसका समृद्धावस्था में उत्प्रेक्ष्य मिलता है। उन्नीसवीं शताब्दी में स्वामी मानदास के शिष्य हरिदास का बीकानेर राज्य तक सम्मान था। तत्कालीन महत्त ने जन हिताय दो कूप और एक तालाब बनवाकर गांव को दिए थे और इनकी जमीन में ही गारवदेशर का आधूना (पश्चिमी) बास है। कूओं चरमाणो और नडकी तलाई भी इसी की जमीन में हैं। उसमें चारों बूजों वाला भगवान का बड़ा मंदिर और रहने के लिए आज भी अनन्त स्थान (भग्नावस्था में) दिखाई देते हैं। महत्त की जमीन में बसने वाले गुवाडे (पर, राजपूतो और ब्राह्मणों के) महाराजा सूरत सिंह जी के ताम्र पत्र (सं० 1852) के अनुसार जकात, मापो, मुकातो गांव मुजब देते थे। यहां महत्त की जमीन बीघा तीन सौ, नौ सौ और सात सौ पचास—कुल 2025 बीघा थी जो अब तक उसी के मंदिर पीछे शिष्य भोगते हैं। स्वामी हरिदास के देहावसान के स्थान पर एक मकान है और चरण पादुकाएँ! महत्त हरिदास बरागियों में दादा नाम से पुकारे जाते थे। बालकों का झड़ू ला उनके उसी भवन में उतरता है और विवाह शादी के समय लोग दशनार्थ जाते हैं। श्री हरिदास महत्त तकडबध एवं राजवी की भाति जमीन जायदाद वाले थे। बीकानेर के महाराजा उनसे मदद लिया करते थे।²

1 गन में बड़ी की भाति तुलसी की माला और मस्तक पर रामानुजी लम्बे तिलक धारण करते हैं। द्वारिका जाकर अपने शरीर पर विष्णु के चिह्न स्वरूप शाल, चक्र गदा तथा पद्म का आकृति छपवा लेते हैं। छापें अग्नि में तपाकर लाल लोहे से लगाई आती हैं, तब कहावतें हैं—“घरणीघर की चेलो, तो तीन लोक में खेलतो। (याने जो द्वारका जाकर तेज तपे हुए लोहे की छाप को सहन कर लेगा, वह विष्णु भवन, सबत्र निहर् घूमता फिरेगा।) ये महत्त ब्रह्मचारी रहते हैं और निहग साधु कहलाते हैं।

2 देखिये चूल्ह मंडल के इतिहासोन्लेख।

एक बार गांव वालों ने मादारा जाटा ने मेला (धार्मिक आयोजन) किया था। इसलिए गारवदेशर के महंत से एक बड़ा तिरपाल मांगकर लाय। दुर्भाग्य से वह तिरपाल कालू में ही जल गया। तब जाट लोग भयभीत हुए। महंत के पास तिरपाल की बात बताने गए और क्षमा-याचना मांगा, महंत न माफ कर दिया। किन्तु कालू के जाटा न तिरपाल के एवज में जमीन बीघा सात सौ पचास (सेन 5 बी) महंत को अर्पित कर दी, जिसका तामापत्र (ग० 1852) में मूद्रा उल्लेख है।

महंत हरिदास का शिष्य अमरदास और अमरदास के शिष्य बन्नीदास हुए। बन्नीदास का भी जमीन वावत लगान आदि का ताम्रपत्र बीकानेर महाराजा रत्नसिंह तथा मरदारसिंह न माहना लीसागर से लिखवाकर (स० 1900 में) लिया था। बन्नीदास के शिष्य सेवादास न (वि० स० 1974 में) गांव कालू आकर अपना नाम बसामा था और मंदिर तथा कूप का स्थापना का था।¹ सेवादास के शिष्य मेघदाम और मालूराम हुए। मालूराम का छोटी अवस्था में ही चले गए। लेकिन मेघदास जी न अपना ठाकुर दाने की अच्छी व्यवस्था बनाये रखी। अपने गुरु की भांति समाज की मर्यादा हस्तु दूर-दूर के गांवों तक सेवा का विशेष आयोजन अवसरा पर जाकर सम्मिलित होने और गुस्मन् देकर दक्षिणा प्राप्त करने थे। य वहाँ रात्रि जागरण भी करवाया करते और नाड़ी देख-कर दवा-दार भी दिया करते थे। इनके साथ जपन वृद्ध से आदमी भी जाया करते थे। इनके धाम राजा महाराजाजी की भांति कई व्यक्ति तुरीं बजाते हुए चलते थे। ये वहाँ जाकर उतरते तब उस घर का मुख्य आयोजन आरम्भ होता था। उन घर में इन्हीं के द्वारा सारा लेन देन और शिक्षा उपदेश हुआ करता था। एसी ही सामाजिक प्रथा परम्परा प्रचलित थी जो आज के युग में सिसकती स्वाम भर रही है।

गारवदेशर के महंत जब कालू आकर बस तब वहाँ में वरागिया के करीब बीस घर इनके साथ आकर बस थे। इन्होंने ठिकान में कई गनों की स्वीकृति ले ली थी। जस, कालू में इनके अपने मंदिर के आगे टफ, डाटिया (पींढह) न य और रास रमत के खेल बीसा बय तक होते रहे।

मेघदास जी के शिष्य श्री विष्णुदास महंत जो अब अच्छी सेवा पूजा के अलावा रामायण पाठो एवं आदश भजनी कर हैं। वैसे तो महंत श्री सेवादास जी न कालू में आकर अपना कूआ मंदिर आदि बनवा लिये थे। किन्तु वे गारवदेशर से आधाचार रखते हुए कालू रहा करते। खेती, पशुओं और लेन देन की आय से जितना अधिक जोड़ते (संचय करते) उतना ही द्रव्य, दान धर्म व कार्यों में व्यय कर दिया करते थे। इसके बाद मेघदास जी कालू के मंदिर में ही रह और श्वास छोड़न पर ही भक्तों ने इनके पार्थिव शरीर का गारवदेशर से जाकर दाह-संस्कार किया था। इस गद्दी के वर्तमान महंत श्री विष्णुदास अब यही रहने हैं। आपन अपने कूप की जमीन और खेती, कोठी के पर्यर चौकों से बालिका विद्यालय भवन कालू बनवाने में (सन 1975 में) अपना पूण सहयोग प्रदान किया है। इन्होंने अपने मंदिर के बड़ाह टोकणा, परात धालिया आदि बतन बिरादरी पचायत को दे दिये हैं। क्योंकि ये एक जगह नहीं रहते और रमत राम की तरह दूर-दूर की यात्रा कर आया करते हैं। तब बिरादरी के विवाहादि के कार्यों में

1 गांव कुजटी में भी इ हने कूआ और मंदिर बनवाये थे। गांव छटासर और कागासर में भी इनके बनाये हुए मंदिर थे।

सुविधाएँ बनी रहती है। मंदिर की साविधि विधान पूजना होती है और गाँव के लोग ठाकुर जी के दशनों से पूण लाभान्वित होने रहते हैं।

कालू म श्री सेवानाथ जी—

ज म—वि०स० 1964 गांव खारी

स्वगदास—स० 2029 गांव हीयादेशर। गुरु—गगानाथजी के आश्रम म। आध्यात्म भाव भी बाणियों को भानीनाथ जी के समाधि घूँने पर मनोहारी ढंग से गाने वाल जनपदीय सत्तो मे सेवानाथ का यहा विशिष्ट स्थान माना जाता है। गांव खारी मे जमे श्री खेतनाथ के आत्मज सेवानाथ बाल्यकाल से ही सत भावना ओत प्रोत व ससार विरक्त रहे। पहले आप पुनरामर म घूणी लगानर वर्षों तक तपे। फिर गांव कालू मे भानीनाथ जी की जगह को आपने अपना साधना क्षेत्र माना और वर्षों तक बाणियाँ गा-गाकर जन जन को आत्म वन्द्याण का उपदेश दिया। वसे तो आप कई बार भ्रमणाथ भी चले जाते, मगर अधिकतर निगुण ब्रह्म की साधना म ही खीन रहते। जब ये गाने बैठते, सामाजिक लोग मन्त्र मुग्ध से इनकी बाणिया का श्रवण करते। परंतु बाणियाँ विशेषकर भानी नाथ जी की ही बोलत थ। इनके द्वारा गायी जान वाली दो भानीनाथ की बाणियों का रूपक भावाभि-यजन देखिय। तथा—



श्री सेवानाथ

- 1 ए सुंदर काया हसलो चारो मितर कोनी चारो,
एक परदेशी हसो भी आयो तन से अवन कुवारो।
रुण हसलरो ब्याव रचायो, सूप दियो घर सारा ॥1॥
काट मे त्याई कटारो भी त्याई फिर फिर त्याई उचारो।
इण हसले ने भूखो कदे न राह्यो ठग खायो जुग सारा ॥2॥

तू तो बहे थो हसा सग चलूंगा, छोड़ चल्तो मसधारो ।
 तेरे जित्ती पाया भोत ठगी है, यो ही है काम हमारो ॥3॥
 उठ गया हस डूट गयो टाटी, माटी म मिल गयो गारो ।
 भानी नाथ सरण सागुरु री, निषस गया बोलण हारो ॥4॥

॥ धारी पाया बमेडा नार, इता अे काई नखरो ।
 पार सिर पर घूम बाळ उचव लेसी सिकरो ।
 धारी लगन चुने के भाय, काम नहीं दुसरो ।
 धान इतनी के लागी भूख भजन ने बिसरो ।
 धारे पीत पीत पर पाप, पृष्ठ को झगडो ।
 धारे रूप रंग म बर भाव की पगडा ।
 धार नणो आयो मोम चाच म चुगरो ।
 धार मुख मतलब री बात हिय म छनरो ।
 गुरु जान की आंगी पहन, नाग को धधरो ।
 सतसग री खूनड आड घूघरियो मरम रो ।
 यू गावे भानीनाथ, मनो धारो मुगरो ।
 हरजस की डूगी बठ, पार थ उनरो ।

शेख फरीद और दरगाह

वस ता भारत म सूफी मत का विशिष्ट प्रचार प्रसिद्ध सूफी अल्लुजिदरी के आगमन काल (12वीं शताब्दी) से माय है, पर तु वह 9वीं शताब्दी से आरम्भ होकर 10वीं तक। 12वीं शताब्दी म अपना आदेश रूप दिल्ली लाने लाया । उस समय साम्प्रदायिक सगठनों के लिए मठ या आश्रमों की स्थापना करत हुए सूफी मत का प्रचार काय आरम्भ हुआ । यह इस्लाम का भावात्मक दार्शनिक सम्प्रदाय था । पूण मानव की मान्यता हेतु मुरसिद, मुरीद का साथ सबर प्रचार करने लग । इसम सबसे विख्यात चिश्तिया सम्प्रदाय, जिसकी सातवीं पीढ़ी म स्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती हुए । वे कई दशों मे प्रचार काय करते हुए लाहौर म हजरत दातागज की समाधि के निकट ठहर कर प्रचार करने लगे । इन्हान अपने अंतिम समय म अजमेर को अपना प्रचार स्थान बनाया । इनके शिष्या मे स्वाजा कुतुबुद्दीन बाकी ने उनके उत्तरदायित्व को चेला । कुतुबुद्दीन को सम्राट अस्तमन को दीक्षित करने का गौरव भी मिला । ये संगीत के द्वारा अपना मत प्रचार किया करत थे । शेख फरीद इ ही (कुतुबुद्दीन) के मुरीद थे । मुरसिद कुतुबुद्दीन की अपन शिष्य फरीदुद्दीन शकरगज सबड़ी सहायता मिली । शकरगज के दो शिष्य प्रमश निजामुद्दीन औलिया और अलाउद्दीन साबिर हुए । उन्होंने अपने निजामिया और साबिरिया सम्प्रदाय चलाय । आगे जाकर भारत म सूफी मत प्रचार के लिए कई शाखाएँ चली । अविरक्त मारुफ ग्रंथ सभी सूफी शाखाओं का प्रमाणिक तथा मान्य गद्य समझा गया तथा सूफियों के दर्शन को "तसब्बुफ" कहा गया है ।¹

शेख फरीद उत्तरी भारत मे प्रधानत पंजाब के प्रमुख सूफी सत थे । एक समय लून्करनसर क्षेत्र का शेखसर गाँव भी शेख फरीद से प्रभावित हुआ, जो अब भी उनकी दरगाह धीरदान मे भक्तजनों द्वारा पूजित है ।

सूफीमत में पीर या सदगुरु की प्रतिष्ठा अधिक है। आपका पीरी वंश प्रम स्वाजा माईनुद्दीन चिश्ती की पवित्र चमक परम्परा से श्रृंखलित था। स्वाजा साहब के मुरीद (शिष्य) हजरत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी थे, जिनका मजार महरौली (दिल्ली) में कुतुबुमीनार के निकट स्थित है। यहाँ आज भी रोजाना हजारों श्रद्धालु जन दानाय पहुँचकर याचना अर्ज गुजारते हैं और मनोतिर्या मनाते हैं।

शेख फरीद कुतुबुसाहब के मुख्य मुरीद थे। छोटी उम्र के पात्र विचारा से प्रभावित होकर कुतुबुद्दीन ने बालक फरीद को पान दिया व दीक्षित कर लिया था। इसलिए फरीद साहब का सारा वात्सव्यकाल कुतुबुसाहब की स्नेहशील कृपा छाया में ही व्यतीत हुआ। लेकिन फरीद तो प्रकृति से ही सत, मानव में अस्साह के दीदार की पूर्ण अभिव्यक्ति स्वीकारते थे। अतः आगे चलकर खुद 'बसो' या 'पीर' के नाम से संबोधित किए जाने लगे। सूफी सत, गुरु का अनुसरण करते और हुक्म बनाते। उनमें धर्म प्रचार की भावना अधिक थी। पीर, औलिया आदि की उपासना, सत प्रचार एवं मजार की पूजा तथा तीर्थ यात्रा पर भी श्रमियों का विश्वास था। अतः हजरत कुतुबुद्दीन ने अपने शिष्य शेख फरीद को पान धर्म का प्रचार प्रसार करने हेतु पंजाब प्रदेश के अजोधन नाम के स्थान में भेज दिया। उनके वहाँ रहने से 'उम जगह का नाम पाक पटन शरीफ' पड़ा। (अब यह स्थान पाकिस्तान में है।)

तत्समामयिक 'पाक पटन शरीफ' से अजमेर का रास्ता बिल्कुल रेगिस्तानी था। साठे सात सौ वर्ष पहले के उस युग में यातायात के साधन नाम मात्र के थे। सतों, पीरों तथा महात्माओं के सफर अधिकतर काफिला के रूप में पदचल ही हुआ करते थे। ऐसी विन्मृत यात्राओं के सिलसिले में एक बार कुतुबुसाहब के शिष्य हजरत फरीद ने अजोधन सत में बनाकर भावलपुर, छनगढ़, लूनकरनसर एवं शेगावाड़ी के रास्ते से पान प्रचार करते हुए अजमेर के लिए प्रस्थान किया। उनकी यह यात्रा गत-व्य स्थान तक कई महीनों में पूरी होनी वाली थी। उस समय रास्ते के अनेक जल की सुविधा वाले बड़े गाँवों से होकर गुजरना पड़ता था। रात को ठहरने, वे मुसाफिरों के पड़ाव कहलाते। फरीद साहब इस जागसीय यात्रा के अनेक सघर्षों में जूझते हुए एक ऐसे खारी पानी के स्थान (लूनकरनसर क्षेत्र) में जा पहुँचे, जो निजल स्थान के नाम से मशहूर था। उस समय वहाँ मीठे पानी का एक 'सुलचनपुरा' नाम का एक गाँव बसता था। सत फरीद का मध्य गाँव का नाम पूछता हुआ उसके निकट जा पहुँचा। शेख साहब स्वयं गाँव में प्रवेश किए। वहाँ पहुँचकर उनको एक लड़का पानी लेता हुआ दिखाई दिया। दोपहर का समय था बाबा शेख ने प्यास मिटाने हेतु बच्चे से पानी लेना चाहा। परन्तु पानी पीने वाले लड़के ने कहा, 'पानी खारा है' कहकर सत के आदेश को टाल दिया।

मकसद मात्रा ऐसा था कि वह गाँव (शेखमर) उस समय पंजाब, पेशावर जमरूत आदि मुख्य स्थानों को, अनेक स्थानों में जाने का सुमाण सुस्थान था। अनेक जाने वाले यात्रियों का पानी की सुविधा हेतु वहाँ प्रायः सम्मेलन होता रहता। पानी मीठा था पर उसकी उपलब्धि गाँव बावत यथोपयुक्त एवं अल्प मात्रा में थी। इसलिए गाँव के पयवेनक पुख्ता पुरख ऐरे गेर यात्रियों को मीठे पानी को खारा बताकर आगे के गाँवों की ओर टर्का दिया करते थे। लेकिन उस वक्त गाँवों में केवल बच्चों एवं बड़ों के सिवाय सब समझदार वयस्क स्त्री पुरुष, खेतों पर काम करने गये हुए थे। तब उस बच्चे ने गाँव की रटौ रटाई बाणी में सत को भी पानी खारा बता दिया। पर पीर परम्परा तो सबक

होते हैं। मोठे का खारा कसे मानते? उन्होंने यात्रियों के साथ किए जाने वाले गांव के इस दुष्प्रवहार को मिटाने के लिए भरसक सबक दे देने की बात मन में विचार ली। बोले—'माना हुक्म है अल्लाह का, रहता शेख फरीद'। इस कूएँ का पानी खारा है।' इतना कहकर सत फरीद आगे चल दिए और गाँव में घोड़ी दूर जाकर पेड़ के नीचे विश्रामाश्रय बैठ गये। लेकिन उस कूएँ का पानी बिल्कुल खारा हो गया। इस घटना के लिए गांव के लोगों में हाहाकार मच गया कि कूएँ का पानी खारा हो गया। फिर लड़के ने बाबा शेख फरीद के प्यास चले जाने का मारा हास बता दिया। तब गांव के कतिपय मज्जन लोग हम बचन सिद्ध सत की तलाश में निकल पड़े।

ग्राम का समय किसान खेतों से घर आ रहे थे। वे रास्ते में एक अजनबी फकीर को बैठे देखकर विभिन्न संवाद करने हुए अविश्राम के भाव से उसे वहाँ से चले जाने को मजबूर करने लगे।

सत के कहना— मैं प्यासा और थका हुआ मुसाफिर हूँ, ठंडा समय होता जानकर थोड़ा आराम कर लेता हूँ। फिर सूर्यास्त तक स्थिर सफर शुरू करना पड़ेगा।'

लेकिन वे सगठित लोग, शेख फरीद की बात मानने की कतई तयार नहीं हुए एक-दूसरे जबरन खदेड़ने लग। सत फरीद खड़े हुए, पेड़ और पत्ते झेल पड़े। औलिया न अल्लाह का नाम लेकर पड़ को समोपनिधिया कि—'थोड़ी दूर छाया करता हुआ वह उनके साथ चले।' बसा ही हुआ, पेड़ सत के साथ चल दिया। पेड़ को साथ जते देखकर उपस्थित जन भीषण हो गए। उनको पता (परिचय) मिला गया कि— सत ऐसा गैरा नहीं, पहुँचा हुआ है।'

वे पीछे दौड़े, आगे गये और सामने होकर भापी मागने लगे। उनकी बहुत बहुत मिन्नता के बाद बाबा और पेड़ दोनों ठहर गये तथा सब लोग सगी स्तब्ध पेड़ के नीचे बैठ गए। थोड़ी देर बाद गांव में प्यास चले गये साधू-बाबा के पीछे मुखबैनपुरा के कुछ व्यक्ति भी जंगल के रास्ते जा पहुँचे और उनसे पास जाकर अपने कूएँ का पानी खारा हो जाने की अपनी गलती वाली बात क्षमा माचना सहित अज करने लगे। उस पर बाबा फरीद ने परामर्श हेतु अल्लाह से दुआ की। उधर तत्काल उस कूएँ में अत्यधिक मिष्ठ जल के स्रोत खुल गये। इस पर लोग ने बाबा को वापिस अपने गांव ले जाने के लिए बहुत आप्रह किया। लेकिन वे तो नहीं गये और उनकी अत्यधिक अनुनय पर थोड़े समय के लिए वहीं डेरे ठास दिए। उस उसी स्थान पर घोरदान (घय प्रसाद) नाम से ग्राम आबाद हो गया। मतलब उनके ज्ञान प्रभाव से जो आनंद प्रस्फुटित हुआ वह प्रज्ञा और प्रेम का प्रसाद कहलाया।

सत फरीद यहाँ की जनता में भुल मिल गये। त्रियारत के लिए दूर दूर के लोग आने लगे। आपकी विद्यमानता इलाके की अपठ जनता पर वरदान स्वरूप सिद्ध हुई। अल्लाह के हुक्म से आपने पाद फूँ ताबीज, दुआ आदि के चमत्कार चल पर अपने सत की पीर परस्ती, कुरान, नमाज बरकरार का प्रवेग अनेक हिंदू घरों तक पहुँचा दिया।¹ इस असे में शेख फरीद कई बार स्वाजा गरीब नवाज के अजमेर दरबार में उपस्थित

- 1 गत सताव्वी तक भाँव दूँदेर के ठाकुर भोपाल सिंह मझहर नमाजी थे। वे शेख फरीद की दरगाह पर कई बार शुक के रोज शक्कर का प्रसाद चढ़ाकर वितरित किया करते थे। उसने जामसर में एक पीर का मजार बनवाया था।

होने के बावजूद तयार होकर चले। लेकिन वहाँ के लोगो न हजिज आपको ऐसा नहीं करने दिया। आखिर बहुत समय गुजरने के बाद तमाम रयत को राजामद करने से फरीद अजमेर को खाना हो गया। मगर उनकी अनुपस्थिति में वहाँ दरगाह की मायना और अधिक बढ़ गई। मुसीबत या कठिनाई के समय लोग दरगाह पर आकर अपनी नकवाँछा की पूर्ति हेतु बाबा फरीद का नाम स्मरण करने लगे। शेखसर ने इद गिद के अनेक गाँवों में वसत सकल्प, याय तपास तथा हर बाय का गुभाग्म दरगाह व शेख फरीद की दुहाई द्वारा करवाय जाने लगे। गांव बाबा ने हजरत फरीद के हुक्मानुसार जल के लिए कभी किसी को इन्कार नहीं किया। मुल्तनपुरा ग्राम शेख शम्स में परिवर्तित, पीठे पानी की यहुतायत के कारण सर' (समुद्र) शब्द से संयुक्त होकर शेखसर कहलाने लगा। गांव का वह प्राचीन कुआ आज तक भरपुर भीठा पानी देता है। अब पाइप लाइन द्वारा निकटीय तेरह गाँव इस वरूणात्म से सतुष्ट लाभान्वित हैं। प्रत्येक प्राणी खुले नल जल पीता है।

बाबा फरीद के दरगाह के विषय में यहाँ अनेक चमत्कारी किंवदंतियाँ सुनी जाती हैं। 95 वर्ष के एक स्थानीय वृद्ध इस्लाम असारख खा न बताया कि "बचपन की बात मुझे याद है, यहाँ के लोग वर्षों के लिए दरगाह पर जाकर रुका करते और तुरंत वर्षा हो जाता करती थी।

यदि कोई शरस बागज दरगाह का धोक बाल देता और बाय हो जान पर मुकर जाता तो उस तत्काल दण्ड रूप मजा मिल जाता। मैंने खुद एक बार सफर करते समय दरगाह पर हाजिर होने का वादा किया था और यात्रा पूरी करके सीधा घर आने लगा। बेहोश होकर स्टाड से नीचे गिर पड़ा। स्वयं शमि दा होकर दरगाह गया और माफ़ी सलाफी की। तब ठिकान पहुँच पाया था।

पुनता सरपंच हीराराम गोदारा शेखसर (उम्र 92 वर्ष) का कहना है कि "हम कुछ पक्षित दूर से आने की कतार लेकर आ रहे थे। अचानक दरगाह के पास से निकलते हुए मेरा ऊँट गिर पड़ा और उसका पर टूट गया। साधारण उपाय करने के उपरांत साथी लोग मुझे वहीं छोड़कर चले गये। मेरे पिता को इस घटना का पता लगा। उन्होंने भाई को दूसरा ऊँट देकर मेरे पास भेजा। मैंने इससे पहले ही बाबा फरीद का स्मरण किया। ऊँट स्वस्थ हो गया। मैं सवार होकर गाँव को चलने लगा। सामने भाई मिल मैंने सारी चमत्कारी दास्तान सुनाई। मेरे इस परचे से गाँव के साथे लोग प्रभावित हुए।"

चौधरी ने दूसरा किस्सा यह भी बताया कि—'वि० सं० 1975 के वर्ष सारा देश प्लेग के भयंकर प्रकोप से पीड़ित हो रहा था। आदमी मर रहे थे, गांव के गांव खाली हो गए थे। उस समय हमारे गांव के लोग ने बाबा फरीद की भिन्नतें मानी और उस महामारी से बिल्कुल बच निकले। उस वर्ष बहुत से स्थानीय बुजुर्गों ने अनेक बार एक सफेद पगड़ी और सफेद दाढ़ीधारी अश्वारूढ़ वृद्ध पुरुष को शेखसर के चारों ओर रात्रि के समय पहना लगाते हुए देखा था। जिसने गांव एरिया का वह अश्वारोही वृद्ध चक्कर लगाता, उसने क्षेत्र में सबत्र सुख शांति रही। किसी प्रकार से जान माल की हानि नहीं हुई। तब से लेकर आज तक बाबा फरीद और उसकी दरगाह को कठिनाई के समय लोक सश्रद्धा पूजते हैं।

शेख फरीद की यहाँ संगीतात्मक कई मजलिसें हुई थी। उनको चालीस दिनों तक परमात्मा के ध्यान और प्राथना में निरत एकाग्र स्थान में रहना पड़ता, जिसे चित्पना¹ कहा जाता था। उस समय रंगीन वस्त्र और सिर पर बड़े बाल रखे जाते। शेख फरीद का मन वन में था। वे अपने गले में पत्थर का एक टुकड़ा लटकाये रखते, जो अधिक झूल के समय बटवा भरने का (खाने का) प्रयास किया करते। इसलिए रहस्यवादा साधकों के लिए यह स्थान बड़े व्यापक भाव से लोकप्रिय हो गया और इसका नाम चित्पलाह (बेहनु यान चालीस बैठक), मजार, मस्जिद न रहकर दरगाह पड़ गया। क्योंकि यहाँ के अधिकतर मुसलमान अनेक दरगाहों की भाँति यहाँ तीर्थ करने आने लग गये थे।

हजरत बाबा शेख फरीद एक असौखिक महापुरुष थे। उन्होंने इस प्रदेश को एक ऐसा सदेश दिया जो सफ़रों वष बीत जाने पर भी हर इंसान के लिए प्रकाश प्रदाय है। मनुष्य चाह किसी भी विषम परिस्थिति में हो, फरीद साहब और उनकी दरगाह के स्मरण विश्वास से वह अपने लिए मुख मार्ग प्रदर्शन प्राप्त कर सकता है। इसलिए इस दरगाह को दूरस्थ लोक-भी आत्मिक धोक देते हैं और मनवांछित कामना की सिद्धि प्राप्त करते हैं। घोरदान, शेखसर, खोद्याला, गोपल्यानादि गाँवों में बाबा फरीद का पेड़ रखते हैं और पूणिमा के रोज जागरण करवाते हैं। इसलिए यह दरगाह एक ऐतिहासिक महत्व का स्थान है, जो हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रतीक है।

क्षेत्रीय प्राचीन कला और शिल्प सदर्भ

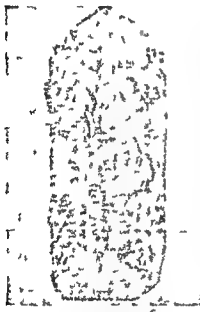
यह तो कला की प्रेरणा प्रकृति से मिली हुई है। पर तु मनुष्य ने आदि काल से ही पार्थिव वस्तुओं को आध्यात्मिक बनाने का पूरा प्रयत्न किया है। देवी विश्वासों के बल ने उसके मिथारों को रंग रूप, वाणी और श्वाप्ति प्रदान की है। तब से उसका उद्देश्य लोक को असीमित बनाकर दैविक आनन्दोन्मूति उपलब्ध करवाना रहा है। कलाकार ने धर, गगन, गृह, नक्षत्र, पक्ष—नदियों एवं सर्दी गर्मी प्रकृति के रहस्यमय रूपों को किसी अदृश्य शक्ति की कल्पना से सबधित कर अव्युक्त कला क्षमता से मूल किया है। ऐसी काल्पनिक आकृतियों का निर्माण करने में प्राचीन कलाकारों की अधिक अभिरुचि दिखाई देती है।

- 1 सूफी सम्प्रदाय में संगीत की प्रधानता है। संगीत के द्वारा साधक का भावाविष्टा वस्त्रा (हाल) की प्राप्ति होती है। 'हाल' की दशा में साधक अपनी ओर से निरपेक्ष होकर अपने आपको ईश्वर को समर्पित कर देता है। सत्सार की अनित्यता को समझाते हुए एक सूफी सत का संगीत है—

जब चलते चलते रस्ते में, यह गीत तेरी ढल जायगी।
एक क्षणमा तेरी मिट्टी पर, फिर घास न चरने आयेगी ॥
यह खेप जो तूने सादी है सध हिस्सा में बट जाएगी ॥
धी, पूत, जमाई बेटा क्या, बजारन पास न आयेगी।
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा, जब साद चलेगा बजारा ॥

अतः जब बजारा सादकर चलेगा अर्थात् तेरा अतः समय निकट आयेगा, उस समय तूने जो यह ऐश्वर्य उपाजन किया है वह यो ही पड़ा रह जाएगा। उस समय तेरे निकट पुत्री, पुत्र और जमाता का ता कहना ही क्या है स्त्री तक नहीं आयेंगी। अतएव तू श्वेत और मुछ परलोक की चिन्ता कर।

कला से सौन्दर्योत्पत्ति होता है, जन एवं सु दरता का मूल एवं अमूल रूप कला में रहता आया है। सौन्दर्य के प्रतिमान देग, काल और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित हो जाते हैं। तब कला का स्वरूप भी यथा समय दश, काल हेतु बदल जाता है। नवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक का मध्य युग मूर्तियों के निर्माण में बड़े उच्च स्तर से स्थापित है। इस काल की राजस्थानी मूर्ति कला जिस भूमि में उदभूत होती है तथा वह जिस पश्चात् पर पनपी है, वह वसुधा मूलतः धमनिष्ठ है। यह आत्म लब्धि की प्रक्रिया के द्वारा प्रकृति की खोज का सत्य प्रयास है। सरस्वती नदी इस क्षेत्र में गई वहाँ के निवासियों पर वातावरण का प्रभाव पड़ा। वहाँ के कलाकार न मनुष्य समाज की व्यापक पांडित्य निहार कर सरस्वती की सगमरमर की असाधारण मूर्ति का दर्शन करवाये, जिसमें क्षेत्र की तरसामयिक आरामदेह सामाजिक व्यवस्था को कुछ राहत मिली।



सरस्वती देवी

वर्तमान समय में ऐसी जूनी जानकारी देने वाला प्रयास स्थान पल्लू है जो लूनकरन-सर तहसील क्षेत्र की भीमा भूमि से दो कांस्य दूरस्थ पूजमान स्थापित गाँव है। पल्लू विशिष्ट सरस्वती प्रतिमाओं के कारण पुरातत्व विभाग सम्बन्धी एक विख्यात स्थान है। यहाँ की मिली मूर्ति के हाथ में कमण्डल है जो अंग के हाथ में नहीं¹ पल्लू उच्च विस्तृत यह पर स्थित है। जहाँ सरस्वती मूर्तियाँ ही नहीं अंग प्रस्तर एवं मृत्तिका मृदभाण्ड ताम्र एवं स्फटिक के आभूषण तथा ताम्र रजत मुद्राएँ भी मिली हैं। यह अनुसंधान सब सामान्य इण्डो ग्रीक काल से लेकर अब तक के पल्लू पर सगमरमर दो हजार वर्षों का मनोहारी ठप्पा लगाता है। इन मुद्राओं पर देखने योग्य खरोष्टी एवं ग्रीक लिपि के विचित्र लेख एवं चित्र खुदे हुए हैं। अंग मुद्राओं में कूफी लिपि, फारसी लिपि आदि

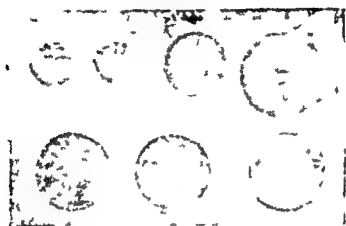
अनेक प्राचीन लिपियाँ भी हैं। दिल्ली सम्राटों के सिवाय अंग रजवाड़ों की ताम्र मुद्राएँ भी पल्लू से प्राप्त की गई हैं। बीकानेर के महाराजा सूरजसिंह की सात तथा रतनसिंह की नौ यथा सामयिक मुद्राएँ मिली हैं।² जयपुर जोधपुर राज्य की मुद्राएँ पल्लू के घेह से उपलब्ध हुई हैं। पल्लू इण्डो ग्रीक काल से कुरानो एवं सासानियन आदि अनेक प्राचीन शासन समयों को देखने वाला गाँव है। पृथ्वीराज एवं विविध मुसलमान शासकों तथा

1 इस जल कमण्डल का मतलब हुआ सरस्वती नदी के जल का यहाँ से चले जाना।

2 कला और शिल्प का बीकानेर केन्द्र 17वीं शताब्दी में पर्याप्त विकसित हुआ है। (आजकल वष 11 अंक 1 पृ० 33)

मुद्रकों के समूह के बीच का भाग देखा जाता है। विशेषज्ञों की मदद से यह सब के साथ सब की निष्कर्षों के रूप में अंतर का मुद्राएं दी है।

प्राचीन काल में ही सेन्सेन की साव मुद्रिका हनु हनु रक्षा में विरक्त पान प्रवर्तित था। लोगों की आदि में स्वयं मुद्रिका यह व प्रमाण है। बिना तुला के विरक्त के



प्राचीन सिक्के

विशेष मिट्टी, लकड़ा, चमड़े, लोह और कागज के विरक्त भी बनीं चले। इन पर चित्र, चक्र, गजरा तथा सागरा के नाम एवं साधारण अक्षर हैं। साधारण लकड़ा और हड्डी की मुद्रिका में चित्राक्षरों मिलित विरक्तों का मुद्राओं या मुद्रकों (Seals) पर हाथों, गजरा, गाम पाड़ा बल, विरक्तरी, व्याघ्र चक्रा व चित्र चक्र मिले हैं, जो उपरान्त बाद अपने नाम के चरते में चित्र काव्य अथवा चक्र से काम लिया चरते व। बीजापुरी (गजरा) प्राचीन मुद्राओं पर उपरान्त मोटा की मूर्ति पाई जाती है जो बीजापुरी नामक गजराचक्र की निष्कर्षी है। बीजापुरी नाम प्रसिद्ध मोटा हुआ चक्रों के। मुरजमात सिंह की मुद्राओं पर मुर, चक्राक्षरों के लिए चक्रा तथा राजासिंह के लिए हाथों के चित्र मिलते हैं। साथ (संरक्षण में अहि) ग अहिचक्रचक्र की मुद्राएं हुआ चरती था।

कालू का परिशिष्ट वृत्तान्त

महानता के अस्तित्व

कालू में कतिपय धार्मिक एवं सेवाभावी घराने हैं, जिनका गाँव निमाण प्रगति तथा ग्राम सुधार में चार पाँच पीढ़ियाँ से निरन्तर योगदान रहता आया है। उनकी देन वृत्ति नहीं, अनोखी मूल धूस एवं दूरदर्शिता भी बड़ी महत्वपूर्ण रही है। इसलिए गाँव के इतिहास में उनका उल्लेख किया जाना अत्यन्त आवश्यक माना जायेगा।

वि०स० 1843 (ई० सन् 1786) में जब गाँव कालू का वर्तमान निवास पहले से ही बड़ा था और गोदारो का स्थान बहलाता था। गाँव के उत्तरादे येह की जनता के आगमन से कालू ने इस बड़े वाम में और भी बड़ोतरी हुई। गोदारो के पास उनके भानने जादु भी आकर यहाँ रहने लगे। गादारा ने अपनी सुख सुविधा के लिए भवत मेला की छनरी समाधि के निकट और अपने बूँ के पास भगवान का मंदिर भी बनवा लिया। जादुआ ने भी गाँव के बीच एक कूआ अपने प्रभुत्व में कर लिया। मगर गाँव के भादुआ और जादू जाटो का गाँव के मध्य कोई मन्दिर नहीं बना, वे केवल कूओं और ज्होडा पर ही अपना अधिकार कायम कर सके। कानू में जाणी जाट गाँव बाडेला से पारीक ब्राह्मणों के साथ आकर यहाँ बसे थे। जाणी जाट तटराखीन जादुआ के भाणजे थे तथा गाँव के भादू जाट जाणिया के भाणजे थे। इस तरह से कालू गाँव के इन चौधरिया के आपसी गहरे सम्बन्ध थे, जिससे इनकी कायकुशलता, कमठता, धर्म शासीनता तथा पर दुःख कातरता की बड़ी महत्ता रही है।

श्री विजयसिंह जी के शासन समय तक कालू में यहाँ के चौधरियों का अभ्युदय बना रहा और उन्होंने मदद इस गाँव की उन्नति देवभास तथा धार्मिक नीति के चलान में पूरा सहयोग दिया। उनके द्वारा धार्मिक, सामाजिक और दीन दुबला की सेवा रक्षा बहुत सराहनीय कार्य होते रहे। उक्त समय में कालू की पूर्वी काकड़ में 8 मील दूर गाँव गारबदेशर और 13 मील उत्तर पश्चिम में लूनकरलमर प्रसिद्ध एवं ऐतिहासिक गाँव रहे हैं। रानपूताने की उच्चतम परम्परानुसार गाँव कालू भी धर्म, चरित्र सेवा तथा दान-कारता में अग्रणी रहा है। यहाँ के चौधरिया न जहाँ अपना मन मन लगाकर जन सहयोग किया वही यहाँ के दानवीरों ने अपने धन से अनेक मन्दिर, कूआ, प्याऊ धर्मशाला एवं मुख्य सरोवरों का निमाण करवाकर अपनी अर्पणग्रह भावना का पुण्य परिचय दिया है। कालू के कमठ तथा व्यवहार कुशल व्यापारियाँ न भारत के विभिन्न भागों में जाकर अपनी विशिष्ट प्रतिभा के परिचय से गौरव प्राप्त किया है। आज भी बहुत से चतुर पुरुषोत्तम देश के चारों भागों में प्रवासी बने गाँव की आदर्श परम्परा का भरोसा निवाह कर रहे हैं। स्कूल, अस्पताल और कूआ ज्होडा ने कानू में चन्द्रा तथा धार्मिक सेवाएँ देने वाले बहुत से लोग इस गाँव में पैदा हुए हैं, जिनका इस ग्राम में यथा प्रसंग ध्यान किया गया है।

देव स्थान एवं सावजनिक संस्थान बनाने वाले महान हृदय—कालू अपनी तहसील का मुख्य कस्बा है। यह सदा से उन्नतिशील एवं सुखदायक निवास बहलाता आया है। इससे चार बास थे और अब अनेक बास बस चुके हैं। इसमें प्राचीन चार कूए, तालाब

और अनगिनत सरावर हैं। मेला की छतरी और भूहठ भोमिये का मंदिर (स 1551) स 1850 से पहले के हैं। जन मंदिर और उपासरा बहुत पुराने सस्थान हैं। यहाँ के मंदिरों में पचायती का मंदिर भी प्राचीन गिना जाता है। इसे श्रीमती शैव देवी राठी ने बनवाया था। यह मंदिर गाव के बीच में है और जाणियों की मोहल्ला रेखा में होने से जाणियों वाला मंदिर भी कहलाता है। कालिकाजी का मंदिर वि०स० 1956 में नये ढंग से गाव के द्रव्य से बना है। रामदेव जी का मंदिर एव सतगन ठाकुर द्वारा भी उसी समय के सावजनिक सस्थान हैं। धमशाला और सतनारायण जी का मंदिर तथा लूनवरणसर रास्ते का प्याऊ प्रामाद, अनाणा तालाव आदि (वि०स० 1964 72) के बने हैं। स्वामी जी वाला ठाकुर द्वारा और उनका कूआ वि०स० 1974 76 में महत ने गारवदेशर से आकर बनवाये। पट्टे का गड वि०स० 1967 में बीकानेर राज्य द्वारा बना था। पारीकों की धमशाला उहाँ की बिरादरी द्वारा बनी हुई है। रा०उ०मा० विद्यालय वि०स० 2007 8 में गाँव की ओर से बना हुआ है। उसमें एक कमरा वि०स० 2018 में शेरमल डूवाणी ने अपने पिता की स्मृति में बना के दिया है। एक कमरा सुगनी देवी साह ने स० 2026 में बना कर दिया। एक कमरा श्री रामचंद्र, इन्द्रचंद राठी द्वारा बनाया हुआ है। एक कमरा सन 1978 में लडकियों के लिए श्री इन्द्रचंद राठी ने और बनाकर दिया है।¹

जून 1983 के प्रथम सप्ताह में रा०उ०मा० विद्यालय कालू में तीन बड़े कमरे बनवाने के लिए द्रव्य सग्रह हेतु ग्राम के गण माध्य नागरिकों ने एक सभा बुलवाई। इसमें सत्तर हजार रुपये सग्रह करने का लक्ष्य रखा। इसके पूर्ण होने पर अब निर्माण कार्य शुरू हो गया है। इसमें श्री गोपाल चंद की तामीरी पूरी देखरेख है। रा०प्रा० पाठशाला में भी कई महामुभावों ने कमरे बनवाकर दिये हैं जिनमें सब श्री दीपचंद डूवाणी, श्री शेरमल डूवाणी (अपनी माता की स्मृति में) श्री छगनलाल जी शवर सूरतगड (4101) श्री रामदेव सिंह जी कट्राक्टर उडोसा (4000) और श्री रामाकिशन श्रीराम छडेलवाल आदि मुख्य हैं। क्या पाठशाला भवन ग्राम पचायत कालू की ओर से बना हुआ है। उसमें श्री गोपाल राम स्वणकार ने प्याऊ कक्ष बना कर दिया है। कालू में रा०प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र श्री शेरमल डूवाणी ने अपने पिता की स्मृति में निर्मित करवा कर जन-हिताय राज्य सरकार को वि०स० 2021 में अर्पित किया है। उसके साथ उसी साल डॉ० का निवान गृह भी अपनी धर्म पत्नी के नाम पर बना कर दिया है। श्री माताजी का पूर्वी गेट व पानी का बड़ा कुंड किसी अनात सम्बन्धी के द्रव्य से धर्मीनारायण शवर न वि०स० 2009 में बनवा दिया था। तत्समय इस भवन के अंदर स्व० मूलचंद मूषडा

1 ठाकुर द्वारा की मूर्तियाँ पचायत के मंदिर में आ चुकी हैं।

2 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कालू में विज्ञान प्रयोगशाला के लिए एक कक्ष बाहर के कतिपय फनों से आये द्रव्य से बना, उन के नाम एव द्रव्य दृष्टव्य हैं—

(ब) श्री गणेशदास हजारीमल (वक्ता) राशि 2101 रुपये

(ख) ,, वशीलाल, भदनलाल राशि 1101 ,

(ग) ,, इस्ट इंडिया ट्रांसपोर्ट एजेंसी राशि 1101 ,,

(घ) वणीधर होशियारीलाल धूपगुनी राशि 2101 ,

कालू द्वारा पत्थर का एक गेट बनाया हुआ है। फिर उसके पास श्री तोलाचंद साह की धर्म पत्नी ने वि०स० 2026 में अनेक कमरे बनवाकर मंदिर दरवाजे की शोभा द्विगुणित बढ़ाई है। दरवाजे से दक्षिण उत्तर की तरफ के दो कमरे सरदार शहर के निवासी श्री विशनलाल घोरड ने बनवाये हैं। उन ने देवी के मंदिर की उत्तर की ओर खाली पड़ी विस्तृत भूमि के चारों ओर बड़ी पट्टियाँ गढ़वाकर परकोटे जसी चहारदिवारी बनवा दी है। देवी के मंदिर के अहाते में ही ब्रह्माणी देवी का मंदिर ढहजाने के बाद पुनः श्री शेरमल का बनवाया हुआ है।

वर्तमान प्रायना भवन—पहले इस मंदिर के एक भाग को रामदेव जी का और दूसरे भाग को श्री भगवान का मंदिर मानते थे। पत्थर खूना इसका पक्का था कि वही वर्षों बाद भी टूट-पूट नहीं आई। अनगढ़ पहाड़ी पत्थर की भाँति प्राचीन कला सुंदरता को सुदृढ़ बनाय अकेला खड़ा था। भवनजना की भक्ति में चेतना आई, जब सन 1971 से मंदिर की पूरी मरम्मत तथा लिपाई पुताई करवाकर नवीनता उत्पन्न कर दी। पानी के लिए हौज और आगे चौकियाँ भी बनवा दी हैं। अब सुबह राम प्रतिदिन पूजा प्रायना का सुप्रबंध है।

यहाँ प्रातः सायं नित्य प्रति भगवान की प्रायना एवं आरती गाई जाती है। लाऊंड स्पीकर का पूरा प्रबंध है और धार्मिक भजना गीतों की रिकार्ड भी पर्याप्त उपयोग में आती हैं। यह आरती अचना काय राजाना भादानी परिवार व टीकू मेघवाल के परिवार द्वारा अक्षूकचर्या स्वरूप सम्पन्न होता है तथा यथा समय रामदेव पूजा भवन में अनेक भक्त गणों द्वारा समारोह रूप में महव किया जाता है। मंदिर के भीतरी सभा मंदिर में राधा कृष्ण और रामदेवजी की नव्य भव्य मूर्तियाँ हैं, जो श्री धनराज मंगलचंद भादानी द्वारा नये ढंग से स्थापित की हुई हैं। मूर्तियाँ वस्त्राभूषण से सुमण्डित तथा सिंदूर प्रतेपित हैं।

ओसवाल धीसध पचायत—ओसवाल समाज के व्यक्तियों ने पहले अपनी जातीय पचायत की स्थापना की थी वह गाँव में आज ओसवाल श्री सध पचायत के नाम से जानी जाती है। वि०स० 1955-56 में पचायत द्वारा एक भवन निर्माण करवाया गया था, जिस भवन में तेरापथ सम्प्रदाय की साध्वियाँ (कान कबर जी छोमाजी कुमकुमजी लिछमाजी) का प्रथम चातुर्मास वि०स० 1960 में हुआ। इसके बाद कुछ द्रव्य एकत्रित करके पचायत ने बतन आदि का सामान त्रय करके विवाह तथा दूसरे आयोजन उत्सवों पर साधारण किराये में दिये जाने का कार्य प्रारम्भ किया। ओसवाल पचायत का भवन ग्राम में बरात वगैरह ठहराने के काम में भी आता रहा है। स० 1996 में इस भवन का सुन्दर गेट बनवाया गया जो दो वर्ष तक अटका रहकर विनम्र से संपूर्ण हुआ है। सन 1975-76 में इस भवन को नये ढंग में बनवाया गया है तथा इसमें काफी नूतन सामान जैसे ढालिए—बतन आदि बनाये गए हैं। पचायत के पास हजारों का अपना सामान जिसमें ताम्बे की बड़ी बड़ी कूड़े टबें नूलिए चौमुखी, थाल धालियाँ, पाटे पातिये दरियाँ तिरपाल और लोहे के नग भी काफी हैं। गह, बनिया एवं अन्य वस्तुएँ विशेष समारोह अवसरों पर काम आती हैं। वर्तमान में स्थानीय जन मंदिर भी इसी मर्यादा की देखरेख में जन धनलाभ प्रदाय पूजमान है।

1. आधूण रखायो बारणो, दिखण रखाई पोल।

खाटू सू सिला मगाई पड़यो पचायती में गोल ॥

गुराजी का उपासरा—बालू म प्राचीन काल से ही खरतरगच्छीय मंदिर मार्गी जन सम्प्रदाय का उपासरा ज्ञान धर्म कायशील रहा है। इसके सस्थापक यतिवद गुराजी हुए हैं। चमत्कारी यतियों का यहाँ काफी नाम है। इनकी ओर से तालाब पर दो कमरे बने हुए हैं। उपासरे की नूतन ढंग से बनाने और समझ करन का श्रेय गणेशलाल गुराजी की है। इनके देवलोच गमन के पश्चात् उपासरे की देवरब ओमवान पचायत श्री सध के अधीनस्थ होती है, जो ट्रस्ट बनाकर सारी व्यवस्था करने हैं। इस ट्रस्ट के कार्यकर्ता भैरुदान सांड, मोतीनाल नाहटा हसरान कोठारी, गोपालचंद हूडाणी और रैवतमल गोलछा (कोपाध्यक्ष) आदि हैं। महिला सदस्यों म श्रीमती तीजादेवी और श्रीमती भवरी¹ ब्रह्म हैं। अब य उपासरे भवन म एक औद्योगिक सस्थान और दूसरा आयुर्वेदिक औषधालय स्थापित करन की व्यवस्था ससन्न हैं।

श्री ज्ञानश्वेताम्बर तेरापथी सभा—इस सस्था की स्थापना वि०स० 2005 मे सेठ सुगनमल नाहटा के कमरे म हुई थी। उस समय श्री तोलराम सांड ने आगम व सूत्र देने के वचन दिय थे। तब जन श्वेताम्बर पुस्तकालय की स्थापना भी हुई। पुस्तकालय बाबूनालय के लिए भवन नहीं है। अत ओसवाल पचायत श्री सध के भवन म ही दाना सस्थाएँ स्थित हैं। पुस्तकालय म विभिन्न विषयों से संबंधित सहस्र लगभग पुस्तकें हैं। पत्र पत्रिकाएँ भी अनेकशा आती हैं। सभा की अय छात्राओं म श्री महिला मडल बालू अच्छी उन्नति कर रहा है। तेरापथी महासभा कलकत्ता के तत्वाधान मे संचालित जन साहित्य की धार्मिक परीक्षाओं का नेट्र भी यहाँ कायरत स्थापित है। महिला मडल बालू की पुत्री छात्रा श्री कया मडल है जो अध्ययन अध्यापन के अलावा अपनी आत्मनिभरता, वाक्पटुता तथा अय धार्मिक विचारों का आदान प्रदान करती है। महिला-मडल बालू का भवन असें से नाहटा कोठारियों के मोहल्ले मे निमित है। इसमें सभा-सम्मेलन और शिक्षा आदि की उपयुक्त सामग्री उपलब्ध है। इसकी स्थापना उत्साही महिलाओं, कयाओं एवं उनके अभिभावकों द्वारा वि०स० 2017 मे की गई थी, जिसका 2026 मे आकर भवन बना है। यह महिलाओं को सुधार ज्ञान की प्रेरणा देने वाली बालू में मुख्य सस्था है। इसने द्वारा पर्दा प्रथा दहेज प्रथा आदि रूढ़ियोंका बहिष्कार किया जाता है और समाज के आध्यात्मिक सामाजिक, मांस्त्रुनिक तथा शक्षणिक आयोजन सम्पन्न होते हैं।

पुराने देव स्थानों में भैरुजी (तोलियासर) का स्थान यहाँ सदोना है। इस स्थान पर पुत्र प्राप्ति की कामना हेतु प्रायः स्त्रियाँ जित्य प्रति चोक देवे जाया करती हैं। यह स्थान तोलियासर की तरफ पहले गाँव से बाहर एक बड़े खेजटे के अधीनस्थ था। अब गाव की आबादी के बीच में आ गया है। भैरुजी की सुंदर देवली, लेखक के पिता श्री भरारामजी संस्कर्ता जो दुलमेरा की खान म सुपरबाइजर थे ने वि० स० 1969 अत सुदी 14 को अपने ज्येष्ठ पुत्र बालूराम के स्वास्थ्य लाभ हेतु उसकी नमिहान तक कंधे पर ले जा कर बिना मुह मे अन पानी लिए नौ कोस भूवे प्यासे पदत काल आकर स्थापित की थी। इसके बहुत समय बाद कुछ सज्जनों द्वारा इस स्थान का पक्का परकोटा भी बनवा दिया गया है।

- 1 श्रीमती भवरी देवी बेंद ने अपना नवनिमित अतिथि भवन दिनांक 16 & 83 को जन-श्वेताम्बर तेरापथी सभा बालू को सुद भावना सहित प्रदान किया है।

हरिरामजी का मंदिर—श्री तालाराम साह न सन 1974-76 में बनवाया। वभूता महाराज का स्थान यहाँ जय वीर भागिया की भाँति एक शताब्दी से पूजमान है। श्री वभूता की साल पहले श्री बनचंद नाहटा द्वारा बनवाई गई थी। फिर गांव में साव जनिक रूप में बनी और अब सन 2026 में शेरमल दुहाणी ने इसी स्थान पर सुन्दर साल बनवाई है। कालू में साँप के काटे व्यक्ति का वभूता के स्थान पर नाकर दक्क उपचार किये जाते हैं। ऐसा करने पर साँप के काट हुए बहुत कम व्यक्ति मरते हैं। गांव में पहले बच्चों-डॉक्टरों की कमी होने से जहरीले जीवों के काटे जाने पर वभूता महाराज की उपासना ही जीने का आधार मानी जाती थी। यहाँ भाद्रपद सप्तमी को वभूता की पूजा होती है। कालू में क्रम से अष्टमी और नवमी के दिन सर्पों के देव केनाराजी कबर और गागाजी महाराज की पूजमान तिथियाँ मानी जाती हैं। गोगाजी का स्थान हरिजन बस्ती में उड़ी की बिरादरी द्वारा जहोड़ी जादुवान पर बनाया हुआ है। वहाँ ताँत के बिनारे हरिजन का सुविधाएँ रमजानली ने एक रामदेवरा भी बनवाकर दिया है। इसे जानी जाटा का गुसाईँ व गोदारो के गुसाईँ के भी अपने स्थान उन उन जाटा के पुराने मठ बनाये हुए हैं। अब तो भोगिया के भी कई स्थान बन गये हैं। काकरिये बास में रामदेवजी के पटे लामूराम हरिजन ने अपना मंदिर बनवा लिया है।

इस्लामी धर्म स्थान—इसकी स्थापना एक युग पूर्व नव जायति की लहर में यही के मुस्लिमानों द्वारा हुई है। भारत विभाजन (1947) के बाद इन लोगों की यह एवाहिश रही कि इस्लाम धर्म के लिए अपना भी एक संगठन होना चाहिए। फकीरा, रजाकसा, मागूला और तूफल काजी इस काय को पूरा करवाने में तन मन धन से अग्रणी रहे हैं। विशेषकर फकीरा के एक सबधी (जा इराक में रहता है) से भी समय समय पर आर्थिक सहायता मिली है। वह हाजी चौकतअली फनेहपुर का निवासी है तथा कावत में अपना धर्म करता है। हाजी ने मस्जिद हेतु 24 000 रुपये प्रदान किये हैं, जिनसे सन 1973-74 में मस्जिद का भवन बनाया गया है। अब भी ये लोग अर्थात् एकत्रित करके इस भवन की बढ़ोतरी तथा रंग रूप सज्जा करना चाहते हैं।

प्राचीन छतरियाँ—गोदारो के मंदिर में एक सुन्दर छतरी चौधरी मेला पर उसके पारिवारिक लोगों द्वारा बनाई हुई थी। वह सन्त 1990 की वर्षा में गिर गई। दूसरी प्राचीन छत्री अब लूनकरनमर से सरदारगहर की सड़क पर खड़ी है वह किसी शासक की श्रमगत भूमि पर उसके वंशजों द्वारा बनाई हुई जानी जाती है।¹

गांव के ताल में अनेक पुराने चौक खूबतर बने हुए हैं। कालू से चार किलोमीटर लूनकरनमर सड़क के बिनारे मास्टर केशरमल गोदारो के दुधठाना स्थल पर उसके नाम एक स्मारक, सड़क के प्रथम ठेकेदार द्वारा बनाया हुआ है और उस पर ध्वजा फहराती है। उड़ी के द्वारा शहरों की प्याऊ पर बना हनुमानजी का मंदिर स्थान है।

सारस्वतों की मावडियाजी का स्थान—इन मावडियों (माताजी) का सदोना मंदिर सारस्वतों के पश्चिमी बास में स्थित है। इस बास के सारस्वत ईसरानी कहलाते हैं। लगभग तीन सौ वर्ष पहले इनके हरिदास नाम के पूजक को खेत जोतते समय एक

1 स्थानीय ससी कहते हैं यह छतरी हमारी है, लेकिन ससिया की छतरियों के प्राचीन आकार प्रकार अब साधारण तरीका के होते हैं। मुझे ऐसा चूर के श्री सुबोध कुमार जी अप्रवाल ने बताया है।

सद्वृत्त म मावडियों की मूर्ति और पावडियाँ मिली थी। मावडियों का हुक्म हुआ कि कालू में तालाब के पाम मेरा स्थान बना देना। हरिदास ने वसा ही किया। तब उस बूढ़े के दो पुत्र हुए। प्रचलित कथा के अनुसार एक का नाम ईमर और दूसरे का नाम रूपा रखा गया। ईमर के वंशज ईसराणी और रूपा के वंशज रूपाणी कहलाते हैं। आधूने वाम में अब ओना के भी परिवार हैं, लेकिन अबूणे (पूर्वी) बास में रूपाणी ही निवासित हैं। ये दोनों बास मावडियाँ को सधद्धा पूजते हैं। माही मात्यू को मावडियाँ जो भी पूजन तिया है, जिसमें पहले रोज दोनों बासों की महिलाएँ इस मंदिर की मंगल गीतों के साथ लीप पोत कर सुसज्जित करती हैं। सप्नमी को हर सारस्वत परिवार म मावडियों का प्रसाद बनता है एवं भोग चढाया जाना है। अब नया मंदिर ५० सोहन लालजी न बनवाया है।

पानी के कुण्ड एवं प्याऊ—राजपुरा और कालू तथा लूनकरनसर एवं गारवदेशर श्रीरास्ता पर कालू से करीब दस किलोमीटर दूर राजपुरा नामक क्षेत्र में सन् 2010 में श्री मूनाराम पारीन की ओर से प्याऊ का कुण्ड एवं सात स्थापित की गई। ऐसी ही बराबरी की दूसरी प्याऊ का स्थान गाव राजासर करणीसर के रास्ते पर कालू म सात किलोमीटर दूर मोएत नाम के क्षेत्र में श्री धनाराम पागीक द्वारा उसी सात निर्मिण एवं वतमान म व्यवस्थित है।

जल की घड़ीइया—प्राचीन समय के धार्मिक जन वनाख जेठ के महीना में पक्षियों के जल पीने हेतु घरों की ऊँची दीवारा पर डीले तगरे (मिट्टी के बतन) रख दिया करते थे। जिनसे उड़ते प्यासे पक्षी पानी पी लेते। हरिण आदि जंगल के पशुओं के लिए भी गाव के लोग ऐसा धार्मिक इराय करते हुए शाम को अपने कंधा पर पानी के घड़े ले जाकर गाव से बाहर निकलते हैं। तगरो में पानी भरने जाया करते थे। धनी-मानी व्यक्ति पक्की घड़ीइया बनवा कर जल पूरित करवा दिया करते थे। वि० स० 1980 म सूरजाणे ओहड़े के ताल म मिरदावर अमरनाथ ने एक पक्की घड़ाई बनवाकर पानी भरवाने का सुप्रबन्ध किया था। लेकिन विधान उलटा हो गया और बहा अथ पशुओं की तरह भेड़िये भी पानी पीने आने लगे और ताल में बड़ी हुई गाया का मारन लगे। तब पानी भरवाने का बदावस्त बंद कर देना पड़ा। अब न यहाँ भेड़िये हैं और न ही कोई पानी भरवाता है। केवल वह गुप्क घड़ीइ ही ऐसे आदश कामों की याद साबितता है। निहराणे ओहड़े पर गुर्खाईजी के स्थान आने भी ऐसी एक घड़ाई गोपरा द्वारा बनाई हुई है।

जल स्टण्ड—ई० सन् 1979 में ग्राम पंचायत कालू द्वारा अपनी आमदनी से अनवर मोहल्लो में जल स्टण्ड (कोठा क्षेत्र और हौज) बनवाय गये है जो जल सक्कट मिटाने में हर वस्तु समय है।

गाव में चुंगे के लिए पक्षी पीजरे—कालू गाव के अनेक मोहल्लो म पक्षियों की सुरक्षा हेतु दाना चुंग,ने के लिए कुछ व्यक्तियों ने मोहे के अनेक पीजरे स्थापित करवा रमे हैं, जिनमें पक्षियों की रोजाना गाव म चुंगी डलवाया जाता है। पीजरा प्रथम माताजी के मंदिर आगे गांव से मावजनिक रूप से बना हुआ है। पीजरा द्वितीय पंचायती के मंदिर आगे श्री शेरमल दूदाणी का बनाया हुआ है। पीजरा तृतीय इतुमानजी के मंदिर आगे श्री गायचंद नाहटा आतवद द्वारा बनाया हुआ है। पीजरा

चतुर्थ रामदेवजी के मन्दिर आगे वनराज भादानी द्वारा बनाया हुआ है। पीजरा पाँचवां श्री स्वामीजी के मन्दिर आगे बरागिया की विरादरा द्वारा बना हुआ है और पट्टम सुव्यवस्थित पीजरा रामा मंडी में बना है। इस तरह गाँव में अनेक पीजरे गाँव के लोगों ने समय समय पर बनवाकर स्थापित किए हैं।

गांव नाथूसर और कूआ—वि.स. 2011 में पहले नाथूसर गांव कुछ असुविधाजनक स्थान पर स्थित था। इसलिए वहाँ के मुखिय सागा ने सन् 2009 में श्री लाल खट्टा की सहायता से कालू की कानह पर स्थित काँजरवाली जोहड़ी पर कूआ खुदवाना आरम्भ किया। उपरोक्त सज्जना के उत्साह जनक श्रमदान से धरती माता ने जल भी भीठा प्रदान कर दिया। अतएव अबत समय में नाथूसर गांव उठकर जोहड़ी पर आ बसा है।

कालू में यात्री विधामालय—सन् 1978 की अगस्त में यह सावजनिक संस्थान भवन ग्राम पंचायत के द्रव्य से सरपंच द्वारा विशेष दितचस्पी के साथ बनवाया गया है। यात्री आश्रमगत की पुनात भावना से अनुप्राणित यह संस्था बीच बाजार बस-स्टैण्ड पर स्वागतार्थ प्रतीक्षा व्यवस्थित सजा रत है। यह आरामदायक विशाल भवन नित्य प्रति यात्रियों को सब सुविधायें सुलभ करवाता है।

जकात याता परिवर्तित पटवारखाना—इसकी स्थापना ई.स. 1951-52 में श्री भीखाराम धानदार (नाहर) द्वारा हुई थी। इससे पहले जकात याता कार्यालय धनदाला भवन के बाहरी कमरे में स्थित रहता था। श्री भीखाराम ने जकात याता कालू की आमदनी जमा रखकर अपने महकम से स्वीकृति लेकर यह सरकारी स्थान कायम करवा दिया। सन् 1954 के बाद जकात विभाग की समाप्ति के आसार होने, तब राजस्व विभाग वालों ने इस स्थान को अपने अधिकार में ले लिया जो आज तक उन्हीं के पास पटवार महल कार्यालय के नाम से संबोधित होता था।

वि.स. 2038 (ई.स. 1980-81) में ग्राम पंचायत ने पचक पटवार भवन बना दिया है। तब से इस जगह पर (पंचायत-व्यवस्थित) तीन दुकानें बनी हैं। और वहाँ नये पटवार भवन के मलान अनुरूप दूसरा मकान ग्राम सेवक के लिए भी बनवाया गया है। घनाणा ताल के दक्षिण पश्चिमी छोर पर सरकार ने पशुओं का बड़ा अस्पताल सन् 1980-81 में बनवाकर तयार करवाया है। उसका क्वाटर भी बना दिया गया है। सन् 1982 में इस पशु चिकित्सालय के निकट कालू सहकारी समिति के लिए अध्यक्ष के मारफत सरकार ने एक बड़ा गोदाम तयार करवाया है।

ईस्वी सन् 1983 में 'हुडकी' योजनातहत कई बालोनियाँ एवं अनेक मकान ग्रा.प. पंचायत कालू के माग दशन द्वारा बन रहे हैं।

पुण्य संस्मरण—श्री ताजाराम के सुपुत्र पं० श्री गणेशाराम जी सारस्वत (जन्म वि.स. 1939, प्रथम श्रावण कृ० 4 मंगलवार, स्वर्गवास 2000 श्रावण कृ० 2 सोमवार प्रातः 5 बजे) कालू के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। उनका जीवन विद्वता प्रधान, आध्यात्मिक, कमठता उदारता, परोपकार और जन सेवा के लिए एक आदर्शमय जीवन था। यद्यपि वे कालू गाँव के रहने वाले थे परन्तु चूल्ह, बीकानेर ही नहीं, उनके गुणों की पहचान बम्बई, वलकत्ता में भी थी। उन्होंने वेद उपनिषद्, व्याकरण पुराण ज्योतिष और आयुर्वेद का गहरा अध्ययन अवैषण किया था। अपने युग में वे अपने विषय के अद्वितीय

विद्वान् थे। मेरी नियुक्ति अध्यापक पद पर हो जाने के तीन वर्ष के बाद ही व दम्पससार से चल बसे, किन्तु मेरे कार्य में उनकी सौजन्यता का फल मिल गया।

अध्यापक बन जाने के दो वर्ष पश्चात् (सन् 1942) ग्रीष्मावकाश के समय तीर्थस्नान के लिए मैं अपनी माताजी के साथ सप्ताह भर से हरिद्वार में ठहरा हुआ था। पंडितजी बसे तो वहाँ अनेक संस्थानों के साथ सम्बंधित थे, परन्तु जीवन के अंतिम दिनों में आप श्री बस्तीराम पाठशाला कनवल (हरिद्वार) के व्यवस्थापक मण्डल में अध्यक्ष रह रहे थे। तब मैं माता जी सहित पण्डितजी के चरणा में उपस्थित हुआ तो हमें देखकर वे गद् गद् हो गये। गाँव के कुशल-समाचार पूछे और अपनी अस्वस्थ स्थिति बतलाई। हमने पत्र पुष्प भेंट—बढ़ावा करना चाहा, उहाँ मुश्किल से स्वीकार किया। अस्तु हम तो उनसे आशीर्वाद लेकर वापिस घर लौट आए। उसी वर्ष विद्यालय खुलने के पश्चात् उनका देहावसान हुआ गया। इस दुःखद सवाद से उस रोज कालू का बाजार, दुकानें, विद्यालय पुस्तकालय बंद रहे।

“शब्द ब्रह्मणि निष्णात पर ब्रह्माधि गच्छति।” जहाँ महानुभाव शब्द ब्रह्म को जान लेता है उस पर ब्रह्म प्राप्त हो जाता है। श्री गणेशारामजी वस्तुतः एक विलक्षण योगीश्वर महापुरुष थे। जितना महान् थे, उतना ही सरल, जितने बड़े, उतने ही विनम्र। उनमें अपनी पंडिताई का कुछ माग भी नहीं था। धन का बहाव चलता रहा, किन्तु उसका लोभ उन्हें छू तक नहीं सका। उनकी वृत्ति विमुक्त ब्राह्मण वृत्ति थी। अथ उत्पादन ता गृहस्थ धर्म जान कर ही प्राप्ति व साधन अपनाते थे। अथ लाभ हो आता—उसका स्वागत करते, किन्तु ऐसे अथ लाभ के लिए कोई अनुचित या अनैतिक कार्य कर लेना उनके लिए सम्भव न था। वे गऊशाला और कबूतरों के चुंगे का सदैव ध्यान रखते थे। गणेशाराम जी का कई जगह करोड़पति कर्मों में प्रभाव था। कलकत्ता में सूरजमल नामगमल (जौलान बाजारिया) के यहाँ रवास होने हुए भी उनका आना जाना बिड़ली तक बना रहता था। खेमका पाहार, जौलान जागू जसी पाटियाँ उनका बिस्वाम करतीं। कलकत्ता से कालू आते तब वापिस जल्दी पहुँच जाने के लिए पंडित जी को वे रिटन टिकट कर्वा दिया करते। कलकत्ता के प्रवास में अपने निवास स्थान कालू लौटते तब वे पारिवारिक जिम्मेदारी का अनुभव लिए बड़ी तत्परता से उसका निर्वाह किया करते थे। बड़े परिवार में तुरन्त भाई-बहू मिलने आते। तब पंडितजी किसी को घाती कोट कपड़ा, घुस्मे-बघम्बर तथा अन्य जंगी वस्तुएँ वितरित किया करते थे। वे सबका सौगात प्रसाद दत्त। किसी धमाय खाने में आय द्रव्य का वे अलग रखकर तत्काल दुःख स्थिति वाले समाज में अन्न की बोरिया वितरण करवा दिया करते। विवाह अवसरों के समय गाँव या समाज वाले कतिपय लोग आवश्यकतानुसार प्रायः इनसे रुपये लिया करते, पर वापिस लौटते समय पंडित जी ने कभी किसी पर ग्याज के लिए दवाव नहीं डाला। गारबदेशर के रास्ते (तीर्थ केलियों के स्थान) पर उनकी आर से सदैव अष्टमासी प्याऊ लगवाई जाती थी। यद्यपि वे अधिकतर बाहर रहते, किन्तु अपने गाँव के प्रति उनका अगाध प्रेम था। कोई भी व्यक्ति किसी प्रकार का कार्य लेकर इनके पास पहुँच जाता तो वे आधी रात को भी उसके साथ हा जाया करते और साधारण व्यक्ति के कहने पर ही उसके घर के कमकाण्डी पंडित तथा वैद्य बन जाया करते थे। ग्रामीण जनों के नामकरण संस्कार से लेकर राग्य सरकार के कामा तक में माय देने रहते। वे सबकुछ निष्काम सेवा भावी नागरिक पंडित थे।

उस समय गांव में बड़ा डॉक्टर व औषधियों की भारी बिक्री थी और निमोनिया, टाइफाइड, तेजरा, चोंचिया जैसे भयंकर रोग सामान्य लोग को हर समय दबाये रखते थे। हरिजनो को छूना भारी पाप गिना जाता था। परंतु समय का कोई अछूत व्यक्ति अपने जन की बीमारी को वरुण कहानी लेकर पड़ित जी के समक्ष उपस्थित हो गया तो पड़ित गणेशाराम जी अहिचक अटपट उसके घर रोगी को देखने चले जाया करते थे और वे उन रोगियों को निःशुल्क दवा भी दिया करते थे।

पड़ित जी के घर आँगन में दो गसोईघर बने हुये थे। उनका और घर वालों का नित्य पृथक्-पृथक् भवना में भोजन बनता था। भोजन वे अपने हाथ से बनाते अथवा श्री राम, भोमाराम तथा दुर्गान्ति आदि जिन्नासु छात्र बना दिया करते थे। किंतु पड़ित जी के औरता का बनाया और बनाई में पकाया हुआ भोजन कदापि नहीं चलता। उस समय जल उत्पादन भारी मुश्किल, पर वे अपने विद्यार्थी जीवन से ही दोर जल पिमा करते थे, घाम जल नहीं। क्लृप्तता आदि की यात्रा के समय रेल में अपने हाथ से भरे बादले का जल ही व्यवहार में साने और सूखे चने (मुण्डे) चबाकर पाच पाच, मात सात दिन की यात्रा कर लिया करते थे। न ता वे दूसरे कपास का बनाया खाना खाने और न ही तल का पानी पीते। वे एक सद्भावितक सत्त थे मगर साथ में पूरे यथापवादी भी। दवा और सेवा उनका मुख्य धर्म था वे अधिकतर परोपकार के लिए ही सग्रह करते थे।

सामाजिक कार्य एवं बापिक त्योहारों पर पड़ित जी का नाम-नामून था। गठन सारे आदिमर मुखिय, सठ-साहकार उनके घर आया करते थे। पड़ित जी भी बिरादरी वाले लोगों के साथ उत्सवादि में सह्य सम्मिलित होते। अपने घर के मुखवमर पर तो बास एवं समाज के सारे लोग बड़े अपनत्व के साथ सम्मिलित किए जाते। इस तरह के अवसर पर पड़ित जी के घर मारे साग, बड़े बड़े मिष्ठानों द्वारा तृप्त किए जाने थे। उनके घर मुधारवाणी दण के विवाहादिक बाय सम्पन्न होते। न नृत्य गान गाने और न ही कभा गालिया गा जाती।

पड़ित जी लम्बे तल्ले व्यक्ति, शिथिल गौरा चेहरा, बड़ा तेज से प्रदीप्त आँखें एक मायावीश की प्रतिमा लिए दष्टिगीचर होते थे। किसी भी अपरिचित जगह जाकर ठहरते उनकी विद्वता का अपन आप आदर हो जाया करता था। नाम की प्राय नित्य ही उनके पाम पुराण, महाभारत, रामायण और योग वाशिष्ठ आदि की कथाएँ चल जाया करती थी। वे मारे गाव और समाज में ममादत थे। सारस्वत कूडिया ममाज में उनका स्थान बेजोड था। वे किसी को डराते धमकाते नहीं हान्ति भावनावागान ही लाग उनका आदर करते थे। कोई भी सावजनित या क्षेत्रीय बाय होता उसमें पड़ितजी का रहना प्राय अनिवार्य समझा जाता था। आज भी उनके परिवार में कितने ही मनुष्य प्रात कान उठकर गणेशाराम जी का नाम पते हैं जिससे कि उनका बड़ा दिन सुख में कट जाय।

प० श्री गणेशाराम जी के सहयोग से वि०म० 1988 माघ सुत्या में अविल कुण्डिया सारस्वत समाज न गाव कानू में पचायती का एक बड़ा आयोजन रखा। जिसमें हजारों आदमी चार दिन तक कालू में रहे। घर वाला न पंद्रह दिन पहले ही खाद्यान्न, सामान, बतन, स्थानादि अपने हाथ बस करन आरम्भ कर दिये थे। क्योंकि सम्मेलन के सारे व्यय का भार पड़ित जी ने वहन करने का कह रखा था। परंतु क्लृप्तता से कालू आने में पड़ित जी को एक दिन अधिक लग गया, जबकि समाज के लोग ठीक समय पर कालू पहुँच

गये थे। पारिवारिक लोग न पंडित जी के नाम से भोजनादि की सारी व्यवस्था करदी थी। इसलिए वे कालू पहुँचे तब उन कुटुम्बियों को बहुत बहुत घायवाद दिया, जिन्होंने उनका कालू को सम्हाल लिया था। उन्होंने तो बाहर से आये हुए पर्वों वर्गगृह से भी माफी माँगी थी कि—“मैं एक दिन सेट हो गया हूँ।” इस प्रकार परोपकारी, प्रभु भक्त एवं धर्मानुरागी प० श्री गणेशाराम जी का जीवन अपने भरे पूर परिवार के साथ आदशमय था, परन्तु भगवान् इनकी परीक्षा लेने के कठिन अवसर निरंतर प्रस्तुत करने लगा। सुपुत्र बद्रीनारायण दीर्घायु न होने के कारण स्वल्प आयु में ही चल बसा। इस आकस्मिक दुःख को पंडित जी ने बड़े धैर्य के साथ सहा था। प० जी के छोटे भाई श्री देदाराम भी वि०स० 1975 में चले गये। स० 1989 में उनकी माता जी का देहावसान हुआ, तब उनके पीछे पंडित जी ने बड़ा मेला (भोज सम्मेलन) किया। किंतु बारहवें दिन मेले का काय सलटना ही चाहता था कि उनकी घमपत्नी परलोक वास कर गई। फिर वही मेला करना पड़ा। इस शाकावसर पर भाई हुई एक सबधिन भी उनके घर से परलोक वासिनी बन गई। परन्तु पंडित जी ध्वराम नहीं और सामाजिक एवं धार्मिक प्रयानुसार सब के पीछे ब्रह्म भोज विमेल। वि०स० 1992 चैत सुदी 3 का भाई देदाराम का जबान लडका देदाराम भगवान् को ध्याग हुआ। पंडित जी का दूसरा लडका रामचन्द्र (सोसह वध) जिसका गत साल लाडनू विवाह किया था, बीमार पड़ गया। उसके लिए बच श्री भक्त दत्त जी आसोपा को बुलाया। लेकिन रामचन्द्र नहीं बचा। वह रिडमाल से चार दिन बाद चैत सुदी 8 के दिन चल बसा। फिर उसी चैत सुदी 9 को मसले भ्राता श्री गोधूराय का स्वर्गवास हो गया। परन्तु पंडित जी इन सार दुःखों को मन हा मन सहते गये। भादवा सुदी 15 (स० 1994) को इनके दामाद मानाराम जी स्वर्गवासी हो गये। पंडित जी अत्यधिक दुःखी हो उठे और उनका मन एक बार फिर सत्सार से कुछ सीमा तक विरक्त हो गया। किंतु सत्सार दुःखों का सागर है एवं सुख दुःख ईश्वर प्रदत्त हैं, यह समझकर पंडित जी सारे दुःखों की एक महर्षि की भाँति सहत हुए अपने जीवन की तीर्थों की तरफ ले जाने के लिए तयार हो गये। पर एक पुत्र सोहन दूसरी पुत्री जेठी, द्वय की अधिवाहित छोड़कर तीर्थों में जा बैठना व्यवहारिक यत्नि नहीं समझा। स० 1996 माह सुदी 5 को पुत्री का विवाह किया और उसी पुराने सम्बन्धियों के बड़ा लाडनू में सोहनलाल को विवाहित करके बहरिद्वार चले गये। उहाँ वहाँ पर अपन दारीर का त्याग किया।

काया अनित्य जाती है परन्तु पुण्यात्माओं की कीर्ति अमर होती है। पंडित गणेशाराम जी के आदश जीवन की कहानी, उनके गाव काल के निवासों चिरकाल तक स्मरण करेंगे, जो उह प्रेरणा देने वाली है—

हे देवरूप, उदात्त पुरुष, सुम पिघल रहे पर दृष्ट देख।

हे घम घनी हे त्यागमूर्ति कालू में खीची पुण्य रेख ॥

धार्मिक चरितत्व—गाव कालू के आस पास वाले क्षेत्र तथा बीकानेर नापास्य बृगरगढ सरदारसहर, सूरतगढ के पुराने माहेश्वरी कर्मों में ऐसा कौन होगा जो श्रीकृष्ण रामजी ध्वर के नाम को न सुन सका हो? वे कालू निवासी थे। उनके पिता का नाम श्री राममुखदास जी था और दादा का नाम गुमानोरामजी ध्वर। गांव चाँदसर के राठी परिवार में ननिहाल थी, वही हैं आप कालू आये थे। श्री गणेशमल देवचन्द राठी आपके मामे के बेटे भाई थे। आपका विवाह गाव धनरू (चूरू) में हुआ था। आप मुख्य रूप से आचमर गाव के बनाये गते हैं।

फूसारामजी (ज म वि० स० 1916 तथा देहावमान वि० स० 1976) गांव कालू म रामस्नेहियों की जगेरी मे पढे लिखे हुए थे । आगे जाकर उ ही धार्मिक विचारो मे मनशाली बने । उनके गुरु रामस्नेही सत न बंगाल जाकर व्यापार करने के लिए मुहूत और माग व्यय बाबत बीस रुपये भी उनके नाम लिख कर दिये थे । उसी मुहूत मे खरवाना होकर फूसाराजी भटिण्डा की रेन से बंगाल के लिए विदा हा गये । वहाँ जाकर व्यावसायिक क्षेत्र मे थथेष्ट सफलता प्राप्त की । उनकी फर्म का नाम फूसाराम राम-नारायण था । फूसारामजी ने वहा अपने व्यापार को अच्छा फंसाया और काफी कीर्ति अर्जित की । इनका बडा बासा (कार्यालय) कमरजानी (रगपुर) था । कमरपाडा, श्रीभागज, गाईबादा, लखीपुर और फूलचडी आदि स्थान, इनके सभ्या म इक्कीस (21) मुकाम थे । कसमसा 46 स्ट्राड रोड म गद्दी थी । पाट और कपडे का कारोबार था, परन्तु साथ म जोत जमीन व जागीरदारी भी थी जो झवर ईस्टेट के नाम से प्रसिद्ध हुई । फूसारामजी जिस मुकाम मे जाते, वहाँ एक हाई स्कूल और एक कूबा बनवाकर व्यापार शुरू किया करते थे । उनके उक्त स्थाना म थी डूंगरगढ, बीदासर, दडीबा और टमकार आदि गावों के अनेक कायकता रहते थ । आप कालू के लोगो का भी अपने मुकामा म रखते थे । गणेश लालजी राठी मुनीम थे । नीमाराम मारस्वत चौधाराम पारीक आदि कमरजानी मे बरिष्ठ कर्मचारी थे । हरखचंदजी कर्वा एव तोलाच द करनाणी भी आपके कारोबार में अच्छे कायकर्त्ता थे । फूसारामजी ने उधा उधा अपनी आर्थिक उन्नति की, त्यों त्या दान देने का कार्यक्रम भी बनाए रखा । रगपुर म पहले-पहल कार माईकल कॉलेज स्थापित हुआ । अंग्रेजी सरकार के समय फूसारामजी से 10000/ (दस हजार रुपये) लेकर उनको स्कूल कमेटी का पहला आजीवन सदस्य बनाया था । कार माईकल (अंग्रेज) वहा का कलेक्टर (जिलाधीन) था जो कालेज बनने के बाद कमिश्नर बनकर गया ।

वि० स० 1962 म फूसारामजी ने अपने गांव कालू और लूनकरनसर के विकट रास्ते मे प्याऊ की नीय लगाकर जमल म मगन कर दिया । कालू वासी गार्बदेगर, आडमर राबासर कूबियो चादसर, छटासर वागासर कवळासर, अडसीसर पनपा-ल्लियो, सोमासर लादडियो उदरासर, लोटेरा बीबासर धीरामर आदि अनक गावो के लोग इस रास्त से घान (अन्न) की छाटी साने के लिए लूनकरनसर आत जाते रहते और पानी की लोटडियाँ साथ रखते । फूसारामजी ने बडा कुड बनवाकर पानी का अभाव निवारण कर दिया । उनकी अ न की मरी बोरिया घषा के दिना म भीग जाती इसलिय प्याऊ के साथ टीन का बडा ढालिया (छाटी उतारने के लिए) बनवा दिया । अनेक गावा का आवागमन होने के कारण पहले प्यास के मारे इस रास्ते मे यात्रियो की बुरी हालत रहती थी । एक लखारा का लडका रास्ते चलता प्यास मर गया । उसके माता पिता वही जाकर जलने को तैयार हो गय । लोगों ने उनको ममसाकर जसन नहीं दिया । फिर भी एक बार गांव महाजन से आती हुई श्री गणेशमल पुत्र शिवलाल राठी की बहु को सद्दुराम खडेलवाल अपने ऊट पर कालू लिवाये ला रहा था । प्याऊ के पास बुडाणी पर चोरोँ न उह लूट लिया और सद्दुराम का ऊट भी लेते गये । अत तत्कालीन स्थिति मे प्याऊ यात्रियो के लिए बडा सुरक्षा स्थान बन गया । स० 1964 मे प्याऊ और भवन बनकर पूरे हुए, तब सेठ यवर ने वहाँ एक बडे ब्रह्मभोज का समायोजन किया । चारो तरफ के गावो से आये हुए ब्राह्मणो को भोजनोपरान एक एक

रपया दक्षिणा दी ।

प्राचीन समय से कालू के मध्य राज्य का एक बड़ा गढ़ (दुर्ग) था । उसमें बाहर के कमचारी गण रहा करते । उनमें हर समय गांव के लोग आतंकिन रहते थे । फूसारामजी ने वि० स० 1968 में गढ़ की जमीन खरीदकर वहाँ पर एक बड़ी घमणाला की नींव लगवाई जो स० 1972 में बनकर तैयार हो गई । उस समय गांव के सभी ब्राह्मणों को भोजन करवाकर दक्षिणा दी गई । घमणाला के साथ श्री सरयनारायण भगवान शीतला माता शिवजी हनुमानजी के मंदिर भी बनवाय गया । बीच बाजार जमीन लेकर घमणाला बनवाने के लिए फूसारामजी को महाराजा गंगामिहजी तक जाना पड़ा था ।

महाराजा के सामने उन्हीं गांव कालू का तात्काब पक्का बनवाने की सहायता पथ दस हजार (10000) की हुई देकर उचित काय की सरल एवं सम्मानित बनवाया । घमणाला और प्याऊ के लिए पट्टे से काफी जमीन प्रदान की गई और फूसारामजी को कायदे से सनद बकसी गई थी । धार्मिक कामों में अधिक ध्यान देने से तथा व्यापार औरों के भरासे छोड़ने का फल आगे जाकर दुबलावस्था रहा । स० 1976 में उदारमना श्री फूसाराम शंकर का देहावसान हो गया, सारे गांव में शोक छा गया । पर वद्रीनाथ धाम में अभी इनका एक भवन बनना है ।

फूसारामजी ने अपने घर का कच्चा रखकर गांव में अनेक सावजनिक मस्थानें बनाई हैं । ये गट्टाळा अगरखी पगडी मोटी धानी और ग्रेनी जूते पहनते थे । बोली पक्की (हिंदी) बोलने जिससे दनका व्यक्तित्व पूरा मिलना रखा था । ये विद्वानों एवं पंडितों का आदर सम्मान करने में कभी पीछे नहीं रहते ।

फूसारामजी के तीन पुत्र स्वामी रामनारायण, बालचंद और तुलसीराम हुए । तीनों भाई उद्योगी व्यवसायी और बड़े धर्मात्मा थे । उन्होंने अपने जीवन में खूब सफलता प्राप्त की थी रामनारायण और तुलसीराम के एक एक पुत्र तथा बालचंद के पांच पुत्र हुए । वर्तमान समय में भी शंकर परिवार के व्यक्ति बड़े दानी और उदार हैं । उक्त परिवार की बनाई हुई गांव तथा बाहर में अनेकों मस्थानें हैं । उन मस्थानों का मुखमंडल शंकरों का पर्यवेक्षण है । फूसाराम के घराने में श्री बालचंद के बड़े पुत्र स्व० श्री गिरधारीलाल हुए । ये अपने छोटे से जीवन में बड़े बड़े मस्थानिक नागोपयोगों काय करने में अग्रणी रूप से समय रहे । गिरधारीलाल अपने दादा श्री फूसाराम की तरह मिष्टभाषी मनोहर तन मिलनसार स्पष्ट धनता तथा दूसरों के दुःख में पड़ने वाले भद्र पुरुष थे । ये अभिनयकर्ता, सतरज के खिलाड़ी, मजाकिय स्वभाव, बड़े बकील की तरह वाक्पटु तथा मस्तिष्कवान सज्जन थे । सावजनिक कामों में बड़ी दक्षि एवं लग्न रखते । इसलिए गिरधारीलाल की गांव में सब खेष्ट लोकप्रियता रही है । इन्होंने गांव कार्यों के लिए अपने घर से वेतन द देकर लोगों में वषों तक सावजनिक काम करवाये हैं । एक बार कालू और आहसन की जनता ने गिरधारीलाल की सरपंच का चुनाव भारी बहुमत से जीताया था । आज भी इस धार्मिक पंथ (फूसाराम रामनारायण) का कालू में महत्वपूर्ण स्थान है । जब कभी किसी प्रकार का चला चिटठा होता है तो पहले इसी घराने से गुरुवान की जाती है । गिरधारीलाल का मसला लड़का स्व० श्रीराम भी कालू का एक अनोखा व्यक्तित्व था, दीपक की भांति बुल गया । लेकिन उपभोग के ओजस्वी कार्यों में बार बार उसका नाम आना है ।

इस नवर कमिटी के लोग गांव के सावजनिक कार्या में अब भी सतत प्रयत्नशील है। सवा सौ वर्षों से भी ज्यादा पुरातन सेवाभावी होने के कारण इस धराने का कालू के निकटीय क्षेत्र में पूरा सम्मान है। वर्तमान समय में श्री मोहनलाल शवर, उक्त धराने का एक सावजनिक एवं उज्ज्वल व्यक्तित्व है।

ब्रह्मा विष्णु साध साध चले है कत्तास माध ।

कहे हर उमा गाथ, बोले जुग आइये ॥ 1 ॥

तब दोनो देव कहे कालू नाम सुन रहे ।

नाथ हम हाथ गहे, गाव वो दिखाइये ॥ 2 ॥

रेगिस्तान रन राजे, इ द्र वन सुख छाजे ।

नर गुण, सुर साजे, निवासी मिलाइये ॥ 3 ॥

धमशाला लियो बास, फूसाराम भगत नाथ ।

हाल्ट हेत हरि भास, मंदिर बनाइये ॥ 4 ॥ (कळायण ह० लि० पत्रिका)

सुख पूर्ण देवी भवर—श्रीमती सुखी देवी का जन्म वि० स० 1967 कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्दशी को जयमलसर (बीकानेर) निवासी श्री लक्ष्मीनारायण जी राठी के घर हुआ। धार्मिक परिवार के सुसंस्कारी



सुखीदेवी भवर

कारण लिए, बाल्यकाल से ही आपके विचार ध्यान, धर्म पुण्य के प्रति विशेष सजग बन गये। व्रत उपवास, पूजा पाठ एवं हरिस्मरण हेतु हर समय आस्थावान रहने सती आपका जीवन वास्तव में श्रीराम भगवान की ओर अधिक उन्मुख एवं गतिवान बन गया। आपका विवाह (स० 1978 वशाख सुदी 3 को) इम्पारह वष की लघुवय में गांव कालू के प्रमुख सेठ श्री फूसारामजी शवर व तृतीय आत्मज श्री तुलसीरामजी के साथ क्षेत्रीयोत्साह सहित सम्पन्न हुआ। साठे चार वष बाद स० 1982 माह बदी 5 के दिन आपके एक पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ, जो आगे चलकर श्री मोहन लाल नाम से वनराजा की तरह सहसा में मन राजा बना है। वह स्वयं

धर्म साधना में सफल व्यवसायी, कुशल उद्योगपति विशद विचारक एवं उदात्त समाज-सेवी पुरुष है। उसकी गौ सेवा तथा मातृ सेवा भावना अति प्रबल एवं अनुकरणीय है।

सचमुच शवर परिवार में श्रीमती सुखी देवीजी ने निश्चित सौभाग्य के मूल्य पर उदारता अर्जित की है। आपको सुख पूर्ण देवी कहा जाता है कि कोई अत्युक्ति नहीं है। आप शांति व प्रकृति की कामलता का उज्ज्वल उदाहरण, त्याग तथा सेवा की

प्रति मूर्ति, पवित्रता की प्रतिमा और आदर स्नेह एवं वात्सल्य प्रेम की जीवन प्रतीक हैं। स० 2032 के चतुर्गुण पक्षीय 1 को आपके पति श्री तुलसीरामजी का गरीब शांत हुआ, तब से आप भोजन एवं मातापीन अधिक रहने लगी हैं। जहां कहीं कोई धार्मिक आयोजन सामाजिक प्रश्न शैक्षिक संग्रह अथवा मत्पाहित्य सज्जन आपकी नजर चढ़ जाना है तो अपने मौलिक मत्त से दत्त चित्त हावर अवश्य उसमें अधिक भाग लेती हैं।

ममदर से गभीरता, पावण गया नीर।

बरसा ज्या सुख बरसणी, मेर जिंसा मन धीर॥

सज्जन परिवार—सेठ बन्नीदास के पुत्र रघुनाथ दास जी (वि० स० 1925 81) सरल-स्वभाव के सज्जन, मिलनसार तथा धर्मात्मा व्यक्तियों में अग्रणीय थे। सामाजिक कार्यों में मान लेने की बड़ी इच्छा रखते और पवित्र चतुर्गु भी बहुत थे। अपने पिता के चतुर्थ पुत्र (सबसे छोटे) होने के कारण सेवा और आदर सम्मान के महत्व का ग्वानुभव से समझते थे। गांव में सभी सांख्यिक कार्यों में आपका पूर्ण सहयोग रहता। अभिमान से आपको छू तक नहीं गया क्योंकि आपकी नीति परम्परा "नागौर गठी" अभिन मानी गई है।

श्री रघुनाथ दास का प्रथम यश नाम यद्यपि बीकानेर में सम्बद्ध है तथापि कानू में पहले वि० स० 1800 में इस परिवार का पूर्वज लीपचर गठी गुसाईनर (तजगसर के पास) में निवासित था। लीपचर का पुत्र अमरचंद और पौत्र श्रीविश्वराम हुआ। श्री विश्वराम का विवाह मंडवा गांव के महा गांव सिंगा में हुआ था। उसका लड़का देव चंद गांव जाटसर बाहेतिथी के व्याहृत गया। यह कालू का प्रथम महाजन बगर क्षेत्र के बमोरी स्थान पर कई आदि का व्यापार करता था। इसके आत्मज श्री बन्नीदास की पञ्चाक्षर में कारवारिष साल थी। बन्नीदास प्रख्यात, शांत तथा विनयशील हुए। गठी परिवार की कीर्ति-वृद्धि में आपकी धर्मपत्नी ने भी पूरा हाथ बढ़ाया था। उनसे गोदारोंके पास जाने भगवानजी के मन्दिर पूजाकारी साल दाडी के ध्यम पर पचापत वाले मन्दिर को बनवाकर गांव कालू की तत्कालीन जनता को परमेश्वर के मग्न लाभ मुलम करवाये थे। आपकी कोख में चार पुत्र—गंगाजल शिवनाथ, राजाराम रघुनाथ दास हुये। बन्नीदास की एक बहिन सजाबाई बगला फाजिल्का में पेडीवान परिवार में ग्वाही हुई थी। सजाबाई स्वभाव से सौम्य, हृदय से ईश्वर भक्त और व्यवहार से स्नेह भयी थी। वह जब कभी भी अपने पीढ़र के गांव कालू में आती, उसका रिफाई रहता, ब्रह्मपुरी (ब्रह्मभोज) किए बिना वापिस समुराल नहीं लौटती। वह अपने भाई बन्नीदास के पांच बच के पाते गोवन्दन दास गठी को पढ़ाने हेतु अपने साथ ले गई। आगे जाकर गोवन्दन दास महा (बगला फाजिल्का) का मानद मजिस्ट्रेट (Honorary Magistrate) नियुक्त हुआ। गोवन्दन दास का गांव कानू वाला घर भानजे मोहन साल बागड़ी को दिया गया है। क्योंकि उसके कोई सन्तान नहीं थी। स० 1968 में उनकी मृत्यु हो गयी। गोवन्दन दास सदासुख और गणेश साल य तीनों भाई शिवनाथ के बेटे थे। शिवनाथ के बड़े भाई का नाम गंगाजल था और छोटे भाई क्रम से राजाराम और रघुनाथ दास थे। राजाराम के मान एक पुत्र मूलचंद हुआ। रघुनाथ दास के मोती चंद साल चंद दो। लक्ष्मि निःसन्तान रहने के बाद श्री सदासुख के दुसरे चंद काशीराम और मूलचंद

के कालूराम नाम का एक पुत्र है। इनके साक्षों का व्यापार पहले गाईबादा सादुलापुर नलडागा, रगपुर आदि मुकामों में रघुनाथ दास सदासुख के नाम से चलता था। रघुनाथ दास राठी का व्यावसायिक सीर (साप्ता) ताराच द आसाराम श्वर (श्री डूंगर गढ़ वाला) के साथ दीनहट्टा और सादुलापुर में था।

श्री रघुनाथ दास बड़े उदारमना व्यक्ति थे। स० 1968 में रघुनाथ दास ने अपनी दो पुत्रियों के विवाह गांव गारबदसर के बागडी एव बाहेती गोडना में बड़ी धूम-धाम से किए। तत्कालीन आस पास के बहुत से सम्मानीय ठाकुर उमराव बरात में आए। राव बहादुर महाजन राजा भी इस विवाह में नीके में सम्मिलित हुए थे। तीसरा लडकी की शादी श्री डूंगर गढ़, चादसर वाले श्वरों के यहाँ की। सात दिन तक बरात रही और उनके द्वारा गांव कालू में बड़ी जीमनवार के बाद नागजों के पूजा की बाग बाढियाँ खुटाई गईं। रघुनाथ दास ने 56 वर्ष की अवस्था में अपने पुत्र द्वय मोतीचंद (जन्म 1952) लाल चंद (जन्म 1959) को पीछे छाड़कर आकस्मिक अवस्था में शरीर छोड़ दिया। आगे जाकर इनके पुत्र श्री लाल चंद पिता जैसे ही सेवाभावी निकले। उन अपने पिता के पीछे मार गांव को शहर सांस्थी (महाभोज) करके धार्मिक वृत्ति का बनाये गला। धार्मिक दृष्टि से निश्चित न होने के कारण उ होने नौकरी नहीं की। उनका जीवन, व्यापार के सिवाय समाज सेवा एवं धार्मिक कार्यों में ही लगा रहा। मोतीचंद और उनके कनिष्ठ सहोदर लालचंद का परस्पर बड़ा मेल रहा। इनने अपने विशिष्ट गुणों के कारण यथेष्ट धन लाभ कर स्वर्गीय पुरस्कारों का गौरव बढ़ाया है। इनके पारिवारिक भाग्य में कराडपति बन जान के योग तो नहीं आये पर फिर भी लगभग एक शताब्दी तक कालू गांव की बहुविध धार्मिक तथा सामाजिक गति विधियों पर इस परिवार का नाम छाया रहा है।

ईश्वर कृपाय धन सम्पत्ति मिल जाया करती है बहुत से लोग को, किन्तु उसने साथ ज्ञान, सुमति, सदाचरण सत विचार आध्यात्मिक भावना एवं परमाथ वृत्ति जैसे आदर्श गुणों का उत्तम जनो का ही मिलने है। स्वनाम धर्म श्री लालचंद एक और जहाँ उच्च विचारों के धनी बने, वहाँ धर्मवीर और अध्यात्मवादी भी। परमाथ इनके जीवन में पूर्ण रूप से समाया हुआ है। इसलिए मोतीचंद लालचंद काम का ध्यान अहर्निश सेवा हितार्थ कार्यों में लगा रहता है। मउआ का घास डलवाना पक्षियों को बुगगा चुगाना तथा असहाय जन की सहायता आदि कार्य तो इनकी दिन चर्या के प्रमुख प्रतीक हैं। इन धार्मिक कृत्यों के साथ साथ आप व्रत अनुष्ठान तथा यथादि कार्यों में भी पूर्ण दिलचस्पी लेते रहते हैं। दोनों भाइयों ने छुट पुट रूप से अनेक सोकोपयोगी कार्य सम्पन्न करवा कर अपनी राठी परिवार की परंपरित कीर्ति को उज्ज्वल बनाया है।

श्री मोतीचंद के एक पुत्र स्व० लक्ष्मीनारायण था। दीर्घायु न होने के कारण वह अपने माता पिता और समस्त परिवार पर दुःख का पहाड़ गिराकर स० 1990 में इस संसार से चल बसा। इस दुःख ने मोतीचंद का धर्म ध्यान मन एवं अधिक ईश्वरों मुक्त बना दिया। पुत्र वियोग का असह्य जानकर उ होने अपने अनुज लालचंद के पुत्र नंदलाल को गोद ले लिया। आस्था तथा सेवा भावी परिवार के नाते श्री मोतीचंद ने नंदलाल को कलकत्ता विश्व विद्यालय से सन् 1961 में B Com करवाकर कुल परम्परा एवं उच्च प्रतिष्ठा के अनुकूल बड़े गौरव उत्साह से उसका विवाह किया। श्री मोतीचंद अपना कारोबार अपने और अपने भाई के सुयोग्य एवं व्यवहार विद बेटों—जेठमल, नंद

साल पर छोड़कर स्वयं सिघार गये। उनसे सात वष छोटे लघु भ्राता लालचन्द हैं। श्री लालचन्द बड़े श्रद्धालु ईश्वर भक्त हैं। अहमिदाद धार्मिक ग्रंथ अनुशीलन एवं श्री विष्णु चर्चा करते रहना ही आपकी दिनचर्या है। लम्बे प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लेने एवं उपकार भावना के वातावरण में लालन पालन होने के कारण सेवा भक्ति आपका पतृक परम्परा में मिली है। आपकी शिक्षा मोहिया अक्षर ज्ञान वाणिक्यादि घर पर और हिन्दी अंग्रेजी स० 1973-74 में लेखा पद्धति लीलावती के प्रकाश विद्वान प० गुरुदत्तजी के चरणों में बैठकर हुई। सन 1947 में भारत की स्वाधीनता मिलने का सौभाग्य जिससे आया, तब बंगाल स्थल पर जबरदस्त आघात हुआ। पूर्वी पाकिस्तान का नाम से पूर्वी बंगाल का सम्पूर्ण हिस्सा बंग भूमि से छीन लिया गया। उस समय राठी परिवार के साथ बालू के बहुत से माहेश्वरी प्रवासियों को स्वाधीनता का बदला अभिगाप बनकर मिला। सारे लोग लुट गये। तब श्री लालचन्द द्वारा स० 2004 स 132 फॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता में अपनी गद्दी निश्चित स्थित है। पर आप अब घर रहकर गीता तथा विष्णु सहस्रनाम के पाठ कर रहे और अपन पास पहुँच जान वाला को सब तरह से सहारा देते हैं। कलकत्ता ही चाहे बालू गांव के जन सामान्य सार्वजनिक कार्यों में सदैव आपस सहायता लेकर समरूप सुनपवाने हैं। आप उनकी समस्या सुलझाने में कोई कसर नहीं छोड़ रखते। सन् 2009 में गाँव नायूसर के बारहठ कूँ की समस्या को लेकर पहुँचे। आपन उनको अपना पूरा सहायग दिया।

जाहूडी पर कूँ बना, पानी माठा मिला और स० 2011 में उसके पास नायूसर वाम बस गया। कूँ की पूणता हेतु राजकीय रकम व्यवस्था श्री जेठमल द्वारा हुई थी। सन् 2009 में श्री लालचन्द जी यहाँ के बहुत से बद्ध-बद्धाओं के मन को लेकर बन्नीधाम के दशनाथ गये। तीर्थ यात्रा में इनकी आत्मिक स्फूर्ति सदैव विशिष्ट कोटि की रही और शक्ति सदा भावना के साथ अपन सुखानंद का विलकुल विस्मरण करके अनेक साधारण जन का ये सफल धर्म लाभ करवा लाय। प्रभु विश्वास और कृत्य परायणता के लिए इस क्षेत्र में आपका उज्ज्वल नाम है।

श्री लालचन्दजी के एक भानजे श्री शंकरलाल बाहेनी इनके प्रधान सलाहकार सौम्य एवं गम्भीर विचारक हैं। ये व्यावसायिक कृतिशक्ति कलकत्ता जमे नगर में धार्मिक तथा मेवाभावी कार्यों में निरन्तर भाग लेते रहते हैं।

पाकिस्तान छूट जान के पश्चात् राठी परिवार का कारोबार प्रायः परिवार क्षेत्र में कायले का रहा है। वर्तमान में ये बरीनी (बिहार) के स्थान में एलोपैथिक, सूचि-वेध (इजेक्शन) के लिए ग्लुकोज की बोतलें बनाने का कारखाना चलाते हैं। उक्त कारखाना में दैनिक तीन हजार के करीब बोतलें बनती हैं तथा माघ में अर्ध औपचर्य का उत्पन्न भी होता है। गोहाटी, भटिण्डा और जयपुर में भी इसदवाका काम है। लालचन्द के द्वय पुत्र जेठमल नदलाल व्यावहारिक कार्यकर्ता हैं। गाँव बालू के पचासों व्यक्ति इनके उद्योग संस्थान में काम करते हैं।

यद्यपि इस परिवार का मूल रूप से सज्जन पुरुष दापचन्द था, परन्तु यह घराना श्री बन्नीदास राठी के सुपुत्रों (गंगाजल, त्रिलाल, राजाराम और रघुनाथ दास) के समय में अधिक प्रख्यात हुआ है। श्री दीपचन्द (स० 1805) से लेकर अब तक इस

1 सूद, जिसकी सहायता से मनुष्य के बरीर में दवा का प्रवेश करवाया जाता है। (अन गणन)

परिवार की नवम पीढ़ी (पुत्र) है और यह गांव कालू तथा उसके पास वाले गांवों में "सात पीढ़ियां सज्जन घराना" कहलाता है।

नाहटा कोठारी—गांव का नाहटा परिवार गांव राजपुरे (खारहे के पास) से आया हुआ है। नैसरीचंद, आसकरन, तिलोचंद, दूगर्सीदास, घमडीराम जेतमल और गुलाबचंद प्रभृति सात भाइयों की सत्ताना के कुटुंब वि० सं० 1944 में कालू आकर निवासित हुए थे। इससे पहले सब भ्रातृगण मनुवत परिवार में सम्मिलित थे। किंतु कालू आकर देने तक पयन पयक ढंग से प्रतिष्ठित एवं प्रवेशित हुए। अब इस परिवार में अनेक व्यक्ति और घर हैं, जो अपने पूज्य श्री मवाईसह नाहटा के वंश कहलाते हैं।

इस वंश के चचे भाई श्री नैसरीचंद के यहाँ पतेचंद और चतुभुज नाम के दो लड़के थे। चतुभुज के चादमल और नालचंद दो पुत्र हुए तथा पतेचंद के चुनीलाल और लिलमीचंद। आगे चलकर चुनीलाल के एक लूनकरन और लिलमीचंद के आठ पुत्र हुए हैं। लिलमीचंद के द्वितीय पुत्र स्व० श्री चम्पालाल, चतुभुज के आत्मज लालचंद के गोद चले गये। अब श्री लालचंद के दसवें पुत्र चम्पालाल का परिवार और लिलमीचंद का परिवार दोनों आपस में बड़े प्रेम से रहते हैं तथा राजमल इनमें जेष्ठ काम-वर्त्ता व सज्जन व्यक्ति हैं।

द्वितीय भ्राता श्री आसकरण के रामलाल, मधूराम और बीरराज नाम के तीन पुत्र थे। श्री रामलाल नि सत्तान गये और मधूराम के मंगलचंद एवं प्रतापमल दो पुत्र थे। मधूराम के पौत्र मनोचंद का परिवार सबूद्धि है परंतु प्रतापमल का वंश नहीं है। आसकरण के तीसरे पुत्र श्री बीरराज के सुगनचंद, बनेचंद और पदमचंद नाम के तीन पुत्र हुए। श्री सुगनचंद के लामूराम रूपचंद, भीखमचंद, मानिकचंद नाम के चार पुत्र थे। अब के चारा ही इन सत्तार में नहीं रहे। मगर उनके उज्ज्वल व्यवहार और उदात्त भावनाओं के कारण ग्राम में उनके नाम ब्रत प्रसिद्ध हैं। श्री बनेचंद का बड़ा लड़का बुधमल भी बड़ा व्यवसायी था अब हत्याम में नहीं है। सुगनचंद के द्वितीय आत्मज श्री रूपचंद का परिवार सुसम्पन्न एवं अग्रगण्य है।

सवाईमिह के तीसरे बेटे तिलाचंद का वंश नहीं चला, पर चौथे दूगर्मिहवास के पाँच पुत्र थे। उन पाँचों में से तीन तो निमनान गये किंतु सुमाणचंद और चुनीलाल नामक दो भाइयों के क्रमशः जुहारमल पनचंद तथा बालचंद के भरे पूरे परिवारवसते हैं। इन भाइयों की पत्नित में पाँचवाँ भाई घमडीराम कुशल व्यवसायी था। उसके दो बेटे कालूराम और गणेशमल थे। कालूराम का वंश नहीं चला परंतु गणेशमल के तालाराम, टीकमचंद और पूनमचंद नाम के तीन पुत्र हुए। तालाराम का सम्पन्न व नामी परिवार कालू में निवासित है, पर टीकमचंद, पूनमचंद के वंशज श्री दूगर्मल में बसते हैं।

षष्ठम भ्राता जेतमल नाहटा के चेतनराम, मधराज नाम के दो लड़के हुए, पर आगे वंश नहीं चला। सप्तम भ्राता श्री गुलाबचंद के भी हजारीमल सगदरमल दो लड़के थे और हजारीमल के जेठमल जन्मा फिर वंश बृद्धि बढ़ रही।

गांव कालू में कोठारी वंश सदा से मुख्य माना जाता रहा है। श्री भरुदान, जीतमल कोठारी नाम का काम प्राचीन समय से ही जनता के हित में रहता आया है।

उसका देस (कालू) में भी व्यापार चलता था। वे विवाह शादी, ज़ोमर मासर और मीके-वेमोके लोगों को अनाज, रुपये आदि दिया करते थे। उधर भंरुदान कोठारी के भूवा का बेटा भाई बीयरराज नाहटा भी (समय का चतुर व्यक्ति) राजपुरे में रहता हुआ अपना थोड़ा बहुत कारबार किया करता। कालू में मामरे भाई श्री भंरुदान न बीयरराज नाहटा को अपने साथ व्यापार करने के लिए बुलवा लिया। बीयरराज ने पीछे उसका सारा परिवार ही कालू में आकर बस गया।

श्री बीयरराज का कालू गांव, आत ही बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ। उसी साल उसने पुत्र सुगनचंद का जन्म (1944) हुआ और भंरुदान बीयरराज के नाम से सम्मिलित दुकान का श्रीगणेश भी हो गया। कालू में इनकी दुकान अच्छी चली। य गल्ला, कपड़ा और विसायत का बहुत सारा सामान रखते थे। उस समय विवाह शादी की मोछी, महदी, खारक, खापरे आदि चीजें उनके महा कालू में ही मिल जाया करती थी। ये शहरी सामान भी रखते थे और बीकानेर का माल सीधा बनारस बंध जेंटा से आया करता था।

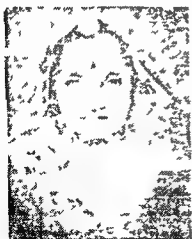
कालू के श्री भंरुदान काठारी (जन्म 1912 दहावसान 1966) फक्त 54 वर्ष जीवित रहे। वे बड़े अच्छे स्वभाव के सज्जन पुरुष थे। आपको गांव के कार्यों का पूरा करने में बड़ी रुचि रहती थी। गांव के हर एक व्यक्ति के साथ आपकी मैत्री थी। गांव के गणमाय सेठ श्री कुमाराम मवर के साथ आपका घमंसा (धम के भाई) बना हुआ था। गांव में लोकोपकारी कार्यों में आप धाना की प्रायः सलाह हाती रहती थी। सन् 1955 के पास कालू के ठाकुर श्री मेघसिंह न गांव के किसानों पर एक नया लगान लगा दिया। तब भंरुदान काठारी न गांव के लोगों की इच्छा मुजब जाग होकर लगान देने से इन्कार करवा दिया। इस पर ठाकुर काठारी पर बड़ा नाराज हुआ और अपना भारी जोर दिखाया। तब श्री भंरुदान काठारी ने चौधरी नदाराम जाणी का साथ लेकर एक रात में घर घर जाकर साग गांव खाली करवा दिया। साग अपने हितैषी के कहन पर तत्काल साग माल-अमबाब धनपशु लेकर अपने अपने रिश्ते नात वाले अन्य गांवों में चले गये। श्री भंरुदान न गांव कालू खाली हो जाने की शिकायत बीकानेर महाराजा को पत्र कर ली। महाराजा बीकानेर न गांव कालू को ठाकुर मेघसिंह से उनार (छीन) कर खालसे में ले लिया। तब वे सारे किसान साग वापिस कालू आये। ठाकुर मेघसिंह ने भंरुदान से माफी भी मागी, मगर—“फिर पछताये हान करा” वाली कहावत शेष रही।

परन्तु हस्त, श्री भंरुदान का बड़ा लड़का लूनवरन (जन्म 1936 मृत्यु 1963) छोटी उमर में पिता के सामन ही संसार छोड़ गया। अतः एव भंरुदान बहुत अस्वस्थ हो गया। था लूनवरन बड़े रोव दाढ़ वाले व्यक्ति व्यवसायिक व क्षेत्र में यथेष्ट सफल व्यापारी थे। दिसावर की सारी दुकानें भी श्री लूनवरन ही संभालते थे। वहाँ फाम का नाम बीयरराज लूनवरन चलता था। लूनवरन जमाने का सम्य और शौकीन व्यक्ति था। पाट भी लाख के घाटे तक गया कि घराने को ठेस लग गई। लूनवरन अपने पीछे एक छोटे शिशु मंगतमल (जन्म 1959) का छोड़कर भगवान का प्यार बने। तब श्री भंरुदान कोठारी पर भारी विपत्ति आ पड़ी। इनका छोटा लड़का श्री तोलाचंद क्या पारिक काम में कतई होशियार नहीं था। जंगल के बाघ की जति गांव रखवाला में

बहादुर रहने वाले श्री भरुदान अब बिल्कुल कमजोर हो गये। आस पास के गावों से दुकान पर पेदागी स्वरूप भतीरो काकड़ियों से भरे ऊँट आया करते थे। तब भाई बीरान नाहटा आये फल भरुदान जी के घर भिजवाने। मगर उन न तो पुत्र शोष में सब कुछ छोड़ रखा था। वे केवल अपने पौत्र मगतमल का पताने निम्बाने की चिन्ता चर्चा ही किया करते थे।

काल में इस फम (भरुदान बीरराज) का कारागार बराबर बीस वर्षों तक साथ चला और य दोनों भाई लाखा की सम्पत्ति के मानिक बन गये। दिसाव म बीरराज लूनकरन फम के नाम से फारबिस गज कमूमाहाट आदि म्थानों म इनकी दुवार्ने थी। स० 1962 63 में दोनों भाई, भरुदान बीरराज असंग हुए। तब 96×96 हजार रु नकद एकूक की पाती (हिम्मे) म आय ये तथा भरुदान लूनकरन और सुगनचन्द बन चन्द नाम के पृथक् पृथक् दो फाम बने थे। श्री लूनकरन के आत्मज श्री मगतमल काठारी होशियार बुद्धिमान एवं चौकस चतुर। बाल्यावस्था से ही अपना जीवन सम्य एव सुधारकवान बना लिया। समाज म तथा परिवार में शिक्षा की मुयबस्था करना और पुरातन प्रथा का पूण त्याग कर देना श्री मगतमल ने अपन जीवन म मुख्य माना है। आपका सारा परिवार फाम सुशिक्षित है। आपको पुत्रिया और दामाद भा इसी श्रेणी क मिले हैं। आपका 50 वर्षों से सीधा नवयुग से सम्पर्क रहा है। शिक्षा और सुधार के कार्यों म भी आप सोत्साह भाग लेते रह हैं। पर्दा प्रथा और दहज प्रथा में आपका बिल्कुल विश्वास नहीं है। बीसवाल समाज के धार्मिक संगठन म आपकी यथेष्ट दिलचस्पी है। गाव के धार्मिक राष्ट्रीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यों म आप अनिमनित भाव में सतत सम्मिलित होत रहते हैं। आपके श्रीचन्द वगरह चारा पुत्र भी आपकी ही नीति पर चलन वाले हुए हैं। कानू के कोठारी परिवार म आपका कुटुम्ब भी युग गोभा अग्रणी होकर चलता है इसलिए नाहटा काठारिया का माहत्वा भाय ढाई बिगा वाम कहलाता है।

तपस्या प्रिय श्रीमती तीजा देवी कोठारी—आप कच्चा कानू म तरा पयी सभा, महिना मंडल अणु व्रत समिति आदि अनेक धार्मिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक म्थानों की एक विनिष्ट कोटि की सदस्या हैं। उक्त म्थानों की उत्पत्ति हनु आप अहर्निश लग्नशील रहती हैं। प्रतिनमन व दान चर्चा तथा पक्षीस बोल बायावस्था में आपर कठम्य हैं। महिला मंडल का प्रानत करन के लिए आप उत्तरोत्तर सम्पूर्ण तत्पर रहती ह। कानू म आप उस समय से नि सकोच पर्दा (घूषट) विहित महिला हैं, जब कि अब सीमाग्यवती महिलाएँ काफी हिच-किचाया करती था।



श्रीमती तीजा देवी कोठारी

श्रीमती तीजा देवी की तपस्या परम्परा बड़ी विस्तृत है। आप द्वारा किये गए 'एकांतर तप' के तीन वर्षों की साक्ष्य परिसम्प नतावसर पर हंसराज बच्छराज न 'दैनिक उपासना' की

परिचय पुस्तिका प्रकाशित करवाकर वितरण की सुविधा की थी। (उक्त तप १५ साल से सतत चलता है।) उसमें आपकी समस्त तपस्या का पूरा विवरण है तथा अनेक सूत्र, वचना, मार्मिक पाठ, स्तवन गीत एवं अनुपूर्वी पाठ्य विधियाँ लिखी हुई हैं। आप तपस्यारत रहते हुए भी गृह काय हेतु दार्शनिक श्रमगता के साथ सुख वृद्धि करने में अटूट विश्वास और दुःख से अविलम्बित रहने की गति रखती हैं। समाज को आप जसी त्यागमयी व कमठ महिमाओं की अत्यन्त सत्यदृष्टता तथा आशा रहती है।

प्रतिधि सत्कारी—नाहटा वंश के अनेक परिवारों में से एक घराना गाव कालू के लिए माना एवं सदी से सुविधाकारकता, उदात्त एवं सेवाभावी परम्परायुक्त रहता आया है। यह घराना है—आमकरण नाहटा के सुपुत्र श्री बीरराज और पौत्र श्री सुगनचन्द नाहटा (फम बीरराज सुगनचन्द) जिनकी सेठाई (उदारता) की ग्याति गाव कालू के आस पास प्रायः धार्मिक कथाओं की भाँति अपने समय में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी थी। बीरानर के महाराजा गंगासिंह जी के शासनकाल में इस परिवार का राज्य में सम्पक था। इन्हें सरकार से छद्म मिली हुई थी।

ई० 1931 के लगभग नेपाल के सुप्रसिद्ध देशभक्त कोइराला बंधुओं के पिता श्री कृष्णचन्द्र ज्यू शरदाग पहले पहल गाव कालू में बैठ सुगनचन्द नाहटा के घर आमरण सपरिवार स्थान प्राप्त कर सके थे। इन पर नेपाल राज्य की दृष्टि कुर हो गई थी। तब इन्होंने अज्ञात नाम की अवधि कालू के उक्त परिवार में अतिथि बनकर व्यतीत की थी। आगे जाकर मातृका प्रसाद कोइराला भी श्री बीरराज नाहटा के घर नेपाल के प्रधान मंत्री बने किन्तु वे बीरानर राज्य के इस कानू गाव को कदापि नहीं भूल सके।

नेपाल के भू० पू० प्रधान मंत्री श्री मातृका प्रसाद कोइराला ने वहाँ की स्मारिका लिखी, उसमें व्यवसायिक प्रमग में कालू के इस नाहटा परिवार का प्रथम बताया है। तत्परिवार सुपुत्र श्री लाघूराम नाहटा मोरग मर्चे ट एन्थोसियोगन के अध्यक्ष भी रहे और इसलिए श्री सुगनचन्द जी के एक पौत्र विजयसिंह आज भी नेपाल का नागरिक आदेशित (1982) है।

धनान्न के लिए इस वंश में श्री बीरराज नाहटा का नाम मुख्य तौर से लिया जा रहा है जो अपने जमान में लक्षपति बन। इ होने द्रव्य कमाने की कामना से कालू गाव में बाहर पूर्व की भी यात्रा की थी। फरविस गज, कसूमाहाट और विराट नगर में इन्होंने अपनी दुकानें खोली थी।

स० 1971 में श्री बीरराज नाहटा का देहावसान हुआ। तब इनके पुत्रों ने माता कारवार महाला का प्रमग श्री सुगनचन्द बनेचन्द एवं पदमचन्द नाम से कायकर्ता थे। आगे जाकर वि० स० 1985 तक बाधराज बनेचन्द फम के नाम से आर्मेनियन स्ट्रीट क्लबना में इनकी गद्दी भी रही और स० 1974 तक देश का तथा 1984 तक परदेश का सब काय-यापार जो बने भाइयों का साथ गतिशील रहा। श्री सुगनचन्द (जन्म वि० स० 1944 तथा मृत्यु स० 2007) बड़े दिलदार सेवाभावी एवं ग्राम में आने वाले अतिथियों की आतिथ्य आचमन करने वाले वास्तविक सेठ थे। वे उक्त काय के लिए अपने धन को व्यय करते हुए धन को बहुत उच्च स्तर तक ले गये। बहुत बड़न सम्पत्ति सलिल, उर सरोज बढ़ि जाय—वे जल कमल की तरह सत्कार में रहे एवं अपने परिवार,

समाज तथा गांव के सावजनिक कार्यों में दिल खोलकर द्रव्य खर्च किया। विवाह-शादियों के दिनों में हरिजन बग के लागे तक का अपने घर का वस्तुएं देने की फरमाइशें अपने आप टहल घूमकर कर दिया करते थे। बिना भेदभाव के आदरपूर्वक भाईजी के सम्बाधन से बुलाकर या रास्ते चलत का ठहरा कर बान बतोर के रुपये देते हुए पूछ लिया करते कि—“थार विवाह कद रा है?” निश्चित तिथि बतला देने पर सेठ श्री सुगनचंद नाहटा अपनी हवेली की सारी चीजों की सूची उस व्यक्ति के समक्ष बयान कर दिया करते थे। वे कड़ाहे कहाई, तोई पातिये तिरपाल गस बतियाँ चूड़ी-बाजो, चादी के थाल कटोर्गियाँ, पीतल के चौमखी नुलिए तथा चूल्हे परात, माँचे ढोलिए सिरल पधरने जाजम चादणी और चकले बलणो तक की व्वाहिक उपयोग की वस्तुएँ पसंद करवा करवा कर दिया करते। ऐसे कार्यों में वे रुपये पैसे के मामले में भी कभी पीछे नहीं हटते। स्वयं पूछताछकर बिना सेला पढी करवाये ही मुमीम-गुमास्ता से रुपये दिलवा दिया करते थे। खाद्य सामग्री व अन्य वस्तुओं के लिए भी वे अपनी दुकान बता देते और कहते—“कोई खोज का फोडा (सकट) मत देखना।” व्वाहिक और ओसर जस कार्यों में वे कभी लोभ नालख तथा अपने भुक्शान का भय नहीं रखते।

कालू में दक्क सबा, त्याग और प्रेम भाव की त्रिवेणी में स्नान कराने वाले सेठ श्री सुगनचंद इस युग में ‘जब लाभ भागने पर भी अपनी चीजें अवसर पर नहीं देते हैं’ याद आ ही जाते हैं। उसे उनका तकिया बलाग था—‘समझ्याक कीनी !’ लोग आपस में क्यादातर इकार करने जाने सेठ की हसी उड़ाते हैं—अरे बाह ! सेठ समझ्याक नी।

आजकल घन घन, अपना पराया और बर ईर्ष्या में लगे हुए राक्षस बति के धनपति मानव प्रेम को क्या जान ? धर्म, भगवान और मानवता का तो नाम ही नहीं जानते। केवल अपने को जन सनातनी एवं ब्रह्मण बताते हुए नवयुगी कृपण एवं बर भावना के ये भूत षोड दिन सप्ताह में रहकर जल्दी अपना नाम नष्ट करके चले जाते हैं।

श्री सुगनचंदजी नाहटा सच्चे जनी धर्मी मानव थे। व दिन में तीन बार समाई (भगवान नाम स्मरण) किया करते थे। वे जन प्रभुओं के साथ अपनी जनता जनादन की स्थिति को भी स्मरण कर लिया करते थे। अपने घर के विवाहादि अवसरों पर किसी को नहीं भूलत। नूतों, सिंगरी नूतों धाला और बड़ी हाति आदि की भेंट द्वारा गांव के सारे व्यक्तियों से अपनत्व की परम्परा बनाय रखते थे ? वे रास्ते चलत अपरिचित बटाऊ (राहगीर) को बुलाकर उसके ऊँट को चारा खिलाकर उसे अपनी हवेली में भोजन कराते। भोजन भी ऐसा बसा नहीं, तुरत गर्मागम दो तीन स-जी एवं लांड घी के साथ गद्दी पाटे सहित थाल लगाया जाता था। सेठानी लक्ष्मी रूप, भोजन के समय गेहूँ के चुपड़े फुलको की जेट (रोटिया का ढेर) लगवाय रखती थी। घर के नौकर आदि जब इच्छा होती पाने बठ जाया करते थे। साधु सत्तो की सेवा और अतिथि सत्कार सेठ के जीवन का व्रत था। वे नित्य प्रातः साय राब अतिथि और आये गये तथा हवेली के अ-य लागे का भोजन करवाकर बचे खुचे शेष ठंडे बेस्वाद भोजन स्वयं करके ही दोनों (सेठ सेठानी) प्रसन्नचित्त रहा करते थे। बाकिरी दिनों में कम आय और अधिक व्यय के कारण इधर उधर से व्यवस्था करते हुए भी सत्तो, मेहमानों और अफमरो का पातिया लगाना तो उनका पूणरूपण कायम रहा। भुराजी की गोचरी और सत्तो की भावना के लिए सेठ सतत साष्टांग विनयी बने रहते थे। जयपुर, जोधपुर

और बीकानेर आदि स्थानों को जाते, तब अनेक परिचित लोगों को अनुनय सहित भोजन करवाया करते। अतः श्री मुगनचंदजी का नाम कालूम ही नहीं दूर दूर तक फैल गया। किसी भी नडाई थगड़े या आपसी विवाद में लोग कह दिया करते थे कि—“देखा तेरे को बड़ा मुगनचंद नाहटा।” तथा “देखा रे लसपति का बच्चा कानू का सेठ मुगनचंद बनकर बाने वाला है।” तत्कालीन समय की लोक दृष्टि में सेठ मुगनचंद नाहटा ही दुनिया में सब प्रकार से आदर सम्मान करने के योग्य थे।

सेठ के घर हर समय घाड़ी बघी रहती, परन्तु वे ऊँट की मवारों श्रेष्ठ मानने थे। घर पर विभिन्न मज्जिया बनती, किन्तु वे मोठ का मागर (घोड़ा दाल), सागरी-केरिये का साग तथा छाछेनो कनी ही पसंद किया करते थे। श्री मुगनचंदजी के साथ अनेक आदमी रहने और उनका लक्ष भी उस समय हजार रुपयों से ऊपर खाना जाया करता था। वे देशी जूते नवा बोट, चोला तथा सफाचट करवाये हुए मस्तक पर गोल पगड़ी बांधा करण थे। उनकी जेब में वेस्ट एण्डवॉच घड़ी और हाथ की अंगुली में चांदी का पत्र की पगा जमना अंगूठी हर वकन रहती थी। नगरी की यात्रा मुसाफिरी में जाते तब साथ जाने लोगों के फोटो खिंचवा दिया करते परन्तु जापन कभी अपना फोटो नहीं करवाया। दूम्गों को खेल-नमाणा दबने हींछा हींछने और गहर देवन बावत पैसे देकर स्वयं बड़ी समाई ले लिया करते थे। सेठ मुगनचंद की धर्मपत्नी का देहावसान हो जाने के बाद द्वितीय विवाह हुआ। पहली पत्नी से एक पुत्र श्री साधूगम हुए, जिन्होंने बड़ा गमीर एवं महान जीवन व्यतीत किया। दूसरी पत्नी से तीन पुत्र एक पुत्री क्रमशः श्री रूपचंद—राजनिक सूत्र रूप के भतीजी बालचंद—बड़े लोकप्रिय एवं नगररूप, बाबूबाई मा की बहन उजागर और माणकचंद का जन्म हुआ। ये पाँचों ही भार्द-बहिन पोतडों के अमीर सज्जन और स्वनाम मेवाभाबी हुए। महत्ता और सम्यता की भावना अधिक मात्रा में पनप जाने के कारण उदारता की भावना का मोन सारे परिवार में प्रवाहित हो गया। उनके विवाह बड़े ठाट बाट से हुए। आज कहावत रूप में सुना जाता है—“श्री मुगनचंद नाहटा ने अपने पुत्रों के एक-एक विवाह में बनोरी का दस दस गोरी गुड गाय के लोगों को एक-एक रात में बटवा दिया था।” उनके ज्येष्ठ पुत्र की ऊँट की बारात बारह कात (कालू से आठमर) तक में पकिनबद्ध विस्तृत हो-चली थी। कोई भी व्यक्ति रास्ते में मिल गया, सेठ ने सम्मान बागल में साथ मिला लिया। ऐसे-ऐसे अनेक उदारतापूर्ण एवं महान कार्य करते हुए सेठ मुगनचंद विभिन्न पदों पर प्राप्त सम्मान और बड़ा परिवार छोड़कर सन् 2007 में निवर्तित बानी हो गये। उनका देहावसान पर स्मारक के रूप में एक बड़ा चबूतरा बना हुआ है।

सेठ श्री मुगनचंद के परिवार में आज अनेक पौत्र पढ़े लिखे नौजवान हैं। कई व्यापारी पदाधिकारी, योग्य कार्यकर्ता तथा अपनी वन परम्परा के अनुसार सभी सम्यक् व्यवहारी कहलाते हैं। गाँव के मावजनिक कार्यों में घराने का सदैव पूर्ण सहयोग रहता आया है। पर सेठ मुगनचंद की मरस शब्द स्मृति गाँव कालू में अभी गुंजायमान है। वह सन् 2007 के श्री ग्राम सेवा मण कानू से निवर्तने वाले “विकास” नाम के पत्र में प्रकाशित हुई थी।

सरस-शब्द-स्मृति

गया ग्राम में सुनो कर थे, रोटी धालण राम ।

आगत री स्वागत कण करसो ? देगी कण बिसाम ?

वगत बटाऊ दुखढो करसा, गुण धीरा प्रयाण !
 ऊँटहसा नीरो नीं चरसी, भरियो रसी ठाण ॥
 इण गुण धीरी गादी खासी, कुण बठसो साल ?
 अठ किसो अधिकारी होसी ? कालू बड बेहाल ॥
 नगरी विलखी, जनता विलम्बी, यत्ना यण यण बीच !
 बूर काल तत्काल ले गयो, निष्ठुर निरदं नीच ॥
 मान धरम मुरजादा भूत्या, विनं विचार निरास !
 भगती सेवा बेहद धूरे, सत ठिक्काण पास ॥
 अढी आत्मा न ये दीज्यो, बठ सात सुल नाथ ॥
 अठ सात्वना कुटुम्ब्या न, धीरज बळ रं साय ॥
 म' मानां रो मान रियो नी, गयो गाँव रो रूप !
 'समझ्यावोनी' शब्द स्मृति, रही सुगन मल भूप ॥

(सुगनमल जी के स्वगवास पर हस्त लिखित विवास मे छपी)

समाज सेवी पुरुष—प्रत्येक विरादरी मे यमरामा, उदार और राष्ट्रप्रेमी जन मन
 ज म लेत आये हैं। परन्तु कालू के पारीक ब्राह्मण की पुण्य प्रवृत्ति, त्याग-तपस्या, उच्च
 सयम सत्कारा के लिए विशेष आदरणीय मानी जाती है। गांव म सादगी श्रम मितव्ययता,
 पवित्रता, निष्पक्षता और समाज हित की भावना का अधिक विकास पारीका के मोहल्ले
 से ही प्रसारित हुआ है। वैसे ब्राह्मण सब, केवल धार्मिक एवं पवित्रता पसंद होते हैं,
 पर यहाँ के पारीक ब्राह्मण तो प्राचीन काल से निसर्गोन्मी, स्पष्टतावादी एवं श्रम सहिष्णु
 रहते आये हैं। यहाँ पारीको की तिवाडी, जोशी, बोहरा, व्यास, पांडिया, पुरोहित आदि
 अनेक उपजातियों मे गांव बाडेला (श्री डूमरगढ़) से आये हुए तिवाडी तो कालू के लिए
 महत्वपूर्ण काम करने वाले उद्यमी नागरिक प्रख्यात है। जिहान समय समय पर अपना
 तन मन धन देकर हम गाँव का गौरव बढ़ाया है। इसलिए न्यायि प्राप्ति करने वाले ऐसे
 घरानों मे विद्यमान समय मे श्री मूलाराम पारीक का नाम बड़े आदर के साथ लिया
 जाता है।

कालू म पारीका का एक अपना अलग सुखानी वास कहलाता है। श्री सदाराम
 का सुखाराम यहाँ आकर बसा था। उसके सावतराम, लालूराम, भागूराम आदि वंशज
 हुए और इ ही के वंशधरो की चारा ऐलें (शाखाएँ) इस वास म निवासित है। श्रीमूलाराम
 के पडदादा नंदराम के स्योजीराम और गगाराम दो लडके थे। स्योजीराम के
 मोतीलाल मथाराम और गगाराम के रामलाल दूलाराम हुए। पारीको के इस वास का
 वंश विस्तार यही है।

करीब तीन सती पहल श्री मूलाराम का पुराना वंश पडदादा, गाँव बाडेला से
 आकर कालू के वर्तमान पारीकान वास वाले स्थान पर बसा था। वह अपने साथ जाणी
 जाट, जो उसका मजमान था, को भी बाडेला से साथ लेकर आया था। वही जाणी
 कालू के वर्तमान जाणिया का पूज्य था, जिसने अपने पागीक दादा (कुलगुरु) के साथ
 गाँव गरिमा स्वर्द्धि म सतत सहयोग बनाये रखा। नये होने के नाते ये दोनों घराने सक्डो
 वर्षों तक कटक आने के अवसर पर ग्राम वसाने के हित मे झूझते रहे तथा अंग निवा
 सियों को समझाते बुझाते हुए नूओ के किनारे बसते बसाते रहे। गुरु शिष्य परम्परा का

प्रेम सगठन अपनाने के कारण समय, सरलता, ज्ञान, सुव्यवहार आदि के लिए राज-समाज में इन दोनों वंशधरों का महत्वपूर्ण स्थान बन गया था।

श्री नंदराम तिवारी का पुत्र स्योजीराम ईश्वर भक्त होने के साथ साथ व्यापारिक स्वभाव का व्यक्ति भी था। वह खेती, पशुपालन और लेन देन का धंधा करता था। यद्यपि बीच बाजार में बैठकर दुकान नहीं की, तथापि बिभिन्न लेन देन करत रहने के कारण सत्तान परम्परा में व्यापारिक बुद्धि प्रसार की शृंखला बन गई। इसलिए स्योजीराम के आत्मज मधाराम और उनके अनुज गंगाराम के पुत्र दूलाराम वं वंशज वर्तमान समय में भी कालू के सुप्रतिष्ठित कागबारी व्यक्ति कहलाते हैं।

श्री मधाराम के सुगनाराम, मूलाराम नाम के दो पुत्र हुए और दूलाराम के हरिराम तथा हपराम, जो अपनी परंपरित वृत्ति से गाँव में आज भी दोनों परिवार आदर्श निष्ठा के साथ व्यापार रत हैं। इनके घराने कृषि कार्य में भी किसी से कम नहीं है।

श्री मूलाराम अपने पिता मधाराम के द्वितीय पुत्र हैं। आपका अत्यधिक जीवन गाँव की पंच-पचायती तथा समाज सेवा में सलग्न रहा है। ब्राह्मणों में भ्रष्टाचार होने के कारण स्पष्टवादिता के साथ कठोर वृत्ति में भी आप आदर्शमान रहे हैं। आधुनिक शिक्षितों की भांति मूलाराम जी ने विशिष्ट ज्ञान तो प्राप्त नहीं किया, किंतु अपने घरलू लेन देन के साथ सदा से बीच बाजार में दुकान करत आये हैं। स० 1996 तक सुगनाराम मूलाराम फाम के नाम से एक दुकान चलती थी, जिसमें रावन राम सूईवाले मुनीम रहते थे। अब वह फाम हनुमानराम शर्मा के नाम से चलता है। इनका पौत्र वंशी लाल पारीक कलकत्ते के राजस्थानी समाज में एक व्यापारिक नौजवान व्यक्ति हैं।

मूलाराम धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति, इनके ज्येष्ठ भ्राता श्री सुगनाराम भी बड़े सरल, विनयी दयालु और उदात्त भावना वाले थे। इन्होंने अनेक धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त लोकपयोगी कार्यों में भी सदैव भाग लिया। मनुष्य समाज ही नहीं पशु पक्षियों के प्रति भी इनके हृदय में उदार भावना बनी रही। श्री मूलाराम ने अपने जीवन में जब जब अकाल पड़े, गाँवों के लिए घास का खूब प्रबन्ध किया। कबूतरों के चुंगे की नियमित व्यवस्था तो सदीना आपकी दुकान से होती आई है। ऐसे कार्यों के लिए श्री मूलाराम जी से कोई भी व्यक्ति सहयोग ले सकता है।

कालू प्रायः अकालवास ही कहलाता है। ऐसे कठिन समय में गाँवों में पानी की स्थिति विकट हो जाया करती है, जिसे तत्पक्ष निवासी तथा इस क्षेत्र से संबंधित लोग ही समझ सकते हैं। गाँव किसनासर राजपुरे के रास्ते वाले बाट राजपुरे नाम के खेत आपकी सदा से प्याये रहे हैं। उही खेतों में से छूनकरनसर गारबदेशर और कालू से किसनासर राजपुरे का चौरास्ता बनता है। वष में यहाँ हजारों व्यक्तियों का आवागमन हाता है। पहले इन राहगीरों को पानी के लिए बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ता था। श्री मूलाराम का कामल हृदय राहगीरों की इस मुसीबत से द्रवित हो गया और उनकी सुविधा हेतु उन्होंने चौरास्ते पर एक प्याऊ बनवाने का निश्चय किया। स० 2010 में गाँव से 9 मील दूर के स्थान पर बड़ा कुण्ड और एक कमरा बनवा दिया। गर्मी के दिनों में हजारों यात्री इस प्याऊ से पानी पीते हुए आपका धन्यवाद देते हैं।

श्री मूलाराम जी खादी की धोती, सफेद पगड़ी, गटटे कसकी अगरखी एवं दणो जूते पहनत हुए पगोपकारी जीवन जुड़े हुए हैं। वे 80 वर्षों की आयु में भी समान सुधार

व काया में नवयुवका से किसी वस्त्र कम नहीं दिखाई देते। राम स्नेही माधुआ की जंगरी की बाड़ टूट गई तो भूलाराम जी की चिंता बढ़ गई। जब तक शारीरिक काय में सलग्न रह सके बाड़ छपवाते रहें। गांव में बीच स्थानीय शिव मंदिर की काटो की बाड़ भी उनको हर समय अखरती रहती थी। सतजन ठहरत मत्सगत होनी भूलारामजी बाड़ दखत तब उनके हृदय में बाड़ हटाने का सतत सक्त्प उठ जाया करता था। अखिर एक बार उनकी दुकान में कालू के गमम्न ब्राह्मण समाज की सामूहिक आई हुई जनक विवाहा की भूर रागि (एक प्रकार की धार्मिक दक्षिणा जो चररी के समय ब्राह्मणा का एक साथ दी जाती है) बड़े गांव के नाते हजारा की सख्या में एकत्रित हो गई। भूलारामजी ने प्रत्येक ब्राह्मण समाज के व्यक्ति को समया मुझाकर अपने अपने हिस्से की रागि त्यागकर दान की सहमति ली थी और उससे नाथजी की गुफादि की मरम्मत व शिव मंदिर की चहारदिवारी बनवा दी गई। जगह का स्वहृप सुहर बन गया।

इस प्रकार निरंतर परापकार करने वाले श्री भूलाराम को केवल पारीक समाज ही नहीं, कालू के निकटवासीय गांव में लोग भी धार्मिक पुरूप एवं समाज सेवक के रूप में जानते मानते हैं और आपके अनुभव, सेवाभाव तथा योग्यता से प्रभावित अथवा के लिए कहते हैं—

यथा न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न गीतं न गुणो न धर्मः ।

ते मृत्युलोके भुवि भारभूता मनुष्यत्वेण मृगाश्चरन्ति ॥

सेवा प्रवर्ति और प्राप्त अग्रे—कस्का कालू में आजकल कुछ आदश प्रवर्ति वाले परिवार माने जाते हैं। किन्तु कहा जाता है कि विकास एवं पंच पचायता के कार्यों को करने की जसी निचस्पी ठूठानी परिवार में है, बसो अग्रज नहीं मिलनी। गत शताब्दी में इनके पूज्य गायटूडा के रहने वाले थे। वहां से वे प्रथम मन्त्रारोहण कर रहने लग और फिर गांव गारबदशर के गांव मन्त्र वाम से कालू आय। इनके पूज्य पुत्र श्री चेतनराम जो श्री दीपचंदजी के दादा कालू आकर निवासित हुए थे। श्री चेतनराम के दो पुत्र थे—श्री जीवनराम और छागमल। श्री जीवनराम के श्री दीपचंद धनराज और शेरमल तीन पुत्र हुए तथा छागमल के भी शोभाचंद दीपचंद एवं आसकरण तीन पुत्र जो सब पढ़ लिखकर बंगाल में जाकर काराबागी बन। परिवार बढ़ि हुई तब जीवनराम और छागमल के पुत्रक पुत्रक का गृहस्थ बस गया।

श्री दीपचंदजी ठूठानी का जन्म माघ सुदी 4 मं० 1953 में हुआ था। आपके पिता श्री जीवनरामजी एक प्रतिष्ठित नागरिक तथा व्यापारी, जो अपनी निर्भीकता, बुद्धिमत्ता और आर्थिक विचारों के लिए प्रसिद्ध थे। श्री जीवनराम ने अपने बड़े पुत्र श्री दीपचंद को तत्कालीन प्रचलित परिपाटी के अनुसार नाम चलाऊ पढ़ाई लिलाई सिलावर 9 वर्ष की अवस्था में ही दुकानदारी में लगा दिया था। श्री दीपचंदजी वि० सं० 1962 में कालू से 'दिवानतोला' नाम के स्थान पर दिसावर गये। संयोग की बात कि श्री दीपचंद को वहाँ एक तेजस्वी, विचारवान तथा उच्च व्यवसायी फाम मिल गया। किन्तु चार वर्ष बाद सं० 1966 में ही इनके पिता श्री जीवनरामजी का स्वर्गवास हो गया। साहस रक्षा, धनराये नहीं क्योंकि श्री दीपचंद जन्म से ही कमठ, कुशल और लग्नशील रहे हैं। बाड़े समय बाद उस फाम में पूण मनोयोग और निष्ठा से काय आरम्भ

करके आप शीघ्र ही मुनीम के पद पर प्रतिष्ठित हो गये। फिर ता लाभ पर लाभ हात गये। तब श्री हनुतराम ताराचंद (श्री दूगरगढ वाले) फाम के मालिक न एक मुकाम के काम में आपका साम्रा रख दिया। इसके बाद ता आप उत्तरोत्तर उन्नति करत रह ओग अपने पिता श्री जीवणरामजी के स्वभावानुसार ही उदार बन गये।

वि० सं० 1975 में श्री दीपचंदजी की माता का दहावसान हो गया, जिस अवसर पर आपन अपन घर हादिक भावना के साथ शहरमारिणी (सार गाव के लागे को मृत्यु भोज देन) का आयोजन किया और ब्राह्मण वग के लागे का प्रत्येक व्यक्ति रुपया के हिसाब से दक्षिणा वितरित की। उस समय ठिकान का पातिया करवान पर 251 रुपये जेंट देना पड़ता था। श्री दीपचंद न अपन दिल से उक्त काम भी किया। जब से लेकर अब तक इनके घर जीमनदारिया एवं मेहमानदारिया परम्परित रूप से हाती रही हैं। पर कभी दुहरे (दुभात) वाले भोजन का आपके घर नाम तक नहीं आता। इनके अधिक धर्मसे ओसवाला न होन के कारण वसी ही मुम्बादु खान पान प्रवृत्ति का य पालने रह हैं।

एक बार बीकानेर से श्री होरालालजी नाजिम नहर व सिलमिल में कालू में राजकीय बौद्ध वितरित करने के लिए आये और गाव के मुख्य लागे को ठिकान के गड में सामूहिक रूप से वृत्तवाये। तब सारे ब्राह्मण सठ साहुकार और चौधरी वगैरह इकट्ठे होकर अपना मुखिया श्री दीपचंदजी का बनाकर नाजिम साहब के आगे पेश हुए। लोग की इच्छा नहर बाबत चर्चा देन की थी बौद्ध लेन की नहीं। इस बात का स्पष्ट उत्तर श्री नाजिम को दीपचंदजी न दिया। उस पर नाजिम साहब नाराज होकर लौट गये। दूसरी बार वि० सं० 1982 में अ य नाजिम के आन पर गाव के सब दन योग्य लागे के एकत्रित रुपये 19000) अक्षरे रुपये उ नीस हजार श्री दीपचंद के हाथों से ही राजकीय नहर के बाबत दिय गये। तब ज्ञात हुआ कि यह वज लिया गया है। इन रुपये का राज्य से छ छ महीना के बाद ब्याज मिलता रहा और तीन साल से पूरे रुपय भी मय-ब्याज के वापिस लौटा दिये गये। पर पहली बार गाव के लागे श्री दीपचंदजी के नाफ उत्तर में भयभीत हो गये थे। कुछ समय बाद श्री दीपचंद जा ने जिला दगपुर के मुकाम महीमागज में अपना निजु कारबार स्थापित कर लिया था जा भारत विमानन के समय तक समृद्धावस्था में प्रगतिगीत रहा। इनके पुत्र श्री व हैमालाल, केशरीचंद का नाम भी वहाँ आदश कार्यों के लिए अच्छा जम गया था।

श्री दीपचंद दूढाणी बहुत ही सीधे-साद, मिलनमत् स्पष्टभाषा और सावजनिक कार्यों में अत्यंत करुण के साथ भाष लेने वाले सज्जन हैं। आपका अनुज धनराज नि सतान परलोक गामी बन गये, मगर श्री शेरमल आपकी तरह ही शांत तथा विनयगीत हैं। दूढाणी परिवार की उत्तम योगवद्धि में श्री शेरमलजी अपन जेष्ठ भ्राता दीपचंदजी से भी आगे चल जा रहे हैं। गाव में बड़े बड़े सावजनिक संस्थाओं के भवन बनवा कर कालू के निर्माण कार्यों में श्री शेरमल पूर्णरूप से सहयोग कर रहे हैं।

श्री दीपचंदजी दूढाणी का पुत्र स्व० श्री व हैमालाल गाव का प्रभावशाली व्यक्ति था। अ य श्री केशरीचंद, मदनलाल और गणपालचंद तथा पौत्र शिवनारायण, जेठमल वगैरह सभी योग्य और गाव के विभिन्न सावजनिक कार्यों में पूरा भाग लेने वाले हैं। पर श्री शेरमल दूढाणी के कई पुत्र नहीं केवल एक पुत्री हुई, जिसका परिवार श्री शेरमल की वग वद्धि में देवमान सहयोग मलग्न हैं।

कालू के इस डूढाणी घराने का गांव के प्रति सदा से मानविक व्यवहार रहता आया है। इसी सद्व्यवहार और उदार प्रवृत्ति के कारण श्री दीपचंद के आत्मज गोपालचंद को आज तक पांच बार कालू में सर्वोच्च सम्पन्न होने का छत्रोम वर्षीय सम्मान प्राप्त है। नहसील के जन-सामान्य उसको क्षेत्रीय का ग्राम प्रधान मानकर पूर्ण विश्वास करते हैं। लेखक ने 55 वर्ष पहले गांव की बृद्धा पचायत में दखा है कि श्री दीपचंदजी को भी माहेश्वरी समाज का मुखिया मानकर गांव की किसी भी पचायती का कार्य आरम्भ किया जाता था। इस घराने की यह विसदणता रही है कि वे अपने पद और गौरव के अनुरूप ही कार्य करते हैं। इस समय घन और योग्यता के हिसाब से गांव में कई घराने उनसे आगे निकल गये हैं, परंतु पचायत के इसका म डूढाणी घराना ही सर्वप्रधान है। यह पचायती में हम घराने के व्यक्तियों का स्मरण रूप रहना परम्परित है।

अस्पताल के अभाव पर मानव कहना से प्रेरित होकर श्री शेरमलजी ने अनेक सस्था भवनो के साथ उक्त सस्था के लिए भी बड़ा भवन बनवा कर बेजोड कार्य किया है जो कालू में परिवार का नाम स्मरण दिलाने के लिए युग युगों तक विद्यमान रहेगा। इन सबके अतिरिक्त वि० सं० 2024 में एक कमरा श्री बन्नीनारायणजी के मंदिर में और दूसरा स्वर्गाश्रम में (गीता भवन के माफत) वि० सं० 2029 में आपने बनवाया है। अब आप दोनों भाइयों का जीवन वाणिज्य व्यवसाय के कार्यों से अवकाश प्राप्त तथा स्वाध्याय सेवा भाव और ईश्वर चिंतन में व्यतीत होता है जो इस युग में श्रद्धि सुख कहा जा सकता है।

बीकानेर जिले के भूखंड में फत्वा कालू अति प्राचीन है। इसलिए वह उदारात्माभा, ज्ञान माधको सेवाभावी नागरिका तथा धर्म भीष्म सदगुरुत्वा से सतत भरा पूरा रहता आया है। श्री डूढाणी परिवार ने केवल कालू, किंतु आस पास के ममस्त क्षेत्र के उपकार भावना वाले कार्यों में सतत रहा है। अब स्पष्ट है कि वह कालू की लोक व्यवस्था में बिनभ्र भावेन सेवारत एवं भिन कोटि का परिवार माना जाता है। श्री शेरमल इस क्षेत्रका का सुधा कर रूप मानव है।

प्रबुद्ध युवक—छोटी उमर में अपनी विचित्र समृद्धि करने वाले श्री गणेशलाल राठी के आत्मज त्रय श्री रामचंद्र, श्रीराम एवं इन्द्रचंद्र राठी कालू निवासी हैं। इनके पूज्य सं० 1955 अर्थात् ईस्वी सन 1898 के आम पाम गांव चौदसर से कालू आकर बसे थे। इनके पिता श्री गणेशमन का विवाह श्री हूंगरगढ के मूधडा परिवार में श्रीमती लिछमा देवी (ज. म. वि० सं० 1953) के साथ सं० 1965 में हुआ था। विवाह के बाद श्रीमती लिछमा देवी अपने परिवार में सामाजिक कार्य करने के लिए अथक परिश्रम के साथ तत्पर रही। वास्तव में इही सब कामों से इनका वर्तमान जीवन सुख सम्पन्न है।

श्रीमती लिछमा देवी इस समय 84 वर्ष की आयु में हैं। अत्यंत मिलनसार एवं सादगीपूर्ण जीवन के साथ आप सदा से खुश रहती रही हैं। आपका सुपुत्र रामचंद्र (ज. म. सं 1983 काती बंदी 1) तीनों में बड़ा भाई है। मशरूभा भाद श्रीराम (ज. म. सं 1986 धावण) वर्षों से अलग कारोबारी है। इनका अनुज इन्द्रचंद्र (ज. म. सं 1988 भाह सुदी 6) व्यवसायिक क्षेत्र में गांव का खेचुट सफल व्यक्ति है। इनके दो बहनें भी हैं जो सभी भाइयों से बड़ी हैं।

सं० 1992 से सुदी 14 को गणेशलाल जी का देहावसान हुआ, तब इन भाई-बहनों की उम्र छोटी छोटी थी। इनकी माताजी के पास खेत बीजवाने और गायें रखने के सिवाय व्यापार आदि के अन्य काम नहीं थे बग़र हो गये। तब अपनी माताजी के साथ भाई बहिन खेत का काम करते, किन्तु मकम छाटा भाई जो अब दस वर्षों से बचनपुर टी कम्पनी लि० का मैनेजिंग डाइरेक्टर नियुक्त है। वह स्कूल की छुट्टी के दिन जगत म घर न बछड़े बछड़ियाँ चरा कर लाया करता था। साथ में लकड़ियाँ का तथा सेवण (धान) की भरौटी लाने का भी कभी लाभ सवरण नहीं करता। परन्तु अपने परिवार में सम्पत्ति का सुन्दर वरदान लेकर ही इन तीन भाइयों का यहाँ जन्म हुआ था। इन भ्राताओं की अल्पावस्था में ही इनके पूज्य पिता गणेशलाल जी का स्वर्गवास हो गया था। तब आपके बाबा श्री देवचन्द जी राठी न परिवार की पूरी देखभाल की। ममले भ्राता श्रीराम को देवचन्द जी ने गोद ले लिया और यथावत तीनों भाइयों का पढ़ाते रहे। श्री देवचन्द की धार्मिक भावना बड़ी तीव्र थी और आचार व्यवहार पवित्र था। यद्यपि इस घराने के मूल पुरुष श्री गणेशलाल बड़े अच्छे कारोबारी व्यक्ति थे। परन्तु उनके तीनों सुपुत्रों ने तो अपने कुशल व्यापार के कारण सुदूर पूर्व तक में बालू के अपने नवयुवक राठी परिवार को प्रस्थापित कर दिया है।

सं० 1998 में बड़ा भाई श्री रामचन्द्र 15 वर्ष की आयु में बग़ल गया और फिर सं० 2004 में वह अपने बहनवाई श्री तेजमाल बागड़ी के साथ श्री मदन मोहन राइस मिल भोटपटी में रहा। इसके बाद मिलीगुडी के प्रसिद्ध फर्म श्री रतीराम तनमुख राय के साथ में मिला। ममला भ्राता श्रीराम 'मन्न मोहन राइस मिल' भोटपटी में साझेदार हुआ और फिर वि०सं० 2006 में इन्द्रचन्द जलपाईगुडी के शोभाचन्द फूलराज बाहुटा चाय काम में कार्यकर्ता बन गया। इसके बाद श्री इन्द्रचन्द सं० 2010 से कस्तूरी टी सिण्डीकेट में 2016 तक मैनेजर रहा। फिर ईस्वी सन् 1959 में इन्द्रचन्द ने हिंदू टी ट्रेडिंग सिंघीगुडी नाम से चाय की दुकान खोलकर अपना अलग कारोबार आरंभ कर दिया और दिनादिन उत्थति करता रहा है।

चाय व्यवसाय में ध्यानमग्न होने के कारण नवयुवक राठी भया रामचन्द्र इन्द्रचन्द ने सं० 2018 में गोलहन टी सिण्डीकेट सगरिया सं० 2019 में गोलहन टी सिण्डीकेट मन्नी हबवासी, सं० 2020 में प्रदीप टी कम्पनी जयपुर और सं० 2021 में राठी ट्रेडिंग कंपनी श्री गगनपूर आदि नाम के फर्मों द्वारा अनेक स्थानों में व्यापारिक कारोबार स्थापित किये। व्यवसायिक उत्थति होने के कारण इनकी धार्मिक एवं उदार भावना को प्रोत्साहन मिला। जिससे इन्होंने अपने गांव बालू के सावजनिक निर्माण एवं विकास कार्यों तथा धर्माय कार्यों हेतु समय समय पर द्रव्य प्रदान किया है। वैसे सावजनिक क्षेत्र में आजकल ये राठी दिखाई देने लगे हैं।

चाय व्यापार में उत्थति करने के लिए ई० सन 1971 जनवरी में श्री इन्द्रचन्द का बचनपुर के एक चाय बागान का ओर ध्यान आकर्षित हुआ। उसने दि० 4-11-71 को बचनपुर टी कम्पनी लि० का डाइरेक्टर पद का भार समाला और मैनेजिंग डाइरेक्टर के रूप में प्रतिष्ठित हाकर 'व्यवसायिक संगठनों में भी सम्मान पाया। उक्त कम्पनी का 2515 प्रोस एकड़ का चाय बागान आसाम सिलचर कच्छार में है और सारा कारोबार श्री रामचन्द्र इन्द्रचन्द राठी (भ्राता द्वय) के बराबर पक्ष में अधिकृत रूप से चलता है।

ममला भाई श्रीराम वि०सं० 2006 से 2026 तक श्री मदन मोहन राइस मिल भोटपटी का साझेदार तथा मुख्य व्यवस्थापक बना रहा। इसने बाद वह सगरिया

(राजस्थान) में भारत इ इस्टीज के नाम से राइस एव आयरन मिल लगाकर अपना पृथक व्यवसाय करता है। इसने सरल जीवन, व्यापारिक ध्यान और अपना ही मान-स्वाभिमान, का स्तर बना लिया है।

फिर भी इस राठी परिवार की समृद्धि, प्रगति और सौभाग्य प्राप्ति का सारा श्रेय ज्येष्ठ भ्राता श्री रामचन्द्र की प्रतिभा तथा उन्नत भावना की है। यह लग्नशील, गंभीर एव कष्ट कार्यकर्ता व्यक्ति है। उसे अध्यवसाय, विमल बुद्धि, कायकुशलता पारिवारिक प्रेम एव उज्ज्वल भावना के कारण ही परिवार की प्रसिद्ध समृद्धि है। इस समय सीनों भाइयों के अपने-अपने स्वतंत्र एव भव्य भवन हैं जो सब तरह से अभिनव तथा आरामदेह हैं। श्री रामचन्द्र, इन्द्रचन्द का बारबार प्रिय इन्द्रचन्द राठी बड़ी योग्यता एव युगीय उत्साह से प्रेरित करने में तन मन से काय सलग्न है।

बौद्धिक-जन—कालू का खडेलवाल पीपलवा परिवार शेलावाटी के ठेठ गाँव ठठठाणे का निवासी है। श्री रामकिशन के पहलादा श्री जेसराम वि०स० 1943 के पास जगम अवस्था में ही कालू आये थे। इनके पुत्र जीवणराम जी न कालू में पूर्ण रूप से जमकर परिश्रम पृथक काय किया। ये कृषि काय एव पशु सेवा में दक्षिण रहकर विशिष्ट व्यक्ति कहलाने लगे। फिर धार्मिक श्रमों का पाठ और श्रीमद्भगवत्पञ्चा करते रहने से गाँव में आप मुख्य भगवद् भक्त बन गये। जीवणराम जी के श्री चूनाराम (वि०स० 1938 1985) व नेनकराम नाम के पुत्र हुए। श्री चूनारामजी घर काय के साथ श्री गणेशलाल परनाथों से हिसाब बिताब सीखकर बगाल गए। वहाँ इधर उधर की पूछताछ के पश्चात् अपनी साम्यतानुसार अच्छे व्यापारिक प्रतिष्ठान में मुनीम का पद मिल गया। इन दिनों गाँव कालू में श्री डूंगरगढ जाकर बसे हुए भादाणी परिवार का कूचबिहार जिले में पर्याप्त जमींदारा एव व्यापार प्रसरित हो रहा था। चूनाराम जी की पुराने परिचय से भादाणियों ने अपने यहाँ एक स्थान की भानो द्रुमवत गद्दी सौंप दी।

श्री चूनाराम जी न सत्यव्रत लेकर अहर्निश बुद्धिबल से काय किया। जिसने भादाणियों का बारोबार जगमगा गया। श्री चूनाराम वहाँ शत शत बड़े व्यापारियों में मिले, मेहनत पृथक सलग्न रह कर समझे और व्यापारिक चर्चाओं से प्रेरित होकर बिज बन गये। उन्होंने अपने अधीनस्थ गुमास्ती, नौकरी चाकरी तथा ग्राहकों के साथ पूरा ईमान-सम्मान रखकर अच्छा प्रेम व्यवहार बना लिया। चूनारामजी में अधिक जन-सत्संग के कारण बड़ी व्यवहारिकता, सभा चालुरी और नाति निपुणता आ गई थी। वे मानव समाज के सिद्धांतों को मानने लगे। अपनी साम्यकी के कारण चूनारामजी का प्रभाव इतना बढ़ गया था कि सेठोंके सामने कोई भी बड़ा सकटीय विषय उपस्थित होने पर उसका उपाय निणय चूनारामजी की सम्मति लेकर किया जाता अथवा दुविधा निवारण काय उनके ऊपर ही छोड़ दिया जाता था। इस समय तब इनके अनुज श्री नेनकराम भी इनके पास पहुँचकर कामरत हो गये थे।

- 1 गाँव में संपन्न हुए सन् 1981 के ग्राम पंचायत के चुनाव में इ इन्द्रचन्द राठी सरपंच पद का प्रत्याशी बनकर विजयी हुआ है।
- 2 ठठठावता या ठठठाणा शेलावाटी का यदि एक ही गाँव हो तो वहाँ का ठाकुर हरि सिंह बिदावत वि० स० 1890 (ई० स० 1833) के लगभग बड़ा उपद्रवी, गाँव उजाड़क हुआ था, तब श्री खडेलवाल कालू आये हैं ?

एक बृद्ध सज्जन ने बताया था कि श्री जूनारामजी यहाँ पर व्यापारिक क्षेत्र के धार्मिक पक्ष माने जाते थे। वहाँ के लोगों ने बोनचास में उनको परीक्षित की उपाधि से विभूषित किया था और विलक्षणता यह थी कि वे अपने पद और गौरव के अनुसार ही वाय करते थे।

जूनारामजी वहाँ नित्य प्रातः चार घड़ी के तहके उठ जाया करते। नित्य कमों से निवृत्त होकर पूजा पाठ और हस्तिस्मरण के पश्चात् गद्दी पर बैठ जाते। कूचबिहार मायाभागा फालाकाटा में उनका निरीक्षणाय आना जाना बना रहता था। उनका एक नियम था कि व्यापार में जो लाभ होता, उस द्रव्य में से कुछ लघु अथ पुण्यार्थ खाते में पृथक् जमा करवा दिया करते थे और उस संचित राशि को गरीबों में वितरण करवाकर बड़ा आनन्द प्राप्त किया करते थे। दोन दुखियों के दुःखमोचन हेतु वे सदैव तत्पर रहते। विद्वानों का सत्कार और अतिथि सेवा उनके जीवन का व्रत था। जूनारामजी कायकीर्ति, धार्मिक विचार और पूरा परिवार छोड़कर वि० सं० 1985 में स्वर्गवासी हो गये। पर उस क्षेत्र के धार्मिक लोग आज भी उनकी काय पद्धति को स्मरण करते हैं।

जूनारामजी के श्री हुनमाराम, रामाविज्ञान, श्रीराम और सदासुख चार पुत्र अपन स्वर्गीय पिता के आदेश पर उन्हीं सेठों के वहाँ व्यापार करते हुए योग्य कार्यों में भाग लेने लगे। वंश की चिर संचित बढाई के सन्दर्भ श्री हुनमाराम उही भादाणिया की गद्दी में मुनीम बन गये। किन्तु अय ने स्वयं का अलग व्यापार काय आरम्भ कर दिया।

श्री नैनकरामजी के पुत्र धिषप्रताप महादेवराम और पीत्र भवरलाल भी भले पुरुष थे। श्री रामेश्वरलालजी सहसीलदार और श्री गौरीनकर जोशी एम० ए० (प्र० अ०) मोमासर, नैनकरामजी के क्रम से दामाद एवं शोहते हैं।

ब्राह्मण समाज के साथ घम-सम्मान के विषय में अक्षय्य होत हुए भी व्यापार के क्षेत्र में प्रायः पिछड़े हुए रहते हैं। आनन्द की भाव है कि श्री रामाविज्ञान एवं उनके अमुज श्री श्रीराम (जन्म सं० 1976) सहेलवाल ने अक्षय्य में ही व्यापार पर पूरा ध्यान देकर अच्छी उन्नति की है। धन समृद्धि हो जाने पर राजस्थानी समाज में शिक्षितों की समस्या अधिक बढ़ि पर नहीं पहुँच पाती। कालू में बहुत से ऐसे भाइयों के होनहार बालक, अपने अभिभावकों की अनभिज्ञता वृषणता तथा लापरवाही के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह रहे हैं। यह अवस्था सारे क्षेत्र में विद्यमान है। पर इस परिवार ने गांव व समाज की इस दुर्बलता को महसूस करते अपने अनेक बालकों को उच्च शिक्षा दिलाने की जिज्ञासा सम्मति से सफलता प्राप्त की है। यदि ये द्रव्य भ्राता अपन की अनुदार बना लेते तो आज इनके दुसारे बी० ए०, एम० ए०, एम० एम० सी० एम० बी० बी० एस०, एल० एल० बी० आदि परीक्षाएँ कदापि उत्तीर्ण नहीं कर सकते तथा सतान के प्रति इनका कस्तव्य अधूरा रह जाता। किन्तु गांव में शक्ति रास्ता बना दिया है—‘तमसो मा ज्योतिर्गमय’ अपनी सतान को ‘अज्ञान के अधकार’ से विद्या के प्रकाश में लाइये।’

परिवार में इस समय श्री रामाविज्ञानजी सबसे वयोवृद्ध और सुलझे हुए विचारों के विमल जन हैं। समाज सुधार के सौर पर आप रूढ़िवाद के विरोधी हैं, पर सनातन धर्म के सिद्धांतों की रक्षा करते हुए जो सुधारवाय चिये जा सक्त हैं, उनका लिए आप पूरे हिमायती हैं। आप पवित्रता प्रेमी गायत्रीयों के उपासक, दहव्रत एवं कम्मे के

समझदार सञ्जन हैं। सावजनिक कार्या व लन देन म भी कभी पीछे नहीं रहत। आपका घर सुधीजनों के लिए मानदशायक माना जाता है। आप उत्कृष्ट सेवाभावी, विद्या व्यसनी और आयुर्वेद के ज्ञाता हैं। निष्पुत्र चिकित्सक के लिए गाव मे आपका सेवायोग सराहनीय है।

विसक्षण प्रतिभावान जन—गाव कुजटी (तह० नूनकरनसर) म उदयच द क पुत्र मधराज और पीत्र अलखचद साह का एक परिवार था। उनके देवचद रामलाल, किस्तूरच द तथा उदयचद नाम के चार पुत्र हुए। वि० स० १९६९ मे इस परिवार वृद्धि के पाच घर कालू म आकर बस गए। एक दो बप तो ये इधर-उधर रहत रहे, पर स० १९७२ मे इ होने मघा, सागर आदि ढाडियो से और लालचद नाहटा का एक नोहरा लेकर अलग अलग अपन मकान बनवा लिए। फिर तो इनके मकान इस तरह फलते गये कि अब कालू मे साहो का एक बास कहलाता है और करीबन पच्चीस तीस समृद्ध परिवार बसायमान हैं। कतिपय परिवार इनके अय स्थानो पर भी जाकर बस गये हैं।

कुजटी मे य कृषि और पशुपालन व्यवसाय बाधरत रहा करते थे। वहा चौधरियो एव अय लोक के साथ ही इनका भाईचारा एव सामाजिक विरादराना था। एक दूसरे के विवाह शादी पर काम आते हुए थोडा बहुत लेन देन भी कर लिया करते थे। स १९४७ ४८ म किस्तूरचद बगाल गये और वहा कूचबिहार म मूरजमल हजारीमल फम मे गुमास्ता रह गये। श्री किस्तूरचद कमठ और सचपी पुरुष थे। कपडे आदि के काम मे वहाँ अपनी अच्छी साल जमा ली। स १९५१ म उनन अपनी निजी दुकान खोल ली और दूसरी बार मे सन सन अपन भाइया को भी वहाँ बुलवान लगे। आपके बडे भाई देवचद गाव कुजटी मे (स १९६७ मे) ही स्वगवासी हो गये थे, पर उनके बैगराज और जतरूप नाम के लडको को भी आपने वहाँ बुलवा लिया।

स १९७३ म श्री रामलाल का देहावसान हो गया, मगर फाम रामलाल किस्तूरचद ही चलता रहा। यद्यपि इस फम के प्रतिष्ठाता किस्तूरचद साह थे। परन्तु उत्तरोत्तर उ नति हात रहने के कारण परिवार के लोपो न कई स्थानों मे अलग अलग अपना बाय कर लिया जिनकी गिनती अब बडो म होन लगी है।

श्री रामलाल के स १९६५ आसाठ बडी। को पुत्र हुआ। वह श्री तोलाराम नाम से सेठ बना। इसी महीने उदयचद के पुत्र हुआ जो कालू म भरूदान नाम से मधुर मिलनसारी व्यवहार म प्रसिद्ध सञ्जन है। श्री किस्तूरचद के पाच पुत्र और इनके भतीजे बैगराज जतरूप का भी होशियार परिवार अच्छे कारोबार म सलन है। श्री जतरूप का पुत्र श्री जलायचद साह सुयोग्य कायकर्त्ता और अपने कपडे आदि के व्यवसाय मे यथा समृद्ध है।

श्री तोलाराम गाव कालू मे एक सम्माननीय ब्यवित हुय। उनका लोक व्यवहार बडा उच्च तथा प्रत्यक्ष था। वे स्वण व रत्न ही नहीं, मोती माणक के गहने बनवाने म भी पटु थे। स्थापत्य काय करवाने, बाण्ट कीबी बाय का हिसाब बताने कपडे की जान कारी, मिठाई बनवाने का नाप ताल, भोजन आयाजन या सभा का सुप्रबध, अभिनय म चमत्कारी पाठ प्रदर्शन आकषक लोक कथाएँ कहना, साधु सतो की सबा और सबसे बडा गुण उनका सावजनिक कार्यों म भाग लेकर नाम भावना से द्रव्य देने का था। परन्तु वे चदा बहुत सूझ-बूझकर देते थे अर्खि व द करवे नहीं। इसलिए उस समय कभी बडा लोग उन्हें कृपण एव कठोर भी कह दिया करते थे। वे हंसमुख काय कुशल तथा

प्रभावशाली सज्जन थे। उनका सेठवासा व्यक्तिगतत्व देखने योग्य था। वे पूण पाग्वी थे और मानव भावना को पहचानने में चेष्टावान भी। लाग नहत्त हैं—

साखा तोहा चम्मडा, पहुले विसा वखाण ।

बहू वछेरा डीवरा, नीवडिया परवाण ॥

किंतु तालाचंदजी ने अपनी पांच पुत्रियों के लिए जा बालक रूप में वर दत्त—वे पांचो जवान होकर एक से एक बढ़कर उत्तमशील निकले। तब कहना पड़ता है कि अपने गांव, राज्य और समाज में श्री तालाराम साह सच्चे सलाहकार के रूप में रहते थे।

श्री तोलारामजी में एक विशेष गुण यह था कि वे अपने निकट और दिकट सम्पर्क के सभी संबंधी वगैरह कुटुम्बियों को समान रूप से आदर देते हुए व्यवसाय प्रगति में यथा साध्य उचित स्थान एवं पत्र पुष्प लाभदायक देन का न्यय बनाय रखते। इन्होंने रामलाल तालाराम फर्म में बार-बार अपने पारिवारिक व धुर्भों का पास रखकर अपना व्यवसाय दामाद श्रीमाना को भी अपनी दूकानों का काय मौज रखा है। इनके बड़े दामाद कूचविहार को दूकान का काय आज तक समालते हैं।

तोलारामजी ने बंगाल में धन कमाकर फिर अस्वस्थ अवस्था में कालू आकर रहना शुरू कर दिया था। यहाँ बहुत सी जमीन मजान खरीदे और बनवाये। साथ में गोदारो के कूप पर कमरे, काठा, माताजी के मंदिर में बरामदा स्नानघर, रसाईघर कमरे (स 2025), पत्नी के नाम स्कूल में कमरा और हरिरामजी का मंदिर अस्थायी पोस्ट आफिस भवन आदि अनेक सामाजिक मकान बनवाकर अपनी उदारता का परिचय दिया। इनके भतीजे श्री अलायचंद साह ने भी गांव का वर्तमान पास्टऑफिस भवन बनवाकर दिया है।

गांव के जन समाज में धार्मिक सुधार हेतु पचासो वर्षों से बराबर चर्चा चलती रहती थी जिनके फलस्वरूप जन श्वेताम्बर तैरापची सभा कालू स्थापित हुई। उसके प्रथम प्रधान स्तम्भ सेठ सुगनमल नाहुटा और तोलारामजी साह ही थे। सस्था में आगम और सूत्रों जैसे दुलभ ग्रन्थ भगवान के वचन और प्रयत्न तोलारामजी ने ही किये थे।

श्री तोलाराम, तैराप व के आचार्य प्रवर तथा साधु-साध्वियों के दक्षिण हर साल उनकी सेवा में उपस्थित होने वाले कालू के एक दक्षिण थावक थे। उन्होंने अनेक चातुर्मास तथा मर्यादा महात्सवों में सक्रिय सम्मिलित होकर वहाँ के आयोजित धार्मिक कार्यक्रमों में आत्मिक भाव से भाग लिया था। वे पंजाब, हैदराबाद, जयपुर, जोधपुर, दलखता, बबई, हासी, हिसार, सरदारपुर, सुजानपुर, लाहौर, बीदाहर, बुरु, राजगढ़ गंगाधर भीनासर और धौकानेर आदि स्थानों पर अनेक बार सपरि वार आचार्य श्री की सेवा में पहुँचकर सौभाग्यशाली बने। उनके चचेरे भाई भैरू दान में भी बड़े ऋद्धिस्त स महीने महीने डेढ़ डेढ़ महीने की तपस्याओं के पश्चात् आचार्य श्री की सेवा में अनेक बार दक्षिण यात्रायें की हैं।

श्री तालाचंद के विचार, घर आये व्यक्ति का अतिथि सत्कार तथा साहित्य-संरक्षण करने में महान थे। जब से वे अपनी अलग दुकान (फर्म—रामलाल तोलाराम) स्थापित करने लगे तब से बंगाल में उस जिले के बड़े बड़े आफिसर इनके पास मुला-कातिया आने लगे। देश का आ जाये चाहे विदेश का! भोजन चाय, बिस्कुट, पान, सिगरेट आदि सदाव्रत रूप सुले सम्मान व। जीफ मिनिस्टर तथा सिविल जज की इनसे मित्रता चलती थी। वहाँ के न्याय न्यायकता इनकी पार्टी

“तोलाराम बाबू ! तोलाराम बाबू !” कहते नहीं सकते। कूचबिहार भाकॅट कमेटी के मे प्रेजीडेन्ट रहे और आस पास के गावों तक के लक्षों काय भी इनके द्वारा निर्णीत हुआ करते थे। मुंडौल तन बदन, जन मन के हाकिम रूप रौब-दाब वाले मधुर वाक् व्यक्त थे। ये अनेकरूप तोलाराम—घोती पगड़ी से सरल सेठ टाई, पत्र हैट से अंग्रेज ऑफिसर तथा कोट साफे से सभ्य राव उमराव से दिखाई दिया करते थे।

श्री तोलारामजी साह अपने पीछे सेठ स्मृति, विस्तृत भवन और पाँच पुत्रियाँ के समृद्ध परिवार को छोड़कर वि.स. 1936 में स्वर्गवासी हो गये।

वाकपटुमानस—सारस्वत पंडितों में आभूषण आस के दो परिवार पीढ़ियों से मधुब एव कुशल कायकर्ता स्वरूप ग्राम पचायती में अग्रणी रहते आये हैं। य ईसराणी सम्बद्ध आदरा परिवार हैं। प्रथम—श्री जाधाराम, भोमाराम, तारूराम, चोषाराम की वंश परम्परा में काशीराम वतमान समय में बिरादरी पंच रहे। काशीराम के चादाराम और हरलाल अच्छे कारोवारी पुत्र हैं। चादाराम श्री हुमवाराम के गोद चले गये। पर हरलाल अपने पिता की पीढ़ी पर संभाले हुए हैं। इस परिवार के व्यक्ति जादुओं के आस में आसिदा रह कर जाट जा दुओं के गौरवाचित भुग कहलाते हैं।

द्वितीय परिवार के पूज्य श्री रामदयाल एक वक्ता पुरुष थे। गाव के प्रत्येक माधजनिक कायम उसकी पूछ रहती थी। गाव का पडा हुआ कोई भी झाड़ पपौड़ राम दयाल की राय से ठीक रास्त लगना था। उसके सदाराम, पुरखाराम और बनाराम नाम के तीन पुत्र हुए। वे अपने पिता के समान ही वाक्कुशल एवं वाकपटु थे। ग्राम कार्या में उनकी भी पूछ होने लगी थी। कहते हैं—रामदयाल के दूसरे पुत्र पुरखाराम के मुँह सरस्वती बोलती थी। वे अपने जमाने के आगु कवि थे। ब्रूक हो जाने पर पुरखाराम स्वयं काम सुधार कर द्विज भाइया से श्री सम्मान से लिया करते। यथा—
‘सत भाइया रे पुरख न पाय बघाइया।’ स० 1955 में गाव की ओर से श्री कालिका जी का भवन सुन्दर एवं सुदृढ़ बनाने की बात निश्चित हुई। इस काय की उपयुक्त मनोहर एवं व्यवस्थित ढंग से सम्पूण करवाने की जिम्मेवारी श्री चौषाराम (जिताराम) को सौंपी गई। श्री चौषाराम ने अपनी नतिक निष्ठा तथा महत्ता लगन में भवानी के भवन की तयार करवा देने में मालमर तक अपना मारितिक जीवन लगाकर काय सफलता का यश लाभ प्राप्त किया। इसके पश्चात चौषाराम गाव कालू में बड़े लाकप्रिय बन गए। उस समय उन्होंने रामस्नेहिया की जगेरी के पक्क एवं सुन्दर मकान बनवाने में श्री कालू गाव से काफी मदद पहुँचाई थी। इसलिए सावजनिक कार्यों में उस समय श्री चौषाराम के साथ रहकर श्री पुरखाराम भी बड़े माहिर कहलाने लगे थे। आस पास के लोग उन्हें गाँवाऊ काम में सबप्रथम बुलवाकर सलाह लेने में अपना वस्तु य ममक्षन लगे। परन्तु अफसाम इस बात का रहा कि गाव के मावजनिक कार्यों की चिन्ता तथा कविता वात्तावा के चिन्तन मजन से सलग्न रहकर सतति प्राप्ति में बिल्कुल पीछे रह गये। इस लिए आपने अपने बड़े भाई श्री सदाराम के पुत्र उमाराम को विशेष स्नेह पूर्वक पढा लिखाकर कविता आदि बनाने में यथा योग्य पटु बना दिया। आगे चलकर श्री उमाराम ने गाव में ऐसा मनारजक एवं विविध कविताएँ बनाई हैं जो आज भी सुनते ही बनती है। दो एक नमूने मात्र बता दूँ तो सम्भवत अप्रासंगिक नहीं होगी।

श्री उमाराम का बयस्क दोस्ताना दूसरे आस के श्री कानदास बरागी से था। काननाम उही वर्षों में गाव मागवदेगर से आया हुआ एक युवक तथा मिलनसार मित्र

व्यवित था। दोनों में आपसी प्रेम और दिलसुस गप्पें हुआ करती थी। एक दिन श्री कानदास ने बातों ही बातों में श्री ऊमाराम से कह दिया कि “तुम क्या कविता बनाते हो? मेरी कविता बनाओ तो जानू।” इस पर ऊमाराम को अपने वंश परम्परित सरस्वती वरदान की याद आ गई और वह कानदास की व्यक्तिगत नहीं, उसकी जाति सम्बन्धी कविता कहने लग गये। तब तब बोलते गये कि लोग ने श्री ऊमाराम को वाहवाह, करवे बंद नहीं किया। उनमें से मात्र एक दा पद नमूने स्वरूप लिखता हूँ—

मोडा मित्र न कीजिये वरामो बकार।

काम पड़े जद स्त्री, काम सरया भरतार ॥

एक बार—श्री ऊमाराम, रेखच द काठारी की बरात में गाव बिहारवाली गये और खारे पानी के स्पश दशन से ही अनेक पद बोल उठे—

भू चाल्या भूला मरया, घर रा छाड्या काम।

बिसराली तरा रुखडा, नीज दिखाळी राम ॥

श्री ऊमाराम की ऐसी अनेक सु दर छंद, रस एवं असकार पूण स्फुट तथा ‘दूखी रासा’ काव्य की कविताएँ आज भी कालू गाँव के बड़जनों की जवान पर चढ़ी हुई हैं। वर्तमान समय में इनकी विधवा धमपत्नी ग्राम पंचायत में महिला पंच रह चुकी है।

श्री पुरखाराम के लघु भ्राता श्री बनाराम भी अपने समय के सम्म व्यक्तियों में से एक थे। उसके बेटे आदूराम हुए। श्री आदूराम ज्यातिप शास्त्र के जानकार कम काडी पंडित थे। वह अपने शिष्य जना एवं यजमानों में चमत्कारी पंडित माने जाते। उन पर लोक का विश्वास था, पंडितपन सम्मान था। श्री आदूराम के इतजार में पश्चिम राजस्थान के लोग अपनी पलकों के पावड़े बिछाये रहते थे। आदूराम के हजारी राम एवं रामधन नाम के दो लड़के हुए। रामधन बड़ा दिमागी होशियार-कसा 8 म पठता था। ई०स० 1960 के आस पास भगवान के घर गया। किंतु कमठ हजारीराम अपनी बल बुद्धि से ग्राम कामों में प्रमुख बन रहा है। वह साक्षर दिल दिमाग से दबग एवं उदीयमान राजनीतिज्ञ युवक है। कालू के बहुत से लोग हजारीराम को अपना समझते हैं और नि सकोच हर समस्या को लिए उसके पास जाते हैं। सुना है वह भी उनकी समस्या सुलझाने में हर वक्त तयार रहता है। हजारीराम एक बार ग्राम पंचायत कालू में निविरोध उप सरपंच पद पर भी रह चुका है। इसके दो लड़के ओम प्रकाश और शिव प्रसाद व्यवसायिक लाइन में सविस सलमन हैं तथा तीसरा भ्राता कालेज में पठ रहा है। हजारीराम का घड़त भाव, विनोदी हृदय एवं मखोलबाजी वाला मन सतत स्वस्थ प्रसन्न है।

भट्टा बचन—ई०स० 1975 की 28 फरवरी के दिन अवस्थानुसार वय श्री कालू राम वर्मा का शरीर शात हुआ ता गाव के बुजुर्गों, बूढ़ महिलाओं, नौजवानों और

1 (क) ऊमो कहे दूडियाँ, इतरो यामे छोट।

पुष्प करता नै पाल द्या, बड़ी गजब की चोट ॥

(ख) पाटी बाघें दूडिया पेट मरण के काज।

भटकत भटकत यू फिर ज्यू तीतर पर बाज ॥

ज्यू तीतर पर बाज बात कर सभी काली।

पाटी बाघ्या हरि मिल नो, मई बाघ यू गती ॥

निवट के गावों के लोग से उनकी स्मृति में अनेक प्रकार के श्रद्धा वचन अर्पित किये गए। महंत श्री विष्णुदास जी की भजन मंडली ने उनके घर पर सत्संगति एवं भजन कीर्तन का आयोजन चलाया। मंडली के लोग ने कहा— श्री कालूराम जी का महान व्यक्तित्व, सच्चे ग्राम मुखिया और अच्छे सलाहकार थे। उन्होंने आजीवन भजन नीति को अपने प्राणा से अधिक प्रिय बनाया रखा और गांव की तमाम आध्यात्मिक समस्याओं में एक अगुआ नेता की भूमिका अदा की।”

५० श्री दुर्गादत्त जी शास्त्री, पहले (अस्वस्थता के समय) और देहावसान के बाद, दोनों बार श्री कालूराम जी के घर आये एवं उनकी स्मृति में उठे लोग को बताया कि ‘कालूराम भाई’ महाभारत रामायण ही नहीं, श्री गीता और गायत्री भगवती की महिला चर्चा भी किया करते। वही भी बहिन बातें चर्चा हा चाहे उद्योतिष की, कालूराम भाई ने उनमें अपने सुवाक्य सुनने से अधिकित भाग लिया। वे असाधारण प्रतिभायुक्त व्यक्ति थे। उनमें असीम लोकाचार था। गांव में रहने में ही नहीं, उनकी अभाव अपने क्षेत्र भर में चलना रहता।”

गांव के महामना बुजुर्ग श्री मूलाराम जी और रावतराम जी पारीक दोनों साथ बर्मा के घर पारिवारिक जना से मिलने हेतु आये। उन्होंने कहा— कालूराम के मिशन से हमारे सावजनिक जीवन का एक पूरा जमाना समाप्त हो गया है। आदरणीय समयवत्स बट्ट सेठ श्री दीपचंद जी झुण्णी, तोलाचंद जी साहू भैरूदान जी साहू तोलाचंदजी नाहटा, बालचंद बोधरा, (बालचंद कोठारी, तो राने में लग गया) रामकृष्ण जी खड्डेवाल सुभाषचंद बोड आदि मिलने आये। राजमन नाहटा और नैमचंद बूगड कालू आये तब उनमें परिजनों से मिले। उन्होंने श्री कालूराम जी को एक बुद्धिमान मानव समाजसेवी ओजस्वी बर्मा और उत्तम गुण सम्पीर व्यक्ति बताया।

गांव कालू के प्रथम वस कट्टावटर श्री कालूराम जी गुर्गाई बट्ट रमाका त निपाठी श्री रामचंद्र दर्जी और प्राइवट डॉ० श्री रामसिंह उनके घर भव्यता प्रकट करने आये। उन्होंने श्री कालूराम जी को गुरु गुण रूप आयुर्वेद सुनाता एवं सभा विधा-रद भवनीक बताते हुए उनका सत्संग अहसान माना तथा ग्राम एवं विरादरी का एक सलाह स्तम्भ हो गया कहा। इन सज्जनों ने श्री बर्मा जी का सौजन्यपूर्ण जीवन सावजनिक सेवा से ओत प्रीति अर्पित हुआ बताया। उस समय बहुत से युवकों ने ‘काका गय कह कर आहें भरी। श्री झुगरराम खाती ने मिष्ठ स्मित भाव में ‘कालूराम काका’ कहकर इश्वर का धन्यवाद किया। विधायक श्री भीमसेन जी तथा साथ कतिपय क्षेत्रीय नेता—श्री कालूराम जी के घर सन्निहित बने आये और उन्होंने उनको गांव का एक बट्ट एवं सेवाभावी सज्जन बताया। तत्समय सरपंच श्री गोपालचंद समेत ग्राम पंचायत का स्टाफ मिलन व्यवहार हिन आ पहुँचा और श्री कालूराम जी को अपने पंचायत सस्थान का पुरातन ग्राम पंच बताया। इन लोगों ने कहा— ‘कालूराम जी सन 1951-52 सत्र के चुनाव में पंच बने थे और कुछ समय पश्चात् उनमें गडबडिया होनी देखी तब निष्पत्ति निकल पड़े कि वे ही त्याग पत्र दिया।

श्री कालूराम सोहनलाल सारस्वत, गोपालराम सुमार, श्री मंगूराम जाणी, हनुमतराम जाणी, कालूराम डांगवाल, तोलूराम जादू, नरेश्वरराम नाई, हरलाल सारस्वत, राधाकिशन भादू रामनाथरायण गादारा गारधन महाराज शिवनारायण पारीक, सदा सुख गर्मा भवरलाल सुमार श्री आसदास गुमानदास बरागी कलूराम गोपारा, धन-

राज जागिड, आमूराम नैण आदि लोग उनके घर पर गात्र बैठक में बैठने आये। इन के अनावा दूर-दूर में तार पत्र और तिरादरी भाइया की श्रद्धाजलिया आई तथा उनके घर पर सारे सबधिया के समूह ने शीश सम्मेलन का स्वरूप धारण कर लिया। अधिकारी एवं नमचारी वगैरे श्री लक्ष्मणदत्त शर्मा प्रधानाध्यापक ग० उ० मा० वि० कालू मय स्टाफ, डा० श्री कुचरान जी बागठ पटवारी भवन्सा रघुवीरसिंह ग्राम सबक, श्री रमेशजी पोस्टमास्टर चन्द्रकांत जे० इ० एन० जलदाय विभाग, पशु चिकित्सालय के श्री स्वामी आदि मिलने आए। गांव ताडरिया के भवन बागठ श्री कुशलदान, श्री मनोराम जी तहमोलदार और लेखक के अभिन श्री रंजितमन जी गाड (रेल्वे हनुमानगढ जकन) श्री कालूराम जी का देहावमान हुआ मुनकर नत्कान उनके परिवार को धैर्य देने, हनु कालू आये।

महिलाओं में मुविन मवाधिन बहिन घानी नावणिया, मालीवाड स्वणकार उन के स्नेह मवाधिन मनीजी चुनीदेवी नण घोटावाई नोपाबाई पारीक, मनोहरी देवी बीयराली तथा मोहल्ले की तमाम प्रौढ महिलाएँ उनकी सेवा भावना से वकित हुई घर पहुँची। अस्तु ये सब सद्गुण सम्पन्न महिलाएँ एवं सम्यजन सज्जन एक ऐसे गुणवान व्यक्ति के प्रति शोकरत हुए उनके घर आये थे, जो अपने जीवन के अधिकांश भाग में प्राणी मात्र के हिन समयन रूप प्रसिद्ध रहा था।

श्री कालूराम वर्मा ने जिस काल में जन्म लिया वह भयंकर दुर्मित का समय था। देश के काने कोने में त्राहि त्राहि और क्दन का गान हो रहा था। अवाधिन अभाव के वातावरण में श्री वर्मा का जन्म वि० स० 1956 आमाज शुक्ला पूर्णिमा (शरद) के दिन कालू में हुआ था। एक सान के बाद इनके सिर से पिता का साया उठ गया। ऐसे उदामीन समय में बहिन ने महोदर प्यार सहित गिरु से निश्चोर तक के खेल, खेलाये। वह सकरण और उदार शुभ व्यक्तित्व की घनी सदैव अपने भाई पर अपरिमेय स्नेह भाव बनाये रही। माता एक मदनी महिन मजदूर करके भी अपने बालकों का सम्पूर्ण वात्सल्य पालन करने में हर समय ममयै बनी रही। लेकिन वर्मा के मदरसे का चाब उसे मिटा देना पडा। क्योंकि उसके घर में पीछेय कादी के लिए श्री वर्मा पर ही सारी आशाएँ लगी हुई थी। अत तेज मस्तिष्क एवं सहज गुणों का घनी होने पर भी वह मातृ आज्ञा से गिरा वकित रहना पडा। लेकिन स्वयं सग्न अच्छे साक्षर बन गये। बहनोई जी ने इनका विवाह गंगाधर के एक प्रतिष्ठित घराने में सुनिश्चित कर दिया।

आगे चलकर श्री वर्मा बड़े हुए और उनके हृदय में मानव जीवन की उपलब्धिया प्राप्त करने की याकुनता बढ गई। चारों ओर की दिगाओं में निकल पडे और अनेक विविध कलाओं में परम प्रवीण बन गये। जिन्हें कारण गांव कालू में ही नहीं, दूर दूर के गावों-नगरों तक श्रीकालूरामजी की बड़ी पूछ कद्र होने लगा थी। पचायती के स्तम्भ शादी गमों के पानी मलाहकार तथा जन साधारण के सच्चे हितधी बन गये थे। इसलिए गांव में कोई भी बिगदरी या काय हो कालूराम जी की कलिन कुशलता सदैव प्रथम बनी रहती थी।

उन्होंने अपने बोहरी तेन देन भ्रमण के बाद वि० स 1988 में पसारी की दुकान¹

1 उनका कहना था—भर्मा आव, भरी र भावाविक। गरीबों का मुपत या कम दाम दवा दिलवाते।

भाडकर व्यक्तिगत व्यापार आरम्भ किया था। यह दुकान धमशाला भवन में, जो वतमान में रतन मेडिकल स्टोर है, थी।

कालू की दुकान में बीकानेर से माल आता—पसारी बाजार में श्री सिद्धवरण सुराणा की दुकान से किराणा में सुपारी भटार (भीखाराम चट्टीप्रसाद) से, मनिहारी में लक्ष्मी नारायण अग्रवाल और नत्थू भगतू तथा फकीरुद्दीन आदि की दुकानों से व तिल्ली मखाणा मिथी में कालूराम कदोई से बामठी की बीड़ी दियासलाई और पान, बोट गेट बाजार से खरीदे जाते थे। मोहता रसायनघाला एव झड़ू फार्मसी भी श्री वर्मा के औपधि लेन में परिचित ठिकाने थे। उक्त स्थानों से वर्मा के नाम बाई उधार भी तुलवा सकता था।

मनिहारी की दुकान, मिठाई की दुकान आदि भी कालूराम नानूराम के नाम कालू गांव में चलती थी और सूनवरनसर में (सन् 1948 से 58 तक) पहले पहल चाय का हाटल खोला था। इनमें आमाराय वर्मा चम्पालाल बीठारी लनाराम सारस्वत आदि व्यक्ति रहे। लेकिन श्री कालूराम अधिक बाहर रहते और वर्षों बाद मन्त्र के कोठे (सन् 1932 से 55) तथा इलाज किया करते थे। नीचे लिखे फर्मों में श्री वर्मा जी की आदत चलती थी—

- | | | |
|---|-----------------------------|--|
| 1 | श्रीगोपाल चंद लक्ष्मीनारायण | श्रीवगा नगर (जनरल मचेंटन एण्ड कमीशन एजेंट्स) |
| 2 | श्रीपन्नालाल विजय कुमार | श्रीवगा नगर { |
| 3 | श्रीवज्रमोहन सुशील कुमार, | भटिण्डा { |
| 4 | श्रीपदम चंद गगाजल | हनुमानगढ़ { |

इसके अलावा बीकानेर में पुराने बाजार में वर्मा जी रुई की गांठों और चादा की गिलियो का काम श्री देवीलाल मन्नालाल बोधरा की आदत में किया करते थे। श्री वर्मा सब प्रिय व्यक्ति थे जहाँ जाते मान सम्मान पाते। स्वास्थ्य विज्ञान में अनुभवों व धर्मों के कारण उन्हें कई स्थानों में उपाधियाँ आई थीं। जिनके नाम ये हैं—

1 दी सिलवर जुबला मेडिकल कॉलेज कलकत्ता से 1953 ई० में 'बघ राज' की उपाधि मिली।

2 बोड आफ इंडियन मेडिसिन राजस्थान जयपुर रजिस्ट्रेशन न० 3152 से प्रमाणित की श्रेणी में बघ थे तथा कालू में श्री सेवा सदन औपधासय के नाम से चिकित्सा कार्य किया करते थे।

श्री वर्मा जी कुशल चिकित्सक थे। यद्यपि वे पेशेवर बघ नहीं थे, तथापि रोग का निदान करने में वेजोड व्यक्ति मान जाते थे। वे औपधियाँ स्वयं बनाते और चिकित्सा धनवानों की अपेक्षा गरीबों के घर जाना पसंद करते थे। दवाई नि शुल्क अपनी इच्छा से देने और फीस लेने के मामले में बिस्कुल निर्लोभा थे।

श्री दुर्गादत्त जी सारस्वत ने अपने आदि पुरुष श्री सरस महाराज का जीवा अनुसंधान करने के प्रसंग में मुझे बताया कि 'कालूराम भाई ने पूवज सरस महाराज के साथ अजमेर की ओर से आया था। इसलिए हमारे देवी देवताओं (मावडियाजी आदि) की प्रसाद प्राप्ति में आज भी उनकी बीलाद का हिस्सा बताया जाता है।'

ढाढी ढोली उन्हें "आशा, भानावत रा पोता" कहकर शुभराज किया करते और बही भाट भूळम्प आत्मज कालूराम कह कर शुभ वचन कहा करते थे। वि० सं० 1990

1 बघ क्रम आमाराय, भानी राम मूलाराम, कालूराम

श्री वर्मा के पन्दादे आसाराम ने कालू में बड़े सुकाय (विरादरी भेले) किये थे।

में श्री बालूरामजी की मलाह सहमति से गंगाधर भीनामर और सिधल मजमरा विराट विरादरी सम्मेलन हुए। तत्समय हजारों आदमियों के मध्य में श्री वर्मा विठाये जाते। वे पंच पत्र में भाषण करते तब सहस्र नर-नारी मूर्तिवत् शांत होकर सुनने तथा उन्हीं के वचनानुसार अधिक प्रस्ताव पारित हुवा करने थे। इन आयोजना में काफी आदमी हर समय इनकी हाजगी में रहा करते। भोजन के समय अथ लोनों के दिये वचन प्राप्ति से ही ये छूट लिया वत्त व। इनके पातिये के पास बतुर परोसने वाले लगाय जाते।

श्री बालूराम जी चदा देन में बड़े उत्साही रहा करते थे। एक बार स० 2001 मिति आषाढ वदी 8 को श्री मानाराम नाई पोड भाटी और जियाराम जाखर दोनों सूरतगढ के श्री मेन मन्दिर की भस्मस्त वद्धि आदि करवाने वाकन श्री बालूराम जी के पास रुपये लेने के लिए बालू आये। श्री वर्मा जी समझदार आथ ममाजी हम दोनों के नाम में डेढ नौ डेढ नौ गिनवा दिये। फिर श्री कोलायत जी में मन्दिर बनवाने हेतु श्री डूगरगढ के निराणाराम मन्नाणा जी सभवत श्री भीष्वागम या घनाराम इनके पास बालू आय दोनों के मिलाकर तीन सौ रुपये चन्ना दिये। इस तरह धार्मिक कार्यों के लिए देने तथा अथ सेवा के लिए वे कभी पीछे नहीं रहते। बड़ी में देने का ऐसा मितिवार हिसाब है।

माय मीति, बात पोषक एवं सत्य प्रिय महानुभावों श्री बालूराम जी गांव बालू की मिट्टी में उदित हुए, हिले मिले पले और उनके प्राणात् भी वहीं, बेमालूम बीमारी एवं सदेहास्पद कारणों से हो गया। पर अंतिम स्स्कार उसी वस्ती वसुधरा की रज में 28 जनवरी 1975 को सम्मान सम्पन्न हुआ। वे मम मातुल प्रवर थे, अतएव मैंने पी बी एम, हास्पिटल बीकानेर में उनका पट्ट तीन बार डॉ० बालीधरण माधुर डॉ० आर के अग्रवाल आदि से इलाज करवाया था और उनमें से एक बार मैं, उनकी मय-कर बीमारी के समय, समाचार पाकर आमां से तत्काल चला आया था। परंतु अब की बार वे 15 दिन पहले ही अपने जेष्ठ पौत्र के प्रपच में पटककर उसके साथ श्री गंगा नगर की ओर चले गये। वहां बीमार पड़े, तब पोता तो सत्वर गदम सिरमीग जिमि गायब कि वह अपने की महातालीम यापता पूरक मेडिक पास फाम में मुलाजिम पद (कलि) के अहम् वशात् मुह छिपाकर लुक् छिप गया।¹ तार समाचार मिला, तब मैं सूरतगढ जाकर दिनांक 27 जनवरी को रेल द्वारा उन्हें अपने गांव बालू में आया।

26 जनवरी 1975 के दिन स्टैडियम में जिलाधीश बीकानेर श्री अरुण कुमार माधुर द्वारा मुझे राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किये जाने का विशेष आयोजन था। मैं 25 जनवरी को बीकानेर जाने के लिए तयार होकर दस स्टण्ड पहुँचा। तब उनके बीमार होने का तार मिल गया। श्री जिलाधीश को भेरे न पहुँचने बावन् फोन करके मैं सूरतगढ जा पहुँचा आगे गया देखा—वह असाधारण व्यक्तित्व, “जिसने अपनी महनीयता को बहुजन के मध्य बड़े प्रेम से पचेहत्तर वर्ष प्रमुदित किये रखा था” उस चास्ता पौत्र द्वारा भर्ती करवाया हुआ, सरकारी हास्पिटल में अकेले, बेंड पर बेहोश पड़े पाया।² अंतिम समय में जसी सेवा तत्परता तथा धय आश्वासन की आवश्यकता उन्हें थी, वह पूरी तरह वहां प्राप्त नहीं हुई। उनका बड़ा बेटा रामेश्वर जो उनके द्वारा विशेष ध्यय

1 नीचस्य विद्या पाप कमणि योजयति ।

पय पानमपि विषयधनं भुजयस्य नापृतं स्यात् ॥

2 डॉ० एस बी शवर ने मुझे कहा था कि नहीं, अब नहीं सकते पौडजन फल गया है ।

एक लाठ प्यार स वाला हुआ था, सुबह सात (सा बार) मसाल लेने के बाद नगा वश शहर में इधर उधर घूमता रहा। श्री वर्मा जी 26 जनवरी को मेरी आवाज पर कुछ महोश हुए और उन्होंने मुझे प्रत्यक्ष बात से अवगत कराया कि मुझे मेरी अनिच्छा के बावजूद भी आज तक यहाँ रोके रखा। तब मैंने उनकी आभा का निहारा, जो सत्यवादी, सतोषी और सर्वोपरि भजनीकात्मा मीठी मुस्कान के साथ तुच्छ वचन करके साधना की उच्च स्थिति में पुनर्जीव हो गये। हरि आम् तत्सद्।

कल्याण मूर्ति हे कष्ट जयी, पर दुख भजम व्रत हृदय धार।

हे पुण्य श्लोक तुम घ य घ य तुम जिये सदा बन कठ हार ॥

छात्र के कुहासे में—लगभग पतीस वर्ष पहले की बात है कि उस वक्त कालू नागरिकों में सावजनिक सेवा भावना का प्रेम पूर्वक प्रादुर्भाव होना आ रहा था। उसी समय गांव के कुछ सेवा परायण उत्साही नवयुवकों ने प्रत्येक वाय म भाग लेने का इरादा बनाकर अपने जीवन को समर्पित। सबके साथ श्री डूंगरराम खाती ने भी अपने इस युग के अनक कामों में भाग लेने का निश्चय किया और वे आगे जाकर बड़े ऐजन्सी मिस्त्री पुरुष प्रमाणित हुए हैं। गांव का विकासमान बनाने में उसका प्रयत्न सदैव सफल रहा है। सत्य पुरुष डूंगरराम को कालू का विश्वकर्मा कहते हैं।

मनुष्य अपने कुछ असाधारण गुणों के कारण ही प्रकाश में आकर सेवा कार्य करता है। श्री डूंगरराम उन कतिपय वायकर्त्ताओं में हैं जो अपनी मस्तिष्क विशेषता से प्रयत्न एवं कला कारीगरी के कारण कालू के समा आदर्श लागू का प्रिय भाजन बना हुआ है। वह सन् 1945 से 54 तक एक सुपटु कार्पेंटर के रूप में कार्य करता रहा। उस समय में कालू में प्रायः सभी व्यापारियाँ, कमचारियाँ, सुशिक्षित तथा स्थापत्य कला के कारीगरों से सम्पन्न बनाकर अपनी प्रबुद्धता से सबको परिचित कर दिया। इसने अपनी लम्बे निष्ठा और प्रत्युत्पन्नमति की विशेषताओं के कारण लोक प्रियता प्राप्त की है। ई० स० 1955 से श्री डूंगरराम गांव की जल समस्या को मिटान में जी जान लगा दिया। गांव के सात पुराने कुआँ में बोरिंग करवाने जल कायाँ में डूंगरराम ने निरंतर तीन साल तक अहर्निश कुआँ में व्यतीत करके अपने डूंगर नाम को अडिग रूप में साधक कर दिया। लोग इसे छोड़ चुके। एक दो दुष्टता प्रस्त हुए तथा गांव के मुखिये सज्जन भी इस भारी कठिनाई के समय डूंगरराम के पूरे शत्रु बन गए और गालियाँ तक देने लगे। मगर इसने एक गुण तक कुआँ में सूखत आने जाने की अपनी दैनिक चर्चा नहीं छोटी। जी तोड़ परिश्रम कर अपना काय निभाया। आखिर सत्य अव्यवसाय के समक्ष सफलता उपस्थित हुई और कालू की खाती हुई जल कठिनाई एक बार बिल्कुल नष्ट हो गई।

श्री डूंगरराम एक निडर एवं निर्लौभ व्यक्तित्व का धनी हैं। उसने कालू के कुआँ में पड़ कर मरने वाले अनेक नर नारियों के गयाबने शवों को बल्लत बेदलत रात के समय भी क्षुद्र साधनों द्वारा बाहर निकालकर मुक्त किया है। इसकी ऐसी भावुक करुण एवं वज्रमयी दौगुणी छाती की बारम्बार बड़ाई किये बिना हम लोगों को हर्षित खुशी नहीं होती।

तुलसी निज कीर्ति चहूँ पर कीर्ति को लाय।

तिनके मुह मसि लागी ही मुने न मिटिये धोय। (श्री तुलसीदास)

आजादी के बाद कालू में जितने भी सावजनिक भवन बने हैं डूंगरराम की सस्ती मसाह सेवा उनमें अवश्य काम आई है। डूंगरराम इस एरिया का एक वादिल एवं अनुभवी जादमी हैं।

गांव गुसाईसर से आये आसलिया उपवध के एक माधारण परिवार म ज.म. श्री डूगरराम व पिता का नाम पनाराम और बाबा श्रीबिस्न थे। स० 1982 असाज सुदी 13 के दिन श्री डूगरराम का ज.म गांव बालू म हुआ। अलवय म इनके पिता कचल वसने पर बाबा के अधीनस्थ इसने साधारण सबड़ी व किवाडादि बनाने सीखे। तत्कालीन रानगढ से बालू आये श्री उदयराम जागिड ज.म उत्तम बत्ताकारी के ससग म रहकर डूगरराम मे नोरनी, नकरासी तथा नूतन नवसे पमाने बनाने मे कालू क सम्पजनों को आश्चर्यावित कर दिये। अपनी व्यक्तिगत कल्पना हस्तलाघवता तथा महीन कार्य-कुशलता के कारण पाण्ड बत्ताकारों का ही नहीं वास्तु विद्या एवं मकेनिक ज्ञान म भी प्रवीण बनकर इजिनियरों तक का मन भाह लिया। अब यह जाप बढा, रेडियो, टारमोनियम और विद्युतीकरण के कार्यों म अच्छी जानकारी वाला मिस्त्री है।

स्थापत्यकला और पाण्ड कला का मन्थ पुराना एवं परमावश्यक रहना आया है। स्थापत्य कला के गाय पाण्ड कलाकार की जहरत रहती हैं। नगरीय सभ्यता म बड़े बड़े महल प्रासाद बनाने और उनके डार वातायन झरोखे आदि हवा रोगना के हिसाब, अनुभव मापता व्यक्ति ही नियमन साज सज्जा कर सकता है। बालू गांव मे आधुनिक सुंदर सत्सा भवन तथा अन्य नव्य बंगला व बनाने में कारागरा के कारीगर श्री डूगरराम ने अपनी सम्मति प्रतिभा से अधिक उत्तरदायित्व निभाया है। साथ मे कोरणीशर मजबूत किवाड, चौखट एवं साह सिमट निर्मित जाती झरोखा मे कला-म-कता उभारने के लिए हर एक व्यक्ति का श्री डूगरराम ने कलाह मगविरा लेना पडता है। बालू के सावजनिक आयोजनों म गेट महफिलें, मंडप व मंच इसके पर्यवेक्षण म ही संपूरित होते हैं। 13 सितम्बर 1976 म मुख्य मंत्री के आगमन पर बनाये विस्तृत मंडप मंच तथा 2035 मे सताईस वृद्धीय महायन हेतु बना विस्तृत मंडप बड़े भव्य एवं दशनीय थे। बूआ का मुघार करवाकर जल सुख उपजाना, आबासी भूमि के रास्ते, चौराहो का सुंदरता बाबत करने का नकसा बनाना, गलियों की पाइप लाइन वुडि के नक्शे समेत छात्रावास के अंके घारे पर बडी टकी की योजना बताना आदि ग्राम सुख की प्रक्रिया के परिचय डूगरराम व सिवाम यहाँ कीन देने वाला हैं। यह व्यक्ति मशीन के कामा म इजिनियरों का सह्यागी रह चुका है। क्षेत्र की भायस मिलम् पलार मिलस् और बूआ की, भाइस श्रीम की, आटे की मशीनों के लिए श्री डूगरराम का दिमागी चाबुक नरगर होता है।

एक बार स० 1967 की बात सख का साथ प्रबध टाइप हा रहा था। महीने भर के लिए प० अमृतराम के भरोसे टाइप मशीन घर लाई हुई थी कि पडित बाबू म ही रुठ गया। तब मैं मूलचंद सोनी को उक्त बाय बाबत बुलाने गया। पीछे बालकों ने खाली पर्ची मशीन पाकर मडबढ कर डाली। वह ऐसी बिगडी कि किसी को कुछ पता ही नहीं पडा। स्कूल के अन्य बाबुओं को दिखाने पर सबने बीकानेर ले जाने की सलाह दी। तबिा मुझे अचानक डूगरराम याद आ गया। मिस्त्री डूगरराम ने मशीन को अच्छी तरह देखभास कर चालू कर दी।

काल म पहले याय पचायत की व्यवस्था थी। तत्कमय ग्राम पचायत की तक से लोकप्रिय श्री डूगरराम का याय पच पत्र के लिए चुनाव हुआ। फिर पाच "याय पर्चों द्वारा मिस्त्री डूगरराम को उप-याय पच बनाया गया। इस "यायिक क्षेत्र मे श्री जागिड ने सबसे आगे होकर फौजदारी व दीवानी दोनों प्रकार के मुकदमों की सही

सुनवाई व्यवस्था प्रारंभ की। य वष 1977 तक इस पद पर लोक विश्वासी याय पंच रहे और निष्पक्ष याय युक्त अनेक मामले सलटाये। जो लोग राजनीतिर मामला में श्री डूंगराम से अलग रहते हैं, वे भी इसको निर्भीक एवं कुशल कलाकार मानते हैं।

लेखकीय वंशक्रम और साकेतिक परिचय

गावा में एक दो ऐसे सभ्य एवं पुख्ता परिवार भी होते आये हैं, जो सावजनिक प्रश्नों को गले में लटकाने की अपेक्षा पावन व्यवहार सहित उनको अपनी आ मा में समा लते हैं। यद्यपि जितनी पद्धतियों आ दोलनात्मक कायकर्त्ताओं की होती है, उतनी इन मौन समाज सेवकों की कदापि नहीं हो पाती। तथापि ये अपने कायक्षेत्र में आत्म समय आगच्छ होकर निरंतर जागरूक रहते हैं और धर्म स्वाध्याय से लोक हित, सन चिंतन करके सेवा भाव निभाये चलते हैं। ऐसे लोक हितशील सावजनिक कायकर्त्ता, अपने क्षेत्र रूपी भवन के नीचे वाले पर्यटकों की भांति होते हैं जो कभी किसी के नजर नहीं चढ़ते। परंतु आ दोलनात्मक कायकारी लोग उन भवन के कंधे बनकर कोसा में लोक ध्यान को अपनी ओर लीज लेते हैं। फिर भी भवन, नीचे के ईर्ष्या पर ठहरा रहता है, कगूरा पर नहीं।

ऐसे प्राचीन समय के सावजनिक कार्यों में ससन्न रहने के लिए ग्रंथ लेखक के पूज्या का नाम अग्रगण्य मिलाया जाता है। उनके पिता श्री भैरारामजी आये गये का काम करते और सादर खिलाया पिलाया करते थे। उनके घर हर समय बटाऊ जीमते रहते तथा 'याव तपास के काय हुआ करते थे। स्व० श्री गणेशाराम ओमा ने बताया कि—'मेरा समुदाय गांव बामनवाली था। मुझे वष में दो चार बार खारी होकर बहा जाना पड़ता। मैं आते जाते बहुत खारी में खातिरी के साथ ठाट से भगराम जी के घर ठहरता और बड़े आराम की यात्रा कर आया करता था। भगराम जी शिक्षित, परोपकारी और गुणीजनों का आदर करने वाले सज्जन थे। पास पडौम के गांवों में उनका बहुत नाम था। अपने गांव में हेदकी (वधक) करते तथा तिथि वार ही नहीं, घड़ी-पुल भी बताया करते थे। मनुष्य का सम्मान केवल धन से नहीं उपकार व्यवहार में भी होता है। ऐसा मैंने उनके चरित्र में जाना जिससे अनेक शिक्षाएँ मिलती हैं।' 'श्री परमानराम सारस्वा' हमारा म व गंगाजल गोदारा स्वामी मेघनाथ जा महंत और कालूराम वमा आदि लोग श्री भगराम जी के गुणा की प्रशंसा करते थे।

लेखक का परिवार चार पीढ़ियाँ स शिष्ट शिष्टि एवं विमद वंश कहलाया है। यह गांव खारी और कस्बा कालू में आय समाजी, बौद्धिक काय कुशल जन हैं। अपने पूज्या का ये मूल निवास स्थान पूज्य मानते हैं।¹ वहाँ क राजा लखणसेन के पुत्र भाटी राणगदे तक विदुष सेवा-पूजा हित फूल सभय कर देवताओं की भेंट बढ़ाते रहने के कायहित इस वंश का सम्माननीय खिताब सुनाम पुष्पभाटी एवं पावन खाप के रूप में बन गया।² ये लोग भाटी बेलहण और शेला के आमाय बनकर भी काफी समय तक

- 1 यादव वंश गाँवा का मूल पुरुष भाटी या भट्टिक था। उसने भट्टनेर का दुग बनाया। श्री नरोत्तमदास स्वामी ने 'तवारीख जसलमेर' का अवलोकन कर लिखा है— 'उसने सबत भी चलाया था।' जिसका आरम्भ विस 680 है। नणसी की ख्यात भाग 2 मुजब सरदार भाटी से देवराज तक नौ राजा हुए। फिर 'करण' (स 1340)¹ करण का पट्टादा जसल था, उसने 1212 में जसलमेर बसाया था।

- 2 ग्यारहवीं शताब्दी के आरम्भ में महमूद गजनवी सोमनाथ पर आक्रमण करने जा रहा था। यह जसलमेर से पांच कोस पश्चिमोत्तर लोदवा से निकल रहा था। वहाँ

मुजन बने रह और उनका साथ मारवाड, सिंध, पंजाब हरियाणा तथा गुजरात तक फल गये।¹ जैसे जैसे वेल्हणोत भाटी सरदारों का बीकमपुर राज्य में विस्तार हुआ, फूल चढ़ाने वाले पूजाकारी वंशधर भी इनके साथ इधर उधर आकर निवासित हो गये। यपूगल से केहरोर, देरावर, मरोठ, मम्मणवाहण आदि स्थानों में अपने स्वामियों के साथ जा बसे। बीच बीच में राव और ठाकुर भी कहलाये तथा इन कुछ के नाम दो चार गांव भी गणराज्य काल में पाये बसाये हुए थे।

इस वंश के लोग अधिकतर जैसलमेर, मारवाड के राज्याधिकारियों की पुष्प सेवा में लगे रहे। लेखक की वर्तमान पितृवशीय शाखा में श्री झगरराम के पुत्र जयराम और पीत जोधाराम के तीन पुत्र प्रेमराम, चतुराराम और पूणराम थे। श्री पूणराम के भराराम उत्पन्न हुए। विस्तृत वृत्तांत के अभाव में मारवाड के हमारे भाट जीवणराम सेजाराम की प्राचीन वृत्तियों के अनुसार यहां लेखक के वंश का श्रवण वणन लिखा गया है कि श्री भैराराम सक्ता का जन्म गांव लारी (हुलमेरा) में विस 1936 और देहपात स 1974 में हुआ। उनके बड़े पुत्र श्री बालूराम (जन्म विस 1965 और स्वगवास स 1987) आधुनिक युग के निर्भीक सुधारक एवं प्रबुद्ध सज्जन थे। य लघु जीवन में विद्याध्ययन की लालसा लगी रहे। श्री बालूराम जी² स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों के प्रचारक प्रसारक तथा कांग्रेस संगठन के कार्यकर्ता थे। उनके द्वारा संप्रहित किये गये सामाजिक, आधुनिक एवं राजनीतिक साहित्य से लेखक को बड़ी प्रभाविक सहायता प्राप्त हुई है। वे असमय में ही संसार त्याग चले, परंतु अपने क्षेत्र के नव युवकों में राष्ट्रीय भावना व जन जागृति की समितित ज्योति प्रज्वलित कर गये। इनके द्वय छोटे भ्राता (किसनाराम उमाराम) इनसे पहले ही चल बसे थे।

श्री बालूराम के देहावसान के समय इनके सबसे छोटे भाई (लेखक) श्री नानूराम (जन्म विस 1973 श्रावण कृष्णा सप्तमी—21 जुलाई सन 1916) 13 वय की आयु में प्रवेश कर रहे थे। जिनका जन्म तैरह मास मा के उदरस्थ रहने के उपरांत हुआ था। इसलिए 'जन्म कुण्डली' यथा समय बनवाई गई। जन्म का नाम नारायण रखा। मगर सब भाइया से छोटे होने के कारण, धीरे धीरे वह 'न हराम' में परिवर्तित हो गया। स 1974 की बात, एक साल तक बड़े दुःख और अनक आपतियां के साथ घर का लेन-देन समेटने

के भाटी राजपूतों ने गजनवी व दक्ष का रोकन की चेष्टा की। किंतु उसने सब क्षत्रियों को भार पीटकर उनके गठ बिले ले लिये। उस समय आततायियों के भय से भाटी क्षत्रिया ने देवताओं का पूजा आरम्भ की। अनेकस ब्राह्मणों को जल, पुष्प, प्रसाद चढ़ाने और आरती करने हेतु जीविकाएं वृत्तिया उपाधिया तथा सम्मान दिये गये। उक्तवर्ण के आदि पूवज पान वरत्न आचार्य सम्माननीय पंडित थे तथा भाटी राज्य में उनका प्रभाव था। वे पूजाकारी द्विज अपने राजाओं के साथ देव पूजाय दूर दूर तक फलत गये और उनकी पहचान भी स्वामियों के वंश गोत्र मुक्त गौरवावित मानी जानें लगी।

- 1 शोद्रवा का विजराज बड़ा बहादुर उसने अंग मुसलमानों को रोका और "उत्तर दिस नद विवाद" की उपाधि पाई। उसका भाई जसल (1170) फिर जर्तासह और भाटी घटसिंह जसनमेर के राजा हुए।
- 2 इनका यंग ह्वन में बड़ा विश्वास था।

न लिए इनकी पूज्य माता जी का छठे भासको सहित लेखक के ज म स्थान गाव तारा मे रहना पडा । वे बालकों पर अपरिमेय उदार एव करुण भाव से बहा रही ।

भराराम जी मस्तरा बहुत लोकप्रिय और उच्चकाटि के समवर्ग व्यक्ति थे । वे ज्योतिष विद्या के विश्वस्त प्रेमी जा मङ्गलगमन उपाय व वामणवासी जमे पास पडोस के पडिताई सस्कारा वाले विविष्ट नागरिका के सपन से वसे ही मस्कार ग्रहण किए हुए थे । बचपन ही धार्मिक भावना और शास्त्रा के प्रति उनकी बहुत श्रद्धा थी । कम बोलते साथ धोलते और असत्य पर अपमोम ही नहीं उपवास तक कर लिया करते थे । स 1961 मे राजकीय खान दुलमेरा मे सुपन्थाईजर नियुक्त हुए, पर उनका मन प्राय ज्योतिष सेवाभाव और ललित कलाका म ही रमा रहता । ऐसी अभिरुचि हनु उनकी विविध सप्रहिन कुछ वस्तुएँ हमारे घर मिलती हैं । उनमे मे मो वष पहले के दो पञ्चांगो के भवानी भरव सवाद दृष्टश्य हैं—

1 पञ्चांग—वि०स० 1941 तक 1806 का भैरव भवानी वाक्य अधश्रीधरकृत भरव भवानी वाक्य प्रारम्भ —

प्रश्न—भाभी भाव भविष्य की बरना कर्ता माय ।
भरव पूछै भाव सु, साच कहो जे वाय ॥1॥
वत्सर इकतालीस¹ म होय सुभासुम काज ।
श्रीधर साची रीत सौं पूछ भरव राज ॥2॥

उत्तर—व्योपारा बढी घणो, होसी समता भाव ।
समत म सुख भोगव कहाँ रव कहाँ राव ॥1॥
सायक बाधे पागडी नालायक सिर धूल ।
राज तेज परजा सुखी सक्त है भरपूर ॥2॥
कचरमाण² करमा तणा, भोग आपो आप ।
सुमति विचारया सपदा कुमति विचारया पाप ॥3॥

2 पञ्चांग—वि०स० 1943, तक 1808 का भवानी भैरव वाक्य । अध प० श्रीधर कृत भवानी भैरव वाक्य—

बोहा—भैरव प्रश्न—तेतालीसो³ तीखो रहसी भदो रहसी माल ।
परजा र हित कारण, पूछै भैरवसाल ॥1॥

भवानी उत्तर—तीखा भदा येकसा,⁴ झगडा मटा होय ।
तेतालीसा म करे पतय सुख दुख होय ॥1॥
भागवान सुख भोगसी दुख अभाग्या साथ ।
राज तेज प्रजा सुखी श्रीधर साची बात ॥2॥
राजा मन्त्री यन्सा, तीखा रहसी तेज ।
घन वरसै हरष प्रजा विच विच करसी जेज⁵ ॥3॥

इस तरह से देव नत्था म भोपा का नचान के लिए लोहे की साकल, रयाल-
तमगा के लिए उच्च प्रताग हनु बडा दीवट, राम भजन माला और ग्याल की अनेक पापिया खाखले बास की कलम कुटीर, कडो कूटे वाली पीतल की दवात, लमछड घटूक, पत्थर काय करने के हथियार, पत्थर की बनाई वस्तुओ व सु दूर नमूने आदि भी हैं । प० हिम्मत राम जी ने बताया कि ढाढी उनकी (भराराम जी की) कविता

निम्ना जामन नेह जय, गाही सहोवन शेर ।।

—नेहरू गुरु

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

2017

श्री भरागम जी की मृत्यु ५ डेढ़ महीने बाद मेलख की भाताजी ने फसल का काय सलटवाया। उजड़त बिगड़ते मात्र साठ मन माठ घर आये। कई लाग लेन देन म गडबड कर गये। अठ आठ रस महीने वहा ठहर कर माताजी ने फिर अपने छोटे भाई के साथ, मात आठ कट^३ पानू से बुनवा लिए और दो बार मे अति आवश्यक सामान लदवाकर अपनी मा की आज्ञानुसार मघाल परिवार गांव बालू आकर अपने पीहर मे मयकन परिवार बना लिया।

नेत्रक के बड़े भाई और स्वयं या, मामाजी द्वारा योग्य अत्युत्तम शिक्षा भीक्षा और शास्त्री विवाह हुए। वे बड़े नीति परायण और भजनीक व्यक्ति थे। किन्तु नेत्रक के जवान होने से पहले दो बड़े भाइयों का देहात उनकी आखा के सामने हुआ, तीसरा तो समझ से पहले ही चला गया था। चारों भाइयों में से केवल नेत्रक ही जीवित रहे। इस तरह की बातें उनकी बिलबनी महामना माताजी (श्रीमती शृ गंगी देवी) बतनाया करती थी।

आपकी गिला की नाव बड़े आता वे स्वगवास में पहले ही लग चुकी थी। ग्राम
वासी होने हुए भी वे (बड़े भाद साहब) पूरा सासर थे। उन्होंने ही लेखक को गांव की
पाठशाला में प्रवेश दिलाया। वे स्वयं पढ़ने में रुचि लेते थे। अक्षर जान के समय लेखक

- 1 श्री हीरालाल बुच्चा के वंशज लूनकरनसर में निवासित हैं।
- 2 ऊट श्री मोहस भया शेरा नण कानदाम बरागी, पुरखाराम पन्मान राम सारस्वत, हेमागम मोनाग के लिबान गये थे।

की कुशाग्रता देखकर अध्यापक बड़ा आश्चर्य किया करते। आप छ माह में पहली दो कक्षाओं की पुस्तकें याद कर चुके थे। आठ वर्ष की अवस्था के समय आपने दो वर्षों में चार श्रेणियों की पढ़ाई पूरी कर ली थी। उक्त समय श्री दुर्गादत्त जी, गिरधारीलाल आदि अनेक शिक्षिता से आपका सम्पर्क बना।

आपकी तीसरा व चौथी श्रेणी की पुस्तक में प्रथम महायुद्ध व अनेक सचित्र पाठ थे। प्रथम युद्ध वीरता के लिए विकटोरिया क्रॉस व तमग और खुली हवाई जहाज के चित्र उड़े चाव स देखे जाया करते थे और उन पुस्तक के पन्ना पर गांधी जी आदि की जल छापें उतार चिपका लिया करते थे। भाषा ज्ञान आपका अच्छा था। रामजीलाल शर्मा द्वारा संपादित इंडियन प्रेस लि० प्रयाग में ई० सन 1925 में छपी बाल विनायक पाठशा भाग ' पुस्तक का अध्ययन अधूरा छोड़कर खेलकूद का कुछ समय के लिए पढ़ने से पूरा छुट्टी ले लेनी पड़ी थी। बड़े भ्राता बालूराम जी का दुःखद स्वर्णवास हो जाने से उक्त समय कृषि कार्य में जुट जाना पड़ा।

गांव से ब्राह्मणों व बालक धार्मिक छात्रवस्तिया लेकर मस्जिद पढ़ने बाहर गए। जय कुलीन वर्ग के छात्र पस व बल शहरो में बालेज पढ़ने गये और संपन्न परिवार के पुत्र भी होती व काम में मुक्त रहकर नियमित पढ़ने लगे। तब आपका भी जी अकुला गया और सहपाठियों की भांति आपके मन में भी पुन ज्ञान प्राप्ति की उत्कंठा जागृत हुई। सन 1931 धर्मशाला में रत्नगढ़ के प० श्री गुरुदत्त जी पढ़ाया करते थे। समय पाठ ही आप उनसे पढ़ते और शाम को सभी विद्यार्थियों के साथ जाकर छत पर सोते। बड़ा गीता व प्रथम चार अध्याय और शिव महिम्न व श्लोक याद करते रहते। प्राय गुरुजी सहित कुछ शिष्य खतलाई तालाब में स्नान करके आते। वहाँमी हा चाहे निषध हर समय पठत रहते। फुलत के समय आप रामस्नेही सम्प्रदाय के स्थान या गुराजी के उपाध्यय में जाकर कविता पाठ का अभ्यास किया करते। रामायण महा-भारत और संहृत का पठन भी इसी समय किया। श्री गुरुदत्त जी स लघु सिद्धांत कौमुदी की पंच मयि के सूत्र कठस्थ करके संहृत प्रथमा की परीक्षा उत्तीर्ण की। जकात धानेदार गिरदावर पटवारा के मसम में रहकर तथा गुराजी और प० श्री गणेशाराम जी के आध्यात्मिक व्याख्यान से आपने अपने ज्ञान में उत्तरांतर वृद्धि की। उसी समय आपने पंजाब यूनीवर्सिटी से हिन्दी की पराक्षा दी तथा ई स 1940 में आपकी अध्या-पक पद पर नियुक्ति हो गई। इस समय आपकी राजस्थानी जनमन (कलकत्ता), धारदा (काशी) भीरा तथा राजस्थान (अजमेर) आदि पत्र पत्रिकाओं में रचनायें छपती थी। सन् 1946 में महाराज कुमार श्री अमरसिंह जी कालू आये तब आपने अपनी ' कळायण' नाम की पुस्तक भेंट की। उस पर राज्य की ओर से सनद और पुरस्कार मिले। वह पुस्तक सन 1948 में प्रकाशित हुई। कळायण के संबंध में राजस्थानी साहित्य के विद्वानों की धारणा बनी, श्री चन्द्रदान जी ने शब्दों में इस प्रकार लिखी गई—' जिस प्रकार कवि कुल गुरु कालिदास के ' मेघदूत' में 'आषाढस्य प्रथम दिवसे बादल का दबकर यश का हृदय आदालित हो उठा था उसी प्रकार श्री सस्वता की प्रथम काव्यकृति 'कळायण' ने राजस्थानी काव्य प्रेमियों को हर्षो मत बना दिया।' विद्वद्वय प० श्री विद्याधर जी शास्त्री नरोत्तमदास जी स्वामी और ठा० श्री रामसिंह जी ता कळायण काव्य पर मुख हा उठे थे। बीकानेर राज्य डिवीजन शिक्षा विभाग के लोकप्रिय इन्स्पेक्टर श्री चन्द्रदीपसिंह, सी०पी० कपूर एव श्री आर०सी० कस्ता और सी०बी० शाह

आदि महानुभावों ने जमना श्री सस्वर्ता की मृज्जनशीलता के लिए प्रोत्साहन दिया ।

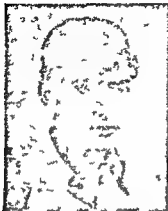
ई० सन 1948 में गवर्नमेंट मिडिल स्कूल नोखा में आपका स्थानांतरण हो गया । उसी साल गवर्नमेंट मिडिल स्कूल लूनवरलमर में फिर स्थानांतरण हुआ । सन् 1951 में आप गवर्नमेंट हायर मिडिल स्कूल बालू में आ गये । यहाँ आपने ग्राम सेवा मधु व श्री मन्मती पुनर्वसन में काफी समय तक अध्यक्ष एवं मंत्री का कार्यभार संभाला । उक्त संस्थाओं से आपने पत्र पत्रिकाएँ निकाली । हिन्दी विद्यार्थ, हिन्दी प्रभाव की परीक्षाएँ भी तथा फिर माहि्य रत्न और माहि्य महोपाध्याय की परीक्षाएँ दीं । "राजकीय हायर सेकेंडरी स्कूल बालू की उच्च कक्षाओं में आपने निरंतर अध्यापन कार्य किया तथा काफी समय तक माध्यमिक बोर्ड के परीक्षक रहे । राजस्थान मा० अ० उच्चपुत्र के सन 1951 में सदस्य हैं और केन्द्रीय साहित्य अकादमी दिल्ली के त्रिवर्षीय निर्णायक भी रह चुके हैं । साहित्य मजल में मजल रहने में निरंतर पुस्तकें छपती रहती जिससे बड़े बड़े विद्वानों की सम्मनियों पुष्पकार तथा सम्मान भी हुए । आपकी रचनाएँ राजस्थान विश्व विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल हुई तथा समय समय पर आकाशवाणी केन्द्र में प्राशाम प्रसारित होते रहे हैं ।

राजस्थान का गद्य प्रवर्ध, शब्दकोष और जीवनी में भी जगह जगह इनके साहित्य की चर्चाएँ हैं । डा० श्री गणेशलाल सहल ने अपने भाष्य प्रवर्ध (1952) में कल्याण का उल्लेख किया है । पदम भूषण श्री सीताराम जी ने राजस्थानी शब्द कोष में गहोयी तथा दस देव आदि पुस्तक में शब्द लेने बताया है । डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया और डॉ० श्रृंगम भट्टारी आदि ने श्री सस्वर्ता के साहित्य का योगदान माना है । स्व श्री लालबहादुर शास्त्री प्र० म० भारत के बड़े व्यक्तित्व ग्रंथ में इनकी एक कविता संग्रहित हुई है । वि० म० 2024 में शिक्षा विभाग के अपर निदेशक श्री अनिल बोदिया के आदेशानुसार राज्य शिक्षा विभाग द्वारा संचालित राजस्थान के विद्वान व मजलाल शिक्षकों के साहित्य को प्रकाशित करने की योजना के अंतर्गत लेखक का राजस्थान का लोक साहित्य नामक ग्रंथ प्रदेश प्रतिनिधि के रूप में प्रकाशित हुआ है । विभाग ने अपनी प्रसन्नता को इस प्रकार व्यक्त किया कि— राजस्थान का लोक साहित्य के विभिन्न विखरे हुए कार्यों को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास श्री सस्वर्ता के इन ग्रंथ में हुआ है ।

इसलिए सचिवालय राजस्थान के विभागीय आई० ए० एम० आफिसर श्री नगवतसिंहजी मेहता, श्री जे० एस० मेहता, अनिल बोदिया भूपेन्द्र हूडा श्री गोवर्धन सिंह श्री इन्द्रजीत खन्ना, श्री अरुण कुमार भापुर श्री नलित विश्वरज (समाज शिक्षा) श्री लक्ष्मी नारायणजी गुप्ता उम्मेद सिंहजी, श्री विनय व्यास आदि अनेक उच्चाधिकारी तथा शिक्षा आयुक्त श्री सस्वर्ता में प्रभावित हुए तथा कृपावत् बने रहें हैं । स्व० ठाकुर श्री रामसिंहजी डाइरेक्टर साद्वत्स राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट श्री नाथूरामजी लक्ष्मावत निरजननाथ आचार्य (अध्यक्ष विधान सभा) सेठ श्री गोविंददास मालपाणी (संसद सदस्य), डा० नरेश शर्मा मोतीलालजी मेनारिया डा० सत्येन्द्र और श्री सत्यनारायणजी पारीक (निदेशक भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान) श्री चन्द्रदानजी चारण (प्रिंसिपल) भारतीय विद्या मंदिर और प० जगदीश प्रसाद जो तिवाड़ी

(सुपरिटे डे ट, डाक तार विभाग, बीकानेर) श्री द्वारका प्रसादजी जोशी एडवोकेट आदि विद्वानों ने श्री सस्कर्ता को यथासमय, यथायोग्य सत्विचार प्रदान किय हैं।

दामाद



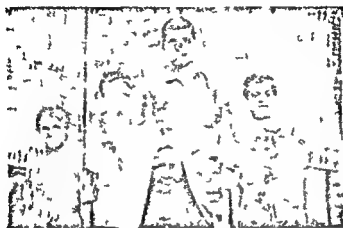
देशनोक के था प्रेमशंकरजी खत्री बी ए बी एड और ज्योटी के सुजानदान बारहठ दानो आपने अभिन मित्र हैं तथा श्री रामचन्द्रजी मोलकी एम ए वा एड एव स्व था रेंवतमलजा वशिष्ठ (प्र० थैणी रेलवे गाड) इनके प्रेमी मुहूदवय रहे हैं। 'मित्रता तथा शत्रुता बरा बर वाला से करें' बाल्मीकिजा के इस नीति कथन के अनुसार श्री सस्कर्ता ने ता सानकी और वशिष्ठ के परिवाराम निज मतान रत्न दन नेन का सुदढ व्यवहार भी बना लिया ह।

३० मय १९७६ में आप ३६ वर्ष निष्ठा धर्म चिरायु कुंवर कालिचरणजी वशिष्ठ लग्न एवं सुश्रुता पूर्वक शिक्षाध्यापन करने के पश्चात् सदा निवृत्त हुए। तब ग्राम स, शिक्षा संस्था तथा गांव की अय संस्थाओं से आपका भव्य सम्मान हुआ। सन १९७७ में आपके हाट अटक हा गया और फिजिशियन डा० श्री हेमचंद्र सक्सेना द्वारा श्रद्धा पूर्वक सफल इलाज हुआ। परंतु साहित्य सृजन आपको रुका नहीं और अभी तक आप साधना सलग्न हैं।

सन १९७८ में राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर ने लकाण धणी 'काव्य पर आपको दो हजार रुपये का श्रेष्ठ राज्य पुरस्कार अर्पण किया और उसका सम्माना योजन भरतपुर में सूर पंचशती' के समय सन् १९७९ माघ में आपको बुलाकर किया गया। आप संस्कृत प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी राजस्थानी गुजराती तथा उर्दू के अनुभवी विद्वान हैं। आपकी प्रमुख रचनाएँ मातृभूमि भाषा और साहित्य से संबंधित होती हैं। उनके नाम हैं—कल्याण (पुरस्कृत), बटोही, समय बाधरो दस देव शोभी गाय पुराण बोट बावनी दस दोख दम दात राजस्थानी लोक साहित्य घर की रेल, घर की गाय, छप्पय सत्तसई (पुरस्कृत) साकळ सधाण लकाण धणी (पुरस्कृत), गोपीचंद स्वामिजी गांव गिरध, डाई बिघा छाडे का विवाह। उपरोक्त उल्लेखानुसार आज तक आपकी राजस्थानी और हिंदी में कृतियाँ प्रकाश में आ चुकी हैं तथा अनेक पाठ्यलिपियां अभी तक अप्रकाशित पड़ी हैं।

लेखक न बचपन में दुःखद सूएँ सहन की, ईश्वर कृपाय उह बड़ावस्था में पारिवारिक सुख समीर शीतलता पहुँचा रही है। वर्तमान समय में अनेक सुशिक्षित शिष्यगण, सेवाभावी सज्जन और पुत्र पौत्र उनकी सेवा सुश्रूषा में हैं। आपको सतान जुगराज तीधराज, शिवराज और राजबहिन राज्य सेवा में अच्छे व्यावहारिक व सावजनिक कार्यरता हैं।

लेखक का परिवार (ई० सन 1968 का चित्र)



नानूराम की पूजनीय माताजी और पुत्र जगुराज तीघराज शिवराज
तथा पुत्री राज बहिन सस्वर्ता

अब आप सेवानिवृत्त अध्यापक बहलात हैं। "खेड गपट" ग्रंथ हेतु आपन कठिन अनुमोधान करा एवं उसे प्रकाशित करवाने के लिए अस्वस्थ अवस्था में भी दूर-दूर की यात्राएँ की हैं। आपकी कमठ भावना अनुकरणीय है। आपका इस कार्य में बालू क्षेत्र के सब नागरिका का प्रभावित एवं गर्वोन्त किया है।

श्री सस्वर्ता के सजनशील स्वभाव का क्षमता दग्गता बोधन पराक्षन की परिधि में पूण रूपेण सम्माननीय है। आपका कृतित्व कुछ और है, "यकित्व कुछ और। वह साहित्यिक मना के शब्दों में प्रत्यभदर्शी लाकविद, सफल अध्यापक एवं कुशल कृतिकार हैं, किंतु आप विनापन के कृत्रिम ढोंग से शिन्कुल अनभिग्न।

स्वभाव की पवित्रता, चित्त की सरलता, वचारिक दृढता, "यवहारिक मृदुलता शास्त्रीय प्रवीणता, वाय सपादन में दक्षता साहित्य योजना में दूरदर्शिता लक्ष्य प्राप्ति के लिए कमठता और आदशता में उदारता स्थापन आदि सदगुणा से युक्त मम्मना को विश्व नियता न एकीकृत रूप विशिष्ट व्यक्ति बनाया है।

इनका जीवन आशा, जामति और विजय का सदेग है। वह सिद्ध करता है कि साधना के अभाव में भी व्यक्ति अपने उद्देश्यों की संपूर्ति कर सकता है। केवल दृढ निश्चय और वाय करने की देर होती है। साधन और सहायक फिर आप से आप एवन्तित हो जाते हैं। अतः हम सस्वर्ता को शतजीवी होने की कामना करते हैं।

चित्रों की अनुक्रमणिका

राजस्थानी रूपाम

पत्तो पङ्क्तम

1	मुख्य पृष्ठ पर चौगान का रूप वल (टाइटल पेज)	मुख्य पृष्ठ
2	श्री वासिवाजी र मंदिर भक्तजन	2
3	श्री सभा मंदिर श्री मुरलीधर जी का	8
4	गीतला माता	10
5	गण-गौर (प्राचीन दृश्य)	12
6	गणगौरोत्सव पर कालू में ऊँटों की दौड़	13

दूसरी पङ्क्तम

1	सन् 1936 में प्राईमरी स्कूल का अध्यापक, भगनिया टावर	23
2	रा० मि० स्कूल कालू का सन 1954 का स्टाफ	24
3	टूनमिंट की माफ पास्ट करते हुए छात्र 1 दिसम्बर सन 1954	25
4	सन् 1954 र टूनमिंट में पुरस्कार वाटना हुआ श्री किसनलाल जी	26
5	सन 1953 में कालू की डिस्पेंसरी का पला डाक्टर श्री वासुदेव जी गग	29

तीसरी पङ्क्तम

1	जगेरी की श्रीराम मंदिर	47
2	पैन मंदिर अर मूर्ति	55

चौथी पङ्क्तम

हिंदी विभाग—प्रथम प्रकरण

1	श्री मुरलीधर जी का मंदिर	77
2	लेखक को महामहिम राष्ट्रपति से मिला प्रमाण पत्र	90
3	स्व० बहा कालूराम स्व० बालूराम (गोल माफा व बाले साकली)	99
4	स्व० साधूराम नाहटा (S) सज्जनकार स्वयं (पाघ प्रचलन)	100
5	(दाढी का महत्व) राजा हरिसिंह महाजन स्व० जमनारामजी वर्मा कालू	101

द्वितीय प्रकरण

1	राष्ट्र कवि भगिनी शरण गुप्त इ० 1951 का पत्र	111
2	राजस्थान विश्व विद्यालय का प्रश्न पत्र सन 1974	112
3	भारत के उप प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई सन 1969 का पत्र	117
4	सन 1940 का मण्डवनी नाट्य परिषद् एव अभिनेता मंडल	134
5	सन 1942 में दान वीर कण नाटक भेजने की मिली हुई राजकीय स्वीकृति	135
6	रजिस्टर हाजिरी विद्यार्थियों का पठागना कालू सन 1909 10 ई०	136
7	रा० उ० मा० वि० काल के 1960-61 सत्र में सक्ण्डरी के सदस्य	139
8	रा० उ० मा० वि० कालू की छात्राओं का ग्रुप । सत्र 197० 71	140
9	विधान सभा प्रश्न का स्वीकृति । पत्र सन 1954	141
10	कालू में श्री कुम्भारामजी आर्य बता रहे हैं कि आपके गांव में हायर सक्ण्डरी का स्कूल पास करवा दिया है । मई 1956	142

11	स्कूल का आदेश बीकानेर पहुँच जान का पत्र श्री हसराम जी बाय न जयपुर से दिनांक 7 6 56 का भेजा ।	142
12	लेखक का परीक्षा पत्र पत्र साहोदर भूनिबसिटी । सन् 1940 ।	143
13	लेफ्टिनेंट कनल श्री जगमालसिंह राष्ट्रपति की की गिरी से 'वीर चक्र' पदक सत्त हुए ।	148
14	लेखक का राष्ट्रपति से मिला "रजत पदक"	149
15	लेखक का साहित्य महोपाध्याय की उपाधि	150
16	राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर से मिला पुरस्कार प्रमाण पत्र	150
17	स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर शाखा कालू भ लेन देन	156
18	कालू मे पानी की बड़ी टकी	163
19	सम्बत 1997 के वार्षिक चंदा दाताओं की नामावली (पुस्तकालय)	171

तृतीय प्रकरण

1	ग्राम सेवा सम के पदाधिकारी (सन 1955)	183
---	--------------------------------------	-----

चतुर्थ प्रकरण

1	पनिहारिनिया की टोली	192
2	व्याज पर रुपये देने काल का पुराना खत चित्र	198
3	लूनकरनसर से सरदारसहर जाने वाली रोड पर पुरानी छतरी	212
4	मिस्री चित्र (भवन मे)	213

पंचम प्रकरण

1	कालू के अलाडे मे गणगौरात्सव पर सन् 1981 मे हुई कुस्ती का चित्र	228
2	कुस्ती करते हुए पहलवान कालूराम एव अजु नराम	229
3	हस्तलिखित पत्रिका कलायण (वि स, 1997) का मुख्य पृष्ठ	232
4	हस्तलिखित बालकोपयोगी पत्र (सन् 1948) 'शिशु सेवक' का मुख्य पृष्ठ	232

षष्ठम प्रकरण

1	ग्रामपंच श्री लालूराम जी बस कटाकटर	248
2	उम्मीदवार से प्रमाण पत्र माने गये 6 6 39	251
3	कोट गेट बीकानेर	258
4	स्व० महाराज कुमार विजय सिंह जी उत्तरगढ	260
5	छतरगढ पट्टा के सुपरबाईजर श्री हरिमिह (सत्तासंग वाले)	260
6	श्रीमती मधुरा देवी राठी	264

सातवा प्रकरण

1	सामाजिक पंच श्री भूताराम जी पागीक	288
---	-----------------------------------	-----

आठवा प्रकरण

1	चूहड भामिय का चित्र स 1551	295
2	राव बीकाजी (यह चित्र प्रेस की भूल से उल्टा छप गया)	298
3	सात पंच के बीकानेर नरेश श्री गगामिह जी	302
4	गजनर पलेस	316
5	नवशा छत्रगढ इस्टेट सक्लिस कालू नवगा बीकानेर राज्य का पुराना (2)	317
6	छत्रगढ भूपाल श्री गालसिंह	337
7	बीकानेर के महागजा श्री हूगरमिह	337

8	श्री अमरसिंह जी नरेश छत्रगढ़	339
9	बालू नरेश की गजमाता श्रीमती बाघेलीजी	340

नवम् प्रकरण

1	ताम्र पत्र सवत् 1852 मीति भादवा बदी 5	351
2	ताम्र पत्र सवत् 1900 मीति बसाख बदी 7	352
3	स्वामी दयानंद सरस्वती विषयान् अमृत दान	358
4	स्वामी दयानंद सरस्वती उपदेश दत्ते हुए	358
5	महात्मा गांधी	363
6	श्री हमराज आय (विमान आ दोलन कर्ता)	368
7	स्व० नेपाल महाराजा श्री त्रिभुवन स्व० प० श्री जवाहरलाल नेहरू स्व० रूपचंद नाहटा बालू	381
8	वीकानेश्वर महाराजा श्री शादूलसिंहजी	395
9	भुताब के समय कालू मे भूतपूज महाराजा कर्णसिंह गुराजी और लेखक	397
10	राजस्थान का नक्शा	405
11	प्रधान मंत्री श्रीमता इंदिरा गांधी	407
12	बालू मे महायज्ञ	412
13	लिफ्ट पवित्र के जल स क्षेत्र मे खजूर	418

दशम प्रकरण (बालू का जिला एक तहसील)

1	लालगढ़ महल	419
2	जेतमली प्रेमीडेट श्री गुणानंद डागा	420
3	तहसील भवन नूनकरनसर	422
4	तहसील क्षेत्र का मानचित्र नूनकरनसर	422
5	वस्तुस्थिति महिला विद्यापीठ (महाजन)	42
6	डा० जे० बालना	425
7	जिल्हा का डेरा	43
8	बालू मे भवन तथा सांख्यिक स्थान	434
9	बालू के मानविक स्वभाव मज्जन व द	435
10	महाजन जन मंदिर का चरण तह	438
11	महाजन नयी के श्रमगत म मंत्री मूनि अशागती स्वली और छत्रिया (चित्र 3)	439 440, 441
12	नेपलीने व जन श्री तम्मलमिन् गारवदगर	442
13	श्रीगम खड्ड विजानी जैतपुर	449
14	अमरगही मन्त्र श्री पूणमिन् (मणेर)	450
15	रजिस्ट्रार हाजिरा योग्य विद्याविधान पाठशाला नूनकरनसर	456
16	महाजन का गढ़ तहसील	486
17	गढ़ के स्वाम श्री रिम्मल पत्रा का माटर टास्वर का लायमेंस	487
18	सरस्वती मूनि (पन्तू)	500
19	प्राचीन मित्र	501
20	श्रीमती मुखी दबी पत्र	514
21	श्रीमती सीता देवी	520
22	पंचायत मन्त्र 1943	545
23	बैचरे श्री वासीचरणजी बगिच्छ	548
24	लेखक का पारिवारिक चित्र सन 1968	549
25	पञ्चम चित्र 2 लघु लेखक तथा सम्पादक अदर कवर पत्र	549

